स्थापित वि. संवत् १९३२
(१८७५ ई.)

ॐ गणेशाय नमः

जम्मू व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी (लाहौर) की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2014-15 ई.



शिमला (हि.प्र.) की दैनिक लग्न सारणी सहित

गौरवशाली 139 वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम
पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

एकमात्र वितरक :
जनरल बुक डिपो
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर
फोन : 0181-2457959

मूल्य: ₹ 79/-

श्रीगणेशाय नमः

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विदा॥ (वृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Lalitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार रहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 को रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित पं. पन्ना लाल ज्यो. (M.A.) के निर्देशन में Computer Programme से की जाती है।

ध्यान रखें- चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष ज्योतिष सम्बन्धी नए-नए विषयों का समावेश किया जाता है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र या योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रें (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

सुतभाव प्रकाश (भाषा-टीका)



संतान सुख की कामना प्रत्येक प्राणी में एक सहज एवं स्वाभाविक वृत्ति है। प्रकृति के सृष्टि संचालन के लिए सदियों से चला आ रहा यह एक ईश्वरीय विधान है। प्रत्येक प्राणी के हृदय में संतान सुख की कामना रहती है। गृहस्थ जीवन रूपी उपवन में संतान वृक्षों पर फल एवं पुष्पों की तरह होती है, जिनसे वृक्षों को सार्थकता मिलती है। संसार में ऐसा कोई दम्पत्ति नहीं होगा, जिसे संतान की चाहना न हो। सभी लोग श्रेष्ठ, योग्य एवं प्रतिभावान् संतान की कामना करते हैं।

गृहस्थ जीवन में पुत्र-पुत्री-यद्यपि दोनों के जन्म का अपना-अपना विशेष महत्त्व है। परन्तु भारतीय समाज में पुत्र जन्म को एक कर्त्तव्य के रूप में ग्रहण किया जाता है। भारतीय धर्म मान्यताओं के अनुसार देव-ऋषि, पितृ आदि ऋणों से मुक्ति हेतु तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए पुत्रोत्पत्ति आवश्यक मानी जाती है। पुत्र प्राप्ति के लिए हमारे प्राचीन ज्योतिष एवं आयुर्वेदाचार्यों ने अनेक नियमों एवं उपायों का वर्णन किया है, जिनका उल्लेख पुस्तक के भीतर किया गया है, जैसे-**व्रतोपवासों द्वारा पुत्र सन्तति प्राप्त करना, मंत्र जाप से पुत्र प्राप्ति,** जपनीय मंत्र, **श्री दुर्गासप्तशती पाठ** से पुत्र सन्तति सुख, **पितृ-मातृ आदिशाप** की शान्ति एवं **कालसर्प** आदि दोषों के लिए उपाय, गर्भदोष निवारक उपाय, **हरिवंश, भागवतादि सद्ग्रंथों के पाठ से पुत्र लाभ,** यंत्र धारण द्वारा एवं जड़ी/बूटी धारण एवं स्नान से संतान सुख तथा स्तोत्र पाठ से पुत्र संतान सुख लाभ होने के विविध उपाय दिए गए हैं। आशा है हमारे द्वारा उल्लिखित शास्त्रीय उपाय जरूरतमंद दम्पत्तियों तथा ज्योतिषियों के लिए लाभप्रद होंगे।

लेखक : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

Atul Sharma



गणितकर्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी



श्री गणेशाय नमः





श्री सरस्वत्यै नमः



स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

''प्लवंग'' नामक नया वि. संवत् पंचाँग दिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७१ (सन् 2014-15 ई.)

राजा चन्द्र

मन्त्री चन्द्र

शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत-हिन्दी) (स्वर्णपदक प्राप्त)
सुपुत्रः स्वर्गीय पं. चूनी लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी
सह-संपादक : पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल एल.बी.,), पं. पंकज शर्मा (एम.कॉम)
अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १३९ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर। मोब. 094172-91325, 097799-13583

विषय-सूची ▶ पंचांगदिवाकर-संवत् २०७१ (सन् 2014-15 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- स्त्री जातक सम्बन्धी विशेष ज्योतिषीय योग
- हस्तरेखा सम्बन्धी विशेष योग
- मनुष्य जीवन में महत्त्वपूर्ण योग
- आनन्दादि 28 योग और उनका प्रभाव
- मन्त्रानुष्ठान से पुत्र सन्तान प्राप्ति

पंचाँग दिवाकर के १३९वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर
जगद् गुरु शंकराचार्य
स्वामी नारायणानन्द तीर्थ
महाराज जी का
शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्म पीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम्(वाराणसी)

Choice Boos & Printers (p) Ltd. F-19, Focal Point Ext; Jalandhar City.

सर्वकल्याणकारी शास्त्र वचन

(1) देव पूजा पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके आसन पर बैठकर करें तथा पितृ पूजा दक्षिणमुखी होकर करनी चाहिए। (स्कन्दपुराण)

(2) गीले वस्त्रों को पहनकर अथवा दोनों हाथ घुटनों से बाहर करके जो जप, होम और दान किया जाता है, वह सब निष्फल हो जाता है। (स्मृति)

(3) केश (बाल) खोलकर आचमन और देव पूजन नहीं करनी चाहिए–

मुक्तकेशश्च न आचमेत् देवाद्यर्चां च वर्जयेत्। (विष्णु पुराणे)

(4) **आसन**–कुश, कम्बल, मृगचर्म और रेशम का आसन जप, पूजादि के लिए शुभ है–

कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च।
दारूज तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्।।

खाली पृथ्वी पर बैठ कर्म करने से दुख प्राप्ति, छिद्रों वाले आसन से दुर्भाग्य, घास के आसन से धन/यश हानि, पत्तों के आसन से मन में भ्रम उत्पन्न होते हैं।

शान्ति कर्म में कम्बल और सर्वसिद्धि के लिए चित्रित (रंग-बिरंगे) कम्बल का आसन होना चाहिए–

"शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्र कम्बलम्।।"

(5) **तिलक धारण**–

सत्यं शौचं जपो होमस्तीर्थं देवादिपूजनम्।
तस्य व्यर्थमिदं सर्वं यस्त्रिपुण्ड्रं न धारयेत्।। (भविष्य पुराण)

तिलक के बिना सत्कर्म सफल नहीं होते। देव पूजन, मन्त्र जप, होम, तीर्थ, शौचादि कार्यों में नीचे से ऊपर की ओर अर्ध्वपुण्ड्र लगाकर शुभ कृत्य करने चाहिएं–

ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्या कर्म-समाचरेत्।
अकृत्वा भालतिलकं तस्य कर्म निरर्थकम्।।

तिलक बैठकर लगाना चाहिए। भगवान् पर चढ़ाने से बचे हुए चन्दन को ही लगाना चाहिए।

(6) भगवान् को ताम्र पात्र में अर्पण की वस्तु प्रिय होती है। ताम्र बर्तन मंगलस्वरूप एवं पवित्र माना जाता है। (वाराहपुराण)

(7) चाँदी पितरों को परमप्रिय है, परन्तु देव कार्यों में इसे वर्जित माना गया है। अतएव देव कार्य में चाँदी को दूर रखना चाहिए।

शिवनेत्रोद्‌भवं यस्मात् तस्मात् पितृवल्लभम्।
अमगंलम् तद् यत्नेन देवकार्येषु वर्जयेत्।। (मत्स्य पुराण)

(8) भगवान् की पूजा करते समय दीपक का स्पर्श हो जाने पर हाथ धो लेना चाहिए, अन्यथा दोष लगता है। (वाराह पुराण)

(9) घी का दीपक देवता के दाएं भाग में तथा तेल का दीपक बाएँ भाग में रखना चाहिए।

(10) कार्तवीर्य को दीप प्रिय, सूर्य को नमस्कार प्रिय है, गणेश को तर्पण प्रिय है, दुर्गा को अर्चना प्रिय है और शिव को अभिषेक प्रिय है। अतः इन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए इनके प्रिय कार्य ही करना चाहिए।

(11) विष्णु के मन्दिर की चार बार, शंकर के मन्दिर की आधी बार, देवी के मन्दिर की एक बार, सूर्य के मन्दिर की सात बार और गणेश के मन्दिर की तीन बार परिक्रमा करनी चाहिए।

(12) भोजन सदा पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके खाने से मनुष्य की आयु व धन बढ़ता है। दक्षिण की ओर मुख करके खाने से प्रेतत्व की प्राप्ति होती है, पश्चिम की ओर मुख करके खाने से मनुष्य रोगी होता है।

प्राच्यां नरो लभेदायुः याम्यां प्रेतत्वमश्नुते
वारूणे च भवेद्रोगी आयुर्वित्तं तदोत्तरे।। (पद्म पुराण)

(13) भगवान् को भोग लगाए बिना भोजन करना राक्षसी भोजन कहलाता है। भोजन में तुलसी दल छोड़कर जलसहित अन्न भगवान् को अर्पित करें। भोजन को शुद्धवस्त्रादि से आवृत करके निम्न मन्त्र को पढ़ें–

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये।
गृहाण सुमुखो भूत्व प्रसीद परमेश्वर।।

(14) **सूर्य अर्घ्य मन्त्र**–

एहि सूर्य ! सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर नमोऽस्तुते।।

(15) **रोग नाश व दीर्घायु हेतु मन्त्र**–

सूर्यार्घ्य पात्र में से शेष बचे जल को अपने मस्तक एवं आँखों में लगाएँ तथा कुछ चरणामृत निम्न मन्त्र पढ़कर ग्रहण करें।

अकालमृत्यु हरणं सर्वव्याधि विनाशनम्।
सूर्य पादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम्।।

प्रमुख पर्व-त्योहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (सन् 2014-15 ई.)

जनवरी 2014 ई.

इंगलिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बुध
पुत्रदा एकादशी व्रत	11 जन. शनि
लोहड़ी पर्व	13 जन. चंद्र
मकर संक्रान्ति	14 जन. मंग
माघस्नान प्रारम्भ	16 जन. गुरु
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	19 जन. रवि
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. रवि
माघ (मौनी) अमावस	30 जन. गुरु

फरवरी

गौरी तृतीया (गोंतरी)	2 फर. रवि
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	2 फर. रवि
वसन्त पंचमी, श्रीपंचमी	4 फर. मंग
सरस्वती पूजन	4 फर. मंग
रथ-आरोग्य सप्तमी	6 फर. गुरु
भीष्माष्टमी	7 फर. शुक्र
भीष्मद्वादशी, तिल (१२)	11 फर. मंग.
माघ पूर्णिमा	14 फर. शुक्र
माघस्नान समाप्त	14 फर. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जयंती	14 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर. गुरु

मार्च

होलाष्टक प्रारम्भ	8 मार्च शनि
अन्नपूर्णा अष्टमी	8 मार्च शनि
गोविन्द द्वादशी	12 मार्च बुध
होलिका दहन (प्रदोषकाले)	16 मार्च रवि
होलाष्टक समाप्त	16 मार्च रवि
पूर्णिमा, होली पर्व	16 मार्च रवि
होला मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब)	17 मार्च चंद्र
वसन्तोत्सव	17 मार्च चंद्र
महाविषुव दिवस	20 मार्च गुरु
शीतलाष्टमी व्रत	24 मार्च चंद्र
वारुणी पर्व	28 मार्च शुक्र
वि. संवत् 2070 पूर्ण	30 मार्च रवि
वि. संवत् 2071 प्रा.	31 मार्च चंद्र
चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रा.	31 मार्च चंद्र

अप्रैल

गौरी तृतीया (गणगौर)	2 अप्रै. बुध
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	4 अप्रै. शुक्र
स्कन्द षष्ठी	5 अप्रै. शनि
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	7 अप्रै. चंद्र
भवान्युत्पत्ति	7 अप्रै. चंद्र
श्री रामनवमी	8 अप्रै. मंग.
वासन्त नवरात्रे समाप्त	8 अप्रै. मंग.
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	12 अप्रै. शनि
श्रीमहावीर जयन्ती	13 अप्रै. रवि
वैशाख संक्रान्ति, वैशा.	14 अप्रै. सोम
वैशाखस्नान प्रारम्भ	15 अप्रै. मंग
गुड फ्राइडे	18 अप्रै. शुक्र

मई

मई (मज़दूर) दिवस	1 मई गुरु
भगवान् परशुराम जयं.	1 मई गुरु
अक्षय तृतीया	2 मई शुक्र
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं.	4 मई रवि
श्रीगङ्गा जयन्ती	6 मई मंग.
बगुलामुखी जयन्ती	7 मई बुध
जानकी जयं. (सीता ९)	8 मई गुरु
श्रीनृसिंह जयन्ती	13 मई मंग.
श्रीकूर्म जयन्ती	14 मई बुध
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	14 मई बुध
वैशाखस्नान समाप्त	14 मई बुध
भद्रकाली एकादशी	24 मई शनि
ज्येष्ठ (भावुका) अमा.	28 मई बुध
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	28 मई बुध
शनैश्चर जयन्ती	28 मई बुध
रम्भा तृतीया व्रत	31 मई शनि

जून

श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं.	6 जून शुक्र
श्री गङ्गा दशहरा (हरिद्वार)	8 जून रवि
निर्जला एकादशी व्रत	9 जून सोम
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा)	12 जून गुरु
सन्त कबीर जयन्ती	13 जून शुक्र
ज्येष्ठ पूर्णि. (ज्येष्ठी योग)	13 जून शुक्र
सायन दक्षिणायन प्रा.	21 जून शनि
श्रीजगन्नाथ यात्रा (पुरी)	29 जून रवि

जुलाई

कुमार षष्ठी	3 जुला. गुरु
विवस्वत सप्तमी	4 जुला. शुक्र
हरिशयनी एका. (वैष्ण.)	9 जुला. बुध
चातुर्मास्य व्रत नियम प्रा.	9 जुला. बुध
श्रीविष्णुशयनोत्सव (वै.)	9 जुला. बुध
कोकिला व्रत	11 जुला. शुक्र
शिवशयनोत्सव	11 जुला. शुक्र
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	12 जुला. शनि
अङ्गारकी गणेश चतुर्थी	15 जुला. मंग.
हरियाली-अमावस	26 जुला. शनि
मे. चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) प्रा.	27 जुला. रवि
मधुस्रवा-हरियाली तीज	30 जुला. बुध

अगस्त

नाग-पंचमी	1 अग. शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी (मे. चिंतपूर्णी)	4 अग. चंद्र
श्रावणी उपाकर्म	10 अग. रवि
रक्षा-बन्धन (राखी)	10 अग. रवि
श्रावण पूर्णिमा	10 अग. रवि
श्रीगणेश बहुला चतुर्थी व्रत	13 अग. बुध
चन्दन षष्ठी व्रत	15 अग. शुक्र
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. शुक्र
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)	17 अग. रवि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णा.)	18 अग. सोम
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	18 अग. सोम
श्रीगुग्गा नवमी	19 अग. मंग.
वत्स द्वादशी (पूजा)	22 अग. शुक्र
भाद्रपद-सोमवती अमा.	25 अग. चंद्र
कुशाग्रहणी, पिठोरी अमा.	25 अग. चंद्र
हरितालिका तृतीया	28 अग. गुरु
सिद्धि विनायक व्रत	29 अग. शुक्र
कलंक चतुर्थी, पत्थर चौथ	29 अग. शुक्र
साम-उपाकर्म (हस्त नक्षत्रे)	29 अग. शुक्र
ऋषि पंचमी	30 अग. शनि
सूर्य षष्ठी व्रत	31 अग. रवि

सितम्बर

सन्तान सप्तमी व्रत	1 सितं. चंद्र
श्रीराधाष्टमी	2 सितं. मंग.
दूर्वाष्टमी व्रत	2 सितं. मंग.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.	2 सितं. मंग.
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन)	3 सितं. बुध
श्रीवामन जयन्ती	6 सितं. शनि
अनन्त चतुर्दशी व्रत	8 सितं. चंद्र
मे. बाबा सोढल (जालंधर)	8 सितं. चंद्र
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध	8 सितं. चंद्र
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रा.	9 सितं. मंग.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	16 सितं. मंग.
महालय श्राद्ध समाप्त	23 सितं. मंग.
सर्वपितृ श्राद्ध	23 सितं. मंग.
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ	25 सितं. गुरु
उपाङ्ग ललिता व्रत	29 सितं. चंद्र

अक्तूबर

सरस्वती आवाहन	1 अक्तू. बुध
सरस्वती पूजन	2 अक्तू. गुरु
महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. गुरु
श्रीदुर्गाष्टमी	2 अक्तू. गुरु
सरस्वती बलिदान (उ. षाभे)	3 अक्तू. शुक्र
सरस्वती विसर्जन (श्रवणे)	3 अक्तू. शुक्र
महानवमी, नवरात्रे समा.	3 अक्तू. शुक्र
विजयादशमी (दशहरा)	3 अक्तू. शुक्र
भरत-मिलाप	4 अक्तू. शनि
शरद् पूर्णिमा व्रत	7 अक्तू. मंग.
कोजागर व्रत	7 अक्तू. मंग.
महर्षि वाल्मीकि जयं.	8 अक्तू. बुध
ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण	8 अक्तू. बुध
कार्तिक स्नान प्रा.	8 अक्तू. बुध
व्रत करवा-चौथ	11 अक्तू. शनि
अहोई अष्टमी व्रत	15 अक्तू. बुध
गोवत्स द्वादशी	20 अक्तू. चंद्र
धन त्रयोदशी	21 अक्तू. मंग.
श्रीहनुमान जयन्ती	22 अक्तू. बुध
नरक चतुर्दशी	22 अक्तू. बुध
श्रीमहालक्ष्मी पूजन	23 अक्तू. गुरु
दीपावली	23 अक्तू. गुरु
विश्वकर्मा दिवस (पं.)	24 अक्तू. शुक्र
अन्नकूट, गोवर्धन पूजा	24 अक्तू. शुक्र
यमद्वितीया, भाई-दूज	25 अक्तू. शनि
विश्वकर्मा पूजा	25 अक्तू. शनि
सूर्य षष्ठी व्रत (बिहार)	29 अक्तू. बुध
गोपाष्टमी	31 अक्तू. शुक्र

नवम्बर

अक्षय नवमी	1 नवं. शनि
भीष्मपंचक प्रारम्भ	2 नवं. रवि
देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत	3 नवं. चंद्र
चातुर्मास्य व्रतादि समा.	3 नवं. चंद्र
हरिप्रबोधोत्सव	4 नवं. मंग.
तुलसी विवाह	4 नवं. मंग.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	5 नवं. बुध
कार्तिक पूर्णिमा	6 नवं. गुरु
श्रीगुरुनानक देव जयं.	6 नवं. गुरु
भीष्मपंचक समाप्त	6 नवं. गुरु
कार्तिक स्नान समाप्त	6 नवं. गुरु
पद्मक योग (पुष्कर)	7-8 नवं.
श्रीकालभैरवाष्टमी	14 नवं. शुक्र
मार्ग. शनिवारी अमा.	22 नवं. शनि
स्कन्द (गुह) षष्ठी	27 नवं. गुरु
मित्र (विष्णु) सप्तमी	28 नवं. शुक्र

दिसम्बर

मोक्षदा एकादशी व्रत	2 दिसं. मंग.
श्रीगीता जयन्ती	2 दिसं. मंग.
पिशाचमोचन श्राद्ध	5 दिसं. शुक्र
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	5 दिसं. शुक्र
सायन उत्तरायण प्रा:	21 दिसं. रवि
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. गुरु
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	28 दिसं. रवि

जनवरी-2015 ई०

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत	1 जन. गुरु
पौष पूर्णिमा	5 जन. चंद्र
माघस्नान प्रारम्भ	5 जन. चंद्र
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	8 जन. गुरु
लोहड़ी पर्व	13 जन. मंग.
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. बुध
पुण्यस्नानादि माघ संक्रां.	15 जन. गुरु
माघ (मौनी) अमावस	20 जन. मंग.
भौमवती अमावस	20 जन. मंग.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	23 जन. शुक्र
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	23 जन. शुक्र
वसन्त (श्री) पंचमी	24 जन. शनि
सरस्वती पूजन	24 जन. शनि
रथ-आरोग्य सप्तमी	26 जन. चंद्र
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. चंद्र
भीष्माष्टमी	27 जन. मंग.
भीष्म द्वादशी, तिल १२	31 जन. शनि

फरवरी-2015 ई०

माघ पूर्णिमा	3 फर. मंग.
माघस्नान समाप्त	3 फर. मंग.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	3 फर. मंग.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर. बुध
होलाष्टक प्रारम्भ	26 फर. गुरु
अन्नपूर्णा-अष्टमी	26 फर. गुरु

मार्च -2015 ई०

गोविन्द द्वादशी	2 मार्च चंद्र
होलिका दहन (प्रदोष में)	5 मार्च गुरु
होलाष्टक समाप्त	5 मार्च गुरु
पूर्णिमा, होली पर्व	5 मार्च गुरु
वसन्तोत्सव	6 मार्च शुक्र
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	6 मार्च शुक्र
शीतलाष्टमी व्रत	14 मार्च शनि
वारुणी पर्व	18 मार्च बुध
महाविषुव दिवस	20 मार्च शुक्र
वि. संवत् 2071 पूर्ण	20 मार्च शुक्र

एकादशी व्रत-2014-15 ई.

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी से युक्त एकादशी हो तो विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है।

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	11 जन. शनि
षट्तिला (माघ कृष्ण)	27 जन. चंद्र
जया (माघ शुक्ल)	10 फर. चंद्र
विजया (फाल्गुन कृष्ण) वैष्ण*	26 फर. बुध
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	12 मार्च बुध
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	27 मार्च गुरु
कामदा (चैत्र शुक्ल)	11 अप्रै. शुक्र
वरुथिनी (वैशाख कृष्ण)	25 अप्रै. शुक्र
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	10 मई शनि
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	24 मई शनि
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	9 जून चंद्र
योगिनी (आषाढ़ कृष्ण)	23 जून चंद्र
देवशयनी (आषाढ़ शु.) वैष्ण*	9 जुला. बुध
कामिका (श्रावण कृष्ण)	22 जुला. मंग.
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	7 अग. गुरु
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	21 अग. गुरु
पद्मा (भाद्र. शुक्ल)	5 सितं. शुक्र
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	19 सितं. शुक्र
पापांकुशा (आश्वि. शुक्ल) वैष्ण*	5 अक्तू. रवि
रमा (कार्तिक कृष्ण)	19 अक्तू. रवि
देवप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	3 नवं. चंद्र
उत्पन्ना (मार्ग. कृष्ण)	18 नवं. मंग.
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	2 दिसं. मंग.
सफला (पौष कृष्ण)	18 दिसं. गुरु

(सन् 2015 ई.)

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	1 जन. गुरु
षट्तिला (माघ कृष्ण)	16 जन. शुक्र
जया (माघ शुक्ल)	30 जन. शुक्र
विजया (फाल्गु. कृष्ण)	15 फर. रवि
आमलकी (फाल्गु. शुक्ल)	1 मार्च रवि
पापमोचनी (चैत्र कृ.) वैष्ण.*	17 मार्च मंग.

*वैष्ण.-वैष्णवों का व्रत

स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत के दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: यह है कि यह तिथि स्मार्तों और वैष्णवों-दोनों के लिए ग्राह्य है।

श्रीसत्यनारायण व्रत
(सन् 2014-15)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	15 जन. बुध
माघ	14 फर. शुक्र
फाल्गुन	16 मार्च रवि
चैत्र	14 अप्रै. चंद्र
वैशाख	14 मई बुध
ज्येष्ठ	12 जून गुरु
आषाढ़ (देखें पृ. 86)	11 जुला. शुक्र
श्रावण	10 अग. रवि
भाद्रपद	8 सितं. चंद्र
आश्विन	7 अक्तू. मंग.
कार्तिक	6 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष (देखें पृ. 88)	5 दिसं. शुक्र

——(सन् 2015 ई.)——

पौष	4 जन. रवि
माघ	3 फर. मंग.
फाल्गुन	5 मार्च गुरु

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल सन् 2014-15 ई.

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. मंग.	13-13	सूर्योदय बाद सारा दिन
फागुन संक्रान्ति	12 फर. बुध	26-13	अगले दिन प्रात: 8/37 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शुक्र	23-06	मध्याह्न बाद
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. चंद्र	7-35	सूर्योदय से दोप. 13/59 तक
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई बुध	28-27	अगले दिन प्रात: 10/51 तक
आषाढ़ संक्रान्ति	15 जून रवि	11-02	सूर्योदय बाद सारा दिन
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. बुध	21-52	मध्याह्न बाद
भाद्र. संक्रान्ति	17 अग. रवि	6-15	सूर्योदय से दोप. 12/39 तक
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. मंग.	30-11	अगले दिन दोपहर 12/35 तक
कार्तिक संक्रान्ति	17 अक्तू. शुक्र	18-09	दोपहर 11/45 बाद
मार्ग. संक्रान्ति	16 नवं. रवि	18-00	दोपहर 11/36 बाद
पौष संक्रान्ति	16 दिसं. मंग.	8-42	दोपहर 15/06 तक
माघ संक्रान्ति (15)	14 जन. बुध	19-26	मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रात: 11/23 तक
फागुन संक्रान्ति	13 फर. शुक्र	8-26	सूर्योदय से दोप. 14/50 तक
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च शनि	29-18	अगले दिन दोप. 11/42 तक

अमावस्याएं (स्नान-दानार्थ)

पौष	1 जन. बुध
माघ (मौनी)	30 जन. गुरु
फाल्गुन (शनैश्चरी)	1 मार्च शनि
चैत्र	30 मार्च रवि
वैशाख (भौमवती)	29 अप्रै. मंग.
ज्येष्ठ	28 मई बुध
आषाढ़	27 जून शुक्र
श्रावण (शनैश्चरी)	26 जुला. शनि
भाद्रपद (सोमवती)	25 अग. सोम
आश्विन	24 सितं. बुध
कार्तिक	23 अक्तू. गुरु
मार्गशीर्ष (शनैश्चरी)	22 नवं. शनि
पौष (9/16 बाद)	21 दिसं. रवि

——(सन् 2015 ई.)——

माघ (मौनी) (भौमवती)	20 जन. मंग.
फाल्गुन (9/03 बाद)	18 फर. बुध
चैत्र	20 मार्च शुक्र

-श्रीगणेश चतुर्थी व्रत-

माघ कृ. (संकटचौथ)	19 जन. रवि
माघ शु. (तिलचतुर्थी)	2 फर. रवि
फाल्गुन (अङ्गारकी)	18 फर. मंग.
चैत्र	20 मार्च गुरु
वैशाख	18 अप्रै. शुक्र
ज्येष्ठ	17 मई शनि
आषाढ़	16 जून चंद्र
श्रावण (अङ्गारकी)	15 जुला. मंग.
भाद्रपद	13 अग. बुध
आश्विन	12 सितं. शुक्र
कार्तिक (करवाचौथ)	11 अक्तू. शनि
मार्गशीर्ष	10 नवं. चंद्र
पौष (अङ्गारकी)	9 दिसं. मंग.

(सन् 2015 ई.)

माघ कृ. (संकष्ट चौथ)	8 जन. गुरु
फाल्गुन	7 फर. शनि
चैत्र	9 मार्च चंद्र

पितृपक्ष में श्राद्ध-2014 ई.

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ यज्ञ एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2014 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	8 सितं. चंद्र
प्रतिपदा का श्राद्ध	9 सितं. मंग.
द्वितीया का श्राद्ध	10 सितं. बुध
तृतीया का श्राद्ध	11 सितं. गुरु
चतुर्थी का श्राद्ध	12 सितं. शुक्र
पंचमी का श्राद्ध	13 सितं. शनि
षष्ठी का श्राद्ध	14 सितं. रवि
सप्तमी का श्राद्ध	15 सितं. चंद्र
अष्टमी का श्राद्ध	16 सितं. मंग.
नवमी का श्राद्ध	17 सितं. बुध
दशमी का श्राद्ध	18 सितं. गुरु
एकादशी का श्राद्ध	19 सितं. शुक्र
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	20 सितं. शनि
त्रयोदशी का श्राद्ध	21 सितं. रवि
✤चतुर्दशी का श्राद्ध	22 सितं. चंद्र
अमावस श्राद्ध	23 सितं. मंग.
सर्वपितृ श्राद्ध	23 सितं. मंग.

✤= चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृतों का श्राद्ध अमावस्या में करने का विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	6 फर. गुरु
श्रीहोलिका दहन (प्रदोषे)	16 मार्च रवि
श्रीभगवतनारायण जयं.	20 मार्च गुरु
रामनवमी पर्व	8 अप्रै. मंग.
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. सोम
जानकी जयन्ती	8 मई गुरु

गंगा दशहरा	8 जून रवि
गुरु पूर्णिमा	12 जुला. शनि
तुलसी जयन्ती पर्व	3 अग. रवि
कृष्ण जयन्ती पर्व	17-18 अग.
महंत गु. गोबिन्ददास जयं.	27 अक्तू. चंद्र

प्रदोष व्रत-2014-15 ई.

पौष शुक्ल (सोमप्रदोष)	13 जन. सोम
माघ कृष्ण (भौम)	28 जन. मंग.
माघ शुक्ल	12 फर. बुध
फाल्गुन कृष्ण	27 फर. गुरु
फाल्गुन शुक्ल	14 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण	28 मार्च शुक्र
चैत्र शुक्ल	12 अप्रै. शनि
वैशाख कृष्ण	26 अप्रै. शनि
वैशाख शुक्ल	12 मई सोम
ज्येष्ठ कृष्ण (सोम)	26 मई सोम
ज्येष्ठ शुक्ल (भौम)	10 जून मंग.
आषाढ़ कृष्ण (भौम)	24 जून मंग.
आषाढ़ शुक्ल	10 जुला. गुरु
श्रावण कृष्ण	24 जुला. गुरु
श्रावण शुक्ल	8 अग. शुक्र
भाद्रपद कृष्ण	22 अग. शुक्र
भाद्रपद शुक्ल	6 सितं. शनि
आश्विन कृष्ण	21 सितं. रवि
आश्विन शुक्ल	6 अक्तू. चंद्र
कार्तिक कृष्ण (भौम)	21 अक्तू. मंग.
कार्तिक शुक्ल (भौम)	4 नवं. मंग.
मार्गशीर्ष कृष्ण	20 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष शुक्ल	4 दिसं. गुरु
पौष कृष्ण	19 दिसं. शुक्र

(सन् 2015 ई.)

पौष शुक्ल	2 जन. शुक्र
माघ कृष्ण	18 जन. रवि
माघ शुक्ल	1 फर. रवि
फाल्गुन कृष्ण (सोम)	16 फर. चंद्र
फाल्गुन शुक्ल (सोम)	2 मार्च चंद्र
चैत्र कृष्ण	18 मार्च बुध

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. रवि
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. गुरु
स्वा. विवेकानन्द (मतान्तरे)	23 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	23 जन. गुरु
लाला लाजपतराय जी	28 जन. मंग.
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	1 फर. शनि
श्रीगुरु रविदास जी	14 फर. शुक्र
गुरु रामदास जी	24 फर. चंद्र
स्वामी दयानन्द सरस्वती	24 फर. चंद्र
श्रीरामकृष्ण परमहंस	3 मार्च चंद्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	16 मार्च रवि
सन्त तुकाराम जी	18 मार्च मंग
शहीदी स: भगतसिंह	23 मार्च रवि
श्रीमहावीर	13 अप्रै. रवि
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. चंद्र
श्रीवल्लभाचार्य	25 अप्रै. शुक्र
श्रीछत्रपति शिवाजी	1 मई गुरु
भगवान् परशुराम	1 मई गुरु
आद्यगुरु शंकराचार्य जी	4 मई रवि
स्वामी रामानुजाचार्य	5 मई चंद्र
श्रीरविन्द्रनाथ टैगोर	7 मई बुध
महात्मा बुद्ध	14 मई बुध
श्रीनारद जयन्ती	16 मई शुक्र
श्रीमहाराणा प्रताप	31 मई शनि
सन्त कबीर जयं.	13 जून शुक्र
श्रीध्यानू भगत	24 जून मंग.
ऋषि वेदव्यास	12 जुला. शनि
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. बुध
शहीदी दि. स: ऊधम सिंह	31 जुला. गु.
लोकमान्य तिलक-स्मरण	1 अग. शुक्र
गोस्वा. तुलसीदास जी	3 अग. रवि
सन्त ज्ञानेश्वर	17 अग. रवि
भक्त नवल (जोधपुर)	17 अग. रवि
श्रीचन्द्र महाराज (उदासीन)	3 सितं. बुध
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. चंद्र
महाराजा अग्रसेन	25 सितं. गुरु
महात्मा गांधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. गुरु
श्रीमाधवाचार्य जी	4 अक्तू. शनि
श्रीधनवन्तरी	21 अक्तू. मंग.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. बुध
श्रीहनुमान	22 अक्तू. बुध
श्रीविश्वकर्मा जयं.	25 अक्तू. शनि
भक्त नामदेव जयं.	3 नवं. चंद्र
श्री वीर वैरागी	5 नवं. बुध
श्रीगुरु नानकदेव जी	6 नवं. गुरु
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. गुरु
श्रीजवाहरलाल नेहरू	14 नवं. शुक्र
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. चंद्र
श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं. रवि
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	3 दिसं. बुध
श्रीदत्तात्रेय जयंती	5 दिसं. शुक्र
शहीद स: ऊधमसिंह जयं.	26 दिसं. शुक्र

(सन् 2015 ई.)

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. चंद्र
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	12 जन. चंद्र
सिद्ध बा. लालदयाल जी	22 जन. गुरु
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शुक्र
लाला लाजपतराय जी	28 जन. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	3 फर. मंग.
गुरु रामदास जी	13 फर. शुक्र
महर्षि दयानन्द सरस्वती	14 फर. शनि
श्रीरामकृष्ण परमहंस	20 फर. शुक्र
श्रीचैतन्य महाप्रभु	5 मार्च गुरु
सन्त तुकाराम जी	7 मार्च शनि
शहीदी स: भगतसिंह	23 मार्च चंद्र

पूर्णिमा व्रत—2014-15 ई.

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	16 जन. गुरु
माघ	14 फर. शुक्र
फाल्गुन	16 मार्च रवि
चैत्र	15 अप्रै. मंग.
वैशाख	14 मई बुध
ज्येष्ठ	13 जून शुक्र
आषाढ़	12 जुला. शनि
श्रावण	10 अग. रवि
भाद्रपद	9 सितं. मंग.
आश्विन	8 अक्तू. बुध
कार्तिक	6 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष	6 दिसं. शनि
पौष (2015 ई.)	5 जन. चंद्र
माघ	3 फर. मंग.
फाल्गुन	5 मार्च गुरु

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	8 अप्रै. मंग.
श्रीमातङ्गी जयन्ती	2 मई शुक्र
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	7 मई बुध
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	14 मई बुध
श्रीधूमावती जयन्ती	6 जून शुक्र
श्रीमहाकाली जयन्ती	17 अग. रवि
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	6 सितं. शनि
श्रीकमला जयन्ती	11 अक्तू. शनि
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	6 दिसं. शनि
श्रीललिता जयन्ती	3 फर. (2015)

दशावतार जयन्तियां-2014 ई.

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	2 अप्रै. बुध
श्रीरामावतार जयन्ती	8 अप्रै. मंग.
श्रीपरशुराम जयन्ती	1 मई गुरु
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	13 मई मंग.
श्रीकूर्मावतार जयंती	14 मई बुध
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	14 मई बुध
श्रीकल्कि अवतार	1 अग. शुक्र
श्रीकृष्णावतार	17 अग. रवि
श्रीवाराहावतार	28 अग. गुरु
श्रीवामनावतार	6 सितं. शनि

मास-शिवरात्रि व्रत-2014-15

माघ	29 जन. बुध
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	27 फर. गुरु
चैत्र	29 मार्च शनि
वैशाख	27 अप्रै. रवि
ज्येष्ठ	26 मई सोम
आषाढ़	25 जून बुध
श्रावण	25 जुला. शुक्र
भाद्रपद	23 अग. शनि
आश्विन	22 सितं. सोम
कार्तिक	22 अक्तू. बुध
मार्गशीर्ष	20 नवं. गुरु
पौष	20 दिसं. शनि

—(सन् 2015 ई.)—

माघ	19 जन. सोम
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	17 फर. मंग
चैत्र	18 मार्च बुध

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और यू.पी. के मुख्य मेले—सन् 2014 ई.

मरोज पर्व (जौनसार) उत्तरां.	11 जन.
मेला लोहड़ी (पं.)	13 जन.
मे. दांऊ (चण्डीगढ़) मोहाली	13 जन.
बिन्दरख (रोपड़) (पं.)	13-14 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	14 जन.
मे. मौनी अमावस (हरिद्वार आदि) उत्तरां.	30 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.) (बरसी सन्त अतर सिंह जी)	1 फर.
मे. वसन्त पंचमी	4 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	12-14 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	13-14 फर.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	14 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	27 फर.
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	27 फर.
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	8-16 मार्च
मे. सावातिल्ला	14 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा.) पं.	17 मार्च
मेला होली, ठाकुरद्वारा-जमशेर	17 मार्च
श्रीवीरमदास बधौछी (पटियाला)	20 मार्च
श्रीगुरुरामराय (देहरादून) उत्तरां.	21 माच
नवचण्डी (मेरठ) यू.पी.	21 मार्च
मे. शीतलामाता (कुराली) पं.	23-24 मार्च
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	29 मार्च
भण्डा. स्वा. संतदास, जालं.	30 मार्च
मे. चीमा (नानकसर)	31 मार्च
मे. त्रिपुरमालिनी (जालंधर) पं.	4 अप्रै.
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	31 मा.-8 अप्रै.
गौरी तृतीया (जयपुर) राज.	2 अप्रै.
वैशाखी मेला-श्रीलक्ष्मण चौंतरा-हाँसी (हरियाणा)	4-14 अप्रै.
माईसरखाना (बठिण्डा) पं.	5 अप्रै.
मे. वैशाखी (पं.)	14 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाज़िल्का)	14 अप्रै.
मे. काँसादेवी चण्डीगढ़	14-15 अप्रै.
मे. ढुंगरा डांडा, नागी--बागीधार (उत्तराखण्ड)	17 अप्रै.
मे. पिंजौर (हरियाणा)	29 अप्रै.
वीर केसरीचन्द मेला-चौलीथात (चकराता) उ.खण्ड	3 मई
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	6 मई
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमजारा, नवांशहर पं.	23-24 मई
मे. भद्रकाली-कपूरथला (पं.)	24 मई
मे. जखोली (उत्तराखण्ड)	2 जून
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि भूपतवाला रोड, हरिद्वार	3 जून
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	8 जून
रथयात्रा उत्सव, पुरी, उड़ीसा	29 जून
साईं टेऊँराम जयंती, सप्तसरोवर भूपतवाला रोड, हरिद्वार	3 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	12 जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	12 जुला.
मे. श्रावण कांवढ़ (नीलकंठ) उत्तरां	16 जुला.
मे. नाग-पंचमी (राजस्थान)	16 जुला.
पं. जोगराज (जंडियाला)	25-26 जुला.
गौरी तीज-जयपुर (राज.)	30 जुला.
मे. सिंघारा तीज (पं.)	30 जुला.
मे. नुणाई (जौनसार-बावर) उत्तरां	4 अग.
मे. जयन्ती-देवी (मुल्लापुर--गरीबदास), चण्डीगढ़	9-10 अग.
मे. बग्गी-देहरी, गाँव-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	10 अग.
मे. भद्रराज (जौनसार) उत्तरां	17 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	17-18 अग.
मे. गुग्गा नवमी (अम्बाला)	19 अग.
गुग्गा जाहिरपीर, नकोदर (पं.)	19 अग.
गोगामेड़ी, श्रीगंगानगर, राज.	19 अग.
मे. बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	25 अग.
रानी सती मेला (झुंझुनूं) राज.	25 अग.
गोसाईंआणा (कुराली) पं.	27 अग.
रामदेव रोणेचा (जोधपुर) राज.	4 सितं.
वामन द्वादशी (अम्बाला)	6 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	7-9 सितं.
मे. बाबा सोढल (जालन्धर)	8 सितं.
मे. गोईन्दवाल सा. (तरनता)(पं.)	9 सितं.
मे. गुग्गापीर (लुधियाना)	9 सितं.
मे. आशापूर्णी (पठानकोट)	25 सितं.-3 अक्तू
अचलेश्वर (बटाला)	2-4 नवं.
मे. जन्म वीरवैरागी (नकोदर)	5 नवं.
मे. बग्गी देहरी, गाँ-कण्डे--लालोवाल (गुरदासपुर)	5-6 नवं.
मे. रामतीर्थ (अमृतसर) पं.	6 नवं.
कपालमोचन (हरियाणा)	6 नवं.
मे. श्रीगढ़गंगा, पुष्कर तीर्थ	6 नवं.
पुरानी दीपावली-जौनसार, जौनपुर (उत्तरां.)	23 नवं.
भं. संत प्रीतमदास, जालं.	30 नवं.
मे. चमकौर साहिब	21-23 दिसं.
मे. जोड़-फतेहगढ़ सा. प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला-श्रीहरवल्लभ (जालं.) प्रा.	26 दिसं.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम भूपतवाला (हरिद्वार)-2014

स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	4 फर.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	19 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	17 अप्रै.
श्री स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	30 अप्रै.
महामंड. गुरु प्रेमानन्दजी जयन्ती	12 जुला
निर्वाण महा. गुरु प्रेमानन्द जी	31 जुला.

जम्मू-कश्मीर के मेले

लोहड़ी पर्व	13 जन.
मे. शिवरात्रि (पंजवटी-दवलैहड़) (जम्मू)	27 फर.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	28-29 मार्च
गुप्तगंगा, कफी-अखनूर	29 मार्च
नवरात्रे पर्व	31 मार्च-8 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	7 अप्रै.
मे. रामबन	8 अप्रै.
गुरुगद्दी 1008 सत्गुरु बाबा कांशीगिरजी(सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	13 मई
मे. मानसर	4-5 जून
मे. क्षीर (खीर) भवानी	6 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	13 जून
माँ सरथल देवी यात्रा (किश्तवाड़) प्रा.	6 जुला.
मे. शरीक भवानी	6-7 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	8 जुला.
मे. ज्वालामुखी	11 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	12 जुला.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	10 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य	10 अग.
मे. रामबन	17 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	23-24 अग.
मेला पात (भद्रवाह)	30 अग.-1 सितं.
मे. आशापति (मार्तण्ड)	23-24 सितं.
मे. झिड़ी बाबा	6 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	21 नवं.

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के मुख्य पर्व-2014 ई.

श्रीबाबा लालदयाल जयंती	1 फर. श.
वसन्त-पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	4 फर. मं.
होलिका दहन (प्रदोष में)	16 मार्च र.
श्रीरामनवमी पर्व	8 अप्रै. मं.
वैशाखी पर्व	14 अप्रै. चं.
महंत नारायणदास जयं.	29 मई गु.
व्यास पूजा	12 जुला. श.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी	17 अग. र.
विजयादशमी (दशहरा)	3 अक्तू. शु.
दीपावली पर्व	23 अक्तू. गु.
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. श.
(सन् 2015 ई.)	
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	22 जन. गु.
वसन्त पंचमी	24 जन. श.

तपोभूमि श्रीबाबा निकोदरदास धर्मशाल महन्ता, अम्ब, ऊना (हि.प्र.)

लोहड़ी पर्व	13 जन. सोम
मकर संक्रान्ति	14 जन. मंग
श्रीमहाशिवरात्रि	27 फर. गुरु
चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ	31 मार्च चंद्र
वैशाख संक्रान्ति मेला	14 अप्रै. चंद्र
गुरु पूर्णिमा	12 जुला. शनि
अनन्त चतुर्दशी	8 सितं. चंद्र
श्राद्ध षष्ठी	14 सितं. रवि
गोपाष्टमी	31 अक्तू. शुक्र
पंचभीष्म	2-6 नवं.

विशेष नोट- यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/ज़िले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेज़ी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है-अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें-सम्पादक।

हिमाचल प्रदेश के मेले–सन् 2014 ई.

श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	4 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	**27 फ.-7 मार्च**
मे. काठगढ़	27 फर.
मे. रिवालसर (मण्डी)	27 फर.
स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	27 फर.
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	1 मार्च
बड़भाग सिंह (ऊना)	8-17 मार्च
मे. बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	16-20 मार्च
होला मेला (पांओटा सा.)	17 मार्च
मे. नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
बालासुन्दरी (सिरमौर)	31 मा.-15 अप्रै.
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	31 मा.-7 अप्रै.
मे. ललवाड़ (सुन्दरनगर)	2-7 अप्रै.
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मे. लाहौल (मण्डी)	6 अप्रै.
मे. रोहरू (महासू)	11-12 अप्रै.
मारकण्डा (बिलासपुर)	12-16 अप्रै.
मे. नैनादेवी-धर्मपुर-बनवार	13 अप्रै.
कालेश्वर महादेव, देहरा, कांगड़ा	14 अप्रै.
मे. राजगढ़ (सिरमौर)	14-16 अप्रै.
मे. रिवालसर (मण्डी)	14 अप्रै.
मे. बिशू प्रारम्भ	14 अप्रै.
मे. कशाधा हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. त्राम्बली (कुल्लू)	17-18 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	20-21 अप्रै.
चचौहली (जगतसुख) कुल्लू	20-22 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मे. स्वीटी	30 अप्रै.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	7 मई
मे. आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. मनीकरण (कुल्लू)	9-14 मई
मे. घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. बन्जार (कुल्लू)	14-18 मई
मे. ढुंगरी जातर	14-15 मई
मे. शाढ़ी जातर	18-23 मई
कमलाहिया (धर्मपुर)	18 मई
पशु मेला (हमीरपुर) प्रा.	19 मई
मे. नारकाण्डा (बिलासपुर)	20-21 मई
मे. हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
मे. श्यामाकाली (सरकाघाट)	21 मई
शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
मे. स्थूल मढोल	1-4 जून
मे. पीपलू (हमीरपुर)	9 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	**15-17 जून**
मे. बाड़ी (सोलन)	15 जून
मे. अहल (हमीरपुर)	15 जून
नौवाही देवी (सरकाघाट)	15 जून
टाणी देवी (हमीरपुर)	24 जून
माँ शूलिनी (सोलन) प्रारम्भ	29 जून
मे. त्रिमौणी (सिरमौर)	6 जुला.
मे. नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	20 जुला.
मे. मिंजर (चम्बा) प्रा.	**27 जुला.**
मे. छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	**27 जु.-4 अग.**
मे. नयनादेवी (बिलासपुर)	4 अग.
श्रीदेवता खुड़ी-जल, गाँव-देहुरी तह-आनी, जिला कुल्लू	10-18 अग.
सन्तोषी माता (लदरौर)	17 अग.
मे. गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	19 अग.
मे. बंद्राल (कुल्लू)	19 अग.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	24 अग.
महासू (शिलाई) सिरमौर	29-30 अग.
गणपति उत्सव (मण्डी)	29 अ.-8 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	31 अग.
गुग्गा माड़ी, सुबाथू, सोलन	2-4 सितं.
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	6 सितं.
नलवाड़ (चिच्चोट)	16-23 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर (अर्की)	16-17 सितं.
मे. चामुण्डा (काँगड़ा)	25 सितं.-3 अक्तू.
मेला रामलीला	25 सितं.-3 अक्तू.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	25 सितं.-3 अक्तू.
तारादेवी (शिमला)	2-4 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	2-3 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन) कांग.	2 अक्तू.
मे. दशहरा (अर्की)	3 अक्तू.
मे. दशहरा (कुल्लू)	**3-8 अक्तू.**
मे. काली-बाड़ी (शिमला)	22-23 अक्तू.
मे. रेणुका (नाहन) सिरमौर	3-4 नवं.
बाबा रुद्रीनन्दनारी (ऊना)	3-6 नवं.
मे. जोगी पांगा (ऊना)	6 नवं.
लावी (रामपुर-चिच्योट)	11-14 नवं.
बुढ़ी दीपावली (शिलाई-सिरमौर)	22-25 नवं.

श्री विनायक चतुर्थी व्रत

(2014 ई.)

पौष	4 जन. शुक्र
माघ	3 फर. चंद्र
फाल्गुन	4 मार्च मंग.
चैत्र	3 अप्रै. गुरु
वैशाख	3 मई शनि
ज्येष्ठ	1 जून रवि
आषाढ़	1 जुला. मंग.
श्रावण	30 जुला. बुध
भाद्रपद	29 अग. शुक्र
आश्विन	28 सितं. रवि
कार्तिक	27 अक्तू. चंद्र
मार्गशीर्ष	25 नवं. मंग.
पौष	25 दिसं. गुरु
—(सन् 2015 ई.)—	
माघ (तिल चतुर्थी)	23 जन. शुक्र
फाल्गुन	22 फर. रवि

विशेष नोट– यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/ज़िले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेज़ी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है–अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें–सम्पादक।

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2014-15 ई.)

मेरू त्रयोदशी	29 जन. बु.
मर्यादा महोत्सव	6 फर. गु.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	14-16 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	23 मार्च र.
वरसी तप प्रारम्भ	24 मार्च चं.
ओली तप प्रारम्भ	6 अप्रै. र.
श्रीमहावीर जयन्ती	13 अप्रै. र.
ओली तप समाप्त	15 अप्रै. मं.
वरसी तप समाप्त	2 मई शु.
केवलज्ञान दिवस	9 मई शु.
मे. चक्रेश्वरीदेवी(सरहिंद)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रा.	12 जुला. श.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	12 जुला. श.
जैन महोत्सव	24-26 जुला.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	24 अग. र.
सम्वत्सरी महापर्व	30 अग. श.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	31 अग. र.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	3 सितं. बु.
श्रीमहावीर निर्वाण	23 अक्तू. गु.
श्रीवीर संवत् 2540 प्रा.	24 अक्तू. शु.
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	25 अक्तू. श.
ज्ञान पंचमी	28 अक्तू. मं.
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	6 नवं. गु.
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	17 नवं. चं.
मौनी एकादशी	2 दिसं. मं.
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	11 दिसं. गु.
श्रीपार्श्वनाथ जयंती	17 दिसं. बु.

—(सन् 2015 ई.)—

मेरू त्रयोदशी	18 जन. र.
मर्यादा महोत्सव	26 जन. चं.
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	3-5 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	13 मार्च शु.
वरसी तप प्रारम्भ	14 मार्च श.

❖मुस्लिम त्यौहार❖

आखिरी चहार	1 जन. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	1 जन. बुध
ईद-ए-मिलाद	14 जन. मंग.
ईद-ए-मौलाद	19 जन. रवि
ग्यारहवीं शरीफ	12 फर. बुध
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	1-6 मई
जन्म श्रीहजरत अली	13 मई मंग.
शबे-मिराज	27 मई मंग.
शबे-बारात	14 जून शनि
रमज़ान (रोज़े शुरु)	30 जून चंद्र
शहादत-ए-हजरत अली	20 जुला. रवि
जमातुलविदा	25 जुला. शुक्र
शबे-कदर	26 जुला. शनि
ईद-उल-फितर	29 जुला. मंग.
ईदुलजुहा (बकरीद)	6 अक्तू. चंद्र
मुहर्रम (हिजरी 1436 प्रा.)	26 अक्तू. रवि
मुहर्रम (ताजिया)	4 नवं. मंग.
चेहलुम	13 दिसं. शनि
आखिरी-चहार	17 दिसं. बुध
शहादत-ए-इमामहसन	21 दिसं. रवि

(सन् 2015 ई.)

ईद-ए-मिलाद	4 जन. रवि
ईद-ए-मौलाद	9 जन. शुक्र
ग्यारहवीं शरीफ	1 फर. रवि

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. बु.
गुड फ्राइडे	18 अप्रै. शु.
ईस्टर सण्डे	20 अप्रै. र.
लो (Low) सण्डे	27 अप्रै. र.
रोगेशन सण्डे	25 मई र.
विंटसण्डे-Pentecost	8 जून र.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. गु.

—(सन् 2015 ई.)—

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. गु.

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2014-15 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	7 जन. मं.
मकर संक्रान्ति	14 जन. मं.
ईद-ए-मिलाद	14 जन. मं.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. र.
श्रीगुरु रविदास जयंती	14 फर. शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	27 फर. गु.
होला मेला (पं.)	17 मार्च चं.
श्रीरामनवमी	8 अप्रै. मं.
श्रीमहावीर जयन्ती	13 अप्रै. रवि
वैशाखी (पं.)	14 अप्रै. चं.
गुड फ्राइडे	18 अप्रै. शु.
जन्म श्रीहजरत अली (का.)	13 मई मं.
श्रीबुद्ध जयन्ती	14 मई बु.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	29 जून रवि
जमातुलविदा	25 जुला. शु.
ईदुलफितर	29 जुला. मं.
शहीदी स: ऊधम सिंह	31 जुला. गु.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. शु.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्ण.)	18 अग. चं.
सिद्धि विनायक व्रत (महारा.)	29 अग. शु.
महात्मा गांधी जयंती	2 अक्तू. गु.
दशहरा	3 अक्तू. शु.
ईदुलजुहा (बकरीद)	6 अक्तू. चं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	8 अक्तू. बु.
दीपावली	23 अक्तू. गु.
मुहर्रम (ताजिया)	4 नवं. मं.
श्रीगुरु नानक जयंती	6 नवं. गु.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. गु.
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	28 दिसं. रवि

(सन् 2015 ई.)

ईद-ए-मिलाद	4 जन. र.
मकर संक्रान्ति	14 जन. बु.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. चं.
श्रीगुरु रविदास जयं.	3 फर. मं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	17 फर. बु.
होला मेला (पं.)	6 मार्च शु.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि—2014-15 ई.

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कलैण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	6 नवंबर	जन्म से	18 सितंबर	6 नवंबर	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	30 अप्रैल	13 सितंबर	3 अप्रैल	18 अप्रैल	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	13 मई	31 मार्च	9 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	10 अक्तूबर	7 सितंबर	28 अगस्त	9 अक्तूबर	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जनदेव जी	21 अप्रैल	27 अगस्त	1 जून	2 मई	16 सितंबर	1 जून
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	14 जून	21 मई	4 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	12 फर., 14 ई. 1 फर., 15 ई.	28 मार्च, 14 ई. 18 मार्च, 15 ई.	17 अक्तूबर	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	20 जुलाई	17 अक्तूबर	14 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	20 अप्रैल	13 अप्रैल	27 नवम्बर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	7 जन., 14 ई. 28 दिसं., 14 ई.	25 नवम्बर	28 अक्तूबर	7 जन., 14 ई. 28 दिसं., 14 ई.	24 नवंबर	28 अक्तूबर

श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	26 अगस्त	17 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2014 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली (नन्देड़)	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	25 अक्तू.	पुरातन परम्परा अनुसार ही	25 अक्तू., 2014 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे अनुसार	14 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)	14 अप्रैल, 2014 ई.

वि. संवत् २०७१ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–चन्द्र | **वर्ष का मन्त्री–चन्द्र**

- वि. संवत् (प्लवंग) २०७१ का शुभारम्भ = 31 मार्च, सोमवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,115 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,115 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,885 वर्ष
- २०७० में कलि वर्ष = 5115वां वर्ष (1 अगस्त, शुक्रवार, 2014 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5250 प्रा. (17 अग., रविवार, 2014 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5090 प्रारम्भ = 31 मार्च, सोमवार, 2014 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2638 प्रा. = 14 मई, बुधवार, 2014 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2540 प्रा. = 23 अक्तू., गुरुवार
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2015 प्रारम्भ = 1 जनवरी, गुरुवार
- शाका संवत् 1936 ही रहेगा = (21 मार्च, 2014 से 21 मार्च, 2015 ई. तक
- हिजरी सन् 1436 (मुस्लिम) प्रा. = 26 अक्तूबर, रविवार
- बंगाली सन् 1421 प्रारम्भ = 14 अप्रैल, सोमवार, 2014 ई.
- नानकशाही संवत् 546 प्रारम्भ = 14 मार्च, शुक्रवार, 2014 ई.
- खालसा संवत् 316 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, रविवार, 2014 ई.
- जय हिन्द संवत् 68वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, शुक्रवार, 2014 ई.
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 139वाँ = 31 मार्च, सोमवार, 2014 ई.

सन् 2014-15 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा आदि—एक दृष्टि में

(मास) 2014-15 ↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य–नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदान)
जनवरी	14 (माघ)	11, 27	13, 28	15	16	19	1, 30
फरवरी	12 (फाल्गु.)	10,26(वै.)	12, 27	14	14	18	–
मार्च	14 (चैत्र)	12, 27	14, 28	16	16	20	1, 30
अप्रैल	14 (वैशा.)	11, 25	12, 26	14	15	18	29
मई	14 (ज्ये.)	10, 24	12, 26	14	14	17	28
जून	15 (आषा.)	9, 23	10, 24	12	13	16	27
जुलाई	16 (श्राव.)	9(वै.),22	10, 24	11	12	15	26
अगस्त	17 (भाद्र.)	7, 21	8, 22	10	10	13	25
सितम्बर	16 (आश्वि.)	5,19	6, 21	8	9	12	24
अक्तूबर	17 (कार्ति.)	5 (वै.),19	6, 21	7	8	11	23
नवम्बर	16 (मार्ग.)	3, 18	4, 20	6	6	10	22
दिसम्बर	16 (पौष)	2, 18	4, 19	5	6	9	21
जनवरी (15)	14 (माघ)	1,16,30	2, 18	4	5	8	20
फरवरी	13 (फाल्गु.)	15	1, 16	3	3	7	18
मार्च	14 (चैत्र)	1, 17(वै.)	2, 18	5	5	9	20

आगामी वि. संवत् २०७२ के प्रमुख व्रत-पर्व

(2015-16 ई.)

वासन्त नवरात्रे प्रा.	21 मार्च श.
श्रीदुर्गाष्टमी	27 मार्च शु.
श्रीरामनवमी	28 मार्च श.
श्रीमहावीर जयंती	2 अप्रै. गु.
वैशाख संक्रान्ति	14 अप्रै. मं.
अक्षय तृतीया	21 अप्रै. मं.
श्रीबुद्ध जयन्ती	4 मई चं.
श्रीगंगा दशहरा	28 मई गु.
अधिक मास प्रारम्भ	17 जून बु.
अधिक मास समा.	16 जुला. गु.
गुरु पूर्णिमा	31 जुला. शु.
रक्षा-बन्धन	29 अग. श.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	5 सितं. श.
सिद्धि विनायक व्रत	17 सितं. गु.
श्राद्ध (पक्ष) प्रारंभ	28 सितं. चं.
श्राद्ध समाप्त	12 अक्तू. चं.
शरद् नवरात्रे प्रा.	13 अक्तू. मं.
श्रीदुर्गाष्टमी	21 अक्तू. बु.
दशहरा (विजयादशमी)	22 अक्तू. गु.
शरद् पूर्णिमा व्रत	26 अक्तू. चं.
करवा चौथ व्रत	30 अक्तू. शु.
दीपावली	11 नवं. बु.
भाई दूज	13 नवं. शु.
श्रीगुरु नानक जयं.	25 नवं. बु.
श्रीगीता जयन्ती	21 दिसं. चं.

(सन् 2016 ई.)

लोहड़ी पर्व	13 जन. बु.
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. गु.
वसन्त पंचमी	12 फर. शु.
श्रीगुरु रविदास जयं.	22 फर. चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च चं.
होली पर्व	23 मार्च बु.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) संवत् २०७१ वि.

(1 जनवरी, सन् 2014 ई. से 25 मार्च, 2015 तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल–ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं–इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मि.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मि.
--	--	--	--	--	1	जन.	मूल	11	09
7	जन.	रेवती	20	20	9	जन.	अश्विनी	21	56
17	जन.	आश्लेषा	16	09	19	जन.	मघा	21	39
27	जन.	ज्येष्ठा	02	55	28	जन.	मूल	22	25
4	फर.	रेवती	04	50	6	फर.	अश्विनी	04	57
13	फर.	आश्लेषा	22	22	16	फर.	मघा	03	35
23	फर.	ज्येष्ठा	10	30	25	फर.	मूल	7	38
3	मार्च	रेवती	15	11	5	मार्च	अश्विनी	13	59
13	मार्च	आश्लेषा	05	17	15	मार्च	मघा	10	23
22	मार्च	ज्येष्ठा	16	07	24	मार्च	मूल	14	10
31	मार्च	रेवती	01	31	1	अप्रै.	अश्विनी	23	57
9	अप्रै.	आश्लेषा	13	00	11	अप्रै.	मघा	18	15
18	अप्रै.	ज्येष्ठा	21	53	20	अप्रै.	मूल	19	33
27	अप्रै.	रेवती	10	03	29	अप्रै.	अश्विनी	9	06
6	मई	आश्लेषा	21	05	9	मई	मघा	02	39
16	मई	ज्येष्ठा	05	27	18	मई	मूल	01	58
24	मई	रेवती	16	25	26	मई	अश्विनी	16	25
3	जून	आश्लेषा	04	51	5	जून	मघा	10	43
12	जून	ज्येष्ठा	14	56	14	जून	मूल	10	33
20	जून	रेवती	21	48	22	जून	अश्विनी	22	10
30	जून	आश्लेषा	11	51	2	जुला.	मघा	17	53
10	जुला.	ज्येष्ठा	01	10	11	जुला.	मूल	20	48
18	जुला.	रेवती	04	02	20	जुला.	अश्विनी	03	42
27	जुला.	आश्लेषा	18	04	29	जुला.	मघा	24	06
6	अग.	ज्येष्ठा	10	37	8	अग.	मूल	7	15
14	अग.	रेवती	12	20	16	अग.	अश्विनी	10	36

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मि.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मि.
23	अग.	आश्लेषा	24	02	26	अग.	मघा	06	00
2	सितं.	ज्येष्ठा	18	08	4	सितं.	मूल	16	17
10	सितं.	रेवती	22	32	12	सितं.	अश्विनी	19	32
20	सितं.	आश्लेषा	6	23	22	सितं.	मघा	12	20
29	सितं.	ज्येष्ठा	23	54	1	अक्तू.	मूल	23	04
8	अक्तू.	रेवती	9	10	10	अक्तू.	अश्विनी	05	48
17	अक्तू.	आश्लेषा	13	37	19	अक्तू.	मघा	19	35
27	अक्तू.	ज्येष्ठा	05	29	29	अक्तू.	मूल	04	28
4	नवं.	रेवती	18	25	6	नवं.	अश्विनी	15	44
13	नवं.	आश्लेषा	21	41	16	नवं.	मघा	03	38
23	नवं.	ज्येष्ठा	12	44	25	नवं.	मूल	10	39
2	दिसं.	रेवती	01	14	3	दिसं.	अश्विनी	23	45
11	दिसं.	आश्लेषा	06	01	13	दिसं.	मघा	11	50
20	दिसं.	ज्येष्ठा	22	12	22	दिसं.	मूल	19	14
29	दिसं.	रेवती	06	36	31	दिसं.	अश्विनी	05	39
(सन् 2015 ई.)									
7	जन.	आश्लेषा	13	47	9	जन.	मघा	19	29
17	जन.	ज्येष्ठा	8	36	19	जन.	मूल	5	52
25	जन.	रेवती	12	59	27	जन.	अश्विनी	11	11
3	फर.	आश्लेषा	20	32	5	फर.	मघा	26	16
13	फर.	ज्येष्ठा	17	58	15	फर.	मूल	16	30
21	फर.	रेवती	22	03	23	फर.	अश्विनी	18	35
2	मार्च	आश्लेषा	26	33	5	मार्च	मघा	8	29
12	मार्च	ज्येष्ठा	25	10	14	मार्च	मूल	25	13
21	मार्च	रेवती	9	02	23	मार्च	अश्विनी	04	24

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल–सं० २०७१ वि.

(1 जन. 2014 ई. से 25 मार्च, सन् 2015 ई. तक)

प्रारम्भ काल				समाप्ति काल			
ता.	मास	घं.	मि.	ता.	मास	घं.	मि.
4	जन.	12	48	8	जन.	20	46
31	जन.	23	48	5	फर.	04	28
28	फर.	10	53	4	मार्च	14	12
27	मार्च	19	54	1	अप्रै.	24	27
24	अप्रै.	02	23	28	अप्रै.	9	22
21	मई	7	45	25	मई	16	14
17	जून	14	06	21	जून	21	44
14	जुला.	22	40	19	जुला.	03	32
11	अग.	9	06	15	अग.	11	05
7	सितं.	19	53	11	सितं.	20	42
5	अक्तू.	05	14	9	अक्तू.	7	16
1	नवं.	12	08	5	नवं.	16	57
28	नवं.	17	30	2	दिसं.	24	23
25	दिसं.	23	49	30	दिसं.	05	56
(सन् 2015 ई.)							
22	जन.	8	50	26	जन.	11	48
18	फर.	19	58	22	फर.	20	01
18	मार्च	6	59	22	मार्च	--	--

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) २०७१ वि. (सं. 2014-15 ई.)

नगर	18 अप्रै.,14		17 मई, 14		16 जून, 14		15 जुला., 14		13 अग., 14		12 सितं., 14		11 अक्तू., 14		10 नवं., 14		9 दिसं., 14		8 जन., 15		7 फर., 15		9 मार्च, 15		श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवा-चौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	17 अग., रवि	
अमृतसर	22	14	22	02	22	26	21	47	21	03	21	01	20	23	20	42	20	17	20	47	21	17	21	52	23	50
अजमेर	22	05	21	52	22	21	21	46	21	04	21	08	20	33	20	53	20	27	20	53	21	18	21	47	24	01
अम्बाला	22	04	21	51	22	17	21	39	20	56	20	56	20	19	20	38	20	13	20	42	21	10	21	43	23	47
अहमदाबाद	22	06	21	55	22	25	21	52	21	13	21	20	20	44	21	06	20	39	21	04	21	26	21	52	24	14
अलवर (राज.)	22	00	21	47	22	15	21	38	20	56	20	59	20	22	20	42	20	16	20	44	21	10	21	41	23	50
आगरा	21	53	21	41	22	09	21	33	20	51	20	54	20	19	20	38	20	13	20	39	21	05	21	35	23	47
ईलाहाबाद	21	34	21	22	21	51	21	16	20	36	20	40	20	05	20	25	19	59	20	25	20	49	21	17	23	34
ऊना	22	09	21	56	22	21	21	42	20	58	20	56	20	18	20	37	20	12	20	42	21	12	21	47	23	45
उदयपुर (राज.)	22	06	21	54	22	24	21	49	21	09	21	14	20	38	20	58	20	32	20	58	21	22	21	50	24	07
ऊधमपुर	22	16	22	03	22	27	21	47	21	02	20	57	20	19	20	38	20	13	20	45	21	16	21	52	23	47
कपूरथला	22	11	21	59	22	24	21	45	21	01	20	59	20	22	20	41	20	16	20	46	21	15	21	49	23	50
करनाल	22	03	21	50	22	16	21	38	20	55	20	55	20	18	20	37	20	12	20	41	21	09	21	42	23	46
काँगड़ा (हि.प्र.)	22	10	21	57	22	22	21	42	20	58	20	55	20	15	20	36	20	11	20	42	21	12	21	47	23	45
कानपुर	21	43	21	30	21	59	21	24	20	42	20	46	20	11	20	31	20	05	20	31	20	56	21	25	23	39
कैथल	22	05	21	52	22	18	21	40	20	57	20	57	20	20	20	39	20	14	20	43	21	11	21	44	23	48
कुल्लू	22	06	21	53	22	18	21	38	20	54	20	51	20	13	20	32	20	07	20	38	21	08	21	43	23	41
कुराली	22	07	21	54	22	19	21	40	20	57	20	55	20	18	20	37	20	12	20	42	21	11	21	45	23	46
कुरुक्षेत्र	22	04	21	51	22	17	21	39	20	56	20	56	20	19	20	38	20	13	20	42	21	10	21	43	23	47
कोलकाता	21	03	20	52	21	22	20	49	20	10	20	17	19	41	20	03	19	36	20	01	20	23	20	49	23	11
गाजियाबाद	21	59	21	46	22	13	21	36	20	53	20	54	20	18	20	37	20	12	20	40	21	07	21	39	23	46
ग्वालियर	21	50	21	37	22	07	21	31	20	51	20	54	20	19	20	39	20	13	20	39	21	04	21	33	23	47
गुरदासपुर	22	13	22	00	22	25	21	45	21	01	20	58	20	20	20	39	20	14	20	45	21	15	21	50	23	48
गुड़गाँव	22	00	21	47	22	14	21	38	20	55	20	57	20	20	20	40	20	15	20	43	21	09	21	40	23	49
चण्डीगढ़	22	05	21	52	22	17	21	38	20	55	20	53	20	16	20	35	20	10	20	40	21	09	21	43	23	44
चम्बा	22	11	21	44	22	23	21	42	20	49	20	49	20	16	20	35	20	10	20	41	21	12	21	48	23	43
चेन्नई	21	22	21	09	21	46	21	17	20	45	21	00	20	28	20	51	20	23	20	41	20	56	21	13	23	58
जयपुर (राज.)	22	02	21	49	22	18	21	42	21	00	21	03	20	28	20	47	20	22	20	48	21	14	21	44	23	56
जम्मू	22	17	22	04	22	28	21	47	21	03	20	58	20	20	20	39	20	14	20	46	21	17	21	53	23	48
जालन्धर (पं.)	22	11	21	58	22	24	21	44	21	01	20	59	20	22	20	41	20	16	20	46	21	15	21	49	23	50
जोधपुर (राज.)	22	12	21	59	22	28	21	52	21	11	21	15	20	40	21	00	20	34	21	00	21	25	21	54	24	08
जीन्द (हरि.)	22	04	21	51	22	18	21	41	20	58	20	59	20	23	20	42	20	17	20	45	21	12	21	44	23	51
दिल्ली	21	59	21	46	22	13	21	37	20	54	20	56	20	19	20	38	20	13	20	41	21	08	21	40	23	47
देहरादून	21	59	21	46	22	12	21	34	20	51	20	51	20	14	20	33	19	58	20	37	21	05	21	38	23	42
धर्मशाला	22	10	21	57	22	22	21	42	20	58	20	55	20	17	20	36	20	11	20	42	21	12	21	47	23	45
नंगल (पंजा.)	22	08	21	55	22	20	21	41	20	57	20	55	20	18	20	36	20	12	20	42	21	11	21	45	23	46
नादौन (हि.प्र.)	22	10	21	57	22	22	21	42	20	58	20	55	20	17	20	36	20	11	20	42	21	12	21	47	23	45

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (आ. स्टैं. टा.) २०७१ वि. (सं. 2014-15 ई.)

नगर	18 अप्रै.,14		17 मई, 14		16 जून, 14		15 जुला., 14		13 अग.,14		12 सितं., 14		11 अक्तू., 14		10 नवं., 14		9 दिसं., 14		8 जन., 15		7 फर., 15		9 मार्च, 15		श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	करवा-चौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	17 अग., रवि	
नाहन	22	03	21	50	22	16	21	37	20	54	20	53	20	16	20	35	20	10	20	39	21	08	21	42	23	44
पठानकोट	22	12	21	59	22	24	21	44	21	00	20	57	20	19	20	38	20	13	20	44	21	14	21	49	23	47
पटियाला	22	05	21	52	22	18	21	40	20	57	20	57	20	20	20	39	20	14	20	43	21	11	21	44	23	48
पंचकूला	22	05	21	52	22	17	21	38	20	55	20	54	20	16	20	35	20	10	20	40	21	09	21	43	23	44
पानीपत	22	01	21	48	22	15	21	38	20	55	20	56	20	19	20	39	20	14	20	42	21	09	21	41	23	48
पटना	21	22	21	09	21	39	21	03	20	23	20	27	19	51	20	11	19	45	20	12	20	36	21	05	23	19
फगवाड़ा	22	10	21	57	22	23	21	43	21	00	20	58	20	21	20	40	20	15	20	45	21	14	21	48	23	49
फरीदकोट	22	13	22	00	22	25	21	46	21	03	21	02	20	24	20	43	20	18	20	48	21	17	21	51	23	52
फरीदाबाद	21	59	21	46	22	13	21	36	20	54	20	56	20	20	20	39	20	14	20	42	21	08	21	39	23	49
फाज़िल्का	22	15	22	02	22	28	21	50	21	07	21	07	20	30	20	49	20	24	20	53	21	21	21	54	23	58
फिरोज़पुर	22	14	22	01	22	26	21	47	21	04	21	02	20	25	20	44	20	19	20	49	21	18	21	52	23	53
बीकानेर	22	14	22	01	22	29	21	52	21	10	21	07	20	36	20	55	20	30	20	58	21	24	21	55	24	04
बिलासपुर(हि.प्र.)	22	06	21	53	22	18	21	40	20	56	20	54	20	17	20	36	20	11	20	41	21	10	21	44	23	45
बैंगलूरु	21	33	21	20	21	57	21	28	20	57	21	11	20	39	21	02	20	34	20	52	21	07	21	24	24	09
महेन्द्रगढ़(हरि.)	22	02	21	49	22	17	21	41	20	58	21	00	20	24	20	43	20	18	20	45	21	12	21	43	23	52
मेरठ	21	58	21	45	22	12	21	35	20	52	20	53	20	17	20	36	20	11	20	39	21	06	21	38	23	45
मण्डी (हि.प्र.)	22	07	21	54	22	18	21	39	20	55	20	53	20	14	20	33	20	08	20	39	21	09	21	44	23	42
मथुरा	21	55	21	42	22	10	21	34	20	52	20	55	20	19	20	38	20	13	20	40	21	06	21	37	23	47
मुम्बई	21	59	21	47	22	20	21	50	21	13	21	23	20	50	21	12	20	42	21	06	21	25	21	47	24	19
यमुनानगर	22	02	21	49	22	15	21	37	20	54	20	54	20	17	20	36	20	11	20	40	21	08	21	41	23	45
रोपड़	22	07	21	54	22	19	21	40	20	57	20	55	20	18	20	37	20	12	20	42	21	11	21	45	23	46
रोहतक	22	02	21	49	22	16	21	39	20	56	20	57	20	21	20	40	20	15	20	43	21	10	21	42	23	49
रूड़की	21	59	21	46	22	12	21	34	20	51	20	51	20	14	20	33	20	08	20	37	21	05	21	38	23	42
लुधियाना	22	07	21	56	22	21	21	42	20	59	20	57	20	20	20	39	20	14	20	44	21	13	21	47	23	48
लखनऊ	21	41	21	28	21	57	21	31	20	39	20	42	20	07	20	26	20	01	20	27	20	53	21	23	23	35
वाराणसी	21	30	21	16	21	47	21	12	20	32	20	36	20	01	20	21	19	55	20	21	20	45	21	13	23	30
शिमला	22	04	21	51	22	16	21	37	20	54	20	52	20	15	20	34	20	09	20	39	21	08	21	42	23	43
श्रीगंगानगर	22	16	22	03	22	29	21	51	21	08	21	08	20	31	20	50	20	25	20	54	21	22	21	55	23	59
संगरूर (पं.)	22	07	21	54	22	20	21	42	20	59	20	59	20	22	20	41	20	16	20	45	21	13	21	46	23	50
सरकाघाट	22	10	21	57	22	22	21	42	20	58	20	56	20	17	20	36	20	11	20	42	21	12	21	47	23	45
सहारनपुर	22	01	21	48	22	14	21	36	20	53	20	53	20	16	20	35	20	10	20	39	21	07	21	40	23	44
सोनीपत	22	01	21	48	22	15	21	38	20	55	20	56	20	20	20	39	20	14	20	42	21	09	21	41	23	48
हिसार (हरि.)	22	06	21	53	22	20	21	43	21	00	21	01	20	25	20	44	20	19	20	47	21	14	21	46	23	53
होशियारपुर	22	10	21	57	22	22	21	43	20	59	20	57	20	19	20	38	20	13	20	43	21	13	21	48	23	47
हरिद्वार	21	58	21	45	22	11	21	33	20	50	20	50	20	13	20	32	20	07	20	36	21	04	21	37	23	41
हमीरपुर(हि.प्र.)	22	09	21	56	22	21	21	41	20	57	20	55	20	16	20	35	20	10	20	41	21	11	21	46	23	44

ग्रहण विवरण (संवत् २०७१ वि.)

परिलेख–
–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७१ (सन् 2014–15 ई.) में भूलोक पर कुल पाँच ग्रहण घटित होंगे–

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में अदृश्य)	(15 अप्रैल, 2014 ई., मंगल)
(2) कंकण सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य)	(29 अप्रैल, 2014 ई., मंगल)
(3) खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य)	(8 अक्तूबर, 2014 ई., बुधवार)
(4) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य)	(23 अक्तूबर, 2014 ई., गुरुवार)
(5) खग्रास सूर्यग्रहण (भारत में अदृश्य)	(20 मार्च, 2015 ई., शुक्रवार)

भारत में अदृश्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण

(1) खग्रास चन्द्रग्रहण (15 अप्रैल, 2014 ई., चैत्र पूर्णिमा, मंगलवार)–

यह खग्रास चन्द्रग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। इस ग्रहण का प्रारम्भ (स्पर्श) एवं समाप्ति (मोक्ष) उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका में देखा जा सकेगा। उत्तर-पश्चिमी यूरोप (इंग्लैण्ड, आयरलैण्ड, स्पेन, फ्रांस, बैल्जियम, पुर्तगाल) तथा पश्चिमी अफ्रीका में चन्द्रास्त के समय यह ग्रहण दृश्य होगा। पूर्वी रूस तथा पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में चन्द्रोदय के समय इस ग्रहण की समाप्ति ही दिखाई देगी। उत्तर-पूर्वी यूरोप, पूर्वी अफ्रीका, मध्य पूर्वी तथा मध्य एशिया में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ/समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं.	मिं.	सें.	
ग्रहण आरम्भ	11	28	19	(भा.स्टैं.टा.)
खग्रास प्रारम्भ	12	36	47	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	13	15	40	
खग्रास समाप्त	13	54	35	
ग्रहण समाप्त	15	03	04	

क्योंकि यह ग्रहण भारतवर्ष में दिखाई नहीं देगा। अतएव ग्रहण जन्य स्नान, दान, सूतक, माहात्म्य आदि का यहाँ विचार नहीं होगा। केवल इंग्लैण्ड, स्पेन, फ्रांस तथा अमेरिका के सभी देशों में स्थानीय समय के अनुसार सूतक आदि का विचार होगा।

(2) कंकण सूर्यग्रहण (29 अप्रैल, 2014 ई., वैशाख अमावस, मंगलवार)–

यह कंकण सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण दक्षिणी हिन्दी महासागर, इण्डोनेशिया के दक्षिणी भाग तथा ऑस्ट्रेलिया में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ/समाप्ति काल इस प्रकार होगा–

	घं.	मिं.	सें.	
ग्रहण आरम्भ	09	22	40	(भा.स्टैं.टा.)
कंकण आरम्भ	11	27	35	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	11	33	25	
कंकण समाप्त	11	39	36	
ग्रहण समाप्त	13	44	48	

(3) खण्डग्रास सूर्यग्रहण (23 अक्तूबर, 2014 ई., कार्तिक अमावस, गुरुवार)–

यह ग्रहण भी भारत में दृश्य नहीं होगा। यह खण्डग्रास सूर्यग्रहण साइबेरिया, उत्तरी अमेरिका, कैनेडा, मैक्सिको, सुदूर पूर्वी रूस में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस खण्ड सूर्यग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं.	मिं.	सें.	
ग्रहण आरम्भ	25	07	03	(23/24 अक्तू., गुरु/शुक्र) (भा. स्टैं. टा.)
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	27	14	31	
ग्रहण समाप्त	29	21	40	

इस खण्ड सूर्यग्रहण सम्बन्धी स्नान, दान, सूतक, माहात्म्य का विचार भारतवर्ष में नहीं होगा। परन्तु कार्तिक अमावस का माहात्म्य तो रहेगा।

(4) खग्रास सूर्यग्रहण (20 मार्च, 2015 ई., चैत्र अमावस, शुक्रवार)–

यह खग्रास सूर्यग्रहण भी भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण ग्रीनलैण्ड, आईसलैण्ड, यूरोप, उत्तर-अफ्रीका तथा उत्तर-पश्चिमी एशिया में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. में इस ग्रहण का प्रारम्भ, समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण आरम्भ	13–11	(भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	14–40	
परमग्रास	15–16	
खग्रास समाप्त	15–51	
ग्रहण समाप्त	17–20	

यह ग्रहण के भी सूतक, माहात्म्य का भारत में विचार नहीं होगा।

भारत में दृश्य एकमात्र ग्रहण का विस्तृत विवरण

(1) खग्रास (ग्रस्तोदय) चन्द्रग्रहण (8 अक्तू, 2014 ई., आश्विन पूर्णिमा, बुधवार)–

यह खग्रास चन्द्रग्रहण 8 अक्तूबर, 2014 ई. को भारत में ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा। अर्थात् भारत में जब चन्द्रोदय होगा, उससे काफी पहले ही चन्द्रग्रहण प्रारम्भ हो चुका होगा। भारत के पश्चिमी प्रदेशों/क्षेत्रों में ग्रहण-समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा, अतएव वहाँ यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा। इस ग्रहण के स्पर्शादि काल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं.	मिं.	सें.	
ग्रहण (स्पर्श) प्रारम्भ	14	44	48	(भा. स्टैं. टा.)
खग्रास प्रारम्भ	15	55	10	
ग्रहण मध्य (परमग्रास)	16	24	36	
खग्रास समाप्त	16	54	00	
ग्रहण (मोक्ष) समाप्त	18	04	21	

[चन्द्र मालिन्य प्रारम्भ (enters penumbra) = $13^{घं.}$ $46^{मिं.}$ तथा

चन्द्र कान्ति निर्मल (leaves penumbra)) = $19^{घं.}$ $04^{मिं.}$]

भारत में मुख्यतः चन्द्रोदय के समय इस ग्रहण की समाप्ति ही देखी जा सकेगी। भारत के सुदूर उत्तर-पूर्वी (North-East) भागों में ही चन्द्रग्रहण की खग्रास समाप्ति देखी जा सकेगी। आगामी पृष्ठ पर दिए ग्रहण चित्र (1) में 'च-छ' से रेखा से दाईं ओर के नगरों में ही, जहाँ चन्द्रोदय $16^{घं.}$-$54^{मिं.}$ से पहले होगा, वहाँ खग्रास समाप्ति का दृश्य दृष्टिगोचर होगा। 'च-छ' रेखा से बाईं ओर शेष भारत में खग्रास समाप्ति के बाद चन्द्रोदय होगा अर्थात् वहाँ भी यह ग्रहण ग्रस्तोदय होगा। परन्तु यहाँ खग्रास आकृति दिखाई नहीं देगी।

भारत के पश्चिमी प्रदेशों में जहाँ चन्द्रोदय ग्रहण-समाप्ति ($18^{घं.}$ $04^{मिं.}$) के बाद होगा। वहाँ यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा। आगामी पृष्ठ पर दिए गए ग्रहण-चित्र में 'क-ख' रेखा के बाईं ओर पड़ने वाले सभी नगरों में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा। यद्यपि चन्द्र क्रान्ति (उपच्छाया) $19^{घं.}$-$04^{मिं.}$ तक रहने से चन्द्र-बिम्ब धुन्धला सा प्रतीत होता रहेगा।

आगे पृष्ठ 17 पर भारत के प्रसिद्ध 200 से भी अधिक नगरों में 8 अक्तूबर, 2014 ई. को चन्द्रोदय का काल तथा इस ग्रहण का विभिन्न नगरों में पर्वकाल दिया गया है।

भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण कहाँ दिखाई देगा ?

यह खग्रास चन्द्रग्रहण उत्तर-पश्चिमी अमेरिका में पूर्ण रूप से अर्थात् ग्रहण के सभी घटनाक्रम दिखाई देंगे। पूर्वी कैनेडा तथा अमरीका में खग्रास मध्य के समय चन्द्र अस्त हो जाएगा अर्थात् ग्रस्तास्त रूप में दिखाई देगा। दक्षिणी अमरीका में ग्रहण आरम्भ के समय ही चन्द्रास्त हो जाएगा। जबकि न्यूज़ीलैण्ड, पूर्वी आस्ट्रेलिया, जापान, फिलीपीन्स आदि सुदूर पूर्वी एशिया के देशों में इस खग्रास चन्द्रग्रहण के सभी रूप दिखाई देंगे। जबकि पश्चिमी एशिया के देशों (अफगानिस्तान, पाकिस्तान, सऊदी अरब, कुवैत), अफ्रीका, यूरोप के देशों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

ग्रहण का पर्वकाल– आगे पृष्ठ 17 पर भारत के प्रसिद्ध 220 नगरों का 8 अक्तूबर को चन्द्रोदयकाल (भा. स्टैं. टा.) तथा ग्रहण का पर्वकाल भी दिया गया है। चन्द्रग्रहण में स्नानदान, जपादि का विशेष माहात्म्य होता है। सामान्यतः ग्रहण का पर्वकाल ग्रहण आरम्भ से ग्रहण समाप्ति तक का काल पर्वकाल माना जाता है, क्योंकि यह ग्रहण भारत के सुदूर पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर उत्तर, उत्तर-पश्चिमी व मध्य क्षेत्रों जैसे-पूर्वी पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू-काश्मीर, मध्य-पूर्वी म. प्र., उ.प्र., उत्तराखण्ड में ग्रस्तोदय ही होगा। अतः यहाँ चन्द्रोदय से ग्रहण-समाप्ति तक के काल को पर्वकाल माना जाएगा। ध्यान रखें, इन ग्रस्तोदय वाले प्रदेशों की जनता को स्नानारम्भ चन्द्रोदय होने पर ही करना चाहिए अर्थात् उन्हें चन्द्रोदय को ही ग्रहण आरम्भ मानकर सभी धार्मिक क्रियाओं का अनुष्ठान करना चाहिए।

ग्रहण का सूतक– इस ग्रहण का सूतक 8 अक्तू., 2014 ई. को प्रातः सूर्योदय के समय से ही प्रारम्भ हो जाएगा। [सामान्यतः चन्द्रग्रहण का वेध (सूतक) स्पर्श से 9 घण्टे पूर्व माना जाता है, परन्तु ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होने से पूर्ववर्ती पूरे दिन में ग्रहण का सूतक माना गया है।] शुद्ध (ग्रहण-मोक्ष) चन्द्र बिम्ब के दर्शन एवं तर्पण करने के बाद सभी धार्मिक कार्य करने चाहिए।

ग्रहण-राशिफल– यह चन्द्रग्रहण रेवती नक्षत्र (मीन राशि) कालीन घटित हो रहा है। अतएव इस नक्षत्र एवं मीन राशि वालों को ग्रहण का फल विशेष रूप से अशुभ एवं कष्टकारी हो सकता है। जिस राशि के लिए ग्रहण का फल अशुभ लिखा है, वह यथाशक्ति जप-पाठ, ग्रह-शान्ति (चन्द्रमा एवं राशिस्वामी गुरु की) एवं दानादि द्वारा ग्रहण के अनिष्ट प्रभाव को क्षीण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रहणोपरान्त औषधि-स्नान करने से भी अनिष्ट की शान्ति होती है। बारह राशियों के लिए इस ग्रहण का शुभाशुभ फल इस प्रकार से होगा।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन हानि, चिन्ता	धन एवं सुख लाभ	रोग, कष्ट भय, संघर्ष	चिंता, संतान कष्ट	शत्रुभय, साधारण लाभ, खर्च	स्त्री/ पति सम्बन्धी परेशानी	रोग, गुप्त चिन्ता, संघर्ष	खर्च अधिक, कार्य विलम्ब	कार्य सिद्धि, लाभ	धन लाभ, उन्नति	धन-हानि, यात्रा	दुर्घटना, शरीर कष्ट

ग्रहण-काल तथा बाद में क्या करें-क्या न करें ?

ग्रहण के सूतक और ग्रहणकाल में स्नान, दान, जप-पाठ, मन्त्र एवं स्तोत्र-पाठ, मन्त्र-सिद्धि, तीर्थस्नान, ध्यान, हवनादि शुभ कृत्यों का सम्पादन करना कल्याणकारी होता है। धार्मिक/आस्थावान लोगों को 8 अक्तू., सूर्यास्त से पूर्व अपनी राश्यानुसार अथवा ब्राह्मण परामर्श अनुसार दान योग्य वस्तुओं का संग्रह करके संकल्प कर लेना चाहिए तथा ग्रहण मोक्ष ($18^{घं.}$-$04^{मिं.}$) के बाद अथवा अगले दिन 9 अक्तू., 2014 ई. को प्रातः सूर्योदय के समय पुनः स्नान करके संकल्पपूर्वक ब्राह्मण को दान देना चाहिए।

सूतक एवं ग्रहणकाल में मूर्ति स्पर्श करना, अनावश्यक खाना-पीना, मैथुन, निद्रा, तैलाभ्यंग वर्जित है। झूट-कपटादि, वृथा-अलाप, मूत्र-पुरीषोत्सर्ग, नाखुन काटने आदि से परहेज़ करना चाहिए। वृद्ध, रोगी, बालक एवं गर्भवती स्त्रियों को यथानुकूल भोजन या दवाई आदि लेने में दोष नहीं।

रोग शान्ति के लिए ग्रहणकाल में '**श्रीमहामृत्युञ्जय मन्त्र**' का जप करना शुभ होता है।

प्रयोग–काँसे की कटोरी में घी भरकर उसमें ताम्रादि का सिक्का (मंत्र) डालकर अपना मुँह देखकर छायापात्र मन्त्र पढ़ें और ग्रहण समाप्ति पर वस्त्र, फल व दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दान करने से क्लिष्ट रोग से निवृत्ति होती है।

ग्रहण का लोक-भविष्य एवं प्रभाव–**(i) ग्रहण का मास फल**–यह चन्द्रग्रहण आश्विन मास में घटित होने से चीन, ईरान, सिन्ध देशों में कष्ट, प्राकृतिक प्रकोप हों, शिल्पी (बढ़ई आदि), वैद्यों, डाक्टरों को कष्ट, पीड़ा तथा जगत् में बहुत श्रेष्ठ सुभिक्ष हो–

दृष्टोसुरोश्वंयुजि भूरि सुभिक्षकृञ्च।

(ii) ग्रहण का वार फल–यह ग्रहण बुधवार को घटित होने से चावलादि सब धान्यों का नाश, सोना, पीतल आदि धातुएं तेज होंगी। सुपारी तथा मजीठ, लाल वस्त्रों को संग्रह करने से लाभ हो। **पीतधातुमहर्घत्वं सारधान्यं विनश्यति।**

(iii) ग्रहण का नक्षत्र फल–ग्रहण रेवती नक्षत्र में घटित होने से जल से उत्पन्न होने वाले फल, पुष्प, सुगन्धित द्रव्य, शंख, लवण, सुगन्धित पुष्प, नवीन करणधार, व्यापारी वर्ग को पीड़ा हो। मोती, मणि आदि जेवरात महँगे होंगे। मीन राशि में होने से विद्वान्, समुद्र के किनारे के देशों में रहने वालों को भी पीड़ा हो।

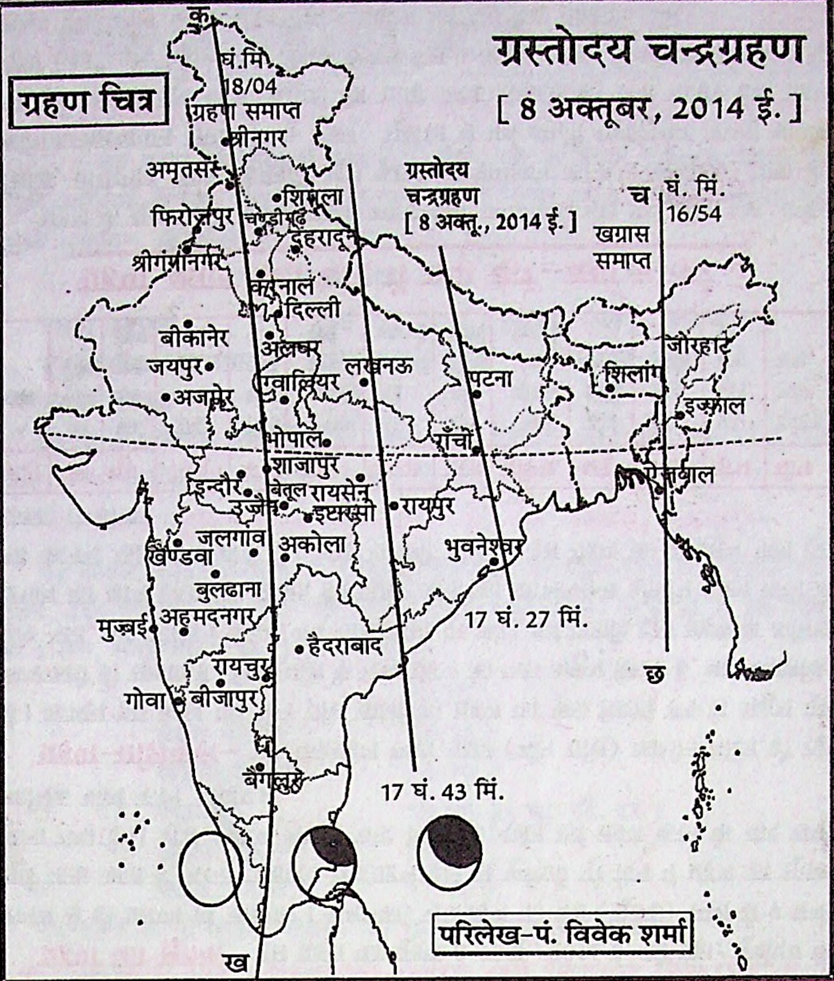
नौकर्णधारवणिजो मणिमौक्तिकानि, नश्यन्ति पौष्णभगते ग्रहणं रवीन्द्वोः।।

(iv) ग्रहण-योग फल–ग्रहण व्याघात योग में होने से मद्य पीने वाले, माँस खाने वाले, धन-लोलुप, चोर और पर्वत पर रहने वालों को पीड़ा एवं कष्ट रहे।

निपीडयेत्तान् गिरिवासिनो जनान्, व्याघातयोगे रविशीतगुग्रहः।।

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण

[8 अक्तूबर, 2014 ई.]



नोट–**(i) 'च-छ'** से दायीं ओर के नगरों में ही ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण की खग्रास समाप्ति दिखाई देगी।

(ii) 'च-छ' रेखा से बायीं ओर तथा **'क-ख'** से दायीं ओर के नगरों में खग्रास समाप्ति ($16^{घं.}$-$54^{मिं.}$) के बाद चन्द्रोदय होगा।

(iii) 'क-ख' रेखा से बायीं ओर के नगरों में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा–क्योंकि यहाँ चन्द्रोदय $18^{घं.}$-$04^{मिं.}$ (ग्रहण समाप्ति) के बाद होगा।

✤ ग्रहण में श्राद्धादि का विचार ✤

सूर्य-चन्द्र ग्रहण के समय स्नान, दान, जप एवं शिव पूजन तथा माता-पिता का श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। जो व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्ध कार्य नहीं करता, वह अपने कर्त्तव्य से पतित होकर पाप का भागी होता है–

चन्द्रसूर्य ग्रहे यस्तु स्नानं दानं शिवार्चनम्। न करोति पितुः श्राद्धं स नरः पतितो भवेत्॥ (ज्योतिः निबंध)

सर्वं भूमिसमं दानं सर्वे ब्रह्म समा द्विजाः। सर्वं गङ्गासमं तोयं ग्रहणे नात्रसंशयः॥ (ज्योतिः निबंध)

–अर्थात् ग्रहणकाल में दिया गया दान भूमिदान के समान फल करता है। सभी द्विज ब्राह्मण समान हो जाते हैं तथा सब जल गंगाजल के समान पवित्र करने वाले हो जाते हैं।

ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण (8 अक्तूबर, 2014 ई.)

भारत के प्रसिद्ध नगरों में 8 अक्तूबर, 2014 ई. को चन्द्रोदय तथा पर्वकाल (भा.स्टैं.टा.)

(पर्वकाल=चन्द्रोदय से ग्रहण समाप्ति तक का काल)

नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
अमृतसर	18	05	--
अबोहर	18	08	--
अम्ब (हि.प्र.)	18	00	4
अर्की (हि.प्र.)	17	56	8
अम्बाला	17	58	6
अनन्तनाग(का.)	18	00	4
अखनूर(का.)	18	04	--
अजमेर	18	10	--
अलवर	18	00	4
अगरतला	17	03	61
अहमदाबाद	18	20	--
अकोला(म.)	18	02	02
आनन्दपुर सा.	17	58	6
आदमपुर पं.	18	01	3
आगरा	17	54	12
इन्दौरा (हि.प्र.)	18	01	3
इन्दौर (म.प्र.)	18	06	--
इलाहाबाद	17	41	24
इम्फाल	16	52	72
ईटानगर	16	52	72
ऊना (हि.प्र.)	17	59	5
ऊधमपुर(का.)	18	02	2
उदयपुर(राज.)	18	15	--
उज्जैन	18	08	--
एज्वाल (मिज़ो)	16	58	66
ऋषिकेश	17	50	14
औरंगाबाद(म.)	18	09	--
कपूरथला	18	02	2
करतारपुर	18	02	2
करसोग	17	55	9
कसौली	17	56	8

नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
कण्डाघाट(हि.प्र.)	17	55	9
करनाल	17	57	7
कठुआ	18	01	3
कटक	17	28	36
कन्याकुमारी	18	08	--
कालका(हरि.)	17	56	8
काँगड़ा	17	59	5
कानपुर	17	46	18
किश्तवाड़	18	00	4
कुराली	17	58	6
कुल्लू	17	55	9
कुमारसेन	17	54	10
कुरुक्षेत्र	17	58	6
कूचबिहार	17	09	55
कैथल	17	59	5
कोटकपूरा पं.	18	06	--
कोटखाई(हि.प्र.)	17	54	10
कोलकाता	17	15	49
कोचीन (के.)	18	11	--
कोहिमा(नागा)	16	50	--
खन्ना (पं.)	17	59	5
खरड़ (पं.)	17	58	6
खण्डवा(म.प्र.)	18	05	--
गढ़शंकर	17	59	5
गगरेट (हि.प्र.)	18	00	4
गया	17	30	34
गाज़ियाबाद	17	56	8
गांधीनगर	18	20	-
गंगटोक (सि.)	17	13	51
गुरदासपुर	18	02	2
गुड़गांव	17	58	6

नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
गुवाहाटी आ.	17	00	64
गोराया (पं.)	18	01	3
गोहाना (हरि.)	17	59	5
गोवा	18	18	--
गोरखपुर	17	34	30
ग्वालियर	17	54	10
घुमारवीं	17	57	7
चण्डीगढ़	17	57	8
चम्बा	17	58	6
चमौली (उत्तरां)	17	48	16
चिन्तपूर्णी	18	00	4
चेन्नई	17	54	10
छिन्दवाड़ा	17	54	10
जलालाबाद(पं.)	18	07	--
जस्सूर (हि.प्र.)	18	00	4
जगाधरी	17	56	8
जम्मू	18	05	--
जयपुर	18	05	--
जबलपुर (म.प्र.)	17	49	15
जलगांव (महा.)	18	07	--
जालन्धर	18	02	2
जीन्द	18	01	3
जोधपुर	18	15	--
जोरहाट(आ.)	16	50	74
जोगिन्द्रनगर	17	57	7
ज्वाली(हि.प्र.)	18	00	4
झाँसी	17	54	10
झुंझुनू	18	04	--
टोहाना	18	01	3
डल्हौज़ी	17	59	5

नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
डिब्रूगढ़(आ.)	16	45	79
डोडा (का.)	18	01	3
तरनतारन	18	04	-
तलवाड़ा	18	02	2
त्रिवन्तपुरम् (के.)	18	11	-
दार्जिलिंग	17	14	50
द्वारिका	18	35	--
दिल्ली	17	57	7
दीनानगर	18	'02	2
दुर्ग (३६गढ़)	17	45	19
देहरादून	17	53	11
दौलतपुर(हि.प्र.)	18	00	4
धर्मपुर	17	59	5
धारीवाल	18	03	1
धूरी	18	02	2
नकोदर	18	02	2
नवांशहर	17	59	5
नंगल	17	58	6
नगरोटा(हि.प्र.)	17	59	5
नरवाणा(हि.प्र.)	18	00	4
नवलगढ़	18	05	--
नाभा	18	00	4
नादौन	17	59	5
नाहन	17	55	9
नालागढ़	17	59	5
नारकण्डा	17	54	10
नारनौल (हरि.)	18	01	3
नागपुर	17	53	11
नासिक	18	17	--
नूरमहल (पं.)	18	03	1
नुरपुर (हि.प्र.)	18	00	4

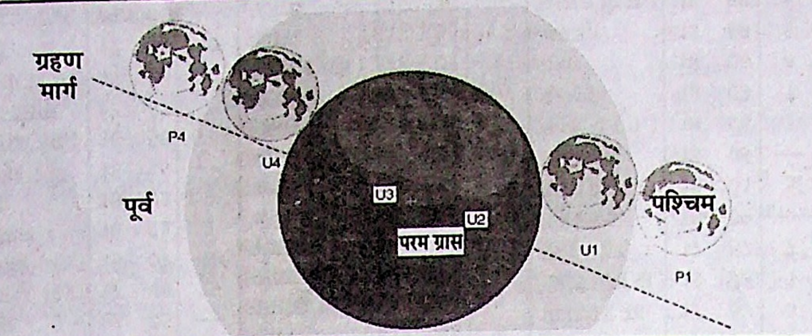
नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
नैनादेवी	17	58	6
नोएडा	17	57	7
नैनीताल	17	47	17
पटना	17	27	37
पटियाला	17	59	5
पठानकोट	18	02	2
परवाणू(हि.प्र.)	17	56	8
पणजी(गोआ)	18	19	8
पंचकूला	17	56	8
पालमपुर	17	58	6
पानीपत	17	58	6
पांधुरना(म.प्र.)	17	56	8
पुँछ (ज.का.)	18	05	--
पूना	18	16	--
पोर्ट-ब्लेयर	17	04	60
फरीदकोट	18	05	--
फगवाड़ा	18	01	3
फतेहगढ़ सा.	17	59	5
फतेहाबाद(हरि.)	18	03	1
फरीदाबाद	17	57	7
फाज़िल्का	18	09	--
फिल्लौर	18	01	3
फिरोज़पुर	18	05	--
बरनाला (पं.)	18	03	1
बटाला	18	03	1
बंगा	18	00	4
बलाचौर	17	59	5
बरसर(हि.प्र.)	17	58	6
बनीखेत(हि.प्र.)	17	59	5
बल्लभगढ़	17	57	7

नगर	चन्द्रोदय घं.	मिं.	पर्वकाल मिं.
बहादुरगढ़	17	58	6
बनिहाल(का.)	18	02	2
बसौली (का.)	17	59	5
बनारस(वाराणसी)	17	36	28
बड़ौदा	18	17	--
बिलासपुर(हि.प्र.)	17	57	7
बिलासपुर(३६)	17	41	23
बीकानेर	18	13	--
बुलन्दशहर	17	55	9
बैजनाथ(हि.प्र.)	17	58	6
बैंगलुरु	18	05	--
भटिण्डा	18	05	--
भद्रवाह (का.)	18	00	4
भिवानी	18	02	2
भुन्तर (हि.प्र.)	17	55	9
भुवनेश्वर	17	28	36
भोपाल	17	59	5
मलेरकोटला	18	00	4
मण्डी(हि.प्र.)	17	56	8
मनाली	17	55	9
महेन्द्रगढ़	18	01	3
मथुरा	17	56	8
मानसा (पं.)	18	03	1
माऊंट-आबू	18	20	-
मुकेरिया	18	02	2
मुक्तसर	18	07	--
मुम्बई	18	22	--
मुर्शीदाबाद	17	15	49
मुज़फ्फरपुर	17	25	39
मेरठ	17	55	9
मैंगलोर	18	17	--
मैसूर	18	10	--

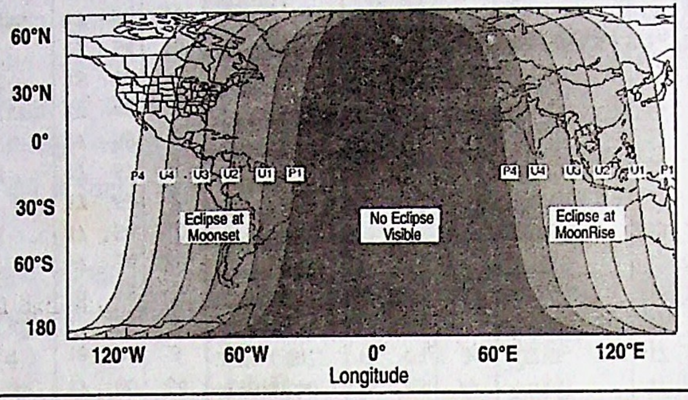
नोट–'--' = जिन नगरों में पर्वकाल नहीं दिया, वहाँ यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। अर्थात् जिन नगरों में चंद्रोदय 18-04 के बाद होगा वहाँ ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

नगर	चन्द्रोदय		पर्व-काल	नगर	चन्द्रोदय		पर्व-काल
	घं.	मिं.	मिं.		घं.	मिं.	मिं.
मोगा (पं.)	18	03	1	संगरूर	18	01	3
मोहाली	17	57	7	सरहिन्द	17	58	6
यमुनानगर	17	56	8	समाना (पं.)	18	00	4
राजपुरा (पं.)	17	59	5	सपाटू (हि.प्र.)	17	56	8
राजकोट(गुज.)	18	29	--	सरकाघाट	17	59	5
राहों (पं.)	18	00	4	सन्धोल(हि.प्र.)	17	57	7
रामपुरबुशैहर	17	53	11	सहारनपुर	17	55	9
राजौरी (का.)	18	06	--	साम्बा (का.)	18	03	1
रामबन (का.)	18	02	2	सादूलपुर (रा.)	18	04	--
रायगढ़ (३६)	17	36	28	सागर (म.प्र.)	17	54	10
रायपुर (३६)	17	43	21	सिरमौर	17	54	10
राँची	17	27	37	सिरसा (हरि.)	18	05	--
रिवाड़ी	17	59	5	सिवानी	18	04	--
रियासी (का.)	18	03	1	सिरोंही(राज.)	18	16	--
रूड़की	17	53	11	सिहोर (म.प्र.)	18	01	3
रोपड़ (पं.)	17	58	6	सिलीगुड़ी	17	14	50
रोहड़ू (हि.प्र.)	17	53	11	सीकर (रा.)	18	05	--
रोहतक	17	59	5	सुनाम (पं.)	18	02	2
लखनऊ	17	44	21	सुन्दरनगर	17	56	8
लाडवा (हरि.)	17	57	7	सुजानपुर टिहरा	17	58	6
लुधियाना	18	00	4	सूरत	18	19	--
वाराणसी	17	36	28	सोलन	17	55	9
विशाखापट्टनम	17	37	27	सोनीपत	17	58	6
विकासनगर	17	54	10	हमीपुर(हि.प्र.)	17	58	6
शाहकोट (पं.)	18	03	1	हनुमानगढ़	18	08	--
शाहाबाद(हरि.)	17	57	7	हरिद्वार	17	52	12
शाहदरा(दिल्ली)	17	57	7	हाजीपुर (पं.)	18	02	2
शाजापुर(म.प्र.)	18	04	--	हाँसी (हरि.)	18	02	2
शिमला	17	55	9	हिसार	18	03	1
शिलांग (मे.)	17	00	64	हैदराबाद	17	59	5
शोलापुर(महा.)	18	06	--	होशियारपुर	18	00	4
श्रीनगर (का.)	18	05	--	होशंगाबाद	17	58	6
श्रीगंगानगर	18	10	--				

खग्रास चन्द्रग्रहण–8 अक्तूबर, 2014 ई० (भारत में दृश्य)
चन्द्रमा की कलाएं



खग्रास चन्द्रग्रहण–8 अक्तूबर, 2014 ई०
ग्रहण का विश्व में घटनास्थल



उपरोक्त ग्रहण चित्र के मध्य में गहरे काले (Dark Black) को छोड़कर शेष कम धुंधले भागों में क्रमशः यह ग्रहण दृश्य होगा। गहरे काले क्षेत्र से जितनी दूर जो क्षेत्र होगा, वहाँ यह ग्रहण अधिक समय तक दिखाई देगा। जबकि काले क्षेत्र के जितने अधिक निकट जो क्षेत्र होगा, वहाँ यह ग्रहण बहुत कम समय के लिए दृश्य होगा।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०७१ (सन् 2014-15 ई.)

गतवर्ष से तुला राशि में संचरणशील शनि देव वि. संवत् २०७१ (सन् 2014-15 ई.) के मध्य ता. 1 नवम्बर, 2014 ई. तक तुला राशि में ही संचार करेंगे। तुला राशि संचारणकाल में शनि देव 2 मार्च, 2014 ई. को वक्री होकर 20 जुलाई, 2014 ई. को मार्गी होंगे। तदुपरान्त 2 नवम्बर, 2014 ई. को रात्रि 8 बजकर, 53 मिनट (20/53) पर वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। ता. 14 मार्च, 2015 ई. को वृश्चिक राशि में ही वक्री होंगे।

ध्यान रहे ! शनि, मंगल आदि क्रूर ग्रह जब किसी राशि में गोचरवश वक्री होकर संचार करते हैं, तो और भी अधिक क्रूर एवं अशुभ फलदायक बन जाते हैं, जबकि गुरु, शुक्र आदि शुभ ग्रह अपनी राशि में वक्री होने पर और भी अधिक शुभ फल प्रदान करते हैं-

क्रूरा वक्रा महाक्रूराः, सौम्य वक्रा महाशुभाः।

फलस्वरूप शनिदेव जब गोचरवश वक्री अवस्था में संचार करेंगे, तो जातक/जातिका को मानसिक व शारीरिक कष्ट, आर्थिक परेशानियाँ, रोगादि प्रकट होने लगते हैं। समाज में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, राजनैतिक उलटफेर, क्लिष्ट रोग-भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

गोचरवश जब शनि किसी जातक की जन्म-राशि (अथवा नाम राशि) से द्वादश, प्रथम या द्वितीय स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचरस्थिति शनि-साढ़ेसति कहलाती है। इसके फलस्वरूप मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियां, आय कम व खर्च की अधिकता, रोग एवं शत्रु भय, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं। यथा-

राशौ द्वादशमूर्हिन जन्म हृदये पादौ, द्वितीयेशनिः।
नानाक्लेश करोति दुर्जन भयं पुत्रान् प्रशुन् पीडयेत्।।

शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले, बाहरवें और दूसरे भावों में स्थित राशियों को विशेषतः प्रभावित करता है। इसी को शनि की साढ़ेसाती (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

शनि की ढैय्या-जब गोचरवश शनि चन्द्रराशि (या नाम राशि) से चौथे या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है, यह अढ़ाई वर्ष की होती है, इसका प्रभाव भी अशुभ होता है-

''लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धुविरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।''

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहता है।

● तुलाराशिस्थ शनि साढ़ेसाती व ढैय्या विचार-सं. २०७१ ●

(संवतारम्भ से 1 नवम्बर, 2014 ई. तक)

साढ़ेसाती-

☆ कन्या राशि वालों को शनि की साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

☆ तुला राशि वालों को शनि साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्यम अवस्था में होगी।

☆ वृश्चिक राशि वालों को शनि साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

ढैय्या विचार-कर्क और मीन राशि वाले जातकों को शनि की अढैय्या का अशुभ प्रभाव रहेगा।

✤ तुलाराशिस्थ शनि का गोचरफल-सं. २०७१ ✤

(संवतारम्भ से 1 नवम्बर, 2014 ई. तक)

✤ **मेष**-राशि पर शनि की अशुभ दृष्टि 1 नवं. तक तथा केतु का संचार 11 जुला. तक रहेगा। जिससे आर्थिक परेशानियां, शरीर कष्ट, गुप्त परेशानियां एवं व्यवसायिक उलझनें रहेंगी। मन क्रोधित एवं उचाट रहेगा। परन्तु पाया सुवर्ण होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। विशेष तौर पर 11 जुला. के बाद।

✤ **वृष**-राशि को शनि षष्ठस्थ होने से कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना रहेगा। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया ताम्र होने से धन लाभ व उन्नति के चाँस भी मिलेंगे। स्वास्थ्य लाभ, धर्म में प्रवृत्ति रहेगी।

✤ **मिथुन**-राशि को शनि पंचमस्थ होने से पूज्य होगा। उच्च विद्या प्राप्ति में बाधाएँ उत्पन्न हों। स्त्री को कष्ट एवं सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता हो। कार्यों में संघर्ष, के बाद सफलता मिले। ता. 18 जून तक गुरु का संचार रहने से मान-सम्मान एवं प्रोमोशन, उच्च पद प्राप्ति हो सकती है। शनि का पाया चाँदी रहने से आय में वृद्धि और भूमि-वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

✤ **कर्क**-शनि की ढैय्या एवं पाया भी लोहा होने से अशुभ फल घटित होंगे। रोग एवं शत्रु भय, पारिवारिक कलह, तनाव एवं वृथा खर्च भी रहेंगे। ता. 19 जून के बाद गुरु इस राशि में उच्च स्थिति में संचार करने से मान-सम्मान, पुत्र-सन्तान सम्बन्धी सुख तथा पदोन्नति होगी।

✤ **सिंह**-राशि को शनि तृतीय होने तथा पाया ताम्र होने से धन लाभ, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। पाया ताम्र होने से भी लाभ एवं उन्नति के भी अवसर प्राप्त होंगे। परिवार में मंगल कार्य सम्पादित होने एवं शुभ कार्यों पर खर्च होने के योग बनेंगे।

✤ **कन्या**–शनि साढ़ेसति एवं शनि का पाया सुवर्ण होने से व्यवसायिक उलझनें, वृथा भाग-दौड़, धन का खर्च अधिक होगा, परन्तु शनि का पाया सोना होने से वृथा दौड़धूप अधिक एवं मानसिक तनाव रहेगा।

✤ **तुला**–राशि को लग्न भाव पर शनि-साढ़ेसति होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना, बनते कार्यों में अड़चनें एवं विलम्ब हो। किसी रोग के कारण कष्ट हो। शनि उच्च राशिस्थ तथा 12 जुला. के बाद राहु का संचार भी हट जाने से अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे।

✤ **वृश्चिक**–शनि द्वादशस्थ (साढ़ेसति) होने से परिवार एवं व्यवसाय सम्बन्धी दौड़धूप अधिक रहे, वृथा परिश्रम एवं खर्च भी बहुत अधिक रहे। पाया लोहा होने से भी शरीर कष्ट, तनाव एवं संघर्ष अधिक रहे। ता. 19 जून से गुरु की इस राशि पर दृष्टि होने से धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी।

✤ **धनु**–राशि को शनि एकादशस्थ (लाभ) होने से धनु राशि पर दृष्टि रहेगी। अत्यन्त संघर्ष के बाद धन लाभ होगा। परिवार सम्बन्धी चिन्ता के कारण तनाव रहे, परन्तु शनि का पाया ताम्बा होने से किसी नए काम की योजना बनेगी। ता. 18 जून तक गुरु की सप्तम दृष्टि होने से पदोन्नति एवं निर्वाह योग्य धन लाभ होते रहेंगे।

✤ **मकर**–शनि का संचार दशमस्थ होने से व्यवसाय में अड़चनें हों। खर्च भी बढ़ें, परन्तु शनि का पाया रजत होने से विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। शुभ कार्यों पर खर्च भी होंगे।

✤ **कुम्भ**–शनि नवमस्थ होने से भाग्योनति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्च अधिक, व्यापार में लाभ कम, निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मतान्तर हों। शनि का पाया सोना होने से भी आर्थिक उलझनों के कारण घरेलू क्षेत्रों में तनाव रहे।

✤ **मीन**–शनि अष्टमस्थ (ढैय्या के कारण) अशुभफली होगा। शरीर कष्ट, पारिवारिक उलझनें एवं खर्चों की अधिकता रहे। शनि का पाया भी लोहा होने से आर्थिक परेशानियां, घरेलू कलह-क्लेश तथा दौड़धूप अधिक रहे।

✤ वृश्चिक राशिस्थ शनि का शुभाशुभ विचार ✤

[ता. 2 नवम्बर से संवतान्त तक]

✤ **साढ़ेसाती**–तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि वालों को शनि-साढ़ेसाती का शुभाशुभ फल होगा।

✤ **ढैय्या विचार**–सिंह व मेष राशि वाले जातकों को शनि की ढैय्या (अढैय्या) का अशुभ प्रभाव होगा।

✤ **पाया विचार**–शनिदेव 2 नवम्बर, 2014 ई., रविवार को कुम्भ के चन्द्रमाकालीन वृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। तदनुसार मेषादि राशियों पर ताम्रादि पाया इस प्रकार से होगा–

(1) मेष, कन्या एवं कुम्भ राशि पर सुवर्ण का पाया–संघर्षपूर्ण

(2) वृष, सिंह एवं धनु राशियों पर ताम्र का पाया–शुभफलप्रद

(3) मिथुन, तुला एवं मकर राशियों पर चाँदी का पाया–धन लाभ

(4) कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशियों पर लौह का पाया–पारिवारिक कलह

(क) सुवर्ण (सोना) का पाया हो, तो जातक को संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना होता है। आय में कमी तथा खर्च अधिक, शरीर कष्ट, क्लिष्ट रोग, तनाव तथा बन्धुओं के साथ मनमुटाव हो।

(ख) ताम्र के पाया का फल शुभ होता है। उच्च विद्या प्राप्ति, वाहन, धन-सम्पदा का लाभ एवं विवाह, सन्तान, आरोग्यादि सुख, पदोन्नति आदि लाभ होते हैं।

(ग) चाँदी का पाया भी शुभफल प्रदायक होता है। पदोन्नति, विदेशगमन, आकस्मिक धन-लाभ, भूमि, वाहनादि सुख, स्त्री-सन्तान आदि पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होती है।

(घ) लौह का पाया हो, तो जातक को घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, आय में कमी व खर्चों में अधिकता तथा दुर्घटना से चोटादि का भय होता है।

✤ वृश्चिक राशिस्थ शनि का गोचरफल–सं. २०७१ ✤

[ता. 2 नवम्बर, 2014 ई. से संवतान्त तक]

✤ **मेष**–शनि अष्टमस्थ होने से शनि की ढैय्या प्रारम्भ होगी। व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। खर्च भी अधिक होंगे। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से मानसिक तनाव, घरेलू उलझनें तथा वृथा दौड़धूप अधिक रहे।

✤ **वृष**–शनि सप्तमस्थ होकर वृष राशि पर दृष्टि करेगा। व्यवसायिक परेशानियां, आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया ताम्र होने से गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मंगल कार्य सम्पादित होने एवं शुभ कार्यों पर खर्च होने के योग बनेंगे।

✤ **मिथुन**–शनि छटे होने से विषम परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। शनि का पाया चाँदी होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार तथा आकस्मिक लाभ भी होंगे।

✤ **कर्क**–शनि पंचमस्थ होने से धन लाभ, उच्च विद्या प्राप्ति या कैरियर में विघ्न-बाधाएँ, धन का खर्च अधिक हो, शनि का पाया भी लौह होने से पारिवारिक परेशानियों एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहे। परन्तु गुरु की इस राशि पर उच्च स्थिति के कारण धीरे-धीरे समस्याएं दूर होंगी। धर्म-कर्म की ओर रूझान बढ़ेगा।

✤ **सिंह**–राशि से शनि चतुर्थ होने से शनि की ढैय्या प्रारम्भ होगी। आवास एवं व्यवसाय सम्बन्धी पेरशानियाँ बढ़ें। परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से आकस्मिक लाभ व कुछ बिगड़े कामों में सुधार भी होगा।

✤ **कन्या**–तृतीयस्थ शनि शुभ होगा। भूमि, मकान, वाहनादि, सुख-सुविधाओं में वृद्धिकारक होगा। परन्तु शनि का पाया सुवर्ण होने से आय सम्बन्धी चिन्ता, शरीर कष्ट, अनावश्यक खर्च व परेशानी होगी।

✤ **तुला**–राशि को शनि द्वितीय रहेगा, शनि साढ़ेसति का प्रभाव अभी रहेगा। घरेलू एवं

आर्थिक उलझनें, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। परन्तु शनि का पाया रजत (चाँदी) होने के कारण बीच-बीच में धन लाभ के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

✤ **वृश्चिक**–राशि को लग्न भाव पर ही शनि-साढ़ेसति होने से आय में विघ्न-बाधाएँ व खर्च बढ़ेंगे। बनते कार्यों में अड़चनें एवं विलम्ब हो, किसी रोग के कारण कष्ट हो। शनि का पाया लोहा होने से भी संघर्ष व पारिवारिक तनाव अधिक रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

✤ **धनु**–राशि को शनि द्वादशस्थ होने से शनि साढ़ेसति प्रारम्भ होगी, घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। परन्तु इस राशि को शनि का पाया 'ताम्र' होने से आकस्मिक लाभ व कुछ बिगड़े कामों में सुधार भी होगा।

✤ **मकर**–राशि को शनि एकादशस्थ (लाभ) होने से परिश्रम के बाद धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। तृतीय दृष्टि के कारण स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि की चिन्ता भी रहेगी। शनि का पाया चाँदी होने से भी आकस्मिक धन लाभ तथा खर्च अधिक होंगे।

✤ **कुम्भ**–राशि को दशमस्थ शनि होने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना रहेगा। इस राशि को पाया भी सुवर्ण होने से लाभ कम व खर्च अधिक होंगे। मानसिक तनाव भी बढ़े।

✤ **मीन**–राशि को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्च अधिक, व्यापार में लाभ कम, निकटस्थ भाई-बन्धुओं से मतान्तर हों। शनि का पाया भी लोहा होने से आय के साधन सीमित, परन्तु खर्चों में वृद्धि रहे। स्वास्थ्य एवं शिक्षा की दृष्टि से अशुभकारी होगा।

शनि–साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी उपाय

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय–शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें–

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा–

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं, सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र-जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष लाभकारी होगा।

विधि–सायं सूर्यास्त के बाद, स्नानादि उपरान्त पश्चिम दिशा की ओर मुख करके काले रेशमी आसन (कम्बलादि) पर बैठ जाएँ। सामने स्टील की थाली में लगभग 100 ग्राम जौं, 100 ग्राम काले तिल, काले वर्ण के कुछ फूल, 1 मुट्ठी चावल, 5 साबुत सुपारी, मौली, धूपबत्ती, रोली, लाल चंदन, काली मिठाई जैसे-गुलाब जामुन भी रख लें।

स्टील की कटोरी में तेल सरसों का दीपक जलाकर रखें। सामने एक नारियल तिलक लगाकर, स्टील का लोटा शुद्ध जल भरकर रखें।

मन्त्र-जाप–ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः

मन्त्र की 1 या 3 माला करके उसे पूजन सामग्री के साथ बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

(3) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

शनि साढ़ेसाती, ढैय्या एवं शनि पाया के अशुभ फल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र की 23 हज़ार की संख्या में विधिपूर्वक जप करना, तदुपरान्त

दशमांश संख्या में हवन करना या करवाना कल्याणकारी रहता है। शनिवार का व्रत रखना, उड़द, सप्तधान्यादि दान, कृष्ण वस्त्र, शिव उपासना, शनि स्तोत्र तथा शनि से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का दान करने से लाभ होता है। इसके अतिरिक्त शुभ मुहूर्त्त में नीलम एवं विधिपूर्वक निर्मित शनि यन्त्र धारण करना भी लाभप्रद रहता है।

शनि का बीज मन्त्र—''ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।।''

शनि का वैदिक मन्त्र—

''ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्त्रवन्तु नः॥ शं नमः॥''

सर्वारिष्ट शान्त्यर्थ शनि स्तोत्र—

''ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तुते॥
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते शौरये विभो॥
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥''

(धर्मसिन्धु)

प्रतिदिन प्रातःकाल भगवान शिव की पूजनोपरान्त पीपल वृक्ष के समीप इस स्तोत्र का पाठ करके कच्ची लस्सी में काले तिल डालकर वृक्ष के मूल में लस्सी चढ़ाना तथा सायंकाल को तैल का दीपक जलाकर प्रार्थना करने से शनि-जनित अरिष्टों की शान्ति होती है।

गुरु का मिथुन/कर्क राशिस्थ गोचरफल-संवत् २०७१

गतवर्ष 31 मई, 2013 ई. से गुरु (वृहस्पति) मिथुन राशि में संचार कर रहे हैं। आगामी संवत् में भी गुरु 18 जून, 2014 ई. तक मिथुन राशि में ही संचार करेंगे। ता. 19 जून, गुरुवार, सन् 2014 ई. को गुरु प्रातः 8घं. 45मिं. पर अपनी उच्च राशि कर्क में प्रवेश करेंगे।

वक्री मार्गी—कर्क राशि में संचरणशील गुरु 8 दिसम्बर, 2014 ई. को वक्री होकर संवतान्त (15 मार्च, 2015 ई.) तक वक्री रहेगा।

कर्क राशि के वृहस्पति का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है–

वृहस्पतिः सदा कर्के स्वल्पमेघः प्रवर्षति।
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।।

अर्थात् कर्क राशि का वृहस्पति होने पर वर्षा कम हो तथा राजाओं का आपस में युद्ध होवे और दुर्भिक्ष होवे। जनोपयोगी वस्तुएँ महँगे होंगी।

जबकि 8 दिसं. से वक्री गुरु का फल इस प्रकार लिखा है–

वक्रभूतो यदाजीवः सुभिक्षं भूतले भवेत्।
जनभूपाल सौख्यं स्यात्समर्घं गोरसंघृतम्।।

अर्थात् वृहस्पति वक्री होने पर पृथ्वी पर सुभिक्ष होवे और सब मनुष्य, राजाओं को सुख होवे, गौ का दूध, घी आदि रस सस्ते होंगे।

गतवर्षीय संवत् २०७० की पंचांगदिवाकर में हम गुरु का मिथुन राशि में गोचरफल यद्यपि लिख चुके हैं, तथापि पाठकों की सुविधा हेतु पुनः लिख रहे हैं–

☆ मिथुन राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ गोचरफल ☆

[वर्षारम्भ जनवरी, 2014 ई. से 18 जून, 2014 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय कम व आकस्मिक खर्च, शरीर कष्ट, व घरेलू उलझनों के कारण तनाव बढ़ेंगे।	धर्म कार्यों की ओर रूचि, उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे, धन लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति हो।	लग्नस्थ गुरु शत्रु राशिस्थ होने से अति संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी।	द्वादशस्थ गुरु होने से आय कम एवं खर्च अधिक, बनते कामों में विघ्न, घरेलू व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों का सामना रहे।	धन-लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति विघ्नों के बाद होगी। कोई शुभ कार्य हो।	दशमस्थ गुरु होने से संघर्ष के बाद धन लाभ, व्यवसाय में हानि, आय से खर्च अधिक रहेंगे। गायत्री मंत्र जप शुभ रहे।	भाग्य स्थान में गुरु शुभ फल देगा। उच्च-विद्या व कैरियर में सफलता, धर्म-कर्म की ओर रूचि बढ़ेगी।	अष्टमस्थ गुरु होने से क्लिष्ट रोग का भय, आय कम व खर्च अधिक, घरेलू उलझनें मानसिक तनाव व गुप्त चिन्ता रहे।	सप्तमस्थ गुरु होने से धन-लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। परन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।	छटे गुरु होने से खर्च बढ़ेंगे, रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा। निकट बन्धु से वृथा तकरार, तनाव बढ़े।	पंचमस्थ गुरु होने से गृह में किसी शुभ कार्य पर खर्च हो, विद्या-भूमि एवं वाहन सम्बन्धी सुख मिले। भाग्य उन्नति हो।	आराम कम व संघर्ष अधिक, धन, वाहन संबंधी परेशानी, चोटादि का भय, खर्चों में वृद्धि हो।

☆ कर्क राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल ☆

[19 जून, 2014 ई. से 15 मार्च, 2015 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
चतुर्थस्थ गुरु होने से साधनों में वृद्धि परन्तु सुख में कमी हो, तनाव व अशान्ति बढ़े, सवारी से चोटादि का भय, गृह में कलह-क्लेश हो।	तृतीयस्थ गुरु होने से धन लाभ अच्छा परंतु आकस्मिक खर्च, निकटस्थ भाई-बन्धु को शरीर कष्ट, घरेलू उलझनें।	उच्च प्रतिष्ठित लोगों से मेल हो, दीर्घ यात्रा के योग, धन शुभ कार्यों पर खर्च हो। धार्मिक की ओर रूचि रहे।	लग्नस्थ गुरु पूज्य होता है। यद्यपि संघर्ष देता है, परन्तु यहाँ उच्च राशिगत होने से उलझनों एवं संघर्ष के बाद धन लाभ एवं कार्य प्रशस्त होंगे।	द्वादश गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, बनते कार्यों में विघ्न, धर्म कार्यों में प्रवृत्ति, शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होंगे।	धन सम्पदा व सवारी आदि का सुख हो, भाग्य में उन्नति, प्रिय मिलन, व्यय अधिक, कार्यों में सफलता हो।	दशमस्थ गुरु होने से कार्य-व्यवसाय में रुकावटों के बाद धन प्राप्ति, आय कम, खर्च अधिक, तनाव के कारण स्वास्थ्य खराब रहे।	गुरु भाग्यस्थ होने से बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, भूमि, वाहनादि का सुख मिले, किसी प्रियबन्धु से मिलाप, सन्तान सम्बन्धी सुख।	अष्टमस्थ गुरु होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे, ऋण व रोग का भय, घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।	सप्तमस्थ गुरु होने से विघ्नों के बाद कार्य-सिद्धि धन-लाभ, भाग्य में उन्नति के योग हैं। यात्रा का विचार बने।	छटे गुरु होने से व्यय अधिक रहे, ऋण, रोग एवं शत्रु भय हो, निज-बन्धु से विरोध रहे।	पंचमस्थ गुरु होने से भूमि-वाहनादि सुख हो, उच्च विद्या में सफलता, विवाह आदि सुखों की प्राप्ति, श्रेष्ठजनों के सम्पर्क लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे

ध्यान रहे, जन्म राशि अथवा नाम राशि से गुरु १, ३, ४, ६, ८ या १२वें स्थान पर हो, तो व्याधि (रोग) भय, मान-सम्मान में कमी, उच्च विद्या में असफलता, धन हानि, परदेश गमन तथा मित्रों से विरोध रहे-

द्वादश दशम चतुर्थे जन्मनि षष्ठाष्टगे, तृतीये च।
व्याधिर्विदेशगमन धन हानि, मित्रविरोधं सुरगुरुः कुरुते।।

गुरु का कारकत्व—गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है।

हमारे कार्यालय से छपी **'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1'** में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शन्ति के लिए दान—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र—"ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोयदयात्।।"

गुरु बीज मन्त्र—"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।।"

☆ राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल-संवत् २०७१ ☆

गतवर्ष से तुला राशि में संचरणशील राहु आगामी वि. संवत् २०७१ (सन् 2014-15 ई.) में **11 जुलाई, सन् 2014 ई.** तक तुला राशि में ही संचार करेगा। ता. **12 जुलाई, सन् 2014 ई. को रात्रि 9 बजकर 52 मिनट (21/52)** पर राहु कन्या राशि में तथा केतु मीन राशि में प्रवेश करेंगे। तुला राशिस्थ राहु तथा मेष राशिस्थ केतु का फल यद्यपि गतवर्ष की पंचांग में लिख आए हैं, फिर भी संक्षेप में पुनः लिख रहे हैं। तदुपरान्त कन्या राशिस्थ राहु एवं मीन राशिस्थ केतु का फल लिखा है।

☆ तुला राशिस्थ राहु का गोचर फल ☆

[वर्षारम्भ से 11 जुलाई, 2014 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ कम व खर्च अधिक होंगे, कार्यों में विघ्न बाधाएँ, परिवार में मन-मुटाव हो।	स्वास्थ्य हानि, विशेष परिश्रम के बाद भी आय कम व खर्च अधिक होंगे।	आर्थिक उलझनों के कारण घरेलू परेशानियाँ हो, भाग्य में विघ्न, गुप्त चिन्ताएँ हों।	व्यवसाय में संघर्ष के बाद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक रहे।	कोई खुश-खबरी मिलेगी धन लाभ व उन्नति के अवसर होंगे। विदेश-गमन की योजना बनेगी।	धन प्राप्ति में विघ्नों का सामना रहे ! आय कम व खर्च अधिक हों। तनाव बढ़ें।	शरीर कष्ट, तनाव रहे। बनते कामों में अड़चनें पड़ें। खर्च बढ़ें।	सामान्य आय के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहें।	धन-लाभ व उन्नति के चांस होंगे, पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे। विदेश यात्रा के विचार बनेंगे।	वृथा दौड़ धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें हों, घरेलू उलझनों से अशान्ति हो।	बिगड़े कामों में कुछ सुधार हो, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, खर्चों में भी खास वृद्धि हो।	धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे, किसी प्रिय बन्धु से मेल हो, कुछ बिगड़े काम बनेंगे।

☆ कन्या राशिस्थ राहु का गेचरफल ☆

[12 जुलाई, 2014 ई. से 15 मार्च, 2015 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
विशेष संघर्ष के बाद भी आय कम व खर्च अधिक रहें।	आर्थिक उलझनों के कारण घरेलू परेशानियां हों, भाग्य में विघ्नों के कारण गुप्त चिंताएं रहें।	कार्य-व्यवसाय में विघ्नों के बाद सफलता मिले। आय के साथ-2 खर्च भी बहुत हों।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। विदेश-गमन की योजना बनेगी।	घरेलू कलह-क्लेश हो, वृथा खर्च बढ़े, शरीर कष्ट व तनाव बढ़े। रोग भय।	शरीर कष्ट, तनाव अधिक रहे। बनते कार्यों में अड़चनें पड़े, खर्चों की भी अधिकता हो।	सामान्य आय के साथ-2 खर्च भी बहुत अधिक रहेंगे। किसी अप्रिय घटना के कारण मन अशान्त रहे।	धन लाभ व उन्नति के चांस बनेंगे, पर खर्च भी बहुत बढ़ेंगे, विदेश यात्रा के विचार बनेंगे।	आय अल्प, किन्तु खर्च बहुत हों, कार्य-व्यवसाय एवं घरेलू उलझनों के कारण तनाव बढ़ें कार्यों में विघ्न।	बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, वाहनादि सुखों की प्राप्ति, बड़ी कठिनता से निर्वाह योग्य आय बने।	धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे, शुभ कार्यों पर खर्च होंगे, शुभ समाचार मिले, कुछ बिगड़े काम बनेंगे।	बनते कार्यों में अड़चनें, लाभ कम व खर्च अधिक होंगे, परिवार या पति/पत्नी में मन-मुटाव हो।

☆ मेष राशिस्थ केतु का गोचर फल ☆

[वर्षारम्भ से 11 जुलाई, 2014 ई० तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
संघर्ष अधिक, आय कम व खर्च-अधिक हो, क्रोध अधिक रहे।	बनते कामों में अड़चनें, आय कम व खर्च ज्यादा रहे, स्वास्थ्य भी ठीक हो।	विघ्नों के बावजूद, निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनें, व्यय भी अधिक रहेंगे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रु भय उलझनें बढ़ेंगी।	धन लाभ अल्प आराम कम संघर्ष अधिक हो। भूमि, वाहन आदि पर खर्च हो।	धन लाभ अच्छा वाहन, आदि सुखों का लाभ। कुछ बिगड़े कामों में सुधार।	धन खर्च अधिक लाभ अल्प हो। उलझनों के कारण तनाव व अशान्ति बढ़ेंगी।	विघ्नों के बाद लाभ व उन्नति के योग। मार्च के बाद आय कम व खर्च अधिक रहेंगे।	लाभ कम व खर्च अधिक हों। किसी मंगल कार्य पर खर्च हो विदेश यात्रा का योग बनेगा।	संघर्ष के बाद गुजारे योग्य आय के साधन हों। भूमि, सवारी आदि सुखों का लाभ।	गत किए गए कार्यों में सफलता हो, धन-लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अप्रैल में बिगड़ा काम बनें।	वृथा खर्च अधिक हों। आय में भी कमी व खर्च अधिक होंगे।

☆ मीन राशिस्थ केतु का गेचरफल ☆

[12 जुलाई, 2014 ई. से 15 मार्च, 2015 ई. तक]

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
रोग व शत्रु भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें। खर्च अधिक रहेंगे।	धन लाभ साधारण, वाहन, भूमि आदि साधनों की प्राप्ति, संघर्ष अधिक रहे।	अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे, खर्चों में वृद्धि, रोग व शत्रुभय, परेशानियां बढ़ेंगी।	भाग्य-उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़ें, दुर्घटना से चोट आदि का भय।	परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहन आदि सुख प्राप्त हों,कुछ बिगड़े कामों में सुधार।	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैमनस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले।	पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कार्यों में कुछ सुधार, खुश-खबरी मिले।	लाभ कम व खर्च अधिक हों। घरेलू कलह-क्लेश के कारण मन अशान्त, विदेश गमन का योग बनेगा।	संघर्ष के बाद गुज़ारे योग्य आय के साधन हों। भूमि, सवारी आदि सुखों का लाभ।	बिगड़े कामों में सुधार, परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहन सुख मिले।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम व खर्च अधिक रहे, तनाव हो।	शरीर कष्ट व तनाव रहे, बनते कार्यों में विघ्न, खर्च अधिक हो।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र-

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र-

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। मूल्य-200/-

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

- ✷ आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती-इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
- ✷ विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
- ✷ रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
- ✷ पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।। चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग-वि. संवत् २०७१ (सन् 2014-15 ई.)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो '**रवि योग**' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग— गुरु अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल में, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे।** ध्यान रहे, 11 जुला. से 5 अग., 2014 ई. तक गुरु अस्त तथा 2 अक्तू. से 27 नवं., 2014 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा।

—पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014 ई.	घं. मिं.	2014 ई.	घं. मिं.
1 अप्रै.	सू. उ.	1 अप्रै.	23 57
2 अप्रै.	24 06	3 अप्रै.	सू. उ.
13 अप्रै.	सू. उ.	14 अप्रै.	सू. उ.
17 अप्रै.	22 40	18 अप्रै.	सू. उ.
18 अप्रै.	सू. उ.	18 अप्रै.	21 53
20 अप्रै.	सू. उ.	20 अप्रै.	19 33
27 अप्रै.	सू. उ.	27 अप्रै.	10 03
29 अप्रै.	सू. उ.	29 अप्रै.	9 06
30 अप्रै.	9 17	1 मई	सू. उ.
5 मई	18 11	6 मई	सू. उ.
6 मई	21 05	7 मई	सू. उ.
11 मई	सू. उ.	12 मई	सू. उ.
15 मई	6 46	16 मई	05 27
18 मई	24 04	19 मई	सू. उ.
19 मई	22 13	20 मई	सू. उ.
25 मई	16 14	26 मई	सू. उ.
27 मई	16 58	29 मई	सू. उ.
1 जून	25 59	3 जून	04 51
8 जून	सू. उ.	8 जून	16 49
11 जून	16 27	12 जून	14 56

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014 ई.	घं. मिं.	2014 ई.	घं. मिं.
15 जून	8 02	16 जून	सू. उ.
16 जून	05 31	17 जून	03 10
20 जून	21 48	21 जून	सू. उ.
22 जून	सू. उ.	22 जून	22 10
24 जून	सू. उ.	24 जून	24 20
25 जून	सू. उ.	26 जून	सू. उ.
29 जून	8 59	30 जून	11 51
1 जुला	सू. उ.	1 जुला	14 51
9 जुला	सू. उ.	9 जुला	25 10
13 जुला	सू. उ.	13 जुला	15 01
14 जुला	सू. उ.	14 जुला	12 04
18 जुला	04 02	19 जुला	सू. उ.
22 जुला	सू. उ.	22 जुला	05 53
23 जुला	सू. उ.	24 जुला	सू. उ.
25 जुला	12 26	26 जुला	सू. उ.
27 जुला	सू. उ.	27 जुला	18 04
6 अग.	सू. उ.	6 अग.	10 37
9 अग.	25 46	10 अग.	सू. उ.
14 अग.	12 20	16 अग.	सू. उ.
18 अग.	11 53	19 अग.	सू. उ.
20 अग.	सू. उ.	20 अग.	15 42

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014 ई.	घं. मिं.	2014 ई.	घं. मिं.
21 अग.	18 15	22 अग.	21 04
30 अग.	15 48	31 अग.	सू. उ.
1 सितं.	18 01	2 सितं.	सू. उ.
6 सितं.	12 02	7 सितं.	सू. उ.
9 सितं.	24 52	10 सितं.	सू. उ.
11 सितं.	सू. उ.	12 सितं.	19 32
15 सितं.	सू. उ.	16 सितं.	सू. उ.
18 सितं.	सू. उ.	19 सितं.	सू. उ.
24 सितं.	17 31	25 सितं.	सू. उ.
27 सितं.	सू. उ.	27 सितं.	22 42
29 सितं.	सू. उ.	29 सितं.	23 54
3 अक्तू.	20 17	4 अक्तू.	18 19
7 अक्तू.	11 23	8 अक्तू.	सू. उ.
9 अक्तू.	सू. उ.	10 अक्तू.	05 48
12 अक्तू.	04 41	12 अक्तू.	सू. उ.
13 अक्तू.	सू. उ.	14 अक्तू.	06 24
16 अक्तू.	सू. उ.	17 अक्तू.	सू. उ.
22 अक्तू.	सू. उ.	22 अक्तू.	26 37
31 अक्तू.	सू. उ.	31 अक्तू.	24 54
4 नवं.	सू. उ.	4 नवं.	18 25
6 नवं.	सू. उ.	6 नवं.	15 44

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014-15	घं. मिं.	2014-15	घं. मिं.
8 नवं.	14 30	9 नवं.	सू. उ.
10 नवं.	सू. उ.	10 नवं.	15 31
13 नवं.	सू. उ.	13 नवं.	21 41
17 नवं.	06 31	17 नवं.	सू. उ.
19 नवं.	सू. उ.	19 नवं.	11 02
30 नवं.	26 16	1 दिसं.	सू. उ.
2 दिसं.	24 23	3 दिसं.	सू. उ.
6 दिसं.	सू. उ.	6 दिसं.	23 39
14 दिसं.	14 54	15 दिसं.	सू. उ.
19 दिसं.	22 48	20 दिसं.	सू. उ.
21 दिसं.	20 57	22 दिसं.	सू. उ.
28 दिसं.	07 39	29 दिसं.	06 36
30 दिसं.	सू. उ.	31 दिसं.	05 39
(सन् 2015 ई.)			
1 जन.	05 43	1 जन.	सू. उ.
11 जन.	सू. उ.	12 जन.	सू. उ.
16 जन.	8 49	17 जन.	सू. उ.
18 जन.	07 35	19 जन.	05 52
25 जन.	सू. उ.	25 जन.	12 59
27 जन.	सू. उ.	27 जन.	11 11
28 जन.	11 08	29 जन.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2015 ई.	घं. मिं.	2015 ई.	घं. मिं.
2 फर.	18 03	3 फर.	सू. उ.
3 फर.	20 32	4 फर.	सू. उ.
8 फर.	सू. उ.	9 फर.	सू. उ.
12 फर.	17 26	13 फर.	17 58
15 फर.	सू. उ.	15 फर.	16 30
22 फर.	20 01	23 फर.	सू. उ.
24 फर.	17 50	26 फर.	सू. उ.
1 मार्च	23 54	2 मार्च	26 33
3 मार्च	सू. उ.	4 मार्च	05 27
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	17 30
11 मार्च	24 04	12 मार्च	25 10
15 मार्च	24 10	16 मार्च	सू. उ.
16 मार्च	22 29	17 मार्च	सू. उ.
22 मार्च	सू. उ.	23 मार्च	04 24

अमृत सिद्धि योग

1 अप्रै.	सू. उ.	1 अप्रै.	23 57
13 अप्रै.	21 46	14 अप्रै.	सू. उ.
29 अप्रै.	सू. उ.	29 अप्रै.	9 06
11 मई	6 34	12 मई	सू. उ.
8 जून	सू. उ.	8 जून	16 49

अमृत सिद्धि योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014-15	घं. मिं.	2014-15	घं. मिं.
11 जून	16 27	12 जून	सू. उ.
20 जून	21 48	21 जून	सू. उ.
9 जुला	सू. उ.	9 जुला	25 10
18 जुला	सू. उ.	19 जुला	03 32
6 अग.	सू. उ.	6 अग.	10 37
15 अग.	सू. उ.	15 अग.	11 05
15 सितं.	20 33	16 सितं.	सू. उ.
19 सितं.	03 25	19 सितं.	सू. उ.
12 अक्तू	04 41	12 अक्तू	सू. उ.
13 अक्तू	सू. उ.	14 अक्तू	06 24
16 अक्तू	10 46	17 अक्तू	सू. उ.
8 नवं.	14 30	9 नवं.	सू. उ.
10 नवं.	सू. उ.	10 नवं.	15 31
13 नवं.	सू. उ.	13 नवं.	21 41
6 दिसं.	सू. उ.	6 दिसं.	23 39
30 दिसं.	सू. उ.	31 दिसं.	05 39
(सन् 2015 ई.)			
11 जन.	25 41	12 जन.	सू. उ.
27 जन.	सू. उ.	27 जन.	11 11
8 फर.	8 30	9 फर.	सू. उ.
8 मार्च	सू. उ.	8 मार्च	17 30
11 मार्च	24 04	12 मार्च	सू. उ.

अमृत-कण

(1) संसार की प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है, जो मनुष्य इन वस्तुओं पर भरोसा करता है, वह अवश्य हानि उठाता है।

(2) चार बातें संत भी बच्चों से सीखते हैं-(i) भोजनादि की चिन्ता त्याग, (ii) आपस में लड़कर क्रोध की गाँठ नहीं रखना, (iii) रोगी होने पर भी भगवान् की निन्दा नहीं करना, (iv) संगियों के दुःख-सुख में आसक्त न होना।

रवि योग-संवत् २०७१ वि०

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014 ई.	घं. मिं.	2014 ई.	घं. मिं.
2 अप्रै.	24 06	3 अप्रै.	24 56
4 अप्रै.	26 28	6 अप्रै.	04 36
8 अप्रै.	10 04	10 अप्रै.	15 47
12 अप्रै.	20 16	13 अप्रै.	21 46
14 अप्रै.	07 35	14 अप्रै.	22 43
20 अप्रै.	19 33	21 अप्रै.	18 08
2 मई	11 18	3 मई	13 08
4 मई	15 28	5 मई	18 11
7 मई	23 59	10 मई	04 54
13 मई	7 56	14 मई	7 37
19 मई	22 13	20 मई	20 31
31 मई	23 23	1 जून	25 59
3 जून	04 51	4 जून	07 50
6 जून	13 19	9 जून	17 28
11 जून	16 27	12 जून	14 56
17 जून	25 08	18 जून	23 31
30 जून	11 51	1 जुला	14 51
2 जुला	17 53	3 जुला	20 44
5 जुला	25 11	6 जुला	10 08
6 जुला	26 25	8 जुला	26 24
10 जुला	23 15	11 जुला	20 48
17 जुला	05 12	18 जुला	04 02
29 जुला	24 06	30 जुला	27 03
1 अग.	05 46	2 अग.	8 05
3 अग.	08 30	3 अग.	9 51
5 अग.	11 10	7 अग.	9 17
9 अग.	04 42	9 अग.	25 46
15 अग.	11 05	16 अग.	10 36
17 अग.	6 15	17 अग.	10 53
28 अग.	11 30	29 अग.	13 51
30 अग.	15 48	30 अग.	26 08
31 अग.	17 13	1 सितं.	18 01
3 सितं.	17 33	5 सितं.	14 24
7 सितं.	9 19	8 सितं.	6 26
13 सितं.	19 06	13 सितं.	20 04

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014-15	घं. मिं.	2014-15	घं. मिं.
14 सितं.	19 26	15 सितं.	20 33
26 सितं.	21 23	27 सितं.	11 31
27 सितं.	22 42	28 सितं.	23 33
29 सितं.	23 54	30 सितं.	23 44
2 अक्तू	21 53	4 अक्तू	18 19
6 अक्तू	13 44	7 अक्तू	11 23
14 अक्तू	06 24	15 अक्तू	8 19
27 अक्तू	05 29	28 अक्तू	05 08
29 अक्तू	04 28	30 अक्तू	03 30
31 अक्तू	24 54	2 नवं.	21 42
4 नवं.	18 25	5 नवं.	16 57
12 नवं.	19 05	13 नवं.	21 41
25 नवं.	10 39	26 नवं.	9 14
27 नवं.	7 44	28 नवं.	6 14
30 नवं.	03 28	1 दिसं.	25 14
4 दिसं.	23 22	5 दिसं.	23 19
12 दिसं.	8 48	13 दिसं.	11 50
24 दिसं.	15 01	25 दिसं.	12 51
26 दिसं.	10 50	27 दिसं.	9 04
29 दिसं.	06 36	29 दिसं.	10 51
30 दिसं.	05 56	1 जन.	05 43
(सन् 2015 ई.)			
3 जन.	06 54	4 जन.	8 01
10 जन.	22 37	11 जन.	12 56
11 जन.	25 41	13 जन.	04 27
22 जन.	19 29	23 जन.	16 56
24 जन.	14 44	24 जन.	15 09
25 जन.	12 59	26 जन.	11 48
28 जन.	11 08	30 जन.	12 38
1 फर.	15 53	2 फर.	18 03
10 फर.	14 03	11 फर.	16 06
21 फर.	22 03	22 फर.	20 01
23 फर.	18 35	24 फर.	17 50
26 फर.	18 27	28 फर.	21 36
2 मार्च	26 33	4 मार्च	05 27
11 मार्च	24 04	12 मार्च	25 10

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2014-15 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे-ज़मीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014-15	घं. मिं.	2014-15	घं. मिं.
1 फर.	सू. उ.	1 फर.	10 24
18 मार्च	15 15	18 मार्च	24 01
5 अप्रै.	22 55	6 अप्रै.	04 36
20 मई	20 31	21 मई	सू. उ.
2 अग.	17 17	3 अग.	9 51
5 अक्तू.	04 33	5 अक्तू.	16 06
7 दिसं.	18 03	7 दिसं.	24 27
(सन् 2015 ई.)			
31 जन.	सू. उ.	31 जन.	14 04
17 मार्च	20 15	17 मार्च	25 56
(गुरु पुष्य योग)			
16 जन.	13 14	17 जन.	सू. उ.
13 फर.	सू. उ.	13 फर.	22 22
12 मार्च	02 22	12 मार्च	सू. उ.
18 सितं.	27 25	19 सितं.	सू. उ.
16 अक्तू.	10 46	17 अक्तू.	सू. उ.
13 नवं.	सू. उ.	13 नवं.	21 41
(रवि पुष्य योग)			
1 जून	25 59	2 जून	सू. उ.
29 जून	8 59	30 जून	सू. उ.
27 जुला	सू. उ.	27 जुला	18 04
1 मार्च-15	23 54	2 मार्च	सू. उ.

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2014-15	घं. मिं.	2014-15	घं. मिं.
12 जन.	00 51	12 जन.	01 58
11 फर.	16 29	11 फर.	22 12
17 फर.	05 49	17 फर.	सू. उ.
22 फर.	सू. उ.	22 फर.	11 04
26 फर.	05 27	26 फर.	सू. उ.
2 मार्च	10 28	2 मार्च	16 50
26 अप्रै.	सू. उ.	26 अप्रै.	11 02
11 मई	सू. उ.	11 मई	6 34
24 जून	सू. उ.	24 जून	10 10
28 जून	15 29	29 जून	8 59
13 जुला	13 07	13 जुला	15 01
1 सितं.	05 15	1 सितं.	सू. उ.
6 सितं.	सू. उ.	6 सितं.	12 02
14 सितं.	18 40	14 सितं.	19 26
25 अक्तू	सू. उ.	26 अक्तू	03 40
8 नवं.	सू. उ.	8 नवं.	14 30
23 दिसं.	17 12	23 दिसं.	25 41
27 दिसं.	14 54	28 दिसं.	7 39
(सन् 2015 ई.)			
11 जन.	23 56	11 जन.	25 41
24 फर.	17 50	25 फर.	सू. उ.
1 मार्च	14 03	1 मार्च	23 54
7 मार्च	सू. उ.	7 मार्च	14 37

भारतीय संस्कारों, पर्व-त्यौहारों एवं पंचाँग-परम्परा का प्रतीक-''पंचाँग दिवाकर''

पंचाँग पद्धति प्राचीन भारतीय काल गणना एवं ज्योतिष का ही एक व्यवस्थित एवं विकसित स्वरूप है। वस्तुतः वर्तमान पंचाँग भारतीय ज्योतिष के विभिन्न अँगों (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, ग्रह-संचार, सूर्यादि ग्रहण विवरण आदि) को एक ही स्थान में समाहित (संयोजित) करने का कार्य करता है। ईसवी पूर्व वैदिक एवं पौराणिक काल में ही विवाह, पूजा-पाठ एवं यज्ञ-अनुष्ठानादि-प्रत्येक शुभ कार्य के आरम्भ करने से पूर्व शुभ संकल्प करने का विधान रहा है। शुभ कार्यों के संकल्प में संवत् नाम, अयन, ऋतु मास, पक्ष-तिथि, वार, राशि, नक्षत्र आदि का उच्चारण आवश्यक माना जाता है। पंचाँग में इन सब तत्त्वों का विवरण अवश्य मिलता है। भारतीय ज्योतिष-गणना में काल गणना की सूक्ष्म प्रणाली का विशेष वर्णन मिलता है। जिसमें शून्य से लेकर करोड़ों, अरबों एवं खरबों तक की संख्याओं का वर्णन मिलता है। काल व्यवस्था को दर्शाने के लिए भारतीय पंचाँगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पंचाँग में वर्णित उत्तरायण, दक्षिणायन, गोलार्द्ध, वसन्त-ग्रीष्मादि षड्ऋतुएँ, सम्वत् मास, चान्द्र-कृष्ण पक्ष, पूर्णिमा, अमावस, एकादशी आदि तिथियों, वार, नक्षत्र, योग, ग्रह संचार, **सूर्य चन्द्रादि ग्रहण, शुभ विवाहादि मुहूर्त्त, पर्व-त्यौहार आदि के वर्णन प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति,** सभ्यता के महत्त्वपूर्ण पक्षों की अभिव्यक्ति करते हैं।

पंचाँग मात्र तिथि, वारादि दर्शाने वाला कैलेण्डर नहीं है, **अपितु इसमें प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का स्वरूप हमारे सभी पर्व-त्यौहारों आदि में** स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होता है। प्रायः सभी भारतीय पर्व-त्यौहार, तिथि, वार, नक्षत्रादि पर आधारित होते **हैं जिनका वैज्ञानिक एवं गणितीय वर्णन एक स्तरीय पंचाँग में अवश्य** रहता है।

सन् 1875 ई० में जब हमारे प्रपितामह पूजनीय पण्डित देवी दयालु जी ने लाहौर (पाकिस्तान) में पंचाँग दिवाकर (पत्रिका) का शुभारम्भ किया, उस समय भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य का कुशासन चल रहा था। 17वीं शताब्दी एवं उससे पूर्व के अनेक वर्षों से भारत के लोग हूणों, यहूदियों, यवनों, मुगलों आदि विदेशी लुटेरों के जुल्मों-सितम से संत्रस्त, नैराश्य एवं संघर्ष की स्थिति में थे।

18वीं शताब्दी में अधिकांश लोग ब्रिटिश साम्राज्य के शोषण के कारण परेशान एवं दुःखी थे। सामाजिक एवं राजनीतिक वातावरण अशान्त एवं संघर्षपूर्ण था। पराधीनता के कारण अधिकांश लोग आस्तिकता की भावनाओं से विमुख हो रहे थे। यद्यपि भारत के अनेक भागों से स्वतन्त्रता एवं क्रान्ति के स्वर उभरने लगे थे। ऐसे विक्षुब्ध वातावरण में धर्म एवं ईश्वर का आश्रय आवश्यक था। धर्म एवं धार्मिक कृत्यों में पुनः आस्था का संचार करने के लिए **उस काल में श्रीगुरु नानकदेव जी,** संत रविदास जी, स्वामी विवेकानन्द, जैसे महान् सन्त एवं उद्धारक सन्त पैदा हो चुके थे। ऐसी कठिन परिस्थितियों में लोग कल्याण की भावना से प्रेरित होकर **पण्डित देवी दयालु जी ने पंचाँग दिवाकर नामक तिथि पत्रिका** को क्रमवद्ध **श्रृंखला प्रतिवर्ष छापने का शुभ संकल्प किया।**

''प्राचीन परम्पराओं का प्रतीक-पंचाँग दिवाकर''

(ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य)

सामान्य लोगों में भारतीय परम्पराओं एवं संस्कारों के प्रतीक पर्व-त्यौहारों के प्रति सजग एवं उत्साह का संचार करने के लिए पंचाँग जैसी धर्म परायण पत्रिकाओं की अत्यन्त आवश्यकता थी। लगभग सभी दिव्य देवी, देवताओं, महाविद्या, श्री राम, कृष्ण, बुद्ध आदि अवतारों के जन्मोत्सवों तथा श्री गुरु नानकदेव, गुरु शंकराचार्य, गुरु अर्जुन देव आदि गुरुओं के अवतार दिवस व प्रादेशिक मेलों आदि का विवरण पंचाँग में रहता है।

पंचाँग दिवाकर में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अष्टमी, एकादशी, त्रयोदशी, अमावस आदि तिथियां, संवतसर-फल, पक्ष, विभिन्न ऋतुओं का वर्णन, जन्मदिन, मुण्डन, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, व्यवसाय, विवाह, मृतकादि संस्कार आदि **शुभ मुहूर्त्तों का** विवरण मिलता है।

इसके अतिरिक्त ग्रहों के आधार पर जातक की धार्मिक, व्यक्तिगत, आर्थिक, व्यवसायिक, गृहस्थ सम्बन्धी समस्याओं एवं समाधान व राजनैतिक गतिविधियाँ इत्यादि दिवाकर पंचाँग में वर्णित रहती है। इस प्रकार लोगों को अपनी प्राचीन परम्पराओं, पर्व-त्यौहारों एवं संस्कृति से जोड़ने का कार्य **पंचाँग** करता है।

भारतीय हिन्दु समाज के सभी संस्कार जैसे-विवाह, पुंसवन, मुण्डन, विवाह, अन्त्येष्ठी आदि संस्कारों व व्रतानुष्ठान आदि कृत्यों में संकल्प का विशेष महत्त्व है। संकल्प में संवत्, मास, पक्ष, तिथि, वार, माता-पिता के नाम गोत्र आदि का विवरण अवश्य होता है। जिसके लिए वर्तमान प्रामाणिक पंचाँग की आवश्यकता होती है। धर्म-परायण लोगों के लिए **पंचाँगदिवाकर** का आगमन प्रकाश-स्तम्भ साबित हुआ है।

'पंचाँग दिवाकर' के प्रवर्त्तक हमारे पितामह पूजनीय पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी जी का जन्म अविभाजित भारत (पंजाब) के मुख्य **नगर लाहौर में 21 अप्रैल सन् 1839 ईसवी** को

धर्म-परायण, शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। उन्होंने ज्योतिष की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता श्री रामजी दत्त तथा अपने **दादा पण्डित चन्द्रमिश्र से** प्राप्त की थी। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् **सन् 1861 से 1866 ई०** के मध्य उन्होंने गणित, फलित व गणित ज्योतिष की सैद्धान्तिक शिक्षा वाराणसी (काशी) में ग्रहण की। तदुपरान्त काशी से वापिस लाहौर लौटकर अपने पिता जी के सान्निध्य में ज्योतिष का कार्य व्यवसायिक तौर पर किया तथा ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान, अनुभव एवं योग्यता समुचित रूप से प्राप्त की। फिर सन् 1875 ई० अर्थात् वि. संवत् १९३२ में **श्रीपंचाँग दिवाकर** नाम से पंचाँग पत्रिका के लेखन एवं प्रकाशन का श्रीगणेश किया।

पंचांग में प्रतिपादित तिथि, नक्षत्र, ग्रहादि की प्रामाणिक गणित, मुहूर्त, ग्रहणादि ज्योतिष विषयों एवं सटीक भविष्यवाणियों के कारण **'पंचाँग दिवाकर'** पूर्वी एवं पश्चिमी पंजाब, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली एवं जम्मू-कश्मीर आदि राज्यों में विशेष रूप से लोकप्रिय होने लगी थीं। पण्डित देवी दयालु जी द्वारा संचालित पंचाँग दिवाकर व मुफीद आलम जन्त्री उर्दू में विषय सामग्री एवं पण्डित जी की विद्वता से प्रभावित होकर तत्कालीन **काश्मीर के राजाधिराजा श्री हरिसिंह जी द्वारा** उन्हें सन् 1916 ई० में सुनहरी गलीचे, वस्त्र, गड्ग एवं **सुवर्ण मोहरें प्रदान करके अपने राजदरबार में सम्मानित किया गया। तदुपरान्त पण्डित देवी दयालु जी की ख्याति, उत्कृष्ट पंचाँग व सटीक भविष्यवाणियों के कारण देश के विभिन्न प्रान्तों में व्याप्त होने लगी थी।** पण्डित जी के दोनों सुयोग्य लड़के पण्डित मोहन लाल व पण्डित शिवराम दत्त भी पंचाँग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री उर्दू व तिथ-पत्रिका गुरुमुखी के सम्पादन व प्रकाशन के कार्य में पूरी योग्यता से सहयोग करने लगे थे।

सन् 1921 ई० में पण्डित जी के स्वर्गारोहण के पश्चात् उनके दोनों लड़कों (पं. मोहन लाल जी (हमारे पितामह) व पं. शिवराम जी) ने भी पंचाँग व जन्त्री में सूक्ष्म ग्रहगणित एवं प्रसिद्ध भविष्यवाणियों के कारण विशेष ख्याति प्राप्त की। **लार्ड किचनर** के सम्बन्ध में तथा ब्रिटिश प्रशासन काल में सरकार के विरूद्ध की गई कुछ सटीक भविष्यवाणियों के कारण सन् 1935-36 ई० में **तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा हमारी जन्त्री/पंचाँग के विरूद्ध द्वेषपूर्वक भावना से निषेधाज्ञा भी जारी** की थी। जोकि तत्कालीन गणमान्य लोगों के अनुरोध स्वरूप वापिस ले ली गई। परिणामस्वरूप हमारी पंचाँग दिवाकर व मुफीद आलम जन्त्री उर्दू, पंजाबी, हिन्दी पाठकों के मध्य और भी अधिक लोकप्रिय होने लगी। राष्ट्रीयता की **भावना से युक्त अनेकों प्रशस्ति पत्र भी हमें प्राप्त हुए जोकि** तत्कालीन जन्त्री/पंचाँगों में उल्लिखित हैं। हमारे पितामहों ने ज्योतिष सम्बन्धी अनेकों पुस्तकों का भी लेखन व मुद्रण किया था। जिसमें ज्योतिष रत्नाकर, तनुभाव, धनभाव, सहजभाव, सुतभाव, स्त्री भाव, कर्मभाव, वर्षफल चन्द्रिका, विवाह पद्धति (हिन्दी), आयना किस्मत उर्दू-चारों भाग), आयना फलक, योगासन व प्राणायाम, इल्म उन्सफ, लग्न-आफताब, इल्म ख्वाब आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हमारे पितामह के स्वर्गारोहण के पश्चात् सन् 1943 के पश्चात् हमारे पूज्य पिता पण्डित चून्नी लाल व चाचा पण्डित रामसरणदास व पण्डित चिमन लाल जी द्वारा भी पंचाँग दिवाकर व जन्त्री उर्दू व तिथ-पत्रिका पंजाबी के संपादन व संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। सन् 1947 ई० को भारत विभाजन के पश्चात् हमारे पिता पंडित चून्नी लाल जी परिवार के जालन्धर (पंजाब) में आकर **पंचाँगदिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री व पंजाबी तिथ-पत्रिका** लेखन व प्रकाशन कार्य सफलतापूर्वक करते रहे। उन्होंने भी धर्म एवं ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकों का योगदान किया है। जिनमें लक्ष्मी शक्ति, मनुष्य जीवन का रहस्य, सरिश्ता तकदीर (दो भाग), प्रश्न आफताब, गायत्री शक्ति, मन्त्र-शक्ति, इल्म केरल, श्रीदुर्गासप्तशती विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

सन् 1970 ई० में पूज्य पिता एवं चाचा जी के आकस्मिक निधन के पश्चात् पंचाँग व मुफीद आलम, तिथिपत्रिका गुरूमुखी व ज्योतिष सम्बन्धी अन्य पुस्तकों के लेखन एवं छपवाने का कार्य मैं स्वयं तथा अपने दोनों सुयोग्य पुत्रों (चिं. विवेक शर्मा एवं चिं. पंकज शर्मा) के सहयोग से गत चवालीस (44) वर्षों से पंचाँग/जन्त्री, कालदर्शक पंचाँग, लघुपंचाँग दिवाकर तथा अन्य ज्योतिष एवं धर्म सम्बन्धी पुस्तकों का सफलतापूर्वक प्रकाशन करते आ रहे हैं, और आशा है, ईश्वर की कृपा से और सुयोग्य **पाठकों की सद्भावनाओं** एवं सहयोग से भविष्य में भी पंचाँग-जन्त्री एवं ज्योतिष सम्बन्धी उपयोगी पुस्तकों के लेखन व प्रकाशन कार्यों में समर्पित बने रहेंगे। पंचाँग प्रवर्त्तक **मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु जी** से लेकर आजतक की दीर्घावधि (138 वर्ष) में हमारे **पंचाँग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री** (उर्दू-हिन्दी), तिथि पत्रिका गुरूमुखी व अन्य प्रकाशनों (आयना किस्मत, सरिश्ता तकदीर, प्रश्न आफताब, **शिव मन्त्रावली, ज्योतिष तत्त्व** (तीन भाग), सुतभाव प्रकाश आदि) को जो विश्वव्यापी ख्याति प्राप्त हुई है। वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं है।

निवेदक—पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी, पंचाँगकर्त्ता
(पंचाँग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री)

उपरोक्त लेख प्रसार-भारती (जालन्धर) द्वारा प्रसारित कार्यक्रम दूर-दृष्टि के प्रतीक-**पंचाँग का योगदान**, के अन्तर्गत **'पंचांगदिवाकर कार्यालय'** के पं. पन्ना लाल ज्यो., पं. विवेक शर्मा एवं सुश्री सुषमा हरगुण द्वारा दिए गए सम्भाषण में से उद्घृत है।

अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय

"अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके" पुस्तक से उद्धृत

द्वादश भावों में अशुभ चन्द्र के उपाय-लाल किताब मतानुसार

(गतवर्ष का शेष भाग)

(8) अष्टम भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. सोने की अंगूठी में मोती पहनना।

2. माता से चावल/चांदी लेकर चांदी की डिब्बी में संभाल कर रखना।

3. शमशान भूमि के नल का पानी गड़वी में लाकर उसमें चांदी का चौरस टुकड़ा रखकर घर की पूर्व दिशा में स्थापित करें।

4. दूध का व्यापार न करें।

5. हर सोमवार को शिव मन्दिर में शिव पूजा तथा दूध/चावल में सोने की गर्म सिलाई से बुझा कर पीना पुत्र संतान प्राप्ति के लिए शुभ होता है।

(9) नवम भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. अपना चरित्र (चाल-चलन) ठीक रखें।

2. गृह में पवित्र स्थान पर सोना, केशर आदि रखें।

3. तृतीया भाव खाली हो, तो सोने की अंगूठी में पुखराज धारण करें।

4. मछलियों/परिन्दों को चावल, बाजरा, परमल आदि डालें।

(10) दशम भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. रात्रिकाल को दूध न पीएं।

2. श्रेष्ठ जनों की संगत (सत्संग) रखें और दुष्ट लोगों की संगत न रखें।

3. तामसिक भोजन मांस, शराब, अण्डा आदि से परहेज़ रखें।

4. ब्राह्मण और गाय की सेवा करते रहें।

(11) एकादश भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. चांदी की अँगूठी में मोती जड़वा कर शुभ मुहूर्त्त में पहनें।

2. सोने की सिलाई को गर्म करके उसको दूध में बुझा कर पीएं।

3. धर्मस्थान (विशेषकर भैरों मन्दिर) में दूध/चीनी का दान 16 सोमवार तक करना शुभ होगा।

(12) द्वादश भाव में चन्द्र अशुभ फलकारक होने पर —

1. वर्षा का जल घर में शुद्ध पात्र में भरकर रखें।

2. कोई भी कार्य पानी का घूंट पीकर शुरू करें।

3. जातक अपनी छत के नीचे हैंडपंप या कुआं न लगवाएं।

4. रविवार की रात को सिरहाने दूध/जल सोमवार की प्रात: कीकर वृक्ष की जड़ में डालें।

5. हर सोमवार को धर्मस्थान में श्वेत वस्तुओं का दान तथा शिव पूजन करना शुभ होगा।

द्वादश भावों में अशुभ मंगल के उपाय—लाल किताब मतानुसार

(1) प्रथम भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. एक सूखे नारियल को सिंधूर का टीका लगाकर मौली एवं लाल वस्त्र में लपेटकर मन्त्रपूर्वक बहते पानी में बहा देवें (**मन्त्र—ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:**)।

2. गेहूँ, चने की दाल, बेसन के लड्डू, हल्दी, केले आदि धर्म स्थान में दान करें।

3. चाँदी की चैनी अथवा कड़ा शुक्ल पक्ष के मंगलवार को धारण करें।

4. सदाचरण का पालन करें तथा माता-पिता, गाय एवं ब्राह्मणों की सेवा करके आशीर्वाद ग्रहण करें।

(2) द्वितीय भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. रेवड़ियां या पताशे आठ मंगलवार तक पानी में बहावे।

2. मंगलवार को व्रत धारण करके मंगलवार की कथा पढ़ें और एक समय भोजन करें।

3. चाँदी का चौरस टुकड़ा अपने पास या चांदी की चेनी में धारण करें।

4. भाईयों से किसी भी प्रकार के विवाद से बचें।

5. छोटे बच्चों में गुड़ की रेवड़ियां, लड्डुओं आदि का वितरण करें।

(3) तृतीय भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. चाँदी का कड़ा बिना जोड़ वाला, तांबे की कील लगवा कर पहनें।

2. खून के रिश्तों (जैसे भाई-बहन, माता-पिता, चाचा आदि) के साथ सद्व्यवहार रखें।

3. श्री हनुमान मन्दिर में हर मंगलवार को सिंधूर एवं प्रसाद चढ़ावें तथा चालीसा पाठ करें।

4. क्रोध व अहंकार को त्यागकर मधुर भाषी बनने से कल्याण होगा।

5. मेहमानों की भोजन के बाद सौंफ, मिश्री आदि से सेवा करें।

(4) चतुर्थी भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. आठ मंगलवार तक 400 ग्राम चावल (दूध में धोकर) अथवा रेवड़ियां पानी में बहाएं।

2. तीन धातु (सोना, चांदी एवं तांबे से निर्मित) की अंगूठी अनामिका अंगुली में मंगलवार को पहनें।

3. आठ मंगलवार तक मीठी रोटियां, तंदूर में लगवाकर गौओं को खिलावें।

4. श्रीहनुमान कवच का पाठ करना शुभ होगा।

(5) पंचम भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. रात को सोते समय सिरहाने ताम्र बर्तन में पानी रखकर सोएं, सूर्योदय के बाद उस पानी को पौधों में डाल देवें और पी लेवें।

2. अपनी संतान के मित्रों की आवभगत करें।

3. मंगलवार का व्रत रखकर श्री हनुमान चालीसा या कथा का पाठ करें।

4. अपने चाल चलन (चरित्र) का पालन करें, दूध व चीनी का दान करें।

(6) षष्ठ भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. श्रीगणेश चौथ के व्रत तथा गणेश पूजन करना शुभ होगा।
2. चावल, चीनी एवं चांदी का दान करना शुभ होगा।
3. बच्चे के शरीर पर सोना अथवा तांबा न पहनाएं।
4. अपनी बहन व बहनोई की खास सेवा करना शुभ होगा।
5. छोटी छः कन्याओं में श्वेत वस्तुएं (जैसे–दूध, खीर, बरफी, रसगुल्ले आदि) हर मंगलवार को बांटना शुभ होगा।

(7) सप्तम भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. अपनी बहन या बुआ को लाल वस्त्र (कम्बल), मिष्ठान्नादि भेंट स्वरूप देवें।
2. चांदी की ठोस गोली अपनी पाकिट में रखना अच्छा होगा।
3. जातक अपना चरित्र (चाल–चलन) ठीक रखें।
4. मंगलवार तक, हर मंगलवार को मसर की दाल लाल कपड़े में लपेटकर मंगल का बीज मन्त्र पढ़ते हुए जल में प्रवाह करें।
5. प्रत्येक मंगलवार को श्री सुन्दर कांड का पाठ करना शुभ रहेगा।

(8) अष्टम भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. दादी या माता से चांदी लेकर मंगलवार को पूर्णमाशी को गले में पहने।
2. तीन धातु (सोना, तांबा व चांदी) की अंगूठी बनवाकर शुक्लपक्ष के मंगलवार को पहनें।
3. हर मंगलवार को तंदूरी मीठी रोटियां कुत्तों को डालें।
4. 800 ग्राम रेवड़ियां/पताशे या दाल मसर चलते पानी में बहावें।
5. मंगलवार का व्रत, श्रीहनुमान कवच का पाठ तथा मन्दिर से प्रसाद व दीपदान करें।
6. लाल वस्त्र न पहने तथा घर में लाल रंग के पर्दे न लगवाएं।
7. रात को तांबे के बर्तन में पानी रखकर हर मंगलवार को बड़ वृक्ष की जड़ों में डालें।

(9) नवम भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. मंगल के दिन श्री हनुमान जी को सिंधूर चढ़ावें तथा वहां बर्फी, गुड़, चावल, दूध चीनी एवं दक्षिणा श्रद्धापूर्वक चढ़ावें।
2. लाल रंग के रूमाल सदा अपने पास रखें।
3. सोने की अंगूठी में मूंगा जड़वा कर धारण करें।
4. भाई एवं भाभी की सेवा करें।
5. खाने का बाद सौफ एवं देसी खांड मेहमानों को खिलावें।

(10) दशम भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. मंगलवार का व्रत रखकर श्रीहनुमान चालीसा का पाठ संकटमोचन सहित करें तथा श्री हनुमान जी को जलेबियों, पीली बर्फी एवं फलों का भोग लगाकर स्वयं भी एक समय मीठा भोजन करें।
2. अन्ध विद्यालय में 27 मंगलवार तक मीठे पीले चावलों सहित निराश्रित जनों को भोजन खिलाएं।

(11) एकादश भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. हर मंगलवार श्री हनुमान जी की मूर्ति सिंधूर चढ़ाकर दीपक प्रज्वलित करें।
2. अपने गृह में शहद की बोतल अथवा किसी छोटे पात्र में भर कर रखें।
3. यदि यहां पर मंगल मकर या वृश्चिक राशि का हो तो मूंगा धारण करना शुभ फल देगा।
4. अपनी खानीदानी सम्पत्ति अथवा कोई वस्तु बेचना अशुभ फल देगा।
5. घर में काला/सफेद कुत्ता पालना शुभ फल देगा।
6. ब्राह्मण और गाय की सेवा करना शुभ होगा।

(12) द्वादश भाव में मंगल अशुभ फलकारक होने पर —

1. प्रतिदिन ताम्र बर्तन में थोड़ा गुड़, लाल पुष्प एवं शुद्ध जल डालकर सूर्य देव को मन्त्रपूर्वक अर्ध्य प्रदान करें।
2. जातक चावल या चांदी अपने पास रखें।
3. मंगलवार का व्रत रखना तथा इस दिन श्री हनुमान चालीसा पाठ के बाद, मन्दिर में जाकर लड्डू व बताशे बांटने शुभ होंगे।
4. गुरु, ब्राह्मण एवं गौओं की सेवा करने से द्वादशस्थ भौम की अशुभता में कमी होगी।
5. तामसिक भोजन से परहेज रखें।

द्वादश भावों में अशुभ बुध के उपाय–लाल किताब मतानुसार

(1) प्रथम भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. हरे रंग के वस्त्र एवं परदों का प्रयोग न करें।
2. पांच बुधवार तक हर बुधवार को पांच छोटी कन्याओं को हरे वस्त्र/रूमाल एवं हरी बर्फी एवं हरे फलों की भेंट देवें।
3. सदाचरण रखें अर्थात् अपने चरित्र को स्वच्छ रखें।
4. वृथा इधर–उधर घूमने की बजाए एक स्थान पर टिककर (एकाग्र–होकर) काम करें।
5. हर बुधवार को गौशाला में हरा चारा, गुड़ आदि डालना शुभ होगा।

(2) द्वितीय भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. धर्म स्थान में चन्द्र व बृहस्पति की वस्तुएं, जैसे–दूध, चावल, चीनी, हल्दी, चने की दाल, केले व श्वेत/पीले वस्त्रों का दान करना शुभ होगा।
2. छोटी 3 या 5 कन्याओं का पूजन करके हलवा, पूड़ी, भेंट आदि देना।
3. मंगलवार की रात को पानी सिरहाने रखकर बुध की प्रातः पीपल के वृक्ष की जड़ में डालकर सात फेरे लेना।
4. अण्डे, शराब, मांस आदि तामसिक वस्तुओं का सेवन बिल्कुल नहीं करना होगा।
5. श्री दुर्गापूजन (श्रीदुर्गा–सप्तशती का पाठ) करना भी शुभ रहेगा।

(3) तृतीय भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. प्रतिदिन फिटकड़ी से दांत साफ करे, तो शुभ होगा।
2. भगवती देवी पर चांदी का छत्र चढ़ाना शुभ होगा।

3. रात्रि के समय मूंगी साबित पानी में भिगोकर प्रातः पक्षियों को डालना शुभ होगा।

4. अपने मकान का मुख्य द्वार दक्षिणोमुखी नहीं होना चाहिए। यदि पहले से बना है, तो वास्तु शान्ति करवानी चाहिए।

(4) चतुर्थ भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. धन-सम्पत्ति के लिए सोने की चेनी वीरवार को गुरु के बीज मन्त्रपूर्वक धारण करनी चाहिए। गुरु मंत्र-"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः"

2. जातक 43 दिन तक केसर का तिलक माथे पर लगाए और दूध/खीर आदि में डालकर उसका सेवन भी करें।

3. पीतल के बर्तन में गंगाजल भरकर घर में रखने से बुध अच्छा फल देगा।

4. सात रविवार (बिना क्रम तोड़े) 400 ग्राम गुड़ बहते पानी में बहावे।

(5) पंचम भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. तांबे का पैसा हुक लगवाकर सफेद धागे में पिरोकर गले में पहने तो धन लाभ में सहायक होगा।

2. गले में चांदी की चेन डालना या चांदी का छल्ला बाएं हाथ की अनामिका में डालना शुभ होगा।

3. नाक का छेदन करवाकर चांदी की तार पहनना लाभदायक होगा।

4. चांदी की डिब्बी में चावल डालकर अपने पास रखने से बुद्धि एवं विद्या में सफलता देगा।

5. वाणी पर नियंत्रण रखकर मधुर वाणी बोलें तथा मुंह में हरी इलायची रखें।

6. श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना शुभ होगा।

7. तुलसी की पूजा करके सायंकाल को दीपक जलाना एवं हरी वस्तुओं का भोग लगाना मन्दे बुध को पुष्ट करेगा।

(6) षष्ट भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. चांदी की अंगूठी दाएं हाथ की अंगुली में पहनें।

2. बहन एवं उसकी सन्तति की भेंट आदि द्वारा सेवा करते रहना शुभ होगा।

3. मकान का मुख्य द्वार उत्तर दिशा की ओर होगा, बुरा असर देगा। वास्तु शान्ति करवानी शुभ होगी।

4. घड़ियां, रेडियो, टेलीविज़न आदि इलैक्ट्रानिक के संयंत्र टूटे-फूटे यानि खराब हालत में न रखें।

5. श्री दुर्गाकवच का पाठ करना एवं पूजन करना शुभ रहे।

(7) सप्तम भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. काले रंग की गाय की सेवा करने से सहायता मिलेगी, दाम्पत्य जीवन में सुख होगा।

2. अपनी बहन एवं भाई की बेटियों की सेवा करने से लाभ होगा।

3. सांझेदारी के कामों से धोखा मिलेगा।

4. भूमि पर बार-बार थूकने से व्यवसाय में बरकत कम होगी।

5. सोने की अंगूठी में पन्ना नग जड़वाकर बुधवार को दाएं हाथ की छोटी अंगुली में धारण करना।

(8) अष्टम भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. हर बुध मन्दिर में या घर में देवी भगवती की पूजा करके एवं दीप प्रज्वलित करने के बाद, छोटी 6 या 3 कन्याओं का पूजन एवं हलवा पूरी व दक्षिणा भेंट देकर सत्कार करें।

2. बुधवार को चांदी का कड़ा या चेनी धारण करें।

3. बुधवार को तांबे की गड़वी में साबुत मूंग भरकर ऊपर तांबे के ढक्कन से बन्द करके बहते पानी में बहा देवें।

4. अपने मकान की छत पर वर्षा का पानी या दूध ढककर रखना रिज़क के लिए शुभ होगा।

(9) नवम भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. लाल वर्ण की गाय को गुड़ सहित चापाती डालने से लाभ होगा।

2. शरीर पर चांदी पहनना भी लाभ देगा।

3. अपना दायां नाक छेदन कराना शुभ होगा।

4. लोहे की गोली पर लाल रंग चढ़वा कर अपने पास रखने से लाभ होगा।

5. चरित्र (लाल चलन) शुद्ध रखना लाभकर होगा।

(10) दशम भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. हर बुधवार के दिन गौओं को हरा चारा डालना शुभ होगा।

2. शराब, मांस, अण्डा आदि तामसिक वस्तुओं का सेवन मत करें।

3. धर्म स्थान पर दूध, चावल, चांदी, उड़द, मूंग आदि का दान करना शुभ होगा।

4. तुलसी का पौधा ईशान कोण में स्थापित करके नित्य (विशेषकर) बुधवार की सायं को दीप जलाकर पूजा करना लाभप्रद होगा।

5. श्री दुर्गा मन्दिर में बुधवार को कन्या पूजन करना शुभ रहेगा।

(11) एकादश भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. गले में तांबे का पैसा डालना अच्छा फल देगा।

2. लोहे की लाल रंग की गई गोली अपने पास रखें तता फटकड़ी/सीप का प्रयोग करना अच्छा होगा।

3. अपनी बहन, कन्या एवं बुआ की सेवा करना शुभ फल करेगा।

(12) द्वादश भाव में बुध अशुभ फलकारक होने पर —

1. स्टील का लोहे का बेजोड़ छल्ला या कड़ा बुधवार के दिन पहने।

2. बुध को केशर का तिलक लगाना शुभ होगा।

3. खाली कोरा घड़ा चलने पानी में बहाना शुभ फल देगा।

4. आवेश, क्रोध, फिजूल खर्ची एवं वृथा भ्रमण से बचें।

5. बुधवार को गौओं को हरा चारा डालना शुभ होगा।

नोट—उपरोक्त मैटर हमारी छपी पुस्तक '**अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय व टोटके**' से लिया गया है। शेष गुरु व शुक्र सम्बन्धी '**लाल-किताब**' के उपाय आगामी वर्ष के पंचांग में दिए जाएंगे।

एकादशी व्रत की महिमा

मनुष्य जीवन को सफल बनाने के लिए शास्त्रों में व्रत की बड़ी महिमा कही गई है। "**देवल**" का कथन है कि व्रत और उपवास के नियम-पालन से शरीर को तपाना ही तप है। भारतीय सनातन, वैदिक संस्कृति में व्रत-पर्वोत्सवों का विशेष महत्त्व है। सभी प्रकार के व्रतों के परिपालन से मन, वचन एवं शरीर की शुद्धि तो होती ही है, इसके अतिरिक्त व्रत को आत्म शुद्धि का भी श्रेष्ठ साधन माना गया है। **शास्त्रानुसार** अश्वमेघ यज्ञ करने से जो फल मिलते हैं, उससे सौगुणा फल मात्र एकादशी के व्रतानुष्ठान से प्राप्त होता है।

मुख्यतः शास्त्रों में मुख्यतः तीन प्रकार के व्रतों का वर्णन मिलता है। नित्य, काम्य और नैमित्तिक व्रत। एकादशी, पूर्णमाशी आदि नित्यव्रत कहलाते हैं। अर्थात् नित्यकर्मों की भान्ति एकादशी आदि नित्यकर्मों का व्रत न करने से मनुष्य पाप का भागी होता है। दूसरे काम्य व्रत, जैसे पुत्र कामना से रखा जाने वाला पुत्रदा एकादशी व्रत, करवा चौथ व्रत आदि व्रत काम्य तथा नैमित्तिक व्रत जैसे-चान्द्रायण व्रत, तीसरे सूर्य व्रत, शिवरात्रि आदि।

सामान्यतः सब व्रतों में सर्वोपरि एकादशी व्रत कहा गया है। जैसे नदियों में गङ्गा, समस्त तेजस्वी तत्त्वों में सूर्य एवं देवताओं में भगवान् विष्णु की प्रधानता है, वैसे ही व्रतों में एकादशी व्रत की प्रधानता है। एकादशी का व्रत करने से सभी रोग-दोष शान्त होकर मनुष्य को लम्बी आयु, सुख-शान्ति और समृद्धि की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य-"**श्री भगवत्प्राप्ति**" भी होती है।

"एकादश्युपवासी यः स धन्यः, स च बुद्धिमान्।।"

अर्थात् एकादशी तिथि का उपवास करने वाला व्यक्ति धन्य हैं, और बुद्धिमान् है। अपरं च जिस प्रकार माता सभी बच्चों का पालन करती है और जैसे औषध सभी रोगियों को रोग मुक्त करती है, उसी प्रकार सभी लोगों की रक्षा के लिए विधाता ने एकादशी तिथि के व्रतादि का निर्माण किया है। ऋषि वसिष्ठ अनुसार भी यही आशय है-

संसाराख्यमहाघोर दुखिनां सर्व देहिनाम्।
एकादश्युपवासोऽयं निर्मितं परमौषधम्।।

एकादशी व्रत के संक्षेप में तीन भेद कहे. गए हैं। कायिक व्रत, मानसिक और वाचिक व्रत। **(i) कायिक भाग** के अन्तर्गत एकादशी व्रत के पहले दिन (दशमी के मध्याह्न में) गेहूँ, जौं, मूँग आदि से बने भोजन का एक बार भोजन करके भगवान् वासुदेव का स्मरण करें। दूसरे दिन प्रातः स्नानादि करके निम्न रूपेण संक्षेप में व्रत हेतु संकल्प करें-

"ॐ विष्णुर्विष्णु.....सम्वत् नाम, मास, अपना नाम, गोत्रादि बोलकर पक्ष, तिथि वार बोलकर कहे.........ममाखिल पाप क्षयपूर्वक परमेश्वर प्रीतिकामनया........ एकादशी व्रत करिष्ये।।"

यह संकल्प पढ़कर भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए दाएँ हाथ से अर्घ्य द्वारा जल, पुष्पाक्षत छोड़ दें। फिर यथाशक्ति स्वयं या पण्डित जी द्वारा भगवान् विष्णु की तुलसी सहित पंचोपचार या दशोपचार पूजा करें। व्रत के दिन भगवान् का हरिहर स्तोत्र, विष्णु सहस्रनाम, मन्त्र जप (ॐ नमो भगवते वासुदेवायादि), **एकादशी व्रत कथा** एवं माहात्म्य का श्रवण या पठन अवश्य करना चाहिए। इस व्रत में एक भुक्त अन्नरहित दुग्धादि पेय, फलादि ग्रहण करने का विधान है। सामान्यतः एक वर्ष में **24 एकादशियों का समावेश** रहता है, परन्तु जिस वर्ष अधिक मास का समावेश होगा, उस वर्ष (सम्वत्) में 2 अतिरिक्त एकादशियों का संयोग होने से **26 एकादशियों** का समागम होगा। 26 एकादशियों के नाम क्रमानुसार इस प्रकार से हैं।

1. कामदा (चैत्र शु.), 2. वरूथिनी (वै.कृ.), 3. मोहिनी (वैशा. शु.), 4. अपरा (ज्ये. कृ.), 5. निर्जला (ज्ये. शु.), 6. योगिनी (आषा. कृ.), 7. देवशयनी (आ. शु.), 8. कामिका (श्रा. कृ.), 9. पवित्रा (पुत्रदा) (श्रा. शु.), 10. अजा (भा. कृ.), 11. पद्मा (भा. शु.), 12. इन्दिरा (आ. कृ.), 13. पापांकुशा (आश्वि. शु.), 14. रमा (का. कृ.), 15. प्रबोधिनी (का. शु.), 16. उत्पन्ना (मार्ग. कृ.), 17. मोक्षदा (मार्ग. शु.), 18. सफला (पौष कृ.), 19. पुत्रदा (पौ. शु.), 20. षट्तिला (माघ कृ.), 21. जया (माघ. शु.), 22. विजया (फा. कृ.), 23. आमलकी (फा. शु.), 24. पापमोचनी (चैत्र कृ.), 25. पुरूषोत्तमा एका. 26. पुरूषोतमा **एका. एकादशी व्रतों का प्रारम्भ उत्पन्ना एकादशी** से करने का विधान है।

एकादशी व्रत आदि के सम्बन्ध में शास्त्र में सामान्य नियम भी कहे गए हैं, जैसे-क्षमा, सत्य, दया, दान, शुचिता, इन्द्रिय निग्रह, अहिंसा, संतोष, अस्तेय (चोरी न करना), देवपूजा, हवन इत्यादि।

एकादशी आदि व्रतों में काम, क्रोध, लोभ, निन्दा, परान्न सेवन, सिनेमा-टैलीविजन आदि पर चलचित्र देखना, वृथा भ्रमण, स्त्री सेवन, झूठ बोलना आदि दुर्गुणों से बचना चाहिए।

एकादशी आदि दिव्य व्रत नास्तिक को आस्तिक, भोगी को योगी, स्वार्थी को परमार्थी, कृपण को उदार और नीरस जीवन को सरस बनाकर मानव को उसके चरम लक्ष्य की ओर प्रेरित करते हैं।

एकादशी, प्रदोष आदि व्रतों से पुत्र सन्तति

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दाने के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज़	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंद्रन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से करनी चाहिए।** तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)–"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम ॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ॠतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदृती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राहवे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	बल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दुःख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज्री नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, चर का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी-स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हो, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

होमादि में अग्निवास एवं फल जानना

जिस दिन को हवन करना हो, उस दिन तात्कालिक तिथि और वार सँख्या में 1 जोड़कर 4 द्वारा भाग देवें। भाग देने पर यदि **शेष 3 या शून्य (0) बचे**, तो उस दिन अग्नि का वास **पृथिवी पर** जानें, शेष 1 बचे तो अग्नि का वास **आकाश में तथा तिथि, यदि शेष 2** बचें तो अग्नि का वास **पाताल** में जानना चाहिए। **पृथिवी पर अग्नि का वास** शुभ एवं कल्याणकारक होता है। **आकाश** में वास हो तो आयु का क्षय तथा पाताल में वास हो तो धन की हानि होती है। वार की गणना रविवार से तथा तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करनी चाहिए। अग्निवास चक्र के पश्चात् गत पृष्ठों में दिए गए ग्रह मुख में आहुति चक्र का विचार करना चाहिए। **—पं. पन्ना लाल ज्यो.**

शुक्ल पक्ष तिथि	अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (शुक्ल-पक्ष)						
	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	3 पृथ्वी (लाभ)	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
२	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
३	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी क्षय	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
४	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
५	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
६	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
७	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
८	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
९	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१०	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
११	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१२	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१३	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१४	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१५	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ

कृष्ण पक्ष तिथि	अग्निवास एवं फल जानने का चक्र (कृष्ण-पक्ष)						
	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
२	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
३	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
४	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
५	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
६	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
७	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
८	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
९	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१०	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
११	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि
१२	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ
१३	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ
१४	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय
१५	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि	3 पृथ्वी लाभ	0 पृथ्वी लाभ	1 आकाश क्षय	2 पाताल हानि

अग्निवास का विचार कब करें ?

➡ लाखों-करोड़ों की सँख्या में होने वाले महायज्ञों की स्थिति में, पृथ्वी पर घोर संकट घटित होने की आशंका से, मन्दिर/देवालय आदि निर्माण के प्रारम्भ में विद्वानों को अग्निवास चक्र का विचार करना चाहिए-

लक्षकोटि मखेऽखिले चाति रूद्रकरणे महाविधौ।
देवखात भवने सुरालयात् अग्निचक्रम व लोकयेत् सुधीः।।

➡ किसी विशेष ग्रह के अस्त होने पर केतु ग्रह के उदय होने पर अनिष्ट शान्ति हेतु, भूकम्पन, भूचाल, भूस्खलन आदि भावी प्राकृतिक अनिष्ट आपदाओं के निवारण की शान्ति हेतु अग्निवास चक्र का विचार करें।

➡ शत्रु द्वारा दुर्गभंग की आशंका में, गृह, वापि या कूपादि के विवाद में, शत्रुओं में परस्पर विग्रह कराने के उद्देश्य से या राजा की क्रोधाग्नि के शमन हेतु एवं च शान्ति कार्यों में अग्निवास चक्र का विचार करें।

अग्निवास चक्र में परिहार

विवाह यात्रा व्रत गोचरेषु चूडोपवीते ग्रहणे युगादौ।
दुर्ग विधाने च सुत प्रसूतौ नैव अग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।।
ग्रहणोद्वाह (विवाह) गण्डान्ते तथा दुर्गोत्सवेऽपि च।
तदाऽग्नि चक्रं नावलोक्यं ग्रहशान्तौ विचारयेत्।। (अनुष्ठान प्रकाश)

अर्थात् विवाह, यात्रा, व्रत परिपालन में, गोचर ग्रहों के शुभाशुभ फल जानने में, उपनयन-मुण्डन-ग्रहणकाल, युगादि तिथि में, दुर्ग की संरचना में, पुत्रोत्पत्ति काल में, होमादि हेतु अग्नि चक्र का विचार न करें तथा विवाह में, ग्रह में, गण्डान्त शान्ति होम में, दुर्गोत्सव में एवं ग्रह शान्ति में भी अग्निवास चक्र का विचार न करें। इसके अतिरिक्त, नित्य एवं नैमित्तिक कार्यों के सम्पादन हेतु भी अग्निवास चक्र का विचार न करें-

नित्य नैमित्तिक कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।।

(शुभ चिन्तक-पं. पन्ना लाल ज्यो. पँचांगकर्त्ता)

डॉ० शक्तिधर शर्मा-एक श्रद्धाञ्जलि

श्री मार्त्तण्ड पंचाँग के सम्पादन परिवार के महान् विद्वान् डॉ० शक्तिधर शर्मा जो पंजाबी यूनिवर्सिटी के **भौतिक विभाग** के प्रोफैसर पद से सेवानिवृत हो चुके थे, उनका दुःखद एवं आकस्मिक निधन (12 अग., 2012 ई.) जानकर **पंचाँग दिवाकर** परिवार उनके परिवार एवं श्री मार्त्तण्ड कार्यालय के प्रति हार्दिक शोक व्यक्त करता है। डॉ० शक्तिधर ज्योतिष एवं भौतिक शास्त्र ज्ञाता के अतिरिक्त एक **संस्कृत भाषा** एवं भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त थे। वह मानवीय भावनाओं के प्रति अत्यन्त संवेदनशील एवं बहु-आयामी गुणों से अलंकृत थे। हमारी प्रार्थना है कि प्रभु उनकी आत्मा को अपनी शरण में परमशान्ति प्रदान करें। **-पं० पन्ना लाल शर्मा, पंचाँग दिवाकर, जालन्धर।**

सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य-2014-15 ई.

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है-

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्।।

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है-

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्।।

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्र गौओं के दान का फल होता है-

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्त्रफलं लभेत्। -हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वहाँ अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है-

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्।।

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन व्रत धारण करके भगवान श्री विष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2014-15 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

(1) 30 जन., 2014 ई. (गुरुवासरी-मौनी)
(2) 1 मार्च, 2014 ई. (शनैश्चरी)
(3) 29 अप्रैल, 2014 ई. (भौमवती)
(4) 26 जुलाई, 2014 ई. (शनैश्चरी)
(5) 25 अग., 2014 ई. (सोमवती)
(6) 22 नवंबर, 2014 ई. (शनैश्चरी)
(7) 20 जन., 2015 ई. (भौमवती-मौनी)

सन्तान सुख प्राप्ति में शुभाशुभ ज्योतिषीय योग

'सुतभाव प्रकाश' पुस्तक से उद्धृत

पंचम भाव विशेषकर सन्तान भाव, पंचमेश ग्रह एवं लग्नेश ग्रह का पारस्परिक सम्बन्ध आवश्यक माना जाता है। सन्तान एवं पुत्र सुख प्राप्ति की दृष्टि से पति-पत्नी दोनों की जन्मपत्रिकाएँ अवश्य उपलब्ध होनी चाहिए क्योंकि शास्त्रानुसार पुरुष बीजरूप तथा स्त्री क्षेत्ररूपा मानी जाती है। सामान्यत: **पुरुष** की कुण्डली में बुद्धि, विद्या, पुत्र-सुख, मन्त्र ज्ञान, मन्त्री, विनय, प्रबन्ध शक्ति, नीति, पिता, हृदय, सन्तान उत्पन्न करने का सामर्थ्य, पेट एवं जठराग्नि, भूख आदि, इष्ट देव की भक्ति, आस्तिकता, मामा आदि का विचार पंचम भाव से किया जाता है–

बुद्धि विद्यात्मज मन्त्र मन्त्री विनय प्रबन्ध गर्भस्थिति पितृहृदय।
उदरशक्ति देव भक्ति मातुलादि सुत भावात् चिन्त्यम्।। (जातक तत्त्व)

(1) मनः स्थिति के अनुसार सन्तान की प्रकृति–

स्त्री की कुण्डली में **पंचम भाव** से ही **गर्भाशय** में **गर्भ की स्थिति** एवं **सम्भावना के संकेत मिलते हैं।** आधान काल अर्थात् गर्भकाल में स्त्री-पुरुष के मन की जैसी भावना, जिस प्रकार की इच्छा, कफ़, वातादि दोषों से युक्त होती है, तदनुरूप गुण-दोषों से युत गर्भस्थ बालक होता है–

मिथुनस्य मनोभावो तादृङ्मद लालसं भवति।
श्लेष्मादिभिः स्वदोषैस्ततुल्य गुणो निषिक्तः स्यात्।। (सारावली)

पुराणों में भी इसी सिद्धान्त की पुष्टि की गई है कि समागम काल में स्त्री-पुरूष की पुत्र-कन्या सम्बन्धी जैसी भावना होती है, वैसी ही पुत्रादि सन्तान की उत्पत्ति होती है–

यादृशेन हि भावेन योनौ शुक्रं समुत्सृजेत्।
तादृशेन हि भावेन सन्तानं सम्भवेदिति।। (नारद पुराण)

गर्भ स्थिति के योग

पुरूष की राशि से उपचय (३।६।१०।११) राशि में चन्द्रमा हो और उस पर गुरु की या अपने मित्र ग्रह की, विशेषकर, शुक्र की दृष्टि रहने पर यदि स्त्री-पुरूष का संयोग होता है, तो पुत्र गर्भ योग होगा–

उपचयभवने शशभृद् दृष्टो गुरुणा सुहृद्भिरथवासौ।
पुसां करोति योगं विशेषतः शुक्र संदृष्टः ।। (सारावली)

(2) सामान्यतः स्त्री-पुरूष दोनों की जन्म कुण्डलियों में पंचम, सप्तम एवं नवम भावों में शुभाशुभ ग्रहों की स्थिति और 5, 7, 9 व 11वें भावों के स्वामियों की स्थिति एवं दृष्टि तथा गुरु की स्थिति व दृष्टि द्वारा विशेषतया पुत्र सन्तान का विचार किया जाता है।

प्रबल पुत्र सन्तति योग

(क) पंचम भाव शुभ ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो, अथवा पंचम भाव में शुभ ग्रह की राशि हो, तो उस **जातक के यहाँ सन्तान (विशेषकर पुत्र सन्तान) अवश्य होती है।** परन्तु उक्त प्रकार से विपरीत स्थिति होने पर सन्तति नहीं होती, अर्थात् पंचम भाव में पाप ग्रहों की स्थिति और पंचम भाव पाप (अशुभ) ग्रहों से दृष्ट हो, तो सन्तान सुख नहीं होता है।

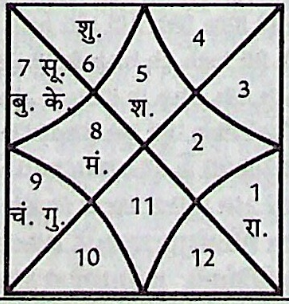
सुत भवनं शुभ युक्तं शुभ दृष्टं शुभर्क्षमिह येषाम्।
तेषां प्रसवः पुंसां भवति अवश्यं न विपरीते।। (अपरं च)
सन्तानभावो निजनाथ दृष्टः सन्तान लब्धि शुभ दृष्ट युक्तः।
करोति पुंसामशुभैश्च दृष्टः स्वस्वमि अदृष्टो विपरीतमेव। (सुतभाव प्रकाश)

अर्थात् पंचम भाव शुभ ग्रहों से युक्त हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तथा सुत (पंचम) भाव के स्वामी की पंचम भाव पर ही स्वगृही शुभ दृष्टि पड़ रही हो, तो पुत्र सुख अवश्य होता है।

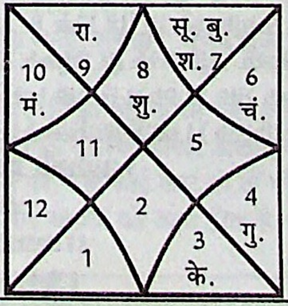
उदाहरण—आगे हम दो उदाहरण कुण्डलियाँ दे रहे हैं। प्रथम नं. (I) कुण्डली में पंचम भाव में गुरु स्वगृही एवं चंद्र युक्त होकर नवम एवं लग्न भावस्थ राशियों को देख रहा है, जिसके प्रभाव स्वरूप जातक के यहाँ उच्च प्रतिष्ठित एक कन्या और एक पुत्र का सुख प्राप्त है।

द्वितीय (II) कुण्डली एक उच्चप्रतिष्ठित प्रिंटिंग उद्योग से सम्बन्धित जातक की है, जिसके दो पुत्र भी इसी उद्योग में संलग्न हैं। कुण्डली में पंचमेश गुरु नवम भाव में उच्च-राशिस्थ होकर पंचम भावस्थ मीन राशि को स्वगृही दृष्टि से तथा लग्न को मित्र दृष्टि से देख रहा है।

कुण्डली नं. (I)
जन्म 4 नवं., 1948 ई. इष्ट ४६/१५



कुण्डली नं. (II)
जन्म 25 अक्तू. 1954 (9-30 AM)



(3) यदि जन्म कुण्डली में पंचम भाव पर पंचमेश ग्रह की स्वगृही दृष्टि पड़ रही हो और पंचम भावेश ग्रह केन्द्र-त्रिकोण (1, 4, 7, 10, 5, 9) भावों में स्वोच्च या मित्रस्थ बैठा हो, तो उस स्त्री या पुरुष को पुत्र सन्तान का सुख मिलता है।

उदाहरणार्थ उपरोक्त कुण्डली नं. II (वृश्चिक लग्न) में गुरु नवम भाव में स्वोच्च बैठकर पंचम भाव पर स्वगृही दृष्टि डाल रहा है। फलस्वरूप, जातक को दो पुत्रों का सुख प्राप्त है। ऐसा व्यक्ति मीमांसा एवं तर्क शास्त्र का भी ज्ञाता होता है–

बुद्धिस्थानाधिपे सौम्ये स्वोच्च मित्र स्ववर्गगे।
गुरु दृष्टि समायुक्ते मीमांसा ध्यापने रतः।।

(4) यदि लग्नेश ग्रह और पंचमेश ग्रह–दोनों एक साथ बैठें हों, या एक दूसरे के घर में बैठे हों, या लग्नेश व पंचमेश में परस्पर मित्र दृष्टि हो, तो पुत्रसिद्धि होती हैं, अर्थात् यह पुत्रकारक योग बनता है–

लग्नात्मपौ यदि युतौ च मिथः सुदृष्टौ।
क्षेत्रे परस्पर गतौ यदि पुत्रसिद्धि।। (फलदीपिका)

(5) पंचम भाव वा पंचमेश एवं गुरू शुभग्रह से दृष्ट हो तथा शुभ ग्रह से युक्त हो, तो निःसन्देह पुत्र सुख की प्राप्ति होगी।

पुत्र स्थाने तदीशे वा गुरौ व शुभ वीक्षिते।
शुभग्रहेण संयुक्ते पुत्र प्राप्तिर्न संशयः।। (जातक पारि.)

पुत्र सुख विशेषतः पंचमेश ग्रह अथवा गुरु की दशा–अन्तर्दशा में जानना।।

(6) पूर्ण बली बृहस्पति (गुरु) पंचमभाव में हो, और उसे लग्नेश ग्रह देखता हो, तो भी सम्बन्धित ग्रह की दशा में पुत्र सुख जानें–

लग्नेशे पुत्र भावस्थे पुत्रेशे बल संयुते।
परिपूर्ण बले जीवे पुत्र प्राप्तिर्न संशयः।। (जातक पारिजात)

(7) कुण्डली में यदि चार शुभग्रह बलान्वित होकर पड़े हों, तो वो अपनी दशा-अन्तर्दशा में प्रभु की कृपावश पुत्र लाभ एवं सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होते हैं–

चत्वारो बलशालिनो यदि शुभाः तत्पाक भुक्त्यन्तरे।
पुत्र प्राप्तिं सुतसम्पदः प्रभुजन प्रीतिं च कुर्वन्ति ते।। (जातक पा.)

(8) बृहस्पति से, चन्द्रमा से, लग्न से पाँचवां स्थान पुत्र देने वाला होता है, और उनसे (अर्थात् लग्न से, चन्द्रमा से एवं बृहस्पति अवस्थित स्थान से) नवम स्थान भी पुत्र सुखप्रद होता है। उन राशियों के स्वामी की दशा/अन्तरदशा में पुत्र प्राप्ति कहे।

जीवात् चन्द्रमसो विलग्न भवनात्पुत्रप्रदं पंचमम्।
तस्मात् धर्मगृहं च तत्पतिदशा भुक्तौ सुताप्तिं वेदत्।। (जातक परि.)

(9) केन्द्रत्रिकोणेश शुभ ग्रह होकर पंचमस्थ हों तथा पुत्रेश दुर्बल न हों तथा त्रिक् भाव पापयुक्त, अस्तंगत, शत्रुराशिस्थ न हों, तो सन्तान योग होता है–

पौत्र प्राप्तिरनङ्गभे सुतगृहात्सौम्यस्य राश्यंशके।
तन्नाथे शुभखेटवीक्षितयुते केन्द्रत्रिकोणेऽथवा।।

(10) ***पुत्र या कन्या सन्तति बारे सामान्य नियम–***

पुंराश्यंशेऽधीश्वरे पुं ग्रहेन्द्रैर्युक्ते दृष्टे पुंग्रहे पुंप्रसूतिः।
स्त्रीराश्यंशे स्त्री ग्रहैः युक्तदृष्टे, स्त्रीणां जन्म स्यात्सुतर्क्षेसुतेशे। (फलदीपिका)

यदि कुण्डली के पंचम भाव में पुरुष राशि पुरूष अंश में स्थित हो और पंचम में पुरुष ग्रह बैठे हों या पंचम को पुरूष ग्रह देखते हों और पंचमेश भी पुरुष राशि, पुरूष अंश में हो तथा पुरूष ग्रहों द्वारा देखा जाता हो या पुरूष ग्रह से युक्त हो, तो पुत्र अधिक होंगे। परन्तु यदि पंचम भाव में स्त्री राशि स्त्री नवांश हो, एवं पंचम में स्त्री ग्रह बैठे हों, या स्त्री ग्रह पंचम को देखते हों और पंचमेश स्त्री राशि एवं स्त्री-नवांश में स्थित हो, स्त्री-ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो कन्याएँ अधिक सँख्या में होंगी।

प्रायः ये सब बातें किसी कुण्डली में पूर्ण रूप से घटित नहीं होतीं, ग्रहांश में न्यूनाधिकेन होने से मिला-जुला प्रभाव (मिश्रित) होता है।

बहु-कन्या सन्तति के प्रमुख योग

(1) यदि कुण्डली में पंचम स्थान में शुक्र और चन्द्रमा का वर्ग हो अथवा कुण्डली का पंचम भाव शुक्र एवं चन्द्रमा से युक्त वा दृष्ट हो अथवा **पंचम स्थान में समराशि या समवर्ग हो, तो पुत्र कम कन्याएँ अधिक होती हैं।**

यदि पंचम स्थान में विषम राशि या विषम वर्ग हो तो पुत्र अधिक होते हैं।

शुक्रेन्दु वर्गेण युते सुताख्ये युक्तेक्षिते वा भृगुचन्द्रमोभ्याम्।
भवन्ति कन्या समराशि वर्गे पुत्रश्च तस्मि।
भवन्ति कन्याः समराशि वर्गे पुत्रश्च तस्मिन्विषमाभिधाने।।

(2) यदि पंचम स्थान में समराशि या सम वर्ग हो और वह बुध से या शनि से युक्त हो तथा उस पर शुक्र या चन्द्रमा की दृष्टि हो, तो जातक/जातिका के यहाँ बहु कन्या का योग बनता है।

(3) जिन मनुष्यों के कन्या, वृष, धनु, मकर राशि पंचम स्थान में हों (और उस पर स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र, बुधादि की दृष्टि) हो, तो बहु कन्या का योग बनता है। परन्तु यदि पंचम स्थान पुरुष ग्रहों (गुरु, मंगलादि) से दृष्ट हों, तो पुत्र योग होता है–

कन्या वृषो मृगो, धनु येषां सुतभावमागतो नृणाम्।
कुर्युः कन्यानामुत्पत्ति पुत्र ग्रहवीक्षिताः पुत्रवान्।।

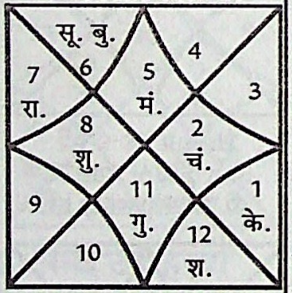
उदाहरण–आगामी पृष्ठ पर दी गई जन्म कुण्डली में सिंह लग्न उदित है, जातक के

यहाँ चार लड़कियाँ उत्पन्न हो चुकी है। पंचम में धनु राशि उदित है। पंचम भाव पर स्त्री ग्रह शनि की दृष्टि होने से इस जातक के यहाँ चार कन्याओं का जन्म हुआ।

(4) यदि शुक्र से युक्त सूर्य, भौम लाभ स्थान में हो, अथवा स्त्री ग्रह युक्त पापग्रह एकादश स्थान में हो, तो मनुष्य को बहु-कन्या का संयोग प्राप्त होता है। पुत्र सुख नहीं मिलता।

(5) पंचम भाव में सम राशि (2, 4, 6, 8, 10 या 12) आ गई हो, तथा उसको शुक्र, चन्द्र स्त्री ग्रह देखते हों, तो जातक/जातिका को बहु कन्या प्राप्ति होगी। उदाहरण कुं. हेतु देखें **नियम सँख्या** (7) की उदाहरण कुण्डली।

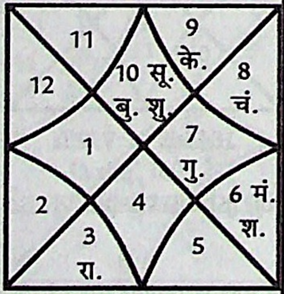
उदा. कुं. नियम (3)
जन्म 13 अक्तू. 1938
3-15 AM जालन्धर



(6) पंचमेश धनभाव में या अष्टम भाव में हो, और उसको स्त्री ग्रह (चन्द्र या शुक्र) देख रहे हों, तो बहु कन्याओं की प्राप्ति होगी।

(7) किसी जातक की कुण्डली में पंचम भाव में 2, 4, 6, 8, 10 या 12 स्त्री राशि हों तथा पंचम भाव पर चन्द्र, बुध एवं शुक्रादि स्त्री ग्रह स्थित हों और चन्द्र-शुक्र आदि की दृष्टि पड़ती हो, तो बहु-कन्या योग बनता है, देखें सामने दी गई उदाहरण कुण्डली-

उदा. कुं. नि. (7)
जन्म कुं. 20 जन., 1982 ई.
समय 7-30 प्रातः



प्रस्तुत जन्म कुण्डली की जातिका का जन्म मकर लग्न एवं अनुराधा नक्षत्र में हुआ है। पंचम भाव पर स्त्री राशि (वृष) स्त्री ग्रह चन्द्रमा की दृष्टि तथा चन्द्रमा पर लग्नेश शनि (स्त्री ग्रह) की विशेष तृतीय दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप इस जातिका के यहाँ दो कन्याओं का संयोग बना है।

(8) एकादश भाव में बुध, शुक्र या चन्द्रमा-ये तीनों अथवा दो या एक भी ग्रह पड़ा हो, तो यह जातक/जातिका को कन्या अधिक देने वाला योग होता है।

(9) बुध, शुक्रादि स्त्री ग्रह सम राशिस्थ (2, 4, 6 आदि) पंचम में अथवा सप्तम भाव में गया हो, तो भी बहु (एक, दो या अधिक) कन्या उत्पत्ति का योग करते हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य और भी जातक/जातिका की जन्म कुण्डली में अनेक प्रकार के कन्या-बाहुल्य सन्तति के योग मिलते हैं, जिनका विवरण हमारी प्राचीन पुस्तक सुतभाव प्रकाश में मिल सकता है।

पुत्र कारक बृहस्पति और पंचम भाव

बृहस्पति विवेक, बुद्धि, शास्त्र ज्ञान, पुत्र सन्तति, बड़ा भाई, देव, ब्राह्मण, श्रुति-स्मृति ज्ञान, पति (स्त्री की कुंडली में) का सुख, मन्त्री, पौत्र, उच्च-विद्या, पितामह, परोपकार, धर्म आदि का कारक माना जाता है।

जन्म कुण्डली में बृहस्पति (गुरु) द्वितीय, पञ्चम, नवम, दशम एवं एकादश भावों का कारक माना जाता है।

अधिकांश ज्योतिषाचार्यों की यही मान्यता चली आ रही है कि जो ग्रह जिस भाव का कारक होता है, वह उसी भाव में अकेला स्थित हो तो बृहस्पति उस भाव के फल की हानि करता है, यथा-**"स्थानहानि करोति जीवः, स्थान वृद्धिं करो मन्दः।।"**

अनेक जन्म कुण्डलियों के अध्ययन से भी इसी बात की पुष्टि होती है कि पंचम भाव में पुत्रकारक ग्रह गुरु (बृहस्पति) अकेला पड़ा हो तथा उसको अन्य कोई भी शुभ ग्रह दृष्टि न डालता हो तो उस स्थिति में जातक को पुत्र-सन्तति का अभाव रहेगा अथवा पुत्र-सन्तान सम्बन्धी कष्ट होता है। यदि पंचम भाव पर अथवा पंचमेश ग्रह पर गुरू की शुभ एवं मित्र दृष्टि पड़ रही हो तो उस स्थिति में जातक को पुत्र सुख होगा।

कुछ ज्योतिष आचार्यों के मतानुसार पंचम भाव में कर्क, कन्या, धनु, मकर, कुम्भ व मीन राशि का गुरू एकांकी होने से पुत्र सन्तति का प्रायः अभाव होता है, जबकि शेष अन्य राशियों में पंचमस्थ गुरू हो, तो पुत्र सन्तान का अभाव नहीं होता। परन्तु यह सर्वमान्य एवं सर्वत्र घटित होने वाला सिद्धान्त नहीं कहा जा सकता। **पंचम भाव** पर या पंचमेश ग्रह पर अन्य किसी शुभ या योगकारक ग्रह की युति या दृष्टि सम्बन्ध हो तो उस स्थिति में जातक को निश्चय ही पुत्र सन्तति का सुख प्राप्त होता है।

बृहस्पति के पंचम भाव में फल के बारे में ज्योतिषाचार्यों एवं विद्वानों में कुछ पक्षों में परस्पर भिन्नता पाई जाती है। उदाहरण स्वरूप निम्न विद्वानों में कुछ मतान्तर पाए जाते हैं। जातक पारिजात के अनुसार-

मन्त्री गुणी विभव सार समन्वितः
स्यादल्पात्मजः सुरगुरौ सुतराशियाते।। (जातक पारि.।।)

अर्थात् बृहस्पति पंचम स्थान में हो तो जातक मन्त्री, गुणवान, वैभव युक्त और अल्प सन्तान वाला होता है। (जा. पारि.)

फलदीपिका कार श्री मन्त्रेश्वर अनुसार पंचम में बृहस्पति हो तो मिश्रित फल होते हैं। जातक बुद्धिमान और राजा का मन्त्री होता है। **परन्तु पुत्रों के कारण क्लेश अर्थात् कष्ट होते हैं।** जैसे पुत्र का न होना भी कष्टकारी है। पुत्र होने पर, उसे कोई कष्ट हो तो भी मन को क्लेश है तथा पुत्रों के आचरण एवं व्यवहार के कारण जातक को कष्ट होता है---- इत्यादि------(फलदीपिका)

पुत्रैः क्लेशयुतो महीश सचिवो धीमान् सुतस्थे गुरौ।। (फलदीपिका)

आचार्य जीवनाथ अनुसार पंचम भाव में गुरू हो तो जातक सांसारिक भोग्य वस्तुएं एकत्र करने में कुशल, तर्कानुकूल वार्तालाप करने वाला, उच्चविद्या प्राप्त करने वाला, भूमि-सवारी, धन आदि सम्पदाओं से युक्त श्रेष्ठ एवं उच्च लोगों में सम्मानित, योगादि विद्याओं का जानकार होता है, परन्तु सन्तति सुख नहीं होता-

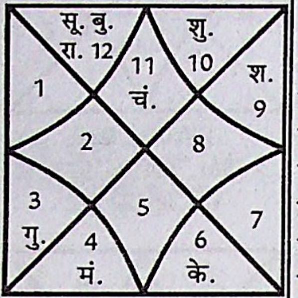
''सदायोगाभ्यासी तनयतनयानन्द विमुखः'' (जीवनाथ)

चमत्कार चिन्तामणि अनुसार गुरू अग्नि तत्त्व प्रधान एवं ऊष्ण प्रकृति का ग्रह और यदि यह जल तत्त्व प्रधान राशि में हो तो प्रायः निष्फल होता है। अतएव स्त्री राशियों में सन्तति और धन के विषय में धनु के गुरू का फल शुभ नहीं होता।

कर्क, बृश्चिक एवं मीन राशि में पंचमस्थ गुरू हो तो पुत्र-सन्तति सुख नहीं होता। जबकि पंचमस्थ गुरू वृष, कन्या या मकर राशि में हो तो ऐसे जातक को उच्च शिक्षा में विघ्न-बाधाएँ होती हैं, परन्तु ऐसे जातक व्यापार में सफल होते हैं। इन्हें लड़कियाँ अधिक और लड़के कम होते हैं।

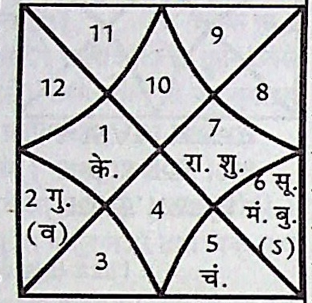
पंचमस्थ गुरू डॉक्टरों और वकीलों के लिए अच्छा माना जाता है। पंचम भाव में अकेला गुरू (बृहस्पति) होने से पुत्र-सन्तान हीनता सम्बन्धी कुछ विशेष उदाहरण दिए जाते हैं। उदाहरण (1) दाईं ओर दी गई कुण्डली ऐसे जातक की है, जिसका विवाह 1963 ई. में गुरू की महादशा के अन्तिम चरण में हुआ। आगे शनि की महादशा एवं बुध व शुक्र की अन्तर्दशा के काल में जातक के यहाँ क्रमशः चार कन्याओं का जन्म हुआ। **पुत्र सन्तान का अभाव रहा।** कुण्डली में पंचम भावस्थ गुरू अकेला ही मिथुन राशिस्थ है, उस पर लग्नेश शनि की सप्तम दृष्टि है तथा **पंचमेश बुध** द्वितीय भाव में **नीचस्थ** होकर सूर्य व राहु युक्त होकर स्त्री राशि (मीन) में होने से कन्याओं को जन्म बहुसँख्या में हुआ।

पुत्र संतानहीन व चार पुत्री योग
17 मार्च, 1931 ई.
प्रात: 6-30 अमृतसर



उदाहरण (2) दाईं तरफ दी गई कुण्डली एक जातक की है, जो सरकारी क्षेत्र में कार्यरत है। सन् 2002 ई. में विवाह हुआ विवाह के 10 वर्ष हो जाने के पश्चात् भी सन्तान सुख प्राप्त नहीं हुआ। **गुरू पंचम भाव में शत्रु राशिगत होने से संतानाऽभाव हुआ।**

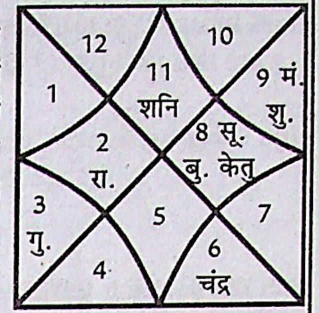
पुत्र संतानहीन उदा. कुं.
22 सितं. 1976 ई. पूफा
दुपै. 3-30, चण्डीगढ़



पंचम में शत्रु राशिगत गुरू से

पुत्र संतति अभाव

उदा. कुं. (3) पुत्र सन्तति अभाव
20 नवम्बर, 1965
दुपै. 1-45, मुम्बई

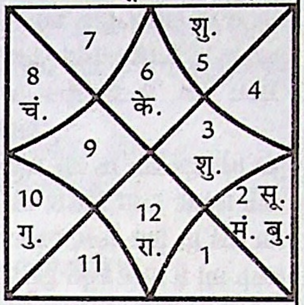


साथ में दी गई उदाहरण नं. (3) कुण्डली एक उच्चशिक्षित महिला की है, जो अपने पति के साथ मुम्बई में व्यवसाय में विशेष सहयोग कर रही है। इनका विवाह 24 वर्ष की आयु में मुम्बई में सन् 1990 ई. को हुआ। विवाह के बीस वर्ष के पश्चात् भी जातिका जी सन्तान सुख से वंचित रही है। विवाह के 12 वर्ष के बाद एक कन्या गोद ली गई है। इनके पति की कुण्डली में भी पंचम भाव में केतु होने से पुत्र-सन्तान सुख में नकारात्मक संकेत ही मिलते हैं।

पंचम भाव में नीचस्थ गुरू होने से पुत्र संतति अभाव

संलग्न जन्म कुं. भारतीय पुलिस सर्विस में उच्चतम पद प्राप्त करने वाली प्रथम महिला श्रीमती किरण बेदी की है। कुण्डली के पंचम भाव में गुरू (पुत्र संतति कारक) मकर राशि में नीचस्थ होकर बैठा है, उस पर किसी भी अन्य ग्रह की दृष्टि नहीं है, फलतः जातिका को एक कन्या का सुख प्राप्त है। लग्नेश बुध भाग्य स्थान में है, जबकि भाग्येश कर्मभाव में होने से उच्च पद प्राप्ति, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति एवं मान-सम्मान को प्राप्त हो चुकी है।

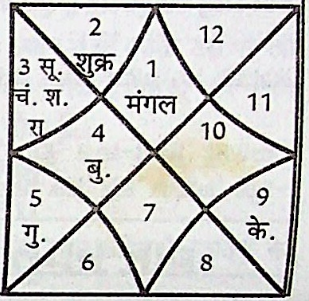
पुत्र सन्तति हीन (4) उदा. कुं. श्रीमती किरण बेदी 9 जून, 1949 ई. अमृतसर



कई बार मित्र राशिगत पंचमस्थ गुरू भी

पुत्र संतति की हानि करता है।

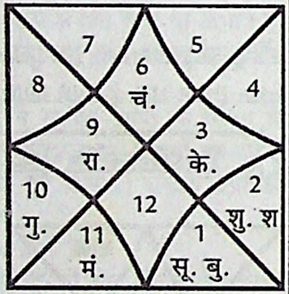
पुत्र संतति अभाव कुं. 9/10 जुला. 1945 ई. टाईम 1-56 AM अमृतसर



संलग्न जन्म कुण्डली उच्चस्तरीय औद्योगिक समूह के मूर्धन्य प्रकाशक की है। इनके यहाँ दो होनहार कन्याओं का सुख है परन्तु पुत्र सन्तति का अभाव रहा है। पंचम भाव में एकाकी गुरु सिंहस्थ है तथा उस पर शनि की तृतीय शत्रु दृष्टि पड़ रही है। साथ ही पंचमेश सूर्य शनि, राहु आदि पाप ग्रहों से पीड़ित है। इसके अतिरिक्त गुरू से पंचम भाव में पाप ग्रह (केतु) की स्थिति है, इन्हीं कुछ प्रमुख कारणों से जातक को पुत्र सन्तान का अभाव हुआ। अनेक उपाय, पाठ करवाने के पश्चात् भी इन्हें सुख प्राप्त नहीं हुआ।

पंचम भाव में नीचस्थ गुरू सदा सुत हानिकारक नहीं होता

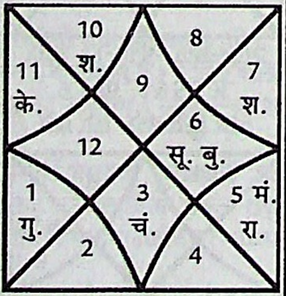
पंचम गुरु शुभत्व की उदा. कुं.
13 मई, 1973 ई.
सायं 4 बजे, जालन्धर



पंचम भाव में नीच राशिस्थ गुरू पुत्र सन्तान की दृष्टि से सदा हानिकारक नहीं होता। यदि **पंचमेश शनि नवम भाव में शुभ ग्रह** से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को लड़के का सुख होता है। उदाहरण स्वरूप संलग्न कुण्डली का जातक उच्चशिक्षित डॉक्टर है जोकि विदेश (अमेरिका) में कार्यरत है, इनकी पत्नी भी डॉक्टर है। जातक की कुं. के पंचम भाव में नीच (मकर) राशि का गुरू है। पंचमेश शनि भाग्य (नवम) **स्थान में शुभस्थ शुक्र के साथ बैठा** है, उस पर पुत्रकारक **ग्रह गुरू की शुभ (पंचम) दृष्टि भी पड़** रही है। फलस्वरूप जातक के एक पुत्री तथा एक पुत्र का सुख प्राप्त है।

पंचमस्थ गुरू के शुभ फल का एक अन्य उदाहरण

दो पुत्र योग कुं.
श्री लाल बहादुर शास्त्री
2 अक्तू., 1904 ई. (इलाहाबाद)

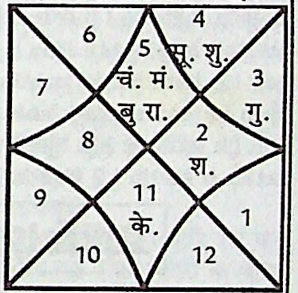


प्रस्तुत जन्म कुण्डली भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की है। इनकी कुं. में दशम में उच्चस्थ बुध होने से भद्रनामक पंचमहापुरूष योग भी पाया जाता है। इनकी कुण्डली में पंचम भाव में मित्र क्षेत्री (मेष राशि) लग्न स्वामी गुरु बैठा है जोकि पंचम मित्र दृष्टि से भाग्यस्थ मंगल को तथा लग्न भाव को स्वगृही दृष्टि से देख रहा है। फलस्वरूप श्री शास्त्री जी को दो पुत्रों का सुख एवं भारत के प्रधान मन्त्रित्व की सर्वोच्च पद प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ।

पंचम भाव पर गुरू की मित्र व स्वगृही दृष्टि का विशेष फल

विभिन्न कुण्डलियों के अनुशीलन करने के पश्चात् यही अनुभव हुआ है कि गुरू की अपने मित्र ग्रह एवं राशि पर **नवम्-पंचम आदि दृष्टि**, जातक को उच्च विद्या एवं पुत्र सन्तति देने में विशेष फलदायक सिद्ध हुई है। उदाहरण के तौर पर आगामी कुछ जन्म कुण्डलियां द्रष्ट्व्य है।

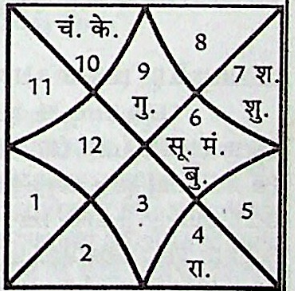
तीन पुत्रों का योग 14 अग., 1942 ई.
प्रातः 8-00 AM जालन्धर शहर



प्रस्तुत जन्मकुंडली भारत (जालन्धर) में उत्पन्न एवं विदेश में रह रहे एवं सुप्रतिष्ठित इंजीनियर की है। प्रस्तुत जन्मकुंडली में पंचमेश गुरू एकादश भाव में पुरूष राशि (मिथुन) में स्थित होकर पंचम भाव पर स्वगृही सप्तम दृष्टि डाल रहा है। इनको गुरू की अन्तर्दशा में ही प्रायः क्रमशः तीन पुत्रों का सुख प्राप्त हो चुका है। कृपया ध्यान दें, द्वादश भाव का स्वामी चन्द्रमा एवं लग्नपति सूर्य के मध्य स्थानपरिवर्तन योग होने से इनके व्यवसाय का कार्य क्षेत्र अधिकांशतः विदेश में ही प्रफुल्लित हुआ है।

लग्नस्थ गुरू की पंचम एवं नवम भावों पर शुभ दृष्टि

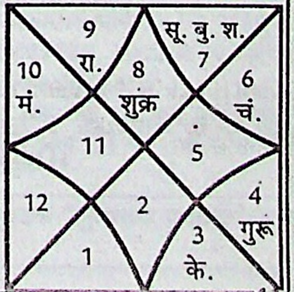
दो पुत्र, एक पुत्री योग 27 सितं.
1925 ई. दुपै. 1-45 लाहौर



प्रस्तुत जातक सरकारी विभाग में उच्चपदासीन रहने के बाद रिटायर्ड हुए थे। दशमस्थ बुध उच्चस्थ होकर भाग्येश सूर्य युक्त हो केन्द्र (दशम्) में होने से भद्रयोग बना है। **पंचम भाव** पर गुरू की मित्रभावी दृष्टि तथा मंगल की पंचमस्थ मेष राशि पर स्वगृही दृष्टि होने से जातक को 2 (दो) सुपुत्रों का तथा स्त्री ग्रह शुक्र की दृष्टि होने से एक कन्या का सुख प्राप्त हुआ। नवांश कुण्डली में भाग्येश सिंह लग्न राशि तथा नवांशपति सूर्य मेष राशिस्थ (उच्चस्थ) होने से जातक उच्चकोटि के आध्यात्मिक एवं धर्म परायण महापुरूष हुए हैं।

भाग्यस्थ गुरू की स्थिति का शुभफल

उदा. कुं. दो पुत्र सन्तति योग
25 अक्तू. 1954 ई.
प्रातः 9-30, जम्मू

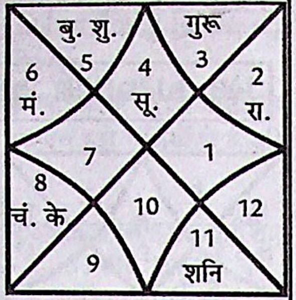


प्रस्तुत जन्म कुण्डली उच्च प्रतिष्ठित प्रिंटिंग एवं प्रकाशन उद्योगपति की है। बृश्चिक लग्न की कुण्डली में लग्नेश तीसरे भाव में उच्चस्थ है, उस पर गुरू की शुभ दृष्टि होने से 2 छोटे भाईयों का सुख प्राप्त है। पंचम भाव पर गुरू की शुभ एवं स्वगृही दृष्टि होने से जातक को दो सुयोग्य पुत्रों का भी सुख प्राप्त है। दोनों बेटे जातक के उच्चस्तरीय उद्योग क्षेत्र में सहयोगी है।

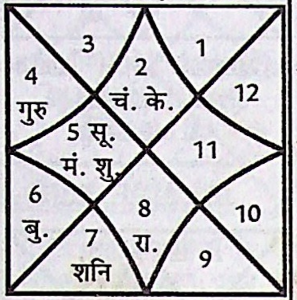
पंचमस्थ गुरू की स्थिति अथवा दृष्टि के अभाव में भी, भौमादि अन्य ग्रहों के प्रभाव से पुत्र सन्तति सम्भव–

प्रस्तुत जन्म कुण्डली एक उच्च प्रशिक्षित इलैक्ट्रीकल इंजीनियर की है। जातक का विवाह केतु मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा में हुआ तथा पत्नी को प्रथम गर्भ धारण मंगल की अन्तर्दशा में हुआ, उस समय गोचर वश मंगल पंचमस्थ चन्द्र राशि से पंचम अर्थात् कुण्डली के नवम भाव में संचार कर रहा था। (4) जन. 1995 ई. को जब प्रथम पुत्र का जन्म हुआ, उस समय पंचमेश मंगल गोचरवश सिंह में संचरित होते हुए वृश्चिक राशिस्थ लग्नेश चन्द्र को स्वगृही दृष्टि से देख रहा था तथा पुत्र कारक ग्रह गुरू बृश्चिक राशि पर ही (गोचरवश) संचार कर रहा था। इस प्रकार पंचम भाव से पुत्रादि सन्तान सुख पर विचार करते समय **पंचम एवं पंचमेश ग्रह की स्थिति, दशाऽन्तर्दशा तथा गोचर व नवांश की शुभाशुभ स्थिति का भी अवश्य विचार करना चाहिए।**

दो पुत्रों का योग
ता. 6 अग., 1965 ई.
अनुराधा-III 5-10 AM चण्डीगढ़



एक पुत्र, एक पुत्री योग
9 सितं. 1955 ई.
रात्रि 11-05, पठानकोट



प्रस्तुत जन्म कुण्डली का स्वामी उच्च विद्या प्राप्त एवं उच्च स्तरीय फर्नीचर उद्योग का कार्य करते हैं। अग. 1982 ई. में विवाह के पश्चात् इन्हें गुरू मध्ये बुध की अन्तरदशा में पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। जबकि शुक्र की अन्तरदशा में कन्या उत्पन्न हुई। कुण्डली में पंचमेश बुध पंचम भाव में ही उच्चराशिस्थ होकर बैठा है। जबकि महादशा स्वामी गुरू तृतीय भाव में उच्चराशिस्थ होकर बैठा हुआ है। फलस्वरूप गुरू एवं बुध की दशाओं में ही सन्तति सुख प्राप्त हुआ।

किस ग्रह की दशा में पुत्र जन्म की सम्भावना ?

बृहस्पति से, चन्द्रमा से, लग्न से पाँचवां स्थान पुत्र देने वाला होता है और उससे नवम् (9) नवम् राशि भी पुत्रदायक होती है। उन राशियों के स्वामी की दशा/अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति कहे।।

पंचमेश व सप्तमेश ग्रहों के स्पष्ट का योग करने पर जो नक्षत्रांश आवे उसकी स्पष्ट दशा और उससे युक्त या दृष्ट ग्रह की दशा/अन्तर्दशा पुत्र देने वाली होगी-

पुत्रस्थानप कामपस्फुटयुते यत्तारका तद् दशा।
तत्खेटान्वित वीक्षक ग्रह दशा भुक्तिश्च पुत्रप्रदा।।४९ (जातक पा.)

दशानुसार सन्तानहीन योग-

पुत्रस्थानपकारके क्षकयुता दुःस्थानपा दुर्बला।
दुःस्थास्ततत्परिपाक भुक्ति समये पुत्रस्य नाशं वदेत्।।

अर्थात्-1. पुत्रभावेश ग्रह, 2. पुत्रकारक, 3. पुत्रभावद्रष्टा, 4. पुत्रभावस्थ-ये चार ग्रह यदि दुःस्थान (6, 8, 12) के स्वामी हों, निर्बल (अस्तादि) हों या दुःस्थान (6, 8, 12) में स्थित हों तो उनकी दशाअन्तर्दशा में पुत्र सन्तान का नाश कहें।

पुत्र प्राप्ति का समय जानना

[श्री मन्त्रेश्वर (फलदीपिका) के मतानुसार]

आगे लिखे अनुसार **लग्न-स्वामी** के स्पष्ट राश्यंश **सप्तमेश** ग्रह के राशि, अंश, कला, विकलादि तथा **पंचमेश** स्पष्ट के राशि अंश, कलादि-तीनों के राशि अंशादि को जोड़ने से जो राशि, अंश, कला, विकला आवे, उस स्पष्ट का जोड़ जिस नक्षत्र में अन्तर्गत पड़ता होगा, उसी नक्षत्र के स्वामी की जब महादशा हो तथा निम्नलिखित में से किसी ग्रह की अन्तर्दशा में पुत्र उत्पत्ति होगी। (क) पंचम भाव में जो ग्रह हो, (ख) पंचम भाव को जो ग्रह देखता हो अथवा (ग) पंचमेश ग्रह की अन्तर्दशा में पुत्र जन्म का समय जानें।

उदाहरणार्थ, मान लीजिए यदि तीनों का जोड़ १० ।२५ ।२० ।२४ आया हो, तो **पूर्वाभाद्रपद** का द्वितीय चरण होगा।

उदाहरण के अनुसार गुरू की अन्तर्दशा में पुत्र प्राप्ति होगी।

नोट-यदि तीनों स्पष्ट (लग्नेश, सप्तमेश एवं पंचमेश) ग्रहों का योग 11 राशि से अधिक मिले तो 12 राशि को घटा देवें। इसी भान्ति 60 विकला एवं 60 कला से अधिक की योग सँख्या में से 60 घटाकर पहले योग में 1 जमा कर लेवें तथा 30 से अधिक अंशों में से 30 घटाकर 1 राशि बढ़ा देवें।

मनोवांछित पुत्र सन्तति की प्राप्ति

विवाह के पश्चात् सन्तान जन्म से ही गृहस्थ जीवन प्रारम्भ होता है। परिवार में गृहस्थ जीवन प्रारम्भ होता है। परिवार में पुत्र एवं पुत्री दोनों तरह की सन्तति होने से गृहस्थ की पूर्ति होती है। समाज में पुत्र एवं पुत्री दोनों के जन्म का अपना-अपना विशेष महत्त्व है। परन्तु भारतीय समाप्त में पुत्र जन्म को सर्वत्र विशेष उत्सव के रूप में मनाया जाता है। धर्म शास्त्रानुसार देव ऋण, ऋषि ऋण, मातृ-पिता आदि ऋणों से मुक्त होने के लिए तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए पुत्रोत्पत्ति का होना आवश्यक माना जाता है। पुत्र प्राप्ति के लिए हमारे शास्त्रकारों ने अनेक प्रकार के आवश्यक नियम प्रतिपादित किए हैं। इन नियमों का पालन करने से पुत्र जन्म की सम्भावनाएँ प्रबल हो जाती हैं।

(1) जिनको सन्तान न हो रही हो, उन्हें पहले तो पति-पत्नी, दोनों को किसी **योग्य चिकित्सक के द्वारा शारीरिक परीक्षा** (जाँच) करवानी चाहिए तथा गर्भाधान में रूकावट डालने वाला कोई दोष या रोग हो, तो उसकी उचित चिकित्सा करवानी चाहिए।

(2) कई बार स्त्री-पुरूष में विशेष शारीरिक दोष (Physical Defects) न होते हुए भी सन्तान नहीं हो पाती। ऐसी स्थिति में किसी विद्वान् एवं अनुभवी ज्योतिषी जी से परामर्श करना चाहिए।

(3) पति-पत्नी, दोनों की जन्मपत्रियों एवं जन्म कुण्डलियों में सन्तान कष्ट या अभाव के संकेत मिलते हों, तो ज्योतिषी जी द्वारा बतलाए गए उपायों को यथानुसार श्रद्धापूर्वक ग्रहण करके सन्तान सुख प्राप्त कर सकते हैं।

(4) आयुर्वेद एवं ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन मनीषियों ने सन्तान प्राप्ति के विषय में अनुसंधान करके कुछ विशेष सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं। इन सिद्धान्त एवं नियमों का दृढ़ता एवं विश्वासपूर्वक पालन करने से निश्चित रूप से मनोवांछित (पुत्र या पुत्री) सन्तान प्राप्त की जा सकती है।

(5) मनोवाँछित सन्तान प्राप्ति के लिए गर्भाधान कब करें ?

श्रेष्ठ सन्तान प्राप्ति के लिए गर्भाधान कब करें ? मानवजीवन को श्रेष्ठ एवं उन्नत बनाने के उद्देश्य से हमारे प्राचीन ऋषियों द्वारा संचलित सोलह संस्कारों की व्यवस्था अतीतकाल से चली आ रही है। इनमें गर्भाधान, पुंसवन आदि संस्कार वाँछित सन्तान प्राप्ति की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं।

गर्भाधान का उपयुक्त काल मनोवाँछित एवं अभीष्ट पुत्रादि सन्तान प्राप्ति के लिए प्रथम सोपान है। समागम एवं गर्भाधान से पूर्व पति-पत्नी कम-से-कम दस-बारह दिन तक ब्राह्मचर्य व्रत का पालन करें। सात्त्विक एवं पौष्टिक आहार लेवें।

(क) मनुस्मृति के अनुसार स्त्रियों के रजोदर्शन से **सोलह रात्रियों तक ऋतुकाल** की हैं। इनमें से **रक्तस्राव तक की पहली चार रात्रियाँ अत्यन्त निन्दित एवं त्याज्य हैं।** ये चार रात्रि तथा ग्यारहवीं और तेरहवीं रात्रि-इन छः रात्रियों में स्त्री-पुरूष को समागम (संसर्ग) करना निषिद्ध, अर्थात् त्याज्य माना गया है।

(ख) ऋतुकाल में रजोदर्शन के बाद छठी, आठवीं, दसवीं बारहवीं, चौदहवीं एवं सोलहवीं–अर्थात् युग्म रात्रियों में गर्भाधान होने पर पुत्र-सन्तान की उत्पत्ति के प्रबल चाँस होते हैं तथा ऋतुकाल में रजोदर्शन के बाद 5, 7, 9 एवं 15वीं रात्रि में गर्भाधान होने पर **कन्या सन्तान की उत्पत्ति होती है।**

(ग) गर्भाधान में काल का विचार–गर्भाधान के समय काल का बड़ा महत्त्व है। दिन में **गर्भाधान सर्वथा निषिध है।** दिन के समय, सन्ध्या के समय, अमावस, कृष्ण चतुर्दशी, संक्रान्ति, माता/पिता का मृत्यु दिन, श्राद्ध-दिन, ग्रहण दिन व्यतीपातादि योग, दशहरा, दिवाली आदि पर्व दिनों को छोड़कर तथा गण्डमूलक नक्षत्र के रहितकाल में तथा पर्वादि दिनों को छोड़कर, पुरूष-स्त्री की कुण्डली में पड़े शुभाशुभ ग्रहों की दशाऽन्तर मध्य रात्रि के शुभ पहर में दशा का विचार तथा गोचर ग्रहों की स्थिति का विचार करते हुए स्त्री प्रसंग अर्थात् गर्भाधान करना चाहिए।

शुभ एवं ग्राह्य तिथियां (कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष में) 2, 3, 5, 7, 10, 12 (त्रयोदशी शुक्ल पक्ष में) ग्राह्य।

● **शुभ वार**–सोम, बुध, गुरू एवं शुक्रवार।

● **शुभ नक्षत्र**–रोहिणी, मृग., उत्तरा (तीनों), हस्त, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि. और शतभिषा।

● **शुभ लग्न**–पुत्र प्राप्ति के इच्छुक दम्पत्ति विषम राशि के लग्न एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम राशि लग्न में समागम करें। लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभग्रह और 3, 6, 11वें पाप ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल और गुरू-ये शुभ ग्रह देखते हों तथा रजोदर्शन से युग्म रात्रि में स्त्री संग करें, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति के योग बनते हैं।

शुभे त्रिकोण केन्द्रस्थे पापे षष्ठे त्रिलाभगे।
पुत्रकामः स्त्रियों गच्छेत् नरो युग्मासु रात्रिषु।।

● गर्भाधारण के दिन यद्यपि स्त्री-पुरूष दोनों का चन्द्र-बल वांछनीय है, तथापि स्त्री का चन्द्र बल विशेष रूप से आवश्यक है। समागम वाले दिन एवं रात्रि को अपने पितरों के श्राद्ध दिन या पूर्वा पर श्राद्ध दिन, तीनों प्रकार के गण्डान्त (तिथि, लग्न व नक्षत्र) ज्येष्ठा, मूल, मघा व रेवती नक्षत्रों, संक्रान्ति दिन व्यतीपात, वैधृति योग, ग्रहण दिन, प्रातःकाल एवं सन्ध्या काल, अमावस्या, पूर्णिमा, जन्माष्टमी, रामनवमी आदि गुरपर्व तिथियों को गर्भाधान हेतु सर्वथा त्याज्य माना गया है।

● **विचारों एवं संस्कारों का प्रभाव**–गर्भाधान के समय पति-पत्नी के जैसे चिन्तन एवं संस्कार होंगे, गर्भस्थ बच्चे के भी वैसे ही भाव एवं उसका स्वभाव होगा।

नारद पुराण में लिखा है–

यादृशेन हि भावेन योनौ शुक्रं समुत्सृजेत्।
तादृशेन हि भावेन सन्तानं सम्भवेदिति।। (नारद पु. २।२७)

इसलिए **मनुष्य को गर्भाधान करते समय जैसे सुपुत्र की इच्छा हो, वैसे शुभ भावों एवं संस्कारों से युक्त होना चाहिए।** इतिहास-पुराणों में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। माता-पिता से **केवल शरीर ही प्राप्त नहीं होता, मन भी प्राप्त होता है और संस्कार भी प्राप्त होते हैं। जैसा आचार-विचार, प्रकृति एवं प्रवृत्ति, आस्था और आदतें माता-पिता के होते हैं।** प्रायः वैसा ही स्वभाव व संस्कार और आदतें सन्तान में भी देखी जाती है। अतएव गर्भाधान के समय पति-पत्नी के शुद्ध एवं सात्त्विक विचार होने चाहिएँ। जैसी धार्मिक, वीर, विद्वान्, तेजस्वी सन्तान चाहिए। पति-पत्नी दोनों को गर्भाकाल के समय वैसे ही भाव एवं चिन्तन रखना चाहिए।

● **पौष्टिक एवं सात्त्विक आहार**–गर्भाधान से पूर्व पति-पत्नी को कम-से-कम पन्द्रह दिन तक ब्रह्मचर्य रहकर नियमित रूप से सात्त्विक पौष्टिक तथा शाकाहारी भोजन करना चाहिए। दूध, दही, मक्खन, घृतादि पौष्टिक वस्तुओं का सेवन करना चाहिए। मांस, अण्डा, शराब आदि मसालेदार तामसिक एवं तली हुई वस्तुओं के सेवन से परहेज़ करना चाहिए।

● **श्वास-विचार–पुत्रकामी स्त्री-पुरूष** को चाहिए कि वह रात्रि को जब पुरूष की दाहिनी नासिका का श्वास और स्त्री की बाईं नासिका का श्वास चल रहा हो, तभी समागम करें। ऐसा शास्त्राचार्यों का कथन है।

नोट–अधिक विवरण/ज्ञान के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **'सुतभाव प्रकाश'** का अध्ययन करना चाहिए।

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी-सन् 2014 ई०

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विंशोत्तरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2013 ई० में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1400 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। **—पं० विवेक शर्मा S/o पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

☞ **जनवरी**—व्यापारी भाईयों के लिए नववर्ष मंगलमय एवं लाभप्रद रहे। दिसम्बर, 2013 ई. के अन्तिम सप्ताह व्यापारिक जिन्सों में विशेष उथल-पुथल रहेगी। मुख्य व्यापारी इस समय अपना माल निकालने का प्रयास करेंगे।

2 जन. को मकर राशिस्थ, गुरुवार को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, घी तेज होंगे, जबकि सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में मन्दी बनेगी।

4 जन. को राहु स्वाती नक्षत्र के प्रथम चरण में आने से शेयर बाज़ार, रूई, कालीमिर्च, सोयाबीन में तेजी का योग बनेगा।

5 जन. को शनि विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में आने से गेहूँ, चावल, तिलहन, मूँगफली में मामूली तेजी बनेगी।

6 जन. को बुध उ.षा. तथा वक्री शुक्र धनु राशि में आकर सू., बु. के साथ योग करेगा। इन पर मंगल, शनि एवं गुरु की दृष्टि है। खल-बिनौला, गेहूँ, जौं, चना आदि अनाज, सरसों, ग्वार, रूई, सोना, चाँदी, ताम्बा आदि धातु तथा शेयरों में तेजी का काम करने से लाभ होगा। परन्तु गुरु की दृष्टि के कारण रूई, सूत, कपास, चाँदी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

8 जन. को बुध अकेला मकर राशि में आकर रूई, सोना, चाँदी, शेयर बाज़ार में घटाबढ़ी करने के बाद मन्दी लेकर आएगा। परन्तु इसी दिन वक्री शुक्र धनु राशि में अस्त होने से सोना, चाँदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली आदि में तेज़ी का रुख बने। यह घटाबढ़ी 13 जन. तक रह सकती है। रुई में तेजी रहे।

11 जन. को सूर्य उ.षा. में आने से उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों, सोयाबीन में तेजी के झटके लगेंगे।

12 जन. को वक्री शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आएगा। इस पर मंगल, शनि एवं गुरु की दृष्टि है। मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों, खल-बिनौले, मूँगफली, रूई, गुड़, अलसी, चाँदी में तेजी बनकर बाद में मन्दा बनेगा।

14 जन. को सूर्य मकर राशि में आकर बुध के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन मंगल चित्रा तथा बुध श्रवण नक्षत्र में आएंगे। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रूई, सोना, चाँदी, ताम्बा, चना, चावल में तेजी की लाईन बनेगी। गेहूँ आदि अनाज तथा बारदाना में थोड़ी मन्दी बनेगी। ता. 15 की प्रातः ही शुक्र पूर्व में उदय होने से भी सोना, चान्दी, रूई, सूत, कपास, गुड़, सोयाबीन, तिलहन, घी में तेजी का वातावरण बनेगा। तेजी का काम करके लाभ कमाएं।

16 जन. को वक्री गुरु आर्द्रा के चतुर्थ चरण में आएगा। गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग चल रहा है। अतएव गेहूँ, सुगन्धित पदार्थों, घी, तेल, सरसों, रुई में पहले मन्दी बनकर फिर बाद में तेजी बने।

18 जन. को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई, कपास, शेयर-बाज़ार में अच्छी घटाबढ़ी के बाद मन्दी का रुख बनेगा। यह रुख ता. 21-22 जन. तक चलेगा।

22 जन. को बुध धनिष्ठा में आने से भी सोना, चाँदी में मन्दी तथा रूई में घटाबढ़ी का माहौल रहेगा।

24 जन. को सूर्य श्रवण में आने से गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल में तेजी बनेगी।

26 जन. को बुध कुम्भ राशि में आएगा। इस पर गुरु की दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप अलसी, रूई, चाँदी, घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड में मन्दी का वातावरण रहेगा।

31 जन. को शुक्र मार्गी होने से रूई में मन्दी, चाँदी, सोना, मोती, हीरा आदि जवाहरात, धान्य, गुड़, घी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

फरवरी–मासारम्भ ता. 1 फर., शनिवार को चन्द्रदर्शन होने से रुई, सूत, सोना, चाँदी, सरसों, मूंगफली आदि में तेजी बनेगी।

4 फर. को मंगल तुला राशि में आकर शनि एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर वक्री गुरु की दृष्टि रहेगी, रुई, कपास, वारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, सोने में तेजी बनेगी। तेज़ी के विशेष चांस होने पर भी अधिक ज़ोरदार तेज़ी नहीं बन पाएगी।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आएगा। सूर्य पर मंगल की दृष्टि भी रहेगी। सोना, चाँदी, मोती आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाज, अलसी, रूई में तेजी बनेगी। इसी दिन बुध वक्री होने से भी शक्कर, चना, बाजरा, घी, शेयर-बाज़ार में तेजी का वातावरण बने।

9 फर. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रूई, चान्दी, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनकर मन्दी बने। सोना, अलसी, चना, बिनौला भी घटाबढ़ी के बाद तेज होंगे।

12 फर. को वक्री बुध धनिष्ठा के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। इसी दिन सूर्य धनि. (4) कुम्भ राशि में आकर बुध के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। घी, तेल, लवण, सरसों, मूँगफली, राई, रूई, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चान्दी में तेजी बनकर मन्दी बनेगी। (ता. 12 से 17 फर. के मध्य कुछ जिन्सों में तेजी, कुछ जिन्सों में मन्दी तथा कुछ वस्तुओं में अच्छी तेजी का झटका लगाकर मन्दी बनेगी।)

18 फर. को वक्री बुध मकर राशि में आएगा। इस पर मंगल की दृष्टि रहेगी। रूई, सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी का रुख बनेगा।

19 फर. को सूर्य शतभिषा नक्षत्र में आने से सोना, चाँदी, सूत, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ में तेजी बनेगी।

21 फर. को वक्री गुरु आर्द्रा (3) में तथा शुक्र उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में आएगा। गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग चल रहा है। गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, सोयाबीन में मन्दी बनकर एकदम तेजी की लाईन बनेगी। इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होने से लालमिर्च, घी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

26 फर. को शुक्र मकर राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप शेयर बाज़ार विशेषकर साफ्टवेयर शेयर्ज़, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना आदि सब अनाजों में तेजी बनेगी। रूई, चान्दी, कपास में घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी बनेगी।

28 फर. को बुध मार्गी होने से रूई-चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, अनाज, रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन, अगर, सोना में अच्छी तेजी का रुख बनेगा।

[ता. 22 से 28 फर. बजट तक शेयर बाज़ार में विशेष उथल-पुथल रहेगी तथा मुख्यत: तेजी का रुख रहेगा।]

मार्च–ता. 1 मार्च, शनिवारी अमावस के दिन तुला राशिगत एवं शनि-राहु युक्त मंगल वक्री हो रहा है। यद्यपि इन पर वक्री गुरु की दृष्टि पड़ रही है, फिर भी यह योग तेजीकारक दिख रहा है। शास्त्रों में वक्री मंगल का फल इस प्रकार लिखा है–

क्षितिजोवक्रभूतोपि दुर्भिक्षं च महद् भयम्।
आरक्तानि च द्रव्याणि महर्घाणि भवन्ति हि।।

अर्थात् मंगल वक्री होने से दुर्भिक्ष होवे और पृथ्वी पर महान् भय होवे तथा सब प्रकार की लाल वस्तुएं, पदार्थ महंगे होंगे।

फलस्वरूप सोना, चान्दी, रूई, अलसी, गेहूँ, लाल-मिर्च, गुड़, ताम्बा, सरसों, सोयाबीन, चना, घी, चीनी, हीरा, मोती आदि जवाहरात, कपूर, चन्दन, ईत्र आदि सुगन्धित वस्तुएं तेज होंगी।

2 मार्च को उ.भा. नक्षत्र कालीन रविवार को चन्द्रदर्शन होगा। इसी दिन तुला राशिगत तथा वक्री मंगल एवं राहु युक्त शनि भी वक्री हो रहा है। जब 2 या 3 क्रूर ग्रह वक्री हों, तो राजाओं में क्षोभ की वृद्धि, युद्ध, अतिवर्षा, प्राकृतिक प्रकोप व युद्धभय होता है।

यदा प्रतीपगौ खेडो नृपं क्षोभयतस्तदा।
प्रतीपगास्त्रय: खेटा युद्धवृष्टि भयप्रदा:।।

ग्रहयोगानुसार क्रूड-आयल, तेल, सरसों, सोयाबीन, गुड़, अलसी, ताम्बा, लोहा, सोना, चाँदी, निक्कल, काली-मिर्च, हींग, सीमेंट, पेट्रोल में तेजी का झटका लगेगा।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. नक्षत्र में आएगा। इस पर वक्री गुरु की दृष्टि रहेगी। अतएव 1-2 दिन में ही सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई में तेजी बनकर बाद में मन्दी बनेगी।

6 मार्च को मिथुन राशिगत गुरु मार्गी होगा। कुछ जिन्सों में चला आ रहा रुख अचानक बदल सकता है। इसलिए सावधानीपूर्वक आगे बढ़ें। चान्दी, रुई, घी में मन्दी बनकर अचानक तेजी बनेगी। चावल, अलसी, सरसों, गुड़, तम्बाकू तेज होंगे।

9 मार्च को राहु चित्रा (4) तथा केतु अश्विनी (2) में आकर मंगल के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। शनि भी तुला राशि में चल रहा है। अतएव घी, गुड़, अलसी, चना, सोयाबीन आदि व्यापारिक जिन्सों में तेजी का रुख बनेगा।

10 मार्च को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा। इस पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि है। रूई, घी, चान्दी में मन्दी बनकर बाद में तेजी बने। सोने, कॉपर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूँग, मोठ में भी मामूली तेजी का रुख बनेगा।

12 मार्च को बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। अलसी, रूई, चान्दी, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, चने में मामूली तेजी बनकर पुन: मन्दी का रुख बनेगा।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आएगा। गुरु की दृष्टि से हटकर गुरु की राशि में आएगा। अतएव सरसों, सोयाबीन, सोना-चान्दी, रुई, खाण्ड, गुड़, शक्कर, चना, घी, ग्वार में तेजी बनकर पुनः मन्दी बनेगी।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. नक्षत्र में तथा बुध शतभिषा नक्षत्र में आने से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल, घी में तेजी, सोना, चान्दी, सोयाबीन, बाजरा में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी फिर तेजी बनेगी।

19 मार्च को गुरु आर्द्रा (4) में आने से कपूर, चन्दन, ईत्र आदि सुगन्धित पदार्थ, घी, शक्कर में कुछ मन्दी बने।

24 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आएगा। मंगल की इस पर दृष्टि रहेगी। चावल, रूई, कपास, मूँग, मोठ, उड़द, गुड़, ज्वार, बाजरा, सोना, चांदी में तेजी तथा गेहूँ में मन्दी बनेगी।

25 मार्च को वक्री मंगल कन्या राशि में आकर सूर्य के साथ समसप्तक योग बनाएगा। यह योग तेजीकारक रहेगा। रूई, चान्दी, सोना, अलसी, ताम्बा, गेहूँ, गुड़, लाल-मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में तेजी की लाईन बनेगी।

परन्तु आगे 28 मार्च को बुध पू.भा. नक्षत्र में आकर सोना, चान्दी, तांबा, लोहा तथा सभी प्रकार के अनाजों में कुछ मन्दी करेगा।

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आएगा। सूर्य-मंगल के मध्य पहले ही समसप्तक योग चल रहा है। जोकि तेजी को बढ़ावा देगा। इसी दिन शुक्र कुम्भ राशि में आएगा। एकाकी शुक्र यहाँ मन्दी करता है, परन्तु गुरु की विशेष दृष्टि होने से जिन्सों में उथल-पुथल रहेगी। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेजी बने। रुई, चान्दी, गुड़, सोना, कॉपर, घी में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बने।

☞ **अप्रैल**–मासारम्भ ता. 1, मंगलवार को मेष राशिगत चन्द्रदर्शन होने से गेहूँ, चना आदि अनाजों में मन्दा, सरसों, गुड़, सोना, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

4 अप्रै. को बुध मीन राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि रहेगी। सोना, चांदी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेज़ी बनेगी।

6 अप्रै. को बुध उ.भा. तथा शुक्र शतभिषा नक्षत्र में आएगा। गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चांदी में तेजी का रुख बनेगा। (ता. 6 से 12 अप्रै. तक वायदा/हाजिर बाज़ार में घटाबढ़ी का रुख रहेगा। विशेष तेजी की उम्मीद होने पर भी अधिक तेजी न बन पाएगी।)

13 अप्रै. को वक्री मंगल हस्त तथा बुध रेवती नक्षत्र में आएगा। बुध पर पहले ही मंगल की दृष्टि चल रही है। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त भी होगा। घी, गुड़, खाण्ड, रुई, केसर, लाल मिर्च आदि लाल वस्तुओं, ताम्बा, सोना में तेजी बनेगी। चान्दी, सरसों में कुछ मन्दी बने।

14 अप्रैल को सूर्य मेष राशि तथा अश्विनी नक्षत्र में आकर केतु के साथ एक राशि नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग कुछ जिन्सों/धातुओं में तूफानी तेजी तथा कुछ एक में अच्छी मन्दी ला सकता है। सूर्य-केतु पर मंगल की विशेष दृष्टि भी तेजीकारक मालूम पड़ती है। अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोना, चान्दी, लोहा, ताम्बा, लाल-चन्दन, नारियल, हींग, सोयाबीन, लौंग, अनाज में तेजी बने। रुई, घी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

18 अप्रै. को शुक्र पू.भा. में आने से रुई, शेयर-बाज़ार, चान्दी में तेजी, चना, अन्न, सरसों में मन्दी बनेगी।

20 अप्रैल को बुध मेष राशि में सूर्य एवं केतु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि, मंगलादि क्रूर ग्रहों की दृष्टियां पड़ रही हैं। बुध चली आ रही तेजी को ओर बढ़ावा देगा। सोना, चांदी, ताम्बा आदि धातु, गेहूँ, जौं, चना, तेल, सरसों, रुई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

24 अप्रै. को गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में आएगा। चान्दी, घी, रुई में मन्दी, चना, गेहूँ आदि अनाज में तेजी बनेगी।

26 अप्रै. को बुध भरणी नक्षत्र में आकर चावल, गेहूँ, शेयर-बाज़ार में उथल-पुथल करेगा।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इन पर शनि, मंगल की दृष्टियां पहले ही चल रही है। सोना, चांदी, ताम्बा, मूँगा, पीतल, गेहूँ, जौं, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, दूध में तेजी की लाईन बनेगी। इसी दिन शुक्र मीन राशि में आएगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ मन्दी करता है, परन्तु शुक्र-मंगल मध्य समसप्तक योग बनने से यहाँ मन्दी की जगह तेजी का ही चाँस लग रहा है। व्यापारी तेजी का काम करके लाभ कमाएं।

29 अप्रै. को मंगलवारी अमावस भी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी को बढ़ावा देगी।

30 अप्रैल, बुधवार को वृष राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होने तथा इसी दिन शुक्र उ.भा. नक्षत्र में आने से चावल, मोती, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रूई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी बने। सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर में भी मन्दी बनेगी।

☞ **मई**–मासारम्भ ता. 1 को वक्री शनि विशाखा (2) में आएगा। सूर्य-शनि का समसप्तक योग चल रहा है। सरसों, चावल, गेहूँ, सोयाबीन, सोने में तेजी की लाईन चलेगी।

3 मई को बुध कृतिका नक्षत्र में आकर चान्दी, रुई, कपास, घी में घटाबढ़ी करके मन्दी करेगा।

4 मई को बुध अकेला वृष राशि में आकर सूर्य-केतु से अलग होगा। रुई में मन्दी होकर बाद में तेजी बने। प्रायः सभी वस्तुओं में घटाबढ़ी चले। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, तिल, तेल में तेजी बनेगी।

7 मई को बुध पश्चिम में उदय होने से ऊन, कपास, रुई, शेयरों तथा घी में अच्छी घटाबढ़ी के मध्य तेजी का रुख रहेगा।

9 मई को बुध रोहिणी में आने से रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रूई में पहले तेजी बनकर फिर मन्दी बने।

10 मई को राहु चित्रा (3) तथा केतु अश्विनी (1) में आकर रुई, घी, चांदी में मन्दी का रुख बनेगा।

11 मई को सूर्य कृतिका नक्षत्र में आएगा। सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग पहले से ही चल रहा है। घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, सरसों में तेजी बनेगी।

12 मई को शुक्र रेवती नक्षत्र में आएगा। मंगल-शुक्र के मध्य समसप्तक योग चल रहा है। हमारे विचारानुसार रूई, कपास, चांदी, चावल, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहारात में मन्दी का चांस होने के बावजूद तेजी का रुख बनेगा।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा तथा मंगल-शनि की दृष्टियों से हटेगा। फलस्वरूप शीघ्र ही व्यापारिक वस्तुओं की लाईन में परिवर्तन होगा। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनकर बाद 2-3 दिन में मन्दी बने। जौं, चना, मटर, गेहूँ, अरहर, मूँग, चावल में मन्दी बनेगी।

15 मई को गुरु पुनर्वसु के द्वितीया चरण में आएगा। रूई, चान्दी, घी, अनाज, चना आदि में मन्दी का रुख बनेगा।

17 मई को बुध मृगशिर नक्षत्र में आएगा। रूई, शेयर-बाज़ार में तेजी, चान्दी में घटाबढ़ी होकर मन्दी तथा गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी का रुख बनेगा।

20 मई को मंगल मार्गी होगा। मंगल-शुक्र का समसप्तक योग चल रहा है। तेल, सरसों, चान्दी, रुई, अलसी, गुड़ में तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी बनेगी।

22 मई को बुध मिथुन राशि में आकर गुरु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चान्दी, रूई, सरसों, सोयाबीन, बैंकिंग शेयर्ज़, मूँग में अच्छी घटाबढ़ी के बाद थोड़ा मन्दी का रुख रहेगा।

24 मई को शुक्र मेष राशि में केतु के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं शनि की दृष्टियां रहेंगी। यह ग्रहस्थिति व्यापारिक जिन्सों में पुनः उछाल लेकर आएगा। जौं, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, वारंदाना, चीनी, कॉपर में विशेष तेजी बनेगी। तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी बनकर तेजी बनेगी।

25 मई को सूर्य रोहिणी नक्षत्र में आने से तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, ऊन, सुपारी, मिर्च, राई में तेजी बने। चान्दी में मामूली मन्दी बनेगी।

30 मई शुक्रवार को मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा कालीन चन्द्रदर्शन होगा। इसी दिन बुध आर्द्रा में आएगा। सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्रों, जौं, मोठ में मन्दी रहे, सोना, चान्दी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

☞ जून–ता. 2 जून को गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के तृतीय चरण में आने से रूई, चान्दी, कपास, सोने, हल्दी, ग्वार में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

4 जून को शुक्र भरणी नक्षत्र में आएगा। शुक्र पर मंग.-शनि ग्रह की विशेष दृष्टियां हैं। यद्यपि शुक्र इस नक्षत्र में प्रवेश के समय मन्दी का वातावरण बनता है। परन्तु यहाँ ग्रहयोग से मन्दी की जगह तेजी मालूम पड़ती है। सोना, चान्दी, लाल-मिर्च, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, चना, मूँग, मोठ, ज्वार में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

7 जून को मिथुन राशिगत बुध वक्री होने से घी, रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी तथा चना, गेहूँ, गुड़, सरसों में मन्दी बनेगी।

8 जून को सूर्य मृगशिर नक्षत्र में आने से, रुई, रेशम, सन्, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चान्दी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी में तेजी बने।

11 जून को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से चान्दी, घी में अच्छी तेजी बनेगी। रुई, शेयर-बाज़ार, कपास, बैंकिंग शेयर्ज़ में मन्दी बने।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध एवं गुरु के साथ मेल रहेगा। तेजी को बल मिलेगा। सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, तिल, तेल, सरसों, सोयाबीन, हल्दी में तेजी बनेगी। इसी दिन शुक्र कृतिका में आने से जौं, हींग आदि कुछ जिन्सों में मन्दी बनेगी।

16 जून को ही वक्री बुध मृगशिर नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, चान्दी, गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में घटाबढ़ी होकर पहले अच्छी तेजी, फिर बाद में थोड़ी मन्दी बनेगी।

18 जून को शुक्र वृष राशि में आकर मंगल व शनि की दृष्टि से हट जाएगा। रुई, कपास, घी, खाण्ड, कपास, चने में मन्दी बने, सोना-चान्दी, कॉपर में तेजी का रुख बनेगा।

19 जून को वृहस्पति (गुरु) पुनर्वसु के चतुर्थ चरण अर्थात् कर्क (उच्च) राशि में प्रवेश करेंगे। इस पर शनि की दृष्टि रहेगी। जोकि वृहस्पति से सम्बन्धित वस्तुओं में तेजी की सूचना दे रहा है। शास्त्रों में इसका वर्णन इस प्रकार लिखा है–

पुनर्वसौतथापुष्येश्लेषायांगच्छते गुरुः। स्वल्प वृष्टिः भवेतत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत्॥

अर्थात् पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा-इन नक्षत्रों में वृहस्पति होवे, तब थोड़ी वर्षा होवे और दुर्भिक्ष होवें।

वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने से कुछ दिन पहले ही गुरु का कर्क राशि में प्रवेश हुआ है। फलस्वरूप कम वर्षा या खण्ड वर्षा के कारण जनोपयोगी वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि होगी। इसलिए गेहूँ, चना आदि अनाजों का, खाण्ड, हल्दी का राशि प्रवेश से पहले ही संग्रह कर ले, तो अच्छा लाभ मिलेगा। गुड़, घी, रुई, कपास, हल्दी, ग्वार, कॉपर, सोना, चान्दी में विशेष ज़ोरदार तेजी बनेगी।

22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चान्दी में तेजी बने। सोने में घटाबढ़ी चलेगी।

26 जून को शुक्र रोहिणी नक्षत्र में आकर सोना, चान्दी आदि धातु तथा अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, छुहारा, सुपारी, ऊन में मन्दी बनेगी।

28 जून को मंगल चित्रा नक्षत्र में आएगा। इसी दिन वक्री बुध पूर्व में उदय होगा। गेहूँ, चावल, चना, सोना, चान्दी, तांबा, पीतल में तेजी बने। रुई में पहले मन्दी बनकर फिर झटके की तेजी से लाभ होगा।

29 जून, रविवार को कर्क राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना-चान्दी में तेजी तथा रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

जुलाई–मासारम्भ ता. 1 जुला. को बुध मार्गी होगा। बुध सूर्य के साथ है। रुई, मूँग, चना, घी में मन्दी बनकर फिर तेजी बनेगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, सोयाबीन, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी का रुख बने।

4 जुला. को गुरु पुष्य नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इस पर शनि की विशेष दशम दृष्टि रहेगी। रुई, घी, हल्दी, सोना, चांदी, कॉपर आदि धातुओं, कपास में तेजी का वातावरण बनेगा।

6 जुला. को सूर्य पुनर्वसु नक्षत्र में आएगा। रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, केसर, मजीठ, नील, सोंठ, गुग्गल आदि करियाना पदार्थों में तेजी होगी।

8 जुला. को शुक्र मृगशिर नक्षत्र में आने से गेहूँ, चना, ज्वार में मन्दी तथा गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी।

11 जुला. को गुरु अपनी उच्च राशि में अस्त होगा। 12 दिन पहले जिन वस्तुओं में तेजी बनी थी। उन वस्तुओं में मन्दी बन जाएगी। सोना, चान्दी, चना, गेहूँ आदि अनाज में मन्दी, रुई तथा शेयरों में तेजी बनेगी।

12 जुला. को 18 मास से चला आ रहा शनि-राहु योग समाप्त होगा। राहु तुला राशि में शनि को छोड़कर कन्या राशि में आकर मंगल-राहु योग बनाएगा। केतु भी मीन राशि में आएगा। बाज़ार के रुख में अचानक परिवर्तन होंगे। बाज़ार के रुख को देखकर आगे बढ़ें। शीघ्र ही कपूर, चन्दन, कस्तूरी, रुई, गुड़, क्रूड-आयल, पैट्रोल में तेजी बनेगी। अलसी, सरसों, तिल, सोयाबीन में कुछ मन्दी बनेगी।

13 जुला. को शुक्र मिथुन राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यहाँ मन्दी करता है, परन्तु बुध ग्रह के योग से घटाबढ़ी का माहौल बनेगा। रूई, कपास, सूत, एरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में घटाबढ़ी के बीच पहले तेजी, बाद में मन्दी बने, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेजी बने। इसी दिन बुध आर्द्रा में आने से भी अनाजादि में तेजी बनेगी।

14 जुला. को मंगल तुला राशि में आकर शनि के साथ योग करेगा। रूई, कपास, सूत, सन, पाट, वारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ तथा उड़द, मूँग आदि अनाजों में विशेष तेजी की लाईन बनेगी। बाज़ारों में ज़ोरदार तेजी का वातावरण बनेगा।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर उच्चस्थ गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। गुरु इस समय अस्त है। रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी में अच्छी तेजी बने। गेहूँ, चना, जौं, अरहर, उड़द, मूँग, चावल में भी मन्दी बनकर बाद में तेजी बन जाएगी।

19 जुला. को गुरु पुष्य (2) तथा शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। रुई में तेजी, गेहूँ, चना, उड़द, गुड़ में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

20 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में आएगा। इसी दिन शनि मार्गी भी होगा। कर्क राशि के सूर्य पर शनि की दृष्टि भी रहेगी। कुछ जिन्सों में तूफानी तेजी तथा कुछ जिन्सों में अच्छी ज़ोरदार मन्दी बन सकती है। तिल, तेल, सरसों, खाण्ड, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, हींग, हल्दी, लाख, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। रुई में पहले तेजी होकर फिर मन्दी बने।

23 जुला. को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आने से चांदी, रुई, कपास, सूत, सन् में अच्छी मन्दी का झटका लगेगा।

26 जुला. को शनिवारी अमावस व्यापारिक जिन्सों में तेजी की लाईन बनाएगी।

27 जुला. को मंगल स्वाती नक्षत्र में आएगा। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होगा। रुई, ऊनी वस्त्र, तिल, तेल में तेजी बनेगी। सोने, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। घी, चना आदि में मन्दी बनेगी।

28 जुला. को बुध कर्क राशि में आकर सूर्य एवं गुरु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दशम दृष्टि रहेगी। बुध यहाँ व्यापारिक वस्तुओं में तेजी लाकर बाद में मन्दी करता है। परन्तु हमारे विचार अनुसार यहाँ तेजी की लाईन ही बनेगी।

30 जुला. को बुध पुष्य नक्षत्र में आकर सूर्य-गुरु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में आएगा। सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत में घटाबढ़ी होने के बाद तेजी का रुख बनेगा।

अगस्त–3 अग. को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आएगा। सोना, चाँदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील में तेजी का रुख बने।

5 अग. को गुरु पूर्व में उदय होगा। कर्क राशि में सूर्य-बुध-गुरु का योग चल रहा है। व्यापारिक, सब्ज़ियों, अन्नादि वस्तुओं में तेजी करेगा।

6 अग. को बुध आश्लेषा में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी।

7 अग. को शुक्र कर्क राशि में आकर सूर्य-बुध-गुरु के साथ चतुर्ग्रही योग बनाएगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। बाज़ार में किसी अफवाह या अतिवृष्टि के कारण विशेष उथल-पुथल होगी। सभी जिन्सों में तेजी का वातावरण बनेगा। पहले संग्रह करना लाभप्रद रहेगा। अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, शेयर-बाज़ार में अच्छी तेजी बनेगी। सोना-चान्दी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 अग. को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, सूत, सन्, रेशम, ऊन व धान्य में अच्छी तेजी, लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में पहले थोड़ी मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

12 अग. को बुध सूर्य, गुरु, शुक्र को छोड़कर सिंह राशि में प्रवेश करेगा। सोना, चान्दी, सूत, रुई व ऊनी वस्त्र, कुछ बैंकिंग शेयर्ज़, खट्टे पदार्थों में तेजी बने। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस पदार्थों में मन्दी बन सकती है। घटाबढ़ी का यह रुख ता. 16 तक चलेगा।

17 अग. को सूर्य सिंह राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। सोना, चान्दी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, सोयाबीन आदि तथा हल्दी, लाल-मिर्च आदि लाल वर्ण की वस्तुएँ तेज होंगी। शेयर-बाज़ार, चना आदि अनाज में मामूली मन्दी बनेगी।

18 अग. को गुरु पुष्य (4) में आने से रुई, गेहूँ, चान्दी, घी, सब्ज़ियों में तेजी का वातावरण बनेगा।

19 अग. को मंगल विशाखा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन बुध भी पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में आएगा। रूई, कपास, चना, गेहूँ, सोना, चान्दी तथा कॉपर में अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, बैंकिंग शेयर्ज़ में भी पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

20 अग. को शनि विशाखा के द्वितीय चरण में आने से गेहूँ, चावल, चना, तेल, क्रूयड-आयल में तेजी बनेगी।

21 अग. को शुक्र आश्लेषा में आने से रुई, कपास, चावल, घी, दूध में कुछ मन्दी बनेगी।

22 अग. को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई से पहले मन्दी बनकर तेजी बने, तिल, तिलहन, चान्दी, सोने, शेयरों में भी तेजी का रुख रहे।

27 अग., बुधवार को चन्द्रदर्शन होगा। इसी दिन बुध उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में आएगा। उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर, घी में तेजी बनेगी। सोना, चान्दी, रुई, बारदाना, जूट, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दी बनेगी।

29 अग. को बुध कन्या राशि में आकर राहु के साथ मेल करेगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, सोने, शेयर-बाज़ार में उथल-पुथल के बाद तेजी बनेगी। रूई, चान्दी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

30 अग. को सूर्य पू.फा. नक्षत्र में आएगा। जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी, कपड़ा, रूई, सूत में तेजी बने। चाँदी में घटाबढ़ी रहे।

31 अग. को शुक्र सिंह राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा तथा शनि की दृष्टि से हटेगा। बाज़ार में कुछ जिन्सों/वस्तुओं में तेजी की बजाए मन्दी तथा जिन वस्तुओं में मन्दी चल रही होगी, उनमें तेजी बनेगी। सोना, ताम्बा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च आदि लाल रंग की वस्तुएँ घी, रसादि पदार्थों में तेजी बने। रुई, चान्दी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

☞ सितम्बर–3 सितं. को गुरु आश्लेषा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। गुरु पर शनि की विशेष दशम दृष्टि पहले ही चल रही है। प्रत्येक व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनेगा। घी, तेल, सरसों, सोयाबीन, हल्दी, ग्वार, सोने में अच्छी तेजी बनेगी।

4 सितं. को मंगल शनि को छोड़कर स्वराशि वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। जोकि धातुओं एवं व्यापारिक वस्तुओं में विशेष तेजीकारक है। परन्तु इस समय वृश्चिक राशि पर गुरु की विशेष पंचम दृष्टि रहने से तेजी बनकर अचानक मन्दे का झटका लग सकता है। व्यापारी लोग सावधान रहें, फिर भी गुड़, रुई, सोना, चान्दी, सोयाबीन, सरसों, तेल आदि में थोड़ी-बहुत तेजी अवश्य बनेगी। 5 सितं. को बुध हस्त में आकर गेहूँ, चना आदि अनाजों में कुछ मन्दी करेगा।

9 सितं. को मंगल अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। मंगल पर गुरु की दृष्टि चल रही है। रुई, कपास, गेहूँ, लाल-मिर्च, लाल-चन्दन, गुड़ आदि लाल रंग की वस्तुओं, सोने में तेजी बनकर शीघ्र पुनः मन्दी बनेगी।

11 सितं. को शुक्र पू.फा. नक्षत्र में आने से भी गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूँग, चना में कुछ मन्दी का रुख बनेगा।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आकर रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, कॉपर में तेजी बनेगी।

14 सितं. को बुध चित्रा नक्षत्र में आने से रुई, चांदी, अनाज, चना में तेजी होगी।

17 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर बुध एवं राहु के साथ मेल करेगा। जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, उन वस्तुओं में और अधिक तेजी करेगा। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल वस्तुएं तेज होंगी। चान्दी व शेयरों में भी पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

20 सितं. को बुध तुला राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली, क्रूड-आयल में घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा। इसी दिन गुरु आश्लेषा (2) में आने से भी व्यापारिक वस्तुओं में तेजी बनेगी।

22 सितं. को शुक्र उ.फा. में आने से गेहूँ, चना, बाजरा, घी, रुई में तेजी, सोना-चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

26 सितं., सोमवार को तुलाराशिगत चन्द्रकालीन चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत, सोने, गुड़, हल्दी में तेजी, चान्दी, घी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

27 सितं. को सूर्य हस्त नक्षत्र में आएगा। सूर्य-शुक्र-राहु का योग कन्या राशि में चल रहा है। गेहूँ, जौं, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सोने में तेजी बनेगी।

29 सितं. को बुध स्वाती तथा मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। रुई, घी, चान्दी, ग्वार, कपास, चना, गुड़ में मन्दी बनेगी।

☞ अक्तूबर–मासारम्भ में ता. 2 अक्तू. को शुक्र अस्त हो रहा है। रुई, अनाज, घी में थोड़ी मन्दी, सोना, ताम्बा, पीतल, जिस्त, हींग, केसर, सूरजमुखी, गुड़ में कुछ तेजी बनेगी।

3 अक्तू. को शुक्र हस्त नक्षत्र में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चान्दी, खाण्ड, गुड़, शक्कर में तेजी बनेगी। रुई, चान्दी, चावल में मन्दी बनकर फिर तेजी बने।

4 अक्तू. को तुला राशिगत एवं शनि युक्त बुध वक्री होगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोने, चान्दी, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बने। गेहूँ, चना, जौं, बाजरा, चावल में कुछ मन्दी बने। (ता. 4 से 8 के मध्य मुख्यत: सभी जिन्सों/वस्तुओं में तेजी का वातावरण रहेगा।)

9 अक्तू. को वक्री बुध चित्रा नक्षत्र में आने तथा गुरु आश्ले (3) में आने से रुई, चान्दी, अनाज, घी, ताम्बा में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर बुध-राहु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, सूत, सोना, चान्दी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, केसर, कपूर, लाल-मिर्च, शेयरों में तेजी बनेगी।

11 अक्तू. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से रुई, चान्दी में मामूली मन्दी बनकर धमाके की तेजी का झटका लगेगा। चना, शेयरों, घी में कुछ मामूली मन्दी बने।

13 अक्तू. को शुक्र भी चित्रा नक्षत्र में आकर सूर्य-बुध-राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना, चान्दी, घी, रुई, कपास, सोयाबीन, ग्वार, निक्कल में अच्छी तेजी बनेगी।

16 अक्तू. को वक्री बुध कन्या राशि में आकर सूर्य, शुक्र-राहु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, रुई, चान्दी, सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

17 अक्तू. को सूर्य तुला राशि में आकर शनि के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। यह योग भी तेजीकारक मालूम पड़ता है। गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, श्रीफल, सुपारी, लाल-मिर्च, ताम्बा, गुड़, सोयाबीन, क्रूयड-आयल में तेजी बनेगी। घी, चान्दी, रुई में मामूली मन्दी बनेगी।

18 अक्तू. को मंगल धनु राशि में आकर उच्चस्थ गुरु को विशेष दृष्टि से देखेगा। रुई में घटाबढ़ी होकर तेजी रहे। चान्दी, निक्कल आदि धातु, गुड़, हल्दी, बिनौला, सरसों, सोयाबीन, सरसों, घी, चना आदि सभी प्रकार के अनाजों में तेजी का बोलबाला रहेगा।

19 अक्तू. को शुक्र तुला राशि में आकर सूर्य एवं शनि के साथ योग करेगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ जिन्सों में मन्दी का वातावरण बनाता है, परन्तु हमारे विचारानुसार यहाँ मन्दी न बनकर व्यापारिक वस्तुओं, धातुओं में तेजी का वातावरण बनेगा। रुई, चान्दी, सोने, गुड़, खाण्ड, साफ्टवेयर शेयर्ज़, घी, कपास में तेजी बनेगी।

22 अक्तू. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चान्दी, चना, कपास, खल-बिनौला, सोने, रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

23 अक्तू. को वक्री बुध हस्त नक्षत्र में आने से व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का वातावरण बनेगा।

24 अक्तू. को सूर्य और शुक्र-दोनों स्वाती नक्षत्र में आकर एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएंगे। रुई, सूत, सन, रेशम, सोने, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल, खाण्ड में तेजी बनेगी।

25 अक्तू. को बुध मार्गी होने से चन्दन, सुपारी, नारियल, गेहूँ, जौं, चना, अनाज, रूई, सोना-चान्दी में तेजी बनेगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली में कुछ मन्दी बने।

28 अक्तू. को बुध चित्रा नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रुई, चान्दी, घी में तेजी बने।

☞ नवम्बर—मासारम्भ ता. 1 नवं. को शनि पश्चिम में अस्त होगा। सू.-शु.-श. का योग चल रहा है। रुई, सोने, शेयरों में मन्दी का रुख बनकर बाद में तेजी बने।

2 नवं. को शनि वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। इस पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। गेहूँ, चना, मसूर, तिल, तेल, सोयाबीन, गुड़, मूंगफली, रुई-चान्दी में अच्छी तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बन सकता है। इसलिए तेजी बनते ही मुनाफा काटकर निकल जाना चाहिए।

3 नवं. को गुरु आश्लेषा (4) में आने से व्यापारिक वस्तुओं में कुछ पुनः तेजी का वातावरण बने।

4 नवं. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य-शुक्र के साथ मेल करेगा। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम, गुड़, घी, ग्वार, मैंथा-आयल, गेहूँ में तेजी बनेगी। चान्दी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी। इसीदिन शुक्र के विशाखा में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाने से रुई, अनाजों में पहले मन्दा कर बाद में तेजी ले आएगा।

5 नवं. को मंगल पू.षा. नक्षत्र में आएगा। सोना, चांदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल, तेल, सरसों, मूँगफली में तेजी बनेगी। गेहूँ आदि में कुछ मन्दी बने।

6 नवं. को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आकर शुक्र एवं शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड में तेजी बने। अलसी, चान्दी में घटाबढ़ी होकर तेजी हो।

9 नवं. को बुध स्वाती में आने से रूई, घी, मूँग, सोने में मन्दी बने।

12 नवं. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। रुई, शेयर, चान्दी, अफीम में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी बने, गुड़, गेहूँ, जौं, उड़द, अलसी, मूँग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों में तेजी हो।

14 नवं. को शुक्र अनुराधा नक्षत्र में आने से गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, घी में मन्दी बने।

15 नवं. को राहु हस्त (4), केतु रेव. (2) में आएगा। इसी दिन बुध पूर्व में अस्त होगा। चना, अनाज, घी में मन्दी, रुई, सोने में घटाबढ़ी होकर अन्त में तेजी होगी।

16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि पड़ रही है। तेजी का विशेष योग होने पर भी गुरु की दृष्टि के प्रभावस्वरूप अधिक तेजी न बन पाएगी। रुई, ताम्बा, चान्दी, सोने, ताम्बा, क्रूड-आयल, ऊनी वस्त्रों, सोयाबीन, सरसों में तेजी बनकर बाद में मन्दी बन सकती है।

17 नवं. को बुध विशाखा में आकर रुई, घी में मन्दी करेगा।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चना, गेहूँ, चावल आदि धान्यों, सोना, चान्दी, घी, ताम्बा में तेजी बनेगी। अलसी, मिर्च, काली मिर्च में कुछ मन्दी बने।

22 नवं. को मंगल उ.षा. में आने से रुई, गेहूँ, ज़िंक, घी, तेल, सरसों, उड़द, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

24 नवं. को बुध वृश्चिक राशि में आकर सूर्य, शुक्र एवं शनि के साथ मेल करेगा। व्यापारिक वस्तुओं में विशेष उथल-पुथल होगी। घी, तेल, सरसों, रुई, सोने, चान्दी, मूँग, इलायची में तेजी बनेगी।

25 नवं. को शुक्र ज्येष्ठा में आने से गेहूँ, चना आदि अनाज कुछ तेज, सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग में मन्दी बनेगी।

26 नवं. को बुध अनुराधा में आने से भी सूत, सन, रुई, सोना, चान्दी में मन्दी बनेगी।

27 नवं. को मंगल मकर (उच्च) राशि में आकर गुरु को सप्तम दृष्टि से देखेगा। (समसप्तक)। इसी दिन शुक्र भी उदय होगा। रुई, सोना, चान्दी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी, ऊन में तेजी बनेगी। गेहूँ आदि अनाज में मन्दी बने।

30 नवं. शनि अनुराधा नक्षत्र में आएगा। शनि पर गुरु की विशेष दृष्टि चल रही है। रुई, कपास, लाल मिर्च, काली मिर्च, जीरा, केसर, चन्दन, कपूर में मामूली तेजी बनेगी।

☞ दिसम्बर—मासारम्भ ता. 2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा में आने से रुई, सोना, चांदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रुई में पहले मन्दी होकर बाद में तेजी बनेगी।

4 दिसं. को बुध भी ज्येष्ठा में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। जिन वस्तुओं/जिन्सों में तेजी चल रही होगी, उन वस्तुओं में तेजी को बल मिलेगा। घी, गुड़, खाण्ड, चावल, बैंकिंग, शेयर्ज़, बैंकिंग निफ्टी, मूँग में तेजी बनेगी।

5 दिसं. को शुक्र गुरु की दृष्टि से हटकर गुरु की राशि धनु में प्रवेश करेगा। इसी दिन शनि भी पूर्व में उदय होगा। गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न तथा चान्दी, सोना, ताम्बा आदि धातुओं, रुई, कपास में तेजी बने। लोहा, जिस्त, गुड़, खाण्ड, पैट्रोल में तेजी बने।

8 दिसं. को कर्क राशिगत गुरु वक्री होगा। मंगल की इस पर सप्तम दृष्टि है। घी, तेल, शक्कर, कपास, रुई, सोना, चान्दी, हल्दी में अच्छी तेजी से लाभ प्राप्त होगा।

10 दिसं. को मंगल श्रवण नक्षत्र में आने से भी गेहूँ, जौं, चना, तिल, सोना, चान्दी, रूई, कॉपर में तेजी बनेगी।

13 दिसं. को बुध धनु राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। रुई, कपास, सूत, चान्दी, बैंकिंग शेयर्ज़ में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी बने।

16 दिसं. को सूर्य धनु राशि में आकर बुध-शुक्र के साथ मेल करेगा। रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चान्दी में तेजी बनें। गेहूँ, आदि अनाज में कुछ मन्दी रहे।

21 दिसं. को बुध पू.षा. में आने से सोना, चान्दी आदि धातुओं, गेहूँ, चने में मन्दी बनेगी।

23 दिसं., मंगलवार को धनुराशिगत चन्द्र कालीन चन्द्रदर्शन होने से अन्न तथा अन्य वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख रहे। गुड़, सोना, चान्दी, सरसों, सोयाबीन, मूँगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

27 दिसं. को मंगल धनिष्ठा तथा शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आएंगे। राई, जौं, पीपल, सोना, चाँदी, ताम्बा, पीतल, जिस्त, लोहा तेज होंगे। गुड़, शक्कर, घी, खाण्ड, रुई में मन्दी बने।

29 दिसं. को शुक्र मकर राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इनका गुरु के साथ समसप्तक योग रहेगा। शेयर, अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, चना आदि सब अनाजों में तेजी बने। रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद पहले मन्दी, बाद में तेजी बने।

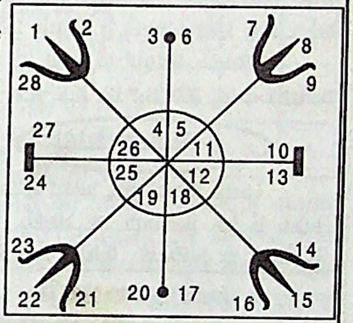
30 दिसं. को बुध उ.षा. में आने से अनाज, गेहूँ में घटाबढ़ी रहे।

31 दिसं. को बुध पश्चिम में उदय होने से रुई, कपास में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बने। तिल, चांदी, सोने, शेयरों में भी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

नोट—ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे। —सम्पादक

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का



आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।

➲ खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ? ☚

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं—

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है–

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे–गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक **'शिव मन्त्रावली'** में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल–सन् 2014–15 ई.

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2014–15 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	9–21	प्रातः 03/21 से दोपहर 15/21 तक
18 फरवरी	मीन	23–11	सायं 17/11 से अगले दिन प्रातः 5/11 तक
20 मार्च	मेष	22–27	सायं 16/27 से अगले दिन प्रातः 04/27 तक
20 अप्रैल	वृष	9–26	प्रातः 03/26 से दोपहर 15/26 तक
21 मई	मिथुन	8–29	20 मई की रात्रि 26/29 से अगले दिन दोप. 14/29
21 जून	कर्क	16–22	प्रातः 10/22 से रात्रि 22/22
22 जुलाई	सिंह	17–11	दोपहर 13/11 से रात्रि 23/11
23 अगस्त	कन्या	10–16	प्रातः 04/16 से सायं 16/16 तक
23 सितंबर	तुला	7–59	22 की रात्रि 25/59 से अगले दिन दोप. 13/59
23 अक्तूबर	वृश्चिक	17–27	दोपहर 13/27 से रात्रि 23/27 तक
22 नवम्बर	धनु	15–08	प्रातः 9/08 से रात्रि 21/08 तक
21 दिसम्बर	मकर	28–34	रात्रि 22/34 से अगले दिन प्रातः 10/34 तक
20 जन.(2015)	कुम्भ	15–14	प्रातः 9/14 से रात्रि 21/14 तक
19 फरवरी	मीन	05–21	18 की रात्रि 23/21 से 19 की प्रातः 11/21 तक
20 मार्च	मेष	28–16	19 की रात्रि 22/16 से अगले दिन 10/16 तक

क्रान्तिसाम्य काल–2014–15 ई.

यहां नीचे सूर्य-चन्द्र का सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। (महापात गणित द्वारा) विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि विवाहादि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ परन्तु मंत्र-यन्त्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ होती है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
26 जन.	12	34	27 जन.	04	43
6 फर.	17	51	7 फर.	02	47
20 फर.	02	49	20 फर.	09	28
3 मार्च	17	50	3 मार्च	23	12
16 मार्च	22	56	17 मार्च	04	40
28 मार्च	24	32	29 मार्च	05	32
10 अप्रै.	18	53	11 अप्रै.	01	20
23 अप्रै.	01	32	23 अप्रै.	8	06
5 मई	04	35	5 मई	15	41
5 अग.	8	48	5 अग.	20	29
16 अग.	15	05	16 अग.	22	39
29 अग.	24	41	30 अग.	7	23
10 सितं.	19	12	10 सितं.	24	24

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
23 सितं.	19	17	23 सितं.	25	21
6 अक्तू.	03	05	6 अक्तू.	8	15
18 अक्तू.	11	11	18 अक्तू.	18	20
30 अक्तू.	24	59	31 अक्तू.	8	33
11 नवं.	8	53	11 नवं.	25	06
(सन् 2015 ई.)					
29 जन.	16	44	30 जन.	10	52
11 फर.	17	15	11 फर.	26	01
23 फर.	04	01	23 फर.	10	05
8 मार्च	06	16	8 मार्च	12	45
20 मार्च	10	23	20 मार्च	15	20

वारुणी पर्व

28 मार्च	07 52	29 मार्च	04 52
(सन् 2015 ई.)			
18 मार्च	17 38	18 मार्च	22 28

–चन्द्रग्रहण–

भारत में दृश्य एकमात्र चन्द्रग्रहण (8 अक्तू., 2014 ई.) के पर्वकाल के लिए देखें पृ. 15–18

हनुमान जी के उपासना में पूजा, जप और पाठ तथा ध्वजा पताका का होना अत्यधिक आवश्यक है।

दीपावली पर्व

यन्त्र-मन्त्र साधना, अनुष्ठान के लिए 23 अक्तूबर,. गुरुवार को दीपावली पर्व में प्रदोष, निशीथ काल विशेष सिद्धिदायक होगा।

बाधा दूर कर शत्रु नाश करने हेतु मन्त्र

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्स्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यं अस्मद् वैरि विनाशनम्।।

–हे सर्वेश्वरि देवी ! आप तीनों लोकों की समस्त बाधाओं का हरण करने वाली हैं। आप मुझ शरणागत के शत्रुओं एवं वैरियों का नाश करें।

इस मन्त्र का सामर्थ्यानुसार 11, 21, 51 हज़ार पाठ करना चाहिए। दशमांश का हवन भी करें। काली मिर्च व सफेद सरसों अपने ऊपर सात बार घुमाकर यज्ञस्थली में फेंकने से व्यक्ति की सारी बाधाएं दूर हो जाती हैं। इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित नींबू को यज्ञ में जलाने से व्यक्ति के शत्रुओं का नाश होता है।

भय-निवारण के लिए मन्त्र

''अंजनीगर्भ सम्भूताय कपीन्द्र सचिवोत्तम रामप्रियनमस्तुभ्यं हनुमन् रक्ष रक्ष सर्वदा।''

रात्रि में 11 बार इस मन्त्र को पढ़कर तीन ताली बजाकर शयन करें। चोर भय, सर्प भय, दुःस्वप्न आदि का भय नहीं रहता।

मुकद्दमा आदि कार्यों में विजय के लिए मन्त्र

''हं हनुमते रूद्रात्मकाय हुँ फट्।

इस मन्त्र का श्री हनुमान जी के मन्दिर धूप-दीप आदि से विधिपूर्वक पूजन करके एक पैर पर खड़े होकर सवा लाख जप करने से निश्चित ही विजय प्राप्ति होगी।

खोये हुए व्यक्ति की वापसी के लिए आकर्षक-मन्त्र

''ॐ क्लीं कार्तवीर्यार्जुनो नाम राजा बाहु सहस्रवान यस्य स्मरण मात्रेण, गतं नष्टं च लम्यते, क्लीं ॐ कार्तवीर्यार्जुनाय नमः, अमुकं शीघ्रमानयानय स्वाहा।।''

जब किसी व्यक्ति का कोई प्रियजन रूठकर या किसी अन्य कारण से कहीं चला गया हो तथा उसका पता न चलता हो, तो उपरोक्त मन्त्र को उसके पहने हुए वस्त्र पर नाम लिखकर चरखे की माल के साथ लपेटकर उल्टा घुमाओ। उस व्यक्ति का कोई प्रियजन या सम्बन्धी उस चरखे को प्रतिदिन एक-आधा घण्टा नियमित घुमाएं, ऐसा करने पर एक सप्ताह के भीतर व्यक्ति घर वापिस आ जाएगा। यदि यह मन्त्र जातक के बिना धुले हुए कपड़े के बीच रखकर घट्टी में दबा दिया जाए, तो सौ कोस की दूरी से व्यक्ति तीन पखवाड़े के भीतर-भीतर घर वापिस आ जाता है। बाद में वस्त्र हटा दे।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

'ॐ नमो नील नील महानील दृष्टि देख कोख खोल, फले फूले, बेल बढे चतुराई चले इन (स्त्री का नाम) पेड़ रे फल फूल की जो हानि होवे, हनुमन्त की दुहाई गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

प्रयोग विधि–कुँआरी कन्या के हाथ से कते हुए सूत को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके और उसी सूत से सात गाँठ बनाकर स्त्री को पहना देने से गर्भ स्तंभन होगा। अर्थात् जिन स्त्रियों का गर्भ गिर जाता है, उन्हें पहनाने से गर्भ नहीं गिरेगा और गिरता हुआ रक्त भी बन्द हो जाएगा।

सड़क दुर्घटना निवारण हेतु यंत्र

मंत्र–अज्जनी सुत हनुमान रक्षतु रक्षतु स्वस्ति।।

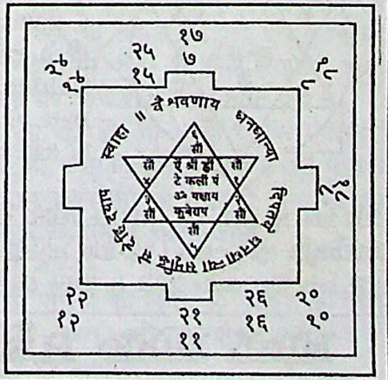
७	९	८
९	८	७
८	७	९

वर्तमान युग में वाहन दुर्घटना होना प्रायः साधारण बात हो गई है। वाहन दुर्घटना का मन में भय उत्पन्न होने पर बचने के लिए इस मन्त्र एवं यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। इस यन्त्र को एक कागज़ पर लिख लें और हनुमान जी का ध्यान करते हुए इस यन्त्र के नौ खानों में से एक पर अंगुली फिराते हुए अपनी अंगुली रखें। खाने पर जो अंक आये उस खाने पर अंगुली रखते हुए उतनी ही बार इस मन्त्र का जप करें। तत्पश्चात् चौकोण पर हरित की पत्ति घिसकर चन्दन की तरह लगाना चाहिए। अगरबत्ती एवं आक के सूखे पत्तों की धूप देवें। इस यन्त्र को लाल रंग के कपड़े में रखकर तावीज़ की तरह हाथ में बाँध लेना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से व्यक्ति को दुर्घटना होने का भय नहीं रहता व दुर्घटना से रक्षा होती है। यह यन्त्र एक मास तक प्रभावी रहता है। इस प्रकार दूसरे मास में दूसरा यंत्र बनाकर गाड़ी में रखें।

धन-सम्पदावर्द्धक कुबेर मन्त्र एवं यन्त्र

[वैवस्वत मन्वंतर में महर्षि पुलस्त्य हुए हैं। उनके पुत्र का नाम विश्रवण था। उसके कोशिनी व इडविडा नाम की दो पटरानियां थीं। कोशिनी की शूप्रणखा, रावण, कुम्भकर्ण व विभीषण चार सन्तानें थीं। इडविडा की एकमात्र सन्तान कुबेर था। इस प्रकार रावण व कुबेर सौतेले भाई थे।]

कुबेर का पेट विशाल, रंग काला, नाटा कद व दीखने में कुरूप हैं। मिठाई, मदिरा इनको अतिप्रिय हैं। जनश्रुति है कि धन प्राप्ति हेतु जहां अन्य प्रयत्न व उपासना निष्फल हो जाती हैं, वहाँ कुबेर की पूजा शीघ्र फलदायी होती है। धनत्रयोदशी, दीपावली पर इनकी पूजा का विशेष माहात्म्य है। कुबेर शिव के परम उपासक हैं। अतः शिव भक्त पर शीघ्र कृपा करते हैं। कुबेर उत्तर दिशा के स्वामी हैं। अतः उत्तर दिशा की ओर कुबेर का ध्यान करने वाले की मनोकामना निष्फल नहीं होती।



यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्यधिपतये। धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।।

उपरोक्त कुबेर मन्त्र धर्मस्थान या शिवमन्दिर में द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में अथवा दीपावली या नवरात्रों में संकल्पपूर्वक प्रारम्भ करके सवा लाख की संख्या में पाठ करना चाहिए। पूजन कुबेर जी की मूर्त्ति या कुबेर यन्त्र पर करना चाहिए। श्रीकुबेर मन्त्र का जप यदि गृह में करना हो तो पवित्र/शुद्ध आसन पर संकल्प करके प्रतिदिन नियमित रूप से उत्तराभिमुख होकर तीन अथवा एक माला का पाठ करना चाहिए।

सर्वप्रथम स्वयं शुद्ध जल लेकर मंत्रपूर्वक आचमन करें, फिर अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर जल का प्रोक्षण करते हुए पवित्रीकरण मन्त्र पढ़ें। मन्त्र प्रयोग से पूर्व गणेश पूजन षोडशोपचार सहित करें। फिर धनाधिपति कुबेर जी का आवाहन मन्त्र पढ़ें–

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्य देहं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर। इहागच्छ, इह तिष्ठ कुबेराय नमः, कुबेरम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

विनियोग– **अस्य श्रीकुबेर मन्त्रस्य विश्रवा ऋषिः, बृहती छन्दः।**
शिवमित्र धनेश्वरो देवता, ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः

ऋष्यादिन्यास– **ॐ विश्रवऋषये नमः। शिरसी।। वृहती छन्दसे नमः। मुखे।। शिवमित्र धनेश्वर देवतायै नमः हृदये।। विनियोगाय नमः, सर्वांगे।।** ***हृदयादि–न्यास–*** **यक्षाय हृदयाय नमः, कुबेराय शिरसे स्वाहा, वैश्रवणाय शिखायै वषट् धनधान्यधिपतये कवचाय हुम्, धनधान्य समृद्धिं मे नेत्रत्राय वौषट्, देहि दापय स्वाहा अस्त्राय फट्।**

करन्यास– **यक्षाय अंगुष्ठाभ्यां नमः, कुबेराय तर्जनीभ्यां नमः, वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां नमः, धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां नमः, धनधान्यसमृद्धिं मे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, देहि दापय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।**

जप से पूर्व कूबेर जी की मूर्त्ति या कुबेर यन्त्र को मन्त्रपूर्वक पंचामृत (दूध, दही, शहद, घी, शर्करा) से स्नान करावें। फिर उस पर कुछ दूध एवं गंगाजल मिश्रित जल में डालकर बाद में स्वच्छ वस्त्र से साफ करके पुष्पासन देकर प्रतिष्ठित करें।

पंचामृत स्नान मन्त्र– पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

फिर निम्न लघु मंत्र से गंगाजल मिश्रित जल, पुष्प, अक्षत, रोली, चन्दादि चढ़ावें–

ॐ कुबेराय नमः। दिव्य गंगाजल मिश्रितं शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।।

फिर निम्न सरल मन्त्र से यथालब्धोपचार से पूजन कर प्रार्थना करें–

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीकुबेराय नमः, धूप–दीपदर्शयामि, पुष्पाक्षतानि सहित पूजयामि, नैवेद्यं, ऋतु फलानि, चन्दनं, द्रव्य दक्षिणां च समर्पयामि।।

उपरोक्त वाक्य पढ़कर मूर्त्ति/यन्त्र पर पुष्प, अक्षत चढ़ाकर जल का प्रोक्षण करें, फिर उस पर कुछ मिष्ठान्न, फल, पुष्प, अक्षत, रोली, चन्दन एवं धनादि चढ़ावें।

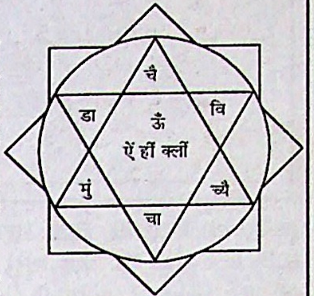
आर्थिक उन्नति, समृद्धि, ऐश्वर्य एवं वैभव प्राप्ति हेतु यह मन्त्र अमोघ है। एक लाख जप करके दशांश की आहुति काले तिलों से करनी चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध होने पर व्यक्ति का चहुँमुखी विकास होता है तथा लक्ष्मी स्थायी रूप से उसके घर में निवास करती है। पूजा के अन्त में महेश्वर को प्रार्थना करनी चाहिए–

''ॐ धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च।
धनधान्य समृद्धिं मे कुरुनाथ महेश्वर।।

इस प्रकार प्रार्थना कर पूर्व पूजित हल्दी की 2 गांठें, धनिया, कमलगट्टा, साबुत सुपारी, लौंग, केशर, दूर्वादि द्रव्यों से युक्त (आपूरिल) थैली गल्ले या तिजोरी में रखें।

विदेश यात्रा के लिए कुछ सफल प्रयोग

(1) शुक्ल पक्ष के मंगलवार के दिन एक छोटी शीशी में शहद भरकर यह मन्त्र तीन बार पढ़कर किसी एकान्त स्थान में भूमि में गड्ढा खोदकर गाड़ देवें। मन्त्र–'' **ॐ भूमिपुत्राय नमः, ॐ भूमि नन्दनाय नमः, ॐ सर्वकामफल प्रदाय नमः॥**'' मंत्र पढ़ने के बाद शुद्ध पानी के 3 बार छींटें दे देवें।



(2) प्रस्तुत यंत्र को नवरात्रों में अथवा अक्षय तीज या गुरुपुष्य योग में भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही एवं अनार की कलम से लिखकर पंचोपचार विधि से 'सर्वमंगल मांगल्ये....' आदि मन्त्रों से पूजा करके। माला '**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे**' 31 दिन तक निरन्तर करके 9 कन्याओं का पूजन करके प्रसाद बांटे तो विदेश यात्रा में पड़ने वाले विघ्न दूर होंगे।

(3) सुन्दरकाण्ड का पाठ–किसी शुक्ल पक्ष के मंगलवार अथवा अन्य सिद्ध मुहूर्त्तों से प्रातः स्नानादि के बाद संकल्पपूर्वक श्री सुन्दरकाण्ड का पाठ निरन्तर 108 दिन (बिना क्रम तोड़े) तक करना शुभ होगा। पाठारम्भ वाले मंगलवार से हर मंगलकर को श्रीहनुमान चालीसा का भी पाठ करके श्रीहनुमान मंदिर में मिष्ठान्न युक्त प्रसाद बच्चों में बांट देवें। प्रतिदिन पाठ के बाद निम्न चौपाई भी पढ़ लेवें तो शीघ्र लाभ होगा–

पवनतनय बल पवन समाना। बुद्धि विवेक विग्यान निधाना।
कवन सो काज कठिन जग माही। जो नहि होइ तात तुम्ह पाही॥ कि. का.

—कोर्ट–कचहरी में विजय प्राप्ति यन्त्र—

इस यंत्र को चांदी के पत्रे अथवा भोजपत्र पर रविपुष्य, गुरुपुष्य, सायन संक्रान्ति, हस्त, मूल नक्षत्र कालीन अथवा दीपावली/ग्रहण के दिन सू.उ. के पश्चात् तथा सूर्यास्त से पूर्व खुदवाकर प्रतिष्ठा कर प्रतिदिन पूजन करें तो कोर्ट–कचहरी आदि विषय में विजय प्राप्त होने की प्रबल संभावना होती है। यन्त्र को अपनी जेब में रखें।

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

पूजन मन्त्र– **''ॐ नीली–नीली, महानीली (शत्रु पक्ष/जज का नाम)**
जीभि तालू सर्व खिली, सही खिलो तत्क्षणाय स्वाहा॥''

व्यापारिक सफलता का मन्त्र

श्रीशुक्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो समुद्र की दुहाई, ऋद्धि–सिद्धि खावो मीट तो नौ नाथ चौरासी की दुहाई।

साधक व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मन्त्र का 108 बार उच्चारण करके दुकान या संस्थान खोले और व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करे तो उस दिन बिक्री बढ़ती है अर्थात् व्यवसाय अच्छा होता है, जिससे धन की प्रवाह अच्छा होता है। इस मन्त्र को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नित्य दुकान खोलने से पहले मन्त्र का एक माला जप करना आवश्यक है। व्यापारिक सफलता से धन लाभ होना स्वाभाविक है।

श्री बगुलामुखी देवी का मन्त्र ('शत्रुविजयी मन्त्र')

श्री बगला महाविद्या की उपासना गुरु के सान्निध्य में रहकर सतर्कता, इन्द्रियनिग्रहपूर्वक सफलता की प्राप्ति होने तक प्रयत्नपूर्वक करते रहना चाहिए।

आपका विरोधी अथवा शत्रु आपको अन्यायपूर्वक तंग कर रहा हो अथवा राजकीय रुकावटों के कारण उपयुक्त प्रमोशन न मिल पा रहा हो अथवा व्यवसाय में गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने का यत्न करते हों अथवा आपको अनावश्यक रुपेण, झगड़े आदि में फंसाया जा रहा हो तो निम्न श्री बगुलामुखी मन्त्र विशेष सहायक सिद्ध होता है।

साधक को गुरु से बगला मन्त्र का उपदेश ग्रहण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक देवीमन्दिर में, पर्वतशिखर पर, शिवालय में, गुरु के समीप या जैसी सुविधा हो पीताचार से बगलामहामन्त्र का पुरश्चरण करना चाहिए। महाविद्या बगुलामुखी का ३६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है–

''ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं।
स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा॥''

मन्त्र के जपादि के विषय में बगलापटल (सिद्धेश्वर तन्त्र) में विशेष विधान बताए हैं, जो इस प्रकार हैं–

पीताम्बरधरो भूत्वा पूर्वाशाभिमुखः स्थितः। लक्षमेकं जपेन्मन्त्रं हरिद्राग्रन्थिमालया॥
ब्रह्मचर्यरतो नित्यं प्रयतो ध्यानतत्परः। प्रियङ्गु कुसुमेनापि पीतपुष्पैश्च होमयेत्॥

बगला के जप में पीले रंग का विशेष महत्त्व है। जपकर्त्ता को पीला वस्त्र पहनकर हल्दी की गाँठ की माला से जप करना चाहिए। देवी की पूजा और होम में पीले पुष्पों, प्रियङ्गु, कनेर, गेंदा आदि के पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए। शुचिर्भूत हो पीले कपड़े पहनकर साधक पूर्वाभिमुख बैठकर ही जप करें। उसे ब्रह्मचर्य का पालन अनिवार्यतः करना चाहिए। जप के पूर्व पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आसनशुद्धि, भूशुद्धि, भूतशुद्धि, अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए। जप संख्या एक लाख बतलाई गई है। विशेष बात यह बताई है कि प्रतिदिन जप के अन्त में दशांश होम पीले पुष्पों से अवश्य करना चाहिए।

विनियोग– 'ह्लीं ॐ अस्य श्रीबगुलामुखीमन्त्रस्य नारद ऋषिः,
बृहती छन्दः, बगुलामुखी देवताअभीष्टसिद्धयर्थे जपे विनियोगः।'

अङ्गन्यास–'ॐ ह्लीं हृदयाय नमः। ॐ बगलामुखी शिरसे स्वाहा। ॐ सर्वदुष्टानां शिखायै वषट्। ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय कवचाय हुम्। ॐ जिह्वां कीलय नेत्रत्रया वौषट्। बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा अस्त्राय फट्।'

महाविद्या बगुलामुखी का ध्यान निम्नलिखित है, जो जप से पूर्व करणीय है–

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं, हेमाभाङ्गरुचिं शशाङ्कमुकुटां सक्चम्पकस्रग्युताम्। हस्तैर्मुद्‌गरपाशवद्धरसनाः सम्बिभ्रतीं भूषणैः, व्याप्त बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये॥

दुर्लभ बीसा यन्त्र प्रयोग

अष्टगन्ध की स्याही* अथवा शुद्ध सिन्दूर को शुद्ध घी (गौ का), इसके अभाव में मीठा तेल में मिलाकर अनार अथवा तुलसी की लकड़ी का कलम (प्रमाण 8 अंगुल) से मकान अथवा दुकान की पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख दीवार पर दीपावली के शुभ पर्व पर** प्रदर्शित बीसा यंत्र लिखें। इस यंत्र को लिखने से पहले उस स्थान को गाय के गोबर से पवित्र कर लेना चाहिए। गाय के गोबर में गंगाजल भी मिला लेना चाहिए। इस यंत्र को लिखने से ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि और धन की वृद्धि होती है। अचला भगवती लक्ष्मी एक वर्ष तक वहाँ निवास करती है।

	ॐ	ऐं	ॐ	
ॐ	१	९	१०	ॐ
श्रीं	१४	७ ॐ २ ६ ८	६	ह्रीं
ॐ	५	११	४	ॐ
	ॐ	क्लीं	ॐ	

यंत्र लिखने के पश्चात् 卐 (स्वस्तिक), ॐ 'ऐश्वर्य- लाभ', 'श्री गणेशाय नमः', 'श्री महालक्ष्म्यै नमः', 'श्री सरस्वत्यै नमः', 'श्री महाकाल्यै नमः', 'श्री विष्णवे नमः', 'श्री शिवाय नमः', 'श्री कुबेराय नमः' आदि मङ्गलवाक्य भी शुद्ध घी एवं मीठा तेल मिश्रित सिंदूर द्वारा लिख देने से उस स्थान से दुःख-दरिद्रता का नाश होता है। ये यंत्र और मंङ्गलमन्त्र कष्ट निवारक, पापनाशक और कल्याणप्रद हैं। लाभ उठाइये।

कुछ उपयोगी टोटके

(1) शीघ्र विवाह के लिए–(*i*) विवाह के इच्छुक युवक या युवती को प्रत्येक बृहस्पतिवार को स्नान करने वाले जल में एक चौथाई चम्मच हल्दी डालकर स्नान करना चाहिए। हल्दी के स्थान पर केसर का उपयोग भी किया जा सकता है। यदि ऐसे युवक या युवती बृहस्पतिवार को गाय को भोग (आटे के दो गोलों पर थोड़ी सी हल्दी लगाकर, थोड़ा गुड़ तथा चने की गीली दाल) दें तो उनके विवाह का योग शीघ्र बन सकता है।

(*ii*) मंगली होने के कारण विवाह में बाधा आ रही हो, तो कन्या प्रत्येक मंगलवार 'श्रीमंगल चंडिका स्तोत्र' (देखें वि. संवत् २०६६ की पंचांगदिवाकर अथवा हमारी पुस्तक 'अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय') का पाठ करें तथा लाल मूंगे की माला से निम्न मंत्र का जप करें- **'ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं सर्व पूज्ये देवि मंगल चंडिके हूँ फट् स्वाहा।'**

इस मंत्र जाप के साथ सुन्दरकाण्ड का पाठ भी करें।

(*iii*) विवाह सम्बन्ध बनते-बनते टूट रहे हो, तो पूर्णिमा को किसी भी वटवृक्ष की 108 परिक्रमा करने से विवाह की विघ्नता दूर हो जाती है। गुरुवार को वट, पीपल एवं केले के वृक्ष पर जल अर्पित करने से विवाह की बाधा टूट हो जाती है।

(2) दाम्पत्य सुख के लिए–पति-पत्नी में परस्पर तनाव एवं झगड़ा रहता हो तथा स्त्री सदेव पति से प्रताडित होती रहती हो, तो वह बेल के तीन पत्तों पर अपने पति का नाम गोरोचन में काली हल्दी का घोल बनाकर मोर पंख की कलम से लिखे। फिर उन्हें चाँदी की डिब्बी में भरकर, उसे अपने दाएं हाथ की हथेली में रखें और निम्न मंत्र का मन ही मन 11 बार, 11 दिन तक जाप करें–'**ॐ नमः शिवाय शंकराय**'

जब 11 दिन पूरे हो जाएं, तब डिब्बी को उसी बेल वृक्ष को समर्पित कर आए, जिसके वे तीन पत्ते लिए थे। कुछ ही दिनों में पति के व्यवहार में परिवर्तन होगा।

(3) सन्तान प्राप्ति के लिए–*(i)* चार बृहस्पतिवार को 900 ग्राम जौं चलते पानी में बहाएं। बृहस्पतिवार का व्रत रखना भी शुभ होगा। राधाकृष्ण जी के मन्दिर में शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार या जन्माष्टमी को चाँदी की बांसुरी चढ़ाएं। लाल या भूरी गाय को आटे का पेड़ा या पानी दें। उपाय श्रद्धापूर्वक करने से मनोकामना पूर्ण होगी।

(ii) सन्तान प्राप्ति के लिए कृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर श्वेत वस्त्र धारण करें। पत्नी लाल वस्त्र पहने। दोनों उपवास रखें और घर के पूजा-स्थल में श्रीकृष्ण के बालरूप का चित्र व सन्तान गोपाल यन्त्र को स्थापित करें। घी का दीपक और अगरबत्तियाँ जलाएं तथा एक सेब, मक्खन, शहद, शिवलिंगी के 6 बीज और नागकेशर के 21 दाने एवं दोनों हाथों पर बांधने के लिए लाल रेशमी धागे अर्पित करें। फिर तुलसी की माला से '**ॐ कृष्णाय विद्महे दामोदराय धीमहि तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।**' की एक माला जाप करें। जाप के बाद सन्तान प्राप्ति के लिए निवेदन करें। लाल धागों को पत्नी बाएं और पति दाएं हाथ में बांध ले और भोग को प्रसाद रूप में ग्रहण करें।

(4) विवाह बाधा दूर करने के उपाय–मंगलवार को प्रातः सूर्योदयकाल में एक सूखा नारियल लें। उसमें तीन सौ ग्राम बूरा अर्थात् पिसी हुई शक्कर तथा ग्यारह रुपये की पंचमेवा मिला लें। उस नारियल में एक इतना बड़ा छिद्र करें, जिसमें आसानी से उंगली जा सके।

उस नारियल में पिसी शक्कर व पंचमेवा मिलाकर भर दें और किसी पीपल वृक्ष के नीचे थोड़ा गड्ढा कर दबा दें। जो शक्कर बचे, उसे गड्ढे के ऊपर ही डालकर एक पत्थर रख दें, जिससे कोई पशु उसे निकाल न पाए।

इस क्रिया को आप लगातार सात मंगलवार करें। किसी भी कन्या के लिए लगातार सात मंगलवार नहीं हो सकते, क्योंकि मासिक होने का समय आ जाता है, किन्तु इसमें इसके अस्वस्थ होने की कोई समस्या नहीं है। इसलिए जब माहवारी की समस्या आए तो उपाय रोक दें और शुद्ध होने पर पुनः आरम्भ कर दें। इस प्रयोग में यह सावधानी रखनी पड़ती है कि सोमवार की रात्रि से मंगलवार को प्रयोग होने तक पानी नहीं पीना है और न ही किसी से कोई बात ही करनी है। सात मंगल होने के बाद चमत्कार स्वयं ही दिखाई देने लगेगा और कहीं न कहीं संबंध हो जाएगा।

(5) पति-पत्नी में गृह-क्लेश दूर करने के उपाय–पत्नी द्वारा किया जाने वाला एक सशक्त टोटका है जिसको अपनाने से दाम्पत्य में क्लेश दूर होता है। शुक्लपक्ष के प्रथम गुरुवार से आरम्भ करें और लगातार तीन दिन तक करें। इस उपाय में आपको तीन स्थान पर सुहाग सामग्री (सिन्दूर, चूड़ियां, मेहंदी, वस्त्र, महावर व नगद दक्षिणा आदि) की आवश्यकता होगी जो आप अपनी आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार प्राप्त कर सकती हैं। सामग्री में कोई वस्त्र तथा सिन्दूर अवश्य होना चाहिए। अब आप गुरुवार को दोपहर 2 बजे के बाद स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें। एक थाली में सुहाग सामग्री लेकर किसी सुहागिन ब्राह्मण वर्ण की स्त्री को दान कर दें। फिर चरणस्पर्श कर कुछ नगद दक्षिणा देकर उनके हाथ से सिन्दूर की डिब्बी वापस ले लें। डिब्बी को किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। अगले दिन सायंकाल लगभग 5 बजे स्नान कर हल्के रंग के वस्त्र पहनकर किसी क्षत्रिय वर्ण की सुहागिन को सुहाग सामग्री दें तथा फिर वही क्रिया करें अर्थात् चरण स्पर्श कर कुछ नगद धन देकर सिन्दूर की डिब्बी वापस ले लें। इस डिब्बी को भी पहले वाली डिब्बी के साथ रख दें। अब अगले दिन अर्थात् शनिवार को अंधेरा होने के बाद स्नान कर नीले रंग के वस्त्र धारण करें और सुहाग सामग्री का दान किसी निम्नवर्ग की सुहागिन को करें। फिर वही क्रिया करें। इस प्रकार से आपके पास तीन सिन्दूर की डिब्बियां हो जाएंगी। अब आप तीनों डिब्बियों का सिन्दूर एक साथ मिला लें और नियमित रूप से इससे अपनी मांग भरें। कुछ ही दिन में आप परिवर्तन अनुभव करेंगी क्योंकि आप पर देवगुरु बृहस्पति, शुक्रदेव तथा शनिदेव की कृपा है। देवगुरु की कृपा से आपके पति को सद्बुद्धि आएगी, शुक्रदेव की कृपा से आपके दाम्पत्य जीवन में सुख आएगा। शनिदेव की कृपा से आपके परिवार में गुप्त विरोधी निष्क्रिय होंगे।

* यदि आपके पति किसी भी सदस्य के सामने आपका अपमान करते हैं तो आप यह उपाय अवश्य करें–शुक्लपक्ष तथा कृष्णपक्ष चतुर्दशी को किसी भी निकट के शिव मन्दिर में जाकर दूध से शिवलिंग को स्नान कराएं तथा साबूदाने की खीर का नैवेद्य अर्पित करें। उपरोक्त उपाय आप अपने पति की अधिक क्रोध करने की आदत समाप्त करने के लिए भी कर सकती हैं।

मेषादि राशियों का ग्रहगोचर फलादेश-2014 ई०

आगे बारह राशियों का मासिक एवं वार्षिक फल ग्रहों की गोचर स्थित्यनुसार लिखा गया है। अपने जीवन सम्बन्धी और अधिक जानकारी एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-विद्या, व्यवसाय, नौकरी, विवाह, सन्तान, विदेश गमनादि प्रश्नों सम्बन्धी विशेष फलादेश तथा तत्सम्बन्धी समस्याओं के विशेष उपाय जानने के लिए शुद्ध एवं बड़ी जन्मपत्री का होना आवश्यक है। हमारे कार्यालय से शुद्ध एवं विस्तृत हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जातक/जातिका का नाम, जन्म-समय, जन्म स्थान (Place & Time of Birth), माता-पिता एवं व्यवसाय आदि का विवरण तथा अग्रिम रूप में पूरी फीस भेजें। मध्यम विस्तृत जन्मपत्री हस्तलिखित फलादेश सहित की फीस 901, अधिक बृहद् विस्तृत की 1250 रु. से 2100 रुपए। सामान्य मध्यम जन्मपत्री की 501 रु., वार्षिक वर्षफल, उपायों आदि सहित की फीस 501 रु.। विदेश में उत्पन्न जातक की फीस 31 पौंड अथवा 51 डालर होगी। डाक व्यय 50 रु. जोड़कर भेजें, फीस एडवांस M.O. या ड्राफ्ट द्वारा अग्रिम इस पते पर भेजें--पं. विवेक शर्मा, सुपुत्र पं. पन्ना लाल शर्मा, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर-8 (पंजाब), फोन-0181-2457959

भविष्यफल-जनवरी-सन् 2014 ई.

मेष-राशि पर केतु का संचार एवं शनि की नीच दृष्टि होने से घरेलू तथा व्यवसायिक उलझनें बनी रहेंगी। क्रोध अधिक, आय सीमित तथा खर्च अधिक होगा। परन्तु मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से किसी तरह निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। वाहनादि सावधानीपूर्वक चलाएं। चोटादि का भय रहेगा।

वृष-ता. 6 तक राशिस्वामी भाग्य स्थान में होने से सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। ता. 6 से वक्री शुक्र अष्टमस्थ होने से बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, कार्य-क्षेत्र में अकस्मात् उलझनों का सामना रहेगा। स्वभाव में चिड़चिड़ापन, मन-अशान्त तथा स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

मिथुन-राशि पर वक्री गुरु का संचार तथा राशिस्वामी बुध की स्वगृही दृष्टि भी होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में उलझनों के बावजूद धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। परिश्रम और पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होगा। ता. 8 से बुध अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क-शनि की ढैय्या होने से वृथा मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें रहेंगी। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। परिवार में कुछ मन-मुटाव, धन सम्बन्धी परेशानी एवं धनागमन के साधनों में अड़चनें पैदा होंगी। ता. 14 से सूर्य की मैत्री दृष्टि होने से अड़चनों के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे।

सिंह-मासारम्भ में राशिस्वामी सूर्य, चंद्र-बुधादि ग्रहों के साथ पंचम भाव में हैं। विद्या एवं कार्य-व्यवसाय में नवीन क्षेत्रों में धन नियोजन करने की योजना बनेगी। ता. 14 के बाद सूर्य छटे भाव में होने से कुछ असमंजस के कारण लाभ मार्ग में व्यवधान एवं विलम्ब उत्पन्न होगा।

कन्या-शनि साढ़ेसति का प्रभाव तथा मंगल का संचार होने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ उत्पन्न होंगी। ता. 8 से बुध भी पंचम भाव में होने से सोची हुई योजनाओं में रुकावटें एवं विलम्ब पैदा होंगे। गृह कलह के कारण मानसिक तनाव एवं उलझनें बढ़ेंगी।

तुला-राशि पर शनि व राहु का संचार होने से शुभाशुभ दोनों प्रकार के मिश्रित फल प्राप्त होंगे। व्यवसायिक क्षेत्रों में धन लाभ व उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न, धन का खर्च अधिक एवं परिवारिक परेशानी रहेगी।

मेष राशि (Aries)

चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ



ग्रह गोचर-वर्षारम्भ में 11 जुलाई के मध्य मेष राशि पर केतु का संचार रहेगा। शनि की अशुभ दृष्टि 1 नवं. तक रहेगी। वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग तनाव एवं उलझनों से भरा होगा। मंगल की दृष्टि होने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे, परन्तु आर्थिक परेशानियाँ भी बढ़ेंगी। कठिनाई से आय के साधन बनेंगे। 15 सितं. से 26 नवं. तक आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। 27 नवं. के बाद मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आमदन के स्रोत बनेंगे। हर शुक्रवार को श्री सूक्त का पाठ करना शुभ होगा।

वृश्चिक-राशिस्वामी मंगल कन्या में संचार तथा शनि-साढ़ेसति के प्रभावस्वरूप बनते कामों में विघ्न, व्यवसाय में विघ्न तथा घरेलू उलझनों के कारण मन चिन्तित रहेगा। वृथा दौड़धूप अधिक एवं कठिन हालात के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

धनु-मासारम्भ में सूर्य-चंद्र-बुध आदि ग्रहों का संचार, गुरु की शुभ तथा मं.-श. की अशुभ दृष्टियां पड़ रही हैं। परिवार में शुभ एवं मंगल कार्य पर धन का खर्च होगा। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों में मेल-जोल बढ़ेगा। शनि की दृष्टि होने से बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव और धन का अपव्यय होगा।

मकर-इस राशि पर शुक्र का संचार तथा राशिस्वामी शनि राहु युक्त दशम भाव में है। जिससे निर्वाह योग्य आय के साधन होने पर भी खर्च अधिक रहेंगे। स्थान परिवर्तन एवं यात्रादि के योग बनेंगे। वृथा मानसिक तनाव एवं दौड़धूप अधिक रहेगी। ता. 14 से माघ माहात्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

कुम्भ-राशिस्वामी शनि भाग्य स्थान में राहु युक्त होने से घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धन का खर्च भी अधिक होगा। यात्राएँ भी होंगी। गुरु की दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में व्यस्तता बढ़ेंगी।

मीन-राशि स्वामी गुरु चतुर्थ भाव में एवं शनि की ढैय्या का भी प्रभाव रहने से अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनेंगे। भूमि, मकान एवं वाहन सम्बन्धी परेशानियां पैदा हों। परिवार में व्यर्थ भागदौड़ और खर्च की अधिकता रहेगी।

भविष्यफल-फरवरी-सन् 2014 ई.

मेष-ता. 4 से मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ सामान्य रहेगा। मं.-श. की संयुक्त दृष्टि होने से व्यर्थ की भागदौड़ व खर्च अधिक रहे। गुप्त-चिन्ता, मानसिक तनाव एवं चोटादि का भय रहेगा। गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें। ता. 27 को श्रीमहाशिवरात्रि का व्रत करना शुभ होगा।

वृष-शुक्र अष्टमस्थ होने से विघ्न-बाधाओं के रहते धन प्राप्ति के साधन निर्वाह योग्य बनते रहेंगे। परन्तु खर्च अत्यधिक होने से परेशानी होगी। व्यवसाय में बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य में खराबी, गुप्त चिन्ता, वृथा भागदौड़, आलस्य में वृद्धि एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों में संघर्ष का सामना रहे।

मिथुन–गुरु का संचार तथा राशिस्वामी बुध भाग्य स्थान पर होने से लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। कारोबार में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। व्यवसाय में परिवर्तन की योजना भी बनेगी। ता. 18 से बुध पुनः अष्टमस्थ होने से आय कम व खर्च अधिक होगा। वाहनादि से चोटादि का भय, स्वभाव में तेजी रहे।

कर्क–संघर्षमयी परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति होगी। मानसिक चिन्ताएँ व फिजूलखर्ची बढ़ेगी। भागदौड़ अधिक, व्यापार-नौकरी में तनाव रहे। परिवार की तरफ से शुभ समाचार प्राप्त होगा। मासान्त में विशेष परिश्रम और भागदौड़ से अभीष्ट कार्य में सफलता के योग हैं।

सिंह–नई योजना को कार्यरूप देने में विलम्ब होगा। परिश्रम और संघर्ष के पश्चात् धन लाभ होगा। नए कार्यक्षेत्र में धन लगाने की योजना बनेगी। आय के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बढ़ेगा। मानसिक तनाव और आवेश से बचें और बुद्धि-विवेक से कार्य करें।

कन्या–ता. 18 तक बुध षष्ठस्थ संचार करने से अत्यधिक संघर्ष के बावजूद धन लाभ अल्प रहे। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। उदर-विकार एवं आँखों में कष्ट का भय है। ता. 18 से वक्री बुध पुनः पंचमस्थ होने से धन लाभ के अवसर, सोची हुई योजनाओं में कुछ प्रगति और शुभ कार्यों पर खर्च होगा।

तुला–ता. 4 से इस राशि पर मंगल-शनि-राहु का संचार रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक होगी। अचानक खर्च भी बढ़ेंगे। वाहनादि सावधानीपूर्वक चलाएँ। दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा। राशिस्वामी शुक्र ता. 26 तक धनु राशि में होने से स्वास्थ्य ढीला, भाई-बन्धुओं से मतभेद एवं वृथा भागदौड़ रहेगी।

वृश्चिक–राशिस्वामी मंगल ता. 4 से शनि-राहु युक्त द्वादश संचार कर रहा है। जिससे बनते कामों में विघ्न और विलम्ब होगा। नौकरी एवं व्यवसाय में विभिन्न अड़चनों का सामना रहेगा। चोटादि का भय रहे। परन्तु ता. 23 के पश्चात् धर्म-कर्म में रूझान, कारोबारी क्षेत्र में कुछ लाभ होगा। किन्तु सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी।

धनु–इस राशि पर गुरू की स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ, स्त्री एवं संतान सुख मिलेगा। उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्बन्ध बनेंगे। परन्तु शनि की अशुभ दृष्टि के कारण प्रत्येक कार्य में अड़चनें, अनावश्यक खर्च रहेंगे। ता. 20 के पश्चात् मानसिक तनाव, परिवारिक उलझनें एवं विदेशी कार्यों में विघ्नों के संकेत हैं।

मकर–ता. 12 तक सूर्य का संचार रहने से क्रोध अधिक, आय कम तथा खर्च की मात्रा भी अधिक रहेगी। परन्तु ता. 4 से मंगल की उच्चदृष्टि होने से भूमि-सवारी का सुख मिलेगा। परिवार में शुभ कार्य पर खर्च होगा। प्रतिष्ठित महानुभावों से सम्पर्क लाभकारी रहेगा। परन्तु ता. 23 से स्वास्थ्य ढीला, आँखों में कष्ट एवं वृथा दौड़-धूप अधिक होगी।

कुम्भ–ता. 4 से मंगल राशिस्वामी शनि व राहु के साथ योग करेगा, जिससे व्यवसाय में विघ्न बाधाएँ तथा आय में कमी के योग हैं। मानसिक तनाव व घरेलू उलझनें रहेंगी। ता. 13 से सूर्य का संचार इस राशि पर होने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी। आकस्मिक खर्च भी बढ़ेंगे। गुरू की दृष्टि के कारण धर्म-कर्म में रूझान अधिक होगा।

मीन–शनि की ढैय्या एवं राशिस्वामी गुरू का संचार चतुर्थ भाव में होने से मासारम्भ में अत्यधिक संघर्ष के बावजूद कुछ कार्यों में सफलता और कुछ बनते

वृष राशि (Taurus)

इ, उ, ए, ओ, व, वि, वे, वो



ग्रह गोचर– वर्षारम्भ ता. 6 जन. से 31 जन. तक राशि स्वामी शुक्र वक्री होकर अष्टमस्थ होने से बनते कार्यों में अड़चनें धन-हानि तथा खर्चों की अधिकता रहेगी। 26 फर. से 31 मार्च तक शुक्र भाग्यस्थ में होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 27 अप्रै. से शुक्र उच्चस्थ (मीन) होने से अकस्मात् धन लाभ के चांस बनेंगे, परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे। वाहनादि एवं मनोरंजन कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। 25 सितं. से 18 अक्तू. तक शुक्र कन्या में होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियां बनेंगी। नीच व्यक्ति द्वारा हानि होने का भय। 5 दिसं. से शुक्र अष्टम (धनु) भावस्थ होने से आय सम्बन्धी चिन्ता तथा खर्च बढ़ेंगे। शिव सहस्रनाम का पाठ करना शुभ होगा।

मिथुन राशि (Gemini)

क, कि, कु, घ, छ, के, ह



ग्रह गोचर– वर्षारम्भ से 6 मार्च तक गुरु वक्री अवस्था में संचार करेगा। उलझनों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। ता. 4 अप्रै. से 19 अप्रै. तक राशि स्वामी बुध नीच राशि में होने से स्वास्थ्य हानि, धन का वृथा खर्च तथा चोटादि लगने का भय है। सावधानी

कामों में विलम्ब होगा। घरेलू खर्च अधिक रहेंगे। मासान्त में विदेशी सम्बन्धियों से कुछ लाभ के अवसर मिलेंगे। गुरूवार का व्रत करना एवं शनिवार को गौशाला में हरा-चारा एवं गुड़ आदि का दान करना शुभ रहेगा।

भविष्यफल–मार्च–सन् 2014 ई.

मेष–ता. 1 से मंगल वक्री होकर शनि-राहु युक्त सप्तमस्थ संचार करने से अत्यन्त कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। नौकरी में परिवर्तन का विचार भी बनेगा। केतु का संचार से मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। मासान्त में अत्यधिक क्रोध व उत्तेजना से बचें। श्री दुर्गाकवच का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृष–राशिस्वामी शुक्र भाग्यस्थान पर होने से कुछ रूके हुए कार्य बनेंगे। धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी। विदेशी सम्बन्धियों से मेलजोल एवं सहयोग प्राप्त होगा। परन्तु ता. 24 से वृथा भागदौड़, स्वास्थ्य में गड़बड़, मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। विविध प्रकार के खर्च भी अधिक होंगे। शुक्रवार को श्री सूक्त का पाठ करना शुभ रहेगा।

मिथुन–ता. 6 तक गुरू वक्री अवस्था में संचार करेगा, जिससे मानसिक उलझनों के बावजूद लक्ष्य प्राप्ति में कामयाबी के योग बनेंगे। ता. 12 से राशिस्वामी बुध भाग्यस्थान पर होने से धन-लाभ व उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। कारोबार में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। परन्तु स्वास्थ्य ढीला रहेगा। श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क–शनि की ढैय्या एवं ता. 14 तक सूर्य अष्टम (कुम्भ) में होगा। जिससे कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के योग बनेंगे। परन्तु कुछ सोची योजनाओं में विघ्नों का सामना रहेगा। ता. 15 से धनेश सूर्य भाग्यस्थान पर होने से आकस्मिक लाभ, भाई-बन्धुओं का सहयोग मिलेगा। शुभ कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

सिंह–ता. 14 तक सूर्य की स्वगृही दृष्टि होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। किसी नवीन कार्य को कार्यरूप देने का प्रयास लाभकारी रहेगा। ता. 14 से सूर्य अष्टम होने से बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य ढीला, आँखों में कष्ट एवं चोटादि का भय रहेगा। श्रीआदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

कन्या–मासारम्भ में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। वृथा भागदौड़, आय कम और खर्च अधिक एवं परिवार में कुछ निजी समस्याओं का सामना रहेगा। ता. 12 से राशिस्वामी बुध छठे भाव में संचार करने से स्वास्थ्य ढीला, पेटविकार एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। सांझेदारी के कार्यों में परेशानी हो।

तुला–मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र-बुध युक्त चतुर्थ भाव में एवं शनि की साढ़ेसति के प्रभाव से स्वास्थ्य ढीला, शरीर कष्ट, चोटादि का भय रहेगा। परन्तु व्यवसाय में विघ्नों के बावजूद निर्वाह-योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 22 के पश्चात् परिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा।

वृश्चिक–ता. 25 तक राशिस्वामी मंगल का शनि-राहु के साथ संचार बारहवें स्थान पर होने से कार्यव्यवसाय में व्यर्थ की उलझनें, आय से खर्च अधिक, गुस्सा ज्यादा, चोटादि का भय एवं स्वास्थ्य ढीला रहेगा। परन्तु निर्वाह

योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 25 से अनेक उतार-चढ़ाव एवं संघर्ष वाला समय रहेगा। श्री सुन्दरकांड का पाठ करना शुभ रहेगा।

धनु-राशिस्वामी गुरू की स्वगृही दृष्टि होने से कुछ रूके हुए कार्यों में सिद्धि प्राप्त होगी। स्त्री व संतान सुख मिलेगा। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। परन्तु शनि की तृतीय दृष्टि होने से मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य ढीला एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। चोटादि का भय रहे।

मकर-इस राशि पर मंगल की ता. 24 तक उच्चदृष्टि होने से पराक्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। भूमि-वाहन आदि सुख मिलेंगे एवं क्रयविक्रय की भी योजना बनेगी। परन्तु शनि-राहु के कारण बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य परेशानी एवं धन का खर्च अधिक होगा। मासान्त में संघर्षपूर्ण हालात का सामना रहेगा। श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ-ता. 14 तक सूर्य का संचार रहने से बनते कामों में विघ्न, गुस्सा-ज्यादा, स्वभाव में तेजी एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में मिश्रित प्रभाव होगा। यद्यपि परिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें रहेंगी। परन्तु गुरू की दृष्टि होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। धर्म-कर्म में रूचि भी रहेगी।

मीन-इस मास में शनि की ढैय्या एवं राशिस्वामी गुरू चतुर्थभाव में होने से कार्य-व्यवसाय में दौड़-धूप अधिक, आय कम और खर्च अधिक परन्तु अत्यधिक संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 14 से 13 अप्रै. तक सूर्य का संचार इसी राशि पर होने से क्रोध अधिक, घरेलू उलझनों एवं आर्थिक परेशानियों के कारण गुप्त चिन्ताएं बढ़ेंगी।

भविष्यफल-अप्रैल-सन् 2014 ई.

मेष-इस राशि पर केतु का संचार एवं राशिस्वामी मंगल वक्री होने से मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प एवं खर्च ज्यादा रहेगा। परन्तु ता. 14 से सूर्य-केतु का संचार होने से परिवार में संघर्ष के बाद धन लाभ होगा। उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क रहेंगे। किन्तु भूमि सम्बन्धी कार्यों से परेशानी के योग हैं।

वृष-राशिस्वामी शुक्र दशम स्थान में संचार करने से बनते कामों में अड़चनें एवं व्यवसायिक परेशानियों का सामना रहेगा। आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु मानसिक तनाव, गुप्तचिन्ता एवं वृथा भागदौड़ रहेगी। विलासादि कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। परन्तु मासान्त में वाहनादि सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। खुशी के अवसर भी मिलेंगे। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहे।

मिथुन-ता. 4 से 19 के मध्य राशिस्वामी बुध नीच राशिगत संचार करने से स्वास्थ्य हानि, धन का खर्च अधिक, घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। चोटादि का भय रहे। ता. 20 के पश्चात् हालात में सुधार, सवारी आदि सुख मिलेगा। क्रय-विक्रय करते समय विशेष सावधानी बरतें। किसी विशेष से धोखे की सम्भावना बनी रहेगी। श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क-मासारम्भ में विशेष परिश्रम एवं प्रयास करने पर धन लाभ के अवसर, पहले से बेहतर होंगे। किसी नवीन कार्य क्षेत्र में रूझान बढ़ेगा। कुछ बिगड़े काम भी बनेंगे। परन्तु ता. 14 से धनेश सूर्य उच्चराशि में होने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों

बरतें। ता. 23 मई से 20 सितं. तक राशिपति बुध शुभ स्थिति में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ, कुछ बिगड़े कामों में सुधार धन प्राप्ति एवं सुख-साधनों में वृद्धि होगी। प्रत्येक बुधवार गौशाला में हरा चारा व गुप्त दान करें।

कर्क राशि (Cancer)

हि, हु, हे, हो, डा, डी, ड, डे, डो



ग्रह गोचर- वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग संघर्षपूर्ण रहेगा। वर्षारम्भ से 1 नवं. तक इस राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव होगा। इस अवधि तक घरेलू उलझनें रहेंगी। (14) जन. से 12 फर. के मध्य अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। (13) फरवरी से 14 मार्च सूर्य अष्टम में होने से कठिन हालात के बाद धन प्राप्ति होगी। 15 मार्च से सूर्य भाग्य स्थान में रहेंगा, जिससे उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। (19) जून से भाग्येश बृहस्पति उच्च राशि में आने से आय के साधनों में विस्तार तथा कुछ नए सम्पर्क बनेंगे। भूमि, वाहनादि सुख-साधनों की प्राप्ति होगी। परिवार में विवाह, सन्तान-सुख आदि सुखों के अवसर होंगे। हर वीरवार मन्दिर में पीली वस्तुओं का दान करें।

से सम्पर्क बनेंगे। नौकरी में उन्नति के योग हैं। किन्तु शनि की ढैय्या के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

सिंह-मासारम्भ में सूर्य अष्टम स्थान पर होने से बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य परेशानी, आँखों में कष्ट एवं सम्बन्धियों से मतभेद रहेंगे। ता. 14 से राशिस्वामी सूर्य-केतु युक्त भाग्यस्थान पर होने से मिश्रित प्रभाव होगा। आय के साधन निर्वाह योग्य बनते रहेंगे। परन्तु किसी निकट सम्बन्धी के सहयोग से कोई बिगड़ा काम बनेगा। श्री आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

कन्या-ता. 4 से बुध सप्तम भाव में (नीचराशि) संचार करने से परिवारिक परेशानी, घरेलू उलझनें, वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव एवं धन का खर्च अधिक होगा। शनि की साढ़ेसती के कारण मन अशान्त एवं उचाट रहेगा। ता. 20 से बुध अष्टम में संचार करने से शुभ कार्यों में विघ्न एवं व्यस्तताओं के बावजूद संतान के विशेष सहयोग से आय के साधन बनेंगे।

तुला-शुक्र पंचमस्थ होने से कठिन एवं संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति होगी। ता. 16 के पश्चात् व्यापारिक यात्रा भी होगी। नौकरी में वरिष्ठ अधिकारियों से तनाव के हालात बनेंगे। ता. 28 से शुक्र उच्चस्थिति में होने से परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर खर्च होगा।

वृश्चिक-राशिस्वामी मंगल वक्री होकर लाभ स्थान में संचार कर रहा है। व्यवसाय अथवा नौकरी में परिवर्तन का विचार बने। शनि-साढ़ेसति के कारण भी व्यवसाय में परेशानी, आय कम और खर्च अधिक होगा। खर्चों की अधिकता से मन परेशान, गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहे।

धनु-शनि की दृष्टि के कारण मानसिक तनाव, असमंजसपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद सफलता एवं लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी से लेन-देन करते समय विवाद उत्पन्न हो। अधिकतर समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। धार्मिक कार्यों की ओर रूचि रहेगी।

मकर-कारोबार में उतार-चढ़ाव और संघर्ष रहेगा। धनागमन के साधनों में वृद्धि और परिवार में धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। ता. 14 के बाद सूर्य-शनि के समसप्तक योग होने से क्रोध अधिक, नज़दीकी भाई-बन्धुओं से तनाव एवं मतान्तर पैदा होंगे। ता. 14 वैशाख संक्रान्ति से वैशाख माहात्म्य का पाठ करना कल्याणकारी रहेगा।

कुम्भ-गुरु दृष्टि होने से शुभ कार्यों पर धन का खर्च होगा। अकस्मात् धन का अपव्यय होगा, सोच समझकर खर्च करें। किसी निकट बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं। पुरुषार्थ द्वारा किसी कार्य के बनने से खुशी मिले। परन्तु आकस्मिक खर्चों के कारण घरेलू उलझनें व परेशानियां होंगी।

मीन-सूर्य का इस राशि पर संचार तथा मं.-सू. के मध्य समसप्तक योग होने से धन सम्बन्धी परेशानी और किसी उच्चाधिकारी से विरोध पैदा हो। शनि की ढैय्या के कारण व्यवसाय में आंशिक लाभ एवं विलासादि कार्यों पर धन का व्यय होगा। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं।

भविष्यफल-मई-सन् 2014 ई.

मेष-व्यवसायिक हालात में सुधार व कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। मंगल वक्री होने से क्रोध अधिक, सांझेदारी में परेशानी एवं स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

वृष–राशिस्वामी शुक्र उच्चराशिगत होने से रूके हुए कार्यों में सफलता, धन लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रिय-बन्धुओं से मेल-मिलाप एवं सुख-साधनों पर धन का खर्च होगा। ता. 24 से शुक्र द्वादशस्थ होने से स्वास्थ्य में गड़बड़, खर्च अधिक व वृथा मानसिक तनाव रहे।

मिथुन–मानसिक उलझनों के बावजूद लक्ष्य प्राप्ति में सफलता मिलेगी। शुभ मांगलिक कार्यों पर खर्च होगा। आत्मीयजनों के सम्बन्ध में महत्त्वकाक्षाएं फलीभूत होंगी। निकट-बन्धु से विरोध पैदा होने के संकेत हैं। बुध द्वादशस्थ (ता. 4 से 22) होने से स्वास्थ्य में हानि तथा धन का अपव्यय होगा।

कर्क–मासारम्भ में उच्चप्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क अधिक रहेंगे। आय के साधनों में वृद्धि होगी। परन्तु शनि की दृष्टि के कारण वृथा मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न और गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। शनि की ढैय्या के प्रभाव से स्वास्थ्य ढीला, चोटादि का भय रहेगा।

सिंहं–सूर्य उच्चस्थिति में होने से अचानक धन लाभ के अवसर मिलेंगे। कार्य-व्यवसाय में उन्नति व प्रगति के कुछ मार्ग प्रशस्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। बिगड़े कार्यों में विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क करने से सुधार होगा। **'श्रीसूक्त'** का पाठ करना शुभ रहेगा।

कन्या–विशेष परिश्रम एवं भागदौड़ से किसी विशेष कार्य में सफलता मिले, अधिक व्यय से मानसिक तनाव होगा। शनि-साढ़ेसति के प्रभावस्वरूप पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। व्यवसायिक क्षेत्र में उथल-पुथल के हालात बनेंगे।

तुला–शुक्र उच्चस्थ होने से परिवार में शुभ समाचार तथा व्यवसाय में धन लाभ की प्राप्ति होगी। साढ़ेसति के कारण स्वास्थ्य ढीला रहेगा। ता. 24 से शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से संघर्षमयी परिस्थितियों के बावजूद समय शुभ फलदायी रहेगा।

वृश्चिक–मंगल लाभ स्थान में होने से परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा। धन लाभ के अवसर मिलेंगे, परन्तु निजी कारणों से उचित लाभ प्राप्त नहीं होगा। शनि-साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, उदर विकार से परेशानी होगी।

धनु–राशि पर गुरु एवं शनि की दृष्टियां होने से शुभाशुभ (मिश्रित) प्रभाव होंगे। पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ व सुख के साधनों में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म की ओर रूचि भी होगी। परन्तु आकस्मिक खर्चों के कारण घरेलू उलझनें व परेशानियां होंगी।

मकर–अनेक समस्याओं के समाधान होने के अवसर बढ़ेंगे। परिवार में निकट-बन्धुओं से मन-मुटाव होगा। संघर्ष एवं कठिनाइयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। गृहस्थ जीवन में व्यर्थ का तनाव रहे। **'श्रीसुन्दरकाण्ड'** का पाठ करें।

कुम्भ–राशिस्वामी शनि नवम भाव में राहु युक्त है। धन-लाभ एवं उन्नति के पर्याप्त अवसर मिलने पर भी उनका यथेष्ट लाभ प्राप्त नहीं ले पाएंगे। किसी शुभ कार्य पर धन का खर्च होगा। धार्मिक समागमों में जाने का अवसर भी प्राप्त होगा।

मीन–शुक्र इस राशि में संचार करने से आमोद-प्रमोद के अवसर प्राप्त होंगे। शनि की ढैय्या, गुरु चतुर्थ भाव में तथा मंगल की दृष्टि होने से गृह में मन-मुटाव का वातावरण रहेगा। स्वभाव में क्रोध एवं चिड़चिड़ापन रहेगा। संयमपूर्ण व्यवहार करें।

सिंह राशि (Leo)

म, मु, मे, मो, टा, टि, टू, टे



ग्रह गोचर–राशि स्वामी सूर्य पंचमभाव में चन्द्र, बुध ग्रहों के साथ है, उस पर गुरू की शुभ दृष्टि तथा शनि व मंगल की अशुभ दृष्टि पड़ रही हैं। बहुत परिश्रम करने पर भी आय के साधन सीमित रहेंगे। 12 फर. से गुज़ारे योग्य धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। (15 मार्च) से 13 अप्रैल तक सूर्य आठवें होने से बनते कामों में अड़चनें होंगी। स्वास्थ्य भी ठीक न होगा। (13 अप्रै.) से 14 मई के मध्य राशि स्वामी सूर्य उच्च स्थिति में होने से उन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्द्ध में गुरू द्वादश स्थान में होने से धन का नुकसान व घरेलु परेशानियां बढ़ेंगी। ता. 2 नवं. से शनि की ढैय्या के अशुभ प्रभाव से तनाव, पारिवारिक परेशानी और गुप्त चिन्ताएं, चोटादि का भय होगा।

उपाय–आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

कन्या राशि (Virgo)

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

ग्रह गोचर–शनि–साढ़ेसति का प्रभाव इस राशि पर 1 नवं. तक रहेगा। वर्षारम्भ ता. 8 जन. से राशि स्वामी बुध पंचम भाव में संचार



भविष्यफल–जून–सन् 2014 ई.

मेष–मंगल-शनि की संयुक्त दृष्टि होने से संघर्ष के बावजूद उत्साह एवं पराक्रम बना रहेगा। धन लाभ व पदोन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे, परन्तु खर्च भी अधिक रहेंगे। उत्तरार्द्ध में वृथा भागदौड़, मानसिक तनाव, वृथा धन का खर्च एवं घरेलू चिन्ताओं में वृद्धि होगी।

वृष–ता. 14 तक सूर्य का संचार तथा ता. 17 तक राशिस्वामी शुक्र द्वादश भाव में होने से कार्य-व्यवसाय में व्यस्तताएं बढ़ेंगी। अत्यधिक परिश्रम और संघर्ष के पश्चात् ही आय के साधन बनेंगे। स्वास्थ्य ढीला, गुप्त रोग व संतान सम्बन्धी चिन्ता रहे। ता. 18 से शुक्र स्वराशिगत होने से हालात में परिवर्तन होंगे। बिगड़े कामों में सुधार, पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

मिथुन–पूर्वार्द्ध भाग में बुध-गुरु का संचार होने से भाग्य से धन प्राप्ति और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विघ्न-बाधाओं के बावजूद धन प्राप्ति के अवसर प्राप्त होंगे। यात्रा एवं पर्यटन का भी प्रोग्राम बनेगा। किसी के सहयोग से बिगड़ा कार्य बने।

कर्क–अत्यन्त संघर्ष के बाद गुज़ारे योग्य धन लाभ होगा। विलासादि कार्यों पर धन खर्च होगा। घर-परिवार की तरफ से चिन्ता उत्पन्न होगी। शनि की दृष्टि के कारण स्वास्थ्य परेशानी और खर्चों में वृद्धि होगी। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करें। ता. 19 से गुरु कर्क (उच्च) में होने से मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

सिंह–परिश्रम से कोई विशेष रुका हुआ कार्य बनेगा। धर्म-कर्म में रूचि बढ़ेगी। व्यर्थ की भागदौड़ अधिक होगी। अधिकांश समय मनोरंजन में व्यतीत होगा। ता. 18 के बाद मानसिक तनाव व क्रोध की भावना अधिक रहे। उदर-विकार व शरीर कष्ट का भय रहे।

कन्या–राशि पर मंगल का संचार, शनि-साढ़ेसति होने से आय कम व खर्च अधिक होगा। स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना से बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन गुप्त परेशानियों से संतप्त रहे।

तुला–शनि साढ़ेसति के प्रभावस्वरूप पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। परन्तु शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से परिश्रम से कोई विशेष रुका हुआ कार्य बनेगा। गुज़ारेलायक धन प्राप्ति होगी। ता. 18 से शुक्र अष्टमस्थ होने से शरीर कष्ट, मानसिक तनाव व स्वास्थ्य हानि के योग हैं।

वृश्चिक–गुरु की दृष्टि के फलस्वरूप व्यवसाय एवं नौकरी में उन्नति के लिए विशिष्ट व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त होगा। धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। बिगड़े कार्य बनेंगे। निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। मान-सम्मान, भूमि, सवारी और सुख के साधनों में वृद्धि होगी।

धनु–गुरु-मंगल एवं शनि की संयुक्त दृष्टियां पड़ रही हैं। व्यवसाय में नए लोगों से मेल-मिलाप होगा। परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर खर्च होगा। तीर्थ-स्थल की यात्रा भी होगी। ता. 19 से गुरु अष्टमस्थ होने से व्यर्थ की भागदौड़ अधिक रहे।

मकर–आशाओं में सफलता, राज्यपक्ष से मान-सम्मान में वृद्धि होगी। सांझेदारी के कामों में लाभ की वृद्धि होगी। ता. 19 से गुरु की नीच दृष्टि होने से जल्दबाजी और उतावलेपन से हानि होगी। खर्च में वृद्धि, चोट, शरीर कष्ट और मानसिक परेशानी होगी।

कुम्भ–इस मास में कुछ सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। गुरू की दृष्टि होने से धर्म-कर्म में रूझान एवं आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 19 से गुरू की धन भाव पर दृष्टि होने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। परन्तु खर्च की अधिकता से मन परेशान रहेगा।

मीन–मासारम्भ में कामकाज में दौड़-धूप अधिक करनी पड़ेगी। व्यवसाय में परिवर्तन की योजना भी बनेगी। परन्तु निकट बन्धुओं से तनाव रहेगा। ता. 19 से राशिस्वामी गुरू उच्चराशि कर्क में होने से गृह में खुशी के अवसर मिलेंगे। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। परन्तु क्रोध अधिक रहे। गुरू-गायत्री मन्त्र का जप करना शुभ होगा।

भविष्यफल–जुलाई–सन् 2014 ई.

मेष–विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। लाभ के साथ-साथ खर्च भी बढ़ेंगे। घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान होगा। मासान्त में कोई बिगड़ा हुआ काम बनेगा और कोई खुशी का समाचार मिलेगा।

वृष–मासारम्भ में राशिस्वामी शुक्र इसी राशि में संचार कर रहा है। जिससे समाज में मान-सम्मान में वृद्धि तथा धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। विदेशादि जाने की योजना बनेगी। मानसिक तनाव, स्वास्थ्य ढीला और आँखों में कष्ट होने व खर्च होने के योग हैं।

मिथुन–मासारम्भ में बुध मिथुन में संचार कर रहा है। जिससे व्यवसायिक क्षेत्रों में धन लाभ, आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक रहेगा। दूरस्थ यात्राएँ होंगी। ता. 19 से दौड़-धूप एवं खर्च अधिक, आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। ज़मीन-जायदाद व व्यवसाय सम्बन्धी समस्याएं उत्पन्न होंगी।

कर्क–इस मास में मिला-जुला प्रभाव होगा। गुरू की स्थिति होने से धर्म-कर्म आय कम और खर्च अधिक होगा। वृथा भागदौड़ एवं खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा। ता. 16 से सूर्य का संचार इस राशि पर होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी क्रोध अधिक, परेशानी, पेटविकार तथा निकट-बन्धुओं से विरोध एवं खर्च बढ़ेंगे।

सिंह–इस मास में यद्यपि व्यवसायिक क्षेत्रों में स्थिति पहले से बेहतर रहेगी। रिश्तेदारों में मेलजोल बढ़ेगा। सुख-साधनों पर खर्च होगा। परन्तु मासान्त में बनते कामों में विघ्नों का सामना रहेगा। वृथा खर्चों से मानसिक तनाव व हानि होगी। शरीर कष्ट एवं चोटादि का भय रहेगा।

कन्या–बुध दशम स्थान में है। कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी नवीन योजना बनेगी। कुछ बिगड़े काम बनेंगे। उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। घर-परिवार में मंगल कार्य का आयोजन होने के संकेत हैं। ता. 29 से बुध लाभ स्थान एवं कर्क राशि में होगा। मान-सम्मान में वृद्धि एवं धन लाभ के चांस बनेंगे। परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे।

तुला–मासारम्भ में शनि वक्री होने से सोची योजनओं में सफलता के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ेगा। यद्यपि व्यवसाय में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु किसी विशेष पदोन्नति की सम्भावना भी बनी रहेगी। मासान्त में अड़चनों के बावजूद कुछ सफलता मिलेगी। परिवार सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। अचानक खर्च बढ़ेंगे।

कर रहा है जिससे भविष्य की योजनाएँ बनेंगी। ता. 26 जन. से 17 फर. तक बुध कुम्भ राशिगत होने से सुख-साधनों में वृद्धि और शुभ कार्यों पर खर्च होगा। 4 अप्रै. से 19 अप्रै. तक बुध सप्तम भाव में होने से पारिवारिक परेशानी, घरेलू उलझनें, आय की अपेक्षा धन का खर्च अधिक होगा। ता. 20 अप्रै. से 4 मई तक बुध अष्टम में होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट रहेगा। ता. 22 मई से 28 जुला. तक विशेष चुनौती का सामना करना पड़ेगा। 12 जुलाई से वर्षान्त तक राहु का संचार रहने से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ पैदा होंगी। ता. 16 सितं. से 16 अक्तू. तक सूर्य के इसी राशि में संचार करने के क्रोध की अधिकता, खर्च, परिवार में मन-मुटाव होगा।

उपाय–हर मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

तुला राशि (Libra)

रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तु, ते



ग्रह गोचर–वर्षारम्भ में तुला राशि पर शनि व राहु का संचार चल रहा है। राहु का संचार इस राशि पर ता. 11 जुला. तक तथा शनि का संचार (1) नवं. तक रहेगा। शनि साढ़ेसाति का प्रभाव वर्षभर रहेगा। यद्यपि 18 जून तक इस राशि पर गुरू की दृष्टि रहेगी, जिससे धन लाभ व उन्नति के चाँस बनेंगे। परन्तु राहु के कारण बनते कामों में अड़चनें तथा खर्च भी बहुत अधिक होंगे। व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। ता. 4 फर. से 24 मार्च तक इस राशि पर मंगल का भी संचार रहेगा। जिससे क्रोध एवं उत्तेजना अधिक होगी। अचानक

वृश्चिक–इस मास में राशिस्वामी शुक्र की विशेष दृष्टि इस राशि पर होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। उत्तरार्द्ध भाग में धन व परिवार सम्बन्धी उलझनें होंगी। कार्य के क्षेत्र में चिन्ता बनी रहेगी। बनते कामों में विघ्न और किसी मित्र से धोखे की सम्भावना बनी रहेगी। श्रीहनुमान जी का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–राशिस्वामी गुरू उच्चस्थ होने के कारण व्यवसाय में धन लाभ एवं उन्नति के अवसर तो मिलेंगे परन्तु मान-प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। ता. 13 जुला. तक मंगल की इस राशि पर चतुर्थ दृष्टि पड़ने से स्वभाव में क्रोध की भावना अधिक रहेगी। मासान्त में खर्च भी बढ़चढ़ कर होंगे।

मकर–मासारम्भ में इस राशि पर गुरु की नीच दृष्टि होगी। क्रोध की मात्रा अधिक हो। मानसिक तनाव रहेगा। पारिवारिक उलझनें व समस्याएं उभरेंगी। स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतें। संघर्ष व परिश्रम के उपरान्त गुज़ारेलायक धन की प्राप्ति होगी। मासान्त में उलझा हुआ कार्य बनेगा। शुभ समचार मिलने के संकेत मिलते हैं। गुरू गायत्री का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ–मासारम्भ में कार्यक्षेत्र में स्थिति अनुकूल रहेगी। शुभ कार्यों पर व्यय अधिक होगा। परिवार में सुख-साधनों में वृद्धि होगी। नवीन कार्य की योजना बनेगी। किसी प्रिय एवं श्रेष्ठजन के साथ सम्पर्क स्थापित होगा। मासान्त में छोटे-छोटे कार्य निपटाने से लाभ होगा। श्रावण में सोमवार के व्रत और भगवान् शिव की अर्चना करने से शान्ति एवं लाभ होंगे।

मीन–इस मास में कार्यव्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर मिलेंगे। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम और संघर्ष का सामना रहेगा। ता. 20 के पश्चात् अत्यधिक भागदौड़ के उपरान्त निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मासान्त में मानसिक तनाव एवं खर्चों में वृद्धि होगी। श्रावण माहात्म्य का पाठ एवं शिवपूजन करना शुभ रहेगा।

भविष्यफल–अगस्त–सन् 2014 ई.

मेष–राशि स्वामी मंगल की दृष्टि होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे, परन्तु शनि की दृष्टि भी होने से धन के आकस्मिक खर्च तथा तनाव बढ़ेंगे। मासान्त में खर्चों में वृद्धि के साथ निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

वृष–मासारम्भ में इस राशि पर मंगल की दृष्टि होने से आकस्मिक खर्चों में वृद्धि होगी। पूर्वार्द्ध भाग में अत्यन्त कठिन समस्याओं का सामना रहेगा। व्यर्थ की भागदौड़ एवं चिन्ताओं में भी वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में कोई बिगड़ा कार्य बन जाने से हालात में सुधार होंगे। खुशी के अवसर भी मिलेंगे।

मिथुन–मासारम्भ में अत्यधिक परिश्रम के करने से ही निर्वाह योग्य धन की प्राप्ति होगी। परन्तु बुध दूसरे भाव में अस्तंगत होने से लेन-देन के कार्यों में परेशानी एवं खर्च भी बढ़-चढ़ कर होंगे। उत्तरार्द्ध में कुछ बिगड़े काम बनेंगे। धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी। परन्तु स्वास्थ्य ढीला एवं गुप्त चिन्ताएँ रहेंगी। श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क–इस मास शनि की अशुभ दृष्टि होने से बनते कामों में विघ्न, घरेलू एवं आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। परिवार में मनमुटाव रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ता,

परन्तु गुरु का संचार होने से अकस्मात् धन लाभ की सम्भावनाएं होंगी। परिवार में शुभ सूचना एवं विदेशी सम्पर्क सूत्र बनेंगे।

सिंह–अकस्मात् धन लाभ व उन्नति के योग हैं। शुभ कार्यों पर खर्च होंगे। परिवारिक सहयोग से किसी विशेष कार्य में सफलता मिले। परन्तु उत्तरार्ध भाग में कुछ व्यवसायिक व आर्थिक उलझनों का सामना रहेगा। किसी नवीन कार्य योजना को कार्यरूप देने का प्रयास लाभकारी होगा।

कन्या–शनि की साढ़ेसती के कारण बनते कामों में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न होंगी। व्यवसाय में संघर्ष एवं कठिन हालात के बावजूद निर्वाह योग्य आमदन के साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में भूमि-जायदाद सम्बन्धी सुख-साधनों पर खर्च अधिक हों और स्वास्थ्य ढीला रहेगा। शिव उपासना करना कल्याणकारी होगा।

तुला–मासारम्भ में शनि की उच्चस्थिति होने से सुख-साधनों पर खर्च परन्तु मंगल के कारण अत्यधिक परिश्रम करने पर ही आय के साधनों में वृद्धि होगी। शनि उच्चस्थ होने से घरेलू हालात में सुखद परिवर्तन होंगे। किन्तु परिवार सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी। ता. 23 के पश्चात् विदेशी कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक–गुरू की शुभ दृष्टि होने से व्यवसाय में लाभ के अवसर और स्वास्थ्य में सुधार होगा। निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। शुभ समाचार मिलेगा। उत्तरार्द्ध भाग में शुभ कार्यों पर खर्च होगा। अकस्मात् मन में उचाटता, उदासीनता एवं परिवार में मतभेद भी उत्पन्न होंगे। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। भौम चण्डिका स्तोत्र या.मन्त्र का पाठ करना शुभ होगा।

धनु–मासारम्भ में राशिस्वामी गुरू उच्चराशिस्थ होकर अस्तंगत है, फलस्वरूप मास के शुरू में बनते कार्यों में अड़चनें रहेंगी। धन लाभ भी अल्प रहेगा। खर्चों में अधिकता होगी। ता. 5 के बाद गुरू पूर्व दिशा से उदित होगा। बिगड़े कामों में सुधार होगा। आय के साधनों में वृद्धि होगी। मासान्त में कोई शुभ समाचार मिलेगा।

मकर–मासारम्भ में मंगल की उच्च दृष्टि पड़ रही है। गृह में मंगल कार्य पर खर्च होगा। समाज में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। निकटस्थ व्यक्ति द्वारा सम्मान प्राप्त होगा। रूका हुआ धन मिलने के आसार बढ़ेंगे। आर्थिक परेशानियों के कारण उलझनें बढ़ेंगी।

कुम्भ–राशि स्वामी शनि व मंगल का योग होने से विशेष रूप से स्वास्थ्य परेशानी, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न एवं धन का खर्च अधिक रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी। अकस्मात् धन लाभ के भी अवसर मिलेंगे। खर्च भी अधिक रहें।

मीन–मासारम्भ में इस राशि पर केतु संचार होने से आकस्मिक खर्च में वृद्धि और गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध भाग में कार्यव्यवस्तताएँ एवं उत्साह में वृद्धि होगी। वृथा खर्च के कारण परेशानी हो। स्वास्थ्य ढीला रहे। धार्मिक कार्यों की तरफ रूझान बढ़ेगा।

भविष्यफल–सितम्बर–सन् 2014 ई.

मेष–ता. 4 सितं. तक राशि स्वामी मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से किसी प्रतिष्ठित मित्र की सहायता से बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। नए कार्य की योजना बनेगी। परन्तु ता. 5 से घरेलू परेशानियों के कारण तनाव व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। उत्तरार्ध भाग में निकट-बन्धुओं के साथ मतान्तर रहेगा।

खर्च भी बढ़ेंगे। इस अवधि में वाहन से दुर्घटना में चोटादि का भय है। हर मंगलवार को श्री हनुमान चालीसा का पाठ व प्रसाद चढ़ाना शुभ होगा।

वृश्चिक राशि (Scorpio)

तो, न, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू



ग्रह गोचर–वृश्चिक राशि पर शनि साढ़े-साती का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में आय कम तथा संघर्ष अधिक रहेगा। खर्च भी बढ़ेंगे। नजदीकी लोग भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 19 जून से वर्षान्त तक गुरू कर्क राशि में होने से कुछ बिगड़े हुए काम बनेंगे। धर्म-कर्म की ओर रूचि बनेगी। **ता. 5 सितं.** से 17 अक्तू. तक राशि स्वामी मंगल इसी राशि में संचार करेगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु 18 अक्तू. से 26 नवं. तक मंगल धनु राशि में होने से आय अल्प परन्तु खर्च बहुत अधिक रहेंगे। 27 नवं. से वर्षान्त तक मंगल उच्चराशि में होने से धन लाभ होगा। हर शुक्रवार को श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

धनु राशि (Sagittarius)

ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे



ग्रह गोचर–वर्षारम्भ में इस राशि पर सूर्य, चन्द्र व बुध ग्रहों का संचार तथा

वृष–पूर्वार्द्ध भाग में सूर्य-शुक्र सिंह राशिगत संचार करने से मिश्रित प्रभाव होगा। जिससे व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। उलझनपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 25 से शुक्र नीचराशिगत होने से संतान सम्बन्धी चिन्ता एवं मानसिक परेशानी रहेगी।

मिथुन–ता. 20 तक बुध की स्थिति शुभ होने से धन लाभ व उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। किसी नए कार्य की योजना बनेगी। परन्तु ता. 21 से क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। परिवारिक परेशानी एवं चोटादि का भय रहेगा।

कर्क–पूर्वार्द्ध भाग में कार्यक्षेत्र में विभिन्न योजनाओं पर विचार होगा। धन लाभ के अवसर मिलेंगे। शनि की ढैय्या के कारण मन अशान्त रहेगा। धर्म-कर्म में रूझान रहेगा। ता. 24 के पश्चात् परिवार में शुभ मंगल कार्य एवं भाग्यवश खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

सिंह–पूर्वार्द्ध भाग में राशिस्वामी सूर्य इसी राशि पर संचार करने से व्यवसाय में धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। नौकरी में तरक्की तथा मानप्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उत्तरार्ध में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। परन्तु मन में उचाटता एवं घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा।

कन्या–राशिस्वामी बुध उच्चस्थिति में संचार करने से मानप्रतिष्ठा में वृद्धि एवं नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। धन-प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। ता. 16 से सूर्य का संचार होने से क्रोध की अधिकता, वृथा यात्राएँ एवं धन का अधिक, परिवार में मनमुटाव एवं सिर-दर्द आदि से परेशानी होगी।

तुला–मासारम्भ में कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। परिश्रम एवं पुरुषार्थ करने पर धन लाभ के विशेष अवसर मिलेंगे। परन्तु सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। उत्तरार्ध भाग में भाग्यवश लाभ के योग हैं। परन्तु वृथा मानसिक तनाव, भागदौड़ अधिक, निकट बन्धुओं से तनाव एवं चोटादि का भय रहेगा।

वृश्चिक–मासारम्भ में स्वास्थ्य ढीला एवं अचानक खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 5 सितं. से मंगल स्वगृही होने से मानसम्मान में वृद्धि, भूमि-सवारी आदि का क्रय-विक्रय भी होगा। नवीन कार्यक्षेत्र में रूझान रहे। परन्तु शनि साढ़ेसति के प्रभाव से मासान्त में अधिकारी वर्ग से मनमुटाव एवं व्यर्थ का तनाव भी रहेगा।

धनु–राशिस्वामी गुरू अष्टम भाव में होने से विदेश सम्बन्धी कार्यों में विघ्न तथा आर्थिक उलझनों के कारण व्यवसायिक क्षेत्रों में लाभ प्राप्त करने में कठिनाई हो। उत्तरार्ध में किसी विशेष कार्य के बन जाने से खुशी मिलेगी। परन्तु भूमि-जायदाद सम्बन्धी मतभेद दूर होने में विलम्ब होगा।

मकर–गुरू की नीच दृष्टि होने से वृथा यात्राएँ, आर्थिक परेशानियां, परिवारिक मतभेद एवं व्यावसायिक उलझनें भी रहेंगी। परन्तु ता. 22 से विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति व संघर्ष के पश्चात् कार्य सिद्धि होने के योग बनेंगे। किन्तु मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

कुम्भ–सूर्य की दृष्टि होने से गुस्सा ज्यादा, बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। परन्तु गुरू की धन भाव पर शुभ दृष्टि होने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों के सहयोग से आय के साधनों में वृद्धि एवं शुभ कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

मीन–गुरू की दृष्टि होने से आय के साधनों में वृद्धि एवं परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण निकट बन्धुओं के साथ तनाव एवं मन अशान्त रहेगा। मासान्त में परिवारिक सहयोग से कोई बिगड़ा काम बनेगा। श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

भविष्यफल–अक्तूबर–सन् 2014 ई.

मेष–राशिस्वामी मंगल ता. 17 तक अष्टम होने से घरेलू परेशानियों के कारण तनाव व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। निकट बन्धुओं से मतभेद होंगे। ता. 18 से मंगल भाग्यस्थान पर होने से हालात में सुधार एवं कुछ बिगड़े काम बनेंगे। विदेशी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु स्वास्थ्य ढीला, सिरदर्द, गुस्सा ज्यादा एवं तनाव के कारण परेशानी होगी।

वृष–ता. 18 तक राशिस्वामी शुक्र नीच राशि में होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। संतान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। घरेलू उलझनें अधिक होंगी। परन्तु ता. 19 से अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। स्वास्थ्य भी ढीला रहेगा। कार्तिक माहात्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

मिथुन–मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी। घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। आर्थिक हालात मध्यम रहेंगे। उत्तरार्ध में यद्यपि आय के साधनों में वृद्धि एवं कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। स्वास्थ्य रक्षा के लिए श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

कर्क–भाग्येश गुरू उच्चराशिगत संचार करने से उत्साह व पराक्रम में वृद्धि होगी। मानसम्मान में वृद्धि एवं धर्म-कर्म में रूझान बढ़ेगा। ता. 20 के पश्चात् व्यवसाय में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। भूमि सम्बन्धी कार्यों में परेशानी एवं सांझेदारी के कामों में हानि होगी। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

सिंह–मासारम्भ में राशिस्वामी सूर्य कन्या राशि में होने से वृथा भ्रमण, फिजूलखर्ची एवं भागदौड़ अधिक रहेगी। किसी निकटस्थ व्यक्ति द्वारा धोखा मिलने की सम्भावना होगी। ता. 16 से सूर्य नीचराशिगत होने से बनते कामों में विघ्न, धनागमन के साधनों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। स्वास्थ्य ढीला रहेगा। कार्तिकमास माहात्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

कन्या–राशिस्वामी बुध ता. 4 से 25 अक्तू. के मध्य वक्री होने से व्यवसाय में उलझनें एवं परिवारिक चिन्ता रहेगी। स्वभाव में तेजी व क्रोध की भावना अधिक रहेगी। उत्तरार्ध में धर्म-कर्म के कामों में रूचि एवं शुभ कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

तुला–राशि स्वामी शुक्र नीचराशि में 12वें संचरित होने से व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी आय से खर्च अधिक रहेगा। ता. 17 से सूर्य-शनि का संचार इस राशि में होने से व्यवसायिक और परिवारिक परेशानियाँ बढ़ेंगी। कार्तिक संक्रान्ति से कार्तिक मास माहात्म्य का पाठ करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक–राशि स्वामी मंगल स्वगृही होने से मान प्रतिष्ठा में वृद्धि एवं धन लाभ के विशेष अवसर मिलेंगे। गुरू की विशेष दृष्टि होने से किसी नवीन कार्य को कार्यरूप देने का प्रयास लाभकारी रहेगा। ता. 18 से मंगल धनु राशि में होने से धन लाभ अल्प तथा वृथा खर्च अधिक होगा। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

धनु–मासारम्भ में आय के साधन बनते रहेंगे। विदेशी सम्बन्धियों के सहयोग से धन लाभ एवं आयात-निर्यात कार्य की योजना बनेगी। ता. 18 से मंगल का संचार होने से अत्यधिक खर्च एवं स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। परिवारमें कुछ मनमुटाव भी रहेगा। स्वभाव में तेजी रहे। श्रीदुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

मकर–राशि स्वामी शनि-तुला राशिगत संचार करने से उलझनों के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। विदेशी कार्यों में प्रगति के आसार बढ़ेंगे। परन्तु उत्तरार्ध में धन लाभ साधारण होगा। धन का लेन-देन करते समय धोखे की सम्भावना बनी रहेगी। मन अशान्त रहेगा।

कुम्भ–मासारम्भ में परिश्रम एवं उत्साह में वृद्धि होगी। परिवार में किसी शुभ कार्य पर खर्च होगा। परिवार में कुछ मतभेद भी रहेंगे। परन्तु उत्तरार्ध में संघर्ष के बावजूद धन लाभ के साधन बनते रहेंगे। स्त्री एवं संतान सुख मिलेगा। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। कार्तिक माहात्म्य का पाठ करना शुभ होगा।

मीन–मासारम्भ में धन लाभ व कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। किसी विशेष व्यक्ति के सहयोग से नौकरी में तरक्की के योग बनेंगे। मासान्त में क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। चोटादि का भय रहेगा। धर्म-कर्म के कामों में धन का खर्च अधिक होगा। श्रीआदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा।

राशि स्वामी गुरु की ता. 18 जून तक स्वगृही दृष्टि पड़ रही है। पूर्वार्द्ध भाग सर्विस व व्यवसाय में लाभ व उन्नतिकारक रहेगा। यद्यपि शनि की दृष्टि के कारण मानसिक तनाव व परिवारिक उलझनें भी रहेंगी। ता. 19 जून से वर्षान्त पर्यन्त गुरु उच्च राशि (कर्क) में संचार करेगा, जिससे विदेश आदि विशेष कार्यों में विघ्न/बाधाएं उलझनें, आय कम व खर्च अधिक होंगे। ता. 2 नवं. से इस राशि पर से शनि साढ़ेसति का अशुभ प्रभाव शुरू होगा।

उपाय–हर गुरुवार का व्रत रखना तथा ब्राह्मण को मिष्ठान्न सहित भोजन करवाना शुभ होगा।

मकर राशि (Capricorn)

भो, ज, जी, खी, खु, खे, खो, ग, गी



ग्रह गोचर–वर्षारम्भ में ही राशि स्वामी शनि दशम में उच्च राशिस्थ होकर राहु युक्त है, उस पर गुरु की विशेष दृष्टि पड़ रहे है। जिससे निर्वाह योग्य आय के साधन होने पर भी खर्च अधिक रहेंगे। ता. 14 जन. से 12 फर. तक मकर राशि पर सूर्य होने से क्रोध अधिक तथा आय कम एवं खर्च अधिक होंगे। ता. 4 फर. से 24 मार्च तक मंगल की उच्च दृष्टि होने से भूमि सवारी आदि का सुख मिलेगा। ता. 19 जून से गुरु नीच दृष्टि रहेगी। जिससे यात्राएँ अधिक होंगी तथा आकस्मिक खर्चों में भी विशेष वृद्धि होगी।

उपाय–शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ करके हर गुरुवार का व्रत करना तथा धर्मग्रंथ दान करना शुभ हो।

भविष्यफल–नवम्बर–सन् 2014 ई.

मेष–राशिस्वामी मंगल ता. 26 तक भाग्यस्थान पर होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। विदेश सम्बन्धी योजना भी बनेगी। परन्तु इस राशि पर सूर्य-शनि की दृष्टि होने से आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। चोटादि का भय एवं स्वास्थ्य ढीला रहेगा। ता. 27 से आय के साधनों में वृद्धि होगी।

वृष–ता. 2 से शनि की सप्तम दृष्टि होने से व्यवसाय में अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। गृह कलह एवं तनाव बनेगा। सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। उत्तरार्ध में उलझनों के बावजूद पराक्रम में वृद्धि होगी। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। मांगलिक कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा।

मिथुन–ता. 26 तक मंगल की दृष्टि होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में अनिश्चितता बनी रहेगी। आय कम व खर्च अधिक होगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। मासान्त में अत्यधिक दौड़धूप के पश्चात् ही निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। श्रीविष्णु-सहस्रणाम का पाठ करना शुभ रहेगा।

कर्क–मंगल की नीच दृष्टि होने से कार्यव्यवसाय में विशेष संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। आय कम व खर्च अधिक हो। मासान्त में आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

सिंह–ता. 2 से शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव होने से वृथा मानसिक तनाव, परिवारिक परेशानी और गुप्त चिन्ता रहेगी। चोटादि का भय रहे। ता.

16 से सूर्य-शनि वृश्चिक राशि में होने से भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों में परेशानी एवं लेन-देन करते समय धोखे की सम्भावना बनी रहेगी।

कन्या—इस मास में मिश्रित प्रभाव होंगे। धन लाभ साधारण, परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगा। दाम्पत्य जीवन में सुखद माहौल के बावजूद आर्थिक समस्या के कारण परेशानी हो। मासान्त में निकट बन्धु द्वारा धोखे मिलने के योग हैं। सावधानी बरतें। श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

तुला—मासारम्भ में अत्यधिक परिश्रम करने पर धन लाभ अल्प एवं खर्च अधिक रहेंगे। ता. 16 से हालात में सुधार भूमि-सवारी आदि का क्रयविक्रय भी होगा। वृथा भागदौड़, परिवारिक परेशानी एवं गुप्त शत्रु सरगर्म रहेंगे। विशेष रूप से शुक्रवार का व्रत एवं श्री गायत्री मन्त्र का जप करना शुभ होगा।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल ता. 26 तक धनु राशिगत संचार करने से आय अल्प परन्तु धन का खर्च अधिक होगा। गुरू की दृष्टि होने से मान सम्मान में वृद्धि होगी। परन्तु मासान्त में व्यवसायिक स्थिति में सुधार एवं परिवारिक सहयोग से कुछ कार्य बनेंगे। श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

धनु—ता. 2 से शनि की साढ़ेसति के प्रभाव से बनते कामों में विघ्न, विदेश सम्बन्धी कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। राशि स्वामी गुरू अष्टम में एवं मंगल की नीचदृष्टि होने से स्वास्थ्य हानि, शरीर कष्ट एवं मन में अशान्ति रहेगी। श्री शिवपूजन करना शुभ होगा।

मकर—ता. 2 से राशिस्वामी शनि की स्वगृही दृष्टि होने से मिश्रित प्रभाव होगा। अत्यधिक परिश्रम के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु उत्तरार्ध में स्वास्थ्य में खराबी, परिवारिक चिन्ता एवं चोटादि का भय रहेगा। ता. 28 के पश्चात् परिवार में शुभ मंगल कार्यों पर धन का व्यय होगा।

कुम्भ—ता. 2 से राशिस्वामी शनि वृश्चिक राशि में होने से आर्थिक हालात आगे से बेहतर होंगे। राजनीति से जुड़े व्यक्तियों को उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। परन्तु मासान्त में गुस्सा ज्यादा, भाई-बन्धुओं से तनाव एवं मतभेद रहेंगे। श्री शनि चालीसा का पाठ करना शुभ होगा।

मीन—इस राशि पर गुरू की स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति होगी। परन्तु ता. 23 से मानसिक तनाव व परिवारिक उलझनों के बावजूद धन लाभ कम एवं खर्च अधिक होगा। स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

भविष्यफल—दिसम्बर—सन् 2014 ई.

मेष—राशिस्वामी मंगल उच्चराशिगत होने से व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ व उन्नति के योग हैं। भूमि-सवारी आदि का क्रय-विक्रय भी होगा। मासान्त में कारोबार में व्यस्तताएं बनी रहेगी। परन्तु शनि इस राशि से अष्टम होने से चोटादि का भय एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी बनी रहेगी।

वृष—शनि की सप्तम दृष्टि एवं ता. 5 से शुक्र अष्टम में होने से परिवारिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी उलझनें बढ़ेंगी। आय सम्बन्धी चिन्ता तथा आकस्मिक खर्च बढ़ेंगे। क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ने के योग हैं। श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ राशि (Aquarius)

गु, गे, गो, स, सी, सू, से, सो, द



ग्रह गोचर—राशिस्वामी शनि नवम (भाग्य) स्थान में उच्चस्थ होकर राहु के साथ है। शनि की सूर्य, चन्द्र व बुध पर विशेष तृतीय दृष्टि है। प्रभावस्वरूप वर्षारम्भ में घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 4 फर. से 24 मार्च के मध्य मंगल राशि स्वामी शनि व राहु के साथ योग करेगा, जिससे व्यवसाय में विघ्न बाधाएं तथा आमदन में भी कमी होगी। चोटादि लगने का भय है। खर्च भी बढ़ेंगे। गुरू की दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में व्यवस्तता बढ़ेंगी।

उपाय—हर शनिवार को गरीब वृद्धजनों को खाना खिलाना एवं दानादि से सेवा करना शुभ हो।

मीन राशि (Pisces)

दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि



ग्रह गोचर—वर्षारम्भ से 18 जून तक राशि स्वामी गुरू चतुर्थ भाव में संचार करेगा। इसके अतिरिक्त इस राशि पर 1 नवम्बर तक शनि की ढैय्या का भी प्रभाव रहेगा। पूर्वार्द्ध भाग में धन लाभ अल्प रहे। परन्तु घरेलू खर्च अधिक रहेंगे। परिवारिक उलझनों तथा व्यवसाय के सम्बन्ध में दौड़-धूप भी अधिक रहेगी। ता. 19 जून से राशि स्वामी गुरू कर्क राशि में प्रविष्ट होगा। आय के साधनों में कुछ सुधार होगा। गुजारे लायक आय के स्रोत बनेंगे। गृह में खुशी का समागम होगा। ता. 8 दिसं. से गुरू वक्री होने से अचानक धन खर्च बढ़ेंगे। उपाय—अपने जन्मदिन पर ब्राह्मणों को मिष्ठान्न व दान करना शुभ होगा।

मिथुन—इस मास मिश्रित फल होंगे। धन लाभ व कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। किसी विशिष्ट व्यक्ति के सहयोग से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। परन्तु ता. 24 के पश्चात् किसी नए कार्य की योजना में परिवर्तन का विचार बनेगा। स्वास्थ्य ढीला और मानसिक तनाव बना रहेगा। श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ करना शुभ रहेगा।

कर्क—इस राशि पर मंगल की नीच दृष्टि एवं गुरू की शुभ स्थिति होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। घरेलू कार्यों पर खर्च होगा। परन्तु सरकारी कार्यों में विघ्नों का सामना रहेगा। मासान्त में कार्यव्यवसाय में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। भूमि-वाहन सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो।

सिंह—शनि की ढैय्या का अशुभ प्रभाव होने से मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न और परिवार में विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। गुप्तचिन्ता एवं चोटादि का भय रहेगा। परन्तु ता. 24 से कुछ रूके हुए कार्यों में प्रगति होगी। धर्म-कर्म के कार्यों में रूझान अधिक रहेगा।

कन्या—पूर्वार्द्ध भाग में कुछ सोची योजनाओं में सफलता प्राप्ति के योग हैं। धन लाभ एवं सवारी आदि सुख मिलेगा। उत्तरार्द्ध में अचानक शरीर कष्ट, शत्रु भय, वृथा भागदौड़ एवं धन का खर्च व्यर्थ के कामों पर होगा। श्री दुर्गाकवच का पाठ करना शुभ रहेगा।

तुला—मासारम्भ में व्यर्थ की दौड़धूप, आर्थिक एवं परिवारिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में धन प्राप्ति के साधन बनेंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं विदेशी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं। परन्तु स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल उच्चराशिस्थ होने से गत किए गए प्रयासों में भाग्योन्नति और श्रेष्ठ व्यक्तियों से सम्पर्क लाभकारी होगा। परिवारिक वातावरण सुखद होते हुए भी व्यर्थ की चिन्ता और तनाव रहेगा। मासान्त में स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं धन खर्च अधिक होगा।

धनु—शनि की साढ़ेसति के प्रभाव से व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। वृथा भागदौड़ एवं धन का खर्च शुभ कामों पर होगा। उत्तरार्द्ध भाग में आर्थिक स्थिति में सुधार एवं उन्नति के योग हैं। परन्तु पेट विकार से परेशानी हो।

मकर—इस राशि पर शनि की स्वगृही दृष्टि होने से स्वास्थ्य लाभ व कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के संकेत हैं। परन्तु मासान्त में विघ्नों के बावजूद धन लाभ के योग हैं। सुख-साधनों पर धन का खर्च होगा। श्री दुर्गा कवच का पाठ करना शुभ होगा।

कुम्भ—इस मास में धन लाभ साधारण हो। कार्यक्षेत्र में दौड़धूप अधिक एवं खर्चों की अधिकता से मन परेशान होगा। ता. 17 के पश्चात् विदेशी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। परन्तु स्वास्थ्य ढीला एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी।

मीन—मासारम्भ में कुछ बिगड़े कार्यों में सुधार होगा। धन लाभ व परिवारिक सुखों में वृद्धि होगी। घर-परिवार में शुभ मंगल कार्य भी होंगे। परन्तु ता. 8 से गुरू वक्री होने से स्वास्थ्य कुछ ढीला मानसिक तनाव और सिर-दर्द आदि से परेशानी होगी। श्री गुरू गायत्री मन्त्र का यथाशक्ति जप करना शुभ रहेगा।

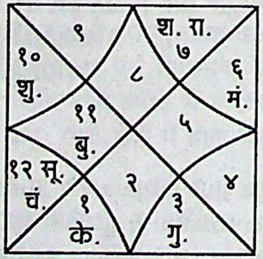
वि. संवत् २०७१ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्-चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व प्रपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे। **'प्लवंग' नामक** नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे नवत्रिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१३९) वर्ष प्रवेशे पण्डित पन्नालाल ज्योतिषी अहं प्रपौत्र पण्डित देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी, द्वयोः पुत्रयोः पण्डित विवेक व पंकज शर्मा सहितोऽहं कुर्वे **पंचाँग दिवाकरम्।**

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,११४ के अन्तर्गते, **श्रीविक्रमी संवत् २०७१** कलि (कल्कि) संवत् ५११५, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५०, सप्तर्षि संवत् ५०९०, श्रीबुद्ध संवत् २६३७-३८, श्रीमहावीर निर्वाण **संवत् २५३९-४०,** शक संवत् **१९३६,** हिजरी सन् १४३५-३६, इंग्लिश सन् २०१४-१५ ईसवी, फसली सन् १४२१-२२, खालसा संवत् ३१५-१६, नानकशाही सम्वत् ५४५-४६, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३२००० वर्षों का होता है।

"प्लवंग" नामक विक्रमी संवत् २०७१ का फल

नववर्ष प्रवेश लग्न



शिव विंशति नियमानुसार **"प्लवंग"** नामक नया विक्रमी संवत् २०७१, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से अर्थात् **31 मार्च सं. 2014 ईसवी तदनुसार प्रविष्टे १८ चैत्र, सोमवार** से प्रारम्भ होगा। परन्तु **नव सम्वत्सर** का प्रवेश 30 मार्च, रविवार की अर्द्धरात्रि को रात 12 बजकर, 15 मिनट पर उ.भा. नक्षत्र एवं ब्रह्म योग कालीन वृश्चिक लग्न में प्रवेश करेगा।

31 मार्च, सोमवार को रेवती नक्षत्र, ऐन्द्र योग एवं मीनस्थ चन्द्रमा कालीन नवीन **प्लवंग नामक** सम्वत् का प्रारम्भ होगा। इसी दिन से चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का भी प्रारम्भ होगा। इस दिन सम्वत्सर पूजन के साथ-साथ श्रीगणेश, विष्णु, महेश एवं देवी दुर्गा की पूजन करने के भी विशेष महत्त्व है। इसदिन से सभी शुभ कृत्यों-जप, पाठ, व्रतानुष्ठान, यश, दान आदि के संकल्पादि का प्रयोग में **प्लवंग नाम** के लिए सम्वत्सर का प्रयोग होगा। वर्ष का राजा चन्द्रमा तथा वर्ष का मन्त्री भी चन्द्रमा होने से मिश्रित (मिले-जुले) प्रभाव होंगे। **'प्लवंग' नामक सम्वत्सर** का फल शास्त्रों में इस प्रकार से वर्णित है-

प्लवंगाब्दे मध्यवृष्टी रोगचौराकुलधरा ।
अन्योऽन्य समरे भूपाः शत्रुभिः ह्वत भूमयः ।।

अर्थात् **प्लवंग** नामक सम्वत् होने पर वर्ष में वर्षा मध्यम स्तरीय हो अर्थात् सामान्य-न अधिक और न अल्प होगी। लोगों में विविध प्रकार के रोगों की व्याप्ति अधिक हो, चोरी, डकैती, छीना-झपटी, लूटमार एवं भ्रष्टाचार की वारदातें अधिक घटित होंगी। जिसके कारण सामान्य लोग भयभीत एवं व्याकुल होंगे। शासकों में परस्पर युद्धभय हो और शत्रु सेना कटुतापूर्वक नीति से भूमि का हरण करने में प्रयासरत रहेगी, अर्थात् कुछ राष्ट्राध्यक्ष कपटपूर्ण नीतियों से अन्य देश की भू-सम्पदा का अधिग्रहण करने की चेष्टा करेंगे।

● **रोहिणी का वास**-संवत् २०७१ में रोहिणी का वास सन्धि पर होगा।

सन्धिसंस्थ यदा ब्राह्म भंजायते।
खण्ड वृष्टिस्तदा सर्वाधान्याप्तयः।।

अर्थात् रोहिणी का वास सन्धि पर होने से वर्ष में खण्ड वृष्टि, अर्थात् असमान वर्षा होगी। कुछ प्रदेशों में अत्यधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ का प्रकोप हो, भूस्खलन, जन-धन, कृषि आदि की हानि हो तथा कुछ प्रदेशों में बहुत कम वर्षा के कारण कृषि, अनाज आदि में कमी एवं च गेहूँ, धान्यादि के मूल्यों में विशेष तेज़ी हो।

● **समय अर्थात् सम्वत्सर का वास वैश्य के घर**-

सर्वधान्यं महर्घं स्यात् वणिक् वेश्मनि संस्थिते।।

अर्थात् समय (सम्वत्सर) का वास वैश्य के घर पर होने से नए वर्ष में धन का प्रसार अधिक होगा। फलतः सब प्रकार के अनाज, धान्यादि के मूल्यों में और अधिक तेजी होगी। राजनीति और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में लोभ एवं स्वार्थ परता बढ़ेगी। खाद्यान्न के व्यवसाय में संलग्न व्यापारी वर्ग विशेष रूप से लाभान्वित होंगे। सामान्य वर्ग में असंतोष बढ़ेगा।

-नवसम्वत् (समय) का वाहन मृग (हिरण)-

वर्ष का राजा चन्द्र होने से सम्वत् का वाहन मृग होगा, वर्ष का अधिष्ठकृत देवता इन्द्र होगा। वर्षा ऋतु में अच्छी एवं व्यापक वर्षा होने के संकेत हैं। गेहूँ, चावल, बाजरा, चने, धान्य, गन्ना, मौसमी फलों, घास आदि की पैदावार अच्छी होगी। समाज में धन-सम्पदा का प्रचुर प्रसार एवं नई-नई सुख-सुविधाओं एवं मनोरंजन के साधनों का विस्तार होगा। बाह्य आडम्बर व आकर्षण के केन्द्रों का भी विस्तार होगा। नए-नए देशी एवं विदेशी औद्योगिक क्षेत्रों का भी विस्तार होगा।

(1) वर्ष के राजा चन्द्र का फल–

चन्द्रे नृपे मङ्गल शोभनानि प्रभूत वृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधि जरा नराणाम् ॥

जिस वर्ष में राजा चन्द्रमा हो, उस वर्ष देश में धन-धान्य, सुख-ऐश्वर्य के साधनों का प्रसार अधिक हो। शुभ एवं मंगल कार्यों पर खर्च अधिक हों, फलस्वरूप महँगाई अधिक बढ़ेगी। देश में किसी नए प्रमुख नेता का उदय हो, अर्थात् आगमन हो। वर्षा प्रचुर मात्रा में होगी। गेहूँ, धान्य, चावल, फल, फूल व अन्य रसदार वनस्पतियों की पैदावार अच्छी हो। कुछ विशेष प्रकार के रोगों की शान्ति के लिए उपचार उपलब्ध होंगे। समाज में स्त्रियों का प्रभाव अधिक बढ़ेगा। वर्ष कुण्डली में चन्द्रमा यदि कुण्डली में अशुभस्थ या पापाक्रान्त हो, तो जातक को कफ, श्वास, बलगम, प्रमेह, मधुमेह एवं मानसिक रोगों की सम्भावनाएं अधिक होंगी।

(2) वर्ष के मन्त्री चन्द्र का फल–

शशिनि मन्त्रिगते बहुसस्यवत्यपिधरारमते सुखमण्डिता।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशि सुशोभिताः।।

चन्द्रमा को मन्त्री पद की प्राप्ति हो, तो उस वर्ष देश में वर्षा अधिक होती है। पृथ्वी पर गेहूँ, धान्य, सरसों, मक्की, चने आदि की पैदावार अच्छी होगी। रूई, कपास, वस्त्र, गन्ना, गुड़, शक्कर, चीनी, दूध आदि सफेद वस्तुओं की पैदावार अच्छी होगी। खाद्यान्न एवं दूध, वस्त्र, चीनी आदि श्वेत वस्तुओं के व्यापार में अधिक विस्तार एवं लाभ प्राप्ति हो। देश में सुख-साधनों एवं ऐश्वर्य के प्रसाधनों में वृद्धि हो।

विशेष–● राजा व मन्त्री के दोनों अधिकार चन्द्रमा को

वर्ष के राजा और मन्त्री–ये दोनों महत्त्वपूर्ण अधिकार एक ही ग्रह चन्द्रमा को प्राप्त होने से समाज में चोरी, ठगी, बेईमानी, डकैती, भ्रष्टाचार एवं अग्निकाण्ड, हिंसक आदि घटनाएँ अधिक होंगी। अधिकांश पार्टियों के नेताओं के मध्य दोष-प्रत्यारोप एवं टकराव पैदा होंगे। समाज में भय एवं अशान्ति का वातावरण हो। नाम या जन्मराशिस्थ चन्द्रमा यदि अशुभ या पापाक्रान्त हो, तो जातक को श्वास रोग, प्रमेह, मधुमेह एवं मनोरोगों की सम्भावनाएँ अधिक होंगी– **स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीडा,**
चौराग्नि विग्रह भयं च नृपाणाम्।।

(3) सस्येश बुध का फल–

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरूपद्रवम्।
द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदा प्रथम सस्यपतौ सति बोधने।।

अर्थात् सस्येश (ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी) बुध हो, तो देश में वर्षा अधिक हो, लोगों में सुख-समृद्धि हो, लेकिन महँगाई एवं खर्च भी बढ़ेंगे। आतंक एवं उपद्रव की घटनाओं में अपेक्षाकृत कमी हो। ब्राह्मण लोग (द्विजगण) वेद अध्ययन, हवनादि धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त होंगे। बुद्धिजीव लोग अध्ययन एवं अध्यापन आदि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। उच्च तकनीकि विद्याओं की ओर लोगों का रूझान बढ़ेगा।

(4) धान्येश मंगल का फल–

भूमिजे ग्रीष्म धान्येश ग्रीष्मधान्यमहर्घकम्।
शालीक्षु घृततैलादि महर्घाणि भवन्ति च।।

धान्यादि फसलों का स्वामी मंगल होने से ग्रीष्मकालीन फसलें जैसे-गेहूँ, चने, सरसों, ज्वार, बाजरा, घी, तैल, सूरजमुखी आदि के मूल्य तेज़ होंगे। चावल, धान्य, ईख, घृत, तैल, दूध, तैलादि स्निग्ध पदार्थों एवं सोना, ताम्बा, पीतल, चान्दी, जवाहरात आदि के मूल्यों में भी तेज़ी होगी। चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार, बेईमानी एवं हिंसक घटनाएं अधिक होंगी।

(5) मेघेश सूर्य का फल–

जलदपे यदिवासरपे तदा सरसि वै रमते जनतारसम्।
यव चणेक्षु–निवार सुशालिभिः सुखचयं सुलभं भुविवर्तते।।

अर्थात् मेघेश (वर्ष का स्वामी) सूर्य हो, तो गेहूँ, जौं, चने, ईख, बाजरा, नीवार, चावल, मूंग की पैदावार अच्छी हो। पृथ्वी पर सुखों के विविध प्रकार के साधनों का विस्तार हो। दूध, गुड़, शक्कर, चावल, ईखादि की पैदावार कम हो, कई स्थानों पर नदी, नालों में जलस्तर कम हो। उपयोगी वर्षा में कमी रहे।

(6) रसेश शुक्र का फल–

यजनयाजनकोत्सव कोत्सुका जनपदा जलतोषि तमानसाः।
सुख–सुभिक्षसुमोदवतीधरा धरणिपा हतपापगणप्रियाः।।

वर्ष में शुक्र रसपति हो, तो लोग यजन-याजन एवं उत्सव आदि करने में उत्सुक रहें। वर्षा पर्याप्त हो। पृथ्वी पर सुभिक्ष, सम्पन्नता एवं सुख व ऐश्वर्य के साधनों में वृद्धि हो। मौसमी फल-फूलादि एवं कृषि उत्पादन में वृद्धि हो, जिससे कृषकवर्ग प्रसन्न हों। प्रशासक वर्ग लोग कल्याण के कार्यों में भी प्रवृत्त हों।

(7) नीरसेश बुध का फल–

चित्र वस्त्रादिकं चैव शंख चन्दन–पूर्वकम्।
अर्धवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि।

अर्थात् धातुओं का स्वामी बुध हो, तो उस वर्ष विभिन्न किस्म के कपड़े, शंख, चन्दन आदि सुवासित लकड़ी, हीरे, पुखराज, मोती, पन्ना, नीलम आदि रत्न तथा सोना, चाँदी, ताँबा, लौह आदि धातुओं के भाव तेज़ होंगे।

(8) फलेश शनि का फल–

यदि शनिः फलपः फलहा भवेत् जनित पुष्पगणस्य दमः सदा।
हिमभयं वरतस्कर जन्तुभीः जनपदो गदराशि महाकुलः।

अर्थात् फलों का स्वामी शनि हो, तो फलदार वृक्षों पर फलों एवं पुष्पों के उत्पादन में कमी हो। पर्वतीय (पहाड़ी) क्षेत्रों में कहीं प्रतिकूल वर्षा एवं असामयिक बाढ़ादि के कारण

हानि हो। चोरी, ठगी, बेईमानी व भ्रष्टाचार की घटनाएँ अधिक हों। प्रदूषण, श्वास एवं क्लिष्ट मानसिक रोगों के कारण अधिकांश लोग दुखी रहें।

(9) धनेश मंगल का फल

असम–मौल्यकरो धरणीसुतः शरदितापकरस्तुष–धान्यह्वत।
सहसि मासि भवेद्द्विगुणं तदा नरपतिः जनशोक–विधायकः।।

धनधिपति मंगल हो, तो थोक व्यापारिक वस्तुओं के सूचकांक में विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। शेयर एवं वायदा व्यापार में अस्थिरता का माहौल रहे। शरद् आदि ऋतुओं के परिवर्तन में भी अनिश्चिताओं की स्थिति रहे। गेहूँ, जौं, चने, धान्य आदि फसलों को असामयिक वर्षा, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण हानि पहुँचे। पहले से स्टॉक की गई व्यापारिक वस्तुओं को मार्गशीर्ष (नवं.-दिसं.) मास में बेचने पर दोगुणा लाभ प्राप्त हो। राजनेताओं की अधिकांश नीतियाँ साधारण प्रजा के दुखों एवं कष्टों का कारण होंगी।

(10) दुर्गेश (सेनापति) सूर्य का फल–

नयविशेषकरस्तरीण स्तदा गतभया–नरराज–पुरोगमाः।
समधिको न तदानृपजोन्यजः स्वपथजं व्रजतांन भयं क्वाचित्।।

दुर्ग (सेना) का स्वामी सूर्य हो, तो नेता आदि प्रशासक वर्ग न्याय का पालन करने में प्रवृत्त हों। राजदरबार (सरकारी तन्त्र) से सम्बद्ध लोग निर्भय होकर आचरण करें। राजकीय लोगों एवं प्रजा के मध्य भागीदारी बढ़े। अपने नियत मार्ग पर चलने वालों (अर्थात् कर्त्तव्य पालन करने वालों) को कुछ भी भय न हों। अधिकांश देश प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संहारक परमाणु हथियारों का निर्माण करने में प्रवृत्त होंगे।

नोट–वर्ष के उपरोक्त **दशाधिकारियों** का फल यद्यपि सर्वत्र होता है। परन्तु **राजा का फल** विशेष रूप से काश्मीर, बांगलादेश, अफ़गानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं हिमालय के निकटवर्ती क्षेत्र, **मन्त्री का फल** आन्ध्र प्रदेश, मालवा, उज्जैन आदि मध्य प्रदेशों में विशेष फल होता है। वैसे सामान्यतः राजा व मन्त्री का फल देश के प्रायः सभी क्षेत्रों में होता है।

नवमेघों में ''वायु'' नामक मेघ का फल–

नैव अम्बुवृष्टिं कुरूते सुरेशः समस्त धान्याम्बर कण्यनाशः।
धराधरः स्यादयदि वायुनामाजनव्रजस्तर्हि विहीनधामा।।

अर्थात् यदि '**वायु**' नाम का मेघ हो, तो इन्द्र जल की वर्षा न करे, अर्थात् देश में अनेक स्थलों पर उपयोगी वर्षा की कमी रहे। सब प्रकार के धान्यों, अर्थात् अनाज का नाश हो। विभिन्न प्रकार की जनोपयोगी वस्तुओं की कमी हो जाने से बहुत से लोग आश्रयहीन (विहीनधाम) हो जाएँ।

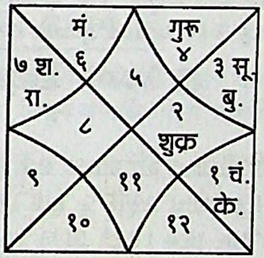
द्वादश नागों में ''तक्षक'' नामक नाग का फल–

तक्षकाभिध नागेन्द्रो जायते यत्र वर्षके।
तत्रमध्यमवृष्टिः स्याद्विग्रहा नृपतेः मति।।

अर्थात् जिस वर्ष में '**तक्षक**' नामक नाग हो, तो उस वर्ष वर्षा मध्यम हो और राजनेताओं में परस्पर विग्रह (झगड़े) उत्पन्न हों। अर्थात् राजनेताओं में परस्पर खींचातानी बढ़े।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश फल–वि. २०७१
(वर्षा एवं वायुमण्डल विचार)

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुं.
22 जून, सं. 2014 ई. 10/39



वि. सम्वत् २०७१ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि, अश्विनी नक्षत्र एवं अतिगण्ड योग कालीन प्रातः 10 बजकर 39 मिनट पर, 22 जून रविवार को सिंह लग्न में प्रवेश करेंगे। आर्द्रा प्रवेश कुण्डली में सिंह लग्न राशि (अग्नि तत्त्व) उदित हुई है। लग्नेश सूर्य एकादश भाव में बुध (पृथ्वी तत्त्व) ग्रह के साथ **वायु तत्त्व** एवं पश्चिम दिशा की सांकेतिक राशि मिथुन में पड़ा है। ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के पश्चिमी व पूर्वी भागों, जैसे–महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पं. बंगाल, उड़ीसा, उ. प्रदेश, असम, हरियाणा, पंजाब आदि के अधिकांश क्षेत्रों में गर्मी का तापमान बढ़ेगा। राजस्थान, गुजरात व मध्य प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब आदि में भीषम गर्मी और गर्म हवाएँ चलने के योग हैं। पश्चिम-पूर्व भारत में मानसून की वर्षा यथासमय पर होने पर भी कुछ भागों में अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी एवं बिजली/पानी की कमी हो और कहीं दुर्भिक्ष एवं सूखे जैसी स्थिति बनेगी। मेष राशि पर **चन्द्र** (जोकि वर्ष का राजा भी है, **नवम् स्थान में केतु** के साथ पड़ा है, उस पर शनि की नीच दृष्टि भी पड़ रही है। फलस्वरूप भारत के पश्चिमी एवं पूर्वोत्तरी भागों जैसे–बिहार, उड़ीसा, पं. बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, पंजाब आदि के कुछ क्षेत्रों में अनुकूल वर्षा की कमी किंवा खाद्यान्न की कमी, सूखा, दुर्भिक्ष एवं बिजली/पानी की कमी एवं दिक्कत होने के संकेत मिलते हैं। समाज व सरकार को सावधान होने की आवश्यकता होगी।

आर्द्रा कुं० में **गुरू** द्वादश भाव में **कर्क (जल-राशि)** में स्वोच्च तथा **जलीय ग्रह शुक्र वृष** (स्वराशि) में होने से वर्षा ऋतु में उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे–उ. प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब एवं राजस्थान के ऊपरी क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होने के संकेत हैं। कहीं बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि, जन-धन आदि की हानि होने के भी योग हैं। सूर्य द्वारा आर्द्रा प्रवेशकालीन रविवार होने से चौपायों एवं दूधधारी पशुओं की वृद्धि में कमी रहे। फलस्वरूप दूध एवं दूध से निर्मित मिठाई के दामों में विशेष तेज़ी हो।

दिनपतिवारे पशुपतिधिष्ण्ये। दिनपतिवेशे सति पशुनाशः।

इसके अतिरिक्त आर्द्रा प्रवेशकालीन अतिगण्ड योग होने से राजनेताओं एवं लोगों में अनेक स्थलों पर परस्पर विग्रह एवं टकराव के हालात् पैदा होंगे–

अतिगण्डाख्य योगे चेदार्द्रायाति दिवाकरः। परस्परं युद्धं चर्हि कुर्वन्ति भूमिपाः।।

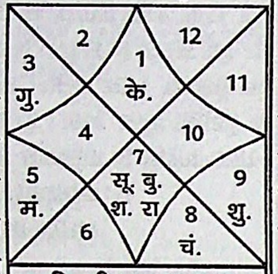
शनि की दृष्टि–वि. संवत् २०७१ में शनि देव तुला राशि में 1 नवं., 2014 ई. तक संचार करेंगे। तुला राशि में संचारकालीन शनि की धनु, मेष तथा कर्क राशियों पर दृष्टियां रहेंगी तथा कन्या, तुला एवं वृश्चिक राशि वाले जातकों व राष्ट्रों पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा की तरफ रहेगी। अतएव पश्चिम प्रान्तों तथा पश्चिमी देशों (विशेषकर मेष, कर्क एवं धनु राशि वाले देशों/प्रान्तों) जैसे–इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, श्रीलंका, हालैण्ड, सिन्ध, स्पेन, गुजरात, उ.प्र.) में प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, तूफान, भूकम्प, आतंकवादी विस्फोट एवं हिंसक घटनाएं तथा राजनैतिक क्षेत्रों में उथल–पुथल होने की व्यापक सम्भावनाएँ होंगी।

2 नवम्बर, 2014 ई. से शनिदेव वृश्चिक राशि में संचार करेंगे। वृश्चिक राशि संचारकालीन शनि की मकर, वृष तथा सिंह राशियों पर दृष्टियाँ रहेंगी तथा तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि वाले जातकों/राष्ट्रों पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव रहेगा। शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ रहेगी। फलस्वरूप उत्तरी प्रान्तों तथा उत्तरी देशों (विशेषकर वृष, सिंह एवं मकर राशि वाले देशों/प्रान्तों) जैसे–आयरलैण्ड, मध्य–प्रदेश, जर्मनी, बिहार, सिक्किम, दिल्ली, फ्रांस, शिकागो, उत्तराखण्ड, काश्मीर, पंजाब, हि.प्र.) में प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, तूफान, भूकम्प, आतंकवादी विस्फोट एवं हिंसक घटनाएं तथा राजनैतिक क्षेत्रों में उथल–पुथल, सत्ता–परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं बनेंगी।

गुर्रफल विचार–(सन् 2014-15 ई०)

ईस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली

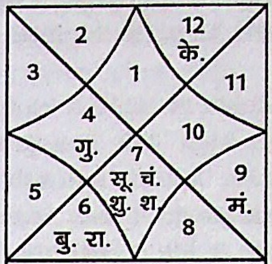


हिजरी सन् 1435

वि. संवत् 2070 में 5 नवम्बर, 2013 ई., मंगलवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1435 शुरु होगा। मंगलवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से हिजरी वर्ष का बादशाह मंगल (मरीख) ही होगा। लग्न भाव में केतु तथा गुरु–शुक्र के मध्य समसप्तक योग दो देशों के मध्य युद्ध जैसे हालात का संकेत कर रहे हैं अथवा मुस्लिम देश में ही आतंकवादी या विरोधी गुटों द्वारा युद्धमय वातावरण बनाया जाएगा।

सन् 2014 ई. (अक्तू. तक) में मुस्लिम देशों में अग्निकाण्ड, उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक होंगी। कहीं अप्रत्याशित रूप से सत्ता–परिवर्तन के भी योग हैं। गर्मी, खुश्की व त्वचा सम्बन्धी रोग अधिक होंगे। सीरिया, पाक, ईराक, अफगानिस्तान, मिस्र आदि मुस्लिम राष्ट्रों में सत्तारूढ़ सरकारों को ज़बरदस्त राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। तालिबान आदि विरोधी गुटों द्वारा ज़बरदस्त विस्फोटक घटनाएं अंजाम दी जा सकती हैं। महँगाई, मुद्रा–स्फीति आदि में वृद्धि तथा आतंकी घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि होगी।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली



हिजरी सन् 1436

वि. संवत् 2071 में 26 अक्तूबर, 2014 ई. रविवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1436 शुरु होगा। रविवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी वर्ष 1436 (सन् 2014-15 ई.) का बादशाह साल सूरज (सूर्य) होगा।

इस्लामी मतानुसार निर्धारित वर्ष कुण्डली में मेष लग्न उदित हुआ है। लग्नेश मंगल भाग्य स्थान में शुभ है, परन्तु शनि द्वारा दृष्ट है। सप्तम भाव में सू., चं., शु., श. आदि चार ग्रह लग्न भाव पर अशुभ प्रभाव डाल रहे हैं। इसके अतिरिक्त पाक, इराक (बगदाद), टर्की आदि मुस्लिम राष्ट्रों की प्रभाव राशि कन्या पापाक्रान्त है। फलस्वरूप पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक, मिस्र, लीबिया, सूडान, यमन आदि मुस्लिम देशों में आन्तरिक, सामाजिक एवं राजनीतिक हालात अत्यन्त असमंजसपूर्ण, अस्थिर एवं संघर्षपूर्ण रहेंगे। कुछ मुस्लिम देशों में आतंकवादी, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण निरीह लोगों की जानों–माल का खतरा होगा। कहीं बाढ़, भूकम्पादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी जन–धन की क्षति होने के संकेत मिलते हैं। कहीं अप्रत्याशित रूप से पुनः सत्ता–परिवर्तन के योग हैं। परन्तु कुछ शासक एवं प्रजा सुखी भी रहेगी।

जल आदि चार स्तम्भों का फल–संवत् २०७१

(1) **जल स्तम्भ**–चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क लगभग 94% है। वर्षा पर्याप्त एवं अच्छी होगी। आगामी वर्ष कुछ राज्यों में मध्यम से कुछ अधिक स्तर की वर्षा होगी। बिहार, उत्तर–प्रदेश, असम, हि.प्र., हरियाणा, पंजाब आदि राज्यों में समुचित वर्षा होगी। राजस्थान के सुदूर ईलाकों में भी अच्छी वर्षा होगी। इस वर्ष रोहिणी का वास 'सन्धि' के घर में होने से कुछ क्षेत्रों में अत्याधिक वर्षा से बाढ़ तथा कुछ क्षेत्रों में कम वर्षा से कृषि आदि की हानि भी होगी। चावल, गन्ना, रूई का उत्पादन अच्छा हो।

(2) **तृण स्तम्भ**–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क लगभग 91% है। फलस्वरूप घास, तृण, बांस, जड़ी–बूटियों, पौधों, पशुचारा तथा वनस्पतियों की फसल पहले से ओर अच्छी होगी। पशुचारा, घास तथा धान्यादि की फसल भी जल–स्तम्भ की सहायता

से अच्छी होगी। आयुर्वेदिक दवाईयों के दाम विशेष नहीं बढ़ेंगे। सरकार की नीति एवं घोषणाएं भी तृण स्तम्भ के प्रतिनिधि कृषकवर्ग के लिए सुविधाजनक एवं लाभप्रद रहेंगी।

(3) वायु स्तम्भ–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 23% है। कुछ क्षेत्रों में अपूर्व वायु-वेग, भूकम्प आदि से व्यापक हानि तथा कुछ क्षेत्रों में मेघों के संचालन की व्यवस्था ठीक न होने से कुछ क्षेत्रों में गर्मी, आर्द्रता बढ़ेगी तथा खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी। कहीं व्यापक वर्षा, बाढ़ तथा कहीं कम वर्षा के कारण कुछ क्षेत्र सूखाग्रस्त भी रहेंगे।

(4) अन्न स्तम्भ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क मात्र 35% है। जल एवं तृण स्तम्भ सुदृढ़ होने के बावजूद विपरीत जलवायु के कारण कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि की पैदावार गुज़ारेलायक ही हो पाएगी। सर्वप्रकार के अनाज, दालें आदि तेज भाव होंगी। सरकार को अन्न-भण्डारण एवं अनाज वितरण सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सरकार को इस सम्बन्ध में विशेष पग एवं कानून लाने पड़ेंगे।

ऊपरलिखित चार स्तम्भ किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं मापने में विशेष महत्त्व रखते हैं क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक एवं जलवायु व्यवस्था मुख्य रूप से इन चार स्तम्भों पर निर्भर रहती है।

✠ आर्षमान द्वारा रक्षा फल-विचार ✠

आर्षमान को वर्ष में राष्ट्र की रक्षा के चार दुर्गों (किले), समृद्धि एवं सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।

(1) प्रथम आर्ष–गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का स्पर्श 72 प्रतिशत है।

(2) द्वितीय आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र 98.5% है।

(3) तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क 95% है।

(4) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का अभाव है।

फल–इस वर्ष रक्षा के संकेतक प्रथम तीन आर्ष (दुर्ग) सुदृढ़ हैं। केवल चतुर्थ दुर्ग का अभाव है। फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों, परमाणु ऊर्जा एवं सुरक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा उल्लेखनीय प्रयास किए जाएंगे। सीमा सुरक्षा तथा घुसपैठ रोकने के लिए विशेष सुरक्षा उपाये किए जाएंगे। अन्तर्राष्ट्रीय एवं आर्थिक, रक्षाक्षेत्र में भारत की स्थिति सुदृढ़ होगी। परन्तु एक दुर्ग नगण्य होने से कहीं सीमा पर घुसपैठ, आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण आन्तरिक सुरक्षा को खतरा रहेगा।

–वर्षादि के विश्वामान–

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होगी। जैसे आगे सं. २०७१ में वर्षा के विश्वा 15 लिखें हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष वर्षा मध्यम से अधिक ही होगी।

वर्षा १५, धान्य ९, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ७, तृषा ३, निद्रा ५, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १७, पाप १७, पुण्य ५, व्याधि ३, व्याधिनाश १७, आचार १७, अनाचार ५, मृत्यु १, जन्म ९, देशउपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चोरभय ९, चोरनाश १, अग्नि १५, अग्निशान्त १, उद्भिज १५, जरायुज ३, अंडज ९, स्वेदज ७, टिड्डी १७, तोता १३, मूषक ३, सोना १७, तांबा १९, स्वचक्र ३, परचक्र ५, वृष्टि ७, अनावृष्टि १५।।

गुरू का कर्क राशि में प्रवेश सं. 2014 ई.

वर्ष 2014 ई. के आरम्भ में गुरु मिथुन राशि में वक्री अवस्था में संचरणशील है। (6) मार्च को मार्गी होगा। (19) जून से गुरु **कर्क राशि** में प्रविष्ट होगा। मिथुन व कर्क–दोनों राशियों में संचार का फल शास्त्र में इस प्रकार से लिखा गया है।

मिथुन राशि में संचार का फल

(वर्षारम्भ से 18 जून तक)

मिथुने च गुरूर्याति तत्राब्दे दारूणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।

अर्थात् जिस वर्ष मिथुन राशि में गुरु (वृहस्पति) होवे, उस वर्ष देश में भय एवं परेशानी कारक घटनाएँ घटित होंगी। राजाओं (प्रशासकों) में पारस्परिक सीमाओं पर विग्रह अर्थात् युद्ध जैसे हालात बनेंगे। उपयोगी बारिश की कमी रहेगी अर्थात् अनुपयोगी वर्षा के कारण बाढ़ादि का प्रकोप रहेगा।

''उपरोक्त भविष्यवाणी के अनुसार वर्ष के पूर्वार्द्ध में चीनी एवं पाकिस्तानी फौजों के साथ टकराव तथा भारतीय जवानों की क्षति हुई।''

कर्क राशि में गुरू का प्रवेश–संवत् २०७१

(19 जून से वर्षान्त तक)

बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पमेघः प्रवर्षति।
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।। (अर्घ प्रकाश)

अर्थात् बृहस्पति जब कर्क राशि में प्रविष्ट हो, तो उस वर्ष भी अनुकूल वर्षा की कमी होती है। कहीं दुर्भिक्ष अर्थात् खाद्यान्न के उत्पादन में कमी हो, राजाओं अर्थात् राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर टकराव एवं युद्ध का माहौल बनेगा। गेहूँ, धान्य, तेल, चावल, घी, नमक, उड़द, लौंग, मिर्च, दालचीनी, इलायची, जायफल आदि महँगे होंगे। इन वस्तुओं को शीत में संग्रह करके वैशाख, ज्येष्ठ में बेचने में दोगुना लाभ हो, वर्षा ऋतु में बहुत वर्षा होने से धान्यादि की कृषि अच्छी होगी–

वैशाख ज्येष्ठयोर्लाभोद्विगुणःतस्य विक्रयात्।
वर्षाकाले महावर्षा सर्वधान्य समर्घता।। (व.प्र.)

★ वि. संवत् 2071 में लाभ-हानि चक्र ★

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम पर शुभ कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हों। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। कोई बिगड़ा कार्य बनेगा। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
हानि	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

यमघण्टक योग →

क्रकय योग, संवर्त, दग्ध, कुलिक, उत्पात, यमघण्टक आदि योग मंगल कर्मों का सम्पादन करने के लिए त्याज्य माने गए हैं। वसिष्ट जी के अनुसार-''**शुभकार्य प्रसूतौ च सर्वदा परिवर्जयेत्।**'' शुभ यात्रा एवं छोटे बच्चों के शुभ कार्यों के सम्पादन में तथा छोटे शिशुओं की पैदायश काल में भी इस योग का विचार किया जाता है। ऋषि वसिष्ठ अनुसार दिवसकाल में यमघंटक आदि दुष्ट योग हो तो मृत्युतुल्य कष्ट देता है, परन्तु रात्रिकाल में इसका फल अशुभ नहीं माना जाता है।

दिवा मृत्युप्रदाः पापा दोषस्त्वेतेन न रात्रिषु।

ध्यान रहे, किसी कुयोग के समय अन्य सिद्धि आदि सुयोग भी वर्तमान हो जाए, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है-

अयोगः सिद्धि योगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धि योगः प्रवर्त्तते॥ (राजमार्तण्ड)

ज्वालामुखी योग-(वि. संवत् २०७१)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार 5 नक्षत्रों एवं 5 तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है-

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गाँव,
नारी पहने चूड़ियां, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कुएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयोक्तपूर्ण हो सकती है, परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीर्ष सूख जाए-यदि कोई रोगग्रस्त हो तो जल्दी ठीक न हो-इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ज्वालामुखी योग (संवत् २०७१)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
9 अप्रै.	13	00	10 अप्रै.	07	58
13 जून	12	54	14 जून	6	34
17 अग.	10	53	18 अग.	6	07
18 अग.	11	53	19 अग.	6	58
12 सितं.	20	10	13 सितं.	19	01
17 अक्तू	16	08	18 सितं.	16	37
22 दिसं.	7	06	22 दिसं.	19	14
25 फर.15	10	54	25 फर.	17	47
26 फर.	10	45	26 फर.	18	27

यमघण्टक योग (सन् 2014 ई.)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
1 जन.	सू.	उ.	1 जन.	11	09
14 जन.	सू.	उ.	15 जन.	सू.	उ.
19 जन.	सू.	उ.	19 जन.	21	39
7 फर.	06	14	7 फर.	सू.	उ.
11 फर.	सू.	उ.	11 फर.	16	29
6 मार्च	14	34	7 मार्च	सू.	उ.
7 मार्च	15	55	8 मार्च	सू.	उ.
3 अप्रै.	सू.	उ.	3 अप्रै.	24	56
4 अप्रै.	सू.	उ.	4 अप्रै.	26	28
1 मई	सू.	उ.	1 मई	10	01
2 मई	सू.	उ.	2 मई	11	18
7 जून	15	24	8 जून	सू.	उ.
5 जुला.	सू.	उ.	5 जुला.	25	11

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
8 जुला.	02	50	8 जुलाः	सू.	उ.
2 अग.	सू.	उ.	2 अग.	8	05
4 अग.	10	54	5 अग.	सू.	उ.
25 अग.	03	02	25 अग.	सू.	उ.
1 सितं.	सू.	उ.	1 सितं.	18	01
3 सितं.	17	33	4 सितं.	सू.	उ.
16 सितं.	22	20	17 सितं.	सू.	उ.
21 सितं.	सू.	उ.	21 सितं.	9	24
1 अक्तू	सू.	उ.	1 अक्तू	23	04
14 अक्तू	सू.	उ.	15 अक्तू	सू.	उ.
19 अक्तू	सू.	उ.	19 अक्तू	19	35
11 नवं.	सू.	उ.	11 नवं.	17	00
4 दिसं.	23	22	5 दिसं.	सू.	उ.
5 दिसं.	23	19	6 दिसं.	सू.	उ.

वि. संवत् २०७१ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियाँ

- नया **'प्लवंग' नामक सम्वत्** होने से अधिकांश मुस्लिम बाहुल्य देश कपटपूर्ण राजनीति का आचरण करेंगे। सीमावर्ती क्षेत्रों में पाकिस्तान, चीन आदि देश भारतीय सीमाओं का अतिक्रमण करके भारतीय हितों को हानि पहुँचाने की फिराक में रहेंगे।
- **राजा और मन्त्री के दोनों** अधिकार केवल **चन्द्रमा को प्राप्त** होने से समाज में भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, बेईमानी, लूटमार एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेज़ी होने से सामान्य लोगों में आक्रोश एवं परेशानियाँ बढ़ेंगी।
- **जगत् लग्न कुण्डली** में ग्रहस्थिति के अनुसार, विश्व एवं भारत का राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध एवं संघर्षपूर्ण रहेगा। अमरीका सहित अन्य देशों, जैसे—पाकिस्तान, भारत, अफगानिस्तान, मिस्र, सीरिया, ईराक आदि देशों में आतंकी कार्यवाही या भीषण दुर्घटना से जन-धन सम्पदा आदि की हानि होने के योग हैं।
- अमेरिका, कैनेडा, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली आदि यूरोपीय देशों की तुलना में भारत में **मुद्रा स्फीति एवं अवमूल्यन** के कारण आर्थिक मन्दी का माहौल बनेगा।
- भारत में **भावी लोकसभा चुनावों में** किसी एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होगा। राजनैतिक अस्थिरता एवं गतिरोध पैदा होंगे। यू.पी.ए. और एन.डी.ए. दोनों पार्टियों द्वारा नए गठजोड़ एवं समीकरण बनाए जाएँगे। केन्द्र में अप्रत्याशित रूप से नया नेतृत्त्व वजूद में आएगा।
- महँगाई, भ्रष्टाचार, कानून व अर्थव्यवस्था की गिरती एवं शोचनीय स्थितियों के कारण यू.पी.ए. सरकार की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुँचेगा।
- तीसरे मोर्चे की सहायता से गठबन्धन के अस्तित्व में आने के प्रबल योग। पुनः गठबन्धन सरकार केन्द्रिय सत्ता में आने के योग हैं।
- अलग तेलंगाना राज्य की घोषणा के बाद देश के विभिन्न प्रदेशों में अलग राज्यों की मांगें प्रचण्ड उग्र रूप धारण कर लेंगी। जैसे—गोरखालैण्ड, बोडोलैंड, विदर्भलैंड, पूर्वांचल, बुंदेलखण्ड आदि। पृथक राज्यों की माँगों की पूर्ति करना केन्द्रीय सत्ता सरकार के लिए विकट चुनौतिपूर्ण एवं कठिन कार्य होगा। कई स्थानों पर उपद्रव, उग्र जनांदोलन व हिंसा की घटनाएँ घटित होंगी। नई केन्द्रीय सरकार के लिए भी अग्नि परीक्षा का समय होगा।
- (15 फर. से 16 मार्च तक) **पाँच शनिवार और पांच रविवार** तथा 4 फर. से 24 मार्च के मध्य मंगल-शनि का योग होने से किसी प्रमुख नेता के लिए अशुभ संकेत हैं। कहीं सत्ता परिवर्तन एवं कहीं हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं।
- **जून-जुलाई में कर्क राशिस्थ गुरु अतिचार हो** रहा है तथा शनि पहले से वक्री होने से सत्तारूढ़ प्रमुख नेता के लिए हानिकारक स्थिति होगी। देश की सीमाओं पर विस्फोटक घटनाएं एवं सत्ता परिवर्तन के योग हैं। उत्तराखंड, हिमाचल, उ.प्र. आदि में बाढ़ के प्रकोप से जन-धन-सम्पदादि की क्षति होने के संकेत हैं।
- **खप्पर योग**—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद (14 जून से 9 सितं. तक) तीन महीनों में क्रमशः पांच शनि, पांच रवि. और पांच मंगलवार होने से खप्पर योग बनता है। इसके अनिष्टकर प्रभावस्वरूप देश में छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन), या किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ होने के संकेत हैं।
- 67वें स्वतन्त्र भारत की कुं. अनुसार आगामी पाँच राज्यों के विधानसभों चुनावों में भाजपा तथा कांग्रेस में कांटे की टक्कर के बावजूद भाजपा की स्थिति बेहतर होगी।
- पुनः **खप्पर योग**—मार्गशीर्ष से माघ मास के मध्य (7 नवं. से 3 फर. 2015 ई.) पुनः **खप्पर योग** होने से देश के उत्तर पश्चिमी भागों में आतंकी एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। कहीं छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन) होने के योग हैं।

ज्योतिष शास्त्र का एक नाम **ज्योतिःशास्त्र** भी है, जिसका अर्थ प्रकाश देने वाला अर्थात् जिस शास्त्र द्वारा संसार का मर्म, जीवन-मृत्यु का रहस्य और जीवन के सुख-दुख के सम्बन्ध में पूर्ण प्रकाश मिले, वही ज्योतिषशास्त्र कहलाता है।

ज्योतिषशास्त्र सृष्टि और प्रकृति के रहस्यों को व्यक्त करने वाला है। ज्योतिषशास्त्र की प्राचीनता, व्यापकता एवं इसके प्रभाव का उल्लेख वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर मिलता है। वेदाङ्ग साहित्य में ज्योतिष शास्त्र को नेत्रों के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसकी सहायता के बिना श्रौत, स्मार्त्त अर्थात् धर्मपरायण सभी गृहस्थी एवं श्रुति-स्मृति परायण धर्माचार्यों के अधिकांश कार्य वेदाङ्ग चक्षु ज्योतिष के बिना सफल नहीं माने जाते थे-

वेदस्य निर्मलं चक्षु ज्योतिःशास्त्रमकल्मषम्।
विनेतदखिलं कर्म श्रौतं स्मार्त्तं न सिद्ध्यन्ति।।

ज्योतिष को ज्ञानरूपी शरीर का नेत्र कहा गया है, अर्थात् नेत्रों के बिना जैसे शरीर अपूर्ण और व्यर्थ है, उसी प्रकार ज्योतिषज्ञान के बिना अन्य विषयों का ज्ञान अपूर्ण और अनुपयोगी है।

ईसवी पूर्व पाँचवी शती के साहित्य का सूक्ष्म निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि प्राचीन युग में ज्योतिष शास्त्र ने वेदांगों में श्रेष्ठ एवं अभिन्न स्थान प्राप्त कर लिया था। वैदिक एवं पौराणिक साहित्य के अतिरिक्त ज्योतिष शास्त्र का सम्बन्ध दर्शनशास्त्र, नाट्य एवं अध्यात्मशास्त्र, आयुर्वेद, कर्मकाण्ड, भूगर्भशास्त्र आदि. कालगणना पद्धति तो ज्योतिषशास्त्र की मानव को महत्त्वपूर्ण देन है। इसमें निमेष से लेकर युगों तक की परिकल्पना की गई है। भारतीय परम्परानुसार किसी भी विशेष उद्योग को या किसी धार्मिक अनुष्ठान को प्रारम्भ करने से पूर्व शुभ संकल्प किया जाता है। जिसके अन्तर्गत श्री भगवान् के स्मरण के साथ-साथ कल्प मनवन्तर, वर्तमान युग, सम्वत्, अयन, ऋतु, पक्ष, मास, तिथि, वार, नक्षत्रादि का उच्चारण किया जाता है। अपने नाम गोत्र, वंश आदि तथा जपादि कर्म के निमित्त एवं उद्देश्य का उल्लेख भी किया जाता है।

परमपिता श्री परमात्मा की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **''पंचांगदिवाकर''**, **'मुफीद आलम जन्त्री'** (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) **एवं तिथ पत्रिका** (पंजाबी भाषा) को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७१ (2014-15 ई.) में **गौरवशाली 139 वर्ष** हो जाएंगें। पंचाँग दिवाकर समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम पूज्य पितामह विश्वविख्यात **मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी** (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में **शताब्दि से भी अधिक वर्षों** पर्यन्त ज्योतिष जगत् के क्षेत्र में **हमारी पंचांग, जन्त्री** एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि वह असली व प्रामाणिक **पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका गुरूमुखी, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारी प्रकाशित 'अर्द्धशताब्दि पंचांग'** एवं दशवर्षीय पंचाँगों के भीतर प्रथम पृष्ठ पर गणितकर्त्ता पं. पन्ना लाल ज्योतिषी एम. ए. का नाम व फोटो, पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) व पंकज शर्मा तथा मुख्य वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें ताकि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचाँग ही प्राप्त कर सकें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों की चामत्कारिक भविष्यवाणियां

जो ईश्वर कृपा से अक्षरशः सही निकली हैं। जैसे-भारतवर्ष का ब्रिटिश शासन से आज़ाद होना संवत् २००४ (1947-48 ई०), प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का निधन 27 मई, 1964 ई., बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन, **ईरान-ईराक युद्ध** (2039), पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी की आकस्मिक मृत्यु संवत् 2041, (सन् 1994 ई०), पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गांधी की आकस्मिक मृत्यु (सन् 1990 ई.), सन् 1998 में मोर्चा सरकार (गुजराल सरकार) का पतन (२०५५) तथा लोकसभा चुनावों में भाजपा का सफल होकर सत्तारूढ़ होना आदि। **संवत् २०५६ के पंचाँग दिवाकर पृ० 49 कालम-II पर** स्पष्टतः पढ़े ''जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती भागों में पाकिस्तानी सेना द्वारा घुसपैठ एवं गोलाबारी करना।'' ''जैसा कि कश्मीर-कारगिल क्षेत्र में हुआ। तथा हरियाणा में बंसीलाल सरकार का टूटना'', पृष्ठ 50 का I

संवत् २०५७ के पंचांगदिवाकर में-''पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलटना तथा आपात् स्थिति का लगना तथा शासन परिवर्तन, छत्रभंग, राजनीतिक टकराव व हिंसक घटनाएं होना (पृष्ठ 51-कालम I व II)''

सं. २०५८ के पंचांगदिवाकर में पृष्ठ 56, **अमेरिका**-(कालम II) पर जगत लग्न में कालसर्प योग के कारण मिथुन व धनु राशि वाले देशों में भयानक विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। जैसा कि अमरीका में दुखद त्रासदी घटित होना।

संवत् **२०६०** में ईराक में सत्ता परिवर्तन के योग के बारे में स्पष्टतः पढ़े पृष्ठ 63।

संवत् **२०६१** की पंचांग में स्पष्टतः पढ़ें-**आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गांधी की विजय तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी।** पृष्ठ 67 कालम I.

संवत् २०६२ (2005-06) ''पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना (पृष्ठ 56 का II, पृष्ठ 60-I)

संवत् २०६३ (2006-07)की **पंचांग में पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन के योग (पृष्ठ 55)** 24 मई से 12 जुलाई के मध्य मंगल-शनि योग के कारण कश्मीर, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उपद्रव, हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं **(जैसा कि मुम्बई में 11 जुलाई को अनेकों बम विस्फोट हुए)** पृ. 59 का. *II*)

संवत् २०६४ (2007-08) में पृष्ठ 56 पर मुख्य बाक्स पर स्पष्टत: पढ़ें–''उ.प्र., उत्तराखण्ड, **पंजाब प्रदेशों** में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।'' नतीजे आपके सामने थे।

संवत् २०६५ (2008-09) के पृष्ठ 59 पर मुख्य बाक्स में आप स्पष्टत: पढ़ें–

'गुजरात में अनेक आन्तरिक एवं कांग्रेसी विरोध के बावजूद भाजपा एवं मोदी सरकार का विजयी होना।'

संवत् २०६६ (2009-10 ई.) के पृष्ठ 71 पर कालम-I में अमेरिका शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टत: पढ़ें–**''डेमोक्रेट प्रत्याशी बराक ओबामा को संघर्षपूर्ण चुनौतियों के बाद सफलता प्राप्ति होना''** पृष्ठ 75 पर **जम्मू-कश्मीर** शीर्षक के अन्तर्गत ''**आगामी विधान व लोकसभा चुनावों में उमर अब्दुल्ला की नैशनल कांफ्रेंस गठबंधन का प्रभावक्षेत्र बढ़ना**–यही नहीं **राजस्थान शीर्षक** के अन्तर्गत पढ़ें–''प्रभावराशि पर केतु का संचार प्रधाननेता **श्रीमती सिंधिया** जी के लिए समय शुभ नहीं है। **भाजपा को चुनावों में हार का सामना। कांग्रेस को विधानसभा में सफलता प्राप्त होना।''**

संवत् २०६७ (2010-11 ई०) के पृष्ठ **67 पर** प्रमुख बाक्स में स्पष्टत: पढ़े–''**भारत की सीमाओं पर चीन, पाकिस्तान व अन्य आतंकी घुसपैठ एवं हमलों के खतरे बढ़ना''।**

हरियाणा प्रान्त के शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टत: पढ़ें–''**विपरीत हालात एवं आक्रोश के बावजूद कांग्रेस विपक्षी दलों को हराकर कांग्रेस प्रत्याशी** श्री भूपेन्द्र हुड्डा को पुन: एक और जीत प्राप्त होगी।'' (पृ० 75 कॉलम II)

संवत् २०६८ (2011-12 ई०) के पृष्ठ 68, कालम I में स्पष्ट पढ़ें–''**केन्द्र के प्रमुख नेता राष्ट्र की मूलभूत समस्याओं के बारे में निर्णयात्मक पग उठाने में अक्षम दिखाई देंगे''।**

पृष्ठ 68 पर कालम II में प्रथम पंक्ति में स्पष्ट पढ़ें–''**अमेरिका सहित** कुछ देशों में **आर्थिक मन्दी का होना।''** जैसा कि अगस्त, 2011 ई० में घटित हुई। पृष्ठ 68 पर ही तृतीय पैरा में पढ़े–'वर्ष कुं० में **मीन राशि पर पंचग्रही** योग बनने के कारण खाड़ी देशों में आन्तरिक हालात अस्थिर एवं उद्विग्न होंगे।'–जैसा कि अप्रैल से जुलाई के **मध्य लीबिया, मिस्र, सूडान, सीरिया, चिली, आदि देशों में आंतरिक क्रान्ति तथा सत्ता-परिवर्तन** के रूप में हुआ।

पृष्ठ 69, कालम I में पढ़े–**पैट्रोल, डीज़ल, रसोई गैस, बिजली, दूध, लोहा, सोना, चाँदी, ताम्बा आदि के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी का रुख बनेगा।**

वि. संवत् २०६९ के पृष्ठ 66 कालम I में स्पष्ट तौर पर पढ़ें–''मुस्लिम बाहुल्य देशों जैसे लीबिया, सीरिया, मिस्र, यूगांडा, सीरिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में हकूमतों के विरुद्ध विद्रोह, जनान्दोलन, हिंसक एवं विस्फोटक, घटनाएँ एवं सत्ता परिवर्तन होने के भोग होने–इन देशों में हुई विस्फोटक एवं हिंसक घटनाओं के घटित होने के समाचार प्रकाशित हुए हैं।

देखें पृष्ठ 68– का. I-बढ़ती महँगाई पर काबू पाने के सरकारी प्रयास खोखले सिद्ध होना। जैसा कि स्पष्ट है कि **प्रधानमन्त्री के आश्वासनों के बावजूद महँगाई दर में आशातीत वृद्धि होना। कालम II में स्पष्ट पढ़ें–सत्तारूढ़ मन्त्रियों पर लगाए गए भ्रष्टाचार,** अनेकों घोटालों एवं महँगाई सम्बन्धी आरोपों के कारण भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा धक्का पहुँचना।

पृष्ठ 70 कालम II में पंजाब प्रदेश के कॉलम के अन्तर्गत स्पष्टत: पढ़ें–.....**अवरोधों के बावजूद अन्ततः अकाली-भाजपा गठबन्धन के पुन: विजयी होने के योग बनते हैं।–जैसा कि स्पष्ट है, मार्च 2012 ई. में अकाली-भाजपा गठबंधन पुन: विजयी हुई। इस विशेष भविष्यवाणी जो अक्षरशः ठीक हुई, हमें पाठकों के अनेकों प्रशंसा-पत्र एवं फोन प्राप्त हुए हैं, जिसके लिए हम पाठकों एवं ईश्वर का धन्यवाद करते हैं।**

गत वि. संवत् २०७० के पृष्ठ 66 पर मुख्य भविष्यवाणियों के अन्तर्गत स्पष्ट तौर पर पढ़ें–जगत् लग्न कुं. में सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग के प्रभाव से भारत, पाकिस्तान, सीरिया, ईराक आदि विकासशील देशों में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां संघर्षपूर्ण, अस्थिर एवं अनिश्चित होगी। अरब एवं खाड़ी देशों जैसे–सीरिया, मिस्र, लीबिया, सूडान में क्रान्तिकारी परिवर्तन होंगे।

–भारत-पाक सहित यूरोपीय देश जैसे–स्पेन, फ्रांस, ब्रिटेन, इटली, बैल्जियम, पुर्तगाल भी मन्दी एवं गम्भीर आर्थिक संकट की गिरफ्त में आ जाएंगे।

–वर्तमान प्रधानमन्त्री एवं यू.पी.ए. सरकार की विश्वसनीय में ज़बरदस्त कमी आएगी। आगामी चुनावों में यू.पी.ए. कांग्रेस सरकार को भारी क्षति होने के योग है।

वर्षभर तुला राशि में शनि-राहु योग तथा मंगल-शनि (12 अप्रै. से 23 मई) के मध्य **समसप्तक योग होने से पैट्रोल डीज़ल, सोना, तांबा के मूल्यों में तथा महँगाई में आशातीत वृद्धि होगी। सीमावर्ती प्रदेशों में फौजी अतिक्रमण के कारण चीन व पाक के साथ युद्ध का भय बराबर बना रहेगा।**–''जैसा कि चीन द्वारा भारतीय सीमा में घुसपैठ तथा पाक फौजियों द्वारा दुष्टतापूर्वक एवं निर्ममता से भारतीय फौजियों को मारने के दुखद समाचार लगभग प्रतिदिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहें।'' दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र आदि में यद्यपि भाजपा विजयी होगी, परन्तु कर्नाटक, 36 गढ़ में कांग्रेस का प्रभाव बढ़ेगा। क्षेत्रीय दलों का प्रभुत्व भी बढ़ेगा। संवत् २०७० के पृष्ठ 68 पर आकाशी कौंसिल के अन्तर्गत राजा गुरू के प्रभाव से घृत, तैल, पैट्रोलियम आदि बिल्डिंग मैटीरियल, कलपुर्जों आदि पदार्थों से सम्बन्धित व्यापारी लाभान्वित होंगे। **उत्तराखंड के सम्बन्ध में प्राकृतिक आपदाओं के कहर से जो जन, धन एवं सम्पदा आदि की जो भारी क्षति हुई, दुर्भाग्यवश उसका संकेत पंचांग के पृष्ठ नं. 73 पर कालम-II के अन्तर्गत स्पष्ट पढ़ें**–वर्ष के प्रथम चार मास भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन आदि देशों के लिए विशेष घटनाप्रद वाले सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त उत्तराखंड में महावृष्टि-----सिंह में

वर्ष प्रवेश हो, तो दक्षिण में उपद्रव एवं **उत्तर में महावृष्टि,** पूर्व में कृषि की हानि तथा मध्यदेश में पाँच मास राजयुद्ध रहें।

पृष्ठ 70 पर कालम-I पर चान्द्र वैशाख मास एवं अप्रैल, मई, जून-तीन महीनों में कहीं प्राकृतिक आपदाओं से भूस्खलन, भूकम्प, अग्निकांड आदि प्राकृतिक उत्पात एवं मुस्लिम देश में छत्रभंग होने के संकेत है। पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में आतंकी, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं।

पाकिस्तान में सत्ता परिवर्तन-पृष्ठ 71 के कालम-II में पाकिस्तान के अन्तर्गत साफ शब्दों में लिखा गया है-प्रधानमन्त्री राजा परवेज़ का पूरे कार्यकाल तक सत्तारूढ़ बने रहना संदिग्ध रहेगा। पाकिस्तान के अन्दरूनी हालात उलझनपूर्ण रहेंगे।

जून-जुलाई में अतिवर्षा के कारण कहीं बाढ़ आदि से जन धन-धान्य आदि की क्षति होगी। कहीं कम वर्षा से दुर्भिक्ष एवं अनाज की कमी होगी। **मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन के योग हैं। सीमावर्ती प्रदेशों पर युद्ध भय एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होना**-(अगस्त के प्रथम सप्ताह में 5 भारतीय सैनिकों का कतल होना), पृष्ठ 74 के I कालम में साफ़ पढ़ें का पार्टी द्वारा कुछ लोक-लुभावन योजनाओं की घोषनाएँ-जैसा कि सत्ता पार्टी द्वारा खाद्य सुरक्षा बिल......आदि पेश करना।

संवत् २०७१ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह परिषद्) के दश पदाधिकारों में से पाँच अधिकार शुभ ग्रहों को और पाँच अधिकार क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। **राजा एवं मन्त्री के दोनों प्रमुख अधिकार स्त्री एवं सौम्य ग्रह चन्द्रमा को प्राप्त हुए है। देश में धन-धान्य एवं सुख-साधनों का और अधिक विस्तार होगा। स्त्रियों का प्रभुत्व बढ़ेगा।** पश्चिमोत्तरीय क्षेत्रों एवं प्रदेशों में वर्षा अधिक होगी। गेहूँ, धान्य, सरसों, मक्की, चने, रूई, कपास, ईखादि की पैदावार अच्छी होगी। उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में **अत्यधिक वर्षा के कारण भूस्खलन, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण कृषि, धन-सम्पदा व लोगों की भारी क्षति होगी। कफ़, बलग़म, प्रमेह, मधुमेह एवं मानसिक रोगों की आशंकाएँ बढ़ेंगी।**

राजा और मन्त्री के दोनों अधिकार एक ही ग्रह चन्द्रमा को प्राप्त होने से समाज में भ्रष्टाचार, चोरी, ठगी, बेईमानी, लूटमार एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेज़ी होने से सामान्य लोगों में बेचैनी व कष्ट हों। राजनेताओं में परस्पर आरोप-प्रत्यारोप लगेंगे। कहीं उपद्रव, हिंसा, झगड़े, चोरी और अग्निकाण्ड, टकराव घटित होने के भी समाचार मिलेंगे।

स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोगपीडा। चौराग्नि विग्रह भयं च नृपाणाम्।।

सस्येश और नीरसेश का स्वामी भी सौम्य ग्रह बुध है। उच्च तकनीकी विद्याओं की ओर लोगों का रूझान बढ़ेगा। विभिन्न किस्म के जवाहरात जैसे हीरे, पुखराज, पन्ना, नीलम आदि रत्न तथा सोना, चाँदी, ताम्बा, पीतल आदि धातुएँ तेज भाव होंगी। धन एवं धान्य का स्वामी **मंगल** होने से गेहूँ, चने, चावल, दालें आदि सर्वप्रकार के अनाज तेज भाव होंगे। चोरी, डकैती, बेईमानी, भ्रष्टाचार, लूटमार एवं हिंसा की घटनाएँ अधिक होंगी।

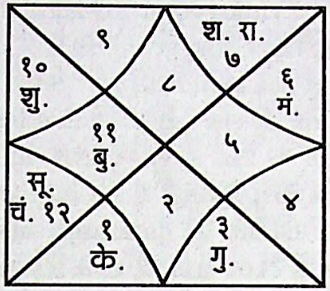
असामयिक वर्षा एवं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण कृषि, जन एवं धनादि की भारी हानि हो। ऋतुओं (मौसमों) के परिवर्तन में अनिश्चितता रहे। संवत् के प्रथम चार मासों के मध्य उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में भारी प्राकृतिक आपदाओं से भारी क्षति होने के योग हैं। मेघों एवं **सेना का स्वामी सूर्य होने से उपयोगी वर्षा** में कमी रहे। आंधियाँ अधिक हों। अधिकांश देश घातक परमाणु हथियारों के निर्माण में संलग्न होंगे। **फलों का** स्वामी **शनि** होने से पहाड़ी व अन्य क्षेत्रों में बेमौसमी भारी वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप होगा। लोगों में मानसिक एवं क्लिष्ट श्वास रोग अधिक होंगे।

रसेश शुक्र होने से देश में सुख व ऐश्वर्य के साधनों का विस्तार होगा। 31 मार्च, 2014 ई. सोमवार से **'प्लवंग'** नाम का नया सम्वत्सर प्रारम्भ होगा। इसके प्रभावस्वरूप अधिकांश मुस्लिम बहुल्य राष्ट्राध्यक्ष कुटिल राजनीति का आचरण करेंगे। सीमावर्ती क्षेत्रों में पाकिस्तान, चीन आदि देश भारतीय सीमाओं का अतिक्रमण का क्रम जारी रखेंगे। किसी भी शुभ कार्य के शुभ संकल्प के प्रारम्भ में प्लवंग नामक सम्वत्सर का ही प्रयोग होगा।

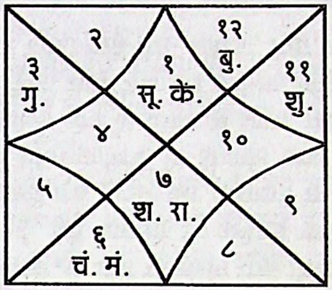
मार्कीट-पैट्रोलियम पदार्थ, डीज़ल, रसोई गैस, विद्युत् (बिजली), कोयला, लोहा, दूधादि तरल पदार्थ तेज भाव होंगे। रूपये का अवमूल्यन बढ़ेगा।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली सम्वत् २०७१

नववर्ष प्रवेश कुं. ४४/४०



जगत् लग्न कुण्डली ३/४३



प्लवंग नामक का नया **संवत् २०७१** का प्रवेश चैत्र अमावस की समाप्ति पर 30 मार्च की अर्धरात्रि 12 बजकर, 15 मिनट पर ४४ घड़ी, ४० पल पर, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, ब्रह्मयोग कालीन वृश्चिक लग्न में दाखिल होगा। वर्ष लग्नपति मंगल एकादश भाव में शत्रुराशि (कन्या) का होकर पड़ा है, उस पर गुरु की चतुर्थ गुप्त शत्रु दृष्टि तथा सूर्य, चन्द्रमा की सप्तम-प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि पड़ रही है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के स्वामी शुक्र का शत्रु गुरू के साथ **षडाष्टक योग** बना हुआ है। ग्रह-स्थिति के अनुसार सम्वत्सर से लेकर प्रारम्भिक चार मास भारत देश के लिए विशेष संघर्षपूर्ण एवं चुनौतियों से भरे हुए होंगे।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में, विशेषकर प्रथम पाँच महीनों के दौरान देश का सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक वातावरण अनिश्चित एवं अशान्त रहेगा। **भारत में भावी लोकसभा चुनावों में किसी एक पार्टी को बहुमत प्राप्त न होने के कारण राजनैतिक अस्थिरता एवं गतिरोध पैदा होंगे। यू.पी.ए. और एन.डी.ए., दोनों पार्टियों के ग्रुप नए समीकरण बनाएँगे। महँगाई, भ्रष्टाचार, कानून व अर्थव्यवस्था की गिरती एवं शोचनीय स्थितियों के कारण यू.पी.ए. सरकार की प्रतिष्ठा को गहरा धक्का पहुँचेगा। अन्य समानान्तर एवं क्षेत्रीय पार्टियों की सहायता से ही केन्द्रीय सरकार बनाने में सक्षम होंगे।**

दक्षिणी एशिया एवं खाड़ी देशों के कुछ अन्य मुस्लिम बाहुल्य देशों जैसे मिस्र, ग्रीस, सीरिया, पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान आदि देशों में वर्तमान तानाशाही हुकमरानों के विरुद्ध जनाक्रोश, जनान्दोलन, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत मिलते हैं। कहीं छत्रभङ्ग एवं सत्ता परिवर्तन होने के योग हैं।

वृश्चिक लग्न में **वर्ष प्रवेश** का फल **शास्त्र** में इस प्रकार से वर्णित किया गया है–

वृश्चिके पश्चिमे देशे दुर्भिक्षं नव मासिकम्।
उदीच्यामर्द्ध निष्पत्तिः समर्धा धातवस्तदा।। (वर्ष प्रबोध)

अर्थात्–वृश्चिक में वर्ष प्रवेश होने से पश्चिमी क्षेत्रों में नौं मास में दुर्भिक्ष, उत्तरीय प्रदेशों में कृषि का उत्पादन आधा हो और लोहा, ताम्बा, सोना, पीतल, चान्दी आदि धातुओं में समर्घता (तेजी) हो।

पूर्व में राजाओं में विग्रह हो, लोगों को तीन महीनों तक कष्ट हो, बाद में कष्ट से निवृत्ति हो। मध्यप्रदेश में धान्य का नाश हो। दक्षिण में कहीं छत्रभंग हो। ताम्र, सोना और प्रारम्भ में खरीदकर पाँच मास बाद विक्रय करने से विशेष लाभ प्राप्त हो–

दक्षिणस्यां देशभंगो भावीवर्षे प्रजायते।
धातूनां विक्रयः कार्यः परतो मास पंचकात्।। (वर्ष प्रबोध)

जगत् लग्न एवं विश्व के हालात्

जगत् लग्न कुण्डली में मेष (चर) लग्न उदित हुआ है। वर्ष लग्नेश मंगल छटे भाव में कन्या राशि का होकर स्वराशिस्थ लग्न भाव को आठवीं दृष्टि से देख रहा है। पंचमेश (प्रशासनिक बुद्धि का स्वामी) सूर्य लग्न भाव में यद्यपि उच्चराशिस्थ है, परन्तु उस पर सप्तम भावस्थ (विदेशी सम्बन्ध) शनि एवं राहु की अशुभ दृष्टियाँ भी पड़ रही हैं। प्रस्तुत ग्रहस्थिति के अनुसार विश्व का राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध एवं संघर्षपूर्ण रहेगा। वर्ष का राजा व मन्त्री **चन्द्र** छटे भाव में शत्रुराशि (कन्या) में बुध द्वारा दृष्ट है, जिससे विश्व के अनेक देशों में जैसे–इटली, ईराक, सीरिया, मिस्र, ग्रीस, भारत आदि देशों के केन्द्रिय नेतृत्व में क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे। अमेरिका, इंग्लैण्ड अथवा किसी यूरोपीय देश पर आतंकी आक्रमण होने के भी संकेत मिलते हैं। **अमरीका सहित अन्य देशों, जैसे–पाकिस्तान, भारत, अफगानिस्तान, मिस्र, सीरिया आदि देशों में आतंकी कार्यवाही या भीषण दुर्घटना से जन-धन की हानि होने की सम्भावनाएं हैं। अमेरिका, कैनेडा, ब्रिटेन, स्पेन, फ्रांस, इटली आदि यूरोपीय देशों में मुद्रा अवमूल्यन के कारण आर्थिक मन्दी का वातावरण बनेगा।** अधिकांश यूरोपीय देश भारत, चीन, जापान, दुबई, सिंगापुर, हांगकांग आदि एशियाई देशों के साथ व्यापार बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा में शामिल होंगे। जगत् लग्न कुण्डली के अनुसार **मेष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, मकर एवं मीन राशि** वाले देश आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक तौर पर विशेष रूप से प्रभावित होंगे। इसके अन्तर्गत जापान, श्रीलंका, नेपाल, मिस्र, सीरिया, अमरीका, चीन, पाकिस्तान, इटली, ईराक, भारत, अफगानिस्तान आदि देश विशेषतया प्रभावित होंगे। इन देशों में कहीं असामाजिक एवं आतंकी गतिविधियों के कारण विस्फोटक घटनाएँ अथवा बाढ़, भूकम्प, बादलों का फटना, समुद्री तूफान, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन, धन एवं सम्पदा की क्षति होने के संकेत हैं। मेष लग्न में जगत् लग्न का उदय होने का फल शास्त्र में इस प्रकार से वर्णित है–

मेष लग्नेतु पूर्वस्यां दुर्भिक्षं राज विग्रहः।
दक्षिणस्यां सुभिक्षं स्याद् ब्रह्मधान्य रसाच भूः।।

अर्थात् मेष लग्न हो, तो उस वर्ष पूर्व दिशा में राज विग्रह तथा दुर्भिक्ष हो, दक्षिण में बहुत धान्य और सुभिक्ष हो। जगत् कुण्डली के सातवें स्थान में शनि, राहु आदि पाप ग्रह होने से देश में प्राकृतिक आपदाओं से खड़ी फसलों एवं लोगों व धन-सम्पदा की भारी क्षति होने के संकेत हैं–

मेष प्रवेश लग्ने वा यदि स्यात् वर्ष जन्मनि।
सप्तमस्थोयदा पापोधान्य जनसम्पदा च विनाशयेत्।।

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

अमेरिका (America)–इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। **जगत् लग्न** कुण्डली में मिथुन राशि पर शत्रु ग्रह गुरु स्थित है तथा राशि स्वामी बुध बारहवें स्थान में नीच राशि का होकर पड़ा है, उस पर चन्द्र, मंगल की अशुभ शत्रु दृष्टि पड़ रही है। ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी वर्ष सत्तारूढ़ अमरीकी सरकार के लिए संघर्षपूर्ण एवं कठिन चुनौतियों से भरा होगा। देश की व्यवसायिक एवं आर्थिक स्थिति में अपेक्षाकृत सुधार होंगे। यद्यपि वैश्विक मन्दी का प्रभाव अभी रहेगा। ग्रीस, मिस्र, सीरिया, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में अप्रत्यक्षतः हस्तक्षेप के कारण अमेरिका की प्रतिष्ठा को किंवा क्षति होगी। आर्थिक मन्दी के प्रभाव से अभी पूर्णतः उभर नहीं पाएगा। आतंकी हमलों एवं सुरक्षा सम्बन्धी खतरों की दृष्टि से कुछ खाड़ी देशों में अस्थाई तौर पर अपने दूतावासों को बन्द करने पर मजबूर होगा। भारत के साथ व्यापारिक, आर्थिक एवं पारस्परिक सुरक्षात्मक समझौते आयोजित करेगा। अन्तरिक्ष कार्यक्रमों के अन्तर्गत भारत के साथ विशेष सहयोग करेगा। आगामी वर्ष 4 फर. से 24 मार्च तक तथा फिर 14 जुला. से 4 सितं. तक की अवधि में शनि-मंगल का

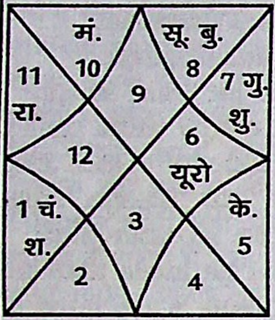
योग होने से देश में कहीं भूकम्प, समुद्री तूफान, यान-दुर्घटना, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाओं से भारी जन, धन-सम्पदादि की हानि होने के योग हैं।

पाकिस्तान—जगत् लग्न में इसकी प्रभाव राशि कन्या पर छटे भाव में चन्द्र-मंगल का योग बना है, तथा राशिस्वामी बुध द्वादशभाव में नीचराशिगत है। प्रस्तुत ग्रहस्थिति के अनुसार पाकिस्तान की नवनिर्वाचित शरीफ सरकार के लिए आगामी वर्ष अत्यन्त गम्भीर चुनौतियों से भरा होगा। सामान्य लोगों का जीवन अत्यन्त शोचनीय होगा। पाक सरकार आतंकी संगठनों के दोहरी नीति रखने के कारण वर्तमान पाक सरकार के लिए आतंकी घातक सिद्ध होगें। स्वयं पाकिस्तान के अनेक मुख्य शहरों में विस्फोटों के कारण जानो-माल की भारी हानि होगी। चीन के साथ मिलकर गहन साजिश के अन्तर्गत, पाकिस्तान की फौजें भारतीय सीमाओं पर विस्फोट एवं अतिक्रमण करने की ताक में रहेंगी। भारत के साथ पाकिस्तान के प्रस्तावित सन्धिवार्ताओं का कोई विशेष लाभ नहीं होगा। भारतीय चौकियों पर घातक हमलों के कारण, भारत के साथ राजनैतिक सम्बन्ध तनावपूर्ण रहेंगे। बाह्य तौर पर भारत के साथ शान्ति वार्ताओं की पेशकश करता रहेगा।

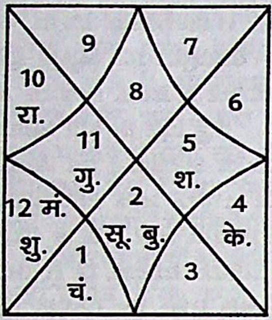
भारत में प्रमुख राजनैतिक पार्टियाँ

कांग्रेस पार्टी एवं यू.पी.ए. गठित सरकार—II

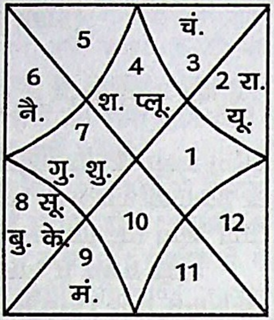
कुण्डली कांग्रेस पार्टी



शपथ कालीन कुं.
22-5-2009 ई.



कुं. श्रीमती सोनिया गाँधी
9-12-1946

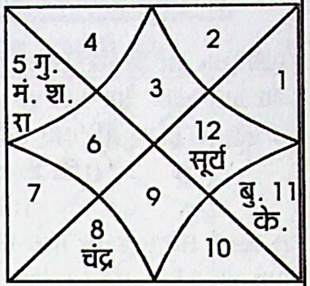


कांग्रेस की स्थापना कुण्डली में धनु लग्न उदित है। लग्नेश गुरु-शुक्र के साथ एकादश भाव में बैठकर पंचम भावस्थ (प्रशासनिक योग्यता) चन्द्र-शनि को शुभ दृष्टि से देख रहे हैं। फलस्वरूप यह पार्टी येन-केन प्रकारेण अपना प्रशासनकाल मार्च 2014 ई. तक पूरा कर रही है। शपथकालीन कुण्डली में पंचमेश गुरू (गोचरवश) अष्टम भाव में तथा **श्रीमती सोनिया गाँधी** की कुण्डली में वर्तमान काल में भाग्येश गुरू द्वादश भाव में संचार कर रहा है, इसके अतिरिक्त राजदरबार (उच्च प्रशासकीय स्थिति) का स्वामी एवं प्रशासनिक बुद्धि का स्वामी मंगल 18 अग. से 4 अक्तू. (13) तक नीच राशि में एवं फिर अन्य ग्रहों की गोचरवश अशुभ स्थिति में होने से अगस्त से अप्रैल (14) तक कांग्रेस पार्टी एवं यू.पी.ए.-II सरकार के लिए अत्यन्त गम्भीर समस्याओं एवं चुनौतियों से भरी अवधि होगी। यू.पी.ए. मन्त्रीगणों में तालमेल और तारतम्य की कमी होगी। आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, खाद्य बिल, सीमाओं पर चीनी व पाकिस्तानी फौजों द्वारा नापाक गोलाबारी एवं गतिविधियाँ, जम्मू-काश्मीर में साम्प्रदायिक एवं हिंसक घटनाएँ, महँगाई, भ्रष्टाचार, घोटालों, देश की दोषपूर्ण सुरक्षात्मक एवं आर्थिक नीतियों आदि के कारण आगामी विधान सभाई एवं लोकसभा के चुनावों में कांग्रेस पार्टी की छवि को बड़ा धक्का लगेगा। परिवारिक आक्षपों के कारण तनावग्रस्त होंगी।

19 जून, 2014 ई. से गुरू का कर्क (उच्च राशि) में प्रवेश करने (लग्नस्थ) पर कांग्रेस एवं श्रीमती सोनिया की स्थिति में कुछ सुधार होने के योग बनेंगे। परन्तु यू.पी.ए. सरकार द्वारा पारित खाद्य कानून बिल के परिणामस्वरूप देश को भारी वित्तीय संकट का सामना करना पड़ सकता है। कुछ प्रदेशों में स्थिति बेहतर भी होगी।

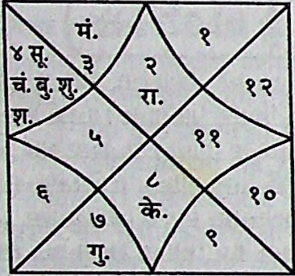
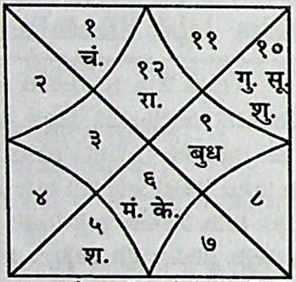
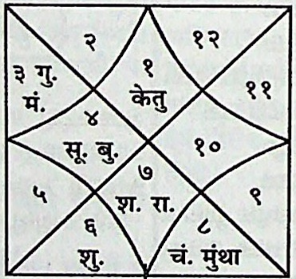
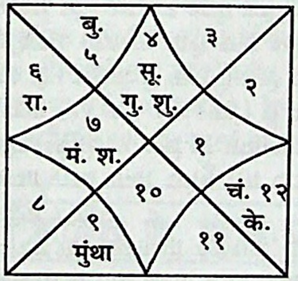
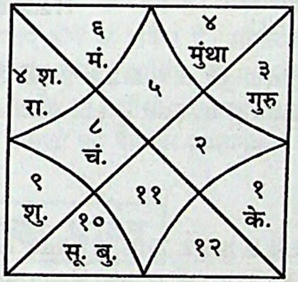
भारतीय जनता पार्टी

कुं. भारतीय जनता पार्टी



भा.ज.पा. की यथाप्राप्त स्थापना कुण्डली में मिथुन लग्न उदित है। लग्नेश बुध भाग्य स्थान में केतु युक्त है तथा उस पर गुरु, मंगल, शनि आदि ग्रहों की शुभाशुभ दृष्टियाँ पड़ रही हैं। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष भाजपा पार्टी के लिए कठिन चुनौतियों से भरा वर्ष होगा। **प्रशासनिक अधिकार** (दशम्) का स्वामी गुरू तृतीय भाव में बैठकर योगकारक होकर सप्तम एवं सप्तम, भाग्य एवं एकादश (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध) भाव को देख रहा है तथा तृतीय भाव का स्वामी सूर्य दशम भाव में गुरू की राशि (मीन) पड़ा है, जिससे **गुरू एवं सूर्य**—दोनों में **स्थान विपर्यय शुभ योग** बना है। वर्तमान में दशमेश गुरू (गोचरवश) लग्न भाव में संचार कर रहा है, जोकि 18 जून, 2014 ई. तक रहेगा। फलस्वरूप आगामी विधानसभा एवं लोकसभा के चुनावों में भा.ज.पार्टी की स्थिति कांग्रेस की अपेक्षा बेहतर होगी। 19 जून, 2014 ई. को गुरू का कर्क राशि में प्रवेश होने से दशमेश गुरू की चन्द्रमा पर मित्र दृष्टि तथा प्रशासनिक अधिकार के दशम् भाव पर स्वगृही दृष्टि रहेगी। इसके प्रभावस्वरूप भारतीय राजनीतिक के मंच पर भा.ज.पा. की स्थिति सुदृढ़ होगी। राजस्थान, दिल्ली, आन्ध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों के चुनावों में भा.ज.पा. को अच्छी सफलता प्राप्त होने के योग हैं। लोकसभा चुनावों के बाद एन.डी.ए. को संगठित करने के लिए सम्भवत: प्रधानमन्त्री पद के लिए ऐसे व्यक्ति पर सहमति बन सकती है, जिसके बारे में पार्टी/लोगों ने कम ही विचार किया हो। यद्यपि नरेन्द्र मोदी के ही प्रधानमन्त्री पद के प्रबल योग बन रहे हैं।

वि. सम्वत् २०७१ में ग्रह स्थिति और भारतवर्ष

जन्म कुं. स्वतंत्र भारत 14 अग., 1947 ई. (23घं.–59मिं.) भा. स्टैं. टा.	कुं. गणतंत्र दिवस 26 जन., 1950 ई. 10घं.–19मिं. (भा. स्टैं. टा.)	कुं. स्वतंत्र भारत (67वां वर्ष) 14 अग. 2013 ई. (22घं.–05मिं.) (भा. स्टैं. टा.)	स्वतन्त्र भारत कुं. वर्ष 68वाँ 15-08-2014 ई. 04-13 A.M., दिल्ली	कुं. गणतन्त्र दिवस, 65वाँ वर्ष 26 जन. 2014 ई. 20-05, भा. स्टैं. टा.
				

स्वतन्त्र भारत के 67वें वर्ष (15-8-2013 ई.) की वर्ष कुण्डली में मेष लग्न उदित हो चुका है। वर्ष लग्नभाव में केतु स्थित है। सप्तम भाव (विपक्ष) में राज्येश शनि उच्च राशिस्थ का होकर लग्न राशि (मेष) को नीच दृष्टि से देख रहा है। अष्टम भाव में मुंथा का नीचस्थ चन्द्र के साथ होना शुभ नहीं। इसके प्रभावस्वरूप वर्षारम्भ में शुरू की गई बहुत सी विकास योजनाएँ, कुछ अस्पष्ट कारणों से अधर में ही लटकती रह जाएँगी। **केन्द्रीय सरकार की बहुत सी आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियां अस्थिर, अव्यवहारिक एवं अनुपयोगी सिद्ध होंगी।** सीमाओं पर विदेशी सेनाओं द्वारा बार-बार अतिक्रमण होना, दैनिक उपयोग की वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त वृद्धि, कानून और व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति, **सरकारी क्षेत्रों में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, बिजली-पानी, दूध आदि मूलभूत आवश्यक वस्तुओं की कमी रहने के कारण सामान्य लोग दुःखी व परेशान होंगे।** वर्ष कुण्डली में चन्द्रमा (जो वर्ष का राजा व मन्त्री भी है) नीच एवं जल राशि का होकर अष्टम भाव में होने से **उत्तराखण्ड, हिमाचल आदि उत्तर-पश्चिमी एवं असमादि पूर्व के पर्वतीय क्षेत्रों में आकस्मिक वर्षा, बादलों के फटने, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों से लोगों के धन-सम्पदा व जान-ओ-माल व कृषि की हानि होने के संकेत हैं।** मैदानी भागों में भी भयंकर बाढ़ आने के योग हैं।

लग्न भाव पर शनि की नीच दृष्टि पड़ना स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि भारतीय सीमाओं पर दोनों पड़ोसी देशों चीन व पाकिस्तानी सेना की आक्रामक गतिविधियों से भारत की सम्प्रभुता को हानि पहुँचाने की कोशिशों में रहेंगे। भारत सरकार को विशेष चौकन्ना रहने की ज़रूरत है।

स्वतन्त्र भारत के 68वें वर्ष की कुण्डली में **कर्क लग्न** उदित है। लग्न भाव में मुंथेश गुरू चतुर्थेश शुक्र के साथ पड़ा है। इसके प्रभावस्वरूप अगस्त 2014 ई. में देश में आन्तरिक कलह, उपद्रव एवं युद्ध का वातावरण बनेगा। लोगों में अशान्ति व भय होगा। कहीं असामयिक वर्षा से हानि होने के योग बनेंगे। दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में विशेष तेजी होगी–

गुरू-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः।।

गणतन्त्र दिवस के 65वें साल की वर्ष कुण्डली में भारत, 26 जन., 2014 ई., तदनुसार बुधवार, अमावस तिथि कालीन सिंहलग्न में प्रविष्ट होगा। लग्नेश सूर्य छटे भाव में बुध युक्त होकर मुंथा द्वारा दृष्ट है, जबकि मुंथेश चन्द्र चतुर्थ भाव (सर्वसाधारण की प्रसन्नता) में नीच राशि का होकर पड़ा है। ग्रहस्थिति के अनुसार आगामी वर्ष भारतीय लोकतन्त्र एवं केन्द्रीय सरकार के लिए अत्यन्त कठिन चुनौतियों से भरा वर्ष होगा। भारत की सीमाओं पर संघर्ष विराम का उल्लंघन एवं चीन व पाक की शत्रु सेना द्वारा गोलाबारी का क्रम जारी रहेगा। भारत की पूर्वी व पश्चिमी सीमाओं पर पाकिस्तानी एवं चीनी सेनाओं की आक्रामक गतिविधियाँ भारतीय प्रभुसत्ता एवं अस्मिता के लिए गम्भीर चुनौतियाँ बनकर उभरेंगी। **गणतन्त्र कुं.** के द्वितीय भाव में मंगल होना तथा द्वितीयेश बुध छटे भाव में होने से देश की आर्थिक स्थिति चिन्तनीय होगी। दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों के कारण अन्तर्राष्ट्रीय बाज़ार में डालर के मुकाबले रूपये का अवमूल्यन और अधिक बढ़ेगा। दैनिक उपभोग की वस्तुओं के मूल्यों में ज़बरदस्त तेजी हो जाने से सामान्य लोगों का जीवन दूभर हो जाएगा। सर्वप्रकार के खाद्यान्न, दालें, चावल, पैट्रोल, डीज़ल, रसोई गैस, बिजलीदर, पेय-पानी, दवाईयां, दूध, दही, घी, खाद्य तैल (Eatable Oil), सब्ज़ियाँ, फल.........आदि उपभोग्य वस्तुओं के दाम सामान्य लोगों की पहुँच से दूर होते जाएँगे। एफ.डी.आई. (F.D.I.), खाद्य-सुरक्षा बिल, वोट बैंक के दृष्टिकोण से केवल कुछ सुनिश्चित जातियों के लिए आरक्षण नीति का

प्रचलन, पक्षपातपूर्ण अन्ध धर्म निरपेक्षता, बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार, राष्ट्रहितों के प्रति उदासीनता, कट्टरवादी सम्प्रदायों के प्रति उदारता तथा स्वदेशी हिन्दुओं के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण होने के कारण भारत का सर्वतोमुखी वाँछित विकास नहीं हो पाएगा।

चतुर्थ भाव में नीचस्थ चन्द्रमा होने से अत्यधिक महँगाई व बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण सामान्य लोगों में गहन असंतोष एवं आक्रोश व्याप्त होगा। पाकिस्तानी सैनिक आतंकवादी तत्त्वों से मिलकर भारतीय सीमाओं पर सैनिकों को क्षति पहुँचाने की ताक में रहेंगे। **द्वादश भाव में मुंथा का होना, मुंथेश चन्द्र जोकि वर्ष का राजा व मन्त्री भी है, का नीच राशि** में होने से यह संकेत करता है कि भारत सरकार को कठिन चुनौतियों का सामना रहेगा। सीमाओं पर चीन, पाकिस्तान एवं आतंकी शत्रुओं का भय, प्राकृतिक आपदाओं जैसे- अतिवर्षा, बाढ़, भूस्खलन, जन, धन, कृषि आदि सम्पदा की क्षति, आर्थिक संकट, रूपये का अवमूल्यन, गगनचुम्बी महँगाई होने से लोगों में सरकार के प्रति विश्वसनीयता घटेगी। देश में लूटमार चोरी, डकैती, छीना-झपटी एवं भ्रष्टाचार की घटनाएँ बढ़ेंगी।

पूर्वीय एवं पश्चिमी सीमाओं पर शत्रु सेनाओं का अतिक्रमण तथा सरकार द्वारा नक्सलवाड़ी संगठनों के प्रति नर्म दृष्टिकोण रखने के कारण भारत की प्रभुसत्ता को भारी हानि पहुँचेगी। देश की सीमाओं के सुरक्षा प्रबन्धों पर अत्यधिक व्यय हो जाने से केन्द्रीय सरकार की बहुत-सी विकास सम्बन्धी योजनाएँ अधूरी एवं अधर में लटकी रहेंगी। टैक्सों की भरमार एवं असहनीय महँगाई के कारण सामान्य लोग दुःखी एवं परेशान होंगे।

वर्तमान यू.पी.ए. सरकार द्वारा आन्ध्र-प्रदेश से तेलंगाना राज्य की उद्घोषणा के बाद देश के विभिन्न प्रदेशों में अलग राज्यों की मांगें उठनी शुरू हो जाएँगी। जैसे-गोरखालैण्ड, बोडोलैंड, विदर्भलैंड, पूर्वांचल, बुंदेलखण्ड आदि अनेक राज्यों के विभाजन की माँगों की पूर्ति करना केन्द्रीय सत्ता सरकार के लिए विकट चुनौतियों का कठिन कार्य होगा। कई स्थानों पर उपद्रव, उग्र जनांदोलन व हिंसा की घटनाएँ घटित होंगी।

ऊपरलिखित कठिन समस्याओं एवं अवरोधों के बावजूद भारत वर्ष कुछ विशिष्ट क्षेत्रों- जैसे-कंम्पयूटर्ज, इंजीनियरिंग, दूरसंचार, उच्च तकनीकि शिक्षा, सड़क व परिवहन, ऐटामिक एवं सौर ऊर्जा के उपयोग, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (निर्यात) आदि विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उन्नति करेगा। अमेरिका, कैनेडा, जापान, जर्मनी, इण्डोनेशिया, ईरान, मलेशिया, ब्रिटेन आदि देशों के साथ राजनैतिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी।

सन् 2014 ई. में गोचरग्रह और भारतवर्ष

वर्ष 2014 ई. के शुरु में 6 जनवरी से वक्री गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग 25 फरवरी तक रहेगा। इस योग के प्रभावस्वरूप भारत के कुछ प्रदेशों में जैसे उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, उड़ीसा, महाराष्ट्र, गुजरात, जम्मू-कश्मीर आदि में साम्प्रदायिक उपद्रव, तनाव, राजनीतिक टकराव, जनान्दोलन, अग्निकाण्ड, हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं-

यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री, भार्गवश्च यदैक राशौ समसप्तके वा।
अयोध्या, मध्यदेशे लंकापुरे, पूर्वस्यां च क्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

चांद्र फागुन मास (15 फर. से 16 मार्च तक) **पाँच शनिवार एवं पाँच रविवार** पड़ने से दैनिक उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में विशेष तेज़ी होने से लोगों में आक्रोश व गहन असंतोष व्याप्त होगा। सामान्य लोगों में क्लिष्ट-रोग एवं कष्टों में वृद्धि होगी। राजनीतिक वातावरण अनिश्चित एवं अशान्त होगा। राजनीतिक टकराव एवं सत्ता परिवर्तन के योग हैं।

शनिवारा यदा पंचजायते रविपंचकम्। महर्घं जायते रोग शोकाकुला पृथिवी।।

फरवरी-मार्च (4 फर. से 24 मार्च) में शनि-मंगल का योग होने से किसी प्रमुख नेता के लिए अशुभ संकेत हैं, कहीं सत्ता परिवर्तन एवं कहीं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। किसी राज्य में अनाज की कमी, दुर्भिक्ष, बाढ़, अग्निकाण्ड आदि से जन, धनादि की हानि के संकेत हैं- **भौम सौरीश्चैक राशौ द्वयो स्थिते यदि।**
दुर्भिक्षं राज्यभंग च मेदिन्याभग्नितो भयम्।।

चैत्र मास में **पाँच मंगलवार होने से** देश में छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन) होने अथवा किसी प्रमुख नेता के आकस्मिक निधन या अपदस्थ होने के योग बनते हैं। पाक, चीन आदि विरोधी देश के साथ सैनिक टकराव की संभावना होगी। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में अथवा किसी प्रान्त में सत्ता परिवर्तन के भी संकेत हैं। कई स्थानों पर साम्प्रदायिक एवं विस्फोटक व हिंसक घटनाएँ भी घटित होंगी। इस अवधि में सत्ता परिवर्तन होने के प्रबल योग हैं।

''यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।''

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तथा **वैशा. संक्रान्ति** (31 मार्च एवं 14 अप्रैल)-ये दोनों **चन्द्रवार** को पड़ने से वर्ष का **राजा** तथा **मन्त्री** के अधिकार एक ही ग्रह **चन्द्रमा** को प्राप्त हुए हैं, जिसके फलस्वरूप देश के राजनेताओं में विग्रह, टकराव, समाज में चोरी, डकैती व हिंसक घटनाएँ अधिक घटित होंगी-

स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोग पीडा,
चौर चौरागिन विग्रह भयं च नृपाणाम्।।

चांद्र वैशाख मास (16 अप्रै. से 14 मई) में पाँच **बुधवार** होने से सर्वप्रकार के खाद्यान्न, धान्य आदि के भाव तीन महीनों में बहुत तेज हो जाएँगे। लोगों में दुख व परेशानियां बढ़ेंगी।

मासाद्यदिवसे सोमसुत वारो यदा भवेत्।
धान्यं महर्घं त्रीन मासान् भावे वर्षेहि दुखकृत्।।

आगे **ज्येष्ठ मास** (15 मई से 13 जून) में पांच गुरुवार होने से देश के पश्चिमी क्षेत्रों- जैसे-जम्मू-काश्मीर, राजस्थान, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, केरल आदि सीमावर्ती प्रदेशों में उपद्रव, विस्फोटक आतंकी एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं-

यत्र मासे पंच वारा जायन्ते च बृहस्पतेः।
विग्रह पश्चिम देशे खड्ग युद्धं जायते।।

आषाढ़ मास (14 जून से 12 जुला.) में **पाँच शनिवार** होने से देश में कहीं भूस्खलन, भूकम्प, सड़क व यान दुर्घटनाएँ, अग्निकाण्ड, बाढ़ादि प्राकृतिक दुर्घटनाएँ एवं उत्पाद अधिक होंगे। देश में कहीं छत्रभङ्ग (राज्य परिवर्तन) हो, उपभोग्य वस्तुओं में विशेष तेजी हो-

शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणीः।
ईशान देश भङ्गश्च वह्णिदाहो महर्घता।।

आषाढ़ मास (जून-जुलाई) में ही **कर्क राशिस्थ गुरु अतिचार** हो रहा है तथा **तुला राशिस्थ शनि** पहले से वक्री है। इसके प्रभावस्वरूप सत्तारूढ़ प्रमुख नेता के लिए स्थिति हानिकारक होगी। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में विशेष परिवर्तन होंगे। देश की सीमाओं पर विस्फोटक घटनाएँ एवं युद्धभय होगा-

यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी तु सौम्यकः।
पीडाव्याधिभयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्।।

उत्तराखण्ड, हिमाचल आदि पहाड़ी क्षेत्रों पर अतिवर्षा के कारण बाढ़ आदि जन-धन सम्पदादि की भारी क्षति होने के संकेत हैं।

खप्पर योग—**आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद** (14 जून से 9 सितं. तक) तीन महीनों में क्रमशः **पाँच शनिवार, पाँच रविवार और पाँच मंगलवार** होने से खप्पर योग बन रहा है। इसके अनिष्टकर प्रभावस्वरूप देश में कहीं छत्रभङ्ग (सत्ता परिवर्तन) या किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ होने के संकेत हैं। दैनिक उपभोग की वस्तुओं में ज़बरदस्त तेजी होने से जनसाधारण में आक्रोश एवं अशान्ति होगी।

लोके खर्पर योगोऽयं जीव धान्यादि नाशकः।।

श्रावण मास में (13 जुला. से 10 अग.) ५ रविवारों का फल भी देश में सत्ता परिवर्तन, उपद्रव, जातीय व साम्प्रदायिक दंगे, अग्निकाण्ड आदि हिंसक घटनाओं के घटित होने के संकेत हैं। अनाज की कमी व महँगाई के बढ़ने के योग हैं-

यत्र मासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्गं स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।

14 जुला. से 4 सितं. तक तुला राशि में शनि-मंगल का योग भी अनिष्ट सूचक होगा। कहीं सत्ता परिवर्तन एवं हिंसक घटनाओं के संकेत हैं।

भौम सौरीश्चैकराशौद्वयोस्थितेयदि दुर्भिक्षं राज्यभंग च मेदिन्यामग्नि तो भयम्।

भादों (11 अग. से 9 सितं.) में **पाँच मंगलवारों** का होना भी अशुभ माना गया है, जिससे उपद्रव, युद्ध भय एवं साम्प्रदायिक हिंसा बढ़ेगी। सत्ता परिवर्तन के प्रबल योग होते हैं-

यत्र मासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

आश्विन मास (9 सितं. से 8 अक्तू.) में पुनः **पाँच मंगलवारों** का होना उपरोक्त फलों की पुष्टि करता है। ये भी अनिष्ट फलों के सूचक हैं। समाज में महँगाई, बेरोज़गारी, अराजकता एवं आतंक व हिंसक घटनाओं में वृद्धि होगी।

कार्तिक मास (8 अक्तू. से 6 नवं.) के मध्य पाँच गुरूवारों का होना भी अशुभ फलों को व्यक्त करता है-इसके फलस्वरूप कश्मीर, जम्मू, किश्तवाड़, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा आदि सीमावर्ती प्रदेशों में जनांदोलन, उपद्रव, अग्निकाण्ड हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ होने के योग हैं।

पुनः खप्पर योग—मार्गशीर्ष से माघ मासों के मध्य (7 नवं. से 3 फर. 2015 ई.) पुनः क्रमशः **पाँच शनिवार, पाँच रविवार** एवं **पाँच मंगलवार** होने से **खप्पर योग** बना है। इस योग के प्रभावस्वरूप देश के उत्तर-पश्चिम भागों में आतंकी एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के योग हैं। कहीं **छत्रभंग** (सत्ता परिवर्तन) होने के योग हैं। कहीं उपद्रव, अग्निकाण्ड, साम्प्रदायिक दंगे-फिसाद, व हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। सीमाओं पर सैनिक हस्तक्षेप एवं गोलाबारी होने के योग हैं। देश के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक हालात अस्थिर, उद्विघ्न एवं अशान्त रहेंगे। देश की राजनैतिक पार्टियों में परस्पर टकराव एवं विरोध बढ़ेगा। बेमौसमी वर्षा के कारण अनाजादि फसलों की पैदावार आशानुकूल नहीं होगी।

भारत के कुछ प्रमुख प्रान्त

हिमाचल प्रदेश—इसकी प्रभाव राशि मीन तथा नाम राशि कर्क है। 67वें स्वतन्त्र भारत की कुंडली में इसकी राशि पर शनि की ढैय्या का प्रभाव रहेगा। वर्तमान में सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी श्रीवीरभद्र सिंह जी के कुशल नेतृत्व में हिमाचल सरकार अनेक विकासोन्मुखी एवं लम्बित योजनाओं को पूरी करने के लिए प्रयासशील रहेगी। पर्यावरण रक्षा हेतु ईंधन के विकल्प के रूप में एल.पी.जी. और सी.एन.जी. गैस उपलब्ध करवाने हेतु विशेष प्रयास किए जाएँगे। औद्योगिक, पर्यटन, सड़क निर्माण क्षेत्र सम्बन्धी विकास के लिए विशेष प्रयास किए जाएँगे। ग्रहस्थिति के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं, भूस्खलन, अतिवृष्टि, वायु एवं विद्युत् विस्फोट, असामयिक वर्षा के कारण कृषि, जन व धन हानि के योग हैं। ता. 7 नवं., 2013 से गुरु वक्री होने से कुछ घटनाक्रमों से वीरभद्र सरकार की यश-प्रतिष्ठा पर आक्षेप लगेंगे तथा परेशानी बन सकती है। परन्तु 19 जून, 2014 ई. से गुरु उच्चस्थ होने से प्रदेश सरकार की प्रतिष्ठा व यश में वृद्धि होगी। आगामी लोकसभा चुनाव में इस प्रदेश में कांग्रेस एवं भाजपा में कांटे की टक्कर रहेगी।

पंजाब—इसकी नाम राशि कन्या तथा प्रभावराशि मीन है। नव गणतन्त्र दिवस कुं. तथा स्वतन्त्रता दि. कुं. में गोचर ग्रहस्थिति अनुसार यद्यपि प्रदेश बादल सरकार द्वारा गत वर्षों से प्रारम्भ बिजली, सड़क निर्माण, निर्माणाधीन पुलों, कृषि विकास के लिए यथासम्भव प्रयास करेगी तथा कुछ नई योजनाओं का शिलान्यास भी किया जाएगा, परन्तु कुछ विभिन्न विकास योजनाओं के अन्तर्गत विशेष कार्यों से सम्बन्धित अल्पसंख्यक लोग ही लाभान्वित हो पाएँगे। टैक्सों में वृद्धि आदि समस्याओं के कारण वर्तमान सरकार की प्रतिष्ठा एवं साख को आघात पहुँचेगा। आगामी लोकसभा चुनावों में 13 में से यद्यपि कांग्रेस की अपेक्षा अकाली भाजपा अधिक सीटों पर ही विजयी होंगे, परन्तु कुछ क्षेत्रों में कड़ी चुनौतियों का सामना तथा वोट प्रतिशत में कमी आएगी। कांग्रेस के प्रभाव में वृद्धि होगी।

जम्मू-काश्मीर—प्रभावराशि तुला तथा नाम राशि मकर है। 65वें गणतन्त्र दिवस कुं. में इसकी प्रभावराशि तुला पर शनि-राहु योग 1 नवं. 2014 ई. तक रहेगा। ग्रहयोग अशुभ घटनाओं की ओर संकेत कर रहा है। आगामी विधानसभा तथा लोकसभा चुनावों में पी.डी.पी. का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। जम्मू क्षेत्र से भाजपा के पुन: विजयी होने के संकेत हैं। काश्मीर घाटी में कांग्रेस तथा नैशनल कांफ्रेंस का वोट प्रतिशत कम होगा, फिर भी चुनावों में त्रिशंकु विधानसभा बनने के ही संकेत हैं। पुन: जोड़-तोड़ की राजनीति से गठबन्धन सरकार बनने की उम्मीद है। प्रान्त में हड़ताल, केन्द्र विरोधी राजनीति तथा छिटपुट आतंकवादी घटनाओं के कारण विकासपथ में व्यवधान रहेगा। चुनावों से पूर्व कई लोक लुभावन योजनाएँ प्रारम्भ करने की घोषनाएँ भी की जाएँगी।

हरियाणा—प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि मिथुन है। 67वें स्वतन्त्र भारत की कुं. में मिथुन राशि पर मंग.-गुरु का संचार है। गुरु का संचार 18 जून तक रहेगा। आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों से पूर्व कांग्रेस द्वारा राज्य को गुजरात मॉडल की काट के रूप में पेश किया जाएगा तथा खाद्य सुरक्षा अधिनियम को देश में सबसे पहले लागू कर ग्रामीण बिजली उपभोक्ताओं के बकाया माफ कर तथा जनता को आकर्षित करने हेतु अनेक लोक लुभावन घोषनाएँ की जाएँगी। यद्यपि विधासभा चुनावों में कांग्रेस की अपेक्षा इनैलो, भाजपा-हजपा गठबन्धन को अधिक सीटें प्राप्त होगी, परन्तु त्रिशंकु विधानसभा के कारण राज्य में असमंजस की स्थिति रहेगी परन्तु बाद में गठबन्धन सरकार के ही योग हैं।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क तथा नाम राशि तुला है। 67वें स्वतन्त्र भारत की कुं. में नाम राशि तुला पर शनि-राहु संचार तथा 19 अग. से अक्तू. तक मं.-शनि के मध्य षडाष्टक योग राजनैतिक उथल-पुथल का संकेत दे रहा है। वर्तमान कांग्रेस सरकार की ओर से मुख्यमन्त्री अन्न सुरक्षा, जननी शिशु सुरक्षा, उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति, ग्रामीण सड़क विकास, ग्रामीण व शहरी बी.पी.एल. आवास, बी.पी.एल. जीवन रक्षा कोष आदि अनेक जनोपयोगी योजनाओं को अमल में लाया जाएगा, फिर भी लोगों में महँगाई, पेयजल सम्बन्धी समस्याओं के कारण सरकारी नीतियों के विरुद्ध असन्तोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी। विधानसभा चुनावों में भाजपा को काँटे की टक्कर के बाद ही बहुमत हासिल होने की सम्भावना है। यद्यपि लोकसभा चुनावों में स्थिति सुदृढ़ रहेगी।

दिल्ली—67वें स्वतन्त्रता दिवस की कुं. में इसकी प्रभाव राशि मकर पर मंगल की उच्च दृष्टि पड़ रही है, जोकि 5 अक्तू. तक रहेगी। पुन: राशिस्वामी शनि 2 मार्च से 20 जुला. 2014 ई. तक वक्री रहने से दिल्ली में राजनीतिक वातावरण अत्यन्त विक्षुब्ध एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। दिल्ली राज्य में सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार को काफी कठिन समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अव्यवस्थित वितरण प्रणाली एवं बढ़ती महँगाई के कारण शीला सरकार की साख एवं प्रतिष्ठा के लिए अत्याधिक क्षतिकारक सिद्ध होगी। आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में भाजपा निसन्देह सशक्त पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी। परन्तु सरकार बनाने के लिए भाजपा को केजरीवाल आदि की आम पार्टी तथा स्वतन्त्र विधायकों का समर्थन लेना पड़ सकता है।

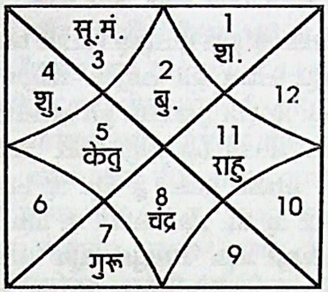
उत्तर-प्रदेश—प्रभावराशि धनु तथा नाम राशि वृष हैं। 67वें स्वतन्त्र भारत (15-08-2013 ई.) की कुं. में धनु राशि पर शनि की दृष्टि रहेगी। यह 1 नवं., 2014 ई. तक रहेगी। ग्रहस्थिति अनुसार प्रदेश में बिगड़ती कानून व्यवस्था, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, महँगाई, किसी विशेष सम्प्रदाय के प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार राजनीतिक पार्टियों के मध्य टकराव आदि के कारण अशान्ति होगी, सामान्य प्रजा में आक्रोश व असन्तोष रहेगा। आगामी वर्ष लोकसभा चुनावों से पूर्व प्रदेश में विभिन्न दलों के मध्य चुनाव गठजोड़ होंगे। चुनावों में बसपा तथा भाजपा का प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। सत्तारूढ़ सपा सरकार का श्री राममन्दिर मुद्दे को लेकर वि.हि.प्र. तथा भा.ज.पा. के साथ ज़बरदस्त टकराव रहेंगे।

लोकसभा चुनाव—2014 ई०

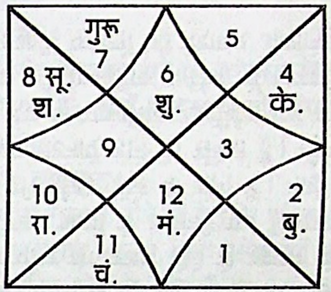
आगामी पाँच राज्यों के विधानसभा एवं 2014 ई. के लोकसभा चुनावों के परिणाम आश्चर्यजनक एवं अप्रत्याशित रहेंगे। भारी उलटफेर भरे परिणाम सामने आएंगे। एकांगी किसी पार्टी को बहुमत नहीं प्राप्त होगा। कांग्रेस व भाजपा—दोनों प्रमुख पार्टियों में कांटे की टक्कर होगी। परन्तु **भाजपा गठबन्धन को अपेक्षाकृत अधिक सीटें मिलेंगी।** अपनी ही दोषपूर्ण नीतियों के कारण कांग्रेस सरकार को अनेक प्रान्तों में हार का सामना करना पड़ेगा। जबकि भाजपा को दिल्ली, राजस्थान, छत्तीसगढ़, म.प्र. आदि प्रदेशों में अप्रत्याशित सफलताएं प्राप्त होंगी। **वर्तमान यू.पी.ए.-II सरकार के अपदस्थ (पलटने) के प्रबल योग हैं। भाजपा एवं यू.पी.ए.**—दोनों प्रमुख पार्टियों को स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं होगा। तीसरे मोर्चे के गठबन्धन के अस्तित्व में आने के प्रबल योग बनते हैं। **पुन: गठबन्धन सरकार ही केन्द्रिय सत्ता में आने के योग हैं।**

कांग्रेस में PM के दावेदार श्री राहुल गान्धी

19 जून, 1970 ई.
जन्म कुण्डली
5:05 AM, नई दिल्ली



नवांश कुण्डली

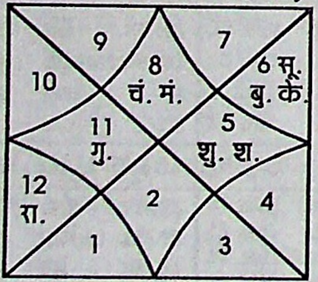


यथोपलब्ध स्रोत से प्राप्त श्री राहुल गाँधी जी की जन्म कुण्डली में वृष लग्न उदित हुआ है। लग्नेश शुक्र तृतीय भाव में सूर्य, मंगल और केतु ग्रहों के मध्य पापाक्रान्त स्थिति में पड़ा

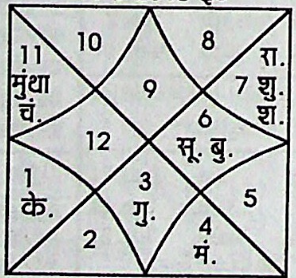
है, जोकि जातक को अनेक ज्ञात-अज्ञात क्लिष्ट समस्याओं में ग्रस्त हुआ अभिव्यक्त करता है। द्वितीयेश एवं पंचमेश बुध लग्न भाव में वर्गोत्तम स्थिति में होने से जातक का आकर्षक व्यक्तित्व, तीव्र बुद्धि, वाक्पटु, योजनाएं बनाने में कुशल एवं उच्चाभिलाषी होगा। 12 जनवरी 2012 ई. से अग., 2013 ई. तक इनको चन्द्र मध्ये शनि की अन्तर्दशा समाप्त होकर बुध की अन्तर्दशा शुरू हो चुकी है। शनि जोकि जन्म कुण्डली में नीच राशिस्थ होकर सूर्य, मंगल को शत्रु दृष्टि से देख रहा है। शनि की भुक्ति को अत्यन्त संघर्षपूर्ण रही तथा अनेक स्थलों पर विफलता भी प्राप्त हुई। आगे अगस्त, 2013 ई. में 12 जन. 2015 ई. तक, इनको चन्द्र मध्ये बुध की अन्तर दशा होगी। बुध की अन्तर्दशा यद्यपि गत शनि की अन्तर्दशा की अपेक्षा शुभ रहेगी। परन्तु जन्म कुं. में प्रशासनिक अधिकार (दशम) का स्वामी शनि द्वादशभाव में नीच राशिस्थ होकर सूर्य (उच्च प्रतिष्ठाकारक ग्रह) को विशेष दृष्टि से देख रहा है। इसके अतिरिक्त श्री राहुल गान्धी वर्तमान काल में शनि-साढ़ेसती के अशुभ प्रभाव में से गुजर रहे हैं। नवांश कुण्डली में भी शनि की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। फलस्वरूप उपरोक्त ज्योतिषीय कारणों से श्री राहुल गान्धी का अभी प्रधानमन्त्री पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध लगता है।

भा.ज.पा. के प्रधानमन्त्री पद के प्रमुख उम्मीदवार श्री नरेन्द्र मोदी

जन्म कुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी
17 सितम्बर, 1950 ई. रविवार
11-00 A.M., मेहसाना, Guj.



वर्ष कुण्डली
श्री नरेन्द्र मोदी
17-9-2013 ई०



पुष्ट सूत्रों से प्राप्त मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जन्म कुण्डली में वृश्चिक लग्न उदित हुआ है। लग्नाधिपति मंगल लग्न भाव में स्वराशिगत होकर शुभस्थ है, उसके साथ ही भाग्येश चन्द्र का संयोग होने से लग्न भावस्थ होने से महापुरूष योगों में से रूचक नामक शुभ योग बनता है। ऐसे योग में उत्पन्न जातक अत्यन्त साहसी, परिश्रमी, गुणवान, सुन्दर-सुगठित शरीर, रक्त-गंदमी, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, अपने संगठन में अग्रणी, राजा या उसके समान ऐश्वर्यवान एवं अत्यन्त कल्पनाशील होता है-

जातः श्रीरूचके बलान्वित वपुः श्री कीर्तिशीलान्वितः।
शास्त्री मन्त्रजपाभिचार कुशलो राजाऽथवा तत्समः।।

भाग्येश चन्द्र के साथ मंगल का योग होने से ऐसा जातक उच्चशिक्षित, उच्च प्रतिष्ठित, अनेक विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ सफल होता है। प्रशासन अधिकार (दशम) का स्वामी सूर्य एकादश भाव में बुध (स्वोच्च राशिस्थ) के साथ बुधादित्य योग कारक है, साथ में बुध भद्र योग कारक भी है। जिससे जातक विभिन्न योजनाएँ बनाने में कुशल, स्वतन्त्र विचारक, तीव्र बुद्धिमान, राजा तुल्य यश-धन वाला, दीर्घायु होता है-

मानी बन्धुजनोपकार निपुणः श्री भद्रयोगोद्भयो।
राजाऽशीतिमितायूरोति विपुल प्रज्ञा यशो वित्तवान्।। (जातक पारि.)

जातक उच्च विद्या प्राप्त, दृढ़ निश्चयी एवं दृढ़ संकल्प-शक्ति का स्वामी होगा। वर्तमान काल में श्रीनरेन्द्र मोदी जी को चन्द्र मध्ये राहु की अन्तर्दशा चल रही है, जोकि मई, 2013 ई. से 5 नवं. 2014 ई. तक रहेगी। चन्द्र मध्ये राहु की अन्तरदशा का फल सामान्यतः अशुभ एवं विषय परिस्थितियों से युक्त होता है। परन्तु प्रस्तुत कुण्डली में चन्द्रमा लग्न में नीचराशिस्थ होते हुए भी केन्द्र में उच्च राशिस्थ मंगल के साथ होने से राजयोग बना है जिससे नीचभंग योग बन गया है। जिसके प्रभावस्वरूप जातक कार्य क्षेत्र में विघ्न-बाधाएँ, अड़चनें एवं कठिन चुनौतियों का सामना अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से करने में सक्षम होगा।

अपनी निःशंक स्पष्टवादिता के कारण कई बार अपनी ही पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की आलोचना का भी सामना होगा। श्री नरेन्द्र मोदी के 64वें साल की वर्ष कुण्डली में धनु लग्न उदित है। वर्ष लग्नेश गुरु लग्न को स्वगृही दृष्टि से देख रहा है। जिससे श्री मोदी जी की राजनैतिक स्थिति सुदृढ़ होगी। **तृतीय भाव** में मुंथा चन्द्रमा के साथ होने से जातक अपने पराक्रम एवं उद्यम से यश, उच्च सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने से सफल होगा। जातक नई-नई योजनाएँ बनाने एवं उन्हें क्रियान्वित करने में सफल होगा। कुछ नए राजनेताओं एवं नई पार्टियों के साथ गठजोड़ बनेंगे। देश-विदेश की यात्राएँ करने के भी अवसर मिलते हैं। मुंथेश शनि लाभ स्थान में शुक्र के साथ उच्चस्थ होने से कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होने से संकेत हैं। परन्तु अष्टम में मंगल का नीच राशि में होना, अपनी मुद्दा दशा में हानिकारक होगा। अपनी पार्टी के लोगों से ही आलोचना एवं विरोध के स्वर उभरने के संकेत हैं। कठिन चुनौतियों एवं अवरोधों के बावजूद उच्चतम पद प्राप्त करने के योग मिलते हैं। **सर्वोच्च पदप्राप्ति यू.पी., बिहार, आन्ध्रादि की प्रादेशिक पार्टियों के राजनायिक समीकरणों पर निर्भर करेगा।** आगे हरि इच्छा प्रबल है।

उपरोक्त भविष्यवाणियाँ देश, स्थान आदि की जन्म कुण्डलियों के ग्रहों की स्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव संकेतानुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वज्ञ भविष्यवक्ता तो स्वयं भगवान् ही हैं-

''फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।''

लेख लिपिबद्धम्-
श्रावण शुक्ल प्रतिपदा
7 अगस्त, बुधवार, सं. 2013 ई.

शुभ चिन्तकः
पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, पंचाँगकर्त्ता
पं. विवेक शर्मा ज्यो., जालन्धर।

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2014-15 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश (वर्षारम्भ में धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	13/13	17 अग.	सिंह	6/15
12 फर.	कुम्भ	26/13	16 सितं.	कन्या	30/11
14 मार्च	मीन	23/06	17 अक्तू.	तुला	18/09
14 अप्रै.	मेष	7/35	16 नवं.	वृश्चिक	18/00
14 मई	वृष	28/27	16 दिसं.	धनु	8/42
15 जून	मिथुन	11/02	14 जन.(15)	मकर	19/26
16 जुला.	कर्क	21/52	13 फर.	कुम्भ	8/26
			14 मार्च	मीन	29/18

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कन्या में वक्री)

20 मई	मार्गी	7/02	27 नवं.	मकर	12/57
14 जुला.	तुला	8/44	4 जन.(15)	कुम्भ	25/58
4 सितं.	वृश्चिक	26/31	12 फर.	मीन	13/12
18 अक्तू.	धनु	13/47	23 मार्च	मेष	22/46

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

4 अप्रै.	मीन	7/32	4 अक्तू.	वक्री	22/30
20 अप्रै.	मेष	17/35	25 अक्तू.	मार्गी	24/44
4 मई	वृष	22/07	4 नवं.	तुला	21/17
22 मई	मिथुन	26/26	24 नवं.	वृश्चिक	13/57
7 जून	वक्री	17/24	13 दिसं.	धनु	15/10
1 जुला.	मार्गी	18/18	1 जन(15)	मकर	11/44
29 जुला.	कर्क	5/39	21 जन.	वक्री	21/21
12 अग.	सिंह	21/05	11 फर.	मार्गी	20/25
29 अग.	कन्या	15/40	9 मार्च	कुम्भ	6/30
20 सितं.	तुला	26/15			

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मिथुन में)

19 जून	कर्क	8/45	8 अप्रै.(15)	मार्गी	22/23
8 दिसं.	वक्री	26/10			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में कुम्भ में)

31 मार्च	कुम्भ	10/03	13 जुला.	मिथुन	21/11
27 अप्रै.	मीन	24/39	7 अग.	कर्क	16/05
23 मई	मेष	28/58	31 अग.	सिंह	27/13
18 जून	वृष	17/56	25 सितं.	कन्या	8/01

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
19 अक्तू.	तुला	8/37
12 नवं.	वृश्चिक	7/02
5 दिसं.	धनु	28/42
29 दिसं.	मकर	26/38
(सन् 2015 ई.)		
22 जन.	कुम्भ	26/17
16 फर.	मीन	6/09
12 मार्च	मेष	18/07

—शनि—

(संवतारम्भ में तुला में वक्री)

20 जुला.	मार्गी	25/57
2 नवं.	वृश्चिक	20/53
14 मार्च(15)	वक्री	20/21

—राहु—

(संवतारम्भ में तुला में)

12 जुला.	कन्या	21/52

—केतु—

(संवतारम्भ में मेष में)

12 जुला.	मीन	21/52

—यूरेनस—

सारा संवत् मीन राशि में ही संचार करेगा।

—नैपच्यून—

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

—प्लूटो—

वर्षभर धनु राशि में ही संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

(संवतारम्भ में वक्री)

20 मई	मार्गी	7/02

बुध

7 जून	वक्री	17/24
1 जुला.	मार्गी	18/18
4 अक्तू.	वक्री	22/30
25 अक्तू.	मार्गी	24/44
(सन् 2015 ई.)		
21 जन.	वक्री	21/21
11 फर.	मार्गी	20/25

गुरु

8 दिसं.	वक्री	26/10
8 अप्रै. (15)	मार्गी	22/23

शुक्र

सारा संवत् मार्गी स्थिति में संचार करेगा।

शनि

20 जुला.	मार्गी	25/57
14 मार्च(15)	वक्री	20/21

यूरेनस

22 जुला.	वक्री	8/16
21 दिसं.	मार्गी	28/08

नैपच्यून

9 जून	वक्री	25/12
16 नवं.	मार्गी	12/30

प्लूटो

14 अप्रै.	वक्री	29/08
23 सितं.	मार्गी	6/01

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०७१)

मंगल

सम्पूर्ण संवत् उदय स्थिति में ही संचार करेगा।

बुध

13 अप्रै. पूर्व में अस्त	18/45
7 मई पश्चिम में उदय	19/58
11 जून व. पश्चिम में अस्त	18/54
28 जून व. पूर्व में उदय	17/51
27 जुला. पूर्व में अस्त	23/55
22 अग. पश्चिम में उदय	13/19
11 अक्तू. व. पश्चिमाऽस्त	10/30
22 अक्तू. व. पूर्वोदय	29/26
15 नवं. पूर्वेऽस्त	17/55
31 दिसं. पश्चिमोदय	11/38

बुध (2015 ई.)

24 जन. व. पश्चिमाऽस्त	19/24
5 फर. वक्री पूर्वोदय	9/56
27 मार्च पूर्वेऽस्त	18/27

गुरु

11 जुला. पश्चि. अस्त	28/40
5 अग. पूर्व-उदय	23/47

शुक्र

2 अक्तू. पूर्वेऽस्त	7/19
27 नवं. पश्चि-उदय	13/25

शनि

1 नवं. पश्चिमेऽस्त	16/02
5 दिसं. पूर्वोदय	9/13

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०७१ वि. (सं. 2014-15 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
31 मार्च	रेव. (1)	18/16
3 अप्रै.	रेव. (2)	27/20
7 अप्रै.	रेव. (3)	12/35
10 अप्रै.	रेव. (4)	22/01
14 अप्रै.	अश्वि (1) मेष	7/35
17 अप्रै.	अश्वि (2)	17/21
20 अप्रै.	अश्वि (3)	27/15
24 अप्रै.	अश्वि (4)	13/17
27 अप्रै.	भर. (1)	23/26
1 मई	भर. (2)	9/45
4 मई	भर. (3)	20/10
8 मई	भर. (4)	6/47
11 मई	कृति (1)	17/34
14 मई	कृति 2 वृष	28/27
18 मई	कृति (3)	19/39
21 मई	कृति (4)	26/36
25 मई	रोहि. (1)	13/49
28 मई	रोहि. (2)	25/07
1 जून	रोहि. (3)	12/31
4 जून	रोहि. (4)	24/00
8 जून	मृग. (1)	11/36
11 जून	मृग (2)	23/16
15 जून	मृग 3 मिथुन	11/02
18 जून	मृग. (4)	22/48
22 जून	आर्द्रा (1)	10/39
25 जून	आर्द्रा (2)	22/28
29 जून	आर्द्रा (3)	10/21
2 जुला.	आर्द्रा (4)	22/12
6 जुला.	पुन. (1)	10/08
9 जुला.	पुन. (2)	22/02
13 जुला.	पुन. (3)	9/59
16 जुला	पुन. 4 कर्क	21/52
20 जुला.	पुष्य (1)	9/43
23 जुला.	पुष्य (2)	21/30

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
27 जुला.	पुष्य (3)	9/15
30 जुला.	पुष्य (4)	20/53
3 अग.	आश्ले (1)	8/30
6 अग.	आश्ले (2)	20/04
10 अग.	आश्ले (3)	7/33
13 अग.	आश्ले (4)	18/57
17 अग.	मघा 1 सिंह	6/15
20 अग.	मघा (2)	17/24
23 अग.	मघा (3)	28/27
27 अग.	मघा (4)	15/20
30 अग.	पू.फा. (1)	26/08
3 सितं.	पू.फा. (2)	12/48
6 सितं.	पू.फा. (3)	23/21
10 सितं.	पू.फा. (4)	9/48
13 सितं.	उ.फा. (1)	20/04
17 सितं.	उफा 2 कन्या	6/11
20 सितं.	उ.फा. (3)	16/06
23 सितं.	उ.फा. (4)	25/53
27 सितं.	हस्त (1)	11/31
30 सितं.	हस्त (2)	20/59
4 अक्तू.	हस्त (3)	6/19
7 अक्तू.	हस्त (4)	15/32
10 अक्तू.	चित्रा (1)	24/34
14 अक्तू.	चित्रा (2)	9/27
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	18/09
20 अक्तू.	चित्रा (4)	26/42
24 अक्तू.	स्वा. (1)	11/05
27 अक्तू.	स्वा. (2)	19/19
30 अक्तू.	स्वा. (3)	27/24
3 नवं.	स्वा. (4)	11/23
6 नवं.	विशा. (1)	19/13
9 नवं.	विशा. (2)	26/57
13 नवं.	विशा. (3)	10/34
16 नवं.	विशा 4 वृश्चि	18/00

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
19 नवं.	अनु. (1)	25/19
23 नवं.	अनु. (2)	8/32
26 नवं.	अनु. (3)	15/36
29 नवं.	अनु. (4)	22/38
2 दिसं.	ज्ये. (1)	29/36
6 दिसं.	ज्ये. (2)	12/28
9 दिसं.	ज्ये. (3)	19/18
12 दिसं.	ज्ये. (4)	26/01
16 दिसं.	मूल 1 धनु	8/42
19 दिसं.	मूल (2)	19/14
22 दिसं.	मूल (3)	21/49
25 दिसं.	मूल (4)	28/20
29 दिसं.	पू.षा. (1)	10/51
(सन् 2015 ई.)		
1 जन.	पू.षा. (2)	17/23
4 जन.	पू.षा. (3)	23/52
8 जन.	पू.षा. (4)	6/24
11 जन.	उ.षा. (1)	12/56
14 जन.	उषा 2 मकर	19/26
17 जन.	उ.षा. (3)	25/58
21 जन.	उ.षा. (4)	8/32
24 जन.	श्रव. (1)	15/09
27 जन.	श्रव. (2)	21/50
30 जन.	श्रव. (3)	28/35
3 फर.	श्रव. (4)	11/26
6 फर.	धनि. (1)	18/21
9 फर.	धनि. (2)	25/22
13 फर.	धनि. 3 कुम्भ	8/26
16 फर.	धनि. (4)	15/36
19 फर.	शत. (1)	22/50
23 फर.	शत. (2)	6/12
26 फर.	शत. (3)	13/42
1 मार्च	शत. (4)	21/21
5 मार्च	पू.भा. (1)	05/08

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
8 मार्च	पू.भा. (2)	13/04
11 मार्च	पू.भा. (3)	21/08
14 मार्च	पू.भा. 4 मीन	29/18
18 मार्च	उ.भा. (1)	13/36
21 मार्च	उ.भा. (2)	22/03
25 मार्च	उ.भा. (3)	6/39

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में वक्री चित्रा (2) में)

4 अप्रै.	व. चित्रा (1)	9/19
12 अप्रै.	व. हस्त (4)	27/52
22 अप्रै.	व. हस्त (3)	7/13
3 मई	व. हस्त (2)	28/48
20 मई	मार्गी	7/02
5 जून	हस्त (3)	25/13
18 जून	हस्त (4)	27/21
28 जून	चित्रा (1)	17/59
6 जुला.	चित्रा (2)	23/00
14 जुला.	चित्रा 3 तुला	8/44
21 जुला.	चित्रा (4)	5/42
27 जुला.	स्वा. (1)	17/11
2 अग.	स्वा. (2)	21/27
8 अग.	स्वा. (3)	19/55
14 अग.	स्वा. (4)	13/49
19 अग.	विशा. (1)	27/44
25 अग.	विशा. (2)	14/14
30 अग.	विशा. (3)	21/40
4 सितं.	विशा 4 वृश्चिक	26/31
9 सितं.	अनु. (1)	29/07
14 सितं.	अनु. (2)	29/42
19 सितं.	अनु. (3)	28/24
24 सितं.	अनु. (4)	25/20
29 सितं.	ज्ये. (1)	20/48
4 अक्तू.	ज्ये. (2)	14/48
9 अक्तू.	ज्ये. (3)	7/35

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2014-15 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
13 अक्तू.	ज्ये. (4)	23/12
18 अक्तू.	मूल 1 धनु	13/47
22 अक्तू.	मूल (2)	27/20
27 अक्तू.	मूल (3)	15/58
31 अक्तू.	मूल (4)	27/45
5 नवं.	पू.षा. (1)	14/48
9 नवं.	पू.षा. (2)	25/10
14 नवं.	पू.षा. (3)	10/57
18 नवं.	पू.षा. (4)	20/03
22 नवं.	उ.षा. (1)	28/47
27 नवं.	उ.षा. 2 मकर	12/57
1 दिसं.	उ.षा. (3)	20/42
5 दिसं.	उ.षा. (4)	28/08
10 दिसं.	श्रव. (1)	11/18
14 दिसं.	श्रव. (2)	18/12
18 दिसं.	श्रव. (3)	24/48
23 दिसं.	श्रव. (4)	7/15
27 दिसं.	धनि. (1)	13/33
31 दिसं.	धनि. (2)	19/47
(सन् 2015 ई.)		
4 जन.	धनि. 3 कुम्भ	25/58
9 जन.	धनि. (4)	8/09
13 जन.	शत. (1)	14/22
17 जन.	शत. (2)	20/37
21 जन.	शत. (3)	26/55
26 जन.	शत. (4)	9/21
30 जन.	पू.भा. (1)	15/58
3 फर.	पू.भा. (2)	22/47
8 फर.	पू.भा. (3)	5/52
12 फर.	पू.भा. 4 मीन	13/12
16 फर.	उ.भा. (1)	20/46
20 फर.	उ.भा. (2)	28/39
25 फर.	उ.भा. (3)	12/51
1 मार्च	उ.भा. (4)	21/28
6 मार्च	रेव. (1)	6/28

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2015 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
10 मार्च	रेव. (2)	15/53
14 मार्च	रेव. (3)	25/43
19 मार्च	रेव. (4)	12/01
23 मार्च	अश्वि 1 मेष	22/46

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (2) में)

2 अप्रै.	पू.भा. (3)	05/30
4 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	7/32
6 अप्रै.	उ.भा. (1)	8/03
8 अप्रै.	उ.भा. (2)	7/12
9 अप्रै.	उ.भा. (3)	29/04
11 अप्रै.	उ.भा. (4)	25/42
13 अप्रै.	रेव. (1)	21/13
15 अप्रै.	रेव. (2)	15/43
17 अप्रै.	रेव. (3)	9/14
18 अप्रै.	रेव. (4)	25/50
20 अप्रै.	अश्वि 1 मेष	17/35
22 अप्रै.	अश्वि (2)	8/41
23 अप्रै.	अश्वि (3)	23/03
25 अप्रै.	अश्वि (4)	12/57
26 अप्रै.	भर. (1)	26/28
28 अप्रै.	भर. (2)	15/45
29 अप्रै.	भर. (3)	28/57
1 मई	भर. (4)	18/16
3 मई	कृति (1)	7/55
4 मई	कृति 2 वृष	22/07
6 मई	कृति (3)	13/11
7 मई	कृति (4)	29/18
9 मई	रोहि. (1)	23/00
11 मई	रोहि. (2)	18/34
13 मई	रोहि. (3)	16/29
15 मई	रोहि. (4)	17/28
17 मई	मृग. (1)	22/22

बुध नक्षत्र प्रवेश

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
20 मई	मृग (2)	8/34
22 मई	मृग 3 मिथुन	26/26
26 मई	मृग (4)	8/47
30 मई	आर्द्रा (1)	17/59
7 जून	वक्री	17/24
16 जून	व. मृग (4)	6/39
22 जून	व. मृग (3)	6/24
1 जुला.	मार्गी	18/18
10 जुला.	मृग. (4)	7/17
13 जुला.	आर्द्रा (1)	27/52
16 जुला.	आर्द्रा (2)	26/28
19 जुला.	आर्द्रा (3)	14/15
21 जुला.	आर्द्रा (4)	19/24
23 जुला.	पुन. (1)	20/01
25 जुला.	पुन. (2)	17/23
27 जुला.	पुन. (3)	12/22
29 जुला.	पुन. 4 कर्क	5/39
30 जुला.	पुष्य (1)	21/35
1 अग.	पुष्य (2)	12/45
2 अग.	पुष्य (3)	27/23
4 अग.	पुष्य (4)	17/45
6 अग.	आश्ले (1)	8/08
7 अग.	आश्ले (2)	22/43
9 अग.	आश्ले (3)	13/38
10 अग.	आश्ले (4)	29/02
12 अग.	मघा 1 सिंह	21/05
14 अग.	मघा (2)	13/52
16 अग.	मघा (3)	7/25
17 अग.	मघा (4)	25/54
19 अग.	पू.फा. (1)	21/22
21 अग.	पू.फा. (2)	17/53
23 अग.	पू.फा. (3)	15/30
25 अग.	पू.फा. (4)	14/18
27 अग.	उ.फा. (1)	14/20
29 अग.	उफा 2 कन्या	15/40
31 अग.	उ.फा. (3)	18/27

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
2 सितं.	उ.फा. (4)	22/47
4 सितं.	हस्त (1)	28/43
7 सितं.	हस्त (2)	12/39
9 सितं.	हस्त (3)	22/42
12 सितं.	हस्त (4)	11/23
14 सितं.	चित्रा (1)	27/16
17 सितं.	चित्रा (2)	23/34
20 सितं.	चित्रा 3 तुला	26/15
24 सितं.	चित्रा (4)	16/13
29 सितं.	स्वा. (1)	10/26
4 अक्तू.	वक्री	22/30
9 अक्तू.	व. चित्रा (4)	21/51
13 अक्तू.	व. चित्रा 3	16/52
16 अक्तू.	व. चित्रा 2 कं.	13/09
19 अक्तू.	व. चित्रा (1)	9/03
23 अक्तू.	व. हस्त (4)	11/12
25 अक्तू.	मार्गी	24/44
28 अक्तू.	चित्रा (1)	15/43
1 नवं.	चित्रा (2)	24/07
4 नवं.	चित्रा 3 तुला	21/17
7 नवं.	चित्रा (4)	9/07
9 नवं.	स्वा. (1)	16/30
11 नवं.	स्वा. (2)	21/34
13 नवं.	स्वा. (3)	25/16
15 नवं.	स्वा. (4)	28/15
18 नवं.	विशा. (1)	6/49
20 नवं.	विशा. (2)	9/12
22 नवं.	विशा. (3)	11/33
24 नवं.	विशा 4 वृश्चि.	13/57
26 नवं.	अनु. (1)	16/27
28 नवं.	अनु. (2)	19/05
30 नवं.	अनु. (3)	21/47
2 दिसं.	अनु. (4)	24/35
4 दिसं.	ज्ये. (1)	27/31
7 दिसं.	ज्ये. (2)	6/29
9 दिसं.	ज्ये. (3)	9/25

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
11 दिसं.	ज्ये. (4)	12/21
13 दिसं.	मूल 1 धनु	15/10
15 दिसं.	मूल (2)	17/53
17 दिसं.	मूल (3)	20/30
19 दिसं.	मूल (4)	22/56
21 दिसं.	पू.षा. (1)	25/14
23 दिसं.	पू.षा. (2)	27/23
25 दिसं.	पू.षा. (3)	29/25
28 दिसं.	पू.षा. (4)	7/25
30 दिसं.	उ.षा. (1)	9/27
(सन् 2015 ई.)		
1 जन.	उषा 2 मकर	11/44
3 जन.	उ.षा. (3)	14/29
5 जन.	उ.षा. (4)	18/10
7 जन.	श्रव. (1)	23/22
10 जन.	श्रव. (2)	7/20
12 जन.	श्रव. (3)	20/46
15 जन.	श्रव. (4)	22/22
21 जन.	वक्री	21/21
27 जन.	व. श्रव. (3)	13/30
30 जन.	व. श्रव. (2)	11/29
1 फर.	व. श्रव. (1)	28/27
5 फर.	व. उ.षा. (4)	9/21
11 फर.	मार्गी	20/25
18 फर.	श्रव. (1)	28/34
23 फर.	श्रव. (2)	6/36
26 फर.	श्रव. (3)	14/02
1 मार्च	श्रव. (4)	13/04
4 मार्च	धनि. (1)	6/15
6 मार्च	धनि. (2)	19/47
9 मार्च	धनि. 3 कुंभ	6/30
11 मार्च	धनि. (4)	14/48
13 मार्च	शत. (1)	21/11
15 मार्च	शत. (2)	25/52
17 मार्च	शत. (3)	29/01
20 मार्च	शत. (4)	6/45
22 मार्च	पू.भा. (1)	7/12
24 मार्च	पू.भा. (2)	6/26

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में आर्द्रा (4) में)

2014-15 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
24 अप्रै.	पुन. (1)	21/04
15 मई	पुन. (2)	27/47
2 जून	पुन. (3)	25/04
19 जून	पुन. 4 कर्क	8/45
4 जुला.	पुष्य (1)	20/27
19 जुला.	पुष्य (2)	22/47
3 अग.	पुष्य (3)	23/01
18 अग.	पुष्य (4)	28/33
3 सितं.	आश्ले (1)	23/40
20 सितं.	आश्ले (2)	21/56
9 अक्तू.	आश्ले (3)	26/20
3 नवं.	आश्ले (4)	28/16
8 दिसं.	वक्री	26/10
(सन् 2015 ई.)		
12 जन.	व. आश्ले. 3	17/41
8 फर.	व. आश्ले. 2	17/26
8 मार्च	व. आश्ले 1	11/53
8 अप्रै.	मार्गी	22/23

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में धनि. (2) में)

31 मार्च	धनि 3 कुंभ	10/03
3 अप्रै.	धनि. (4)	14/43
6 अप्रै.	शत. (1)	18/23
9 अप्रै.	शत. (2)	21/10
12 अप्रै.	शत. (3)	23/14
15 अप्रै.	शत. (4)	24/37
18 अप्रै.	पू.भा. (1)	25/23
21 अप्रै.	पू.भा. (2)	25/36
24 अप्रै.	पू.भा. (3)	25/20
27 अप्रै.	पू.भा. 4 मीन	24/39
30 अप्रै.	उ.भा. (1)	23/36
3 मई	उ.भा. (2)	22/10
6 मई	उ.भा. (3)	20/28
9 मई	उ.भा. (4)	18/30
12 मई	रेव. (1)	16/15

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
15 मई	रेव. (2)	13/47
18 मई	रेव. (3)	11/03
21 मई	रेव. (4)	8/06
23 मई	अश्वि (1) मेष	28/58
26 मई	अश्वि (2)	25/39
29 मई	अश्वि (3)	22/09
1 जून	अश्वि (4)	18/31
4 जून	भर. (1)	14/46
7 जून	भर. (2)	10/51
10 जून	भर. (3)	6/49
12 जून	भर. (4)	26/39
15 जून	कृति. (1)	22/22
18 जून	कृति 2 वृष	17/56
21 जून	कृति (3)	13/25
24 जून	कृति (4)	8/45
26 जून	रोहि. (1)	27/58
29 जून	रोहि. (2)	23/04
2 जुला.	रोहि. (3)	18/06
5 जुला.	रोहि. (4)	13/01
8 जुला.	मृग (1)	7/51
10 जुला.	मृग (2)	26/34
13 जुला.	मृग 3 मिथुन	21/11
16 जुला.	मृग (4)	16/42
19 जुला.	आर्द्रा (1)	10/06
21 जुला.	आर्द्रा (2)	28/23
24 जुला.	आर्द्रा (3)	22/35
27 जुला.	आर्द्रा (4)	16/36
30 जुला.	पुन. (1)	10/39
1 अग.	पुन. (2)	28/33
4 अग.	पुन. (3)	22/21
7 अग.	पुन. 4 कर्क	16/05
10 अग.	पुष्य (1)	9/41
12 अग.	पुष्य (2)	27/13
15 अग.	पुष्य (3)	20/38
18 अग.	पुष्य (4)	13/58
21 अग.	आश्ले. (1)	7/11

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2014 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
23 अग.	आश्ले (2)	24/20
26 अग.	आश्ले (3)	17/21
29 अग.	आश्ले (4)	10/20
31 अग.	मघा 1 सिंह	27/13
3 सितं.	मघा (2)	20/02
6 सितं.	मघा (3)	12/47
8 सितं.	मघा (4)	29/27
11 सितं.	पू.फा. (1)	22/03
14 सितं.	पू.फा. (2)	14/35
17 सितं.	पू.फा. (3)	7/02
19 सितं.	पू.फा. (4)	23/26
22 सितं.	उ.फा. (1)	15/45
25 सितं.	उफा 2 कन्या	8/01
27 सितं.	उ.फा. (3)	24/15
30 सितं.	उ.फा. (4)	16/25
3 अक्तू.	हस्त (1)	8/34
5 अक्तू.	हस्त (2)	24/39
8 अक्तू.	हस्त (3)	16/43
11 अक्तू.	हस्त (4)	8/45
13 अक्तू.	चित्रा (1)	24/44
16 अक्तू.	चित्रा (2)	16/42
19 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	8/37
21 अक्तू.	चित्रा (4)	24/30
24 अक्तू.	स्वा. (1)	16/22
27 अक्तू.	स्वा. (2)	8/13
29 अक्तू.	स्वा. (3)	24/02
1 नवं.	स्वा. (4)	15/52
4 नवं.	विशा. (1)	7/40
6 नवं.	विशा. (2)	23/27
9 नवं.	विशा. (3)	15/16
12 नवं.	विशा 4 वृश्चि.	7/02
14 नवं.	अनु. (1)	22/48
17 नवं.	अनु. (2)	14/33
20 नवं.	अनु. (3)	6/17
22 नवं.	अनु. (4)	22/01
25 नवं.	ज्ये. (1)	13/45
27 नवं.	ज्ये. (2)	29/28

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2014-15 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
30 नवं.	ज्ये. (3)	21/13
3 दिसं.	ज्ये. (4)	12/58
5 दिसं.	मूल 1 धनु	28/42
8 दिसं.	मूल (2)	20/27
11 दिसं.	मूल (3)	12/13
13 दिसं.	मूल (4)	27/58
16 दिसं.	पू.षा. (1)	19/43
19 दिसं.	पू.षा. (2)	11/29
21 दिसं.	पू.षा. (3)	27/16
24 दिसं.	पू.षा. (4)	19/01
27 दिसं.	उ.षा. (1)	10/50
29 दिसं.	उषा 2 मकर	26/38
(सन् 2015 ई.)		
1 जन.	उ.षा. (3)	18/29
4 जन.	उ.षा. (4)	10/22
6 जन.	श्रव. (1)	26/15
9 जन.	श्रव. (2)	18/10
12 जन.	श्रव. (3)	10/09
14 जन.	श्रव. (4)	26/08
17 जन.	धनि. (1)	18/09
20 जन.	धनि. (2)	10/12
22 जन.	धनि. 3 कुंभ	26/17
25 जन.	धनि. (4)	18/27
28 जन.	शत. (1)	10/39
30 जन.	शत. (2)	26/56
2 फर.	शत. (3)	19/16
5 फर.	शत. (4)	11/41
7 फर.	पू.भा. (1)	28/11
10 फर.	पू.भा. (2)	20/46
13 फर.	पू.भा. (3)	13/25
16 फर.	पूभा 4 मीन	6/09
18 फर.	उ.भा. (1)	23/00
21 फर.	उ.भा. (2)	15/56
24 फर.	उ.भा. (3)	8/58
26 फर.	उ.भा. (4)	26/08
1 मार्च	रेव. (1)	19/26

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2014-15 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
4 मार्च	रेव. (2)	12/53
7 मार्च	रेव. (3)	6/28
9 मार्च	रेव. (4)	24/13
12 मार्च	अश्वि 1 मेष	18/07
15 मार्च	अश्वि (2)	12/10
18 मार्च	अश्वि (3)	6/22
20 मार्च	अश्वि (4)	24/46
23 मार्च	भर. (1)	19/22

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में विशा. (3) में वक्री)

1 मई	व. विशा. (2)	12/24
19 जून	व. विशा. (1)	26/39
20 जुला.	मार्गी	25/57
20 अग.	विशा. (2)	16/47
3 अक्तू.	विशा. (3)	10/30
2 नवं.	विशा. 4 वृश्चि	20/53
30 नवं.	अनु. (1)	23/44
30 दिसं.	अनु. (2)	22/11
(सन् 2015 ई.)		
10 फर.	अनु. (3)	17/38
14 मार्च	वक्री	20/21

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में चित्रा (4) में)

10 मई	चित्रा (3)	24/30
12 जुला.	चित्रा 2 कं.	21/52
13 सितं.	चित्रा (1)	19/38
15 नवं.	हस्त (4)	17/27
17 जन.(15)	हस्त 3	15/07
21 मार्च	हस्त (2)	12/36

केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि (2) में)

2014-15 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मिं.
10 मई	अश्वि (1)	24/30
12 जुला.	रेव 4 मीन	21/52
13 सितं.	रेव. (3)	19/38
15 नवं.	रेव. (2)	17/27
17 जन.(15)	रेव. (1)	15/07
21 मार्च	उ.भा. (4)	12/36

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. (1) में)

30 अप्रै.	रेव. (2)	27/40
22 जुला.	वक्री	8/16
19 अक्तू.	व. रेव. (1)	6/57
21 दिसं.	मार्गी	28/08
20 फर.(15)	रेव. (2)	26/02

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (2) में)

13 मई	शत. (3)	17/37
9 जून	वक्री	25/12
7 जुला.	व. शत. (2)	17/40
16 नवं.	मार्गी	12/30
1 मार्च (15)	शत. (3)	24/45

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.षा. (2) में)

14 अप्रै.	वक्री	29/08
23 सितं.	मार्गी	6/01
26 जन.(15)	पू.षा. 3	16/17

ग्रहों की अंशात्मक युतियां (सन् 2014-15 ई.)

8 जन. ➡ बुध-शुक्र (धनु)
11 जन. ➡ सूर्य-शुक्र (धनु)
15 फर. ➡ सूर्य-बुध (कुम्भ)
10 अप्रै. ➡ बुध-शुक्र (कुम्भ)
26 अप्रै. ➡ सूर्य-बुध (मेष)
20 जून. ➡ सूर्य-बुध (मिथुन)
13 जुला. ➡ मंग.-राहु (कन्या)
25 जुला. ➡ सूर्य-गुरु (कर्क)
2 अग. ➡ बुध-गुरु (कर्क)
8 अग. ➡ सूर्य-बुध (कर्क)
18 अग. ➡ गुरु-शुक्र (कर्क)
25 अग. ➡ मंग.-शनि (तुला)
25 अक्तू. ➡ सूर्य-शुक्र (तुला)
30 अक्तू. ➡ बुध-राहु (कन्या)
13 नवं. ➡ शुक्र-शनि (वृश्चि)
18 नवं. ➡ सूर्य-शनि (वृश्चि)
26 नवं. ➡ बुध-शनि (वृश्चि)
8 दिसं. ➡ सूर्य-बुध (वृश्चि)

(सन 2015 ई.)

30 जन. ➡ सूर्य-बुध (मकर)
22 फर. ➡ मंग-शुक्र (मीन)

द्विग्रही-योग—सन् 2014-15

शनि-राहु ➡ 1 जन. से 12 जुला. (तुला)
मंग.-शनि ➡ 4 फर. से 24 मार्च (तुला)
बुध-शुक्र ➡ 31 मार्च से 4 अप्रै. (कुम्भ)
सूर्य-बुध ➡ 4 अप्रै. से 14 अप्रै. (मीन)
सूर्य-बुध ➡ 20 अप्रै. से 4 मई (मेष)
सूर्य-बुध ➡ 14 मई से 22 मई (वृष)
बुध-गुरु ➡ 22 मई से 19 जून (मिथुन)
सूर्य-बुध ➡ 15 जून से 16 जुला. (मिथुन)
सूर्य-शुक्र ➡ 13 जुला. से 16 जुला. (मिथुन)
मंग.-शनि ➡ 14 जुला. से 4 सितं. (तुला)
सूर्य-गुरु ➡ 16 जुला. से 17 सितं. (कर्क)
बुध-गुरु ➡ 29 जुला. से 12 अग. (कर्क)
सूर्य-बुध ➡ 29 जुला. से 12 अग. (कर्क)
सूर्य-बुध ➡ 17 अग. से 29 अग. (सिंह)
सूर्य-शुक्र ➡ 31 अग. से 17 सितं. (सिंह)
बुध-शनि ➡ 20 सितं. से 16 अक्तू. (तुला)
सूर्य-शुक्र ➡ 25 सितं. से 17 अक्तू. (कन्या)
सूर्य-शनि ➡ 17 अक्तू. से 2 नवं. (तुला)
शुक्र-शनि ➡ 19 अक्तू. से 2 नवं. (तुला)
शुक्र-शनि ➡ 12 नवं. से 5 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-शनि ➡ 16 नवं. से 16 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-बुध ➡ 24 नवं. से 13 दिसं. (वृश्चिक)
बुध-शनि ➡ 24 नवं. से 13 दिसं. (वृश्चिक)
सूर्य-बुध ➡ 16 दिसं. से 1 जन. (धनु)

(सन 2015 ई.)

बुध-शुक्र ➡ 1 जन. से 22 जन. (मकर)
सूर्य-शुक्र ➡ 14 जन. से 22 जन. (मकर)
मंग.-शुक्र ➡ 22 जन. से 12 फर. (कुम्भ)
मंग.-शुक्र ➡ 16 फर. से 12 मार्च (मीन)
सूर्य-मंग ➡ 14 मार्च से 23 मार्च (मीन)

तीनग्रही-योग—सन् 2014-15

4 जन. से 8 जन. ➡ सू.+बु.+शु. (धनु)
4 फर. से 24 मार्च ➡ मं.+श.+रा. (तुला)
15 जून से 19 जून ➡ सू.+बु.+गु. (मिथुन)
29 जुला. से 12 अग. ➡ सू.+बु.+गु. (कर्क)
7 अग. से 17 अग. ➡ सू.+गु.+शु. (कर्क)
17 सितं. से 20 सितं. ➡ सू.+बु.+रा. (कन्या)
25 सितं. से 17 अक्तू. ➡ सू.+शु.+रा. (कन्या)
19 अक्तू. से 2 नवं. ➡ सू.+शु.+श. (तुला)
4 नवं. से 12 नवं. ➡ सू.+बु.+शु. (तुला)
16 नवं. से 5 दिसं. ➡ सू.+शु.+श. (वृश्चिक)
24 नवं. से 5 दिसं. ➡ बु.+शु.+श. (वृश्चिक)
16 दिसं. से 29 दिसं. ➡ सू.+बु.+शु. (धनु)

(सन 2015 ई.)

14 जन. से 22 जन. ➡ सू.+बु.+शु. (मकर)

चतुर्ग्रही-योग—सन् 2014-15

7 अग. से 12 अग. ➡ सू.+बु.+गु.+शु. (कर्क)
16-17 अक्तू. ➡ सू.+बु.+शु.+रा. (कन्या)
24 नवं. से 5 दिसं. ➡ सू.+बु.+शु.+श. (वृश्चिक)

समसप्तक-योग—सन् 2014-15

25 मार्च से 13 अप्रै. ➡ सू.+मं. (मीन-कन्या)
14 अप्रै. से 14 मई ➡ सू.+श. (मेष-तुला)
29 दिसं. से 21 जन. ➡ गु.+शु. (कर्क-मकर)

—षडाष्टक योग—

18 अक्तू. से 27 नवं. ➡ मं.+गु. (कर्क-धनु)
6 दिसं. से 29 दिसं. ➡ गु.+शु. (कर्क-धनु)

(सन 2015 ई.)

4 जन. से 11 फर. ➡ (मं.+गु.) (कर्क-कुम्भ)

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि.सं.२०७१

-पं. विवेक शर्मा

(1) अनङ्ग त्रयोदशी व्रत (12 अप्रैल, शनिवार)

पूर्वविद्धा चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को यह व्रत किया जाता है। इस वर्ष यह त्रयोदशी 12 अप्रैल, शनिवार को पूर्व (द्वादशी) विद्धा एवं प्रदोष व्यापिनी है। अतएव यह व्रत 12 अप्रैल को शास्त्रसम्मत होगा।

''त्रयोदशी शुक्ला पूर्वा कृष्णोत्तरा। शनिवारादियुक्तां कांचिच्छुक्ल त्रयोदशीमारम्य संवत्सरपर्यन्तं प्रतिपक्षं त्रयोदशीषु शनिवारयुक्तास्वेव.......।'' (धर्म सिन्धु)

(2) भगवान् परशुराम जयन्ती (1 मई, गुरुवार)

वैशाख शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर में भगवान् श्रीपरशुराम का अंशावतार हुआ था– **वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयां पुनर्वसौ।**

निशायाः प्रथम यामे समाख्यः समये हरिः।। (भविष्यपुराण)

धर्मसिन्धु के अनुसार भी यह प्रदोष व्यापिनी तृतीया तिथि में ग्रहण करने की आज्ञा दी है– **''इयं रात्रि प्रथमयामव्यापिनी ग्राह्या।।''**

इस वर्ष 1 मई, गुरुवार को ही तृतीया तिथि रात्रि प्रथम प्रहर (प्रदोष) व्यापिनी है, अतएव भगवान् परशुराम जयन्ती 1 मई, गुरुवार को ही शास्त्र-सम्मत होगी।

(3) वटसावित्री व्रत (12 जून, गुरुवार)

वटसावित्री व्रत के पालन में दो परम्पराएं (मत) प्रचलित हैं। स्कन्द और भविष्योत्तर के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को और निर्णयामृतादि के अनुसार अमावस्या को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमावस या पूर्णिमा के दिन ही ग्रहण करने योग्य कहा गया है। धर्मसिन्धुकार अनुसार–

पूर्णिमास्यमावस्ये तु सावित्रीव्रतं विना परे ग्राह्ये। यत्तु, कौश्चच्छ्रावणी हुताशनीपौर्णमास्योः कुलधर्मादौ पूर्वविद्धयोग्राह्यत्वोक्तेः सर्वा पौर्णमासी कुलधर्मादौ पूर्वा गृह्यते तत्र मूलं मृग्यम्।।

इस शास्त्र-वचनानुसार इस वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा वाला वटसावित्री व्रत चतुर्दशी-विद्धा पूर्णिमा वाले दिन 12 जून को ही होगा।

(4) श्रीसत्यनारायण व्रत (आषाढ़-पूर्णिमा) (11 जुला. शुक्रवार)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा 12 जुलाई, 2014 ई. को 16घं. 55मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इस दिन प्रदोष-व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पूर्व ता. 11 जुला. को पंजाब, हरि., हिमाचल आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में प्रदोषकाल लगभग 19घं.-30मिं. से 21घं.-31मिं. तक रहेगा। ता. 11 जुला., 2014 ई. को पूर्णिमा 20घं. 33मिं. पर प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसी दिन प्रदोषव्यापिनी एवं रात्रिव्यापिनी पूर्णिमा होगी। अतएव श्रीसत्यनारायण का व्रत इसी दिन (11 जुलाई, 2014 ई.) को रखना प्रशस्त होगा।

(5) रक्षा-बन्धन (10 अगस्त, रविवार)

रक्षा-बन्धन का पवित्र कार्य भद्रा रहित अपराह्ण काल में करने का शास्त्र विधान है– **''भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं हन्ति..।।''**

प्रस्तुत वर्ष 10 अगस्त, 2014 ई., रविवार को श्रावण पूर्णिमा के दिन रक्षा-बन्धन का पवित्र कार्य होगा, परन्तु इस दिन दोपहर 1घं.–38मिं. (13घं.–38मिं.) तक भद्रा व्याप्ति (पाताल पर) रहेगी।

शास्त्रानुसार तो जहां तक सम्भव हो, दोपहर 1 बजकर 38 मिनट के बाद ही अपराह्न काल में रक्षाबन्धन का शुभ कार्य करना प्रशस्त होगा।

परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश यदि भद्रा काल में ही रक्षा-बन्धन आदि शुभ कार्य करना पड़े, तो शास्त्रकारों ने भद्रा मुखकाल को छोड़कर भद्रा पुच्छकाल में रक्षा-बन्धनादि शुभ कार्य करने की आज्ञा दी है। भविष्य पुराणानुसार भद्रा के पुच्छकाल में किए गए कृत्य में सिद्धि एवं विजय प्राप्त होती है, जबकि भद्रामुख में कार्य का नाश होता है–

''पुच्छे जयावहाः, मुखे कार्य विनाशाय...........''

इस कारण यदि अत्यन्त आवश्यक परिस्थिति हो, तो 10 अगस्त को प्रातः 10घं.-07मिं. से 11घं.–07मिं. तक भद्रापुच्छ काल में यह शुभ कार्य किया जा सकता है तथा दोपहर 11घं.-07मिं. से 12 बजकर 48मिं. तक–भद्रा मुखकाल (रक्षा-बन्धन आदि कृत्य में) का विशेष रूप से त्याग करें।

रक्षा-सूत्र (राखी) बान्धते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ना चाहिए–

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

(6) श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (17/18 अगस्त)



सिद्धान्त रूप में भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र में, अर्द्धरात्रि के समय वृष के चन्द्रमा कालीन हुआ माना जाता है। श्रीमद्भागवत्, भविष्य, अग्नि आदि पुराणों में अर्द्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्र के मत को ही मान्यता दी है। भविष्यपुराण अनुसार–

''मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्द्धरात्रके,
वृष राशि स्थिते चन्द्र नक्षत्रे–रोहिणी युते।।''

सिद्धान्त ग्रन्थ धर्मसिन्धु में भी पूर्व विद्धा एवं अर्धरात्रि कालीन भाद्र. अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है–

''कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या।
पूर्वदि। एवं निशीथ योगे पूर्वा।।'' (धर्मसिन्धु)

स्मार्त्त धर्मावलम्बी (जिसके अन्तर्गत प्रायः सभी धर्मपरायण गृहस्थी लोग आ जाते हैं) गृहस्थी लोग गत सहस्रों वर्षों से इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए चन्द्रोदय व्यापिनी अर्द्धरात्रि कालीन रहने वाली अष्टमी को भगवान् कृष्ण जन्माष्टमी के व्रत, पूजन आदि के लिए श्रेष्ठ एवं ग्राह्य मानते हैं। धर्मसिन्धु अनुसार–

'' स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या यतिर्भि निष्काम वनस्थे विधवाभिः वैष्णवैश्च–परै वो पोष्या।।''

मीमांसक भट्टोजिदीक्षित जी के अनुसार भी अर्द्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में ही यह (कृष्ण जन्माष्टमी) व्रत करना चाहिए। दूसरे दिन रोहिणी नक्षत्र का योग विचार करना व्यर्थ है।

रोहिणी–योगाऽभावेऽपि अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या।
—परदिने नक्षत्रयोगः अकिंचित्करः।।

अतएव शास्त्रप्रमाणानुसार इस व्रत का मुख्य निर्णय अष्टमी तिथि पर ही निर्भर है। परन्तु, जहाँ अष्टमी दोनों दिन अर्धरात्रि व्यापिनी हो, वहाँ कुछ परिस्थितियों में रोहिणी नक्षत्र का योग इस व्रत के दिन के निर्णय में निर्णायक हो सकता है।

तदनुसार वि. संवत् २०७१ में भाद्र. कृष्ण अष्टमी 17 अगस्त, रविवार को पूरा दिन/रात्रि अर्थात् अर्द्धरात्रि व्यापिनी तथा वृषस्थ चन्द्रमा होने से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत होगा। इस दिन स्मार्त (गृहस्थियों) के लिए जन्माष्टमी के व्रत, ''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'' मन्त्र का जप, उपासना, अर्घ्य आदि का विशेष माहात्म्य रहेगा।

जबकि मथुरा, वृन्दावन सहित उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाते आ रहे हैं। श्रीकृष्ण जन्म-स्थली मथुरा को आधार मानकर मनाई जाने वाली श्रीकृष्ण अष्टमी के दिन ही अधिकांशतः केन्द्रीय सरकार छुट्टी की घोषणा करती है। साधारण गृहस्थी लोग भी छुट्टी एवं उत्सव के दिन ही व्रत रख लेते हैं, जोकि शास्त्रविरुद्ध हो जाता है। वैष्णव सम्प्रदाय से जुड़े अधिकांश लोग उदय-कालिक एवं नवमी युता श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को ग्रहण करते हैं। तिथिनिर्णय अनुसार–

वैष्णवास्तु अर्धरात्रि व्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमी विद्धां परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या।।

ता. 18 अगस्त, सोमवार को अष्टमी तिथि केवल प्रातः 6 बजकर 07 मिनट तक है। रोहिणी नक्षत्र दोपहर 11घं.-53मिं. बाद से प्रारम्भ होगा। अर्द्धरात्रि के समय नवमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र, वृषस्थ चन्द्रमा व्याप्त होने से वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित श्रद्धालु लोग नवमी विद्धा उदयकालिक अष्टमी (18 अगस्त) को ग्रहण करेंगे।

ता. 18 अग. सोमवार की अर्धरात्रि के समय अष्टमी तिथि का अभाव है, अतः 17 अगस्त को छोड़कर इस दिन (ता. 18) व्रत, उत्सव करना किसी भी प्रकार न्याय संगत नहीं लगता। हमारे मतानुसार 18 अग. को भी श्रीकृष्ण स्तोत्र पाठ, ध्यान, कीर्तनादि करके इन पुण्य सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए। **व्रत एवं उत्सव तो 17 अगस्त, रविवार को ही श्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।**

सिद्धान्त ग्रन्थों में भी अधिकांशतः व्रत, पर्व, त्यौहारों को कर्मकाल विद्यमान् तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। यथा–

तत्र सर्वातिथिः यदहः कर्मकाल व्यापिनी सैव ग्राह्या।। (निर्णयसिन्धु)

(7) विजयादशमी (दशहरा) (3 अक्तूबर, शुक्रवार)



अपराह्ण–व्यापिनी आश्विन शुक्ल दशमी के दिन विजयादशमी (अपराजिता–पूजन) होती है। अपराह्न-काल विजयादशमी का मुख्य निर्णायक तत्त्व है। **'ज्योतिर्निबन्ध'** में लिखा है कि–

''आश्विनस्य सिते पक्षे दशम्यां तारकोदये।
स कालो विजयो ज्ञेयः सनकार्याथसिद्धये।।''

अर्थात् आश्विन शुक्ल दशमी के सायंकाल में तारा उदय होने के समय **'विजयकाल'** रहता है। वह सब कार्यों को सिद्ध करता है।

यदि दशमी पहले दिन अपराह्ण व्यापिनी और दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तादि व्यापिनी हो और वह वहाँ अपराह्ण से पहले ही समाप्त हो जाए, तब दूसरे दिन उसी स्थिति में विजयादशमी होगी, जब श्रवण नक्षत्र का योग केवल दूसरे दिन ही हो। परन्तु यदि दशमी पहले दिन अपराह्ण व्यापिनी होकर दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्ती न हो (६ घड़ी से कम), तब श्रवण नक्षत्र की प्रत्येक स्थिति में विजयादशमी पहले दिन होगी। धर्मसिन्धु के अनुसार–

''यदा तु पूर्वदिने एवापराह्नव्यापिनी परदिने च मुहूर्त्तत्रयादिव्यापिनी अपराह्नात् पूर्वमेव समाप्तापरत्रैव श्रवण–योगवती तदा परैव। अपराह्णे दशम्यभावेपि।।'' ''यां तिथिं समनुप्राप्य उदयं याति भास्करः।'' इत्यादिसाकल्य वचनैः श्रवण–युक्तायाः ग्राह्यया औदयिकस्वल्पदशम्याः कर्मकाले सत्त्वापादनात्।।

कश्यप ऋषि का यह वाक्य भी देखें।

''उदये दशमी किञ्चित् सम्पूर्णैकादशी यदि।
श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिः विजयाभिधा।।''

निर्णयसिन्धु में भी अपराजिता पूजन (जोकि विजयादशमी का प्रमुख अनुष्ठान है) एकादशी तिथि में न कर, दशमी तिथि में करने का निर्देश दिया है–

आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेन्नरः।
एकादश्यां न कुर्वीत् पूजनं चापराजितम्।।

इस वर्ष 3 अक्तूबर, 2014 ई. को ही दशमी अपराह्ण–व्यापिनी है, दूसरे दिन (4 अक्तू.

14 ई. को) दशमी त्रिमुहूर्त्त–न्यून है (अपराह्णकाल को स्पर्श नहीं कर रही)। अतः विजयादशमी 3 अक्तूबर, 2014 को ही शास्त्रसम्मत होगी।

(8) शरद् पूर्णिमा (कोजागर व्रत) (7 अक्तू. मंगलवार)

यह व्रत प्रदोष और निशीथ–दोनों में होने वाली पूर्णिमा के दिन किया जाता है। यदि पहले दिन निशीथव्यापिनी हो और दूसरे दिन प्रदोषव्यापिनी न हो तो पहले दिन व्रत करना चाहिए।

यथा–''**आश्विनपौर्णमास्यां कोजागर व्रतम्।। सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा।।**''

(धर्म-सिन्धु)

शास्त्र-वचनानुसार यह व्रत 7 अक्तूबर, 2014 ई. को होगा।

(9) भीष्मपंचक व्रत (2 से 6 नवम्बर)

शास्त्रों में भीष्मपंचक व्रत का अनुष्ठान केवल पाँच दिन (कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) निर्दिष्ट है। यदि शुद्धा एकादशी से उदयकालिक पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथि क्षय हो जाए और भीष्म–पंचकों के दिनों की संख्या चार ही रह जाए, तब दशमी विद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (जिसमें चतुर्दशी का वेध न हो) उदय-कालिक पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए। इसी प्रकार, यदि इन पाँच तिथियों (एका. से पूर्णिमा तक) में से किसी एक तिथि की वृद्धि हो जाने से भीष्म पंचकों के 6 दिन बनते हों, तो शुद्ध एकादशी वाले दिन से प्रारम्भ करके चतुर्दशी–विद्धा पूर्णिमा के दिन ही भीष्म-पंचकों को समाप्त करना चाहिए। धर्मसिन्धु के अनुसार–

''**एकादश्यादिदिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक पौर्णमास्यां समापनीयम्।। यदि शुद्धैकादश्यामारंभे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रतसमाप्तिर्न घटते तदा विद्धैकादश्यामप्यारंभः।। शुद्धैकादश्यामारंभेपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापने यदि षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धपौर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।।**''

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तिथि का क्षय हुआ है। अतएव उपरोक्त शास्त्र नियमानुसार '**भीष्मपंचक व्रत**' 2 नवंबर, 2014 ई. से 6 नवंबर, 2014 ई. तक पाँच दिन रहेंगे।

(10) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (5 दिसंबर, शुक्रवार)

मार्गशीर्ष पूर्णिमा को श्रीदत्तात्रेय जी का जन्म हुआ था। इसमें प्रदोष व्यापिनी पूर्णिमा ग्रहण की जाती है। यथा–

''**मार्गशीर्षपौर्णमास्यां दत्तात्रेयोत्पत्तिः। इयं प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या।।**'' (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष 5/6 दिसं., 2014 ई. को प्रदोषकाल 17घं.–20मिं. से 20घं.–07मिं. तक रहेगा। जबकि 6 दिसं. को पूर्णिमा 17घं.–57मिं. पर ही समाप्त हो रही है। अतएव 5 दिसं. को पूर्णिमा जोकि सायं 18घं.–19मिं. से प्रारम्भ हो रही है, अधिक समय तक 1घं. 48मिं. व्याप्त कर रही है। उपरोक्त शास्त्र निर्देशानुसार श्रीदत्तात्रेय जयन्ती 5 दिसं. को होगी।

इसी प्रकार श्रीसत्यनारायण व्रत भी 5 दिसं. को ग्राह्य होगा।

(11) गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत (23 जनवरी, 2015 ई.)

चतुर्थी–विद्धा माघ शुक्ल तृतीया को यह पर्व मनाया जाता है। पहिले दिन तीन मुहूर्त्त द्वितीया के वेध में, पर (अगले) दिन में तीन मुहूर्त्त से न्यून भी ग्रहण करनी चाहिए। गौरी के व्रत में तो कला (घटी) से परिमित अल्प भी द्वितीया से युक्त ग्रहण नहीं करनी चाहिए। यथा–

''**पूर्वदिने त्रिमुहूर्त्तद्वितीया वेधे परदिने त्रिमुहूर्त्त न्यूनापि ग्राह्या।। गौरी व्रते तु कलाकाष्ठादिपरिमित स्वल्पद्वितीया युक्तापि निषिद्धा।। परदिने कलाकाष्ठादिपरिमिता स्वल्यायि तृतीया परिग्राह्या।।**'' (धर्मसिन्धु)

वि. संवत् २०७१ में 23 जनवरी, 2015 ई. को माघ शुक्ल तृतीया केवल प्रातः 8घं.–21मिं. तक (२ घड़ी–१०पल) चतुर्थी विद्धा है। अतः उपरोक्त शास्त्रवचनानुसार तिथि त्रिमुहूर्त्त-व्यापिनी से कम होने पर भी चतुर्थी विद्धा ही ग्रहण की जाएगी। अतः गौरी तृतीया का व्रत 23 जनवरी, 2015 ई. को ही होगा।

उत्तराखण्ड त्रासदी के लिए पंचाँग दिवाकर परिवार की हार्दिक संवेदना

जून 2013 ई० के उत्तरार्द्ध भाग में उत्तराखण्ड केदार नाथ एवं श्री बद्रीनारायण मन्दिर के समीपवर्ती पर्वतीय क्षेत्रों में प्रलयंकारी प्राकृतिक प्रकोपों के कहरस्वरूप उत्तराखण्ड के वासियों और सहस्त्रों तीर्थ यात्रियों की अमूल्य जिंदगियों एवं घर–सम्पदा की जो अकथनीय क्षति हुई है, उसकी भरपाई (क्षतिपूर्ति) होना मुमकिन नहीं। हम ''पंचाँग दिवाकर'' परिवार उत्तराखण्डादि की त्रासदी में मृतकों के बचे सम्बन्धियों एवं परिवारजनों के प्रति हार्दिक दुःख एवं संवेदना प्रकट करते हैं तथा दिवंगत मृतकों की आत्माओं की शान्ति के लिए हम श्रीपरमात्मा से प्रार्थना करते हैं। **निवेदक–पण्डित पन्ना लाल ज्योतिषी, पंचाँगकर्त्ता**

देवकार्य (देवपूजा) सम्बन्धी शास्त्र वाक्य

(1) गीले वस्त्रों को पहनकर अथवा दोनों हाथ घुटनों से बाहर करके जो जप, होम और दान किया जाता है, वह सब निष्फल हो जाता है। (लिखितस्मृति ६३)

(2) केश खोलकर आचमन और देवपूजन नहीं करना चाहिए। (विष्णुपुराण)

(3) घर में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्यप्रतिमा, तीन देवी–प्रतिमा, दो गोमती–चक्र और दो शालग्राम का पूजन नहीं करना चाहिए। इनका पूजन करने से गृह स्वामी को दुःख, अशान्ति की प्राप्ति होती है। (नारदपुराण पूर्व० ६७।१२०–१२१)

प्रश्नोत्तर-समस्याएँ और समाधान

समस्या—(1) क्या श्राद्धों के दिनों में गण्डमूल शान्ति एवं कालसर्पयोग की शान्ति करवाई जा सकती है ?

(2) श्राद्धों के दिनों में जन्मे बालक या बालिका का जन्म दिन श्राद्धों में ही मनाया जा सकता है, या नहीं। अथवा कब मनाएँ ?

(3) क्या गुरू, शुक्र अस्त काल में गण्डमूल, कार्तिक व त्रिखल आदि शान्ति हो सकती है या नहीं ? —पं. दीवान चन्द शर्मा ज्यो., गाँव पोस्ट हरोली जिला ऊना (हि.प्र.)

समाधान—(1) गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न बालक या कन्या की शान्ति लगभग 27वें दिन उसी नक्षत्र में शान्ति करवाने का विधान है, साथ ही 27 दिन के बाद ही नक्षत्र शान्ति करवाकर गण्डमूलक बच्चे का मुख अवलोकन करने की शास्त्राज्ञा कही गई है—

गण्डमूलर्क्षे भवं बालक कन्याऽथवा दिनानि सप्त विंशति।
पिता नावलोकनं कार्यं ततः शान्तिं समाचरेत्।।

गण्डमूल नक्षत्र की शान्ति प्रायः 27वें दिन उसी नक्षत्र में कराने की शास्त्राज्ञा है, अतएव गण्डमूल नक्षत्र शान्ति में श्राद्ध पक्ष का विचार करने की आवश्यकता नहीं होती।

कालसर्प दोष की शान्ति हेतु यथासम्भव श्राद्ध पक्ष को नहीं ग्रहण करना चाहिए। हमारे मतानुसार जन्मकालिक कुण्डली में **''कालसर्पकारक''** राहु जिस नक्षत्र में होगा, उसी नक्षत्र में गोचरवश जब राहु की पुनरावृत्ति होगी, उसी समय कालसर्प दोष किसी की शान्ति करवानी चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों **कालसर्प दोष की शान्ति** हेतु अश्विनी, आर्द्रा, स्वाती आश्लेषा पुष्य, मघा, मूला, ज्येष्टा एवं शतभिषा—इन नौ नक्षत्र में से किसी एक नक्षत्र में शान्त कराने का परामर्श दिया है। यदि **पितृदोष** के कारण कालसर्प योग निर्मित होता है, तो श्राद्धों में भी शान्ति करवाई जा सकती है। उस स्थिति में नारायण बलि, नागबली, पितृतर्पण, पितृस्तोत्र, ब्राह्मण भोजन आदि कृत्य कराने शुभ होंगे।

(2) श्राद्ध पक्ष के दिनों में यदि किसी बच्चे का जन्मदिन आ जावे तो उस दिन विधिवत् जन्म दिन पूजन एवं उसके उपलक्ष्य में ब्राह्मण भोजन-दानादि कृत्य नहीं करवाने चाहिएँ। श्राद्धों अर्थात् पितृपक्ष में पितरों को आशा लगी रहती है कि हमारे पुत्र-पौत्रादि हमें पिण्डदान तिलांजलि द्वारा तर्पण एवं ब्राह्मण भोजन करवा कर सन्तुष्ट करेंगे। यदि किसी जातक का जन्म दिन पितृपक्ष (श्राद्ध) के दिनों में पड़ जाए, तो उसको आश्विन नवरात्रों में जन्म दिन वाली तिथि, वार या सम्भव हो तो उसी नक्षत्र में जन्मदिन पूजादि कृत्य करने चाहिएँ। श्राद्धों में पड़ने वाले जन्मदिन को श्री गणपति स्तोत्र, विष्णु सहस्रनाम अथवा शिव सहस्रनाम या देवी कवच का पाठ करना चाहिए। समीपस्थ मन्दिर में दीप व गौओं को चारा भी डाल सकते हैं।

(3) धर्मसिंधु अनुसार गुरू-शुक्रास्त में विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, देव प्रतिष्ठा आदि कृत्यों का निषेध माना गया है। नैमित्तिक कर्म-गण्डमूल कार्तिक और शान्ति में गुरू-शुक्र ग्रहास्त आदि का विचार नहीं करना चाहिए—

निमित्तकानि रजोदोष शान्ति, पुनः प्रतिष्ठादीनि यद् निमित्तानन्तरमेव क्रियते, तदा न मलमास, ग्रह अस्तादि दोष..............(धर्म सिन्धु)

समस्या—(4) क्या त्रिक् स्वामियों (6, 8, 12) के रत्न धारण किए जा सकते हैं—

(5) उच्चराशि में स्थित ग्रह का दान करना चाहिए अथवा नहीं ?

(6) क्या मंगलीक योग के संदर्भ में द्वितीय भावस्थ भौम का विचार करना आवश्यक है ?

(7) हमारे कार्यालय से छपी ''गण्डमूल शान्ति'' में निर्दिष्ट नक्षत्र शान्त हेतु लिखे मंत्र की जगह महामृत्युजप मन्त्र के जप का प्रयोग उचित है या नहीं।

—आचार्य मायाधर शर्मा, राजकीय उच्च पाठशाला, धार काण्डलु (करसोग) पो. आ. सपनोट, जिला मण्डी (हि. प्र.) 175010

समाधान—(4) फलित ज्योतिष में त्रिक्भावों (6, 8, 12) के स्वामी पापफल प्रदायक माने जाते हैं। अशुभ फल से बचने के लिए त्रिक् स्वामियों स्वामी ग्रहों से सम्बन्धित रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अर्थात् नहीं पहनने चाहिएँ।

(5) श्रद्धापूर्वक सुपात्र व्यक्ति को किया गया दान कभी निष्फल नहीं जाता। भारतीय ज्योतिष में उच्च राशि के ग्रह के दान का निषेध नहीं कहा गया है। कुण्डली में केवल ग्रह की स्थिति देखकर शीघ्रता में उच्च, नीचादि का निर्णय नहीं करना चाहिए। कुण्डली में उच्च दिखाई देने वाले ग्रह की भावेश स्थिति, नवांश कुण्डली एवं चलित में उस ग्रह की स्थिति, उदय-अस्त आदि स्थितियों को भी ध्यान रखना चाहिए।

(6) उत्तरी भारत में उपलब्ध ज्योतिष ग्रंथों में प्रायः १, ४, ७, ८ एवं १२वें भावों में स्थित भौम विचार किया जाता है।

दक्षिणी भारत में द्वितीय भावस्थ भौम का भी विचार किया जाता है। वैसे द्वितीय (कुटुम्ब) भाव में भौम, राहु आदि क्रूर ग्रह का होना पारिवारिक जीवन में कटुता पैदा करता है।

(7) अशुभ गण्डमूल नक्षत्र की शान्ति हेतु लिखे गये मन्त्र का ही यथानिर्दिष्ट सँख्या में जप करना चाहिए। मृत्युजप मन्त्र के जप का अलग से अपना महत्त्व है। दीर्घायुष्य के लिए तो भगवान् शिव के मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने की महिमा है ही, परन्तु नक्षत्र शान्ति हेतु उससे सम्बन्धित मन्त्र का ही विधिवत् पूजनोपरान्त जप करवाना चाहिए।

शनि का तुला एवं वृश्चिक राशि में फल (सं. २०७१)

वर्ष के प्रारम्भ में ही शनि तुला राशि में गतिशील है। (2) मार्च से वक्री होकर 20 जुला. को मार्गी होगा। एक नवं. तक तुला राशि में ही संचार करेगा। (2) नवं. को रात्रि 8:57 पर **वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा**। सम्वतान्त तक इसी राशि में संचार करेगा।

☆ तुला राशि में संचार का फल–सं. २०७१ ☆

(वर्षारम्भ से 1 नवं. 2014 ई. तक)

तुला राशि में जब शनि गत्यमान हो, तो सब प्रकार के अनाज महँगे हों, शहरों व गाँवों में सर्वत्र मनुष्य क्लेश युक्त अर्थात् दुःखी हों, पृथ्वी पर भूकम्पादि का भय हो। मुनि आदि श्रेष्ठ लोगों को भी शरीर कष्ट हो। शहर व गाँवों में भी प्राकृतिक प्रकोपों से मनुष्यों की हानि हो। उपयोगी वर्षा की कमी हो और सामान्य लोग धन-सम्पदादि सुखों से हीन रहें–

धान्यानां वै महर्घं नरपुरनगराः क्लेश पूर्णाश्च देशाः,
पृथ्व्यांकम्पमाप्ता सकलमुनि वरे देहपीडापि नित्यम्।
सर्वेते यान्ति नाशंनरपुरनगराण्यम्बुदोप्यल्प एव,
चक्रावातो जनानां सुखधन रहितः सूर्यपुत्रे तुलायाम्।।

☆ वृश्चिक राशि में संचार का फल ☆

(02 नवं. से 20 मार्च से 2015 ई. तक)

वृश्चिक का शनि हो, तो उच्चपदासीन राजा लोग अहंकारयुक्त होकर क्रोधित रहें। सर्पादि विषधर जीवों की उत्पत्ति बढ़े, पक्षियों की हानि हो। सातों द्वीपों में, अर्थात् भूमण्डल में भूकम्पादि अधिक हों। किसी विशिष्ट राजा (राष्ट्राध्यक्ष) की मृत्यु हो। लोगों में परस्पर कलह-क्लेश एवं शत्रुता बढ़ेगी। शुभ कार्यों की कमी हो। गुणवान् व्यक्ति हतोत्साहित हों। एक वर्ष पश्चात् दिल्ली शहर में नाशकारी (हिंसक) कृत्य अधिक हों।

यदा बृश्चिकगः सौरिःमेदिनी दुःख संयुता।
वर्षमात्रमथोचोर्घ्वामिंद्र प्रस्थो विनश्यति।। अ.प्र.

नव सम्वत्सर का फल और माहात्म्य

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ **संस्कारों (विवाह-मुण्डनादि)** एवं **मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है**। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। **''चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण)।''** सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। संवत् 2071 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 31 मार्च ई., सोमवार से **'प्लवंग'** नामक नया संवत्सर प्रारम्भ होगा।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्य कर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल, आदि से सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवा कर उन्हें क्षीर सहित सात्विक भोजन करवाकर उनका **'पंचांगदिवाकर'**, सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगा जल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। फिर सम्वत्सर की मूर्त्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्न मन्त्रों से पूजन एवं प्रार्थना करें–

''भगवंतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः। आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्र-पूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास**, सवारी राजा, **मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता॥

वि. संवत् २०७१, चैत्र शुक्ल पक्ष शाक: १९३६ — सन् 2014 ई. (ता. 31 मार्च से 15 अप्रैल तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्वकपाल में, शनि पश्चिम में, मंगल पश्चिमक्षितिज के पास तथा बुध पूर्वक्षितिज के पास होगा तथा 13 अप्रै. को पूर्व में ही अस्त होगा। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	शाके चैत्र	जमा मु.	मार्च	वैशा प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३०.५०	१	चंद्र	४०	८	रेव	४५	१३	ऐन्द्र	४४	१०	किं	१२	२४	१०	२९	31	१८	मे. ४५/१३	प्लवंग नाम वि. संवत् २०७१ प्रा., चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रा. (A)	११	१६	१०	३७	६	२२	१८	४२
३०.५५	२	मंग	३७	३	अश्वि	४४	००	वैधृ	३८	५५	बा	८	३६	११	३०	अप्रै	१९	मेष	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, गण्डमूल विचार 23–57 तक,	११	१७	०९	४८	६	२१	१८	४३
३०.५८	३	बुध	३५	३३	भर	४४	२५	विष्क	३४	५८	तै	६	१८	१२	जमा	2	२०	वृ. ५९/४५	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, जमादि–उल्सानी (मु.) मास प्रा.	११	१८	०८	५९	६	२०	१८	४३
३१.०५	४	गुरु	३५	५३	कृति	४६	३५	प्रीति	३२	२८	व	५	४३	१३	२	3	२१	वृष	भ. ५/४३ से ३५/५३ तक, दमनक चतुर्थी **प्लवंग नामक सम्वत्सर**	११	१९	०८	०९	६	१८	१८	४४
३१.१०	५	शुक्र	३७	५५	रोहि	५०	२८	आयु	३१	१८	ब	६	५४	१४	३	4	२२	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, बुध मीन में ३/०८+	११	२०	०७	१६	६	१७	१८	४५
३१.१३	६	शनि	३९	८	मृग	५५	५०	सौभा	३१	२५	कौ	८	३२	१५	४	5	२३	मि. २३/००	स्कन्द षष्ठी व्रत, +मेला त्रिपुरमालिनी (जालं.)	११	२१	०६	१९	६	१६	१८	४५
३१.१८	७	रवि	४६	३५	आर्द्रा	६०	००	शोभ	३२	३३	ग	१२	४२	१६	५	6	२४	मिथुन	भ. ४६/३५ से, बुध उ.भा. में ४/३०, शुक्र शत. में ३०/२०,	११	२२	०५	२१	६	१५	१८	४६
३१.२५	८	चंद्र	५२	२८	आर्द्रा	२	२८	अति	३४	२८	वि	१९	३२	१७	६	7	२५	क. ५२/४८	भ. १९/३२ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, अशोकाष्टमी, (B)	११	२३	०४	२२	६	१३	१८	४७
३१.२८	९	मंग	५८	३५	पुन	९	४०	सुक	३६	४०	बा	२५	३२	१८	७	8	२६	कर्क	श्रीरामनवमी (पुनर्वसु प्रातः 10/04 तक), नवरात्रे समाप्त	११	२४	०३	१९	६	१२	१८	४७
३१.३३	१०	बुध	६०	००	पुष्य	१७	३	धृति	३८	५०	तै	३१	३३	१९	८	9	२७	कर्क	नवरात्र–पारणा, गं.मू. 13/00 बाद	११	२५	०२	१३	६	११	१८	४८
३१.३८	१०	गुरु	४	३०	श्ले.	२४	३	शूल	४०	३५	गर	४	३०	२०	९	10	२८	सिं. २४/०३	भ. ३७/०५ से, गण्डमूल विचार	११	२६	०१	०६	६	१०	१८	४९
३१.४०	११	शुक्र	९	४०	मघा	३०	१५	गंड	४१	४०	वि	९	४०	२१	१०	11	२९	सिंह	भ. ९/४० तक, कामदा एकादशी व्रत, गण्डमूल 18/15 तक	११	२६	५९	५७	६	०९	१८	४९
३१.४८	१२	शनि	१३	४५	पू.फा.	३५	२३	वृद्धि	४१	५०	बा	१३	४५	२२	११	12	३०	कं. ५१/२५	शनि प्रदोष व्रत, वक्री मंगल हस्त (४) में ५४/२३, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत (देखें पृ. 86)(C)	११	२७	५८	४७	६	०७	१८	५०
३१.५३	१३	रवि	१६	३०	उ.फा.	३८	१०	ध्रुव	४०	५५	तै	१६	३०	२३	१२	13	३१	कन्या	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), बुध रेवती में ३७/४८, (D)	११	२८	५७	३३	६	०६	१८	५१
३१.५५	१४	चंद्र	१७	५३	हस्त	४१	३५	व्या.	३८	५५	व	१७	५३	२४	१३	14	वैशा	कन्या	भ. १७/५३ से ४७/५३ तक, सूर्य अश्वि (१) मेष में ३/३५, (E)	११	२९	५६	१९	६	०५	१८	५१
३२.००	१५	मंग	१७	५३	चित्रा	४२	४३	हर्ष	३५	५३	ब	१७	५३	२५	१४	15	२	तु. १२/२०	चैत्र पूर्णिमा (स्नानदानादि), श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण–भारत),(F)	०	००	५५	०१	६	०४	१८	५२

(A) पंचक समाप्त ४५/१३, घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, सूर्य रेवती में २९/४५, शुक्र कुम्भ में ९/१३, ध्वजारोहण **(B)** मेला बाहूफोर्ट (जम्मू) **(C)** श्रीविष्णु दमनोत्सव, **(D)** बुध पूर्व में अस्त ३१/३८, स. सि. यो. **(E)** वैशाख संक्रान्ति (वैशाखी), मु. ३०, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से दोप. 13/59 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवदमनोत्सव **(F)** वैशाखस्नान प्रारम्भ

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	५	११	२	१०	६	६	०
२३	१९	२५	०४	१७	७	२८	५	५
०२	०९	३६	५०	५६	९	१५	७	७
३६	३२	१३	१३	२८	३५	१६	२५	२५
59 00	714 58	22 49	102 25	5 47	64 2	3 16	3 11	3 11
रेव २	आर्द्रा ४	चित्रा १	उ.भा. १	आर्द्रा ४	शत १	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	५	५	११	२	१०	६	६	०
००	२७	२२	१९	१८	१५	२७	४	४
५३	००	३२	११	४७	४७	४७	४१	४१
३८	४२	५३	१८	०१	४२	१४	५९	५९
58 43	789 56	22 31	114 28	6 59	65 39	3 46	3 11	3 11
अश्वि १	चित्रा २	हस्त ४	रेव १	आर्द्रा ४	शत ३	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि (२)
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (31 मार्च, 2014 ई., सोमवार) से नया **प्लवंग नामक** विक्रमी सम्वत् २०७१ शुरु होगा। आगामी वर्षकाल के मध्य व्रतानुष्ठान, व्रत, दान, होमादि शुभ कार्यों के संकल्प में इसी का प्रयोग होगा। नव सम्वत् में राजा एवं मन्त्री के दोनों **मुख्य अधिकार** यद्यपि सौम्य ग्रह चन्द्रमा को प्राप्त हुए हैं, परन्तु दोनों मुख्य पदाधिकार एक ही ग्रह को प्राप्त होने का फल शास्त्रों में शुभ नहीं माना गया है, यथा–**स्वयं राजा स्वयं मन्त्री जनेषु रोग पीडा, चौराग्नि, विग्रह भयं च नृपाणाम्।** अर्थात्–जब राजा और मन्त्री–ये दोनों अधिकार एक ही ग्रह को प्राप्त होवें तो लोगों में क्लिष्ट प्रकार के रोगों की उत्पत्ति, समाज में चोरी, डकैती, लूटमार, अग्निकाण्ड एवं आतंक व हिंसा की वारदातें अधिक हों। सम्वत्सर के फल में भी लगभग ऐसे ही अशुभ फल होने के संकेत हैं। राजा व मन्त्री चन्द्रमा के प्रभावस्वरूप देश में धन का व्यय सुख एवं ऐश्वर्य के साधनों पर अधिक होगा। संवत्सर एवं राजा–मन्त्री आदि के फल विस्तृत रूप से जानने के लिए गत पृष्ठों पर देखें। **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा** (31 मार्च) से नवमी तक श्री दुर्गा माता व श्री गणेश के सम्मुख पुष्पाक्षत प्रोक्षित करके नारियल, फल एवं वस्त्र सहित मंत्रपूर्वक घटस्थापन करना एवं मिट्टी के पात्र में रेत, जौं वापन करके देवी माता के सामने नित्य दीपज्योति प्रज्वलित करके अष्टमी या नवमी तिथि तक नित्य श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करना चाहिए। **प्रथम नवरात्र** को किसी ब्राह्मण, गुरू या श्रेष्ठ व्यक्ति द्वारा नवसम्वत् की पूजा करवाकर संवत् फल व राजा/मंत्री आदि का फल श्रवण करना चाहिए तथा उन्हें यथाशक्ति धर्मग्रंथ, पंचांग, वस्त्र, फल, मिष्टान्न आदि की भेंट देनी चाहिए। ता. 14 अप्रैल **सोमवार को वैशाख संक्रान्ति** ३० मुहूर्त्ति ध्वांक्षी नामक वैश्यों को व्यापार में लाभ देने वाली होगी। स्नानदान आदि का **पुण्यकाल** प्रातः सूर्योदय से दुपै. 13/59 तक रहेगा।

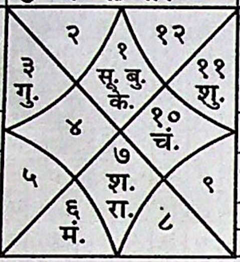
वि. संवत् २०७१,	वैशाख कृष्ण पक्ष			शाक: १९३६										तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 16 अप्रैल से 29 अप्रैल तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु:	भा.स्टैं.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी.	पल	नक्षत्र	घड़ी.	पल	योग	घड़ी.	पल	करण	घड़ी.	पल	शक चैत्र	जमादि. सु.	अप्रैल	वैशाख प्र.		ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्वकपाल में, शनि पश्चिम में दिखाई देगा। सायं गुरु पश्चिमकपाल तथा मं. पूर्व में उदय होता दिखाई देगा। बुध अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.०५	१	बुध	१६	३५	स्वा.	४२	४०	वज्र	३१	५५	कौ	१६	३५	२६	१५	16	३	तुला	**वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,**	०	०१	५३	४२	६	०३	१८	५३
३२.०८	२	गुरु	१४	१३	विशा	४१	३५	सिद्धि	२७	३	ग	१४	१३	२७	१६	17	४	वृ. २६/५८	भ. ४२/३३ से प्रारम्भ, स. सि. योग: 22/40 बाद	०	०२	५२	१८	६	०२	१८	५३
३२.१५	३	शुक्र	१०	५३	अनु.	३९	४३	व्य.	२१	३०	वि	१०	५३	२८	२७	18	५	वृश्चिक	भ. १०/५३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12-13), शुक्र पू.भा. में ४८/२८	०	०३	५०	५५	६	००	१८	५४
३२.२०	४	शनि	६	४५	ज्ये.	३७	५	वरी	१५	२०	बा	६	४५	२९	१८	19	६	ध. ३७/०५	सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूलादि	०	०४	४९	३०	५	५९	१८	५५
३२.२३	५	रवि	२	३	मूल	३३	५८	परि	८	४०	तै	२	०३	३०	१९	20	७	धनु	भ. ५६/५० से, **बुध अश्वि (1) मेष में** २९/०३, सूर्य सायन वृष में(A)	०	०५	४८	०३	५	५८	१८	५५
००.००	६	रवि	५६	५०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.२८	७	चंद्र	५१	२३	पू.षा.	३०	२८	शिव सिद्ध	१ ५४	४३ २५	वि	२४	०७	वै.	२०	21	८	म. ४४/३३	भ. २४/०७ तक, शक वैशाख प्रारम्भ	०	०६	४६	३६	५	५७	१८	५६
३२.३३	८	मंग	४५	४५	उ.षा.	२६	४८	साध्य	४७	५	बा	१८	३४	२	२१	22	९	मकर		०	०७	४५	०५	५	५६	१८	५७
३२.३५	९	बुध	४०	५	श्रव	२३	३	शुभ	३९	४५	तै	१२	५५	३	२२	23	१०	कुं. ५१/१०	**पंचक प्रारम्भ** ५१/१० (26/23),	०	०८	४३	३३	५	५५	१८	५७
३२.४०	१०	गुरु	३४	३५	धनि	१९	२३	शुक्ल	३२	३०	व	७	२०	४	२३	24	११	कुम्भ	भ. ७/२० से ३४/३५ तक, गुरु पुन. (१) में ३७/५५	०	०९	४२	०१	५	५४	१८	५८
३२.४५	११	शुक्र	२९	२०	शत	१५	५८	ब्रह्म	२५	३०	ब	१	५३	५	२४	25	१२	मी. ५८/३५	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	०	१०	४०	२७	५	५३	१८	५९
३२.४८	१२	शनि	२४	३५	पू.भा.	१२	५५	ऐंद्र	१८	५०	तै	२४	३५	६	२५	26	१३	मीन	**शनि प्रदोष व्रत,** बुध भरणी में ५१/३०,	०	११	३८	५०	५	५२	१८	५९
३२.५३	१३	रवि	२०	२५	उ.भा.	१०	३०	वैधृ	१२	४३	व	२०	२५	७	२६	27	१४	मीन	भ. २०/२५ से ४८/४७ तक, सूर्य भरणी में ४३/५८, **शुक्र मीन में (B)**	०	१२	३७	१३	५	५१	१९	००
३२.५८	१४	चंद्र	१७	८	रेव	८	५०	विष्क	७	१३	श	१७	८	८	२७	28	१५	मे. ८/५०	पंचक समाप्त ८/५०, पितृकार्य अमावस, गण्डमूलादि	०	१३	३५	३३	५	५०	१९	०१
३३.००	३०	मंग	१४	५०	अश्वि	८	१३	प्रीति आयु	२ ५८	३० ४३	ना	१४	५०	९	२८	29	१६	मेष	**वैशाख–भौमवासरी अमावस,** स्नानदानादि, गण्डमूल 9/06 तक	०	१४	३३	५२	५	४९	१९	०१

(A) ८/४०, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, अगस्त्यास्त, गण्डमूलादि 19/33 तक, स. सि. योग **(B)** ४७/००, मासशिवरात्रि व्रत,

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	५	०	२	१०	६	६	०
०७	०३	२०	०३	१९	२३	२७	०४	०४
४४	२३	०१	०३	३८	३०	१९	१९	१९
०२	४०	२६	३९	४४	४९	४१	४४	४४
58 31	853 49	20 6	124 27	7 55	66 47	4 8	3 11	3 11
अश्वि ३	उषा ३	हस्त ४	अश्वि १	आर्द्रा ४	पू.भा (२)	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

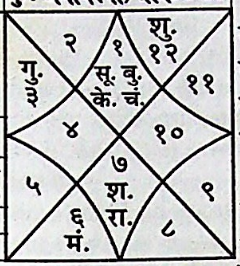
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	५	०	२	११	६	६	०
१४	११	१७	१७	२०	०१	२६	०३	०३
३३	१९	५२	५३	३६	२१	५०	५७	५७
०६	४८	१८	५७	४९	१३	०१	२८	२८
58 20	796 7	15 58	129 2	8 48	67 41	4 22	4 11	3 11
भर. १	अश्वि ४	हस्त ३	भर. (२)	पुन १	पू.भा ४	विशा ३	चित्रा ४	अश्वि (२)
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रातः 5.30



वैशाख कृष्ण पक्षफल–

चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा तक वैशाख मास में स्नान, दान एवं वैशाख माहात्म्य के पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। इस मास में व्यक्ति को आलस्य त्यागकर स्नान जप, पाठादि के बाद भगवान् सूर्य को अर्घ्यदान तथा दिन में **श्रीविष्णु सहस्रनाम, ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** आदि नाम मन्त्रों का जप करना चाहिए। इस मास में भूमि शयन आदि यम नियमों का पालन तथा श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन एवं ऋतुफल, वस्त्रादि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। **ग्रह गोचर**–पक्षारम्भ में **मेष राशि** पर सूर्य–केतु का योग बना हुआ है, उस पर शनि की शत्रु दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप, केन्द्रिय (यू.पी.ए.) सरकार के मन्त्रीमण्डल में विशेष उतार–चढ़ाव एवं परिवर्तन देखने को मिलेंगे। ज़बरदस्त महँगाई, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार आदि मुद्दों पर केन्द्रिय सरकार एवं विपक्षी दलों का विरोध एवं टकराव बढ़ेगा। ता. 27 को शुक्र मीन राशि में प्रविष्ट होगा और उस पर मंगल की वक्र दृष्टि पड़ रही है। सर्व प्रकार के अनाज, सरसों, तैल, अलसी, गुड़, चीनी में घटाबढ़ी के बाद अचानक तेजी आएगी। मंगल के कारण रूई व चान्दी में अच्छी तेजी के योग हैं। **ता. 29 को मंगलवारी** अमावस होना सर्व प्रकार अनाज में तेजी, कहीं छत्रभंग, राजनेताओं में टकराव एवं हिंसक व आतंकवादी घटनाएँ होने के संकेत हैं।

आकाश लक्षण–इस पक्ष में उत्तरी भारत में अनेक स्थानों पर तेज़ हवाओं के साथ वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, वैशाख शुक्ल पक्ष शाक: १९३६ | सन् 2014 ई. (ता. 30 अप्रैल से 14 मई तक) हिजरी सन् 1435 | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः

ग्रह दर्शन—प्रातः शुक्र पूर्वकपाल में तथा शनि पश्चिमक्षितिजासन्न होगा। सायं मं. पूर्वकपाल में, गुरु पश्चिम कपाल में दिखाई देगा। ता. 7 मई से बुध भी पश्चिमक्षितिज में दिखाई देगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	वैशाख शाके	जमा. मु.	अप्रैल	वैशाख प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३३.०५	१	बुध	१३	४५	भर	८	४३	सौभा	५६	००	बव	१३	४५	१०	३०	30	१७	वृ. २४/०३	वैशा. शुक्ल प्रतिपदा, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र उ.भा. में ४४/३०, स.सि.	०	१५	३२	०९	५	४८	१९	०२
३३.१०	२	गुरु	१४	३	कृति	१०	३५	शोभ	५४	२५	कौ	१४	०३	११	रज्ज	मई	१८	वृष	भगवान् परशुराम जयन्ती (देखें पृ. 86), वक्री शनि विशा. (२) (A)	०	१६	३०	२४	५	४७	१९	०३
३३.१३	३	शुक्र	१५	४५	रोहि	१३	५०	अति	५३	५८	गर	१५	४५	१२	२	2	१९	मि. ४५/५८	भ. ४७/१९ से, अक्षय-तृतीया, केदार-बदरीनाथ यात्रा प्रारम्भ	०	१७	२८	३८	५	४६	१९	०३
३३.१८	४	शनि	१८	५३	मृग	१८	२८	सुक	५४	३५	वि	१८	५३	१३	३	3	२०	मिथुन	भ. १८/५३ तक, बुध कृतिका में ५/२५,	०	१८	२६	४९	५	४५	१९	०४
३३.२०	५	रवि	२३	१८	आर्द्रा	२४	१८	धृति	५६	००	बा	२३	१८	१४	४	4	२१	मिथुन	आदिगुरु श्रीशंकराचार्य जयंती, बुध वृष में ४०/५५ (22/07 घं.मिं.)	०	१९	२४	५९	५	४५	१९	०५
३३.२५	६	चंद्र	२८	४०	पुन.	३१	८	शूल	५८	३	तै	२८	४०	१५	५	5	२२	क. १४/२०	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती	०	२०	२३	०६	५	४४	१९	०६
३३.२८	७	मंग	३४	३८	पुष्य	३८	२५	गंड	६०	००	गर	१	३९	१६	६	6	२३	कर्क	भ. ३४/३८ से, श्रीगङ्गा जयन्ती, गण्डमूल 21/05 से,	०	२१	२१	१२	५	४३	१९	०६
३३.३३	८	बुध	४०	३३	श्ले.	४५	४३	गंड	०	२३	वि	७	३६	१७	७	7	२४	सिं. ४५/४३	भ. ७/३६ तक, बुध पश्चिम में उदय ३५/४०, श्रीबगुलामुखी जयंती(B)	०	२२	१९	१६	५	४२	१९	०७
३३.३५	९	गुरु	४५	५५	मघा	५२	२५	वृद्धि	२	३०	बा	१३	१४	१८	८	8	२५	सिंह	जानकी (सीता) नवमी, गण्डमूल 26/39 तक	०	२३	१७	२०	५	४१	१९	०७
३३.४०	१०	शुक्र	५०	१५	पू.फा.	५८	५	ध्रुव	४	५	तै	१८	०५	१९	९	9	२६	सिंह	बुध रोहिणी में ४३/२०,	०	२४	१५	२०	५	४०	१९	०८
३३.४३	११	शनि	५३	५	उ.फा.	६०	००	व्या.	४	४५	व	२१	४०	२०	१०	10	२७	कं. १४/१५	भ. २१/४० से ५३/०५ तक, मोहिनी एकादशी व्रत, राहु चित्रा (३),(C)	०	२५	१३	१८	५	४०	१९	०९
३३.४८	१२	रवि	५४	१८	उ.फा.	२	१८	हर्ष	४	१५	बव	२३	४२	२१	११	11	२८	कन्या	सूर्य कृतिका में २९/४८, स. सि. योग:	०	२६	११	१३	५	३९	१९	१०
३३.५०	१३	चंद्र	५३	४८	हस्त	४	५३	वज्र सिद्धि	२ ५९	२८ १५	कौ	२४	०३	२२	१२	12	२९	तु. ३५/३०	सोम प्रदोष व्रत, शुक्र रेवती में २६/३३,	०	२७	०९	१०	५	३८	१९	१०
३३.५५	१४	मंग	५१	३५	चित्रा	५	४८	व्य.	५४	४५	गर	२२	४२	२३	१३	13	३०	तुला	भ. ५१/३५ से प्रा., श्रीनृसिंह जयन्ती	०	२८	०७	०३	५	३७	१९	११
३३.५८	१५	बुध	४७	५३	स्वा.	५	००	वरी	४९	५	वि	१९	४४	२४	१४	14	ज्ये.	वृ. ४८/३०	भ. १९/४४ तक, वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, सूर्य वृष में (D)	०	२९	०४	५३	५	३७	१९	१२

(A) में १६/३३, शिवाजी जयन्ती, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(B)** श्रीटैगोर जयन्ती, गण्डमूल विचार **(C)** केतु अश्वि (१) में ४७/०५
(D) ५७/०५, ज्येष्ठ संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रात: 10-51 तक, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	५	१	२	११	६	६	०
२२	२०	१६	०४	२१	१०	२६	०३	०३
१८	५०	०५	४२	५०	२५	१४	३२	३२
४९	१६	०३	१६	१७	४३	३०	०३	०३
58 4	714 47	9 57	118 44	9 40	68 30	4 30	3 11	3 11
भर. ३	अश्ले २	हस्त २	कृति ३	पुन १	उभा ३	विशा २	चित्रा ४	अश्वि २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	अ	अ/उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	५	१	२	११	६	६	०
२९	१८	१५	१७	२२	१८	२५	०३	०३
०४	४७	१२	३४	५९	२७	४२	०९	०९
३९	३६	१२	५६	५९	०४	५६	४७	४७
57 52	828 29	4 16	97 57	10 21	69 6	4 30	3 10	3 10
कृति १	स्वा ४	हस्त २	रोह ३	पुन १	रेव १	विशा २	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



वैशाख शुक्ल पक्षफल–

भगवान् विष्णु के अंशावतार **श्रीपरशुराम** जी की जयन्ती वै. शुक्ल तृतीया तिथि की रात्रि के प्रथम प्रहर–अर्थात् 1 मई दुपैहर 11/24 के बाद प्रदोषकाल में मनाई जाएगी। **अक्षय तृतीया पर्व 2 मई, शुक्रवार** को होगा। इस दिन दुपैहर काल एवं रोहिणी नक्षत्र का योग होने से विशेष पुण्यप्रदा होगी। यह स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त तिथि कहलाती है। कल्पभेद से त्रेतायुग का प्रारम्भ इसी तिथि से हुआ था, इसी कारण यह **युगादि तिथि** कहलाती है। इस दिन किए गए शुभ कर्मों जैसे–तीर्थ स्नान, जप, तप, होम, ब्राह्मण भोजन, दानादि का फल अनेक गुणा अधिक होता है। इस दिन जलपूरित कलश, पंखा, चरणपादुका, छाता, वस्त्र, अन्न, गाय, फलों, मिष्टान्न आदि का दान करना प्रशस्त होता है। **श्रीगंगा जयन्ती** (6 मई) को हरिद्वार, काशी आदि तीर्थों पर गंगा पूजन, स्नान, जप, दानादि करने का विशेष पुण्य होता है। नवमी (8 मई) को शक्तिरूपा माँ **बगुलामुखी** की पूजार्चना करने से व्यक्ति को ऋण, रोग एवं शत्रुओं का भय नहीं होता। **नृसिंह जयंती** (13 मई) को भगवान् विष्णु अवतार नृसिंह देव की पूजा एवं स्तोत्रपाठ करने से प्रबल शत्रुओं से निर्भयता को प्राप्त होता है। ता. 14 को **वैशाख पूर्णिमा** को तीर्थ स्थान पर स्नान, जप, वस्त्र, फलादि दानादि का विशेष माहात्म्य रहेगा। इसी दिन **ज्येष्ठ संक्रान्ति** ४५ मुहूर्त्ति होगी। इस सं. के स्नान, दान, जप-पाठादि का पुण्यकाल अगले दिन, अर्थात् गुरूवार की प्रातः 10 बजकर 51 मिनट तक रहेगा। **ज्येष्ठ संक्रान्ति** बुधवार को होने से मन्दाकिनी नाम वाली कुछ राजनेताओं को लाभदायक होगी। परन्तु गुरु मिथुन राशि में शीघ्र गत्या एवं शनि वक्री होने से सत्तारूढ़ पार्टी एवं विपक्ष की पार्टियों में परस्पर आरोप-प्रत्यारोप तथा टकराव बढ़ेंगे। सीमावर्ती इलाकों में सैन्य टकराव व विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं। **आकाश लक्षण**–भारत के उत्तर पश्चिमी भागों में तेज़ हवाओं के साथ बादल चाल रहेगी।

वि. संवत् २०७१, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९३६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 15 मई से 28 मई तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः	भा.स्टैं.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	शाके	हिजरी	मई	प्रविष्टे		**ग्रह दर्शन**–प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में होगा। सायं श. पूर्व में उदय होता दिखाई देगा, मं. याम्योत्तर से पूर्व में तथा बुध एवं गुरु पश्चिमक्षितिज में होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.००	१	गुरु	४३	००	विशा अनु.	२ ५९	५५ ३८	परि	४२	२८	बा	१५	२७	२५	१५	15	२	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा, गुरु पुन. (२) में ५५/२८,, स.सि.योग: 6/46 से प्रा.	१	००	०२	४५	५	३६	१९	१२
३४.०५	२	शुक्र	३७	१३	ज्ये.	५५	३३	शिव	३५	५	तै	१०	०७	२६	१६	16	३	ध. ५५/३३	**श्रीनारद जयन्ती**, वीणादान, गण्डमूल 05/27 से	१	०१	००	३३	५	३५	१९	१३
३४.०८	३	शनि	३०	४८	मूल	५०	५८	सिद्ध	२७	१०	व	४	०१	२७	१७	17	४	धनु	भ. ४/०१ से ३०/४८ तक, बुध मृग. में ४१/५८, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (A)**	१	०१	५८	२१	५	३५	१९	१४
३४.१०	४	रवि	२४	८	पू.षा.	४६	१५	साध्य	१९	३	बा	२४	०८	२८	१८	18	५	धनु	शुभ योग, स. सि. योगः	१	०२	५६	०५	५	३४	१९	१४
३४.१३	५	चंद्र	१७	२५	उ.षा.	४१	३८	शुभ	१०	५३	तै	१७	२५	२९	१९	19	६	म. ०/०५		१	०३	५३	५२	५	३४	१९	१५
३४.१८	६	मंग	११	३	श्रव	३७	२५	शुक्ल ब्रह्म	२ ५५	५५ २०	व	११	०३	३०	२०	20	७	मकर	भ. ११/०३ से ३८/०४ तक, **मंगल मार्गी होगा ३/४३**, स. सि. योगः	१	०४	५१	३७	५	३३	१९	१६
३४.१८	७	बुध	५	५	धनि	३३	४५	ऐन्द्र	४८	१३	बव	५	०५	३१	२१	21	८	कुं. ५/३०	**पंचक प्रारम्भ ५/३०**, सूर्य सायन मिथुन में ७/२०	१	०५	४९	२०	५	३३	१९	१६
००.००	८	बुध	५९	४८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.२३	९	गुरु	५५	१५	शत	३०	४८	वैधृ	४६	४५	तै	२७	३२	ज्ये	२२	22	९	कुम्भ	**बुध मिथुन में ५२/१५**, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ	१	०६	४७	००	५	३२	१९	१७
३४.२३	१०	शुक्र	५१	३०	पू.भा.	२८	३५	विष्क	३५	५५	व	२३	२३	२	२३	23	१०	मी. १४/०३	भ. २३/२३ से ५१/३० तक, **शुक्र अश्वि (१) मेष में ५८/३५**,	१	०७	४४	४२	५	३२	१९	१७
३४.२८	११	शनि	४८	४३	उ.भा.	२७	१५	प्रीति	३०	५०	बव	२०	०७	३	२४	24	११	मीन	**अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पं.)**, गण्डमूल 16/25 से	१	०८	४२	२२	५	३१	१९	१८
३४.३०	१२	रवि	४६	४३	रेव	२६	४८	आयु	२६	२३	कौ	१७	४३	४	२५	25	१२	मे. २६/४८	**पंचक समाप्त २६/४८, सूर्य रोहिणी में** २०/४५, गण्डमूल वि०	१	०९	४०	०२	५	३१	१९	१९
३४.३३	१३	चंद्र	४५	४३	अश्वि	२७	१८	सौभा	२२	४५	गर	१६	१३	५	२६	26	१३	मेष	भ. ४५/४३ से, **सोम प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 16/25 तक	१	१०	३७	३९	५	३०	१९	१९
३४.३५	१४	मंग	४५	४०	भर	२८	४०	शोभ	१९	५०	वि	१५	४२	६	२७	27	१४	वृ. ४४/१०	भ. १५/४२ तक, सावित्री चौदश, स. सि. योग: 10/03 तक	१	११	३५	१७	५	३०	१९	२०
३४.३५	३०	बुध	४६	४०	कृति	३१	५	अति	१७	४५	चतु	१६	१०	७	२८	28	१५	वृष	**ज्येष्ठ (भावुका) अमावस, वटसावित्री व्रत** (अमावस पक्ष), **(B)**	१	१२	३२	५४	५	३०	१९	२०

(A) (चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12–13), गण्डमूल 25/58 तक **(B)** शनैश्चर जयन्ती

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	५	१	२	११	६	६	०
०५	२८	१४	२७	२४	२६	२५	०२	०२
४९	४०	५८	४६	१४	३२	११	४७	४७
१५	१४	१६	५१	१२	२६	४४	३२	३२
57 43	848 8	1 5	72 52	10 56	69 28	4 23	3 11	3 11
कृति ३	धनि २	हस्त २	मृग २	पुन २	रेव ३	विशा २	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

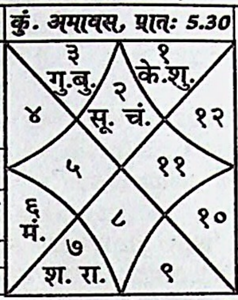
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	५	२	२	०	६	६	०
१२	०३	१५	०४	२५	०४	२४	०२	०२
३२	२३	२१	५५	३२	४१	४१	२५	२५
५६	१४	३०	१६	२२	१५	३९	१७	१७
57 36	762 59	6 13	45 2	11 28	70 4	4 9	3 11	3 11
रोह १	कृति ३	हस्त २	मृग ४	पुन २	अश्वि २	विशा २	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अमावस्या, गंगा दशहरा, पूर्णिमा आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर गेहूँ, चावल, धान्यादि, अनाज, दूध, चीनी, छाता, पंखा, जलापूरित घड़ा, गुड़, खरबूज़े आम्रादि फलों का स्नान, पाठादि के पाठोपरान्त किसी ब्राह्मण को संकल्पपूर्वक दान करना चाहिए। इस मास में जितेन्द्रिय होकर प्रातः स्नानादि के बाद **श्रीविष्णु सहस्रनाम** का पाठ या '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः**' मन्त्र का जाप करना चाहिए। अखण्ड सुहाग की प्राप्ति के लिए 28 ता. से वट सावित्री का व्रत सौभाग्यवती स्त्रियाँ रखती हैं। **लोक भविष्य**– पक्ष के आरम्भ में ही मंगल–शुक्र का दृष्टि सम्बन्ध एवं समसप्तक योग बना हुआ है, फलस्वरूप इस पक्ष में चीनी, चने, घृत, खाद्य तेल, पैट्रोल, डीज़ल, दालें व अन्य दैनिक उपभोग की वस्तुएँ और अधिक तेज़ भाव होंगी। सामान्य लोगों को विभिन्न विकास योजनाओं का आशानुकूल लाभ नहीं मिल पाएगा। सामान्य लोगों में नैराश्य व परेशानियों के हालात बनेंगे। लोगों में वर्तमान सरकार के प्रति विश्वास की कमी और क्रोध बढ़ेगा। पश्चिमी सीमाओं पर चीनी व पाकिस्तानी शत्रु देशों के साथ टकराव का भय होगा। भारत का राजनैतिक वातावरण विक्षुब्ध एवं अशान्त होगा। प्रमुख प्रधान नेता का पद रिक्त होगा। राजनीतिक स्थिति असमंजसपूर्ण रहेगी। नए राजनीतिक समीकरण बनेंगे। **आकाश लक्षण**–भारत के पूर्व–उत्तरी भागों में इस पक्ष में तीव्र गर्मी एवं ऊष्ण तेज़ हवाओं का प्रकोप रहेगा।

वि. संवत् २०७१, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक: १९३६														तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2014 ई. (ता. 29 मई से 13 जून तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	ज्ये. शक	मु. शब्बान	मई	ज्येष्ठ प्र.	प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व में होगा। सायं शनि पूर्वकपाल में तथा मं. याम्योत्तर से पूर्व में, बुध एवं गु. पश्चिमक्षितिज में दिखाई देंगे। ता. 11 से बु. पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.४०	१	गुरु	४८	५०	रोहि	३४	३८	सुक	१६	३३	किं	१७	४५	८	२९	29	१६	वृष	**ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ	१	१३	३०	२७	५	२९	१९	२१
३४.४३	२	शुक्र	५२	३	मृग	३९	१०	धृति	१६	१०	बा	२०	२७	९	३०	30	१७	मि. ६/४५	**चन्द्रदर्शन**, मु. ३०, बुध आर्द्रा में ३१/१५, स. सि. यो. प्रात: 9/17 से	१	१४	२८	०२	५	२९	१९	२२
३४.४३	३	शनि	५६	१८	आर्द्रा	४४	४५	शूल	१६	३८	तै	२४	११	१०	शब्ब	31	१८	मिथुन	**रम्भा तृतीया व्रत**, प्रताप जयन्ती (राज.), शब्बान (मुस्लि.) मास **(A)**	१	१५	२५	३६	५	२९	१९	२२
३४.४८	४	रवि	६०	००	पुर्न	५१	१८	गंड	१७	५५	व	२८	५४	११	२	जून	१९	क. ३४/३५	भ. २८/५४ से, **जून मास प्रारम्भ**	१	१६	२३	०६	५	२८	१९	२३
३४.४८	४	चंद्र	१	३०	पुष्य	५८	२८	वृद्धि	१९	४८	वि	१	३०	१२	३	2	२०	कर्क	भ. १/३० तक, गुरु पुन. (३) में ४९/००	१	१७	२०	३८	५	२८	१९	२३
३४.५०	५	मंग	७	२०	श्ले.	६०	००	ध्रुव	२२	८	बा	७	२०	१३	४	3	२१	कर्क	गण्डमूल विचार	१	१८	१८	०८	५	२८	१९	२४
३४.५०	६	बुध	१३	२३	श्ले.	५	५५	व्या	२४	३०	तै	१३	२३	१४	५	4	२२	सिं. ५/५५	शुक्र भरणी में २३/१५, गण्डमूलादि, अरण्य षष्ठी, विन्ध्यावासिनी पूजा	१	१९	१५	३६	५	२८	१९	२४
३४.५३	७	गुरु	१९	८	मघा	१३	८	हर्ष	२६	३८	व	१९	०८	१५	६	5	२३	सिंह	भ. १९/०८ से ५१/३७ तक, गण्डमूल 10/43 तक	१	२०	१३	०४	५	२८	१९	२५
३४.५५	८	शुक्र	२४	५	पू.फा.	१९	४०	वज्र	२८	५	बव	२४	०५	१६	७	6	२४	कं. ३६/०५	**श्रीदुर्गाष्टमी**, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)	१	२१	१०	३०	५	२७	१९	२५
३४.५८	९	शनि	२७	३८	उ.फा.	२४	५३	सिद्धि	२८	२८	कौ	२७	३८	१७	८	7	२५	कन्या	**बुध वक्री होगा २९/५३**, उमा ब्राह्मणी व्रत	१	२२	०७	५६	५	२७	१९	२६
३४.५८	१०	रवि	२९	२८	हस्त	२८	२५	व्य.	२७	३०	गर	२९	२८	१८	९	8	२६	तु. ५९/२८	भ. ५९/२४ से, **श्रीगङ्गा दशहरा पर्व (हरिद्वार)**, सूर्य मृग. में १५/२३,+	१	२३	०५	१७	५	२७	१९	२६
३५.००	११	चंद्र	२९	२०	चित्रा	३०	३	वरी	२४	५८	वि	२९	२०	१९	१०	9	२७	तुला	भ. २९/२० तक, **निर्जला एकादशी व्रत** +स.सि.यो.	१	२४	०२	४०	५	२७	१९	२७
३५.००	१२	मंग	२७	१३	स्वा	२९	४०	परि	२०	५३	बा	२७	१३	२०	११	10	२८	तुला	चम्पक द्वादशी, **भौम प्रदोष व्रत**, वटसावित्री व्रतारम्भ	१	२५	००	०१	५	२७	१९	२७
३५.०३	१३	बुध	२३	१०	विशा	२७	३०	शिव	१५	१३	तै	२३	१०	२१	१२	11	२९	वृ. १३/१३	**वक्री बुध पश्चिम में अस्त** ३३/३८, स. सि. योग:	१	२५	५७	२२	५	२७	१९	२८
३५.०३	१४	गुरु	१७	३३	अनु	२३	४३	सिद्ध	८	१३	वण	१७	३३	२२	१३	12	३०	वृश्चिक	भ. १७/३३ से ४४/०६ तक, **वटसावित्री व्रत** (पूर्णिमा पक्ष), **(B)**	१	२६	५४	४२	५	२७	१९	२८
३५.०३	१५	शुक्र	१०	३८	ज्ये.	१८	३८	साध्य शुभ	० / ५१	५ / ८	बव	१०	३८	२३	१४	13	३१	ध. १८/३८	**ज्येष्ठ पूर्णिमा**, ज्येष्ठी योग, **सन्त कबीर जयन्ती**, गण्डमूल विचार	१	२७	५२	०१	५	२७	१९	२८

(A) प्रारम्भ, उमा-अवतार **(B)** (देखें पृष्ठ 86), श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 14/56 से

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 6 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	५	२	२	०	६	६	०
२१	२२	१६	०९	२७	१५	२४	०१	०१
१०	४३	४१	०१	१७	१३	०५	५६	५६
३७	४९	३४	२०	५५	४५	५२	४०	४०
57 26	730 40	12 5	4 32	12 2	70 31	3 43	3 11	3 11
रोहि ४	पू.फा. ३	हस्त ३	आर्द्रा १	पुन ३	भर १	विशा २	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30



शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 13 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	५	२	२	०	६	६	०
२७	२५	१८	०८	२८	२३	२३	०१	०१
५२	२८	१८	०१	४३	२८	४१	३४	३४
११	५४	१२	५४	१६	२४	०८	२४	२४
57 19	883 53	15 59	23 59	12 22	70 50	3 18	3 10	3 10
मृग २	ज्ये. ३	हस्त ३	आर्द्रा १	पुन ३	भर ४	विशा २	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30



ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया तिथि, 30 मई को रम्भा तीज का व्रत गौरी माता की प्रसन्नता के लिए किया जाता है। इसमें माता की पुष्प, फलों एवं नैवेद्य आदि से पूजन करके निम्न मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए–**''त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तुते।।''** इस मन्त्र का पाठ करने से स्त्री को पति का गृह सुख, समृद्धि और पुत्र-सन्तान आदि के सुख प्राप्त होते हैं। **श्रीदुर्गाष्टमी** (6 जून) को श्री दुर्गा मन्दिर में माता की पूजार्चन करके कुछ मन्दिरों में खीर सहित भोग लगाने की परम्परा है। जम्मू में यह पर्व विशेष उत्साह से मनाया जाता है। **गंगा दशहरा** (8 जून) का पर्व हरिद्वार में पुष्पाक्षत, गुड़, चन्दन, धूप, दीप, नारियल आदि पदार्थों के साथ गंगा जी की पूजार्चना, स्तोत्र-पाठ एवं आरती करके मनाया जाता है। **निर्जला एकादशी** (9 जून) को निराहार व्रत रखकर भगवान् विष्णु की पूजार्चना के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति अनाज, वस्त्र, जल पात्र, आम खरबूज़े आदि फल, पंखा, दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 13 जून को ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन पीयाऊ लगाने या जलापूरित पात्र, फलों, वस्त्र, अनाजादि का दान करना शुभ होगा। इसी दिन **सन्त कबीर जी** का जन्म उत्सव होगा। **लोक भविष्य**–इस पक्ष में **मंगल-शुक्र** ग्रहों का परस्पर **षडाष्टक योग** चल रहा है। फलस्वरूप केन्द्र में राजनीतिक गतिरोध पैदा होने के संकेत हैं। मन्त्रीमण्डल की स्थिति अस्थिर डांवाँडोल होगी। कहीं उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं।

आकाश लक्षण–उत्तरी भारत में गर्म हवाएँ, लू व गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। पक्षांत में कहीं उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक: १९३६

सन् 2014 ई. (ता. 14 जून से 27 जून तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य उत्तर–दक्षिणायन, उत्तर गोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

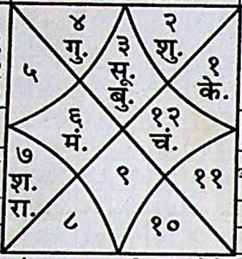
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें रा. शक	मुस्लिम मु.	अंग्रे.	प्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन—सायं शनि याम्योत्तर वृत्त से पूर्व में, मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न तथा गु. पश्चिमक्षितिजासन्न होगा। प्रातः शु. पूर्व में दिखाई देगा। बुध अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.०५	१	शनि	२	४८	मूल	१२	४५	शुक्ल	४१	४०	कौ	२	४८	२४	१५	14	३२	धनु	**आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**, गण्डमूल 10/33 तक,	१	२८	४९	२०	५	२७	१९	२९
००.००	२	शनि	५४	२८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.०६	३	रवि	४६	५	पू.षा.	६	५३	ब्रह्म	३२	८	व	२०	१७	२५	१६	15	आ.	म. १९/५०	भ. २०/१७ से ४६/०५ तक, **सूर्य मिथुन में १३/५८, आषाढ़ संक्रान्ति (A)**	१	२९	४६	३८	५	२७	१९	२९
३५.०६	४	चंद्र	३८	००	उषा श्रव	० ५४	१० १८	ऐंद्र	२२	४३	बव	१२	०३	२६	१७	16	२	मकर	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12-13), वक्री बुध मृग. (४) में ३/०० K	२	००	४३	५५	५	२७	१९	२९
३५.०७	५	मंग	३०	३८	धनि	४९	१३	वैधृ	१३	४८	कौ	४	१९	२७	१८	17	३	कुं. २१/३८	**पंचक प्रारम्भ** २१/३८ (14घं.–06मिं.) **K** स. सि. यो.	२	०१	४१	१२	५	२७	१९	३०
३५.०७	६	बुध	२४	८	शत	४५	८	विष्क प्रीति	५ ५८	३५ १८	व	२४	०८	२८	१९	18	४	कुम्भ	भ. २४/०८ से ५१/२९ तक, **शुक्र वृष में ३१/१०** (17घं. 56मिं.)	२	०२	३८	२९	५	२८	१९	३०
३५.०८	७	गुरु	१८	५०	पू.भा.	४२	२०	आयु	५२	५	बव	१८	५०	२९	२०	19	५	मी. २७/५५	**गुरु पुन (४) कर्क में ८/१३**, वक्री शनि विशा. (१) में ५२/५८	२	०३	३५	४८	५	२८	१९	३०
३५.०८	८	शुक्र	१४	५३	उ.भा.	४०	५०	सौभा	४६	५५	कौ	१४	५३	३०	२१	20	६	मीन		२	०४	३३	०४	५	२८	१९	३०
३५.०८	९	शनि	१२	१५	रेव	४०	४०	शोभ	४२	५०	गर	१२	१५	३१	२२	21	७	मे. ४०/४०	भ. ४१/३५ से, **पंचक समाप्त** ४०/४०, सूर्य सायन कर्क में २७/१५(B)	२	०५	३०	२०	५	२८	१९	३१
३५.०८	१०	रवि	१०	५५	अश्वि	४१	४५	अति	३९	४५	वि	१०	५५	आ	२३	22	८	मेष	भ. १०/५५ तक, **सूर्य आर्द्रा में १२/५८**, गण्डमूल 22/10 तक, (C)	२	०६	२७	३६	५	२८	१९	३१
३५.०७	११	चंद्र	१०	४५	भर	४३	५५	सुक	३७	३५	बा	१०	४५	२	२४	23	९	वृ. ५९/३८	**योगिनी एकादशी व्रत**	२	०७	२४	५१	५	२९	१९	३१
३५.०७	१२	मंग	११	४३	कृति	४७	८	धृति	३६	१५	तै	११	४३	३	२५	24	१०	वृष	**भौम प्रदोष व्रत**, स. सि. योग:	२	०८	२२	०९	५	२९	१९	३१
३५.०६	१३	बुध	१३	४३	रोहि	५१	२०	शूल	३५	४३	व	१३	४३	४	२६	25	११	वृष	भ. १३/४३ से ४५/०९ तक, मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. योग:	२	०९	१९	२४	५	२९	१९	३१
३५.०५	१४	गुरु	१६	३५	मृग	५३	१८	गंड	३५	५०	शकु	१६	३५	५	२७	26	१२	मि. २३/४०	शुक्र रोहिणी में ५६/१०	२	१०	१६	४२	५	३०	१९	३२
३५.०५	३०	शुक्र	२०	२३	आर्द्रा	६०	००	वृद्धि	३६	३८	ना	२०	२३	६	२८	27	१३	मिथुन	**आषाढ़ अमावस** (स्नानदानादि)	२	११	१३	५७	५	३०	१९	३२

(A) मु. ४५, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से, शुक्र कृतिका में ४२/१८, स.सि.योग: 8/02 से प्रा. **(B)** सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, गण्डमूल विचार **(C)** शक आषाढ़ प्रारम्भ

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	५	२	३	१	६	६	०
०४	०७	२०	०४	००	०१	२३	०१	०१
३३	२४	२०	२८	१०	४५	१९	१२	१२
११	४८	३५	४०	५६	२२	४०	०९	०९
57 16	814 35	19 23	34 6	12 42	71 11	2 45	3 11	3 11
मृग ४	उभा २	हस्त ४	मृग ४	पुन ४	कृति २	विशा १	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

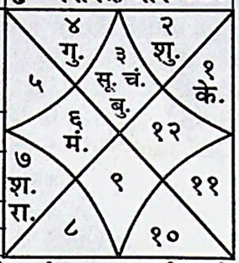
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	५	२	३	१	६	६	०
११	०७	२२	०१	०१	१०	२३	००	००
१३	२५	४५	०५	४०	०४	०२	४९	४९
५९	२१	३९	२७	३७	३५	०२	५३	५३
57 14	728 59	22 26	17 43	12 56	71 29	2 11	3 10	3 10
आर्द्रा २	आर्द्रा १	हस्त ४	मृग ३	पुन ४	रोहि १	विशा १	चित्रा ३	अश्वि १
०	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



आषाढ़ कृष्ण पक्षफल–

आषाढ़ मास में भगवान् श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए नित्यप्रति भगवान् श्रीलक्ष्मी नारायण की पूजार्चन एवं श्रीविष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा एका., अमावस एवं पूर्णिमा के दिन ब्राह्मणों को भोजन तथा छाता, खड़ाऊँ, आँवले, आम्र खरबूज़े आदि फल, वस्त्र, अनाज, मिष्ठान्नादि का दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान करना और स्वयं भी एकभुक्त भोजन करने से विशेष पुण्यफलों की प्राप्ति होती है।

लोक भविष्य–इस पक्ष की सप्तमी तिथि से गुरु कर्क राशि में प्रविष्ट होगा। फलस्वरूप आशानुरूप वर्षा की कमी रहेगी। राजनेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक बढ़ेंगे। किसी क्षेत्र में आवश्यक वस्तुओं जैसे पानी, खाद्यान्न की कमी होगी। इस पक्ष की तृतीया 15 जून तिथि को **आषाढ़ संक्रान्ति** रविवार को ४५ मुहूर्त्ति होगी। इस संक्रान्ति का स्नानदानादि पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से दुपै. 11 बजकर 2 मिनट तक होगा। घोरा नामक यह संक्रान्ति शूद्रों–अर्थात् नीचजनों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। **रविवारी संक्रान्ति** होने के कारण अनाज, चावल, चीनी, गुड़, तिल, तैल, चने, दालें आदि दैनिक उपभोग की वस्तुओं के मूल्यों में जबरदस्त तेज़ी होने से सामान्य लोगों में परेशानियाँ एवं असुरक्षा की भावना होगी। राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं खींचातानी बढ़ेगी। राजनैतिक परिस्थितियाँ कुछ काल के लिए अनिश्चित एवं अस्थिर रहेंगी। काश्मीर, असम आदि सीमावर्ती प्रदेशों में कहीं विस्फोटक एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी–**संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव। धान्यं महर्घं प्रति रौद्रवार्ता प्रजा भवेद् दुखित दीन हीना।।** चान्द्र **आषाढ़ मास** में पाँच शनिवार पड़ने से सर्व प्रकार के अनाज, दालें, खाद्य-तेल, खल-बिनौले विशेष तेज़ होंगे। कहीं उपद्रव, जातीय विवाद एवं छत्रभंग होने के संकेत हैं। राजनीतिक व सामाजिक वातावरण विक्षुब्ध रहेगा। शेयरों में मन्दी का माहौल बनेगा। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष में उत्तर-पश्चिमी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक: १९३६ | **सन् 2014 ई. (ता. 28 जून से 12 जुलाई तक)** हिजरी सन् 1435 | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें: आषा. शक	शब्बा मु.	जून	आषाढ़ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–सायं श. याम्योत्तर से पूर्व, मं. याम्योत्तरवृत्त के मध्य में, गुरु पश्चिमक्षितिजासन्न होगा। ता. 11 जुला. से पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा। प्रातः बु.–शु. को पूर्व क्षितिज में देखें।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३५.०५	१	शनि	२४	५८	आर्द्रा	२	८	ध्रुव	३८	३	बव	२४	५८	७	२९	28	१४	क. ५२/००	मंगल चित्रा में ३१/१३, आषाढ़ गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ, **(A)**	२	१२	११	११	५	३०	१९	३२
३५.०४	२	रवि	३०	१३	पुन	८	४०	व्या.	४०	००	कौ	३०	१३	८	३०	29	१५	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, रथ-यात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी), रविपुष्य योग 8/59 बाद	२	१३	०८	२६	५	३१	१९	३२
३५.०४	३	चंद्र	३६	३	पुष्य	१५	५०	हर्ष	४२	१८	तै	३	०८	९	रम	30	१६	कर्क	रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 11घं.–51मिं. से	२	१४	०५	४२	५	३१	१९	३२
३५.०३	४	मंग	४२	१३	श्ले.	२३	२०	वज्र	४४	५०	व	९	०८	१०	२	जुला	१७	सिं. २३/२०	भ. ९/०८ से ४२/१३ तक, **बुध मार्गी ३१/५८, जुलाई मास प्रा. (B)**	२	१५	०२	५५	५	३१	१९	३२
३५.०३	५	बुध	४८	१५	मघा	३०	५५	सिद्धि	४७	१८	बव	१५	१४	११	३	2	१८	सिंह	गण्डमूल 17घं.–53मिं. तक	२	१६	००	११	५	३१	१९	३२
३५.०१	६	गुरु	५३	४५	पू.फा.	३८	००	व्य.	४९	२०	कौ	२१	००	१२	४	3	१९	कं. ५४/४०	**स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी**	२	१६	५७	२४	५	३२	१९	३२
३५.००	७	शुक्र	५८	१३	उ.फा.	४४	१५	वरी	५०	३५	गर	२५	५९	१३	५	4	२०	कन्या	भ. ५८/१३ से, **गुरु पुष्य (१) में ३७/१८, विवस्वत सप्तमी**	२	१७	५४	३७	५	३२	१९	३२
३४.५८	८	शनि	६०	००	हस्त	४९	५	परि	५०	४०	वि	२९	३९	१४	६	5	२१	कन्या	भ. २९/३९ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**	२	१८	५१	५२	५	३३	१९	३२
३४.५५	८	रवि	१	५	चित्रा	५२	१०	शिव	४९	२३	बव	१	०५	१५	७	6	२२	तु. २०/५३	सूर्य पुनर्वसु में ११/२८,	२	१९	४९	०६	५	३३	१९	३१
३४.५३	९	चंद्र	२	३	स्वा	५३	१०	सिद्ध	४६	२३	कौ	२	०३	१६	८	7	२३	तुला	**भढली नवमी, मेला शरीक भवानी** (काश्मीर), गुप्त नवरात्रे समाप्त	२	२०	४६	२०	५	३४	१९	३१
३४.५३	१०	मंग	०	५८	विशा	५२	५	साध्य	४१	४०	गर	०	५८	१७	९	8	२४	वृ. ३७/३३	भ. २९/२२ से ५७/४५ तक, **देवशयनी एकादशी व्रत** (स्मार्त), **(C)**	२	२१	४३	३२	५	३४	१९	३१
००.००	११	मंग	५७	४५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**एकादशी तिथि का क्षय ००** **गुर्वस्त पश्चिमे 11 जुला.**	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.५०	१२	बुध	५२	३३	अनु	४८	५८	शुभ	३५	१८	बव	२५	०९	१८	१०	9	२५	वृश्चिक	**देवशयनी एकादशी व्रत** (वैष्णव), चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रा. **(D)**	२	२२	४०	४३	५	३५	१९	३१
३४.५०	१३	गुरु	४५	४०	ज्ये.	४४	१०	शुक्ल	२७	३०	कौ	१९	०७	१९	११	10	२६	ध. ४४/१०	प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार	२	२३	३७	५५	५	३५	१९	३१
३४.४६	१४	शुक्र	३७	२३	मूल	३८	००	ब्रह्म	१८	२५	गर	११	३२	२०	१२	11	२७	धनु	भ. ३७/२३ से, **गुरू अस्त पश्चिमे** ५७/४०, श्रीसत्यनारायण व्रत **(E)**	२	२४	३५	०९	५	३६	१९	३०
३४.४५	१५	शनि	२८	१८	पू.षा.	३०	५८	ऐन्द्र वैधृ	८ ५८	३० ५	वि	२	५०	२१	१३	12	२८	म. ४४/०८	भ. २/५० तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा **(F)**	२	२५	३२	२१	५	३६	१९	३०

(A) वक्री बुध पूर्व में उदय ३०/५३, आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ **(B)** गण्डमूल विचार स.सि.योगः **(C)** शुक्र मृग. में ५/४३, चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रा. (स्मार्त), श्रीविष्णुशयनोत्सव (स्मा.) **(D)** श्रीविष्णुशयनोत्सव (वैष्णव) **(E)** (देखें पृ. 86), मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), गण्डमूल 20/48 (घं.मिं.) तक, शिवशयनोत्सव **(F)** **राहु चित्रा (२) कन्या, केतु रेव. (4) मीन में ४०/४०**

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	५	२	३	१	६	६	०
१९	२५	२६	०१	०३	२०	२२	००	००
४८	३५	२१	०८	३८	४९	४५	२१	२१
५९	१३	१३	०८	०५	१८	३३	१५	१५
57	764	25	24	13	71	1	3	3
12	28	45	38	10	49	22	10	10
आर्द्रा 4	चित्रा 1	चित्रा 1	मृग 3	पुष्य 1	रोहि 4	विशा 1	चित्रा 3	अश्वि 1
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

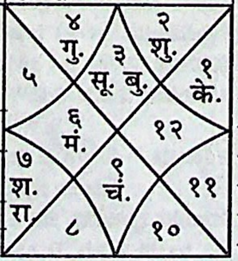
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	५	२	३	१	६	६	०
२५	१८	२९	०४	०४	२८	२२	००	००
३२	४७	००	५०	५७	००	३८	०२	०२
०९	१८	३७	४४	२०	४९	४३	१०	१०
57	909	27	54	13	72	0	3	3
11	33	39	16	16	4	49	11	11
पुन 2	पुष्य 2	चित्रा 2	मृग 4	पुष्य 1	मृग 2	विशा 1	चित्रा 3	अश्वि 1
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



आषाढ़ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया (29 जून) को भगवान् श्री जगन्नाथ (पुरी) रथ यात्रा का भव्य उत्सव बड़े उत्साहपूर्वक (पुरी) उड़ीसा एवं कुछ अन्य प्रदेशों में भक्तों द्वारा श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। इस दिन प्रातः 9 बजे के बाद रवि-पुष्य योग होने से इस वर्ष यह पर्व अत्यन्त पुण्यप्रद एवं प्रशस्त होगा। **आषा. प्रतिपदा** (28 जून) से नवमी (7 जुला.) तक **गुप्त नवरात्रे रहेंगे**। ता. 8 जुला. को हरिशयनी स्मार्त्त, परन्तु ता. 9 जुला. को हरिशयनी व्रत वैष्णवाणां रहेगा। इसी दिन से चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रारम्भ होंगे। हरिशयनी एका. से लेकर हरिप्रबोधिनी एका. (3 नवं.) तक चातुर्मासों के मध्य कुछ प्रदेशों (उत्तर प्रदेश-म.प्र. आदि) में विवाह, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्यों के सम्पादन का निषेध माना जाता है। परन्तु दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-काश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मासों की अवधि में विवाह, गृहारम्भ आदि शुभ कार्यों को सम्पादित करना शुभ माना गया है। ता. 11 जुला. से **कर्क राशिस्थ गुरु अस्त** होगा। गुरू अस्तकाल में भारत व पाकादि एशियाई देशों में राष्ट्र नेताओं में परस्पर विरोध एवं टकराव बढ़ेगा। आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में आशातीत तेजी के कारण सामान्य लोगों में क्रोध एवं बेचैनी बढ़ेगी। ता. 12 जुला. (**गुरू पूर्णिमा**) के दिन भगवान् विष्णु एवं शिवजी की पूजार्चना करके देवगुरु बृहस्पति, ऋषि वेदव्यास एवं अपने पूज्य गुरु की चरणवन्दना करके उनको श्रद्धाभाव से वस्त्र, अनाज, फल एवं दक्षिणादि दे करके सत्कार करना चाहिए। ता. **12 को राहु कन्या राशि में तथा केतु मीन,** राशि में जाने से सर्व प्रकार के अनाज, दूध, चावल, दालें, रूई, पटसन, खल-बिनौले, चौपाय, लकड़ी व पशुचारा महँगे हो जाएँगे।

आकाश लक्षण–भारत के पश्चिमी एवं पूर्वोत्तरी क्षेत्रों जैसे–महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, असम, पं. बंगालादि में व्यापक वर्षा होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७१, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक : १९३५														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 13 जुलाई से 26 जुलाई तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतुः					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आषा. शक	रमजान	जुलाई	आषाढ़ प्र		ग्रह दर्शन–सायं शनि याम्योत्तरवृत्तासन्न, मं. याम्योत्तरवृत्त के मध्य में, प्रातः बुध–शुक्र पूर्वक्षितिज में दृश्य होंगे। गुरु अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.४३	१	रवि	१८	४५	उ.षा.	२३	३०	विष्क	४७	२८	कौ	१८	४५	२२	१४	13	२९	मकर	श्रावण कृष्ण पक्ष प्रा. शुक्र मिथुन में ३८/५५ (21/11 घं. मिं.), **(A)**	२	२६	२९	३४	५	३७	१९	३०
३४.४३	२	चंद्र	९	१५	श्रव	१६	८	प्रीति	३७	१०	गर	९	१५	२३	१५	14	३०	कुं. ४२/३८	भ. ३४/४४ से, **पंचक प्रारम्भ ४२/३८, मंगल तुला में ७/४८**	२	२७	२६	४९	५	३७	१९	३०
३४.३८	३	मंग	०	१३	धनि	९	१८	आयु	२७	२५	वि	०	१३	२४	१६	15	३१	कुम्भ	भ. ०/१३ तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12–13) **(B)**	२	२८	२४	०२	५	३८	१९	२९
००.००	४	मंग	५२	५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.३८	५	बुध	४५	१५	शत पुभा	३ / ५८	२८ / ५५	सौभा	१८	३८	कौ	१८	४०	२५	१७	16	श्रा	मी. ४४/५५	**सूर्य कर्क में ४०/३५, श्रावण संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(C)**	२	२९	२१	१५	५	३८	१९	२९
३४.३३	६	गुरु	३९	५०	उ.भा.	५५	५८	शोभ	१०	५८	गर	१२	३३	२६	१८	17	२	मीन	भ. ३९/५० से,	३	००	१८	३०	५	३९	१९	२८
३४.३३	७	शुक्र	३६	१०	रेव	५४	४३	अति सुक	४ / ५१	३८ / ४३	वि	८	००	२७	१९	18	३	मे. ५४/४३	भ. ८/०० तक, **पंचक समाप्त** ५४/७३, गण्डमूल विचार, स.सि.योगः	३	०१	१५	४४	५	३९	१९	२८
३४.२८	८	शनि	३४	१०	अश्वि	५५	५	धृति	५६	८	बा	५	१०	२८	२०	19	४	मेष	गुरु पुष्य (२) में ४२/४८, शुक्र आर्द्रा में ११/०५, गण्डमूल 27घं.–42मिं. तक	३	०२	१३	०१	५	४०	१९	२७
३४.२५	९	रवि	३३	५०	भर	५७	५	शूल	५३	४८	तै	४	००	२९	२१	20	५	मेष	सूर्य पुष्य में १०/०५, **शनि मार्गी** होगा ५०/४०,	३	०३	१०	१९	५	४१	१९	२७
३४.२५	१०	चंद्र	३५	५	कृति	६०	०	गंड	५२	४०	व	४	२८	३०	२२	21	६	वृ. १२/४८	भ. ४/२८ से ३५/०५ तक,	३	०४	०७	३६	५	४१	१९	२७
३४.२०	११	मंग	३७	३३	कृति	०	२८	वृद्धि	५२	२८	बव	६	१९	३१	२३	22	७	वृष	**कामिका एकादशी व्रत**, सूर्य सायन सिंह में ५३/४३	३	०५	०४	५५	५	४२	१९	२६
३४.१८	१२	बुध	४१	८	रोहि	५	३	ध्रुव	५३	३	कौ	९	२१	श्रा	२४	23	८	मि. ३७/४३	बुध पुनर्वसु में ३५/४८, शक श्रावण प्रारम्भ, स.सि.योगः	३	०६	०२	१५	५	४२	१९	२५
३४.१५	१३	गुरु	४५	३०	मृग	१०	३३	व्या.	५४	१८	गर	१३	१९	२	२५	24	९	मिथुन	भ. ४५/३० से, **प्रदोष व्रत**	३	०६	५९	३३	५	४३	१९	२५
३४.१०	१४	शुक्र	५०	३३	आर्द्रा	१६	४५	हर्ष	५५	५८	वि	१८	०२	३	२६	25	१०	मिथुन	भ. १८/०० तक, मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. यो. 12/26 से,	३	०७	५६	५६	५	४४	१९	२४
३४.१०	३०	शनि	५६	१०	पुर्न	२३	३५	वज्र	५८	३	चतु	२३	२२	४	२७	26	११	क. ६/५०	**हरियाली/शनिवारी अमावस**, स्नान, दानादि	३	०८	५४	१६	५	४४	१९	२४

(A) बुध आर्द्रा में ५५/३८, अशून्यशयन व्रत, स.सि.यो. **(B)** मङ्गलागौरी व्रतारम्भ **(C)** सं. मध्याह्न बाद, नाग–पंचमी (राज. व बंगाल), निरयन दक्षिणायन शुरू

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	६	२	३	२	६	५	११
०२	०१	०२	१२	०६	०६	२२	२९	२९
१२	०६	२०	४८	३०	२६	३५	३९	३९
४०	२०	१३	३५	२४	०८	०३	५५	५५
57 16	792 29	29 38	86 14	13 20	72 22	0 8	3 11	3 11
पुर्न ४	अश्वि १	चित्रा ३	आर्द्रा २	पुष्य १	मृग ४	विशा १	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 26 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	२	६	२	३	२	६	५	११
०८	२८	०५	२४	०८	१४	२२	२९	२९
५३	३१	५३	१५	०३	५३	३६	१७	१७
४५	२९	०८	०२	४५	३३	१०	३९	३९
57 20	715 22	31 25	112 5	13 21	72 39	0 33	3 10	3 10
पुष्य २	पुर्न ३	चित्रा ४	पुर्न २	पुष्य २	आर्द्रा ३	विशा १	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



श्रावण कृष्ण पक्षफल–

श्रावण मास में भगवान् शंकर की प्रसन्नता के लिए प्रतिदिन अथवा हर सोमवार को एकभुक्त व्रती रहकर शिवपूजन करके शिवलिङ्ग पर '**ॐ नमः शिवाय**' मन्त्र सहित बिल्व–पत्र, पुष्प, पंचामृत, दूध, चावल व गंगाजल सहित अभिषेक करने से मनवाँछित कामनाओं की पूर्ति होती है। **श्रावण** के प्रथम मंगलवार से लेकर प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत विधिवत् पूजनादि करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **ता. 16 जुला., बुधवार को श्रावण संक्रान्ति होगी।** ३० मुहूर्त्ति, स्नानदानादि का पुण्यकाल दुपैहर 12 बजकर 52 मिनट से शुरू होगा। **वारानुसार** मन्दाकिनी नाम की यह संक्रान्ति राष्ट्र नेताओं को सुख देने वाली तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक शूद्रों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी।

लोक भविष्य–इस पक्ष में शनिवार की अमावस होने से साधारण लोगों को दुख व पीड़ाओं का सामना रहे। पिता–पुत्रादि नजदीकी नातेदारों में परस्पर सौहार्द व प्यार की कमी हो। गाय, भैंस, घोड़ा, ऊँट आदि पशु तथा वाहनादि सुख–साधन महँगे होंगे। इसी पक्ष के (14 जुला.) आरम्भ से तुला राशि में मंगल–शनि का योग बनने से देश में कहीं जल, कहीं दुर्भिक्ष, अनाज की कमी हो। कहीं राज्यभङ्ग एवं हिंसक घटनाएँ घटित हो, कहीं अग्निकांड से जन, धनादि की क्षति हो। सामान्य लोगों में महँगाई के कारण गहन असन्तोष एवं क्रोध की भावना हो–**भौम सौरीश्चैकराशौद्वयो स्थिते यदि। दुर्भिक्षं राज्यभंगं च मेदिन्यामग्नितो भयम्।।** इसी पक्ष में गुरु अतिचारी गति से संचरित है तथा शनि वक्री होकर तुला राशि में गत्यमान है। फलस्वरूप देश के कुछ भागों में राज्य विग्रह, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), दंगा–फिसाद, महँगाई, अग्निकांड एवं हिंसा की घटनाएँ घटित होने के संकेत हैं–**यदा क्रूर ग्रहो वक्री हि अतिचारी तु सौम्यकः। पीडा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज्य विग्रहम्। आकाश लक्षण**–इस पक्ष में पंजाब, हिमाचल, जम्मू–काश्मीर, दिल्ली, हरियाणा आदि में रुक–रुक कर व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक: १९३६

सन् 2014 ई. (ता. 27 जुलाई से 10 अगस्त तक) हिजरी सन् 1435 | भा.स्टैं.टा. | जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	श्राव. शक	रमज़ान	जुलाई	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल
३४.०५	१	रवि	६०	००	पुष्य	३०	४८	सिद्धि	६०	००	किं	२९	०७	५	२८	27	१२	कर्क
३४.००	१	चंद्र	२	३	श्ले	३८	१८	सिद्धि	०	२०	बव	२	०३	६	२९	28	१३	सिं. ३८/१८
३४.००	२	मंग	७	४८	मघा	४५	५०	व्य.	२	५०	कौ	७	४८	७	शव्व	29	१४	सिंह
३३.५५	३	बुध	१४	१५	पू.फा.	५३	१०	वरी	५	१८	गर	१४	४५	८	२	30	१५	सिंह
३३.५३	४	गुरु	१९	५८	उ.फा.	५९	५८	परि	७	३०	वि	१९	५८	९	३	31	१६	कं. ९/५५
३३.५०	५	शुक्र	२४	५५	हस्त	६०	००	शिव	९	१३	बा	२४	५५	१०	४	अग	१७	कन्या
३३.४५	६	शनि	२८	४०	हस्त	५	४०	सिद्ध	१०	५	तै	२८	४०	११	५	2	१८	तु. ३८/०३
३३.४३	७	रवि	३०	५३	चित्रा	१०	५	साध्य	९	५०	व	३०	५३	१२	६	3	१९	तुला
३३.३८	८	चंद्र	३०	४५	स्वा	१२	४०	शुभ	८	८	वि	०	४९	१३	७	4	२०	वृ. ५८/२३
३३.३३	९	मंग	२९	२३	विशा	१३	१८	शुक्ल ब्रह्म	४ ५१	५० ५५	बा	०	०४	१४	८	5	२१	वृश्चिक
३३.३३	१०	बुध	२५	३५	अनु	११	५५	ऐन्द्र	५२	२३	गर	२५	३५	१५	९	6	२२	वृश्चिक
३३.२८	११	गुरु	१९	५०	ज्ये	८	३३	वैधृ	४५	२०	वि	१९	५०	१६	१०	7	२३	ध. ८/३३
३३.२३	१२	शुक्र	१२	२५	मूल पू.षा.	३ ५७	२५ ३	विष्क	३६	३	बा	१२	२५	१७	११	8	२४	धनु
३३.२०	१३	शनि	३	४८	उ.षा.	४९	४३	प्रीति	२५	५३	तै	३	४८	१८	१२	9	२५	म. १०/१५
००.००	१४	शनि	५४	१८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००
३३.१५	१५	रवि	४४	२५	श्रव.	४१	५३	आयु	१५	८	वि	१९	२२	१९	१३	10	२६	मकर

तिथि	ग्रह दर्शन–सायं मंग.–शनि पश्चिमकपाल में, प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, 5 अग. से गुरु भी पूर्व में दिखेगा। ता. 27 जुला. से बुध पूर्व में अस्त होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	मंगल स्वा. में २८/३५, श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **बुध पूर्व में अस्त (A)**	३	०९	५१	३८	५	४५	१९	२३
१	**चन्द्रदर्शन**, मु. १५, **बुध कर्क में ५९/४३**, 29घं.–39मिं., गण्डमूल विचार	३	१०	४९	०३	५	४६	१९	२२
२	शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 24घं.–06मिं. तक	३	११	४६	२७	५	४६	१९	२२
३	भ. ४७/०७ से, मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज, दूर्वा गणपति व्रत (B)	३	१२	४३	५०	५	४७	१९	२१
४	भ. १९/५८ तक,	३	१३	४१	१५	५	४७	१९	२०
५	**नाग-पंचमी**, श्रीकल्कि जयन्ती, अगस्त मास प्रारम्भ, लोकमान्य (C)	३	१४	३८	४०	५	४८	१९	२०
६		३	१५	३६	०७	५	४९	१९	१९
७	भ. ३०/५३ से, सूर्य आश्लेषा में ६/४३, गुरु पुष्य (३) में ४३/०० (D)	३	१६	३३	३४	५	४९	१९	१८
८	भ. ०/४९ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी, चामुण्डादेवी–(E)**	३	१७	३१	००	५	५०	१९	१७
९	**गुरु पूर्व में उदय ४४/५०,**	३	१८	२८	२८	५	५१	१९	१६
१०	भ. ५२/४३ से, बुध आश्लेषा में ५/४३, गण्डमूल 10घं.–37मिं. से, स.सि.यो.	३	१९	२५	५५	५	५१	१९	१६
११	भ. १९/५० तक, **पवित्रा एकादशी व्रत, शुक्र कर्क में** २५/३३	३	२०	२३	२७	५	५२	१९	१५
१२	**प्रदोष व्रत**, गुरु बाल्यत्व समाप्त ४४/५०, गण्डमूल 7घं.–15मिं. तक	३	२१	२०	५८	५	५३	१९	१४
१३	भ. ५४/१८ से,	३	२२	१८	२७	५	५३	१९	१३
१४	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० (गुरु उदय 5 अग.)	०	०	०	०	०	०	०	०
१५	भद्रा १९/२२ तक, **श्रावण पूर्णिमा, रक्षा-बन्धन** (भद्रा-बाद), (देखें पृ. 86) (F)	३	२३	१६	०१	५	५४	१९	१२

(A) ४५/२५, **मेला छिन्नमस्तिका** (चिन्तपूर्णी) (हि.प्र.) प्रारम्भ, स.सि.योग: **(B)** वरद् चतुर्थी, बुध पुष्य में ३९/३०, शुक्र पुनर्वसु में १२/१० **(C)** तिलक स्मरणोत्सव **(D)** गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, श्रीशीतला पूजन **(E)** नैनादेवी (हि. प्र.) **(F)** अर्थवेदि-ऋग्वेदि उपाकर्म, शुक्र पुष्य में ९/२८, श्रीसत्यनारायण व्रत, गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, ऋषि तर्पण, संस्कृत दिवस, हयग्रीव जयन्ती

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	६	३	३	२	६	५	११
१७	१७	१०	१२	१०	२५	२२	२८	२८
३०	०५	४४	१५	०३	४८	४४	४९	४९
१५	३८	१९	५९	३५	४४	३८	०३	०३
56 26	785 9	33 27	125 12	13 15	73 00	1 26	3 11	3 11
अश्ले १	स्वा ४	स्वा २	पुष्य ३	पुष्य ३	पुन २	विशा १	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	६	३	३	३	६	५	११
२३	१२	१४	२४	११	०३	२२	२८	२८
१५	२३	०८	४०	२२	०७	५४	२९	२९
०५	०४	०५	५७	५५	१३	३७	५९	५९
57 31	919 25	34 38	126 26	13 9	73 13	2 00	3 11	3 11
अश्ले २	श्रव. १	स्वा. ३	अश्ले ३	पुष्य ३	पुन ४	विशा १	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



श्रावण शुक्ल पक्षफल–

शुक्ल प्रतिपदा (27 जुला.) से अष्टमी तक **माता चिन्तपूर्णी** (छिन्नमस्तिका) एवं चामुण्डा देवी (कांगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। ता. 30 जुला. को **सिंघारा (हरियाली) तीज** के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर जाकर हाथों में मेंहदी रचाकर श्रावण के झूले-झूलते हुई मलहार गाती हैं। **नागपंचमी** (1 अग.) के दिन अपने गृह के द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर से सर्पाकृति बनाकर मन्त्र का जप व नागस्तोत्र का पाठ करने से सर्पों का भय नहीं रहता। ता. 4 अग. को **श्रीदुर्गाष्टमी** के दिन श्री मनसादेवी (पंचकूला), चिंतपूर्णी व चामुण्डादेवी (कांगड़ा) में छिन्नमस्तिका माता का विशेष भव्य मेला मनाया जाता है। **पवित्रा एकादशी** (7 अग.) का विधिपूर्वक व्रत रखकर भगवान् विष्णु का पूजनार्चन करने से पुत्रादि सन्तति सुखों की प्राप्ति होती है। **श्रावण पूर्णिमा** (10 अग.) रविवार को श्रवण नक्षत्र युक्त है। भाई-बहिन के पवित्र प्यार का पर्व **रक्षाबन्धन** कृत्य दुपै. 13/38 के बाद (भद्रा के बाद) करना विशेष प्रशस्त होगा। इसी दिन धर्मपरायण लोग **श्रीअमरनाथ गुफा** (श्रीनगर) में भगवान् शिव के दिव्यस्वरूप शिवलिङ्ग के दर्शन करके कृतार्थ होंगे। **लोक भविष्य**–श्रावण मास में पांच रविवार होने से देश में कहीं बिजली, पेयजल, खाद्यान्न की कमी, अनाज के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि, कहीं सत्ता परिवर्तन (छत्रभंग), राजनैतिक गतिरोध, सामान्य लोगों में आतंक व व्यग्रता होगी। लोगों में विचित्र प्रकार के रोगों का भय हो, युद्ध आदि का भय हो–"**यत्रमासे रविवारा जायन्ते पंचसततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्गस्यात् दास्ते च महद्भयम्।।**" इस पक्ष में भी शनि-मंगल का संयोग होने से उत्तर-प्रदेश, मध्यप्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं। अग्निकांड या प्राकृतिक प्रकोप घटित होने का भय हो। **आकाश लक्षण**–पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली आदि प्रदेशों में रुक-रुक कर व्यापक वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९३६ | सन् 2014 ई. (ता. 11 अग. से 25 अग. तक) हिजरी सन् 1435

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–सायं मंग–शनि पश्चिमकपाल में, 22 अग. से बुध पश्चिम क्षितिज में दिखेगा। प्रातः गुरु–शुरु पूर्व–क्षितिज में पास–पास दिखेंगे।

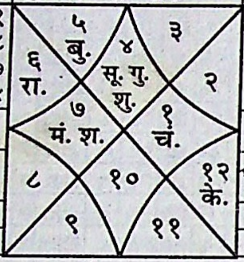
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	श्राव. शुक्ल	शव्वाल	अगस्त	श्रावण	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३.१३	१	चंद्र	३४	३८	धनि	३४	१०	सौभा शोभ	४ ५३	१३ ३५	बा	९	३२	२०	१४	11	२७	कुं. ८/००	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ ८/०० (9/06 घं. मिं.)	३	२४	१३	३४	५	५४	१९	११
३३.०८	२	मंग	२५	२०	शत	२६	५८	अति	४३	३०	गर	२५	२०	२१	१५	12	२८	कुम्भ	भ. ५१/१२ से, बुध मघा (१) सिंह में ३७/५५, कज्जली तीज (चं.उ. व्या.)	३	२५	११	०७	५	५५	१९	१०
३३.०३	३	बुध	१७	३	पू.भा.	२०	४५	सुक	३४	२०	वि	१७	०३	२२	१६	13	२९	मी. ७/१०	भ. १७/०३ तक, श्रीगणेश बहुला चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12–13),	३	२६	०८	४१	५	५६	१९	०९
३३.००	४	गुरु	१०	८	उ.भा.	१६	००	धृति	२६	२५	बा	१०	०८	२३	१७	14	३०	मीन	गण्डमूल 12 घं.–20 मिं. से, स.सि.यो. 12/20 से	३	२७	०६	१६	५	५६	१९	०८
३२.५५	५	शुक्र	४	५०	रेव	१२	५०	शूल	१९	५३	तै	४	५०	२४	१८	15	३१	मे. १२/५०	पंचक समाप्त १२/५०, भारत स्वतन्त्रता दिवस, चन्दन षष्ठी व्रत (A)	३	२८	०३	५६	५	५७	१९	०७
३२.५३	६	शनि	१	२५	अश्वि	११	३८	गंड	१४	५५	व	१	२५	२५	१९	16	३२	मेष	भ. १/२५ से ३०/४२ तक, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 10 घं.–36 मिं. तक	३	२९	०१	३७	५	५७	१९	०६
००.००	७	शनि	५९	५८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	00	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.४८	८	रवि	६०	००	भर	१२	१८	वृद्धि	११	२८	बा	३०	०९	२६	२०	17	भाद्र	वृ. २७/४५	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त), सूर्य मघा (१) सिंह में 0/४३(B)	३	२९	५९	१७	५	५८	१९	०५
३२.४३	८	चंद्र	०	२०	कृति	१४	४५	ध्रुव	९	३०	कौ	०	२०	२७	२१	18	२	वृष	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी (वैष्णव) (देखें पृ. 86) गुरु पुष्य (४) में ५६/२५, (C)	४	००	५७	०१	५	५९	१९	०४
३२.४०	९	मंग	२	२८	रोहि	१८	५३	व्या	८	५३	गर	२	२८	२८	२२	19	३	मि. ५१/२५	भ. ३४/१४ से, श्रीगुग्गा–नवमी, मंगल विशा. में ५४/२३, बुध पू.फा. में ३८/२८	४	०१	५४	४४	५	५९	१९	०३
३२.३५	१०	बुध	६	००	मृग	२४	१५	हर्ष	९	१८	वि	६	००	२९	२३	20	४	मिथुन	भ. ६/०० तक, शनि विशाखा (२) में २६/५८, स.सि.योग:	४	०२	५२	३०	६	००	१९	०२
३२.३३	११	गुरु	१०	४०	आर्द्रा	३०	३८	वज्र	१०	३५	बा	१०	४०	३०	२४	21	५	मिथुन	अजा एकादशी व्रत, शुक्र आश्लेषा में २/५८	४	०३	५०	१६	६	००	१९	०१
३३.२८	१२	शुक्र	१६	५	पुन	३७	३८	सिद्धि	१२	२५	तै	१६	०५	३१	२५	22	६	क. २०/५०	वत्स द्वादशी (पूजा), प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय १८/१५	४	०४	४८	०५	६	०१	१९	००
३२.२३	१३	शनि	२१	५८	पुष्य	४५	००	व्य.	१४	३८	व	२१	५८	भा.	२६	23	७	कर्क	भ. २१/५८ से ५५/०२ तक, मासशिवरात्रि व्रत, सूर्य सायन कन्या में (D)	४	०५	४५	५८	६	०२	१८	५९
३२.१८	१४	रवि	२८	५	श्ले.	५२	३०	वरी	१७	३	शकु	२८	०५	२	२७	24	८	सिं. ५२/३०	गण्डमूल विचार	४	०६	४३	५०	६	०२	१८	५७
३२.१३	३०	चंद्र	३४	१०	मघा	५९	५३	परि	१९	२५	चतु	१	०८	३	२८	25	९	सिंह	भाद्रपद/सोमवती अमावस, कुशाग्रहणी-पिठोरी अमावस, (E)	४	०७	४१	४२	६	०३	१८	५६

(A) चन्द्रोदय 22/24 (जालन्धर), हल–षष्ठी, गण्डमूल विचार, स.सि.यो. **(B)** 6/15 घं.मिं., भाद्रपद संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय से दोपहर 12 घं.–39 मिं. तक, **(C)** गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), **(D)** १०/३५, शक भाद्रपद प्रारम्भ, शरद् ऋतु प्रारम्भ, अघोरा–डाकिनी चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ–2 दिन **(E)** 'ॐ हुँ फट् स्वाहा' इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्, लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला–झुंझुनूं (राज.)

रवौ सप्तम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 17 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	६	४	३	३	६	५	११
२९	२३	१८	०८	१२	११	२३	२८	२८
५८	४५	१४	२४	५४	४०	१०	०७	०७
१२	०९	२३	३३	३३	३४	२८	४४	४४
57 41	773 1	35 55	112 14	13 00	73 30	2 38	3 11	3 11
अश्ले ४	भर. ४	स्वा. ४	मघा ३	पुष्य ३	पुष्य ३	विशा १	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

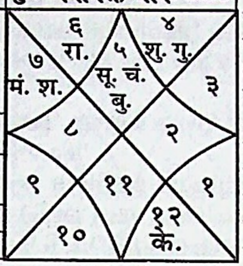
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 25 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	६	४	३	३	६	५	११
०७	०१	२३	२२	१४	२१	२३	२७	२७
४०	१३	०६	४२	३७	२९	३४	४२	४२
२५	२३	२८	५८	३८	४०	००	१८	१८
57 54	712 1	37 16	101 6	12 44	73 49	3 20	3 11	3 11
मघा ३	मघा १	विशा १	पू.फा. ३	पुष्य ४	अश्ले २	विशा २	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में चतुर्थी (**बहुला चौथ**) 13 अगस्त को व्रत रखकर सायंकाल को श्रीगणेश का लड्डुओं सहित पूजन करें और चन्द्रोदय होने पर अर्घ्य देने से अभीष्ट की प्राप्ति होती है। ता. 15 को **चन्दन (या चन्द्र ६)** षष्ठी का व्रत रखकर सूर्य व चन्द्रमा की पूजा करने से धन, सन्तति एवं सौभाग्य की वृद्धि होती है। (17) अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत सूर्य उदयकाल में एवं अर्द्धरात्रि व्याप्त होगी। इस दिन अर्द्ध–रात्रिकाल में कृतिका नक्षत्र, वृष राशि का चन्द्रमा भी रहेगा। इसी दिन (17 अग.) को **भाद्रपद संक्रान्ति** रविवार को होने से घोरा नाम की शूद्रों–अर्थात् नीचजनों को लाभ एवं सुख प्रदायक रहेगी। यह संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ति तथा स्नान, दानादि का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से दुपैहर 12 बजकर 39 मिनट तक होगा। ता. 18 अग. को गोकुल में भगवान् कृष्ण के जन्म–उपलक्ष्य में नन्दोत्सव मनाया जाएगा। ता. 19 को **गुग्गा नवमी** पर्व नाग देवों की प्रसन्नता हेतु विभिन्न प्रान्तों में मनाया जाता है। **अजा एकादशी** (21 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखने से जन्म–जन्म के सन्तापों का हरण हो जाता है। **वत्स द्वादशी** (22 अग.) को गाय एवं बछड़े का पूजन करना चाहिए। ता. 25 को **सोमवती अमावस** के दिन गंगादि तीर्थ स्थान पर स्नान, दान एवं देव/पितृ तर्पण हेतु विशेष पुण्य दिन होगा। इसदिन श्रीविष्णु सहस्रनाम व हरिहर स्तोत्र का पाठ एवं यथाशक्ति फल वस्त्रों एवं अनाजादि का दान करना प्रशस्त होगा।

लोक भविष्य–इस पक्ष में तुला राशि पर अभी **शनि–मंगल** का योग बना हुआ है, जिसके प्रभावस्वरूप देश के कुछ प्रदेशों जैसे–असम, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश, पं. बंगाल, मध्य प्रदेश, दिल्ली, काश्मीर आदि कुछ प्रदेशों में कहीं अग्निकाण्ड, हिंसक उपद्रव एवं विस्फोटक घटनाएं एवं सम्प्रदायक दंगे घटित होने के योग हैं। सत्तारूढ़ व विपक्षी पार्टियों में परस्पर टकराव बढ़ेंगे।

आकाश लक्षण–भारत के उत्तर/पश्चिमी भागों में रुक–रुक कर व्यापक खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक: १९३६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 26 अग. से 9 सितम्बर तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतु:					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	भाद्र. शाक	शव्वाल	अगस्त	भाद्रपद		ग्रह दर्शन–सायं बुध पश्चिम क्षितिज में, मंग.–शनि पश्चिम–कपाल में पास–पास होंगे। प्रातः गुरु–शुक्र पूर्व क्षितिज में दिखाई देंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.०८	१	मंग	४०	००	पू.फा.	६०	००	शिव	२१	३८	किं	७	०५	४	२९	26	१०	सिंह	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 06/00 घं.मिं. तक	४	०८	३९	३९	६	०४	१८	५५
३२.०५	२	बुध	४५	२८	पू.फा.	६	५८	सिद्ध	२३	३८	बा	१२	४४	५	३०	27	११	क. २३/४०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध उ.फा. में २०/४०	४	०९	३७	३६	६	०४	१८	५४
३२.००	३	गुरु	५०	१३	उ.फा.	१३	३३	साध्य	२५	८	तै	१७	५१	६	जि	28	१२	कन्या	**हरितालिका तृतीया, गौरी तृतीया,** श्रीवराह जयन्ती, जिल्काद (मु.)**(A)**	४	१०	३५	३३	६	०५	१८	५३
३१.५५	४	शुक्र	५४	१५	हस्त	१९	२५	शुभ	२६	३	व	२२	१४	७	२	29	१३	तु. ५२/००	भ. २२/१४ से ५४/१५ तक, **सिद्धि विनायक व्रत, कलंक चतुर्थी (B)**	४	११	३३	३३	६	०५	१८	५१
३१.५०	५	शनि	५६	४३	चित्रा	२४	१५	शुक्ल	२६	५	बव	२५	२९	८	३	30	१४	तुला	ऋषि पंचमी, **सूर्य पू.फा. में** ५०/०५, सम्वत्सरी महापर्व (जैन)	४	१२	३१	३२	६	०६	१८	५०
३१.४५	६	रवि	५७	५०	स्वा.	२७	४५	ब्रह्म	२५	५	कौ	२७	१७	९	४	31	१५	तुला	सूर्य षष्ठी व्रत, शुक्र मघा (१) सिंह में ५२/४५, यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	४	१३	२९	३६	६	०७	१८	४९
३१.४३	७	चंद्र	५७	२०	विशा	२९	४५	ऐन्द्र	२२	५३	गर	२७	३५	१०	५	सितं.	१६	वृ. १४/२८	भ. ५७/२० से, **मुक्ताभरण–सन्तान सप्तमी व्रत,** सितंबर मास प्रारम्भ	४	१४	२७	४०	६	०७	१८	४८
३१.३८	८	मंग	५५	०३	अनु	३०	००	वैधृ	१९	१५	वि	२६	१२	११	६	2	१७	वृश्चिक	भ. २६/१२ तक, **दूर्वाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी** व्रतारम्भ	४	१५	२५	४६	६	०८	१८	४७
३१.३३	९	बुध	५१	००	ज्ये.	२८	३३	विष्क	१४	१५	बा	२३	०२	१२	७	3	१८	ध. २८/३३	**श्रीचन्द्र नवमी** (उदासीन सम्प्र.), गुरु आश्लेषा (१) में ४३/५० **(C)**	४	१६	२३	५४	६	०८	१८	४५
३१.२८	१०	गुरु	४५	१५	मूल	२५	२०	प्रीति आयु	७ ५९	४५ ५९	तै	१८	०८	१३	८	4	१९	धनु	**मंगल वृश्चिक में** ५०/५५, बुध हस्त में ५६/२५, अगस्त्य–उदय	४	१७	२२	००	६	०९	१८	४४
३१.२३	११	शुक्र	३८	०५	पू.षा.	२०	३५	सौभा	५१	१०	व	११	४०	१४	९	5	२०	म. ३४/१३	भ. ११/४० से ३८/०५ तक, **पद्मा एकादशी व्रत**	४	१८	२०	११	६	१०	१८	४३
३१.२०	१२	शनि	२९	५०	उ.षा.	१४	४०	शोभ	४१	२८	बव	३	३५	१५	१०	6	२१	मकर	शनि प्रदोष व्रत, **वामन जयन्ती**, श्रवण द्वादशी, स. सि. यो. 12/02 से, **(D)**	४	१९	१८	२२	६	१०	१८	४२
३१.१३	१३	रवि	२०	५०	श्रव	७	५०	अति	३१	१०	तै	२०	५०	१६	११	7	२२	कुं. ३४/१५	**पंचक प्रारम्भ** ३४/१५ (19घं.–53मिं.)	४	२०	१६	३२	६	११	१८	४०
३१.१०	१४	चंद्र	११	३५	धनि शत	० ५३	३८ २५	सुक	२०	४५	व	११	३५	१७	१२	8	२३	कुम्भ	भ. ११/३५ से ३६/५८ तक, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल (E)**	४	२१	१४	४७	६	११	१८	३९
३१.०५	१५	मंग	२	२०	पू.भा.	४६	४०	धृति	११	२५	बव	२	२०	१८	१३	9	२४	मी. ३३/१५	**भाद्रपद पूर्णिमा** (स्नानदानादि), मंगल अनु. में ५७/१८, **पितृपक्ष (F)**	४	२२	१३	००	६	१२	१८	३८

(A) मास प्रारम्भ **(B)** (चन्द्रदर्शन निषेध), चन्द्रास्त 20/55 (जालन्धर), **पत्थर चौथ, बुध कन्या में** २३/५८, सामवेदि उपाकर्म (हस्त नक्षत्रे) **(C)** श्रीभागवत सप्ताह पाठारम्भ
(D) विष्णु करवट परिवर्तन उत्सव **(E)** (जालन्धर), श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी/महालय श्राद्धारम्भः, पूर्णिमा का श्राद्ध **(F)** **(श्राद्ध) प्रारम्भ**, प्रतिपदा का श्राद्ध

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ १५ २४ १५	७ ०९ ३८ ०६	६ २८ ०८ ५६	५ ०५ ३४ ५०	३ १६ १८ १७	४ ०१ २१ ०२	६ २४ ०२ ५८	५ २७ १६ ५१	११ २७ १६ ५१
58 5	807 22	38 29	90 39	12 22	74 6	3 59	3 11	3 11
पू.फा. (१)	अनु २	विशा ३	उ.फा. ३	पुष्य ४	मघा १	विशा २	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २२ ११ १९	१० २१ १३ ३६	७ ०२ ४१ ११	५ १५ ४१ ४३	३ १७ ४३ ४७	४ १० ०० ०९	६ २४ ३२ २७	५ २६ ५४ ३६	११ २६ ५४ ३६
58 16	899 15	39 26	81 7	11 59	74 16	4 31	3 11	3 11
पू.फा. (३)	पूभा १	विशा ४	हस्त २	अश्ले १	मघा ४	विशा २	चित्रा २	रेव ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया को अखण्ड सुहाग की कामना से गौरी तृतीया (हरितालिका तीज) (28 अग.) का व्रत विशेषकर सुहागिन स्त्रियाँ करती हैं। 29 अगस्त को कलंक चतुर्थी (पत्थर चौथ) को चन्द्रदर्शन करने से व्यक्ति को मिथ्या कलंक लगने का भय होता है। इस दिन सिद्धि विनायक श्रीगणेश जी का व्रत रखकर लड्डुओं आदि का भोग लगाने एवं गणपति स्तोत्र का पाठ करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 1 सितं. को संतान सप्तमी का व्रत सन्तान सुख प्राप्ति के लिए किया जाता है। पति-पत्नी दोनों के द्वारा व्रत रखकर भगवान् शिवपार्वती एवं सूर्य देव की पूजा करनी चाहिए। ता. 2 सितं. को श्रीमहालक्ष्मी का व्रत एवं पूजन सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं संतान सुख में वृद्धि के लिए करती हैं। ता. 6 सितं. को भगवान् विष्णु के वामन अवतार रूप में पूजार्चना करके श्री विष्णुसहस्रणाम का पाठ करना चाहिए। ता. 8 सितं. को **अनन्तचौदश** का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्त स्वरूप का ध्यान करते हुये "**ॐ अनन्ताय नमः**" मंत्रपूर्वक पूजन करना चाहिए। इसी दिन जालन्धर (पंजाब) में भगवान् शेषनाग के अंशावतार बाबा सोढल का भव्य मेला आयोजित होता है। इसी दिन पूर्णिमा का श्राद्ध भी रहेगा। ता. 9 से पितृपक्षारम्भ होगा। प्रतिपदा तिथि का श्राद्ध भी इसी दिन मध्याह्नकाल में होगा।

लोक भविष्य–भाद्रपद मास में **पाँच मंगलवार** पड़ने से देश के प्रधान नेता के लिए अनिष्टकारी होंगे। केन्द्रिय मन्त्री मण्डल में विशेष परिवर्तन होने के भी संकेत हैं। चीन, पाकिस्तान आदि शत्रु देशों के साथ सैनिक टकराव पैदा होने के संकेत हैं। कई स्थानों पर हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ घटित होंगी–**यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पँचवासराः रक्तेन पूरिता पृथिवी छत्रभङ्गस्तदा भवेत्।।** आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक वृद्धि होने से लोगों में आक्रोश एवं गहन असंतोष फैलेगा। **आकाश लक्षण**–उत्तरी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक : १९३६ | **सन् 2014 ई. (ता. 10 सितं. से 24 सितंबर तक) हिजरी सन् 1435** | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

ग्रह दर्शन–सायं बुध पश्चिम क्षितिज में, उससे काफी ऊपर शनि होगा तथा मंग. पश्चिमी कपाल में होगा। प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज में तथा गु. पूर्व कपाल में होगा।

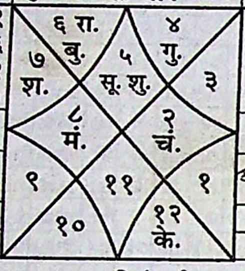
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	भाद्र शक (तारीखें)	ज़िल्काद	सितंबर	भाद्रपद	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
अवम्	१	मंग.	५३	४३	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३१.०३	२	बुध	४६	००	उ.भा.	४०	५०	शूल गंड	० ५१	५८ ४०	तै	१९	५२	१९	१४	10	२५	मीन	द्वितीया का श्राद्ध	४	२३	११	१९	६	१२	१८	३७
३०.५५	३	गुरु	३९	३८	रेव	३६	१३	वृद्धि	४३	५०	व	१२	४४	२०	१५	11	२६	मे. ३६/१३	भ. १२/४९ से ३९/३८ तक, **पंचक समाप्त** ३६/१३, शुक्र पू.फा. में **(A)**	४	२४	०९	३६	६	१३	१८	३५
३०.५०	४	शुक्र	३४	५०	अश्वि	३३	१५	ध्रुव	३७	१८	बव	७	१४	२१	१६	12	२७	मेष	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12–13), चतुर्थी का श्राद्ध	४	२५	०७	३६	६	१४	१८	३४
३०.४८	५	शनि	३१	५८	भर	३२	१०	व्या.	३२	२०	कौ	३	२४	२२	१७	13	२८	वृ. ४७/१०	सूर्य उ.फा. में ३४/३५, भरणी श्राद्ध, राहु चित्रा (१) केतु रेव (३) **(B)**	४	२६	०६	१९	६	१४	१८	३३
३०.४०	६	रवि	३१	०३	कृति	३२	५८	हर्ष	२८	५३	गर	१	३१	२३	१८	14	२९	वृष	भ. ३१/०३ से, बुध चित्रा में ५२/३३, षष्ठी का श्राद्ध	४	२७	०४	४८	६	१५	१८	३१
३०.३८	७	चंद्र	३२	८	रोहि	३५	४५	वज्र	२७	३	वि	१	३६	२४	१९	15	३०	वृष	भ. १/३६ तक, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत** (चंद्रोदय व्यापिनी), सप्तमी का श्राद्ध	४	२८	०३	१३	६	१५	१८	३०
३०.३३	८	मंग	३४	५५	मृग	४०	१०	सिद्धि	२६	३३	बा	३	३२	२५	२०	16	आ.	मि. ७/४३	**सूर्य कन्या में ५९/४८, आश्विन संक्रान्ति**, मु. १५, पुण्यकाल सं.**(C)**	४	२९	०१	४३	६	१६	१८	२९
३०.२८	९	बुध	३९	१५	आर्द्रा	४६	३	व्य.	२७	१५	तै	७	०५	२६	२१	17	२	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, मातृ नवमी, नवमी का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन	५	००	००	१३	६	१६	१८	२७
३०.२३	१०	गुरु	४४	३८	पुन	५२	५०	वरी	२८	४८	व	११	५७	२७	२२	18	३	क. ३६/०३	भ. ११/५७ से ४४/३८ तक, दशमी का श्राद्ध, स. सि. योग	५	००	५८	४८	६	१७	१८	२६
३०.१८	११	शुक्र	५०	३८	पुष्य	६०	००	परि	३०	५३	बव	१७	३८	२८	२३	19	४	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत**, एकादशी का श्राद्ध	५	०१	५७	२२	६	१८	१८	२५
३०.१५	१२	शनि	५६	५५	पुष्य	०	१३	शिव	३३	१५	कौ	२३	४७	२९	२४	20	५	कर्क	सन्यासीनां श्राद्ध, **बुध तुला में** ४९/५३, गुरु आश्ले. (२) में ३९/०५**(D)**	५	०२	५६	०१	६	१८	१८	२४
३०.०८	१३	रवि	६०	००	श्ले.	७	४३	सिद्ध	३५	३३	गर	२९	५५	३०	२५	21	६	सिं. ७/४३	प्रदोष व्रत, **गजछाया योग** 9$^{घं.}$–24$^{मिं.}$ से, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध	५	०३	५४	४१	६	१९	१८	२२
३०.०३	१३	चंद्र	२	५५	मघा	१५	००	साध्य	३७	३५	व	२	५५	३१	२६	22	७	सिंह	भ. २/५५ से ३५/४४ तक, शुक्र उ.फा. में २३/३३, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि**(E)**	५	०४	५३	२५	६	२०	१८	२१
३०.००	१४	मंग	८	३३	पू.फा.	२१	५०	शुभ	३९	१३	शकु	८	३३	आ.	२७	23	८	कं. ३८/२५	**अमावस** (पितृकार्येषु), **सर्वपितृ श्राद्ध**, पितृ विसर्जन, श्राद्ध समाप्त, **(F)**	५	०५	५२	०८	६	२०	१८	२०
२९.५५	३०	बुध	१३	२८	उ.फा.	२७	५५	शुक्ल	४०	१३	ना	१३	२८	२	२८	24	९	कन्या	**आश्विन अमावस** (स्नानदान, देवकार्येषु), मातामह (नाना) का श्राद्ध	५	०६	५०	५५	६	२१	१८	१९

(A) ३९/३५, तृतीया का श्राद्ध, स.सि.यो. **(B)** में ३३/३०, पंचमी का श्राद्ध, चन्द्र षष्ठी व्रत **(C)** अगले दिन दोपहर 12/35 तक, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न**, जीवित्पुत्रिका व्रत **(D)** द्वादशी का श्राद्ध **(E)** से मृतों का श्राद्ध, मासशिवरात्रि व्रत **(F)** चतुर्दशी/अमावस का श्राद्ध, सूर्य सायन तुला में ४/०८, शक आश्विन प्रा., दक्षिण गोल प्रारम्भ, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	७	५	३	४	६	५	११
२८	२८	०७	२४	१९	१८	२५	२६	२६
५९	००	१९	३८	०६	४०	०५	३२	३२
५१	१६	५१	४०	२७	४३	२९	२०	२०
58 30	739 4	40 19	70 2	11 33	74 30	5 00	3 10	3 10
उफा (१)	मृग २	अनु २	चित्रा १	अश्ले १	पूफा २	विशा २	चित्रा १	रेव ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

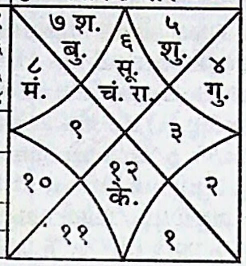
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



बुधे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 24 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	७	६	३	४	६	५	११
०६	०३	१२	०२	२०	२८	२५	२६	२६
४५	५५	४५	५७	३६	३७	४७	०६	०६
५०	३०	४९	२७	५१	२६	१५	५४	५४
58 47	730 2	41 17	50 30	10 58	74 2	5 30	3 10	3 10
उफा ४	उफा ३	अनु ३	चित्रा ३	अश्ले २	उफा १	विशा २	चित्रा १	रेव ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



आश्विन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में अपने दिवंगत पितरों के निमित्त जो व्यक्ति तिल, जौं, अक्षत, कुशा एवं गंगाजल सहित पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्र आदि का दान करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश-सम्पदा, आदि का आशीर्वाद देते हैं। जो व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं दुःखों से पीड़ित रहता है। इस पक्ष की अष्टमी तिथि (16 सितं.) को श्रीमहालक्ष्मी (जीवित्पुत्रिका) व्रत रखकर सौभाग्यवती स्त्रियां सन्तान की दीर्घायु की कामना करनी चाहिए। 16 सितं. को **आश्विन संक्रान्ति, मंगलवार** को १५ मुहूर्त्ति हैं, परन्तु स्नान-दानादि का पुण्यकाल एवं माहात्म्य 17 सितं. की प्रातः सूर्योदय से होगा। सभी प्रकार के (ज्ञात-अज्ञात) पितरों का श्राद्ध अपराह्न व्यापिनी **अमावस तिथि** (23 सितं.) को होगा।

लोक भविष्य–17 ता. को सूर्य कन्या राशि में आकर राहु के साथ होगा। फलस्वरूप देश के प्रधान नेता के लिए अनिष्टकारी होगा। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल में आमूलचूड़ परिवर्तन देखने को मिलेंगे। आश्विन मास में **पाँच मंगलवार** होने से सत्तारूढ़ पार्टी एवं विपक्ष पार्टियों में परस्पर टकराव के हालात बनेंगे। कहीं उपद्रव एवं जातीय टकराव पैदा होने के संकेत हैं। **राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेषानां च प्रवर्द्धनम्।।** राजनैतिक वातावरण में अस्थिरता होगी। कहीं तोड़-फोड़ एवं अग्निकाण्ड आदि अवाँछनीय घटनाएँ घटित होने के योग हैं। सर्व प्रकार के अनाज, दालें, दूध, घी, तिल, तैल, पैट्रोल, डीज़ल आदि पदार्थ और महँगे होंगे। **आकाश लक्षण**–इस पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादल चाल एवं खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७१,	आश्विन शुक्ल पक्ष	शाक: १९३६												तारीखें				चंद्र राशि	सन् 2014 ई. (ता. 25 सितम्बर से 8 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:	भा.स्टैं.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	रा. शक	जिल्काद	सितंबर	आश्विन प्र	प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–प्रातः शुक्र पूर्व क्षितिज में दृश्य, ता. 2 अक्तू. को पूर्व में ही लुप्त होगा। गु. पूर्वकपाल में होगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज में, उससे ऊपर श. तथा मं. पश्चिम–कपाल में दृश्य होगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२९.५०	१	गुरु	१७	३५	हस्त	३३	१५	ब्रह्म	४०	३५	बव	१७	३५	३	२९	25	१०	कन्या	**आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारंभ, शुक्र कन्या में ४/१०, घटस्थापन (A)**	५	०७	४९	४२	६	२१	१८	१७
२९.४५	२	शुक्र	२०	४०	चित्रा	३७	३३	ऐन्द्र	४०	८	कौ	२०	४०	४	३०	26	११	तु. ५/३०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०	५	०८	४८	३०	६	२२	१८	१६
२९.४३	३	शनि	२२	४३	स्वा.	४०	५०	वैधृ	३८	५०	गर	२२	४३	५	जिल	27	१२	तुला	भ. ५३/३९ से, **सूर्य** हस्त में १२/५३, जिल्हिजा (मु.) मास प्रा., स.सि.यो.	५	०९	४७	२४	६	२२	१८	१५
२९.३५	४	रवि	२३	३५	विशा	४२	५५	विष्क	३६	३५	वि	२३	३५	६	२	28	१३	वृ. २७/३०	भ. २३/३५ तक,	५	१०	४६	१६	६	२३	१८	१३
२९.३०	५	चंद्र	२३	१३	अनु	४३	४५	प्रीति	३३	२०	बा	२३	१३	७	३	29	१४	वृश्चिक	बुध स्वाती में १०/०५, मंगल ज्येष्ठा में ३६/००, उपाङ्ग ललिता व्रत**(B)**	५	११	४५	१२	६	२४	१८	१२
२९.२८	६	मंग	२१	३३	ज्ये.	४३	२०	आयु	२९	५	तै	२१	३३	८	४	30	१५	ध. ४३/२०	गण्डमूल विचार **शुक्र अस्त–2 अक्तू.**	५	१२	४४	११	६	२४	१८	११
२९.२०	७	बुध	१८	३३	मूल	४१	३८	सौभा	२३	४८	व	१८	३३	९	५	अक्तू	१६	धनु	भ. १८/३३ से ४६/२६ तक, सरस्वती आवाहन मूलभे, **अक्तू. मास प्रारंभ**	५	१३	४३	११	६	२५	१८	०९
२९.१८	८	गुरु	१४	१८	पू.षा.	३८	४०	शोभ	१७	२८	बव	१४	१८	१०	६	2	१७	म. ५२/४८	**श्रीदुर्गाष्टमी**, महाष्टमी, **शुक्र पूर्व में अस्त २/१५**, सरस्वती **(C)**	५	१४	४२	१०	६	२५	१८	०८
२९.१३	९	शुक्र	८	५३	उ.षा.	३४	३८	अति	१०	१०	कौ	८	५३	११	७	3	१८	मकर	**महानवमी**, नवरात्रे समाप्त, **विजयादशमी (दशहरा)** (देखें पृ. 87) **(D)**	५	१५	४१	१४	६	२६	१८	०७
२९.०८	१०	शनि	२	२५	श्रव	२९	४०	सुक/धृति	२/५३	५/२३	गर	२	२५	१२	८	4	१९	कुं. ५६/५८	भ. २८/५० से ५५/१५ तक, **पंचक प्रारम्भ ५६/५८, पापांकुशा (E)**	५	१६	४०	१७	६	२७	१८	०६
००.००	११	शनि	५५	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.०३	१२	रवि	४७	३३	धनि	२४	८	शूल	४४	१३	बव	२१	२४	१३	९	5	२०	कुम्भ	**पापांकुशा एकादशी व्रत (वैष्णव)**, पद्मनाभ द्वादशी	५	१७	३९	२४	६	२७	१८	०४
२८.५८	१३	चंद्र	३९	३८	शत	१८	१०	गंड	३४	५३	कौ	१३	३६	१४	१०	6	२१	मी. ५८/४३	**सोम प्रदोष व्रत**	५	१८	३८	३०	६	२८	१८	०३
२८.५३	१४	मंग	३१	५३	पू.भा.	१२	१५	वृद्धि	२५	३८	गर	५	४६	१५	११	7	२२	मीन	भ. ३१/५३ से ५८/१७ तक, **शरद् पूर्णिमा** व्रत, कोजागर व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत	५	१९	३७	४१	६	२९	१८	०२
२८.५०	१५	बुध	२४	४०	उ.भा.	६	४३	ध्रुव	१६	४८	बव	२४	४०	१६	१२	8	२३	मीन	**आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (F)**	५	२०	३६	५३	६	२९	१८	०१

(A) महाराजा अग्रसेन जयन्ती, **(B)** ललिता पंचमी, गण्डमूल 23 घं. 54 मिं से, स.सि.यो. **(C)** पूजन पू.षा. भे, महात्मा गाँधी जयन्ती, मेला काँगड़ा, ज्वालामुखी (हि.प्र.) **(D)** शस्त्रादि पूजा, अपराजिता पूजन, सरस्वती बलिदान उ.षा. भे, सरस्वती विसर्जन (श्रवणे), शुक्र हस्त में ५/१०, शनि विशा. (३) में १०/१०, **(E)** एकादशी व्रत (स्मार्त), बुध वक्री ४०/०८, भरत मिलाप **(F)** (भारत में दृश्य) (देखें पृ. 14–18), कार्तिक स्नान प्रारम्भ, **महर्षि वाल्मीकि जयन्ती**, शरद् पूर्णिमा दान

गुरै अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 2 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	७	६	३	५	६	५	११
१४	१७	१८	०७	२२	०८	२६	२५	२५
३९	०४	१९	५०	०२	३५	३२	४१	४१
५५	०८	११	२८	०४	३६	४९	२८	२८
59 1	846 10	42 9	14 29	10 15	74 52	5 56	3 10	3 10
हस्त (२)	पूषा २	ज्ये. १	स्वा. १	अश्ले २	उफा ४	विशा २	चित्रा १	रेव ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

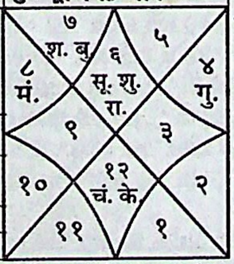
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



बुधे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	७	६	३	५	६	५	११
२०	१४	२२	०७	२३	१६	२७	२५	२५
३४	२५	३३	३४	०२	०४	०९	२२	२२
२८	५७	३३	३०	०३	५८	०९	२४	२४
59 12	870 46	42 44	29 7	9 39	74 56	6 14	3 11	3 11
हस्त ४	उभा ४	ज्ये. २	स्वा. १	अश्ले २	हस्त २	विशा ३	चित्रा १	रेव ३
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



आश्विन शुक्ल पक्षफल–

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, 25 सितम्बर, गुरुवार से शारदीय **नवरात्रे** प्रारम्भ होंगे। प्रतिपदा को सूर्योदय से 10 घटी तक अथवा अभिजित मुहूर्त्त में मंत्रोच्चारण सहित **घटस्थापन**, षोडशोपचार सहित **श्रीदुर्गा पूजन करना** चाहिए। संकल्पपूर्वक प्रतिपदा से नवमी तिथि तक, श्रीभगवती देवि के सम्मुख दीप जलाकर '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए। पूजन मन्त्र–'**ॐ नमश्चण्डिकायै। आगच्छ वरदे देवि! पूजां गृहाण समुखि नमस्ते शंकरप्रिये।।**'' ता. 2 अक्तू. को श्रीसरस्वती पूजन होगा। **विजयादशमी** (3 अक्तू.) को सायंकाले **रावणदाह, श्रीरामचन्द्र** जी की पूजा एवं अपराजिता पूजन तथा आयुध पूजन करना चाहिए। **विजयादशमी स्वयं सिद्ध** मुहूर्त्त माना जाता है। **स कालो विजयोज्ञयः सर्वकार्य सिद्धये।।** ता. 5 **अक्तू. को** पापांकुशा एका. (वैष्णव) (देखें पृ. 88) का व्रत पुत्रदा एकादशी भी कहलाता है। विधिवत् आ.शु. एकादशी को 12 वर्ष या प्रत्येक महीने की शुक्ल द्वादशी को 12 मास व्रत करें तो देवतुल्य दीर्घायु पुत्र होता है। **शरद् पूर्णिमा** (7 अक्तू.) का व्रत रखकर भगवान् लक्ष्मीनारायण का पूजन करके तथा रात्रि के समय उत्तम गोदुग्ध की खीर में घी और सफेद खाँड मिलाकर अर्द्धरात्रि के समय भगवान् के अर्पण करें। फिर अगले दिन प्रातः ब्राह्मण भोजन करवाकर स्वयं एवं परिवार में सेवन करने से मानसिक एवं अनेक असाध्य रोगों की शान्ति होती है। आश्विन पूर्णिमा (8 अक्तू.) से कार्तिक मास का स्नान शुरु हो जाएगा। इसी दिन की रात्रि को ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण होने से तीर्थों पर स्नान, दानादि का विशेष माहात्म्य होगा।

शकुन विचार–आश्विन शुक्ल १० (4 अक्तू.) को दक्षिण की वायु चले तो आगे अच्छी वर्षा हो, चावल, हल्दी, घी का स्टॉक करने से लाभ होगा।

वि. संवत् २०७१, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाक: १९३६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 9 अक्तू. से 23 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1435 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतु:	भा.स्टैं.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	आश्वि. शक	जिल्हिज्जा	अक्तू.	आश्विन		ग्रह दर्शन–प्रातः गु. पूर्वकपाल में, ता. 11 अक्तू. से बुध भी पश्चिम में अस्त होकर 22 अक्तू. से पूर्वक्षितिज में होगा। सायं श. पश्चिम क्षितिज में तथा मं. पश्चिम कपाल में होगा। शुक्र अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.४३	१	गुरु	१८	१८	रेव अश्वि	१ ५८	५५ १५	व्या.	८	३५	कौ	१८	१८	१७	१३	9	२४	मेष १/५५	पंचक समाप्त १/५५, वक्री बुध चित्रा (४) में ३८/२३, ग्रहण–(A)	५	२१	३६	०५	६	३०	१७	५९
२८.३८	२	शुक्र	१३	५	भर	५५	५८	हर्ष वज्र	१ ५५	१८ १५	गर	१३	०५	१८	१४	10	२५	मेष	भ. ४१/१८ से, सूर्य चित्रा में ४५/०८,	५	२२	३५	२२	६	३१	१७	५८
२८.३५	३	शनि	९	३०	कृति	५५	२५	सिद्धि	५०	३३	वि	९	३०	१९	१५	11	२६	वृ. १०/४०	भ. ९/३० तक, श्रीगणेश चतुर्थी, **व्रत करवाचौथ** (करक–चतुर्थी) **(B)**	५	२३	३४	४०	६	३१	१७	५७
२८.३०	४	रवि	७	३५	रोहि	५६	३५	व्य.	४७	१५	बा	७	३५	२०	१६	12	२७	वृष		५	२४	३४	०२	६	३२	१७	५६
२८.२५	५	चंद्र	७	३३	मृग	५९	३८	वरी	४५	२५	तै	७	३३	२१	१७	13	२८	मि. २७/५३	शुक्र चित्रा ४५/२८, स. सि. योग:	५	२५	३३	२३	६	३३	१७	५५
२८.२३	६	मंग	९	२५	आर्द्रा	६०	००	परि	४५	३	व	९	२५	२२	१८	14	२९	मिथुन	भ. ९/२५ से ४१/१३ तक, स्कन्द षष्ठी	५	२६	३२	४८	६	३३	१७	५४
२८.१५	७	बुध	१३	००	आर्द्रा	४	२३	शिव	४५	४८	बव	१३	००	२३	१९	15	३०	क. ५३/५३	**अहोई अष्टमी व्रत** (चं.उ. व्यापिनी), कालाष्टमी, दम्पत्य–अष्टमी	५	२७	३२	१७	६	३४	१७	५२
२८.१०	८	गुरु	१७	५८	पुन	१०	२८	सिद्ध	४७	२५	कौ	१७	५८	२४	२०	16	३१	कर्क	**वक्री बुध कन्या में १६/२५, गुरुपुष्य योग** (10^{घं.}–46^{मिं.} बाद), स.सि.यो	५	२८	३१	४६	६	३५	१७	५१
२८.०५	९	शुक्र	२३	५०	पुष्य	१७	३३	साध्य	४९	३३	गर	२३	५०	२५	२१	17	का.	कर्क	भ. ५७/०० से, **सूर्य तुला में २८/५३, कार्तिक संक्रान्ति**,मु. १५,**(C)**	५	२९	३१	१६	६	३६	१७	५०
२८.०३	१०	शनि	३०	१०	श्ले.	२५	३	शुभ	५१	५०	वि	३०	१०	२६	२२	18	२	सिं. २५/०३	भ. ३०/१० तक, **मंगल मूल (१) धनु में ३२/५८**,	६	००	३०	५१	६	३६	१७	४९
२७.५८	११	रवि	३६	१८	मघा	३२	२५	शुक्ल	५३	५३	बव	३	१४	२७	२३	19	३	सिंह	**रमा एकादशी व्रत, शुक्र तुला में ५/००, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ**	६	०१	३०	२८	६	३७	१७	४८
२७.५३	१२	चंद्र	४१	५०	पू.फा.	३९	१३	ब्रह्म	५५	२३	कौ	९	०४	२८	२४	20	४	कं. ५५/४८	**गोवत्स द्वादशी**	६	०२	३०	०५	६	३८	१७	४७
२७.५०	१३	मंग	४६	२८	उ.फा.	४५	१०	ऐन्द्र	५६	८	गर	१४	०९	२९	२५	21	५	कन्या	भ. ४६/२८ से, **भौम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी**, श्रीधनवन्तरी जयंती**(D)**	६	०३	२९	४७	६	३८	१७	४६
२७.४५	१४	बुध	४९	५०	हस्त	४९	५५	वैधृ	५५	५५	वि	१८	०८	३०	२६	22	६	कन्या	भ. १८/०८ तक, **श्रीहनुमान जयन्ती**, नरक चौदश, रूप चौदश **(E)**	६	०४	२९	३२	६	३९	१७	४५
२७.४०	३०	गुरु	५१	५८	चित्रा	५३	२८	विष्क	५४	४३	चतु	२०	३४	का.	२७	23	७	तु. २१/४८	**कार्तिक अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन (F)**	६	०५	२९	१८	६	४०	१७	४४

(A) करिदिन, गुरु आश्ले. (३) में ४९/३५, गण्डमूल 29^{घं.} 48^{मिं.} तक स.सि.यो. **(B)** चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12–13, वक्री बुध पश्चिम में अस्त ९/५८, दशरथ चतुर्थी **(C)** पुण्यकाल सं. दोपहर 11/45 बाद **(D)** यमाय प्रीत्यर्थं दीपदान **(E)** व्रत, वक्री बुध पूर्व में उदय ५६/५८, यमाय तर्पण **(F)** सूर्य सायन वृश्चिक में २६/५८, वक्री बुध हस्त (४) में ११/२०, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, कुबेर पूजा, काली पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), शक कार्तिक प्रारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	३	७	६	३	५	६	५	११
२८	००	२८	००	२४	२६	२८	२४	२४
२९	४१	१७	२३	१६	०५	००	५६	५६
०६	५१	५६	२३	१३	००	०५	५८	५८
59 30	717 26	43 28	73 18	8 45	75 4	6 33	3 11	3 11
चित्रा २	पुन. ४	ज्ये. ४	चित्रा ३	अश्ले. ३	चित्रा १	विशा. ३	चित्रा १	रेव. ३
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

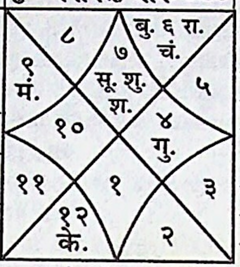
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	८	५	३	६	६	५	११
०५	२४	०३	२३	२५	०४	२८	२४	२४
२६	५०	२३	२६	१४	५०	४६	३४	३४
२३	०९	५८	१२	५७	४९	३८	४३	४३
59 45	756 17	44 4	26 6	7 53	75 10	6 46	3 11	3 11
चित्रा ४	चित्रा १	मूल २	चित्रा १	अश्ले. ३	चित्रा ४	विशा. ३	चित्रा १	रेव. ३
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में करवा–चौथ (11 अक्तू.) का व्रत सुहागिन स्त्रियां पति की मंगल कामना एवं आयु वृद्धि के लिए करती हैं। व्रती को चाहिए कि उस दिन प्रातः स्नानादि नित्यकर्म करके **"मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादि सुस्थिर श्रीप्राप्त्ये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।"** यह संकल्प करें तथा सायं श्रीगणेश जी एवं गौरी की कथा सुनकर चन्द्रमा को अर्घ्य देने के पश्चात् भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (15 अक्तू.) का व्रत, पूजन भी सन्तान व पति की रक्षा हेतु किया जाता है। ता. 21 अक्तू. धन त्रयोदशी को धनवन्तरी जी का जन्मोत्सव व औषधदान तथा नवीन बर्तन का क्रय किया जाता है। ता. 22 को अर्द्धरात्रि चतुर्दशी में रूद्रावतार **श्रीहनुमान जयन्ती** का पर्व उत्तरी भारत में मनाया जाएगा। इस रात्रि को हनुमान उपासना करनी शुभ होगी। ता. 23 अक्तू. को **श्रीमहालक्ष्मी** का पूजन व **दीपमाला** का शुभ पर्व है। इस रात्रि को किए गए जप, तप, मन्त्र, अनुष्ठानादि करने का विशेष महत्त्व होता है। **लोक–भविष्य**–कार्तिक मास में पाँच बृहस्पतिवार होने से देश में कहीं उपद्रव, बाढ़, हिंसा आदि की घटनाएँ होंगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा–**'यत्र मासे पंचवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते।।'** दैनिक जन–उपयोगी वस्तुओं, तेलादि की कीमतों में वृद्धि के कारण सामान्य वर्ग में गहन असन्तोष रहेगा। **कार्तिक संक्रान्ति** 17 अक्तू., शुक्रवार को १५ मुहूर्ति की है। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार तीक्ष्ण नामक यह संक्रान्ति नीच एवं पशुवृत्ति के लोगों के लिए सुखकर होगी। सूर्य तुला राशि में आकर शनि के साथ योग करेगा। फलस्वरूप देश का राजनीतिक वातावरण अत्यन्त क्लिष्ट समस्याओं से परिपूर्ण होगा। देश के प्रमुख नेता के लिए यह अवधि अरिष्टकर होगी। कुछ प्रदेशों में राजनीतिक गतिरोध पैदा होगा। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार और अत्यधिक महँगाई के कारण लोगों में क्षोभ एवं असन्तोष व्याप्त होगा। **संक्रान्ति राशिफल**–का. संक्रां. मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक एवं मकर राशि वालों को शुभ एवं लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**–भारत के पूर्वी भाग एवं उत्तर पश्चिम क्षेत्रों विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में तेज़ हवाओं के साथ वर्षा होने के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७१, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाक: १९३६															तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 24 अक्तू. से 6 नवम्बर तक) हिजरी सन् 1435–36 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:	भा.स्टैं.टा. जालन्धर						
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	कार्ति. श.	जिलहिज्ज	अक्तूबर	कार्तिक प्र.		ग्रह दर्शन–प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, गु. याम्योत्तर में होगा। सायं मं. पश्चिम कपाल में, श. पश्चिम क्षितिज में होगा। ता. 1 नवं. को पश्चिम में ही लुप्त होगा। शु. अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७.३५	१	शुक्र	५२	४८	स्वा	५५	४५	प्रीति	५२	३३	किं	२२	२३	२	२८	24	८	तुला	**अन्नकूट–गोवर्धन पूजा**, बलि व मार्गपाली पूजन, सूर्य स्वा. में **(A)**	६	०६	२९	०३	६	४१	१७	४३
२७.३०	२	शनि	५२	२५	विशा	५६	५३	आयु	४९	२५	बा	२२	३७	३	२९	25	९	वृ. ४१/४०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **भ्रातृ–दूज**, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजन **(B)**	६	०७	२८	५२	६	४२	१७	४२
२७.२८	३	रवि	५०	५८	अनु	५६	५८	सौभा	४५	२८	तै	२१	४२	४	मुह	26	१०	वृश्चिक	मुहर्रम (मु.) सं. 1436 हिजरी प्रारम्भ	६	०८	२८	४४	६	४२	१७	४१
२७.२३	४	चंद्र	४८	३०	ज्ये.	५६	३	शोभ	४०	४०	व	१९	४४	५	२	27	११	ध. ५६/०३	भ. १९/४४ से ४८/३० तक, **दूर्वा गणपति व्रत**	६	०९	२८	३७	६	४३	१७	४०
२७.१८	५	मंग	४५	१०	मूल	५४	२०	अति	३५	१३	बव	१६	५०	६	३	28	१२	धनु	बुध चित्रा में २२/२८, **ज्ञान पंचमी**, जया पंचमी	६	१०	२८	३०	६	४४	१७	३९
२७.१३	६	बुध	४१	५	पू.षा.	५१	५३	सुक	२९	५	कौ	१३	०८	७	४	29	१३	धनु	**सूर्य षष्ठी व्रत** (बिहार)	६	११	२८	२७	६	४५	१७	३८
२७.०८	७	गुरु	३६	२३	उ.षा.	४८	५०	धृति	२२	२८	गर	८	४४	८	५	30	१४	म. ६/०८	भ. ३६/२३ से,	६	१२	२८	२५	६	४६	१७	३७
२७.०५	८	शुक्र	३१	१३	श्रव	४५	२०	शूल	१५	२८	वि	३	४८	९	६	31	१५	मकर	भ. ३/४८ तक, **गोपाष्टमी**, स. सि. यो.	६	१३	२८	२६	६	४६	१७	३६
२७.००	९	शनि	२५	३५	धनि	४१	२५	गंड	८	००	कौ	२५	३५	१०	७	नवं	१६	कुं. १३/२३	**पंचक प्रा. १३/२३, शनि पश्चिम में अस्त २३/०८, अक्षय नवमी (C)**	६	१४	२८	२७	६	४७	१७	३५
२६.५५	१०	रवि	१९	४०	शत	३७	१५	वृद्धि ध्रुव	० ५२	२० ३३	गर	१९	४०	११	८	2	१७	कुम्भ	भ. ४६/३९ से, शनि विशा. (४) **वृश्चिक** में ३५/१३, भीष्मपंचक प्रा.**(D)**	६	१५	२८	२८	६	४८	१७	३४
२६.५०	११	चंद्र	१३	३८	पू.भा.	३३	३	व्या.	४४	४०	वि	१३	३८	१२	९	3	१८	मी. १९/०५	भ. १३/३८ तक, **देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत**, गुरु आश्ले. (४) में **(E)**	६	१६	२८	३३	६	४९	१७	३३
२६.४८	१२	मंग	७	४०	उ.भा.	२८	५८	हर्ष	३६	५८	बा	७	४०	१३	१०	4	१९	मीन	**भौम प्रदोष व्रत, तुलसी विवाह, बुध तुला में ३६/०८, शुक्र (F)**	६	१७	२८	३९	६	५०	१७	३३
२६.४५	१३	बुध	२	३	रेव	२५	१८	वज्र	२९	३८	तै	२	०३	१४	११	5	२०	मे. २५/१८	भ. ५६/५५ से, **पंचक समाप्त** २५/१८, मंगल पू.षा. में १९/५५, **(G)**	६	१८	२८	४८	६	५०	१७	३२
००.००	१४	बुध	५६	५५	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६.४०	१५	गुरु	५२	३५	अश्वि	२२	१३	सिद्धि	२२	४८	वि	२४	४५	१५	१२	6	२१	मेष	भ. २४/४५ तक, **कार्तिक पूर्णिमा स्नान**, दानादि, **श्रीगुरु नानक जयन्ती, (H)**	६	१९	२८	५५	६	५१	१७	३१

(A) ११/००, शुक्र स्वाती में २४/१३, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब), **(B)** बुध मार्गी ४५/०५ **(C)** कूष्माण्ड नवमी, आरोग्य व्रत, नवम्बर प्रारम्भ **(D)** (देखें पृष्ठ 88) **(E)** ५३/३८, चातुर्मास्य व्रत, नियमादि समाप्त **(F)** विशा. में २/०५, हरिप्रबोधोत्सव, **(G)** वैकुण्ठ चतुर्दशी **(H)** सूर्य विशा. में ३०/५५, दीपदान, भीष्मपंचक समाप्ति, कार्तिक स्नान समाप्त, त्रिपुरोत्सव, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मे. पुष्कर-तीर्थ (राज.)

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 31 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	८	५	३	६	६	५	११
१३	११	०९	२४	२६	१४	२९	२४	२४
२५	५३	१८	५९	१४	५२	४१	०९	०९
१६	१५	३६	५३	०९	२०	३३	१६	१६
59	850	44	53	6	75	6	3	3
59	43	40	27	46	13	58	10	10
स्वा. ३	श्रव. १	मूल ३	चित्रा १	अश्ले ३	स्वा. ३	विशा ३	चित्रा १	रेव ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	८	६	३	६	७	५	११
१९	०७	१३	०१	२६	२२	००	२३	२३
२५	२२	४७	४४	५२	२३	२३	५०	५०
३५	११	३४	५५	२९	४१	३९	१२	१२
60	835	45	82	5	75	7	3	3
9	28	14	17	51	15	4	11	11
स्वा. ४	अश्वि ३	पूषा १	चित्रा ३	अश्ले ४	विशा १	विशा ४	चित्रा १	रेव ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

शुक्ल प्रतिपदा (24 अक्तू.) को श्रीकृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए अन्नकूट पर्व के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग (अर्थात् अनेक प्रकार) के पकवान बनाकर गोवर्धन व श्रीकृष्ण व गौओं की पूजा की जाती है। **ता. 25 अक्तू.** को भाई–बहन के परस्पर स्नेह का प्रतीक **भ्रातृ–दूज** का पर्व मनाया जाता है। इसमें गणेश जी, शिव–पार्वती, यम, चित्रगुप्त, यमदूतों और यमुना का पूजन करने के बाद बहन अपने भाई की मंगल–कामना हेतु उसे रोली व केशर का तिलक लगाती है। भाई–बहन को श्रद्धानुसार वस्त्र, अलंकार आदि भेंट स्वरूप प्रदान करता है। **हरि प्रबोधिनी एकादशी** (3 नवं.) को भगवान् लक्ष्मी–नारायण की पूजा तथा भगवत्प्रीति के लिए पूजा–पाठ, व्रत–उपवास आदि किया जाता है। **भीष्मपंचक** 2 नवं. से प्रारम्भ होकर कार्तिक पूर्णिमा के दिन तक रहेंगे। ता. 4 नवं., मंगलवार को रेवती नक्षत्र कालीन तुलसी विवाह करवाना शुभ होगा। ता. 6 नवं. को **कार्तिक पूर्णिमा** का व्रत, दान, पुण्यादि होगा। इसी दिन भीष्मपंचकों की समाप्ति होगी तथा इसी दिन **श्रीगुरुनानक जयन्ती** का पुण्य पर्व होगा। **लोक–भविष्य**–2 नवं. को **शनि** शीघ्र गति से **वृश्चिक राशि** में आएगा। फलस्वरूप पृथ्वी पर भूकम्प तथा दुःख होंगे। राजा, नेता लोग क्रोधित रहें एवं विपक्ष के साथ उनका टकराव बढ़ेगा। एक वर्ष के भीतर इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली शहर में उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अग्निकाण्ड तथा व्यापक जन–धन हानि होगी। **यदावृश्चिकगः सौरिर्मेदिनी दुःखसंयुता। वर्षमात्रमथोर्ध्वमिंद्रप्रस्थो विनश्यति।।** राजनेताओं में परस्पर वैर, विरोध एवं टकराव पैदा हो। केन्द्र में राजनैतिक संकट पैदा होने की सम्भावना के संकेत मिलते हैं।

शकुन विचार–मंगल आगे और सूर्य पीछे चल रहा है। फलस्वरूप वर्षा रुक–रुक कर ओस के समान होगी। (**आगे मंगल पीछे भान। वर्षा होवे ओस समान।।**)

वि. संवत् २०७१, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष														शाकः १९३६ तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014 ई. (ता. 7 नवं. से 22 नवंबर तक) हिजरी सन् 1436 सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतुः	भा.स्टैं.टा. जालन्धर							
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	क्रांति शक	मुहर्रम	नवंबर	कार्तिक प्र.		प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, ता. 15 नवं. से पूर्व में अस्त होगा। गु. याम्योत्तर से कुछ पश्चिम की ओर दिखाई देगा। सायं मं. पश्चिमकपाल में दृश्य होगा। शु.–श. अभी अस्त है।	दै. सा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.३५	१	शुक्र	४१	१८	भर	२०	३	व्य.	१६	४३	बा	२०	५७	१६	१३	7	२२	वृ. ३४/४०	मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ, पद्मक योग 14घं. 53मिं. से अगले दिन	६	२०	२९	०६	६	५२	१७	३०
२६.३३	२	शनि	४७	२३	कृति	१९	३	वरी	११	३३	तै	१८	२१	१७	१४	8	२३	वृष	पद्मक योग 14घं.–30मिं. तक (पुष्कर-तीर्थ स्नान माहात्म्य)	६	२१	२९	२०	६	५३	१७	३०
२६.२८	३	रवि	४६	५८	रोहि	१९	३०	परि	७	३०	व	१७	११	१८	१५	9	२४	मि. ५०/१८	भ. १७/११ से ४६/५८ तक, बुध स्वाती में २४/००, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	६	२२	२९	३३	६	५४	१७	२९
२६.२३	४	चंद्र	४८	१५	मृग	२१	३०	शिव	४	४३	बव	१७	३७	१९	१६	10	२५	मिथुन	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12-13), स. सि. योगः	६	२३	२९	४७	६	५५	१७	२८
२६.२३	५	मंग	५१	१५	आर्द्रा	२५	१३	सिद्ध	३	१५	कौ	१९	४५	२०	१७	11	२६	मिथुन		६	२४	३०	०६	६	५५	१७	२८
२६.१८	६	बुध	५५	४५	पुन	३०	२३	साध्य	३	००	गर	२३	३०	२१	१८	12	२७	क. १३/५५	भ. ५५/४५ से, शुक्र वृश्चिक में ०/१५,	६	२५	३०	२७	६	५६	१७	२७
२६.१३	७	गुरु	६०	००	पुष्य	३६	५०	शुभ	३	५३	वि	२८	३४	२२	१९	13	२८	कर्क	भ. २८/३४ तक, गुरु पुष्य योग	६	२६	२८	४७	६	५७	१७	२६
२६.१०	७	शुक्र	१	२३	श्ले.	४४	८	शुक्ल	५	३५	बव	१	२३	२३	२०	14	२९	सिं. ४४/०८	श्रीकाल-भैरवाष्टमी, शुक्र अनुराधा में ३९/३५, नेहरू-जयन्ती (बाल दिवस)	६	२७	३१	१५	६	५८	१७	२६
२६.०५	८	शनि	७	४०	मघा	५१	३८	ब्रह्म	७	४५	कौ	७	४०	२४	२१	15	३०	सिंह	राहु हस्त (४) केतु रेव. (२) में २६/१०, बुध पूर्व में अस्त २७/२०	६	२८	३१	४४	६	५९	१७	२५
२६.०३	९	रवि	१४	३	पू.फा.	५८	४८	ऐंद्र	९	५८	गर	१४	०३	२५	२२	16	मा.	सिंह	भ. ४६/५७ से, सूर्य वृश्चिक में २७/३०, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, (A)	६	२९	३२	१२	७	००	१७	२५
२५.५८	१०	चंद्र	१९	५०	उ.फा.	६०	००	वैधृ	११	४३	वि	१९	५०	२६	२३	17	२	कं. १५/२५	भ. १९/५० तक, बुध विशाखा में ५९/३०,	७	००	३२	४३	७	०१	१७	२४
२५.५५	११	मंग	२४	३०	उ.फा.	५	००	विष्क	१२	४३	बा	२४	३०	२७	२४	18	३	कन्या	उत्पन्ना एकादशी व्रत	७	०१	३३	१४	७	०२	१७	२४
२५.५३	१२	बुध	२७	४५	हस्त	१०	००	प्रीति	१२	४०	तै	२७	४५	२८	२५	19	४	तु. ४१/५३	सूर्य अनु. में ४५/४३, स. सि. योगः 11/02 तक	७	०२	३३	५०	७	०२	१७	२३
२५.५०	१३	गुरु	२९	१५	चित्रा	१३	२३	आयु	११	२०	व	२९	१५	२९	२६	20	५	तुला	भ. २९/१५ से ५९/१० तक, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत,	७	०३	३४	२६	७	०३	१७	२३
२५.४८	१४	शुक्र	२९	५	स्वा.	१५	५	सौभा	८	४३	शकु	२९	०५	३०	२७	21	६	तुला	श्रीबालाजी जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका-स्नान (का.)	७	०४	३५	०२	७	०४	१७	२३
२५.४३	३०	शनि	२७	२३	विशा	१५	१५	शोभ / अति	४ / ५१	४८ / ५०	ना	२७	२३	मा.	२८	22	७	वृ. ०/२०	मार्गशीर्ष (शनिवारी) अमावस, मंगल उ.षा. में ५४/१५, सूर्य (B)	७	०५	३५	४१	७	०५	१७	२२

(A) मु. ३० पुण्यकाल सं. दोपहर 11घं.–36मिं. से (B) सायन धनु में २०/०८, शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	४	८	६	३	७	७	५	११
२८	०२	२०	१५	२७	०३	०१	२३	२३
२८	२४	३५	१०	३९	४१	२७	२१	२१
०४	५९	१२	२७	२२	०३	३९	३५	३५
60	710	45	94	4	75	7	3	3
26	33	34	28	21	16	8	11	11
विशा	मघा	पूषा	स्वा.	अश्ले	अनु.	विशा	चित्रा	रेव
३	१	३	३	४	१	४	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	अ

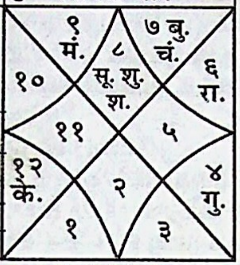
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	८	६	३	७	७	५	११
०५	२९	२५	२६	२८	१२	०२	२२	२२
३१	०२	५५	१५	०६	२८	१७	५९	५९
४५	३९	२६	५९	१६	१०	४१	१९	१९
60	809	45	95	3	75	7	3	3
37	52	57	18	7	19	9	11	11
अनु.	विशा	पूषा	विशा	अश्ले	अनु.	विशा	हस्त	रेव
१	३	४	२	४	३	४	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी को शिव मन्दिर में जाकर श्रीमहाकाल भैरव के रूप में भगवान् शंकर की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। **उत्पन्ना एकादशी** (18 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्व प्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या तक जम्मू के निकट **मेला पुरमण्डल** तथा **देविका स्नान, कुरुक्षेत्र में** पुण्य पर्व मनाया जाता है। **शनिवार को मार्गशीर्ष अमावस** होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जप-पाठादि का विशेष माहात्म्य होगा। **संक्रान्ति फल**–ता. 16 नवं., **रविवार को 30 मुहूर्त्ति है। वारानुसार घोरा तथा** नक्षत्रानुसार उग्र **नामक संक्रान्ति** नीच एवं दुष्टों को लाभप्रदायक होगी। **मार्ग. संक्रां.** रविवार को पू.फा. नक्षत्र में घटित होने से सभी प्रकार के अनाज तथा सभी करियाना वस्तुएं, दुग्ध पदार्थ तेज़ भाव होंगे। धातुएँ तथा दैनिक उपभोग की वस्तुओं में ज़बरदस्त तेज़ी होने से सामान्य लोगों में भय, पीड़ा एवं असुरक्षा की भावना होगी। **लोक भविष्य**–मार्गशीर्ष मास में **पांच शुक्र एवं पांच शनिवार** होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। आगामी अनाजादि की फसलें अच्छी होंगी। कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-साधनों की वृद्धि होगी। अधिकांश लोग भोग विलासादि कार्यों में प्रवृत्त होंगे। जनसंख्या में वृद्धि होगी। **पाँच शनिवारों** के कारण जनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में आशातीत महंगाई, देश में कहीं दुर्भिक्ष, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय, कहीं **छत्रभंग (शासन-परिवर्तन)** हो–**शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः। ईशान देशभंगश्च वह्णि दाहो महर्घता।। संक्रान्ति राशिफल**–कर्क, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ राशि वालों के लिए लाभप्रदय रहेगी। मार्गशीर्ष की **अमावस शनिवार** को पड़ने से भारत के कुछ क्षेत्रों में दुर्भिक्ष, आवश्यक वस्तुओं की कमी और अत्यधिक महँगाई का सामना करना पड़ेगा। लोगों में आपसी भाईचारे एवं प्रेम भाव की कमी होगी।–**दुर्भिक्षं रौरवं घोरं महादुखं महद्भयम्। पराङ्ग मुखाः पितुः पुत्रा व्यसनं शनिवासरे।। आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्ध भाग में पश्चिमोत्तर कुछ क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा के योग होंगे।

वि. संवत् २०७१, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९३६ — सन् 2014 ई. (ता. 23 नवं. से 6 दिसं. तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः गु. याम्योत्तवृत्त से पश्चिम में, 5 दिसं. से शनि पूर्व में दिखेगा। सायं मं. पश्चिमकपाल में, 27 नवं. से शु. भी पश्चिमक्षितिज में दृश्य होगा। बुध अभी अस्त है।

शुक्र–उदय 27 नवं.

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	मार्ग शक	मु. मु.	नवंबर	मार्गशीर्ष	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.४०	१	रवि	२४	२०	अनु.	१४	५	सुक	५३	५३	बव	२४	२०	२	२९	23	८	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारंभ, चन्द्रदर्शन, १५ मु.	७	०६	३६	२१	७	०६	१७	२२
२५.३८	२	चंद्र	२०	१५	ज्ये.	११	५०	धृति	४७	१०	कौ	२०	१५	३	सफ	24	९	ध. ११/५०	**बुध वृश्चिक में** १७/०५, सफर (मु.) मास प्रारम्भ,	७	०७	३७	०२	७	०७	१७	२२
२५.३३	३	मंग	१५	२३	मूल	८	४८	शूल	४०	००	गर	१५	२३	४	२	25	१०	धनु	भ. ४२/४३ से, शुक्र ज्येष्ठा में १६/३३,	७	०८	३७	४७	७	०८	१७	२१
२५.३०	४	बुध	१०	३	पू.षा.	५	१३	गंड	३२	३३	वि	१०	०३	५	३	26	११	म. १९/१८	भ. १०/०३ तक, बुध अनुराधा में २३/१५,	७	०९	३८	३३	७	०९	१७	२१
२५.३०	५	गुरु	४	३५	उ.षा. श्रव.	१ ५७	२८ ४३	वृद्धि	२५	३	बा	४	३५	६	४	27	१२	मकर	श्रीराम विवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, **मंगल मकर में** १४/३०, **(A)**	७	१०	३९	१८	७	०९	१७	२१
अवम्	६	गुरु	५९	५	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.२८	७	शुक्र	५३	४०	धनि	५४	५	ध्रुव	१७	३३	गर	२६	२३	७	५	28	१३	कुं. २५/५०	भ. ५३/४० से, **पंचक प्रारम्भ** २५/५०, मित्र (विष्णु) सप्तमी	७	११	४०	०६	७	१०	१७	२१
२५.२५	८	शनि	४८	३५	शत	५०	४३	व्या.	१०	१३	वि	२१	०८	८	६	29	१४	कुम्भ	भ. २१/०८ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी**	७	१२	४०	५१	७	११	१७	२१
२५.२०	९	रवि	४३	४८	पू.भा.	४७	४०	हर्ष वज्र	३ ५६	८ २०	बा	१६	१२	९	७	30	१५	मी. ३३/२३	शनि अनु. (१) में ४१/२०, श्रीनन्दा नवमी	७	१३	४१	३९	७	१२	१७	२०
२५.१८	१०	चंद्र	३९	२८	उ.भा.	४५	३	सिद्धि	४९	५३	तै	११	३८	१०	८	दिसं	१६	मीन	**दिसम्बर, सं. 2014 ई. प्रारम्भ**	७	१४	४२	२९	७	१३	१७	२०
२५.१८	११	मंग	३५	३५	रेव	४२	५५	व्य.	४३	४८	व	७	३२	११	९	2	१७	मे. ४२/५५	भ. ७/३२ से ३५/३५ तक, **पंचक समाप्त** ४२/५५, **मोक्षदा एकादशी (B)**	७	१५	४३	१९	७	१३	१७	२०
२५.१५	१२	बुध	३२	१५	अश्वि	४१	१८	वरी	३८	८	बव	३	५५	१२	१०	3	१८	मेष	**अखण्ड द्वादशी**, गण्डमूल 23घं.–45मिं. तक	७	१६	४४	०७	७	१४	१७	२०
२५.१३	१३	गुरु	२९	३३	भर	४०	१८	परि	३३	००	कौ	०	५४	१३	११	4	१९	वृ. ५५/१०	प्रदोष व्रत, बुध ज्ये, में ५०/४०, **अनङ्ग त्रयोदशी व्रत**	७	१७	४५	००	७	१५	१७	२०
२५.१०	१४	शुक्र	२७	३८	कृति	४०	८	शिव	२८	२८	व	२७	३८	१४	१२	5	२०	वृष	भ. २७/३८ से ५७/०९ तक, **शुक्र मूल (१) धनु में** ५३/३५, **(C)**	७	१८	४५	५१	७	१६	१७	२०
२५.०८	१५	शनि	२६	४०	रोहि	४०	५५	सिद्ध	२४	४३	बव	२६	४०	१५	१३	6	२१	वृष	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, स्नान दानादि, त्रिपुरभैरव जयन्ती, स. सि. योगः	७	१९	४६	४४	७	१७	१७	२०

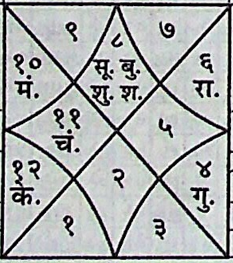
(A) शुक्र पश्चिम में उदय १५/४०, नाग-पंचमी, स्कन्द (गुह) षष्ठी, चम्पा षष्ठी **(B) एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती, सूर्य ज्येष्ठा में ५५/५८**, गण्डमूल विचार

(C) शनि पूर्व में उदय ४/५३, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिवचतुर्दशी व्रत, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (देखें पृष्ठ 88), श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 88)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 नवंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	९	७	३	७	७	५	११
१२	०७	०१	०७	२८	२१	०३	२२	२२
३६	०५	१८	२१	२४	१५	०७	३७	३७
३७	०५	०४	११	११	२३	३२	०४	०४
60 46	846 47	46 16	94 38	1 49	75 18	7 5	3 11	3 11
अनु. ३	शत. १	उषा. २	अनु. २	आश्ले. ४	ज्ये. २	विशा. ४	हस्त ४	रेव. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ

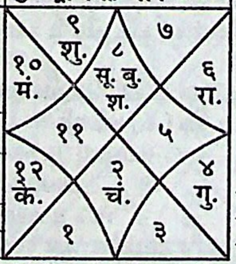
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	९	७	३	८	७	५	११
१९	१३	०६	१८	२८	००	०३	२२	२२
४२	२४	४२	२१	३२	०२	५६	१४	१४
१८	५२	३७	५९	४९	३१	४८	४९	४९
60 53	785 28	46 29	94 12	0 27	75 17	6 57	3 11	3 11
ज्ये. १	रोहि. २	उषा. ४	ज्ये. १	आश्ले. ४	मूल १	अनु. १	हस्त ४	रेव. २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र अथवा चांदी की मूर्त्ति को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति पूजन, मातृका पूजन एवं पंच/दश उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त, लक्ष्मीसूक्त का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 2 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा **भगवान् विष्णु** की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसी दिन **श्रीगीता जयन्ती** के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा–स्तुति करके **श्रीमद्भगवद्गीता** का पाठ एवं अध्ययन करना चाहिए। इसीदिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। ता. 5 दिसं. को **प्रदोष व्यापिनी** पूर्णिमा के दिन ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। प्रदोष काल पूर्णिमा (श्रीसत्यनारायण) का व्रत भी इसी दिन रखना प्रशस्त होगा। क्योंकि इसदिन पूर्णिमा अधिक समय (1घं.–48मिं.) तक प्रदोष व्यापिनी है। **व्यापारिक रूख**–27 नवं. से **शुक्र पश्चिम से उदय तथा मंगल अतिचार गति** से मकर राशि (उच्च) में आकर गुरु के साथ योग तथा शनि की दृष्टि में आ रहा है। **फलस्वरूप** सोना, चांदी, गुड़, सरसों, रूई, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, घृत, तैल, अलसी व ऊन व सर्व प्रकार के अनाज व दालें तेज भाव होंगी। गाय, भैंस, घोड़े, बैल आदि चौपाय व पशुचारा भी तेज़ भाव होंगे। **लोक भविष्य**–इस पक्ष में **गुरू-मंगल** का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध होने से केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल की स्थिति धीरे-धीरे स्थिरता की ओर बढ़ने लगेगी। **मार्गशीर्ष मास** में 5 शनिवार होने से देश में अनेक स्थलों पर विचित्र रोगोत्पति, उपद्रव, जातीय एवं साम्प्रदायिक दंगे एवं हिंसक घटनाएँ अधिक होंगी। युद्ध के बादल मण्डराने लगते हैं। दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में खास वृद्धि होती है-**शनिवारा यदा पँच जायन्ते सततम्। महार्घ जायते धान्यं रोकशोकाकुला पृथिवी।।**

आकाश लक्षण–पक्ष के उत्तरार्ध में हि.प्र., पंजाब, जम्मू-कश्मीर, उ.प्र. के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७१, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९३६

सन् 2014 ई. (ता. 7 दिसंबर से 21 दिसंबर तक) हिजरी सन् 1436 — भा.स्टैं.टा. — **जालन्धर**

सूर्य दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त–शिशिर ऋतुः

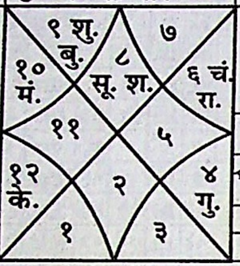
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	मार्ग. शक	सफर मु.	दिसंबर	मार्गशीर्ष	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	ग्रह दर्शन–प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर तथा श. पूर्वक्षितिज में होगा। सायं मं. पश्चिमकपाल में तथा शु पश्चिमक्षितिज में दिखाई देगा। बु. अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.०८	१	रवि	२६	५५	मृग	४२	५५	साध्य	२१	५३	कौ	२६	५५	१६	१४	7	२२	मि. ११/४५	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,	७	२०	४७	४०	७	१७	१७	२०
२५.०५	२	चंद्र	२८	२५	आर्द्रा	४६	१०	शुभ	२०	००	गर	२८	२५	१७	१५	8	२३	मिथुन	**गुरु वक्री होगा** ४७/१० (26घं.–10मिं.), भद्रा ५९/५४ से प्रा.	७	२१	४८	३६	७	१८	१७	२०
२५.०५	३	मंग	३१	२३	पुन	५०	४८	शुक्ल	१९	२०	वि	३१	२३	१८	१६	9	२४	क. ३४/३०	भ. ३१/२३ तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12–13)	७	२२	४९	३३	७	१९	१७	२१
२५.०३	४	बुध	३५	४३	पुष्य	५६	४३	ब्रह्म	१९	२५	बव	३	३३	१९	१७	10	२५	कर्क	मंगल श्रवण में ९/५५,	७	२३	५०	३२	७	२०	१७	२१
२५.०३	५	गुरु	४१	१५	श्ले.	६०	००	ऐन्द्र	२०	४०	कौ	८	२९	२०	१८	11	२६	कर्क	गण्डमूल विचार	७	२४	५१	३१	७	२०	१७	२१
२५.०१	६	शुक्र	४७	३५	श्ले.	३	३८	वैधृ	२२	३५	गर	१४	२५	२१	१९	12	२७	सिं. ३/३८	भ. ४७/३५ से, गण्डमूल	७	२५	५२	३२	७	२१	१७	२१
२५.००	७	शनि	५४	१३	मघा	११	१०	विष्क	२४	५०	वि	२०	५४	२२	२०	13	२८	सिंह	भ. २०/५४ तक, **बुध मूल (१) धनु. में १९/३०**, गण्डमूल 11घं.–50मिं. तक	७	२६	५३	३२	७	२२	१७	२२
२४.५९	८	रवि	६०	००	पू.फा.	१८	५०	प्रीति	२७	५	बा	२७	२१	२३	२१	14	२९	कं. ३५/४०	**रूक्मणी अष्टमी**, अष्टका श्राद्ध, स. सि. यो. 14/54 प्रारंभ	७	२७	५४	३४	७	२२	१७	२२
२४.५८	८	चंद्र	०	२८	उ.फा.	२५	५०	आयु	२८	४५	कौ	०	२८	२४	२२	15	३०	कन्या		७	२८	५५	३८	७	२३	१७	२२
२५.५५	९	मंग	५	४३	हस्त	३१	४०	सौभा	२९	३०	गर	५	४३	२५	२३	16	पौ.	कन्या	भ. ३७/३४ से, **सूर्य मूल (१) धनु. में ३/१५ (8/42 घं.मिं.) (A)**	७	२९	५६	४०	७	२४	१७	२२
२४.५८	१०	बुध	९	२५	चित्रा	३५	५३	शोभ	२९	००	वि	९	२५	२६	२४	17	२	तु. ४/००	भ. ९/२५ तक, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	८	००	५७	४५	७	२४	१७	२३
२४.५५	११	गुरु	११	१०	स्वा.	३८	१०	अति	२६	५५	बा	११	१०	२७	२५	18	३	तुला	**सफला एकादशी व्रत**	८	०१	५८	५०	७	२५	१७	२३
२४.५८	१२	शुक्र	१०	५३	विशा	३८	२८	सुक	२३	१८	तै	१०	५३	२८	२६	19	४	वृ. २३/३५	श्रीबोधनाचार्य जयन्ती, प्रदोष व्रत,	८	०२	५९	५८	७	२५	१७	२४
२४.५५	१३	शनि	८	३५	अनु	३६	५५	धृति	१८	८	व	८	३५	२९	२७	20	५	वृश्चिक	भ. ८/३५ से ३६/३४ तक, **मासशिवरात्रि व्रत**, गण्डमूल 22घं.–12मिं. से	८	०४	०१	०५	७	२६	१७	२४
२४.५५	१४	रवि	४	३३	ज्ये.	३३	४५	शूल	११	३५	शकु	४	३३	३०	२८	21	६	ध. ३३/४५	**पौष अमावस** स्नानदान, तर्पणादि (प्रातः 9घं.–16मिं. बाद), **(B)**	८	०५	०२	१२	७	२७	१७	२५
००.००	३०	रवि	५९	८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	**अमावस तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) पौष संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. दोपहर 15घं.–06मिं. तक, **(B)** बुध पू.षा. में ४४/२८, सूर्य सायन मकर में ५२/४८, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ,

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 15 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	९	८	३	८	७	५	११
२८	०३	१३	०२	२८	११	०४	२१	२१
५०	५४	४२	३१	२९	२०	५८	४६	४६
५१	२१	०३	०४	५३	०६	३६	१२	१२
61 2	721 18	46 44	94 44	1 19	75 17	6 44	3 11	3 11
ज्ये. ४	उफा. ३	श्रव. २	मूल १	अश्ले. ४	मूल ४	अनु. १	हस्त ४	रेव. २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

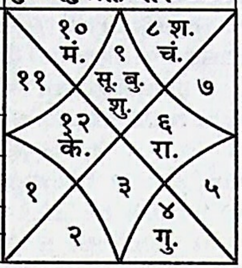
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	९	८	३	८	७	५	११
०४	२०	१८	१२	२८	१८	०५	२१	२१
५७	५४	२२	०१	१९	५१	३८	२७	२७
१८	४५	४९	२५	०४	४६	३०	०७	०७
61 7	850 27	46 52	95 33	2 29	75 17	6 31	3 10	3 10
मूल २	ज्ये. २	श्रव. ३	मूल ४	अश्ले. ४	पूषा २	अनु. १	हस्त ४	रेव. २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5.30



पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूं, धान्यादि अनाज, कम्बलादि गर्म वस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **पौष संक्रान्ति** (16 दिसं.) को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश-गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोग की शान्ति होती है। 18 दिसं. को **सफला एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्व प्रकार के पापों का क्षय होता है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा एवं स्तोत्र पाठ करना चाहिए। **लोक भविष्य–पौष संक्रान्ति** (16 दिसं.) मंगलवार को ३० मुहूर्त्ति होगी। वारानुसार यह संक्रान्ति महोदरी नाम की चोरों एवं भ्रष्ट लोगों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। परन्तु हस्त नक्षत्रानुसार ध्वाँक्षी नाम की वैश्यों को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। संक्रान्ति के स्नान, दानादि का पुण्यकाल सूर्योदय से लेकर दुपै. 15-06 बजे तक रहेगा। मंगलवार के दिन संक्रान्ति होने का फल शुभ नहीं माना गया है। प्रायः तिल, तैल, घी, गुड़, शक्कर, ईख, वनस्पति, दूधादि पेय पदार्थ, रसादि तथा सर्व प्रकार के धान्य व लाल वर्ण की वस्तुएं (घी, तैल, खल-बिनौले आदि)एवं पंसारियों से सम्बन्धित वस्तुएँ तेज भाव होंगी। महँगाई के कारण लोगों में विक्षोभ, पीड़ा व असंतोष बढ़ेगा। **भौमस्यवारे यदि संक्रमश्चकरोति-पृथ्व्यामसुखं महर्घता। क्षारं रसं तैल संयुक्तं कर्पूरकस्यै व महर्घता च।।** पौष मास में ही पाँच रविवार आने से देश में कहीं अनाज की कमी, दुर्भिक्ष का भय, छत्रभंग (सत्ता परिवर्तन), राजनीतिक संकट, उपद्रव, अग्निकाण्ड आदि हिंसक घटनाओं का भय होगा। देश में अत्यधिक महँगाई, कहीं अनाज की कमी, दुर्भिक्ष अथवा अकाल जैसी स्थिति बनेगी। सामान्य लोगों में भय का वातावरण हो–**यत्रमासे रविवाराः जायन्ते पंच सततम्। दुर्भिक्षं छत्रभङ्ग स्यात् दास्ते च महद्भयम्।।** **अकाश लक्षण**–भारत के उत्तर/पश्चिमी भागों तथा पहाड़ी क्षेत्रों में रुक-रुक कर खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७१, पौष शुक्ल पक्ष शाक: १९३६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	सन् 2014-15 ई. (ता. 22 दिसं., 14 से 5 जन., 2015 ई. तक) हिजरी सन् 1436 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	शक पौष	सफर मु.	दिसंबर	पौष प्रवि.		ग्रह दर्शन–प्रातः गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम, श. पूर्व क्षितिज में दिखाई देगा। सायं मं. पश्चिमकपाल में, शु. पश्चिमक्षितिज में, 31 दिसं. से बु. भी पश्चिम में दिखाई देगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२४.५५	१	चंद्र	५२	४०	मूल	२९	२८	गंड वृद्धि	४ ५५	०० ३८	किं	२५	५४	१	२९	22	७	धनु	**पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, शक पौष प्रारम्भ, गण्डमूल 19[घं.]–14[मिं.] तक	८	०६	०३	२२	७	२७	१७	२५
२४.५५	२	मंग	४५	३३	पू.षा.	२४	२०	ध्रुव	४६	४३	बा	१९	७	२	३०	23	८	म. ३८/००	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, आरोग्य व्रत	८	०७	०४	३०	७	२८	१७	२६
२४.५६	३	बुध	३८	१८	उ.षा.	१८	५३	व्या.	३७	४३	तै	११	५६	३	रबि	24	९	मकर	रबि–उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गौरी पूजन	८	०८	०५	३८	७	२८	१७	२६
२४.५६	४	गुरु	३१	८	श्रव	१३	२५	हर्ष	२८	४५	व	४	४३	४	२	25	१०	कुं. ४०/५०	भ. ४/४३ से ३१/०८ तक, **पंचक प्रारम्भ ४०/५०, क्रिसमिस डे** (क्रिश्चि.)	८	०९	०६	४६	७	२९	१७	२७
२४.५७	५	शुक्र	२४	३०	धनि	८	२३	वज्र	२०	१३	बा	२४	३०	५	३	26	११	कुम्भ		८	१०	०७	५७	७	२९	१७	२७
२४.५८	६	शनि	१८	३३	शत.	३	५८	सिद्धि	१२	१५	तै	१८	३३	६	४	27	१२	मी. ४६/१३	मंगल धनि. में १५/१०, शुक्र उ.षा. में ८/२३,	८	११	०९	०५	७	२९	१७	२८
२४.५८	७	रवि	१३	२८	पू.भा. उ.भा.	० ५७	२३ ४५	व्य. वरी	४ ५८	५८ २८	व	१३	२८	७	५	28	१३	मीन	भ. १३/२८ से ४१/२७ तक, मार्तण्ड सप्तमी, **गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती**+	८	१२	१०	१७	७	३०	१७	२९
२४.५८	८	चंद्र	९	२५	रेव	५६	५	परि	५२	४५	बव	९	२५	८	६	29	१४	मे. ५६/०५	**पंचक समाप्त ५६/०५, श्रीदुर्गाष्टमी, शुक्र मकर में ४७/५० (A)**	८	१३	११	२५	७	३०	१७	२९
२४.५९	९	मंग	६	१८	अश्वि	५५	२३	शिव	४७	४८	कौ	६	१८	९	७	30	१५	मेष	बुध उ.षा. में ४/५३, गण्डमूल 29[घं.]–39[मिं.] तक, स. सि. योगः	८	१४	१२	३४	७	३०	१७	३०
२५.००	१०	बुध	४	८	भर	५५	३०	सिद्ध	४३	३३	गर	४	८	१०	८	31	१६	मेष	भ. ३३/३२ से, बुध पश्चिम में उदय १०/१८,	८	१५	१३	४५	७	३१	१७	३१
२५.०१	११	गुरु	२	५५	कृति	५६	३३	साध्य	४०	००	वि	२	५५	११	९	जन.	१७	वृ. १०/४०	भ. २/५५ तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत, बुध मकर में १०/३३, (B)**	८	१६	१४	५३	७	३१	१७	३१
२५.०३	१२	शुक्र	२	३५	रोहि	५८	२८	शुभ	३७	१०	बा	२	३५	१२	१०	2	१८	वृष	प्रदोष व्रत,	८	१७	१६	०४	७	३१	१७	३२
२५.०५	१३	शनि	३	१०	मृग	६०	००	शुक्ल	३५	००	तै	३	१०	१३	११	3	१९	मि. २९/४५	+स. सि. यो. 7/39 से	८	१८	१७	१२	७	३१	१७	३३
२५.०५	१४	रवि	४	४०	मृग	१	१५	ब्रह्म	३३	३८	व	४	४०	१४	१२	4	२०	मिथुन	भ. ४/४० से ३५/५४ तक, **मंगल कुम्भ में ४६/०८ (25/58 घं. मिं.) (C)**	८	१९	१८	२०	७	३१	१७	३३
२५.०५	१५	चंद्र	७	८	आर्द्रा	५	००	ऐन्द्र	३२	५८	बव	७	०८	१५	१३	5	२१	क. ५३/३०	**पौष पूर्णिमा, माघ स्नान प्रारम्भ,**	८	२०	१९	२८	७	३२	१७	३४

(A) (26/38 घं. मिं.), सूर्य पू.षा. में ८/२३, गण्डमूल 6[घं.]–36[मिं.] से, **(B)** (11/44 घं. मिं.), जनवरी, सन् 2015 ई. प्रारम्भ **(C)** श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीशाकम्भरी जयन्ती, ईशान व्रत

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	९	८	३	८	७	५	११
१३	१६	२४	२४	२७	२८	०६	२१	२१
०६	०२	३८	४८	५३	५३	२९	०१	०१
२३	२१	०८	२१	५३	४५	३२	४१	४१
61 9	823 11	46 58	95 53	3 58	75 12	6 11	3 11	3 11
मूल ४	उ.षा ४	धनि १	पू.षा ४	आश्ले ४	उ.षा १	अनु १	हस्त ४	रेव २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 जन. (2015 ई.)

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	१०	९	३	९	७	५	११
२०	१७	००	०५	२७	०७	०७	२०	२०
१४	५४	०६	५१	२२	३९	११	३९	३९
२०	३७	५५	३६	२७	५५	४३	२५	२५
61 8	743 8	46 58	91 50	5 9	75 7	5 49	3 11	3 11
पू.षा ३	आर्द्रा ४	धनि. ३	उ.षा ३	आश्ले ४	उ.षा ४	अनु. २	हस्त ४	रेव २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5.30



पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सीगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करें। स्वयं भूमि पर शयन करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। ता. 25 दिसं. को क्रिसमिस दिवस (क्रिश्चियन) समस्त विश्व में बड़े हर्ष उल्लास से मनाया जाएगा। सप्तमी तिथि (28 दिसं.), रविवार को गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्मदिन समस्त भारत में बड़ी श्रद्धा से मनाया जाएगा। ता. 1 जन. को पुत्रदा एकादशी का व्रत रखकर भगवान् श्रीकृष्ण–राधा का पूजन, मन्त्र–जप एवं सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करके दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन कराने से मनोवांछित पुत्र की प्राप्ति होती है। पौष पूर्णिमा (5 जन.) से माघस्नान का प्रारम्भ होगा। इन दिनों हरिद्वार, प्रयाग, काशी आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जपादि करने का विशेष माहात्म्य होता है। **व्यापारिक रुख**–31 जन. को बुध पश्चिम में उदय होकर ता. **1 जन. को मकर राशि में आकर** मंगल, शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि रहेगी। फलस्वरूप सोना, चाँदी, रुई, ग्वार, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बनेगी। अनाजों के भाव सम रहेंगे। ता. 4 जन. को मंगल कुम्भ राशि में आएगा। सोना, गुड़, खाण्ड, चीनी, तेल, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। **आकाश लक्षण**–उत्तर-पश्चिम भारत में शीत लहर एवं बादल चाल रहे। कहीं-कहीं खण्ड वर्षा और बर्फबारी होने के भी योग हैं। **शकुन**–पौ. शु. ९ या ११ को बादल चाल हो, तो सब धान्य महँगे होंगे।

वि. संवत् २०७१, माघ कृष्ण पक्ष शाक: १९३६

सन् 2015 ई. (ता. 6 जनवरी से 20 जनवरी तक) हिजरी सन् 1436

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रातः श. पूर्वक्षितिज के पास, गुरु पश्चिम में होगा। सायंकाल मं. पश्चिमक्षितिज के पास, बु.-शु. भी पश्चिमक्षितिज में पास-पास होंगे।

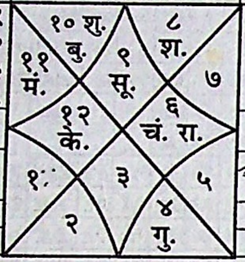
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें पौष शक	रबि उल्ला	जनवरी	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.०८	१	मंग	१०	४३	पुन	९	४८	वैधृ	३३	१०	कौ	१०	४३	१६	१४	6	२२	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रवण में ४६/४८,	८	२१	२०	३६	७	३२	१७	३५
२५.१०	२	बुध	१५	२३	पुष्य	१५	३८	विष्क	३४	१०	गर	१५	२३	१७	१५	7	२३	कर्क	भ. ४८/१३ से, बुध श्रवण में ३९/३५,	८	२२	२१	४३	७	३२	१७	३६
२५.१३	३	गुरु	२१	३	श्ले.	२२	२३	प्रीति	३५	५३	वि	२१	०३	१८	१६	8	२४	सिं. २२/२३	भ. २१/०३ तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12-13), **(A)**	८	२३	२२	५१	७	३२	१७	३७
२५.१३	४	शुक्र	२७	३०	मघा	२९	५३	आयु	३८	५	बा	२७	३०	१९	१७	9	२५	सिंह		८	२४	२३	५९	७	३२	१७	३७
२५.१५	५	शनि	३४	२०	पू.फा.	३७	४३	सौभा	४०	३३	कौ	०	५५	२०	१८	10	२६	कं. ५४/४०		८	२५	२५	०६	७	३२	१७	३८
२५.१८	६	रवि	४१	००	उ.फा.	४५	२३	शोभ	४२	५३	गर	७	४०	२१	१९	11	२७	कन्या	भ. ४१/०० से, सूर्य उ.षा. में १३/३०, स. सि. योग:	८	२६	२६	१४	७	३२	१७	३९
२५.२०	७	चंद्र	४६	५३	हस्त	५२	१८	अति	४४	३५	वि	१३	५७	२२	२०	12	२८	कन्या	भ. १३/५७ तक, वक्री गुरु आश्ले (३) में २५/२३, **(B)**	८	२७	२७	२२	७	३२	१७	४०
२५.२३	८	मंग	५२	२५	चित्रा	५७	५०	सुक	४५	१८	बा	१९	०९	२३	२१	13	२९	तु. २५/१५	मंगल शत. में १७/०५, **लोहड़ी पर्व** (पं., हि.प्र., हरि., दिल्ली)	८	२८	२८	२९	७	३२	१७	४१
२५.२५	९	बुध	५४	५	स्वा.	६०	००	धृति	४४	३८	तै	२२	४५	२४	२२	14	मा	तुला	**सूर्य मकर में २९/४५, मकर (माघ) संक्रान्ति, मु. १५, पुण्यकाल (C)**	८	२९	२९	३४	७	३२	१७	४२
२५.३०	१०	गुरु	५४	३८	स्वा.	१	३५	शूल	४२	२३	व	२४	२२	२५	२३	15	२	वृ. ४८/०३	भ. २४/२२ से ५४/३८ तक,	९	००	३०	४१	७	३१	१७	४३
२५.३३	११	शुक्र	५२	५३	विशा	३	१५	गंड	३८	२३	बव	२३	४६	२६	२४	16	३	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत**, स. सि. योग 8/49 से प्रा.	९	०१	३१	४९	७	३१	१७	४४
२५.३३	१२	शनि	४९	३	अनु.	२	४३	वृद्धि	३२	४०	कौ	२०	५८	२७	२५	17	४	वृश्चिक	तिल द्वादशी, शुक्र धनि. में २६/३५, राहु हस्त (३), केतु रेव. (१) में १९/००	९	०२	३२	५६	७	३१	१७	४४
२५.३५	१३	रवि	४३	२०	ज्ये. मूल	० ५५	१० ५३	ध्रुव	२५	२५	गर	१६	१२	२८	२६	18	५	ध. ०/१०	भ. ४३/२० से, प्रदोष व्रत, स. सि. योग 7/35 से प्रा.	९	०३	३४	००	७	३१	१७	४५
२५.३८	१४	चंद्र	३६	१३	पू.षा.	५०	१३	व्या.	१६	५५	वि	९	४७	२९	२७	19	६	धनु	भ. ९/४७ तक, मासशिवरात्रि व्रत	९	०४	३५	०६	७	३१	१७	४६
२५.४३	३०	मंग	२८	५	उ.षा.	४३	४५	हर्ष वज्र	७ ५७	२८ २३	चतु	२	०९	३०	२८	20	७	म. ३/४३	**माघ (मौनी) अमावस, भौमवती अमावस, मेला हरिद्वार, (D)**	९	०५	३६	१२	७	३०	१७	४७

(A) सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, वक्रतुण्ड चतुर्थी **(B)** स्वामी विवेकानन्द जयन्ती **(C)** सं. मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रातः 11 घं.-23 मिं. तक **(D)** प्रयागराज, सूर्य सायन कुम्भ में १९/२०

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 13 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	१०	९	३	९	७	५	११
२८	२३	०६	१७	२६	१७	०७	२०	२०
२३	५२	२२	०६	३७	४०	५६	१३	१३
२१	०७	४०	५५	००	३१	३९	५९	५९
61 8	732 10	46 57	69 6	6 19	75 1	5 20	3 11	3 11
उषा १	चित्रा १	धनि ४	श्रव ३	अश्ले ३	श्रव. ३	अनु. २	हस्त ४	रेव. २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

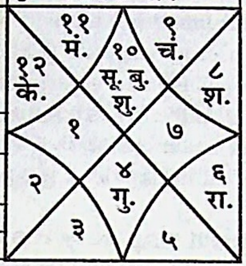
कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	१०	९	३	९	७	५	११
०५	२७	११	२२	२५	२६	०८	१९	१९
३१	५०	५१	४५	५०	२५	३२	५१	५१
१०	३६	१४	४६	१२	२०	४०	४४	४४
61 6	899 6	46 55	12 55	7 8	74 55	4 52	3 11	3 11
उषा ३	उषा १	शत. २	श्रव. ४	अश्ले ३	धनि. १	अनु. २	हस्त ३	रेव. १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



माघ कृष्ण पक्षफल–

ता. 8 जन. को संकल्प मन्त्र '**गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये**' पढ़कर व्रत करके '**ॐ गं गणपतये नमः**' मन्त्र जप व स्तोत्र का पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर '**ॐ सोम् सोमाय नमः**' द्वारा अर्घ्य देने से भगवान् गणेश जी की कृपा से अनेक मानसिक एवं कायिक कष्टों का निवारण हो जाता है। इसी पक्ष में मकर संक्रान्ति से एक दिन पूर्व **लोहड़ी पर्व (13 जन.)** समस्त पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू आदि प्रदेशों में गृहों में अग्नि प्रदीप्त करके तिल-समिधा, रेवड़िया आदि सहित अग्नि पूजनोपरान्त उत्सव मनाया जाता है। **ता. 14 जन.**, बुधवार को **मकर संक्रान्ति** रात्रि 7 बजकर 26 मिंट (19-26) पर स्वाती नक्षत्रकालीन कर्क लग्न में प्रविष्ट होगी। इस संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले दिन प्रातः 11 घं.-23 मिं. तक रहेगा। स्नानादि के पश्चात् भगवान् विष्णु पूजन, सूर्य-जप, श्रीसूक्त आदि स्तोत्र पाठ, तिल-घृतादि सहित होम, तिल सहित तर्पण, ब्राह्मण भोजन एवं अनाज, वस्त्र, फल, गुड़, तिल, पंचांग के दान का विशेष महत्त्व होता है। इस दिन हरिद्वार, काशी आदि तीर्थों पर स्नानदानादि का भी विशेष माहात्म्य होता है। वहाँ न जा सके तो गृह में ही श्रद्धापूर्वक स्नान करें, वहीं उनका स्मरण करें अथवा '**गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती। नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् संनिधं कुरू।**' का उच्चारण करें। षट्तिला एकादशी (16 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। फिर तिलों से निर्मित मोदक, बर्फी आदि का दान करें तथा स्वयं उनका सेवन करें तो अनेक पापों का क्षय होता है। ता. 20 जन. को माघ-मौनी अमावस को मौन व्रत रखकर स्नान, जप, पाठ, तर्पण एवं यथाशक्ति दान करने का विधान है। मंगलवारी अमावस भी होने से इस दिन गङ्गादि तीर्थ पर स्नान, जप, दानादि करने से एक हज़ार गोदान का फल मिलता है। परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया। राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।। अर्थात् देश के किन्हीं राजनेताओं में विग्रह एवं टकराव हों, अपदस्थ, कहीं छत्रभंग (सत्तां-परिवर्तन), उपद्रव व हिंसक घटनाएं हों। अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो। **संक्रां. राशिफल**–कर्क, तुला, वृश्चिक, मीन, मेष, वृष राशि वालों के लिए लाभप्रद रहेगी।

वि. संवत् २०७१, **माघ शुक्ल पक्ष** शाक: १९३६

सन् 2015 ई. (ता. 21 जनवरी से 3 फरवरी तक) हिजरी सन् 1436 — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु:

प्रात: शनि पूर्वकपाल में, गु. पश्चिम में दिखाई देगा। सायंकाल बुध-शुक्र पश्चिमक्षितिज में पास-पास होंगे, इनसे ऊपर मं. होगा। ता. 24 जन. से बुध पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शक	रवि उल्सा	जनवरी	माघ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.४५	१	बुध	११	२३	श्रव	३६	४८	सिद्धि	४७	५	बव	११	२३	१	२९	21	८	मकर	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **बुध वक्री** ३४/३८, शक माघ प्रारम्भ, **(Z)**	९	०६	३७	१८	७	३०	१७	४८
२५.४८	२	गुरु	१०	३५	धनि	२९	५८	व्य.	३६	५३	कौ	१०	३५	२	रबि	22	९	कुं. ३/२०	**पंचक प्रारम्भ** ३/२०, **शुक्र कुम्भ में** ४६/५८, रबि-उल्सानी (मु.)**(A)**	९	०७	३८	२०	७	३०	१७	४९
२५.५३	३	शुक्र	२	१०	शत	२३	३८	वरी	२७	१०	गर	२	१०	३	२	23	१०	कुम्भ	भ. २८/१९ से ५४/५८ तक, **गौरी तृतीया** (गोंतरी) व्रत (देखें पृ. 88), **(B)**	९	०८	३९	२४	७	२९	१७	५०
००.००	४	शुक्र	५४	२८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.५५	५	शनि	४७	४८	पू.भा.	१८	८	परि	१८	१०	बव	२१	०८	४	३	24	११	मी. ४/२३	**वसन्त (श्री) पंचमी**, सरस्वती पूजन, सूर्य श्रवण में १९/१०, **(C)**	९	०९	४०	२७	७	२९	१७	५१
२६.००	६	रवि	४२	२८	उ.भा.	१३	४८	शिव	१०	१०	कौ	१५	०८	५	४	25	१२	मीन	दारिद्रयहर षष्ठी व्रत, सूर्य अभिजित नक्षत्र से निर्वत 12/07 (घं.मिं.)	९	१०	४१	२७	७	२८	१७	५२
२६.०३	७	चंद्र	३८	३३	रेव	१०	५०	सिद्ध साध्य	३ ५७	१३ २५	गर	१०	३१	६	५	26	१३	मे. १०/५०	भ. ३८/३३ से, **पंचक समाप्त १०/५०**, भारत गणतन्त्र दिवस **(D)**	९	११	४२	२८	७	२८	१७	५३
२६.०८	८	मंग	३६	५	अश्वि	९	२०	शुभ	५२	५०	वि	७	१९	७	६	27	१४	मेष	भ. ७/१९ तक, भीष्माष्टमी, स. सि. योग: 11/11 तक	९	१२	४३	२८	७	२७	१७	५४
२६.०८	९	बुध	३५	५	भर	९	१३	शुक्ल	४९	१८	बा	५	३५	८	७	28	१५	वृ. २४/२५	शुक्र शतभिषा में ८/००, स. सि. योग: 11/08 से प्रा.	९	१३	४४	२४	७	२७	१७	५४
२६.१३	१०	गुरु	३५	२८	कृति	१०	३०	ब्रह्म	४६	५०	तै	०	२३	९	८	29	१६	वृष		९	१४	४५	२१	७	२६	१७	५५
२६.१५	११	शुक्र	३७	००	रोहि	१३	००	ऐंद्र	४५	१५	व	६	१४	१०	९	30	१७	मि. ४४/३८	भ. ६/१४ से ३७/०० तक, **जया एकादशी व्रत**, मंगल पू.भा. में २१/२०	९	१५	४६	१६	७	२६	१७	५६
२६.२०	१२	शनि	३९	४३	मृग	१६	३८	वैधृ	४४	३३	बव	८	२२	११	१०	31	१८	मिथुन	**भीष्म-द्वादशी**, तिल द्वादशी	९	१६	४७	११	७	२५	१७	५७
२६.२३	१३	रवि	४३	१८	आर्द्रा	२१	१०	विष्क	४४	३०	कौ	११	३१	१२	११	फर	१९	मिथुन	**प्रदोष व्रत**, फरवरी-सन् 2015 ई. प्रारम्भ, मेला जैसलमेर (राज.) **(E)**	९	१७	४८	०२	७	२५	१७	५८
२६.२८	१४	चंद्र	४७	५०	पुन	२६	३८	प्रीति	४५	१३	गर	२०	०६	१३	१२	2	२०	क. १०/१०	भ. ४७/५० से प्रा.	९	१८	४८	५४	७	२४	१७	५९
२६.३३	१५	मंग	५३	१०	पुष्य	३२	५३	आयु	४६	२८	वि	२०	३०	१४	१३	3	२१	कर्क	भ. २०/३० तक, **माघ-पूर्णिमा**, माघ स्नान समाप्त, **श्रीगुरु रविदास (F)**	९	१९	४९	४४	७	२३	१८	००

(Z) सूर्य का अभिजित नक्षत्र में प्रवेश 8घं.-33मिं. **(A)** मास प्रारम्भ **(B) श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, वरद् (कुन्द) चतुर्थी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती **(C) वक्री बुध पश्चिम में अस्त** 19घं.-24मिं., वागेश्वरी जयन्ती **(D)** आरोग्य-रथ सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती **(E)** प्रारम्भ-3 दिन का, **(F)** जयन्ती, श्रीललिता जयन्ती

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 27 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	१०	९	३	१०	७	५	११
१२	१०	१७	२०	२४	०५	०९	१९	१९
३८	०७	१९	२०	५८	०९	०५	२९	२९
३१	४८	१६	२७	३०	१४	१०	२९	२९
60 59	805 56	46 48	61 22	7 41	74 44	4 20	3 11	3 11
श्रव १	अश्वि ४	शत ४	श्रव ४	अश्ले ३	धनि ४	अनु २	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

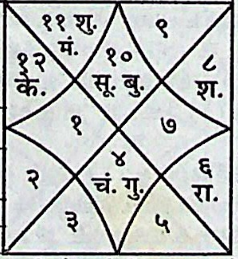
कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30



भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 3 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	१०	९	३	१०	७	५	११
१९	०९	२२	१२	२४	१३	०९	१९	१९
४४	०७	४६	०८	०३	५१	३३	०७	०७
५७	१७	२२	०१	४८	४७	५१	१३	१३
60 51	721 57	46 38	61 24	7 57	74 32	3 46	3 11	3 11
श्रव. ३	पुष्य २	पू.भा १	श्रव १	अश्ले ३	शत. ३	अनु २	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30



माघ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में गौरी तृतीया (23 जन.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर-इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन करायें। इसी दिन तिल चतुर्थी को श्रीगणेश जी की कृपा प्राप्त करने के लिए व्रत एवं गणेश पूजन करके गर्मवस्त्र, फल, गुड़ व तिल के लड्डुओं आदि का भोग लगाकर प्रसाद बाँटे तथा इस दिन लाल वस्त्र पहने, उत्तराभिमुख होकर '**ॐ गणेशाय नमः**' मन्त्र का जप करें। ता. 24 जन. **को वसन्त पंचमी** के दिन भगवान् श्रीविष्णु, श्रीकृष्ण-राधा व सरस्वती की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का श्रद्धा से भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **रथ सप्तमी** (26 जन.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। अत: यह सूर्य जयन्ती भी है। इस सप्तमी का विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **जया एकादशी** (30 जन.) का विधिवत् व्रत, पाठादि करने से पिशाचादि योनियों से छुटकारा मिलता है। **तिल द्वादशी** (31 जन.) का व्रत भी षट्तिला एका. के समान है। इसदिन तिलों के जल से स्नान करें। इस व्रत के प्रभाव से मानसिक एवं शारीरिक व्याधियां दूर होती हैं। **माघ पूर्णिमा** (3 फर.) को तीर्थजल से स्नान करके देवताओं, पितरों आदि का तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने का विशेष फल होता है। **लोक भविष्य**—माघ मास में **पाँच मंगलवारों** का समावेश होना सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं। देश में कहीं आतंकी एवं हिंसक घटनाओं की सम्भावना, राज्य परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय। किसी प्रमुख नेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी योग हैं-**यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पञ्चवासरा:। रक्तेन पूरित पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।। आकाश लक्षण**—पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में उत्तरी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा एवं कहीं बूंदा-बांदी होगी। **शकुन**-'माघ शुदी जो सप्तमी होवें सोम जु वार। काल (अकाल) परै बहुत युद्ध हुई, वरषै जग तलवार।।

वि. संवत् २०७१, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक: १९३६ | तारीखें | सन् 2015 ई. (ता. 4 फर. से 18 फरवरी तक) हिजरी सन् 1436 | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर-वसन्त ऋतु:

ग्रह दर्शन–प्रातः श. पूर्वकपाल में, 5 फर. से बुध पूर्वक्षितिज में होगा। गु. पश्चिमक्षितिज के पास होगा। सायंकाल मं.–शु. पश्चिमक्षितिज में होंगे।

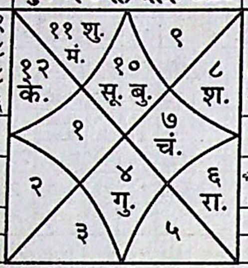
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	माघ शक	रबि उस्सानी	फरवरी	माघ प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.३५	१	बुध	५९	१०	श्ले.	३९	४५	सौभा	४५	४३	बा	२६	१०	१५	१४	4	२२	सिं. ३९/४५	**फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ**	९	२०	५०	३५	७	२३	१८	०१
२६.४०	२	गुरु	६०	००	मघा	४७	१५	शोभ	५०	२५	तै	३२	२८	१६	१५	5	२३	सिंह	वक्री बुध उ.षा. (४) में ४/५८, वक्री बुध पूर्व में उदय ६/२५	९	२१	५१	२१	७	२२	१८	०२
२६.४५	२	शुक्र	५	४५	पू.फा.	५५	५	अति	५२	५५	गर	५	४५	१७	१६	6	२४	सिंह	भ. ३९/०९ से, सूर्य धनिष्ठा में २७/३०	९	२२	५२	०८	७	२१	१८	०३
२६.४८	३	शनि	१२	३३	उ.फा.	६०	००	सुक	५५	२३	वि	१२	३३	१८	१७	7	२५	कं. १२/०५	भ. १२/३३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12-13), शुक्र पू.भा. में ५२/०८	९	२३	५२	५२	७	२०	१८	०३
२६.५०	४	रवि	१९	१३	उ.फा.	२	५५	धृति	५७	३३	बा	१९	१३	१९	१८	8	२६	कन्या	वक्री गुरु आश्ले. (२) में २५/१५, स. सि. योग:	९	२४	५३	३५	७	२०	१८	०४
२६.५५	५	चंद्र	२५	२३	हस्त	१०	२०	शूल	५९	८	तै	२५	२३	२०	१९	9	२७	तु. ४३/४३		९	२५	५४	१६	७	१९	१८	०५
२७.००	६	मंग	३०	३०	चित्रा	१६	५३	गंड	५९	४५	व	३०	३०	२१	२०	10	२८	तुला	भ. ३०/३० से प्रा., शनि अनु. (३) में २५/५०	९	२६	५५	०१	७	१८	१८	०६
२७.०५	७	बुध	३४	३	स्वा.	२२	३	वृद्धि	५९	३	वि	२	१७	२२	२१	11	२९	तुला	भ. २/१७ तक, **बुध मार्गी ३२/५०**	९	२७	५५	४१	७	१७	१८	०७
२७.१०	८	गुरु	३५	४३	विशा	२५	२५	ध्रुव	५६	५०	बा	४	५३	२३	२२	12	३०	वृ. ९/४५	**मंगल मीन में १४/५० (13घं.–12मिं.)**, जानकी व्रत (मतान्तरे)	९	२८	५६	२०	७	१६	१८	०८
२७.१३	९	शुक्र	३५	१३	अनु	२६	४५	व्या.	५२	५३	तै	५	२८	२४	२३	13	फा.	वृश्चिक	**सूर्य कुम्भ में २/५५, फाल्गुन संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल (A)**	९	२९	५६	५९	७	१६	१८	०९
२७.१८	१०	शनि	३२	३३	ज्ये.	२५	५८	हर्ष	४७	१५	व	३	५३	२५	२४	14	२	ध. २५/५८	भ. ३/५३ से ३२/३३ तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती	१०	००	५७	३७	७	१५	१८	१०
२७.२०	११	रवि	२७	५०	मूल	२३	१०	वज्र	४०	५	बव	०	१२	२६	२५	15	३	धनु	**विजया एकादशी व्रत, शुक्र मीन में ५७/१८**, स. सि. योग:	१०	०१	५८	१२	७	१४	१८	१०
२७.२५	१२	चंद्र	२१	२३	पू.षा.	१८	३८	सिद्धि	३१	३०	तै	२१	२३	२७	२६	16	४	म. ३२/१५	सोम प्रदोष व्रत, मंगल उ.भा. में ३३/५३,	१०	०२	५८	४८	७	१३	१८	११
२७.३०	१३	मंग	१३	३३	उ.षा.	१२	४०	व्य.	२१	५३	व	१३	३३	२८	२७	17	५	मकर	भ. १३/३३ से ५१/०७ तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**	१०	०३	५९	२१	७	१२	१८	१२
२७.३५	१४	बुध	४	४०	श्रव. धनि.	५ ५८	४३ १०	वरी	११	३०	शकु	४	४०	२९	२८	18	६	कुं. ३१/५८	**पंचक प्रारम्भ ३१/५८, फाल्गुन अमावस** (प्रात: 9/03 बाद), **(B)**	१०	०४	५९	५४	७	११	१८	१३
००.००	३०	बुध	५५	१५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	अमावस तिथि क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) सं. दोपहर 14घं.–50मिं. तक, रामदास नवमी **(B)** बुध श्रवण में ५३/२८, शुक्र उ.भा. में ३९/३३, सूर्य सायन मीन में ५५/२५, वसन्त ऋतु प्रारम्भ

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 12 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	९	३	१०	७	५	११
२८	२७	२९	०७	२२	२५	१०	१८	१८
५१	००	४५	१४	५२	०१	०४	३८	३८
५४	२३	०८	२०	११	१८	३८	३६	३६
60 41	709 56	46 23	6 12	7 53	74 13	2 59	3 10	3 10
धनि २	विशा ३	पूभा ३	उभा ४	अश्ले २	पूभा २	अनु ३	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

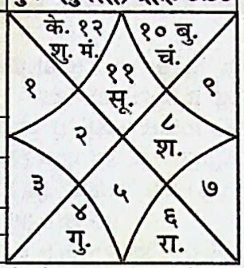
कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30



बुधे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 18 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	११	९	३	११	७	५	११
०४	२०	०४	०९	२२	०२	१०	१८	१८
५५	४९	२३	२२	०५	२६	२१	१९	१९
४२	५३	०५	०७	३२	०४	०४	३२	३२
60 34	913 57	46 13	39 24	7 34	74 00	2 25	3 11	3 11
धनि ४	श्रव. ४	उभा १	उभा ४	अश्ले २	पूभा ४	अनु ३	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रात: 5.30



फाल्गुन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की चतुर्थी को श्रीगणेश चतुर्थी (7 फर.) का व्रत रखकर, सायंकाल पुन: स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का पूजन कर लड्डुओं का चन्द्रोदय होने पर मंत्रपूर्वक अर्घ्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करने से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। विजया एकादशी (15 फर.) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। ता. 17 फर., मंगलवार को श्रीमहाशिवरात्रि का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेघ यज्ञ के तुल्य फल प्राप्त होता है। इस दिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत धारण कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिवकथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। **फाल्गुन संक्रान्ति**–ता. 13 फर., शुक्रवार को प्रात: 8 बजकर 26 मिनट पर अनुराधा नक्षत्र कालीन कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल दोपहर 14घं.–50मिं. तक रहेगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार मृदु नामक यह संक्रां. पशुओं का क्रय-विक्रय करने वालों तथा राजनेताओं को लाभ एवं सुख देने वाली होगी। **संक्रान्ति राशिफल**–मेष, वृष, मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु राशि वालों के लिए शुभप्रद रहेगी। **लोक भविष्य**–फाल्गुन मास में पाँच बुध एवं पाँच बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच बुधवारों के प्रभाव से अनाजादि की पैदावार में वृद्धि होगी तथा उच्च-वर्ग में सुख-सुविधाओं के साधनों का विस्तार होगा। परन्तु पाँच बृहस्पतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। भारत के पश्चिम क्षेत्रों (कश्मीर, राजस्थान, पंजाब, गुजरात आदि) में कहीं विग्रह, तोड़फोड़, हिंसा व विस्फोट की घटनाएं घटित हों। **'यत्र मासे पंचवारा: जायन्ते च बृहस्पते:। विग्रह: पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते।।'** पश्चिम देशों में भी कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के आसार बनेंगे। केन्द्रिय मंत्रीमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं। **आकाश लक्षण**–ता. 8, 9, 11, 12 फर. को पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात तथा मैदानी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७०, **फाल्गुन शुक्ल पक्ष** शाक: १९३६														तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घटी	पल	नक्षत्र	घटी	पल	योग	घटी	पल	करण	घटी	पल	माघ शक	रबि मु.	फरवरी	फाल्गुन	
२७.४०	१	गुरु	४५	५०	शत	५०	३८	परि / शिव	० / ४९	४५ / ५५	किं	२०	३३	३०	२९	19	७	कुम्भ
२७.४५	२	शुक्र	३६	४५	पू.भा.	४३	३३	सिद्ध	३९	३०	बा	११	१८	फा	३०	20	८	मी. ३०/१५
२७.४८	३	शनि	२८	३०	उ.भा.	३७	१८	साध्य	२९	४५	तै	२	३८	२	जम	21	९	मीन
२७.५३	४	रवि	२१	२३	रेव	३२	१५	शुभ	२०	५८	वि	२१	२३	३	२	22	१०	मे. ३२/१५
२७.५८	५	चंद्र	१५	४५	अश्वि	२८	४३	शुक्ल	१३	२०	बा	१५	४५	४	३	23	११	मेष
२८.०३	६	मंग	११	४५	भर	२६	५३	ब्रह्म	७	५	तै	११	४५	५	४	24	१२	वृ. ४१/४०
२८.०५	७	बुध	९	३५	कृति	२६	४८	ऐन्द्र / वैधृ	२ / ५८	१५ / ४८	व	९	३५	६	५	25	१३	वृष
२८.१०	८	गुरु	९	१५	रोहि	२८	३०	विष्क	५६	४५	बव	९	१५	७	६	26	१४	वृष
२८.१८	९	शुक्र	१०	३८	मृग	३१	५०	प्रीति	५५	५५	कौ	१०	३८	८	७	27	१५	मि. ०/०२
२८.२३	१०	शनि	१३	३०	आर्द्रा	३६	३०	आयु	५६	८	गर	१३	३०	९	८	28	१६	मिथुन
२८.२८	११	रवि	१७	४०	पुन	४२	१८	सौभा	५७	८	वि	१७	४०	१०	९	मार्च	१७	क. २५/४५
२८.३०	१२	चंद्र	२२	५०	पुष्य	४८	५८	शोभ	५८	४८	बा	२२	५०	११	१०	2	१८	कर्क
२८.३५	१३	मंग	२८	४३	श्ले.	५६	१५	अति	६०	००	तै	२८	४३	१२	११	3	१९	सिं. ५६/१५
२८.४०	१४	बुध	३५	५	मघा	६०	००	अति	०	५५	गर	१	५४	१३	१२	4	२०	सिंह
२८.४३	१५	गुरु	४१	४३	मघा	६	२५	सुक	३	१८	वि	८	२४	१४	१३	5	२१	सिंह

सन् 2015 ई. (ता. 19 फर. से 5 मार्च तक) हिजरी सन् 1436 सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतु:						भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
तिथि	**ग्रह दर्शन**–प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, श. पूर्वकपाल में होगा। सायंकाल गु. पूर्वक्षितिज में उदय होता दिखाई देगा। मं.–शु. पश्चिमक्षितिज में होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
१	**फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ**, सूर्य शतभिषा में ३९/१०	१०	०६	००	२५	७	१०	१८	१४
२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती**, शक फाल्गुन प्रारंभ	१०	०७	००	५५	७	०९	१८	१५
३	भ. ५४/५७ से, जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	१०	०८	०१	२३	७	०८	१८	१५
४	भ. २१/२३ तक, पंचक समाप्त ३२/१५ (20घं.–01मिं.)	१०	०९	०१	४८	७	०७	१८	१६
५	याज्ञवलक्य जयन्ती	१०	१०	०२	१२	७	०६	१८	१७
६	**होलाष्टक–26 फर. से 5 मार्च तक**	१०	११	०२	३५	७	०५	१८	१८
७	भद्रा ९/३५ से ३९/२५ तक,	१०	१२	०२	५५	७	०४	१८	१८
८	**होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा-अष्टमी	१०	१३	०३	१४	७	०३	१८	१९
९		१०	१४	०३	३०	७	०१	१८	२०
१०	भ. ४५/३५ से,	१०	१५	०३	४५	७	००	१८	२१
११	भ. १७/४०, **आमलकी एकादशी व्रत**, शुक्र रेवती में ३१/०८ **(A)**	१०	१६	०३	५४	६	५९	१८	२२
१२	सोम प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी	१०	१७	०४	०४	६	५८	१८	२२
१३	बुध धनि. में ५८/१५, स. सि. योग:	१०	१८	०४	१३	६	५७	१८	२३
१४	भ. ३५/०५ से, सूर्य पू.भा. में ५५/३०, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत	१०	१९	०४	२०	६	५६	१८	२४
१५	भ. ८/२४ तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन** (प्रदोषकाले) **(B)**	१०	२०	०४	२५	६	५५	१८	२४

(A) मार्च-सन् 2015 ई. प्रारम्भ, **(B)** होली पर्व, होलाष्टक समाप्त, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 26 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	११	९	३	११	७	५	११
१२	१६	१०	१६	२१	१२	१०	१७	१७
५९	२२	३१	१६	०७	१६	३७	५३	५३
२३	५८	५३	५४	१२	४२	३८	०५	०५
60	769	45	64	6	73	1	3	3
19	14	56	54	51	37	37	11	11
शत २	रोहि २	उभा ३	श्रव २	अश्ले २	उभा ३	अनु ३	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5.30



गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 5 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	११	९	३	११	७	५	११
२०	११	१५	२४	२०	२०	१०	१७	१७
००	५१	५२	३४	२१	५०	४६	३१	३१
५५	५९	३२	१५	४०	४३	५४	५०	५०
60	708	45	78	5	73	0	3	3
5	52	39	17	59	12	55	11	11
पूभा १	मघा ४	उभा ४	धनि १	अश्ले २	रेव २	अनु ३	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रात: 5.30



फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

फाल्गुन शुक्लाष्टमी (26 फर.) से होलाष्टक प्रारम्भ होंगे। इन दिनों गृहप्रवेश, मुण्डनादि शुभ कार्यों के आरम्भ का निषेध जाता है। **आमलकी एकादशी** (1 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन करके पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। रात्रि जागरण कर दूसरे दिन पारण करें। इससे पापों का क्षय तथा सौभाग्य की वृद्धि होती है। **फाल्गुन पूर्णिमा** (5 मार्च), गुरुवार को होली का त्यौहार समस्त भारत (विशेषकर मथुरा नगरी) में बड़े उत्साह एवं श्रद्धा से मनाई जाती है। परम्परावश लोग सायंकाल भद्रा रहित काल (प्रदोष-काल) में होलिका दहन करके अग्निदेव की पूजा करके उत्सव मनाते हैं। भद्रा प्रात: 10 बजकर 29 मिनट तक रहेगी। इसी दिन परमभक्त चैतन्य महाप्रभु की जयन्ती भी मनाई जाती है। **व्यापारिक रुख**–ता. 28 फर. तक मंग-शुक्र शनि के नक्षत्र उ.भा. में संचार करेंगे। फलस्वरूप, ताँबा, चाँदी, गुड़, तेल, तिलहन, रूई में तेज़ी की लाईन रहेगी। ता. 3 मार्च को बुध धनिष्टा में आकर सोना, चाँदी, रूई में मन्दी, चावल में तेजी करेगा। ता. 4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आने से पुन: आगे 2-3 दिन में सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, चावल, घी, सरसों, तेल, गुड़, खाण्ड, रूई में तेजी बनेगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष के उत्तरार्ध भाग में उत्तरी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा एवं कहीं बूंदा-बांदी होगी।

शकुन–फा. शु. अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र कालीन वर्षा हो, तो आगामी अच्छी फसल एवं सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७१, चैत्र कृष्ण पक्ष शाक : १९३६

सन् 2015 ई. (ता. 6 मार्च से 20 मार्च तक) हिजरी सन् 1436

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	घड़ी	पल	नक्षत्र	घड़ी	पल	योग	घड़ी	पल	करण	घड़ी	पल	तारीखें फागु. शक	जमा. मु.	मार्च	फागु. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल	प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में, शनि याम्योत्तरवृत्त में दिखाई देंगे। सायंकाल मं.–शु. पश्चिमक्षितिज में होंगे तथा गु. पूर्वकपाल में दीखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२८.५०	१	शुक्र	४८	२०	पू.फा.	११	४३	धृति	५	४८	बा	१५	०२	१५	१४	6	२२	कं. २८/३८	मंगल रेवती में 6घं.–28मिं., वसन्तोत्सव, होला मेला (A)	१०	२१	०४	२५	६	५३	१८	२५
२८.५५	२	शनि	५४	४०	उ.फा.	१९	२३	शूल	८	१०	तै	२१	३०	१६	१५	7	२३	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती	१०	२२	०४	२६	६	५२	१८	२६
२९.००	३	रवि	६०	००	हस्त	२६	३८	गंड	१०	२०	व	२७	३४	१७	१६	8	२४	कन्या	भ. २७/३४ से, **बुध कुम्भ में ५९/०८**, वक्री गुरु आश्ले. (१) में १२/३५**(R)**	१०	२३	०४	२६	६	५१	१८	२७
२९.०३	३	चंद्र	०	२८	चित्रा	३३	१५	वृद्धि	१२	००	वि	०	२८	१८	१७	9	२५	तु. ०/०३	भ. ०/२८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12–13), श्रीभगवान्नारायण जयन्ती	१०	२४	०४	२३	६	५०	१८	२७
२९.०८	४	मंग	५	२३	स्वा.	३८	५३	ध्रुव	१३	००	बा	५	२३	१९	१८	10	२६	तुला	(R) स. सि. योगः	१०	२५	०४	१९	६	४९	१८	२८
२९.१५	५	बुध	९	८	विशा	४३	१३	व्या.	१३	५	तै	९	०८	२०	१९	11	२७	वृ. २७/१८	**श्रीरंग पंचमी**, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारंभ, मे. गुरुरामराय (देहरादून)	१०	२६	०४	१३	६	४७	१८	२९
२९.१८	६	गुरु	११	२०	अनु	४६	००	हर्ष	१२	००	व	११	२०	२१	२०	12	२८	वृश्चिक	भ. ११/२० से ४१/३५ तक, **शुक्र अश्वि (१) मेष में** २८/२३, एकनाथ षष्ठी	१०	२७	०४	०३	६	४६	१८	२९
२९.२३	७	शुक्र	११	५०	ज्ये.	४७	००	वज्र	९	३५	बव	११	५०	२२	२१	13	२९	ध. ४७/००	शीतला सप्तमी (पूजन), बुध शत. में ३६/०५,	१०	२८	०३	५४	६	४५	१८	३०
२९.२८	८	शनि	१०	३०	मूल	४६	१३	सिद्धि	५	४५	कौ	१०	३०	२३	२२	14	चैत्र	धनु	**सूर्य मीन में ५६/२५, चैत्र संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले **(B)**	१०	२९	०३	४३	६	४४	१८	३१
२९.३३	९	रवि	७	२०	पू.षा.	४३	४०	व्य./वरी	०/५३	३०/४५	गर	७	२०	२४	२३	15	२	म. ५७/४५	भ. ३४/५३ से प्रारम्भ	११	००	०३	२८	६	४२	१८	३१
२९.३८	१०	चंद्र	२	२५	उ.षा.	३९	३०	परि	४५	४५	वि	२	२५	२५	२४	16	३	मकर	भ. २/२५ तक, **पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मार्त)**	११	०१	०३	१४	६	४१	१८	३२
००.००	११	चंद्र	५५	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२९.४३	१२	मंग	४८	१०	श्रव.	३३	५८	शिव	३६	४०	कौ	२२	०२	२६	२५	17	४	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**	११	०२	०२	५८	६	४०	१८	३३
२९.४८	१३	बुध	३९	३३	धनि	२७	२८	सिद्ध	२६	४८	गर	१३	५२	२७	२६	18	५	कुं. ०/५०	भ. ३९/३३ से, **पंचक प्रारम्भ** ०/५०, प्रदोष व्रत, **सूर्य उ.भा. में (C)**	११	०३	०२	५८	६	३९	१८	३४
२९.५३	१४	गुरु	३०	२८	शत	२०	२५	साध्य	१६	२८	वि	५	०१	२८	२७	19	६	मी.५९/५५*	भ. ५/०१ तक, मेला पृथूदक–पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	११	०४	०२	१८	६	३७	१८	३४
२९.५८	३०	शुक्र	२१	१५	पू.भा.	१३	१०	शुभ/शक्ल	६/५३	००/१०	नाग	२१	१५	२९	२८	20	७	मीन	**चैत्र अमावस्या** स्नानदानादि, **वि. २०७१ पूर्ण, सूर्य सायन मेष (D)**	११	०५	०१	५४	६	३६	१८	३५

(A) (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब) **(B)** दिन मध्याह्न तक, **शनि वक्री ३४/०३**, शीतलाष्टमी व्रत **(C)** १७/२३, मासशिवरात्रि व्रत, **वारुणी योग** 17घं.–38मिं. से 22घं.–28मिं. तक
(D) में ५४/१०, उत्तर गोल में सूर्य का प्रवेश, महाविषुव दिन

**चंद्रमा की शीघ्र गति के कारण चंद्रमा का राशि प्रवेश अगले दिन हुआ है। कृपया पाठक इसे गलत न समझें।*

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	११	१०	३	०	७	५	११
२९	०२	२२	०७	१९	०१	१०	१७	१७
००	११	४१	११	३२	४७	५१	०३	०३
४१	५८	५०	०१	५९	१४	३३	१२	१२
59 50	815 46	45 16	90 50	4 37	72 37	0 1	3 11	3 11
पू.भा ३	मूल १	रेव २	शत १	अश्ले १	अश्वि १	अनु ३	हस्त ३	रेव १
०	०	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5.30



शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	१०	३	०	७	५	११
०४	२९	२७	१६	१९	०९	१०	१६	१६
५९	१८	१२	३४	०७	०२	५०	४४	४४
१५	५५	४९	५४	४६	००	०६	०८	०८
59 39	898 7	45 1	98 22	3 36	72 13	0 36	3 11	3 11
उ.भा १	पू.षा ३	रेव ४	शत ३	अश्ले १	अश्वि ३	अनु ३	हस्त ३	रेव १
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5.30



चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (6 मार्च) को परम्परानुसार कुछ प्रदेशों में गतदिवस होलिका दहन के पश्चात् प्रतिपदा को होली पर्व मनाया जाएगा। इसी दिन होला-मेला, धुलण्डी व वसन्तोत्सव पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। कई स्थलों पर ध्वजारोहण भी किया जाता है। **ता. 9 मार्च को चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्थी को श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, मन्त्र जप (**ॐ गं गणपत्ये नमः**) करने से विघ्न दूर होते हैं, मनोकामनाओं की पूर्ति तथा पुत्र-पौत्रादि की समृद्धि होती है। **पापमोचनी एकादशी** (17 मार्च-वैष्णवों के लिए) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञाताज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 18 मार्च को वारुणी पर्व पर तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य ग्रहण तुल्य होता है। चतुर्दशी को पिहोवा (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। **चैत्र संक्रान्ति**–ता. 14 मार्च, शनिवार को 29घं.–18मिं. पर अर्थात् 15 मार्च को प्रातः 05घं.–18मिं. पर पू.षा. नक्षत्र कालीन कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। इस संक्रां. का पुण्यकाल अगले दिन 15 मार्च को मध्याह्न तक रहेगा। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार उग्र नामक यह संक्रान्ति नीच, दुष्ट एवं चोर प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। चैत्र संक्रान्ति शनिवार के दिन होने से सभी प्रकार के अनाज, धान्यादि महंगे होंगे। लोगों में शोक, असन्तोष एवं विचित्र प्रकार के रोगों की बहुलता होगी। लोगों में तनाव एवं विग्रह की प्रवृत्ति अधिक बढ़े। राजनीतिक पार्टियों में भी परस्पर विरोध एवं टकराव अधिक बढ़े–**''सौरेश्चवारे रवि संक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वी सरोग नृपतेः प्रजासु भवेन्महायुद्धभयं तदानीम्।।''** विरोधी देशों के मध्य युद्ध भय होगा। **आकाश लक्षण**–चैत्र कृष्ण १ या अमावस को वर्षा या बूंदा-बांदी हो, तो आगामी अच्छी फसल के संकेत होंगे।

वि. संवत् 2071, मार्च–अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
चैत्र शुक्ल पक्ष	31	१	चंद्र	22	25	रेव	24	27	ऐंद्र	24	02	मे. 24/27	**प्लवंग नाम वि. संवत् 2071 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्रे शुरु (A)**	31	6/25	18/44	6/17	18/34	6/17	18/37	6/38	18/49
	अप्रै.	२	मंग	21	10	अश्वि	23	57	वैधृ	21	55	मेष	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,	1	6/23	18/46	6/15	18/35	6/16	18/38	6/36	18/49
	2	३	बुध	20	33	भर	24	06	विष्क	20	19	वृ. 30/14	**गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती**, जमादि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	2	6/22	18/47	6/14	18/36	6/15	18/38	6/35	18/49
	3	४	गुरु	20	39	कृति	24	56	प्रीति	19	17	वृष	भ. 8/36 से 20/39 तक, दमनक चतुर्थी — ‘प्लवंग’ नामक	3	6/21	18/48	6/13	18/36	6/14	18/39	6/34	18/49
	4	५	शुक्र	21	27	रोहि	26	28	आयु	18	48	वृष	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, बुध मीन में 7/32, — सम्वत्सर	4	6/19	18/48	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	६	शनि	22	55	मृग	28	36	सौभा	18	50	मि.15/28	**स्कन्द षष्ठी व्रत**	5	6/18	18/49	6/11	18/37	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	७	रवि	24	53	आर्द्रा	पूरा	दिन	शोभ	19	16	मिथुन	भ. 24/53 से, बुध उ.भा. में 8/03, शुक्र शत. में 18/23,	6	6/17	18/50	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
	7	८	चंद्र	27	12	आर्द्रा	7	12	अति	20	00	क. 27/20	भ. 14/03 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति**, अशोकाष्टमी, मेला बाहुफोर्ट (जम्मू)	7	6/15	18/50	6/09	18/38	6/09	18/41	6/31	18/49
	8	९	मंग	29	38	पुर्न	10	04	सुक	20	52	कर्क	**श्री रामनवमी, नवरात्रे समाप्त**	8	6/14	18/51	6/08	18/39	6/08	18/42	6/30	18/50
	9	१०	बुध	पूरा	दिन	पुष्य	13	00	धृति	21	43	कर्क	नवरात्र-पारणा ; गण्डमूल 13/00 बाद	9	6/13	18/52	6/06	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
	10	१०	गुरु	7	58	आश्ले	15	47	शूल	22	24	सिं.15/47	भ. 21/00 से, गण्डमूल विचार	10	6/12	18/53	6/05	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	११	शुक्र	10	01	मघा	18	15	गंड	22	49	सिंह	भ. 10/01 तक, **कामदा एकादशी व्रत**, गण्डमूल 18/15 तक	11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	१२	शनि	11	37	पू.फा.	20	16	वृद्धि	22	51	कं.26/41	शनि प्रदोष व्रत, व. मंगल हस्त (4) में 27/52, अनङ्ग त्रयोदशी (देखें पृ. 86) (B)	12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/03	18/45	6/28	18/51
	13	१३	रवि	12	42	उ.फा.	21	46	ध्रुव	22	28	कन्या	**श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)**, बुध रेवती में 21/13, बुध पूर्व में अस्त (C)	13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/02	18/45	6/27	18/51
	14	१४	चंद्र	13	14	हस्त	22	43	व्या.	21	39	कन्या	भ. 13/14 से 25/14 तक, **सूर्य अश्वि (1) मेष में 7/35, वैशाख** (D)	14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/46	6/26	18/51
	15	१५	मंग	13	13	चित्रा	23	09	हर्ष	20	25	तु.11/00	**चैत्र पूर्णिमा (स्नानदानादि), श्रीहनुमान जयन्ती** (दक्षिण-भारत), (E)	15	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
वैशाख कृष्ण पक्ष	16	१	बुध	12	41	स्वा	23	07	वज्र	18	49	तुला	**वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,**	16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	२	गुरु	11	43	विशा	22	40	सिद्धि	16	51	वृ. 16/49	भ. 23/02 से प्रारम्भ	17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
	18	३	शुक्र	10	21	अनु	21	53	व्य.	14	36	वृश्चिक	भद्रा 10/21 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12–13), शुक्र पू.भा. में 25/23	18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
	19	४	शनि	8	41	ज्ये.	20	49	वरी	12	07	ध. 20/49	**सती अनुसूया जयन्ती**, गण्डमूल विचार	19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
	20	५	रवि	6	47	मूल	19	33	परि	9	26	धनु	भ. 28/42 से, सूर्य सायन वृष में 9/26, **बुध अश्वि (1) मेष में** 17/35, (F)	20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
	०	६	रवि	28	42	०	०	०	०	०	०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	21	७	चंद्र	26	30	पू.षा.	18	08	शिव सिद्ध	6 27	38 43	म. 23/46	भ. 15/36 तक, शक वैशाख प्रारम्भ,	21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/53	18/50	6/21	18/53
	22	८	मंग	24	14	उ.षा.	16	39	साध्य	24	46	मकर		22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/52	18/51	6/20	18/54
	23	९	बुध	21	57	श्रव	15	08	शुभ	21	49	कुं. 26/23	**पंचक प्रारम्भ 26/23,**	23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/51	18/52	6/19	18/54
	24	१०	गुरु	19	44	धनि	13	39	शुक्ल	18	54	कुम्भ	भ. 8/51 से 19/44 तक, गुरु पुन. (1) में 21/04	24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	25	११	शुक्र	17	37	शत	12	16	ब्रह्म	16	05	मी.29/19	**वरूथिनी एकादशी व्रत**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/49	18/53	6/18	18/54
	26	१२	शनि	15	42	पू.भा.	11	02	ऐंद्र	13	24	मीन	**शनि प्रदोष व्रत**, बुध भर. में 26/28	26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/48	18/54	6/17	18/55
	27	१३	रवि	14	01	उ.भा.	10	03	वैधृ	10	56	मीन	भ. 14/01 से 25/21 तक, सूर्य भर. में 23/26, शुक्र मीन में 24/39, (G)	27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/47	18/54	6/17	18/55
	28	१४	चंद्र	12	41	रेव	9	22	विष्क	8	43	मे. 9/22	पंचक समाप्त 9/22, पितृकार्येषु-अमावस	28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/46	18/55	6/16	18/56
	29	३०	मंग	11	45	अश्वि	9	06	प्रीति आयु	6 29	49 18	मेष	**वैशाख मंगलवासरी अमावस** स्नान दानादि, गण्डमूल 9/06 तक	29	5/50	19/06	5/47	18/51	5/45	18/55	6/16	18/56
वै.शु.	30	१	बुध	11	18	भर	9	17	सौभा	28	12	वृ. 15/25	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र उ.भा. में 23/36, वैशाख शुक्ल पक्ष प्रारम्भ	30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

(A) पंचक समाप्त 24/27, घटस्थापन, वर्षफलश्रवण, ध्वजारोहण, सूर्य रेव. में 18/16, **शुक्र कुम्भ में 10/03**, **(B)** श्रीविष्णु दमनोत्सव **(C)** 18/45 **(D) संक्रान्ति**, मु. ३०, वैशाखी, पुण्यकाल सं सूर्योदय से दोप. 13/59 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शिवदमनोत्सव **(E)** वैशाख स्नान प्रारम्भ **(F)** ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, अगस्त्यास्त, **(G)** मासशिवरात्रि व्रत,

वि. संवत् 2071, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म ऋतुः
वैशाख शुक्ल पक्ष	1	२	गुरु	11	23	कृति	10	01	शोभ	27	33	वृष	भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती (देखें पृष्ठ 86), शिवाजी जयन्ती, **(A)**
	2	३	शुक्र	12	04	रोहि	11	18	अति	27	21	मि.24/09	भ. 24/41 से, **अक्षया-तृतीया**, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ
	3	४	शनि	13	18	मृग	13	08	सुक	27	35	मिथुन	भ. 13/18 तक, बुध कृति. में 7/55,
	4	५	रवि	15	04	आर्द्रा	15	28	धृति	28	09	मिथुन	**आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती, बुध वृष में 22/07**
	5	६	चंद्र	17	12	पुर्न	18	11	शूल	28	57	क.11/28	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती,
	6	७	मंग	19	34	पुष्य	21	05	गंड	पूरा	दिन	कर्क	भ. 19/34 से, **श्रीगङ्गा जयन्ती**, गण्डमूल 21/05 से
	7	८	बुध	21	55	आश्ले	23	59	गंड	5	51	सिं.23/59	भ. 8/45 तक, **श्रीटैगोर जयन्ती, श्रीबगुलामुखी जयन्ती (Z)**
	8	९	गुरु	24	03	मघा	26	39	वृद्धि	6	41	सिंह	**जानकी (सीता) नवमी**, गण्डमूल 26/39 तक
	9	१०	शुक्र	25	46	पू.फा.	28	54	ध्रुव	7	18	सिंह	बुध रोहि. में 23/00,
	10	११	शनि	26	54	उ.फा.	पूरा	दिन	व्या.	7	34	कं.11/22	भ. 14/20 से 26/54 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**, राहु चित्रा (3), **(B)**
	11	१२	रवि	27	22	उ.फा.	6	34	हर्ष	7	21	कन्या	सूर्य कृतिका में 17/34,
	12	१३	चंद्र	27	09	हस्त	7	35	वज्र सिद्धि	6 29	37 20	तु.19/50	सोम प्रदोष व्रत, शुक्र रेवती में 16/15,
	13	१४	मंग	26	15	चित्रा	7	56	व्य.	27	31	तुला	भ. 26/15 से, श्रीनृसिंह जयन्ती,
	14	१५	बुध	24	46	स्वा	7	37	वरी	25	15	वृ.25/01	भ. 13/31 तक, वैशाख पूर्णिमा, **बुद्ध जयन्ती, सूर्य वृष में 28/27, (C)**
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	15	१	गुरु	22	48	विशा अनु	6 29	46 27	परि	22	35	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गुरु पुर्न (2) में 27/47,
	16	२	शुक्र	20	28	ज्ये.	27	48	शिव	19	37	ध.27/48	श्रीनारद जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल 5/27 से,
	17	३	शनि	17	54	मूल	25	58	सिद्ध	16	27	धनु	भ. 7/11 से 17/54 तक, बुध मृग. में 22/22, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (D)**
	18	४	रवि	15	13	पू.षा.	24	04	साध्य	13	11	धनु	
	19	५	चंद्र	12	32	उ.षा.	22	13	शुभ	9	55	म. 5/36	
	20	६	मंग	9	58	श्रव	20	31	शुक्ल ब्रह्म	6 27	43 41	मकर	भ. 9/58 से 20/47 तक, **मंगल मार्गी 7/02**, स.सि.यो.
	21	७	बुध	7	35	धनि	19	03	ऐन्द्र	24	50	कुं. 7/45	**पंचक प्रारम्भ 7/45**, सूर्य सायन मिथुन में 8/29
	०	८	बुध	29	28	०	०	०	०	०	०	००	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ०० ००
	22	९	गुरु	27	38	शत	17	51	वैधृ	22	14	कुम्भ	**बुध मिथुन में** 26/26, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ
	23	१०	शुक्र	26	08	पू.भा.	16	58	विष्क	19	54	मी.11/09	भ. 14/53 से 26/08 तक, **शुक्र अश्वि. (1) मेष** में 28/58,
	24	११	शनि	25	00	उ.भा.	16	25	प्रीति	17	51	मीन	**अपरा एकादशी व्रत**, भद्रकाली एकादशी (पं.), गण्डमूल 16/25 से
	25	१२	रवि	24	12	रेव	16	14	आयु	16	04	मे.16/14	**पंचक समाप्त 16/14**, सूर्य रोहिणी में 13/49, गण्डमूलादि
	26	१३	चंद्र	23	47	अश्वि	16	25	सौभा	14	36	मेष	भ. 23/47 से, **सोम प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 16/25 तक
	27	१४	मंग	23	46	भर	16	58	शोभ	13	26	वृ.23/10	भ. 11/47 तक, सावित्री चौदश
	28	३०	बुध	24	10	कृति	17	56	अति	12	36	वृष	ज्येष्ठ (भावुका) अमावस, वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष), शनैश्चर जयन्ती
ज्ये. शु.	29	१	गुरु	25	01	रोहि	19	20	सुक	12	06	वृष	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, श्रीगङ्गा स्नान प्रारम्भ,
	30	२	शुक्र	26	18	मृग	21	09	धृति	11	57	मि. 8/11	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध आर्द्रा में 17/59
	31	३	शनि	28	00	आर्द्रा	23	23	शूल	12	08	मिथुन	रम्भा तृतीया व्रत, प्रताप जयंती (राज.), शब्बान (मुस्लि.) **(E)**

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
3	5/46	19/09	5/43	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
5	5/44	19/10	5/41	18/55	5/40	18/59	6/13	18/58
6	5/43	19/11	5/40	18/55	5/39	19/00	6/12	18/58
7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
8	5/42	19/12	5/39	18/56	5/37	19/01	6/12	18/59
9	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
10	5/41	19/14	5/38	18/57	5/36	19/03	6/11	18/59
11	5/40	19/15	5/37	18/58	5/35	19/03	6/10	19/01
12	5/39	19/16	5/36	18/59	5/34	19/04	6/10	19/01
13	5/39	19/17	5/36	18/59	5/34	19/05	6/09	19/01
14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/33	19/05	6/09	19/02
15	5/37	19/18	5/34	19/00	5/32	19/06	6/09	19/02
16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/32	19/07	6/09	19/02
17	5/36	19/11	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
18	5/35	19/20	5/33	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
21	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
0	00	00	00	00	00	00	00	00
22	5/33	19/23	5/31	19/05	5/28	19/11	6/07	19/04
23	5/32	19/24	5/30	19/05	5/28	19/11	6/06	19/05
24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
26	5/30	19/25	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
27	5/30	19/26	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
29	5/29	19/27	5/28	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
30	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
31	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

(A) रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, वक्री शनि विशा. (2) में 12/24 **(Z)** बुध पश्चिम में उदय 19/58, गंडमूल **(B)** केतु अश्वि (1) में 24/30, **(C) ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु. ४५, पुण्यकाल सं. अगले दिन प्रांतः 10/51, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती **(D)** (देखें पृ. 12-13), गं.मू. 25/58 तक **(E)** मास प्रारम्भ, उमा-अवतार

वि. संवत् 2071, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	जून	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तर-दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	1	४	रवि	पूरा	दिन	पुर्न	25	59	गंड	12	38	क.19/18	भ. 17/02 से, जून मास प्रारम्भ	1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
	2	४	चंद्र	6	04	पुष्य	28	51	वृद्धि	13	23	कर्क	भ. 6/04 तक, गुरु पुन. (3) में 25/04	2	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/16	6/05	19/09
	3	५	मंग	8	24	आश्ले	पूरा	दिन	ध्रुव	14	19	कर्क	गण्डमूलादि विचार	3	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	4	६	बुध	10	49	आश्ले	7	50	व्या	15	16	सिं. 7/50	शुक्र भरणी में 14/46, गण्डमूलादि, विन्ध्यावासिनी पूजा	4	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	5	७	गुरु	13	07	मघा	10	43	हर्ष	16	07	सिंह	भ. 13/07 से 26/06 तक, गण्डमूल 10/43 तक	5	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	6	८	शुक्र	15	05	पू.फा.	13	19	वज्र	16	41	कं.19/53	**श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर)**	6	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	7	९	शनि	16	30	उ.फा.	15	24	सिद्धि	16	50	कन्या	बुध वक्री 17/24, उमा ब्राह्मणी व्रत	7	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
	8	१०	रवि	17	14	हस्त	16	49	व्य.	16	27	तु.29/14	भ. 29/13 से, श्रीगङ्गा दशहरा पर्व (हरिद्वार), सूर्य मृग. में 11/36	8	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/11
	9	११	चंद्र	17	11	चित्रा	17	28	वरी	15	26	तुला	भ. 17/11 तक, **निर्जला एकादशी व्रत,**	9	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	१२	मंग	16	20	स्वा	17	19	परि	13	48	तुला	चम्पक द्वादशी, **भौम प्रदोष व्रत,** वटसावित्री व्रतारम्भ,	10	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	१३	बुध	14	43	विशा	16	27	शिव	11	32	वृ.10/44	वक्री बुध पश्चिम में अस्त 18/54	11	5/26	19/34	5/27	19/14	5/23	19/21	6/05	19/11
	12	१४	गुरु	12	28	अनु	14	56	सिद्ध	8	44	वृश्चिक	भ. 12/28 से 23/05 तक, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष) (देखें पृ. 86) श्रीसत्यनारायण व्रत	12	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	13	१५	शुक्र	9	42	ज्ये.	12	54	साध्य शुभ	5 25	29 54	ध.12/54	**ज्येष्ठ पूर्णिमा,** ज्येष्ठी योग, **सन्त कबीर जयन्ती,** गं. मू.	13	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	14	१	शनि	6	34	मूल	10	33	शुक्ल	22	07	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 10/33 तक	14	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	०	२	शनि	27	14	०	०	०	०	०	०	००	द्वितीया तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	15	३	रवि	23	53	पू.षा.	8	02	ब्रह्म	18	18	म.13/23	भ. 13/34 से 23/53 तक, **सूर्य मिथुन में 11/02, आषाढ़ संक्रान्ति, (A)**	15	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	16	४	चंद्र	20	39	उ.षा. श्रव.	5 27	31 10	ऐंद्र	14	32	मकर	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12-13), वक्री बुध मृग. (4) में 6/39	16	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/13
	17	५	मंग	17	42	धनि	25	08	वैधृ	10	58	कुं.14/06	पंचक प्रारम्भ 14/06,	17	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	18	६	बुध	15	07	शत	23	31	विष्क प्रीति	7 28	42 47	कुम्भ	भद्रा 15/07 से 26/04 तक, **शुक्र वृष में 17/56,**	18	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	७	गुरु	13	01	पू.भा.	22	24	आयु	26	18	मी.16/38	**गुरु पुन. (4) कर्क में** 8/45, वक्री शनि विशा. (1) 26/39,	19	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	20	८	शुक्र	11	25	उ.भा.	21	48	सौभा	24	14	मीन		20	5/27	19/37	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/14
	21	९	शनि	10	22	रेव	21	44	शोभ	22	36	मे.21/44	भ. 22/06 से, **पंचक समाप्त 21/44,** सूर्य सायन कर्क में 16/22, (B)	21	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	22	१०	रवि	9	50	अश्वि	22	10	अति	21	22	मेष	भ. 9/50 तक, **सूर्य आर्द्रा में 10/39,** गण्डमूलादि 22/10 तक, शक आषाढ़ प्रा	22	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
	23	११	चंद्र	9	47	भर	23	03	सुक	20	31	वृ.29/20	**योगिनी एकादशी व्रत,**	23	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	24	१२	मंग	10	10	कृति	24	20	धृति	19	59	वृष	भौम प्रदोष व्रत	24	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	१३	बुध	10	58	रोहि	26	01	शूल	19	46	वृष	भद्रा 10/58 से 23/33 तक, मासशिवरात्रि व्रत	25	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	26	१४	गुरु	12	08	मृग	28	01	गंड	19	50	मि.14/58	शुक्र रोहिणी में 27/58,	26	5/29	19/38	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	27	३०	शुक्र	13	39	आर्द्रा	पूरा	दिन	वृद्धि	20	09	मिथुन	**आषाढ़ अमावस** (स्नान दानादि)	27	5/30	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
आ.शु.	28	१	शनि	15	29	आर्द्रा	6	21	ध्रुव	20	43	क.26/18	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, मंगल चित्रा में 17/59, (C)	28	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	२	रवि	17	36	पुर्न	8	59	व्या.	21	30	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, रथ-यात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी), रविपुष्य योग 8/59 बाद	29	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/08	19/16
	30	३	चंद्र	19	56	पुष्य	11	51	हर्ष	22	26	कर्क	रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 11/51 से	30	5/31	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16

(A) मु. ४५, पुण्यकाल सं. सूर्योदय से, शुक्र कृतिका में 22/22, (B) वर्षा ऋतु प्रारम्भ, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, (C) आषाढ़ गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ, वक्री बुध पूर्व में उदय 17/51

वि. संवत् 2071, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	1	४	मंग	22	24	आश्ले	14	51	वज्र	23	27	सिं.14/51	भ. 9/10 से 22/24 तक, बुध मार्गी 18/18, **जुलाई मास प्रा.**, गण्डमूल	1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
	2	५	बुध	24	49	मघा	17	53	सिद्धि	24	26	सिंह	गण्डमूल 17/53 तक	2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
	3	६	गुरु	27	02	पू.फा.	20	44	व्य.	25	16	कं.27/24	स्कन्द-षष्ठी, कुमार षष्ठी	3	5/32	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	4	७	शुक्र	28	49	उ.फा.	23	14	वरी	25	46	कन्या	भ. 28/49 से, गुरु पुष्य (1) में 20/27, विवस्वत सप्तमी	4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
	5	८	शनि	पूरा	दिन	हस्त	25	11	परि	25	49	कन्या	भ. 17/24 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	5	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
	6	८	रवि	5	59	चित्रा	26	25	शिव	25	18	तु.13/54	सूर्य पुनर्वसु में 10/08,	6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/29	19/25	6/11	19/16
	7	९	चंद्र	6	23	स्वा.	26	50	सिद्ध	24	07	तुला	भढली नवमी, गुप्त नवरात्रे समाप्त, **मेला शरीक भवानी** (काश्मीर)	7	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
	8	१०	मंग	5	57	विशा	26	24	साध्य	22	14	वृ.20/35	भ. 17/19 से 28/40 तक, **देवशयनी एकादशी व्रत** (स्मार्त), **(A)**	8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/12	19/16
	०	११	मंग	28	40	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	9	१२	बुध	26	36	अनु	25	10	शुभ	19	42	वृश्चिक	**देवशयनी एकादशी व्रत** (वैष्णव), चातुर्मास्य व्रत, नियमादि प्रारम्भ (वैष्ण.)	9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	10	१३	गुरु	23	51	ज्ये.	23	15	शुक्ल	16	35	ध.23/15	प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार	10	5/35	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
	11	१४	शुक्र	20	33	मूल	20	48	ब्रह्म	12	58	धनु	भ. 20/33 से, मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), श्रीसत्यनारायण व्रत **(B)**	11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
	12	१५	शनि	16	55	पू.षा.	17	59	ऐन्द्र वैधृ	9 28	00 50	म.23/15	भ. 6/44 तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, **गुरु पूर्णिमा**, व्यास पूजा, **(C)**	12	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
श्रावण कृष्ण पक्ष	13	१	रवि	13	07	उ.षा.	15	01	विष्क	24	36	मकर	चान्द्र श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध आर्द्रा में 27/52, शुक्र मिथुन में **(D)**	13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/16
	14	२	चंद्र	9	19	श्रव.	12	04	प्रीति	20	29	कुं.22/40	भ. 19/31 से, पंचक प्रारम्भ 22/40, मंगल तुला में 8/44,	14	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/14	19/16
	15	३	मंग	5	43	धनि	9	21	आयु	16	36	कुम्भ	भ. 5/43 तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ 12-13), मंगलागौरी व्रतारम्भ	15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/16
	०	४	मंग	26	28	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	16	५	बुध	23	44	शत पू.भा.	7 29	01 12	सौभा	13	05	मी.23/36	सूर्य कर्क में 21/52, **श्रावण संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल सं. मध्याह्न बाद, **(E)**	16	5/38	19/36	5/37	19/16	5/34	19/22	6/14	19/16
	17	६	गुरु	21	35	उ.भा.	28	02	शोभ	10	02	मीन	भ. 21/35 से,	17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
	18	७	शुक्र	20	07	रेव	27	32	अति सुक	7 29	30 32	मे.27/32	भ. 8/51 तक, पंचक समाप्त 27/32, गण्डमूल विचार	18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/21	6/15	19/15
	19	८	शनि	19	20	अश्वि	27	42	धृति	28	07	मेष	गुरु पुष्य (2) में 22/47, शुक्र आर्द्रा में 10/06, गण्डमूल 27/42 तक	19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/15
	20	९	रवि	19	13	भर.	28	31	शूल	27	12	मेष	सूर्य पुष्य में 9/43, शनि मार्गी 25/57,	20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
	21	१०	चंद्र	19	43	कृति	पूरा	दिन	गंड	26	45	वृ.10/48	भ. 7/28 से 19/43 तक,	21	5/41	19/34	5/40	19/14	5/37	19/20	6/16	19/14
	22	११	मंग	20	43	कृति	5	53	वृद्धि	26	41	वृष	**कामिका एकादशी व्रत**, सूर्य सायन सिंह में 17/11,	22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
	23	१२	बुध	22	09	रोहि	7	43	ध्रुव	26	55	मि.20/47	बुध पुनर्वसु में 20/01, शक श्रावण प्रारम्भ	23	5/42	19/33	5/41	19/13	5/38	19/19	6/16	19/13
	24	१३	गुरु	23	55	मृग	9	56	व्या.	27	25	मिथुन	भ. 23/55 से, प्रदोष व्रत,	24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/39	19/19	6/17	19/13
	25	१४	शुक्र	25	57	आर्द्रा	12	26	हर्ष	28	06	मिथुन	भ. 12/56 तक, मासशिवरात्रि व्रत	25	5/44	19/32	5/42	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
	26	३०	शनि	28	12	पुर्न	15	10	वज्र	28	57	क. 8/28	**हरियाली/शनिवारी अमावस,**	26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/40	19/17	6/17	19/12
श्राव. शुक्ल	27	१	रवि	पूरा	दिन	पुष्य	18	04	सिद्धि	पूरा	दिन	कर्क	मंगल स्वाती में 17/11, श्रावण शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (F)**	27	5/45	19/30	5/43	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
	28	१	चंद्र	6	35	आश्ले	21	05	सिद्धि	5	54	सिं.21/05	चन्द्रदर्शन, मु. 15, **बुध कर्क में 29/39**, गण्डमूल विचार	28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/41	19/16	6/18	19/12
	29	२	मंग	9	03	मघा	24	06	व्य.	6	54	सिंह	शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 24/06 तक	29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/42	19/15	6/18	19/11
	30	३	बुध	11	29	पू.फा.	27	03	वरी	7	54	सिंह	भ. 24/38 से, **मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज**, दूर्वा गणपति व्रत, **(G)**	30	5/47	19/27	5/45	19/10	5/43	19/15	6/19	19/11
	31	४	गुरु	13	47	उ.फा.	29	46	परि	8	48	कं. 9/45	भ. 13/47 तक,	31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/43	19/14	6/19	19/10

गुरु अस्त 11 जुला.

(A) शुक्र मृग. में 7/51, चातुर्मास्य नियम प्रा. (स्मार्त), श्रीविष्णुशयनोत्सव (स्मा.) **(B)** (देखें पृष्ठ 86), कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, **गुरु पश्चिम में अस्त** 28/40, गण्डमूल 20/48 तक **(C)** राहु चित्रा (2) कन्या केतु रेव (4) मीन में 21/52, **(D)** 21/11, अशून्यशयन व्रत **(E)** नाग-पंचमी (राज. व बंगाल), निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ **(F)** (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त 23/55, **(G)** वरद् चतुर्थी, बुध पुष्य में 21/35, शुक्र पुनर्वसु में 10/39,

वि. संवत् 2071, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2014 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा-शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
श्रावण शुक्ल पक्ष	1	५	शुक्र	15	46	हस्त	पूरा	दिन	शिव	9	29	कन्या	नाग-पंचमी, श्रीकल्कि जयन्ती, अगस्त मास प्रारम्भ, (A)	1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
	2	६	शनि	17	17	हस्त	8	05	सिद्ध	9	51	तु.21/02		2	5/49	19/25	5/47	19/08	5/44	19/12	6/20	19/09
	3	७	रवि	18	10	चित्रा	9	51	साध्य	9	45	तुला	भ. 18/10 से, **सूर्य आश्लेषा में 8/30**, गुरु पुष्य (3) में 23/01 (B)	3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	4	८	चंद्र	18	18	स्वा.	10	54	शुभ	9	05	वृ.29/11	भ. 6/14 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी-नैनादेवी (हि.प्र.)	4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
	5	९	मंग	17	36	विशा	11	10	शुक्ल / ब्रह्म	7 / 29	47 / 49	वृश्चिक	**गुरु पूर्व में उदय 23/47**	5	5/51	19/23	5/48	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
	6	१०	बुध	16	05	अनु	10	37	ऐन्द्र	27	12	वृश्चिक	भ. 26/57 से, बुध आश्लेषा में 8/08, गण्डमूल 10/37 से,	6	5/52	19/22	5/49	19/05	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	११	गुरु	13	48	ज्ये.	9	17	वैधृ	24	00	ध. 9/17	भ. 13/48 तक, **पवित्रा एकादशी व्रत, शुक्र कर्क में 16/05,**	7	5/52	19/21	5/49	19/04	5/47	19/08	6/22	19/07
	8	१२	शुक्र	10	51	मूल / पू.षा.	7 / 28	15 / 42	विष्क	20	18	धनु	प्रदोष व्रत, गुरु बाल्यत्व समाप्त 23/47, गंडमूल 7/15 तक — गुरु उदय 5 अगस्त	8	5/53	19/20	5/50	19/03	5/48	19/07	6/22	19/06
	9	१३	शनि	7	24	उ.षा.	25	46	प्रीति	16	14	म. 9/59	भ. 27/36 से प्रा.	9	5/53	19/19	5/51	19/02	5/49	19/06	6/22	19/05
	०	१४	शनि	27	36	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	10	१५	रवि	23	40	श्रव	22	39	आयु	11	57	मकर	भद्रा 13/38 तक, श्रावण पूर्णिमा, रक्षा-बन्धन (भद्रा बाद) (देखें पृ. 86) अर्थवेदि (C)	10	5/54	19/18	5/51	19/01	5/49	19/05	6/22	19/05
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	11	१	चंद्र	19	45	धनि	19	34	सौभा / शोभ	7 / 27	35 / 20	कुं. 9/06	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ 9/06**, गायत्री जपम्	11	5/55	19/17	5/52	19/01	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	२	मंग	16	03	शत	16	42	अति	23	19	कुम्भ	भ. 26/24 से, **बुध मघा (1) सिंह में 21/05**, कज्जली तीज (चं. उ. व्या.)	12	5/56	19/16	5/52	19/00	5/51	19/03	6/23	19/03
	13	३	बुध	12	45	पू.भा.	14	14	सुक	19	40	मी. 8/48	भ. 12/45 तक, श्रीगणेश बहुला चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12-13),	13	5/57	19/15	5/53	18/59	5/51	19/02	6/23	19/03
	14	४	गुरु	9	59	उ.भा.	12	20	धृति	16	30	मीन	गण्डमूल 12/20 से प्रारम्भ	14	5/57	19/13	5/53	18/58	5/52	19/02	6/23	19/02
	15	५	शुक्र	7	53	रेव	11	05	शूल	13	54	मे.11/05	**पंचक समाप्त** 11/05, **भारत स्वतन्त्रता दिवस,** चन्दन षष्ठी व्रत, हल षष्ठी	15	5/58	19/12	5/54	18/57	5/52	19/01	6/23	19/02
	16	६	शनि	6	31	अश्वि	10	36	गंड	11	55	मेष	भ. 6/31 से 18/14 तक, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 10/36 तक	16	5/59	19/11	5/54	18/56	5/53	19/00	6/24	19/01
	०	७	शनि	29	56	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	17	८	रवि	पूरा	दिन	भर	10	53	वृद्धि	10	33	वृ.17/04	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) (देखें पृ. 86) सूर्य मघा (1) सिंह में 6/15, भाद्रपद (D)	17	5/59	19/10	5/55	18/55	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	८	चंद्र	6	07	कृति	11	53	ध्रुव	9	47	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव), गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, गुरु पुष्य (4) में 28/33,	18	6/00	19/09	5/55	18/54	5/54	18/58	6/24	19/00
	19	९	मंग	6	58	रोहि	13	32	व्या.	9	32	मि.26/33	भ. 19/41 से, श्रीगुग्गा-नवमी, मंगल विशाखा में 27/44, बुध पू.फा. में 21/22,	19	6/00	19/08	5/56	18/53	5/55	18/56	6/24	19/00
	20	१०	बुध	8	24	मृग	15	42	हर्ष	9	43	मिथुन	भ. 8/24 तक, शनि विशाखा (2) में 16/47	20	6/01	19/06	5/56	18/52	5/55	18/55	6/24	19/00
	21	११	गुरु	10	16	आर्द्रा	18	15	वज्र	10	14	मिथुन	**अजा एकादशी व्रत,** शुक्र आश्लेषा में 7/11,	21	6/01	19/05	5/57	18/51	5/56	18/54	6/25	18/59
	22	१२	शुक्र	12	27	पुर्न	21	04	सिद्धि	10	59	क.14/21	वत्स द्वादशी (पूजा,) प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय 13/19	22	6/02	19/04	5/58	18/50	5/56	18/53	6/25	18/58
	23	१३	शनि	14	49	पुष्य	24	02	व्य.	11	53	कर्क	भ. 14/49 से 28/03 तक, मासशिवरात्रि व्रत, सूर्य सायन कन्या में (E)	23	6/02	19/03	5/58	18/49	5/57	18/52	6/25	18/57
	24	१४	रवि	17	16	आश्ले	27	02	वरी	12	51	सिं.27/02	गण्डमूल विचार	24	6/03	19/02	5/59	18/48	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	३०	चंद्र	19	43	मघा	30	00	परि	13	49	सिंह	भाद्रपद अमावस, कुशाग्रहणी-**पिठोरी अमावस, सोमवती अमावस (F)**	25	6/04	19/01	5/59	18/47	5/58	18/50	6/26	18/55
भाद्रपद शु.	26	१	मंग	22	04	पू.फा.	पूरा	दिन	शिव	14	43	सिंह	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल 06/00 तक,	26	6/04	19/00	6/00	18/46	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	२	बुध	24	15	पू.फा.	8	51	सिद्ध	15	31	कं.15/32	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, बुध उ.फा. में 14/20,	27	6/05	18/59	6/00	18/45	5/59	18/47	6/26	18/53
	28	३	गुरु	26	10	उ.फा.	11	30	साध्य	16	08	कन्या	**हरितालिका तृतीया,** गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, जिल्काद (मु.) मास प्रा.	28	6/06	18/57	6/01	18/44	6/00	18/46	6/27	18/52
	29	४	शुक्र	27	43	हस्त	13	51	शुभ	16	30	तु.26/53	भ. 14/57 से 27/43 तक, **सिद्धि विनायक व्रत,** कलंक-चतुर्थी (G)	29	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
	30	५	शनि	28	47	चित्रा	15	48	शुक्ल	16	32	तुला	ऋषि-पंचमी, सूर्य पू.फा. में 26/08, **सम्वत्सरी महापर्व** (जैन)	30	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
	31	६	रवि	29	15	स्वा.	17	13	ब्रह्म	16	09	तुला	**सूर्य षष्ठी व्रत, शुक्र** मघा (1) **सिंह में 27/13,**	31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

(A) लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव (B) गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, श्रीशीतला पूजन (C) ऋग्वेदि-यर्जु उपाकर्म, शुक्र पुष्य में 9/41, श्रीसत्यनारायण व्रत, गायत्री जयन्ती, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, ऋषि-तर्पण, संस्कृत-दिवस, हयग्रीव जयंती (D) **संक्रान्ति** मु. १५, पुण्यकाल सं. प्रातः सूर्योदय से दोपहर 12/39 तक, (E) 10/16, शक भाद्रपद प्रारम्भ, अघोरा-डाकिनी चतुर्दशी, कैलाश यात्रा प्रारम्भ-2 दिन (F) लोहार्गल यात्रा (स्नान), रानी सती मेला-झुंझुनूं (राज.), **'ॐ हुँ फट् स्वाहा'** इहमंत्रेण कुशोत्पाटनम्, गण्डमूल (G) (चन्द्रदर्शन निषेध) चन्द्रास्त 20/55 (जालन्धर), पत्थर-चौथ, **बुध कन्या में 15/40,** सामवेदि उपाकर्म (हस्त-नक्षत्रे)

वि. संवत् 2071, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	1	७	चंद्र	29	03	विशा	18	01	ऐन्द्र	15	16	वृ.11/53	भ. 29/03 से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, सितम्बर मास प्रारम्भ	1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
	2	८	मंग	28	09	अनु	18	08	वैधृ	13	50	वृश्चिक	भ. 16/36 तक, दूर्वाष्टमी व्रत, श्रीराधाष्टमी, **श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ**	2	6/09	18/51	6/03	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	९	बुध	26	32	ज्ये.	17	33	विष्क	11	50	ध.17/33	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), गुरु आश्लेषा (1) में 23/40, **(A)**	3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/03	18/40	6/29	18/46
	4	१०	गुरु	24	15	मूल	16	17	प्रीति आयु	9 30	15 10	धनु	**मंगल वृश्चिक में 26/31**, बुध हस्त में 28/43,	4	6/11	18/49	6/04	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	११	शुक्र	21	24	पू.षा.	14	24	सौभा	26	38	म.19/51	भ. 10/50 से 21/24 तक, **पद्मा एकादशी व्रत**	5	6/11	18/48	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	१२	शनि	18	06	उ.षा.	12	02	शोभ	22	45	मकर	शनि प्रदोष व्रत, **वामन जयन्ती, श्रवण द्वादशी,**	6	6/12	18/47	6/05	18/33	6/05	18/35	6/29	18/44
	7	१३	रवि	14	31	श्रव	9	19	अति	18	39	कुं.19/53	**पंचक प्रारम्भ 19/53,**	7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	१४	चंद्र	10	49	धनि शत	6 27	26 33	सुक	14	29	कुम्भ	भ. 10/49 से 20/59 तक, अनन्त चतुर्दशी व्रत, **मेला सोढल (जालंधर) (B)**	8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/06	18/33	6/30	18/43
	9	१५	मंग	7	08	पू.भा.	24	52	धृति	10	22	मी.19/30	भाद्रपद पूर्णिमा, मंगल अनु. में 29/07, **पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रारम्भ (C)**	9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
आश्विन कृष्ण पक्ष	०	१	मंग	27	41	०	०	०	०	०	०	००	प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	10	२	बुध	24	36	उ.भा.	22	32	शूल गंड	6 26	27 52	मीन	द्वितीया का श्राद्ध,	10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/07	18/30	6/30	18/41
	11	३	गुरु	22	04	रेव	20	42	वृद्धि	23	45	मे.20/42	भ. 11/20 से 22/04 तक, **पंचक समाप्त** 20/42, शुक्र पू.फा. में 22/03, **(D)**	11	6/15	18/38	6/07	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	४	शुक्र	20	10	अश्वि	19	32	ध्रुव	21	09	मेष	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12-13), चतुर्थी का श्राद्ध	12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/08	18/28	6/30	18/40
	13	५	शनि	19	01	भर.	19	06	व्या.	19	10	वृ.25/06	सूर्य उ.फा. में 20/04, भरणी श्राद्ध, व्रत, राहु चित्रा (1), केतु रेव (3)**(E)**	13	6/16	18/37	6/08	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	६	रवि	18	40	कृति	19	26	हर्ष	17	48	वृष	भ. 18/40 से, बुध चित्रा में 27/16, षष्ठी का श्राद्ध	14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	15	७	चंद्र	19	06	रोहि	20	33	वज्र	17	04	वृष	भ. 6/53 तक, **श्रीमहालक्ष्मी व्रत** (चंद्रोदय व्यापिनी), सप्तमी का श्राद्ध	15	6/17	18/35	6/09	18/22	6/10	18/24	6/30	18/37
	16	८	मंग	20	14	मृग	22	20	सिद्धि	16	53	मि. 9/21	**सूर्य कन्या में 30/11, आश्विन संक्रान्ति**, मु. 15, पुण्यकाल **(F)**	16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
	17	९	बुध	21	58	आर्द्रा	24	41	व्य.	17	10	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, **मातृ-नवमी**, नवमी का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन	17	6/18	18/31	6/10	18/20	6/11	18/22	6/31	18/35
	18	१०	गुरु	24	08	पुर्न	27	25	वरी	17	48	क.20/42	भ. 11/03 से 24/08 तक, दशमी का श्राद्ध	18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	११	शुक्र	26	33	पुष्य	पूरा	दिन	परि.	18	39	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत**, एकादशी का श्राद्ध	19	6/20	18/28	6/11	18/17	6/12	18/19	6/31	18/34
	20	१२	शनि	29	04	पुष्य	6	23	शिव	19	36	कर्क	सन्यासीनां श्राद्ध, **बुध तुला में 26/15**, गुरु आश्लेषा (2) में 21/56,**(G)**	20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	१३	रवि	पूरा	दिन	आश्ले	9	24	सिद्ध	20	32	सिं. 9/24	प्रदोष व्रत, मघा त्रयो, गजछाया योग 9/24 से, त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध	21	6/22	18/26	6/12	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	१३	चंद्र	7	30	मघा	12	20	साध्य	21	22	सिंह	भ. 7/30 से 20/38 तक, शुक्र उ.फा. में 15/45, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि **(H)**	22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/14	18/15	6/32	18/31
	23	१४	मंग	9	45	पू.फा.	15	04	शुभ	22	01	कं.21/42	अमावस (पितृकार्येषु), **सर्वपितृ श्राद्ध**, पितृ विसर्जन, **(I)**	23	6/23	18/24	6/13	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	३०	बुध	11	44	उ.फा.	17	31	शुक्ल	22	26	कन्या	आश्विन अमावस (स्नानदान, देवकार्येषु), मातामह (नाना) का श्राद्ध	24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/15	18/13	6/32	18/29
आश्विन शुक्ल	25	१	गुरु	13	23	हस्त	19	39	ब्रह्म	22	35	कन्या	**आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, शुक्र कन्या में 8/01**, घटस्थापन, **(J)**	25	6/24	18/21	6/14	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	२	शुक्र	14	38	चित्रा	21	23	ऐंद्र	22	25	तु. 8/34	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,	26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/16	18/10	6/33	18/27
	27	३	शनि	15	27	स्वा.	22	42	वैधृ	21	54	तुला	भ. 27/38 से, सूर्य हस्त में 11/31, जिल्हिजा (मु.) मास प्रारम्भ,	27	6/25	18/18	6/15	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	४	रवि	15	49	विशा	23	33	विष्क	21	01	वृ.17/23	भ. 15/49 तक,	28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	५	चंद्र	15	41	अनु	23	54	प्रीति	19	44	वृश्चिक	बुध स्वाती में 10/26, मंगल ज्येष्ठा में 20/48, उपाङ्ग ललिता व्रत, ललिता पंचमी	29	6/26	18/15	6/16	18/06	6/18	18/06	6/33	18/24
	30	६	मंग	15	01	ज्ये.	23	44	आयु	18	02	ध.23/44	गण्डमूल विचार	30	6/27	18/14	6/17	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

(A) श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ **(B)** श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी/महालय श्राद्ध प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध **(C)** प्रतिपदा का श्राद्ध **(D)** तृतीया का श्राद्ध **(E)** में 19/38, पंचमी का श्राद्ध **(F)** सं. अगले दिन दोपहर 12/35 तक, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त (सू.उ. व्यापिनी), जीवित्पुत्रिका व्रत **(G)** द्वादशी का श्राद्ध **(H)** से मृतों का श्राद्ध मासशिवरात्रि व्रत, **(I)** चतुर्दशी/अमावस का श्राद्ध, सूर्य सायन तुला में 7/59, शक आश्विन प्रारम्भ, दक्षिण गोल प्रारम्भ, अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का श्राद्ध **(J)** महाराजा अग्रसेन जयन्ती

वि. संवत् 2071, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद्-हेमन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
आश्विन शुक्ल पक्ष	1	७	बुध	13	50	मूल	23	04	सौभा	15	56	धनु	भ. 13/50 से 24/59 तक, सरस्वती आवाहन मूलभे, अक्तूबर मास प्रारम्भ	1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
	2	८	गुरु	12	08	पू.षा.	21	53	शोभ	13	24	म.27/32	श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, शुक्र पूर्व में अस्त 7/19, सरस्वती पूजन पू.षा.भे,(A)	2	6/28	18/10	6/18	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
	3	९	शुक्र	9	59	उ.षा.	20	17	अति	10	30	मकर	महानवमी, नवरात्रे समाप्त, विजयादशमी (दशहरा) (देखें पृ. 87) (B)	3	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
	4	१०	शनि	7	25	श्रव	18	19	सुक धृति	7 27	17 48	कुं.29/14	भ. 17/59 से 28/33 तक, पंचक प्रारम्भ 29/14, पापांकुशा (C)	4	6/30	18/08	6/19	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
	०	११	शनि	28	33	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	5	१२	रवि	25	28	धनि	16	06	शूल	24	08	कुम्भ	पापांकुशा एकादशी व्रत (वेष्णव,) पद्मनाभ द्वादशी — शुक्र अस्त 2 अक्तू.	5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
	6	१३	चंद्र	22	19	शत	13	44	गंड	20	25	मी.29/57	सोम प्रदोष व्रत,	6	6/31	18/06	6/20	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
	7	१४	मंग	19	14	पू.भा.	11	23	वृद्धि	16	44	मीन	भ. 19/14 से 29/48 तक, शरद् पूर्णिमा, कोजागर व्रत (देखें पृ. 88), श्रीसत्यनारायण व्रत	7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/23	17/56	6/35	18/19
	8	१५	बुध	16	21	उ.भा.	9	10	ध्रुव	13	12	मीन	आश्विन पूर्णिमा (स्नानदानादि), ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण (देखें पृ. 14-18), (D)	8	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
कार्तिक कृष्ण पक्ष	9	१	गुरु	13	49	रेव अश्वि	7 29	16 48	व्या. हर्ष	9 7	56 02	मे. 7/16	कार्तिक कृष्ण पक्ष प्रा., पंचक समाप्त 7/16, वक्री बुध चित्रा (4) (E)	9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
	10	२	शुक्र	11	45	भर.	28	54	वज्र	28	37	मेष	भ. 23/02 से, सूर्य चित्रा में 24/34,	10	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
	11	३	शनि	10	19	कृति	28	41	सिद्धि	26	44	वृ.10/47	भ. 10/19 तक, श्रीगणेश चतुर्थी, व्रत करवाचौथ (करक-चतुर्थी) (F)	11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
	12	४	रवि	9	34	रोहि	29	10	व्य.	25	26	वृष		12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
	13	५	चंद्र	9	34	मृग	30	24	वरी	24	43	मि.17/42	शुक्र चित्रा में 24/44,	13	6/36	17/57	6/24	17/49	6/27	17/49	6/36	18/14
	14	६	मंग	10	19	आर्द्रा	पूरा	दिन	परि	24	34	मिथुन	भ. 10/19 से 23/03 तक, स्कन्द षष्ठी	14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/28	17/48	6/37	18/13
	15	७	बुध	11	46	आर्द्रा	8	19	शिव	24	53	क.28/07	अहोई अष्टमी व्रत (चं. उ. व्यापिनी), कालाष्टमी, दम्पत्य अष्टमी	15	6/38	17/54	6/26	17/47	6/29	17/47	6/37	18/12
	16	८	गुरु	13	46	पुर्न	10	46	सिद्ध	25	33	कर्क	वक्री बुध कन्या में 13/09, गुरु पुष्य योग (10/46 बाद से)	16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/29	17/46	6/37	18/11
	17	९	शुक्र	16	08	पुष्य	13	37	साध्य	26	25	कर्क	भ. 29/24 से, सूर्य तुला में 18/09, कार्तिक संक्रान्ति, मु. 15, (G)	17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/30	17/45	6/38	18/10
	18	१०	शनि	18	40	आश्ले	16	37	शुभ	27	20	सिं.16/37	भ. 18/40 तक, मंगल मूल (1) धनु में 13/47,	18	6/40	17/51	6/27	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
	19	११	रवि	21	08	मघा	19	35	शुक्ल	28	10	सिंह	रमा एकादशी व्रत, शुक्र तुला में 8/37, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/31	17/43	6/38	18/08
	20	१२	चंद्र	23	22	पू.फा.	22	19	ब्रह्म	28	47	कं.28/57	गोवत्स द्वादशी	20	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
	21	१३	मंग	25	13	उ.फा.	24	42	ऐन्द्र	29	05	कन्या	भ. 25/13 से, भौम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, श्रीधनवन्तरी जयन्ती, (H)	21	6/42	17/48	6/29	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
	22	१४	बुध	26	35	हस्त	26	37	वैधृ	29	01	कन्या	भ. 13/54 तक, श्रीहनुमान जयन्ती, नरक चौदश, रूप चौदश (I)	22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
	23	३०	गुरु	27	27	चित्रा	28	03	विष्क	28	33	तु.15/23	कार्तिक अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, (J)	23	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
कार्तिक शुक्ल पक्ष	24	१	शुक्र	27	48	स्वा	28	59	प्रीति	27	42	तुला	कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, अन्नकूट-गोवर्धन पूजा, बलि व मार्गपाली (K)	24	6/44	17/45	6/31	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
	25	२	शनि	27	40	विशा	29	27	आयु	26	28	वृ.23/22	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, भ्रातृ-दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजन, (L)	25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
	26	३	रवि	27	05	अनु	29	29	सौभा	24	53	वृश्चिक	मुहर्रम (मु.) सं. 1436 हिजरी प्रारम्भ,	26	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
	27	४	चंद्र	26	07	ज्ये.	29	08	शोभ	22	59	ध.29/08	भ. 14/36 से 26/07 तक, दूर्वा गणपति व्रत	27	6/47	17/42	6/33	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
	28	५	मंग	24	48	मूल	28	28	अति	20	49	धनु	बुध चित्रा में 15/43, ज्ञान पंचमी, जया पंचमी	28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
	29	६	बुध	23	11	पू.षा.	27	30	सुक	18	23	धनु	सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)	29	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
	30	७	गुरु	21	19	उ.षा.	26	18	धृति	15	45	म. 9/13	भ. 21/19 से प्रारम्भ	30	6/50	17/38	6/36	17/34	6/40	17/32	6/42	18/03
	31	८	शुक्र	19	15	श्रव.	24	54	शूल	12	57	मकर	भ. 8/17 तक, गोपाष्टमी	31	6/51	17/38	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

(A) महात्मा गाँधी जयन्ती, मेला काँगड़ा, ज्वालामुखी (हि.प्र.) **(B)** अपराजिता/शस्त्रादि पूजन, सरस्वती बलिदान उ.षा.भे, सरस्वती विसर्जन (श्रवणे), शुक्र हस्त में 8/34, शनि विशा. (3) में 10/30 **(C)** एकादशी व्रत (स्मार्त), बुध वक्री 22/30, भरत मिलाप **(D)** (भारत में दृश्य), कार्तिक स्नान प्रारम्भ, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती **(E)** में 21/51, ग्रहण-करिदिन, गुरु आश्ले. (3) में 26/20 **(F)** चन्द्रोदय हेतु देखें पृष्ठ 12-13, दशरथ चतुर्थी, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 10/30 **(G)** पुण्यकाल सं. दोपहर 11/45 बाद **(H)** यमाय प्रीत्यर्थं दीपदान **(I)** मासशिवरात्रि व्रत, वक्री बुध पूर्व में उदय 29/26, यमाय तर्पण **(J)** सूर्य सायन वृश्चिक में 17/27, हेमन्त ऋतु प्रा., वक्री बुध हस्त (4) में 11/12, कुबेर पूजा, काली पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), शक कार्तिक प्रारम्भ **(K)** पूजन, विश्वकर्मा दिवस (पंजाब), सूर्य स्वा. में 11/05, शुक्र स्वा. में 16/22 **(L)** बुध मार्गी 24/44

वि. संवत् 2071, नवंबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	९	शनि	17 01	धनि	23 21	गंड	9 59	कुं.12/08	पंचक प्रारम्भ 12/08, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी, शनि पश्चिम में(A)	1	6/51	17/35	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	१०	रवि	14 40	शत	21 42	वृद्धि ध्रुव	6 56 27 49	कुम्भ	भ. 25/28 से, शनि विशा. (4) वृश्चिक में 20/53, भीष्मपंचक प्रा.(B)	2	6/52	17/34	6/37	17/34	6/41	17/30	6/44	18/01
	3	११	चंद्र	12 16	पू.भा.	20 02	व्या.	24 41	मी.14/27	भ. 12/16 तक, देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत- (C)	3	6/53	17/33	6/38	17/33	6/42	17/29	6/44	18/01
	4	१२	मंग	9 54	उ.भा.	18 25	हर्ष	21 37	मीन	भौम प्रदोष व्रत, तुलसी विवाह, बुध तुला में 21/17, शुक्र विशा. में 7/40,	4	6/54	17/32	6/39	17/32	6/43	17/28	6/45	18/00
	5	१३	बुध	7 39	रेव	16 57	वज्र	18 41	मे.16/57	भ. 29/36 से, पंचक समाप्त 16/57, मंगल पू.षा. में 14/48, वैकुण्ठ चतुर्दशी	5	6/54	17/31	6/39	17/31	6/44	17/27	6/45	18/00
	०	१४	बुध	29 36	०	० ०	०	० ०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	6	१५	गुरु	27 53	अश्वि	15 44	सिद्धि	15 58	मेष	भ. 16/45 तक, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, सूर्य विशाखा में (D)	6	6/55	17/30	6/40	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	7	१	शुक्र	26 35	भर	14 53	व्य.	13 33	वृ.20/44	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मृगछोड़ी स्नान प्रारम्भ, पद्मक योग 14/53 से अगले दिन	7	6/56	17/30	6/41	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	8	२	शनि	25 50	कृति	14 30	वरी	11 30	वृष	पद्मक योग 14/30 तक (पुष्कर-तीर्थ स्नान माहात्म्य)	8	6/57	17/29	6/42	17/29	6/46	17/25	6/46	17/58
	9	३	रवि	25 41	रोहि	14 42	परि	9 54	मि.27/01	भ. 13/46 से 25/41 तक, बुध स्वाती में 16/30, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	9	6/58	17/28	6/43	17/28	6/47	17/24	6/47	17/58
	10	४	चंद्र	26 13	मृग	15 31	शिव	8 48	मिथुन	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 12-13),	10	6/59	17/28	6/43	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	11	५	मंग	27 25	आर्द्रा	17 00	सिद्ध	8 13	मिथुन		11	7/00	17/27	6/44	17/27	6/49	17/23	6/48	17/57
	12	६	बुध	29 14	पुर्न	19 05	साध्य	8 08	क.12/30	भ. 29/14 से, शुक्र वृश्चिक में 7/02,	12	7/01	17/26	6/45	17/26	6/50	17/22	6/49	17/57
	13	७	गुरु	पूरा दिन	पुष्य	21 41	शुभ	8 30	कर्क	भ. 18/23 तक, गुरु पुष्य योग	13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	७	शुक्र	7 31	आश्ले	24 37	शुक्ल	9 12	सिं.24/37	श्रीकाल-भैरवाष्टमी, शुक्र अनुराधा में 22/48, नेहरू जयन्ती (बाल-दिवस)	14	7/03	17/26	6/46	17/25	6/51	17/21	6/50	17/56
	15	८	शनि	10 03	मघा	27 38	ब्रह्म	10 05	सिंह	राहु हस्त (4), केतु रेव. (2) में 17/27, बुध पूर्व में अस्त 17/55	15	7/04	17/25	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	16	९	रवि	12 37	पू.फा.	30 31	ऐन्द्र	10 59	सिंह	भ. 25/47 से, सूर्य वृश्चिक में 18/00, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु. 30, (E)	16	7/05	17/25	6/48	17/24	6/53	17/20	6/51	17/56
	17	१०	चंद्र	14 57	उ.फा.	पूरा दिन	वैधृ	11 42	कं.13/11	भ. 14/57 तक, बुध विशाखा में 30/39,	17	7/06	17/24	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/55
	18	११	मंग	16 50	उ.फा.	9 02	विष्क	12 07	कन्या	उत्पन्ना एकादशी व्रत,	18	7/07	17/23	6/50	17/23	6/55	17/19	6/52	17/55
	19	१२	बुध	18 08	हस्त	11 02	प्रीति	12 06	तु.23/47	सूर्य अनु. में 25/19,	19	7/08	17/23	6/50	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	१३	गुरु	18 45	चित्रा	12 24	आयु	11 35	तुला	भ. 18/45 से 30/44 तक, प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत	20	7/09	17/23	6/51	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	१४	शुक्र	18 42	स्वा.	13 06	सौभा	10 33	तुला	श्रीबालाजी जयन्ती, मेला पुरमण्डल (जम्मू), देविका स्नान (का.)	21	7/10	17/22	6/52	17/22	6/57	17/18	6/54	17/55
	22	३०	शनि	18 02	विशा	13 11	शोभ अति	9 00 31 01	वृ. 7/13	मार्गशीर्ष (शनिवारी) अमावस, मंगल उ.षा. में 28/47, सूर्य सायन (F)	22	7/11	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	23	१	रवि	16 50	अनु	12 44	सुक	28 39	वृश्चिक	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,	23	7/12	17/22	6/54	17/21	6/59	17/18	6/55	17/55
	24	२	चंद्र	15 13	ज्ये.	11 51	धृति	25 59	ध.11/51	बुध वृश्चिक में 13/57, सफर (मु.) मास प्रारम्भ **शुक्र उदय 27 नवं.**	24	7/13	17/21	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	३	मंग	13 17	मूल	10 39	शूल	23 08	धनु	भ. 24/14 से, शुक्र ज्येष्ठा में 13/45,	25	7/14	17/21	6/55	17/21	7/01	17/17	6/56	17/55
	26	४	बुध	11 10	पू.षा.	9 14	गंड	20 10	म.14/52	भ. 11/10 तक, बुध अनुराधा में 16/27,	26	7/15	17/21	6/56	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	५	गुरु	8 59	उ.षा. श्रव	7 44 30 14	वृद्धि	17 10	मकर	श्रीराम विवाहोत्सव, श्रीपञ्चमी, नाग-पंचमी, मंगल मकर में 12/57, (G)	27	7/16	17/20	6/57	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	०	६	गुरु	30 47	०	० ०	०	० ०	००	षष्ठी तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
	28	७	शुक्र	28 38	धनि	28 48	ध्रुव	14 11	कुं.17/30	भ. 28/38 से, पंचक प्रारम्भ 17/30, मित्र (विष्णु) सप्तमी	28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	29	८	शनि	26 37	शत	27 28	व्या.	11 16	कुम्भ	भ. 15/38 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	29	7/17	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/58	17/55
	30	९	रवि	24 43	पू.भा.	26 16	हर्ष वज्र	8 27 29 44	मी.20/33	शनि अनुराधा (1) में 23/44, नन्दा नवमी	30	7/18	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

(A) अस्त 16/02, आरोग्य व्रत, नवम्बर मास प्रा. (B) (देखें पृ. 88), ब्रह्मप्राप्ति व्रत (C) नियमादि समाप्त, गुरु आश्ले. (4) में 28/16, (D) 19/13, दीपदान, भीष्मपंचक समाप्ति, कार्तिक स्नान समाप्त, त्रिपुरोत्सव,
[illegible]

वि. संवत् 2071, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2014 ई.

मास पक्ष	दिसम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिण/उत्तरायणे घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] हेमन्त/शिशिर ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
मार्गा. शुक्ल पक्ष	1	१०	चंद्र	23	00	उ.भा.	25	14	सिद्धि	27	10	मीन	दिसम्बर मास प्रारम्भ	1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
	2	११	मंग	21	27	रेव	24	23	व्य.	24	44	मे.24/23	भ. 10/14 से 21/27 तक, पंचक समाप्त 24/23, **मोक्षदा एकादशी व्रत (A)**	2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	3	१२	बुध	20	08	अश्वि	23	45	वरी	22	29	मेष	अखण्ड द्वादशी, गण्डमूल विचार	3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	१३	गुरु	19	04	भर.	23	22	परि	20	27	वृ.29/19	प्रदोष व्रत, बुध ज्ये. में 27/31, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	5	१४	शुक्र	18	19	कृति	23	19	शिव	18	39	वृष	भ. 18/19 से 30/08 तक, शुक्र मूल (1) धनु में 28/42, शनि पूर्व में उदय(B)	5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/09	17/16	7/02	17/57
	6	१५	शनि	17	57	रोहि	23	39	सिद्ध	17	10	वृष	**मार्गशीर्ष पूर्णिमा**, त्रिपुरभैरव जयन्ती,	6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/10	17/16	7/03	17/57
पौष कृष्ण पक्ष	7	१	रवि	18	03	मृग	24	27	साध्य	16	02	मि.11/59	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ	7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	२	चंद्र	18	40	आर्द्रा	25	46	शुभ	15	18	मिथुन	**गुरु वक्री 26/10**	8	7/24	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/04	17/57
	9	३	मंग	19	52	पुर्न	27	38	शुक्ल	14	59	क.21/07	भ. 7/16 से 19/52 तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12-13),	9	7/25	17/20	7/06	17/21	7/12	17/17	7/05	17/58
	10	४	बुध	21	37	पुष्य	30	01	ब्रह्म	15	06	कर्क	मंगल श्रवण में 11/18	10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	11	५	गुरु	23	50	आश्ले	पूरा	दिन	ऐन्द्र	15	36	कर्क	गण्डमूल विचार	11	7/27	17/21	7/07	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
	12	६	शुक्र	26	23	आश्ले	8	48	वैधृ	16	23	सिं. 8/48	भ. 26/23 से, गण्डमूल	12	7/28	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/07	17/59
	13	७	शनि	29	03	मघा	11	50	विष्क	17	18	सिंह	भ. 15/43 तक, बुध मूल (1) धनु में 15/10, गण्डमूल 11/50 तक	13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/18	7/07	17/59
	14	८	रवि	पूरा	दिन	पू.फा.	14	54	प्रीति	18	12	कं.21/38	रूक्मणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध	14	7/29	17/22	7/09	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	८	चंद्र	7	34	उ.फा.	17	43	आयु	18	53	कन्या		15	7/30	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	16	९	मंग	9	41	हस्त	20	04	सौभा	19	12	कन्या	भ. 22/26 से, **सूर्य मूल (1) धनु में 8/42, पौष संक्रान्ति**, मु. ३०, **(C)**	16	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	17	१०	बुध	11	10	चित्रा	21	45	शोभ	19	00	तु. 9/00	भ. 11/10 तक, श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती (जैन)	17	7/31	17/23	7/11	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
	18	११	गुरु	11	53	स्वा.	22	41	अति	18	11	तुला	**सफला एकादशी व्रत,**	18	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/20	7/10	18/01
	19	१२	शुक्र	11	46	विशा	22	48	सुक	16	44	वृ.16/51	श्रीबोधनाचार्य जयन्ती, प्रदोष व्रत,	19	7/32	17/23	7/12	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	१३	शनि	10	52	अनु.	22	12	धृति	14	41	वृश्चिक	भ. 10/52 से 22/04 तक, मासशिवरात्रि व्रत, गण्डमूल 22/12 से प्रारम्भ,	20	7/32	17/23	7/13	17/24	7/19	17/20	7/11	18/02
	21	१४	रवि	9	16	ज्ये.	20	57	शूल	12	05	ध.20/57	पौष अमावस (प्रात: 9/16 बाद), बुध पू.षा. में 25/14, सूर्य सायन **(D)**	21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
	०	३०	रवि	31	06	०	०	०	०	०	०	००	अमावस तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
पौष शुक्ल पक्ष	22	१	चंद्र	28	31	मूल	19	14	गंड वृद्धि	9 / 29	03 / 42	धनु	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ, गण्डमूल 19/14 तक	22	7/33	17/24	7/14	17/25	7/20	17/21	7/12	18/03
	23	२	मंग	25	41	पू.षा.	17	12	ध्रुव	26	09	म.22/40	चन्द्रदर्शन, मु. 45, आरोग्य व्रत	23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	३	बुध	22	47	उ.षा.	15	01	व्या.	22	33	मकर	रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गौरी पूजन	24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/21	17/23	7/13	18/04
	25	४	गुरु	19	56	श्रव.	12	51	हर्ष	18	59	कुं.23/49	भ. 9/22 से 19/56 तक, **पंचक प्रारम्भ** 23/49, क्रिसमिस डे (बड़ा दिन)	25	7/35	17/26	7/15	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	५	शुक्र	17	17	धनि	10	50	वज्र	15	34	कुम्भ		26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
	27	६	शनि	14	54	शत	9	04	सिद्धि	12	23	मी.25/58	मंगल धनि. में 13/33, शुक्र उ.षा. में 10/50	27	7/36	17/27	7/16	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
	28	७	रवि	12	53	पू.भा. / उ.भा.	7 / 30	39 / 36	व्य. / वरी	9 / 30	29 / 53	मीन	भ. 12/53 से 24/05 तक, मार्तण्ड सप्तमी, **गुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती**	28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	८	चंद्र	11	16	रेव	29	56	परि	28	36	मे.29/56	श्रीदुर्गाष्टमी, **शुक्र मकर में 26/38, पंचक समाप्त 29/56 (E)**	29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/23	17/26	7/15	18/06
	30	९	मंग	10	01	अश्वि	29	39	शिव	26	37	मेष	बुध उ.षा. में 9/27, गण्डमूल 29/39 तक	30	7/37	17/30	7/17	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	१०	बुध	9	10	भर.	29	43	सिद्ध	24	56	मेष	भ. 20/56 से, बुध पश्चिम में उदय 11/38, इंग्लिश सं. ई० 2014 समाप्त	31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

(A) गीता जयन्ती, सूर्य ज्येष्ठा में 29/36, गंडमूल **(B)** 9/13, पिशाचमोचन श्राद्ध, शिवचतुर्दशी व्रत, श्रीदत्तात्रेय जयन्ती (देखें पृ. 88), श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 88) **(C)** पुण्यकाल सं. दोपहर 15/06 तक,
(D) मकर में 28/34, सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(E)** सूर्य पू.षा. में 10/51, गण्डमूल 06/36 से

वि. संवत् 2071, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचाङ्ग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2015 ई.

सूर्य उत्तरायण | शिशिर ऋतुः

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.]
पौष शुक्ल	1	११	गुरु	8	41	कृति	30	08	साध्य	23	31	वृ.11/47	भ. 8/41 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत**, बुध मकर में 11/44, (A)
	2	१२	शुक्र	8	33	रोहि	30	54	शुभ	22	23	वृष	प्रदोष व्रत,
	3	१३	शनि	8	47	मृग	पूरा	दिन	शुक्ल	21	31	मि.19/25	
	4	१४	रवि	9	23	मृग	8	01	ब्रह्म	20	58	मिथुन	भ. 9/23 से 21/53 तक, **मंगल कुम्भ में 25/58**, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B)
	5	१५	चंद्र	10	23	आर्द्रा	9	32	ऐन्द्र	20	43	क.28/56	**पौष पूर्णिमा**, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण पक्ष	6	१	मंग	11	49	पुर्न	11	27	वैधृ	20	48	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र श्रवण में 26/15
	7	२	बुध	13	41	पुष्य	13	47	विष्क	21	12	कर्क	भ. 26/49 से, बुध श्रवण में 23/22,
	8	३	गुरु	15	57	आश्ले	16	29	प्रीति	21	53	सिं.16/29	भ. 15/57 तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ 12-13), (C)
	9	४	शुक्र	18	32	मघा	19	29	आयु	22	46	सिंह	
	10	५	शनि	21	16	पू.फा.	22	37	सौभा	23	45	कं.29/24	
	11	६	रवि	23	56	उ.फा.	25	41	शोभ	24	41	कन्या	भ. 23/56 से, सूर्य उ.षा. में 12/56,
	12	७	चंद्र	26	17	हस्त	28	27	अति	25	22	कन्या	भ. 13/07 तक, वक्री गुरु आश्ले. (3) में 17/41, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती
	13	८	मंग	28	06	चित्रा	30	40	सुक	25	39	तु.17/38	मंगल शत. में 14/22, **लोहड़ी पर्व** (पं., हि.प्र., हरि., दिल्ली)
	14	९	बुध	29	10	स्वा.	पूरा	दिन	धृति	25	23	तुला	**सूर्य मकर में 19/26, मकर (माघ) संक्रान्ति**, मु. 15, पुण्यकाल (D)
	15	१०	गुरु	29	22	स्वा.	8	09	शूल	24	28	वृ.26/44	भ. 17/16 से 29/22 तक,
	16	११	शुक्र	28	40	विशा	8	49	गंड	22	52	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत**
	17	१२	शनि	27	08	अनु	8	36	वृद्धि	20	35	वृश्चिक	तिल द्वादशी, शुक्र धनि. में 18/09, राहु हस्त (3), केतु रेव. (1) में 15/07,
	18	१३	रवि	24	51	ज्ये. मूल	7 29	35 52	ध्रुव	17	41	ध. 7/35	भ. 24/51 से, प्रदोष व्रत,
	19	१४	चंद्र	22	00	पू.षा.	27	36	व्या	14	17	धनु	भ. 11/26 तक, मासशिवरात्रि व्रत
	20	३०	मंग	18	44	उ.षा.	25	00	हर्ष वज्र	10 30	29 27	म. 8/59	**माघ (मौनी) अमावस, भौमवती अमावस**, मेला हरिद्वार, प्रयागराजादि (E)
माघ शुक्ल पक्ष	21	१	बुध	15	15	श्रव	22	13	सिद्धि	26	20	मकर	माघ शुक्ल पक्ष प्रा., चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शक माघ प्रारम्भ, **बुध वक्री 21/21** *
	22	२	गुरु	11	44	धनि	19	29	व्य.	22	15	कुं. 8/50	**पंचक प्रारम्भ 8/50**, शुक्र कुम्भ में 26/17, रबि-उल्सानी (मु.) मास प्रा
	23	३	शुक्र	8	21	शत	16	56	वरी	18	21	कुम्भ	भ. 18/49 से 29/16 तक, गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत (देखें पृ. 88) (F)
	०	४	शुक्र	29	16	००	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० *सूर्य अभिजित नक्षत्र में 8/33
	24	५	शनि	26	36	पू.भा.	14	44	परि	14	45	मी. 9/14	**वसन्त (श्री) पंचमी**, सरस्वती पूजन, सूर्य श्रव. में 15/09, वागेश्वरी (G)
	25	६	रवि	24	27	उ.भा.	12	59	शिव	11	32	मीन	दारिद्रयहर षष्ठी व्रत, सूर्य अभिजित नक्षत्र से निर्वत 12/07
	26	७	चंद्र	22	53	रेव	11	48	सिद्ध साध्य	8 30	45 26	मे.11/48	भ. 22/53 से, **पंचक समाप्त 11/48**, रथ-आरोग्य सप्तमी, भारत (H)
	27	८	मंग	21	53	अश्वि	11	11	शुभ	28	35	मेष	भ. 10/23 तक, भीष्माष्टमी
	28	९	बुध	21	29	भर	11	08	शुक्ल	27	10	वृ.17/13	शुक्र शतभिषा में 10/39,
	29	१०	गुरु	21	37	कृति	11	38	ब्रह्म	26	10	वृष	
	30	११	शुक्र	22	14	रोहि	12	38	ऐन्द्र	25	32	मि.25/17	भ. 9/56 से 22/14 तक, **जया एकादशी व्रत**, मंगल पू.भा. में 15/58
	31	१२	शनि	23	18	मृग	14	04	वैधृ	25	14	मिथुन	भीष्म-द्वादशी, तिल द्वादशी

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
2	7/37	17/30	7/18	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
6	7/38	17/33	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
7	7/38	17/34	7/19	17/35	7/25	17/32	7/17	18/12
8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
11	7/39	17/38	7/20	17/38	7/25	17/36	7/18	18/14
12	7/38	17/39	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/15
13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
16	7/37	17/43	7/19	17/42	7/25	17/40	7/19	18/18
17	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/41	7/19	18/18
18	7/37	17/44	7/19	17/44	7/24	17/42	7/19	18/19
19	7/36	17/45	7/18	17/45	7/24	17/43	7/19	18/20
20	7/36	17/46	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
21	7/36	17/47	7/18	17/47	7/24	17/44	7/19	18/21
22	7/35	17/48	7/18	17/47	7/23	17/45	7/19	18/22
23	7/35	17/49	7/17	17/48	7/23	17/46	7/19	18/22
0	00	00	00	00	00	00	00	00
24	7/35	17/50	7/17	17/49	7/23	17/47	7/19	18/23
25	7/35	17/51	7/17	17/50	7/22	17/48	7/19	18/23
26	7/34	17/52	7/16	17/51	7/22	17/49	7/18	18/24
27	7/33	17/53	7/16	17/52	7/21	17/50	7/18	18/24
28	7/32	17/54	7/16	17/52	7/21	17/51	7/18	18/25
29	7/32	17/55	7/15	17/53	7/20	17/52	7/18	18/25
30	7/31	17/56	7/15	17/54	7/20	17/53	7/18	18/26
31	7/31	17/57	7/14	17/55	7/19	17/54	7/18	18/27

(A) जनवरी सन् 2015 ई० प्रारम्भ (B) श्रीशाकंभरी जयन्ती, ईशान व्रत (C) सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, वक्रतुण्डचतुर्थी (D) सं. दोपहर 13/02 से, अगले दिन प्रातः 11/23 तक (E) सूर्य सायन कुम्भ में 15/14, (F) श्रीगणेश तिल चतुर्थी, वरद (कुन्द) चतुर्थी, नेताजी सुभाषचंद्र जयन्ती (G) जयन्ती, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 19/24 (H) गणतन्त्र दिवस, पुत्र सप्तमी व्रत, अचला-भानु सप्तमी, माधवाचार्य जयंती

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टै. टा.] — शिशिर-वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं. मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं. मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं. मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं. मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं. मिं.
मा. शु.	1	१३	रवि	24 44	आर्द्रा	15 53	विष्क	25 13	मिथुन	प्रदोष व्रत, फरवरी-सन् 2015 ई. मास प्रारम्भ, मेला जैसलमेर (राज.)(A)	1	7/30	17/57	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	१४	चंद्र	26 32	पुर्न	18 03	प्रीति	25 29	क.11/28	भ. 26/32 से	2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	१५	मंग	28 39	पुष्य	20 32	आयु	25 58	कर्क	भ. 15/34 तक, **माघ-पूर्णिमा**, माघस्नान समाप्त, श्रीगुरु रविदास जयन्ती **(Z)**	3	7/29	17/58	7/12	17/57	7/17	17/56	7/17	18/29
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	4	१	बुध	31 03	आश्ले	23 17	सौभा	26 40	सिं.23/17	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,	4	7/28	17/59	7/12	17/58	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	२	गुरु	पूरा दिन	मघा	26 16	शोभ	27 32	सिंह	वक्री बुध उ.षा. (4) में 9/21, वक्री बुध पूर्व में उदय 9/56	5	7/28	18/00	7/11	17/59	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	२	शुक्र	9 39	पू.फा.	29 23	अति	28 31	सिंह	भ. 23/00 से, सूर्य धनिष्ठा में 18/21,	6	7/27	18/02	7/11	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	३	शनि	12 21	उ.फा.	पूरा दिन	सुक	29 29	कं.12/10	भ. 12/21 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 12-13), शुक्र पू.भा. में 28/11,	7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	४	रवि	15 01	उ.फा.	8 30	धृति	30 21	कन्या	वक्री गुरु आश्ले. (2) में 17/26,	8	7/25	18/04	7/09	18/01	7/14	18/00	7/15	18/31
	9	५	चंद्र	17 28	हस्त	11 27	शूल	30 58	तु.24/48		9	7/24	18/05	7/09	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	10	६	मंग	19 30	चित्रा	14 03	गंड	31 12	तुला	भ. 19/30 से, शनि अनु. (3) में 17/38	10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	11	७	बुध	20 54	स्वा.	16 06	वृद्धि	30 54	तुला	भ. 8/12 तक, बुध मार्गी 20/25,	11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	८	गुरु	21 33	विशा	17 26	ध्रुव	30 00	वृ.11/10	**मंगल मीन में 13/12**, जानकी व्रत (मतान्तरे)	12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
	13	९	शुक्र	21 21	अनु	17 58	व्या.	28 25	वृश्चिक	**सूर्य कुम्भ में 8/26, फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. दोप. **(B)**	13	7/21	18/08	7/05	18/05	7/10	18/04	7/12	18/34
	14	१०	शनि	20 16	ज्ये.	17 38	हर्ष	26 09	ध.17/38	भ. 8/49 से 20/16 तक, स्वामी दयानन्द जयन्ती	14	7/20	18/09	7/05	18/06	7/09	18/05	7/12	18/34
	15	११	रवि	18 22	मूल	16 30	वज्र	23 16	धनु	**विजया एकादशी व्रत**, शुक्र मीन में 30/09,	15	7/19	18/09	7/04	18/07	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	१२	चंद्र	15 46	पू.षा.	14 40	सिद्धि	19 49	म.20/07	सोम प्रदोष व्रत, मंगल उ.भा. में 20/46,	16	7/18	18/10	7/03	18/08	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	१३	मंग	12 37	उ.षा.	12 16	व्य.	15 57	मकर	भ. 12/37 से 22/50 तक, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत**	17	7/17	18/11	7/02	18/08	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	१४	बुध	9 03	श्रव / धनि.	9 28 / 30 27	वरी	11 47	कुं.19/58	**पंचक प्रारम्भ 19/58**, फाल्गुन अमावस (9/03 बाद), बुध श्रवण **(C)**	18	7/16	18/12	7/01	18/09	7/05	18/09	7/09	18/36
	०	३०	बुध	29 17	००	० ०	०	० ०	००	अमावस तिथि का क्षय ०० ०० ००	0	00	00	00	00	00	00	00	00
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	19	१	गुरु	25 30	शत	27 25	परि / शिव	7 28 / 27 08	कुम्भ	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य शतभिषा में 22/50,	19	7/15	18/13	7/00	18/10	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	२	शुक्र	21 51	पू.भा.	24 34	सिद्ध	22 57	मी.19/15	चन्द्रदर्शन, मु. 30, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, शक फाल्गुन प्रारम्भ	20	7/14	18/14	6/59	18/11	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	३	शनि	18 32	उ.भा.	22 03	साध्य	19 02	मीन	भ. 29/06 से, जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ,	21	7/13	18/15	6/59	18/11	7/02	18/11	7/08	18/37
	22	४	रवि	15 40	रेव	20 01	शुभ	15 30	मे.20/01	भ. 15/40 तक, **पंचक समाप्त 20/01**	22	7/12	18/16	6/58	18/12	7/01	18/12	7/07	18/38
	23	५	चंद्र	13 24	अश्वि	18 35	शुक्ल	12 26	मेष	याज्ञवलक्य जयन्ती,	23	7/11	18/17	6/57	18/13	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	६	मंग	11 47	भर.	17 50	ब्रह्म	9 55	वृ.23/45		24	7/10	18/17	6/56	18/13	6/59	18/14	7/06	18/38
	25	७	बुध	10 54	कृति	17 47	ऐन्द्र / वैधृ	7 58 / 30 35	वृष	भ. 10/54 से 22/50 तक,	25	7/09	18/18	6/55	18/14	6/58	18/15	7/05	18/39
	26	८	गुरु	10 45	रोहि	18 27	विष्क	29 45	वृष	**होलाष्टक प्रारम्भ**, अन्नपूर्णा-अष्टमी,	26	7/07	18/19	6/54	18/15	6/57	18/15	7/04	18/39
	27	९	शुक्र	11 16	मृग	19 45	प्रीति	29 23	मि. 7/01	**होलाष्टक–26 फर. से 5 मार्च**	27	7/06	18/20	6/53	18/15	6/56	18/16	7/03	18/39
	28	१०	शनि	12 24	आर्द्रा	21 36	आयु	29 27	मिथुन	भ. 25/14 से,	28	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39

(A) प्रारम्भ-3 दिन **(Z)** श्रीललिता जयन्ती **(B)** 14/50 तक, रामदास नवमी **(C)** में 28/34, शुक्र उ.भा. में 23/00, सूर्य सायन मीन में 29/21, वसन्त ऋतु प्रारम्भ

वि. संवत् 2071, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2015 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त ऋतुः
फाल्गु. शु.	1	११	रवि	14	03	पुर्न	23	54	सौभा	29	50	क.17/17	भ. 14/03 तक, आमलकी एकादशी व्रत, शुक्र रेवती में 19/26 (A)
	2	१२	चंद्र	16	06	पुष्य	26	33	शोभ	30	29	कर्क	सोम प्रदोष व्रत, गोविन्द द्वादशी
	3	१३	मंग	18	26	आश्ले	29	27	अति	पूरा	दिन	सिं.29/27	बुध धनि. में 30/15,
	4	१४	बुध	20	58	मघा	पूरा	दिन	अति	7	18	सिंह	भ. 20/58 से, सूर्य पू.भा. में 29/08, महेश्वर व्रत, वृषदान व्रत
	5	१५	गुरु	23	36	मघा	8	29	सुक	8	14	सिंह	भ. 10/17 तक, फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन (प्रदोषकाले) (B)
चैत्र कृष्ण पक्ष	6	१	शुक्र	26	13	पू.फा.	11	34	धृति	9	12	कं.18/20	मंगल रेवती में 6/28, वसन्तोत्सव, होला-मेला (श्री आनन्दपुर व (C)
	7	२	शनि	28	44	उ.फा.	14	37	शूल	10	08	कन्या	सन्त तुकाराम जयन्ती
	8	३	रवि	पूरा	दिन	हस्त	17	30	गंड	10	59	कन्या	भ. 17/53 से, **बुध कुम्भ में 30/30**, वक्री गुरु आश्ले. (1) में 11/53,
	9	३	चंद्र	7	01	चित्रा	20	08	वृद्धि	11	38	तु. 6/51	भ. 7/01 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृष्ठ12), श्रीभगवान्नारायण जयं.
	10	४	मंग	8	58	स्वा.	22	22	ध्रुव	12	01	तुला	
	11	५	बुध	10	26	विशा	24	04	व्या.	12	01	वृ.17/42	श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, मे. गुरुरामराय (देहरादून)
	12	६	गुरु	11	18	अनु.	25	10	हर्ष	11	34	वृश्चिक	भ. 11/18 से 23/24 तक, एकनाथ षष्ठी, शुक्र अश्वि (1) मेष में 18/07,
	13	७	शुक्र	11	29	ज्ये.	25	33	वज्र	10	35	ध.25/33	शीतला सप्तमी (पूजन), बुध शत. में 21/11,
	14	८	शनि	10	56	मूल	25	13	सिद्धि	9	02	धनु	**सूर्य मीन में 29/18, चैत्र संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. अगले दिन, (D)
	15	९	रवि	9	38	पू.षा.	24	10	व्य. वरी	6 28	54 12	म.29/48	भ. 20/39 से,
	16	१०	चंद्र	7	39	उ.षा.	22	29	परि	24	59	मकर	भ. 7/39 तक, **पापमोचनी एकादशी व्रत (स्मार्त)**
	०	११	चंद्र	29	02	००	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ०० ००
	17	१२	मंग	25	56	श्रव	20	15	शिव	21	21	मकर	**पापमोचनी एकादशी व्रत** (वैष्णव)
	18	१३	बुध	22	28	धनि.	17	38	सिद्ध	17	23	कुं. 6/59	भ. 22/28 से, पंचक प्रारम्भ 6/59, प्रदोष व्रत, सूर्य उ.भा. में 13/36, (E)
	19	१४	गुरु	18	48	शत.	14	47	साध्य	13	14	मी.30/35	भ. 8/38 तक,
	20	३०	शुक्र	15	06	पू.भा.	11	52	शुभ शुक्ल	9 28	01 52	मीन	**चैत्र अमावस्या स्नानदानादि, वि. संवत् 2071 पूर्ण**, सूर्य सायन मेष में (F)

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40
3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
0	00	00	00	00	00	00	00	00
17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45

(A) मार्च-सन् 2015 ई. प्रारम्भ, (B) **होलाष्टक समाप्त**, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, लक्ष्मीनारायण व्रत (C) व पांओटा साहिब), चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ
(D) शनि वक्री 20/21, शीतलाष्टमी (E) मासशिवरात्रि व्रत, वारुणी योग 17/38 से 22/28 तक, (F) 28-16, उत्तर गोल में सूर्य का प्रवेश

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टै. टा.) वि. संवत् २०७१ (सन् 2014-15 ई.)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2014	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
30 मार्च	उ.भा.	3	02	8	39	14	17	19	54
31/1 अप्रै.	रेवती	1	31	7	15	12	59	18	43
1 अप्रै.	अश्वि.	0	27	6	19	12	12	18	05
1/2 अप्रै.	भरणी	23	57	5	59	12	02	18	04
3 अप्रै.	कृति	0	06	6	14	12	31	18	43
4 अप्रै.	रोहि.	0	56	7	19	13	42	20	05
5 अप्रै.	मृग.	2	28	9	00	15	28	22	04
6/7 अप्रै.	आर्द्रा	4	36	11	15	17	54	0	33
7/8 अप्रै.	पुर्न	7	12	13	55	20	38	3	20
8/9 अप्रै.	पुष्य	10	04	16	48	23	32	6	16
9/10 अप्रै.	आश्ले	13	00	19	42	2	23	9	05
10/11 अप्रै.	मघा	15	47	22	24	5	01	11	38
11/12 अप्रै.	पू.फा.	18	15	0	45	7	16	13	46
12/13 अप्रै.	उ.फा.	20	16	2	41	9	01	15	23
13/14 अप्रै.	हस्त	21	46	4	00	10	15	16	29
14/15 अप्रै.	चित्रा	22	43	4	51	11	00	17	02
15/16 अप्रै.	स्वाती	23	09	5	08	11	08	17	07
16/17 अप्रै.	विशाखा	23	07	5	00	10	54	16	49
17/18 अप्रै.	अनु.	22	40	4	28	10	17	16	05
18/19 अप्रै.	ज्ये.	21	53	3	37	9	21	15	05
19/20 अप्रै.	मूल.	20	49	2	30	8	11	13	52
20/21 अप्रै.	पू.षा.	19	33	1	12	6	50	12	29
21/22 अप्रै.	उ.षा.	18	08	23	46	5	23	11	01
22/23 अप्रै.	श्रव.	16	39	22	16	3	54	9	31
23/24 अप्रै.	धनि.	15	08	20	46	2	23	8	01
24/25 अप्रै.	शत	13	39	19	18	0	58	6	37
25/26 अप्रै.	पू.भा.	12	16	17	57	23	39	5	19
26/27 अप्रै.	उ.भा.	11	02	16	47	22	33	4	19
27/28 अप्रै.	रेवती	10	03	15	33	21	42	3	32
28/29 अप्रै.	अश्वि	9	22	15	18	21	14	3	10
29/30 अप्रै.	भरणी	9	06	15	09	21	11	3	14
30/1 मई	कृति	9	17	15	25	21	39	3	50
1/2 मई	रोहि	10	01	16	20	22	40	4	59
2/3 मई	मृग.	11	18	17	45	0	09	6	40
3/4 मई	आर्द्रा	13	08	19	43	2	18	8	53

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2014	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
4/5 मई	पुर्न	15	28	22	09	4	49	11	28
5/6 मई	पुष्य	18	11	0	54	7	38	14	21
6/7 मई	अश्ले	21	05	3	48	10	32	17	15
7/8 मई	मघा	23	59	6	39	13	19	19	59
9 मई	पू.फा.	2	39	9	13	15	46	22	20
10 मई	उ.फा.	4	54	11	22	17	44	0	09
11/12 मई	हस्त	6	34	12	49	19	05	1	20
12/13 मई	चित्रा	7	35	13	40	19	50	1	51
13/14 मई	स्वा.	7	56	13	51	19	47	1	42
14/15 मई	विशा.	7	37	13	24	19	12	1	01
15 मई	अनु.	6	46	12	26	18	07	23	47
16 मई	ज्ये.	5	27	11	02	16	38	22	13
17 मई	मूल.	3	48	9	20	14	53	20	25
18 मई	पू.षा.	1	58	7	29	13	01	18	32
19 मई	उ.षा.	0	04	5	36	11	09	16	41
19/20 मई	श्रव.	22	13	3	47	9	22	14	56
20/21 मई	धनि.	20	31	2	09	7	45	13	25
21/22 मई	शत.	19	03	0	45	6	27	12	09
22/23 मई	पू.भा.	17	51	23	38	5	24	11	09
23/24 मई	उ.भा.	16	58	22	50	4	41	10	33
24/25 मई	रेवती	16	25	22	22	4	20	10	17
25/26 मई	अश्वि.	16	14	22	17	4	19	10	22
26/27 मई	भरणी	16	25	22	33	4	42	10	50
27/28 मई	कृति	16	50	23	10	5	27	11	41
28/29 मई	रोहि	17	56	0	17	6	38	12	59
29/30 मई	मृग	19	20	1	47	8	11	14	42
30/31 मई	आर्द्रा	21	09	3	42	10	16	16	49
31/1 जून	पुर्न	23	23	6	02	12	41	19	18
2 जून	पुष्य	1	59	8	42	15	25	22	08
3/4 जून	आश्ले	4	51	11	36	18	20	1	05
4/5 जून	मघा	7	50	14	33	21	17	4	00
5/6 जून	पू.फा.	10	43	17	22	0	01	6	40
6/7 जून	उ.फा.	13	19	19	53	2	22	8	53
7/8 जून	हस्त	15	24	21	45	4	07	10	28
8/9 जून	चित्रा	16	49	22	59	5	14	11	18

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2014	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 जून	स्वा.	17	28	23	26	5	23	11	21
10/11 जून	विशा	17	19	23	06	4	53	10	44
11/12 जून	अनु.	16	27	22	04	3	42	9	19
12/13 जून	ज्ये.	14	56	20	25	1	55	7	24
13/14 जून	मूल.	12	54	18	19	23	43	5	08
14/15 जून	पू.षा.	10	33	15	55	21	18	2	40
15/16 जून	उ.षा.	8	02	13	23	18	47	0	09
16 जून	श्रव.	5	31	10	56	16	20	21	45
17 जून	धनि	3	10	8	39	14	06	19	38
18 जून	शत.	1	08	6	44	12	19	17	55
18/19 जून	पू.भा.	23	31	5	14	10	58	16	38
19/20 जून	उ.भा.	22	24	4	15	10	06	15	57
20/21 जून	रेव.	21	48	3	47	9	46	15	45
21/22 जून	अश्वि	21	44	3	50	9	57	16	03
22/23 जून	भरणी	22	10	4	23	10	37	16	50
23/24 जून	कृति	23	03	5	20	11	42	18	01
25 जून	रोहि	0	20	6	45	13	11	19	36
26 जून	मृग	2	01	8	31	14	58	21	31
27 जून	आर्द्रा	4	01	10	36	17	11	23	46
28 जून	पुर्न	6	21	13	01	19	40	2	18
29 जून	पुष्य	8	59	15	42	22	25	5	08
30/1 जुला.	अश्ले	11	51	18	36	1	21	8	06
1/2 जुला.	मघा	14	51	21	36	4	22	11	07
2/3 जुला.	पू.फा.	17	53	0	36	7	18	14	01
3/4 जुला.	उ.फा.	20	44	3	24	9	59	16	36
4/5 जुला.	हस्त	23	14	5	43	12	13	18	42
6 जुलाई	चित्रा	1	11	7	29	13	54	20	07
7 जुलाई	स्वा.	2	25	8	31	14	38	20	44
8 जुलाई	विशा	2	50	8	43	14	37	20	35
9 जुलाई	अनु.	2	24	8	05	13	47	19	28
10 जुलाई	ज्ये.	1	10	6	41	12	13	17	44
10/11 जुला	मूल.	23	15	4	38	10	02	15	25
11/12 जुला	पू.षा.	20	48	2	06	7	23	12	41
12/13 जुला	उषा.	17	59	23	15	4	30	9	45
13/14 जुला	श्रव.	15	01	20	17	1	32	6	48

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
जुला. 2014	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14/15जुला	धनि.	12 04	17 23	22 40	4 02
15/16जुला	शत.	9 21	14 46	20 11	1 36
16 जुला.	पू.भा.	7 01	12 34	18 06	23 36
17 जुला.	उ.भा.	5 12	10 54	16 37	22 19
18 जुला.	रेवती	4 02	9 54	15 47	21 39
19 जुला.	अश्वि	3 32	9 34	15 37	21 39
20 जुला.	भरणी	3 42	9 54	16 07	22 19
21 जुला.	कृति	4 31	10 48	17 12	23 32
22/23जुला	रोहि	5 53	12 20	18 48	1 15
23/24जुला	मृग	7 43	14 16	20 47	3 23
24/25जुला	आर्द्रा	9 56	16 33	23 11	5 48
25/26जुला	पुर्न	12 26	19 07	1 48	8 28
26/27जुला	पुष्य	15 10	21 53	4 37	11 20
27/28जुला	अश्ले.	18 04	0 49	7 35	14 20
28/29जुला	मघा	21 05	3 50	10 36	17 21
30 जुला.	पू.फा.	0 06	6 50	13 35	20 19
31 जुला.	उ.फा.	3 03	9 45	16 24	23 05
1/2 अग.	हस्त	5 46	12 21	18 55	1 30
2/3 अग.	चित्रा	8 05	14 31	21 02	3 24
3/4 अग.	स्वा.	9 51	16 07	22 22	4 38
4/5 अग.	विशा	10 54	16 58	23 02	5 11
5/6 अग.	अनु.	11 10	17 02	22 53	4 45
6/7 अग.	ज्ये.	10 37	16 17	21 57	3 37
7/8 अग.	मूल.	9 17	14 46	20 16	1 45
8 अग.	पू.षा.	7 15	12 37	17 58	23 20
9 अग.	उ.षा.	4 42	9 59	15 14	20 30
10 अग.	श्रव.	1 46	6 59	12 13	17 26
10/11अग.	धनि.	22 39	3 53	9 06	14 20
11/12 अग.	शत.	19 34	0 51	6 08	11 25
12/13 अग.	पू.भा.	16 45	22 05	3 28	8 48
13/14अग.	उ.भा.	14 14	19 45	1 17	6 48
14/15अग.	रेवती	12 20	18 01	23 43	5 24
15/16अग.	अश्वि	11 05	16 58	22 50	4 43
16/17अग.	भरणी	10 36	16 40	22 45	4 49
17/18अग.	कृति.	10 53	17 04	23 23	5 38

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
अग. 2014	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
18/19अग.	रोहि	11 53	18 18	0 42	7 07
19/20अग.	मृग	13 32	20 04	2 33	9 09
20/21अग.	आर्द्रा	15 42	22 20	4 59	11 37
21/22 अग.	पुर्न	18 15	0 57	7 40	14 21
22/23 अग.	पुष्य	21 04	3 48	10 33	17 17
24 अग.	अश्ले	0 02	6 47	13 32	20 17
25 अग.	मघा	3 02	9 46	16 31	23 15
26/27अग.	पू.फा.	6 00	12 43	19 25	2 08
27/28अग.	उ.फा.	8 51	15 32	22 10	4 50
28/29अग.	हस्त	11 30	18 05	0 41	7 16
29/30अग.	चित्रा	13 51	20 20	2 53	9 19
30/31अग.	स्वा.	15 48	22 09	4 31	10 52
31/1 सितं.	विशा.	17 13	23 25	5 37	11 53
1/2 सितं.	अनु.	18 01	0 03	6 05	12 06
2/3 सितं.	ज्ये.	18 08	23 59	5 51	11 42
3/4 सितं.	मूल.	17 33	23 14	4 55	10 36
4/5 सितं.	पू.षा.	16 17	21 49	3 20	8 52
5/6 सितं.	उ.षा.	14 24	19 51	1 13	6 37
6/7 सितं.	श्रव.	12 02	17 21	22 41	4 00
7/8 सितं.	धनि.	9 19	14 36	19 53	1 09
8 सितं.	शत.	6 26	11 43	16 59	22 16
9 सितं.	पू.भा.	3 33	8 53	14 12	19 30
10 सितं.	उ.भा.	0 52	6 17	11 42	17 07
10/11 सितं	रेवती	22 32	4 04	9 37	15 09
11/12 सितं	अश्वि.	20 42	2 24	8 07	13 49
12/13 सितं	भरणी	19 32	1 25	7 19	13 12
13/14 सितं	कृति	19 06	1 06	7 16	13 21
14/15 सितं	रोहि	19 26	1 43	7 59	14 16
15/16 सितं	मृग	20 33	3 00	9 21	15 53
16/17 सितं	आर्द्रा	22 20	4 55	11 31	18 06
18 सितं.	पुर्न	0 41	7 22	14 03	20 42
19 सितं.	पुष्य	3 25	10 09	16 54	23 38
20/21 सितं	आश्ले.	6 23	13 08	19 54	2 39
21/22 सितं	मघा	9 24	16 08	22 52	5 36
22/23 सितं	पू.फा.	12 20	19 01	1 42	8 23

चन्द्र नक्षत्र चरण		1	2	3	4
सितं. 2014	नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23/24 सितं	उ.फा.	15 04	21 42	4 17	10 54
24/25 सितं	हस्त	17 31	0 03	6 35	13 07
25/26 सितं	चित्रा	19 39	2 05	8 34	14 57
26/27 सितं	स्वा.	21 23	3 43	10 02	16 22
27/28 सितं	विशा.	22 42	4 55	11 07	17 23
28/29 सितं	अनु.	23 33	5 38	11 44	17 49
29/30 सितं	ज्ये.	23 54	5 51	11 49	17 46
30/1 अक्तू.	मूल.	23 44	5 34	11 24	17 14
1/2 अक्तू.	पू.षा.	23 04	4 46	10 29	16 11
2/3 अक्तू.	उ.षा.	21 53	3 32	9 05	14 41
3/4 अक्तू.	श्रव.	20 17	1 47	7 18	12 48
4/5 अक्तू.	धनि.	18 19	23 46	5 14	10 39
5/6 अक्तू.	शत.	16 06	21 30	2 55	8 19
6/7 अक्तू.	पू.भा.	13 44	19 09	0 33	5 57
7/8 अक्तू.	उ.भा.	11 23	16 50	22 16	3 43
8/9 अक्तू.	रेवती	9 10	14 41	20 13	1 44
9/10 अक्तू.	अश्वि.	7 16	12 54	18 32	0 10
10 अक्तू.	भरणी	5 48	11 34	17 21	23 07
11 अक्तू.	कृति.	4 54	10 47	16 47	22 44
12 अक्तू.	रोहि	4 41	10 48	16 56	23 03
13/14 अक्तू.	मृग.	5 10	11 28	17 42	0 05
14/15 अक्तू.	आर्द्रा	6 24	12 53	19 21	1 50
15/16 अक्तू.	पुर्न	8 19	14 56	21 32	4 07
16/17 अक्तू.	पुष्य	10 46	17 29	0 11	6 54
17/18 अक्तू.	आश्ले.	13 37	20 22	3 07	9 52
18/19 अक्तू.	मघा	16 37	23 21	6 06	12 50
19/20 अक्तू.	पू.फा.	19 35	2 16	8 57	15 38
20/21 अक्तू.	उ.फा.	22 19	4 57	11 30	18 06
22 अक्तू.	हस्त	0 42	7 11	13 39	20 08
23 अक्तू.	चित्रा	2 37	8 58	15 23	21 41
24 अक्तू.	स्वा.	4 03	10 17	16 31	22 45
25 अक्तू.	विशा.	4 59	11 06	17 13	23 22
26 अक्तू.	अनु.	5 27	11 28	17 28	23 29
27 अक्तू.	ज्ये.	5 29	11 24	17 18	23 13
28 अक्तू.	मूल.	5 08	10 58	16 48	22 38

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘			1	2	3	4
अक्तू. 2014		नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
29	अक्तू.	पू.षा.	4 28	10 13	15 59	21 44
30	अक्तू.	उ.षा.	3 30	9 13	14 54	20 36
31	अक्तू.	श्रवण	2 18	7 57	13 36	19 15
1	नवं.	धनि.	0 54	6 31	12 08	17 44
1/2	नवं.	शत.	23 21	4 56	10 32	16 07
2/3	नवं.	पू.भा.	21 42	3 17	8 52	14 27
3/4	नवं.	उ.भा.	20 02	1 38	7 13	12 49
4/5	नवं.	रेवती	18 25	0 03	5 41	11 19
5/6	नवं.	अश्वि.	16 57	22 39	4 20	10 02
6/7	नवं.	भरणी	15 44	21 31	3 19	9 06
7/8	नवं.	कृति	14 53	20 44	2 42	8 36
8/9	नवं.	रोहि.	14 30	20 33	2 36	8 39
9/10	नवं.	मृग.	14 42	20 54	3 01	9 19
10/11	नवं.	आर्द्रा	15 31	14 51	21 14	3 36
11/12	नवं.	पुर्न	17 00	23 31	6 03	12 30
12/13	नवं.	पुष्य	19 05	1 44	8 23	15 02
13/14	नवं.	अश्ले.	21 41	4 25	11 09	17 53
15	नवं.	मघा	0 37	7 22	14 08	20 53
16	नवं.	पू.फा.	3 38	10 21	17 05	23 48
17/18	नवं.	उ.फा.	6 31	13 11	19 46	2 24
18/19	नवं.	हस्त	9 02	15 32	22 02	4 32
19/20	नवं.	चित्रा	11 02	17 22	23 47	6 03
20/21	नवं.	स्वा.	12 24	18 34	0 45	6 55
21/22	नवं.	विशा	13 06	19 07	1 09	7 13
22/23	नवं.	अनु.	13 11	19 04	0 58	6 51
23/24	नवं.	ज्ये.	12 44	18 31	0 17	6 04
24/25	नवं.	मूल.	11 51	17 32	23 15	4 57
25/26	नवं.	पू.षा.	10 39	16 18	21 56	3 35
26/27	नवं.	उ.षा.	9 14	14 52	20 29	2 06
27/28	नवं.	श्रव.	7 44	13 21	18 59	0 36
28	नवं.	धनि	6 14	11 53	17 30	23 10
29	नवं.	शत.	4 48	10 28	16 08	21 48
30	नवं.	पू.भा.	3 28	9 10	14 52	20 33
1	दिसं.	उ.भा.	2 16	8 00	13 45	19 29
2	दिसं.	रेवती	1 14	7 01	12 49	18 36
3	दिसं.	अश्वि	0 23	6 13	12 04	17 54

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘			1	2	3	4
दिसं. 2014		नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
3/4	दिसं.	भरणी	23 45	5 39	11 34	17 28
4/5	दिसं.	कृति	23 22	5 19	11 21	17 20
5/6	दिसं.	रोहि	23 19	5 24	11 29	17 34
6/7	दिसं.	मृग	23 39	5 51	11 59	18 15
8	दिसं.	आर्द्रा	0 27	6 47	13 06	19 26
9	दिसं.	पुर्न	1 46	8 14	14 42	21 07
10	दिसं.	पुष्य	3 38	10 14	16 49	23 25
11/12	दिसं.	अश्ले.	6 01	12 43	19 24	2 06
12/13	दिसं.	मघा	8 48	15 33	22 19	5 04
13/14	दिसं.	पू.फा.	11 50	18 36	1 22	8 08
14/15	दिसं.	उ.फा.	14 54	21 38	4 19	11 01
15/16	दिसं.	हस्त	17 43	0 18	6 54	13 29
16/17	दिसं.	चित्रा	20 04	2 29	9 00	15 20
17/18	दिसं.	स्वा.	21 45	3 59	10 13	16 27
18/19	दिसं.	विशा.	22 41	4 43	10 45	16 51
19/20	दिसं.	अनु.	22 48	4 39	10 30	16 21
20/21	दिसं.	ज्ये.	22 12	3 53	9 35	15 16
21/22	दिसं.	मूल.	20 57	2 31	8 06	13 40
22/23	दिसं.	पू.षा.	19 14	0 43	6 13	11 42
23/24	दिसं.	उ.षा.	17 12	22 40	4 07	9 34
24/25	दिसं.	श्रव.	15 01	20 28	1 56	7 23
25/26	दिसं.	धनि.	12 51	18 21	23 49	5 20
26/27	दिसं.	शत.	10 50	16 23	21 57	3 30
27/28	दिसं.	पू.भा.	9 04	14 43	20 21	1 58
28/29	दिसं.	उ.भा.	7 39	13 23	19 08	0 52
29/30	दिसं.	रेवती	6 36	12 26	18 16	0 06
30	दिसं.	अश्वि.	5 56	11 52	17 47	23 43
31	दिसं.	भरणी	5 39	11 40	17 41	23 42
1/2	जन.	कृति	5 43	11 47	17 56	0 02
2/3	जन.	रोहि.	6 08	12 19	18 31	0 42
3/4	जन.	मृग	6 54	13 11	19 25	1 44
4/5	जन.	आर्द्रा	8 01	14 24	20 46	3 09
5/6	जन.	पुर्न	9 32	16 01	22 29	4 56
6/7	जन.	पुष्य	11 27	18 02	0 37	7 12
7/8	जन.	अश्ले.	13 47	20 27	3 08	9 48

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘			1	2	3	4
जन. 2015		नक्षत्र	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
8/9	जन.	मघा	16 29	23 14	5 59	12 44
9/10	जन.	पू.फा.	19 29	2 16	9 03	15 50
10/11	जन.	उ.फा.	22 37	5 24	12 09	18 55
12	जन.	हस्त	1 41	8 22	15 04	21 45
13/14	जन.	चित्रा	4 27	11 00	17 38	0 07
14/15	जन.	स्वा.	6 40	13 02	19 25	1 47
15/16	जन.	विशा.	8 09	14 19	20 29	2 44
16/17	जन.	अनु.	8 49	14 46	20 42	2 39
17/18	जन.	ज्ये.	8 36	14 21	20 05	1 50
18/19	जन.	मूल.	7 35	13 09	18 44	0 18
19	जन.	पू.षा.	5 52	11 18	16 44	22 10
20	जन.	उ.षा.	3 36	8 59	14 18	19 39
21	जन.	श्रव.	1 00	6 18	11 37	16 55
21/22	जन.	धनि.	22 13	3 32	8 50	14 10
22/23	जन.	शत.	19 29	0 51	6 12	11 34
23/24	जन.	पू.भा.	16 56	22 23	3 50	9 14
24/25	जन.	उ.भा.	14 44	20 18	1 51	7 25
25/26	जन.	रेवती	12 59	18 41	0 24	6 06
26/27	जन.	अश्वि.	11 48	17 39	23 29	5 20
27/28	जन.	भरणी	11 11	17 10	23 10	5 09
28/29	जन.	कृति	11 08	17 13	23 23	5 30
29/30	जन.	रोहि.	11 38	17 53	0 18	6 23
30/31	जन.	मृग.	12 38	18 59	1 17	7 42
31/1	फर.	आर्द्रा	14 04	20 31	2 59	9 26
1/2	फर.	पुर्न	15 53	22 25	4 58	11 28
2/3	फर.	पुष्य	18 03	0 40	7 18	13 55
3/4	फर.	आश्ले.	20 32	3 13	9 55	16 36
4/5	फर.	मघा	23 17	6 02	12 46	19 31
6	फर.	पू.फा.	2 16	9 03	15 49	22 36
7/8	फर.	उ.फा.	5 23	12 10	18 56	1 43
8/9	फर.	हस्त	8 30	15 14	21 59	4 43
9/10	फर.	चित्रा	11 27	18 06	0 48	7 24
10/11	फर.	स्वा.	14 03	20 34	3 04	9 35
11/12	फर.	विशा.	16 06	22 26	4 46	11 10
12/13	फर.	अनु.	17 26	23 04	5 42	11 50

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
फर. 2015	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
13/14 फर.	ज्ये.	17	58	23	53	5	48	11	43
14/15 फर.	मूल.	17	38	23	21	5	04	10	47
15/16 फर.	पू.षा.	16	30	22	02	3	35	9	07
16/17 फर.	उ.षा.	14	40	20	07	1	28	6	52
17/18 फर.	श्रव.	12	16	17	34	22	52	4	10
18/19 फर.	धनि.	9	28	14	43	19	58	1	12
19 फर.	शत.	6	27	11	41	16	56	2	10
20 फर.	पू.भा.	3	25	8	42	14	00	19	15
21 फर.	उ.भा.	0	34	5	56	11	19	16	41
21/22 फर.	रेवती	22	03	3	32	9	02	14	31
22/23 फर.	अश्वि.	20	01	1	39	7	18	12	56
23/24 फर.	भरणी	18	35	0	24	6	12	12	01
24/25 फर.	कृति.	17	50	23	45	5	49	11	48
25/26 फर.	रोहि.	17	47	23	57	6	07	12	17
26/27 फर.	मृग.	18	27	0	46	7	01	13	25
27/28 फर.	आर्द्रा	19	45	2	13	8	40	15	08
28फ/1मार्च	पुर्न	21	36	4	10	10	45	17	17
1/2 मार्च	पुष्य	23	54	6	34	13	13	19	53
3 मार्च	अश्ले.	2	33	9	16	16	00	22	43
4/5 मार्च	मघा	5	27	12	12	18	58	1	43
5/6 मार्च	पू.फा.	8	29	15	15	22	02	4	48
6/7 मार्च	उ.फा.	11	34	18	20	1	05	7	51
7/8 मार्च	हस्त	14	37	21	20	4	04	10	47
8/9 मार्च	चित्रा	17	30	0	09	6	51	13	28
9/10 मार्च	स्वा.	20	08	2	42	9	15	15	49
10/11 मार्च	विशा.	22	22	4	47	11	13	17	42
12 मार्च	अनु.	0	04	6	20	12	37	18	53
13 मार्च	ज्ये.	1	10	7	16	13	21	19	27
14 मार्च	मूल.	1	33	7	28	13	23	19	18
15 मार्च	पू.षा.	1	13	6	57	12	42	18	26
16 मार्च	उ.षा.	0	10	5	48	11	20	16	54
16/17 मार्च	श्रव.	22	29	3	55	9	22	14	48
17/18 मार्च	धनि.	20	15	1	36	6	59	12	17
18/19 मार्च	शत.	17	38	22	55	4	13	9	30
19/20 मार्च	पू.भा.	14	47	20	03	1	20	6	35
20/21 मार्च	उ.भा.	11	52	17	09	22	27	3	44

मध्यम एवं स्पष्ट राहु-केतु (Mean and True Rahu)

जैसा कि **'पंचाँग दिवाकर'** के सुविज्ञ पाठक जानते होंगे कि राहु-केतु प्रत्यक्ष चक्षुओं से दिखाई देने वाले ग्रह नहीं, बल्कि सम्पात् बिन्दु हैं। इसी कारण इन्हें छाया ग्रह कहते हैं। क्रान्ति वृत्त पर चन्द्रमा तथा पृथ्वी की परिक्रमणपथ-दोनों एक दूसरे को काटते हैं। उन्हीं दो सम्पात बिन्दुओं को राहु-केतु कहते हैं। उत्तरी सम्पात बिन्दु को राहु तथा दक्षिणी सम्पात् बिन्दु को केतु कहते हैं। अद्यकाल में राहु या केतु के भोगांश के लिए दो प्रकार की गति का आकलन किया जाता है, **मध्यम और स्पष्ट**। पंचांग प्रणाली के प्रारम्भकाल से ही (सुविधा की दृष्टि से) हमारे पूर्वज **पंचांगों में** राहु की मध्यम गति 3 कला, 11 विकला (3 कला, 10.7708" विकला) की दैनिक गति का प्रयोग करते आए हैं। जबकि गत कुछ वर्षों से, विशेषकर कम्पयूटर प्रणाली के आगमन से कम्पयूटर में **स्पष्ट राहु** (True and apparant position) का प्रयोग होने लगा है। **मध्यम राहु एवं स्पष्ट राहु** में अधिकतम अन्तर लगभग 1¾ अंशों का अन्तर सम्भव है। **मध्यम** राहु में तो राहु की गति लगभग एक समान ३, ११ कला/विकला रहती है तथा राहु सदा वक्री (Retrograte) रहता है, परन्तु स्पष्ट राहु (True Rahu) में राहु की गति चंद्र-बुध की गति की भान्ति एक समान नहीं रहती, कभी मार्गी भी हो जाती है। इसी कारण मध्यम राहु एवं स्पष्ट राहु द्वारा राशि-परिवर्तन के समय में कुछ दिनों का अन्तर पड़ जाता है। जैसे कि सन् 2014 ई० में **मध्यम राहु** की गति अपेक्षाकृत कुछ अधिक होने से राहु 12 जुला., 2014 ई. को कन्या राशि में प्रविष्ट होगा, जबकि **स्पष्ट राहु** की गति अल्पतर होने से वह 13 जुलाई, 2014 ई. को कन्या राशि में प्रविष्ट होगा।

स्पष्ट राहु का भोग निस्सन्देह **मध्यम राहु** की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मतर है, परन्तु **फलित** ज्योतिष की दृष्टि से इस विषय पर अभी गहन अनुसंधान की आवश्यकता है।

शुद्धि पत्र

सुविज्ञ पाठक कृपया नोट करें कि पंचाँग दिवाकर २०७० संवत् की कुछ प्रारम्भिक प्रतियों में पृष्ठ 147 एवं 150 पर तीन मुहूर्त भूलवश गलत छप गए थे, जिनका बाद की अधिकाँश प्रतियों में संशोधन करवा दिया गया था। पंचाँग के उपरोक्त पृष्ठों पर निम्न तीनों मुहूर्त अशुद्धि के कारण हटा दिए गए हैं। पाठकों की इस असुविधा के लिए हमें खेद है।

तीनों अशुद्ध मुहूर्त जो संवत् 2070 के पंचाँग में काट दिए हुए हैं, निम्नांकित हैं-

(1) 6 अक्तूबर, 2013 ई. रविवार, चित्रा नक्षत्र (पृ. 147)

(2) 21 अक्तूबर, 2013 ई. सोमवार रोहिणी नक्षत्र (पृ. 147)

(3) 25 फर., 2014 ई. मंगलवार, उषा नक्षत्र (पृ. 150)

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

यदि आपको प्रात: साढ़े पाँच बजे के ग्रह स्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रह स्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको 12 अप्रैल, 2014 ई. की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में 12 अप्रैल के सामने सूर्य स्पष्ट (11–27°–57′–16″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रात: साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 12 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (13) अप्रै. में से 12 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (58′/49″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17–12) कला तथा 30 मिनट की गति (1–14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′-26) हुई, इसको 12 अप्रैल प्रात: सूर्य स्पष्ट में जमा कर देने पर हमें 12 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्य स्पष्ट (11–28°–15′–42″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मिं.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2071 (सन् 2014-15 ई.)

नोट-अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(31 मार्च से 3 मई तक)* 1 अप्रैल, 2014 ई० को अयनांश = 24°/03′/30″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल(वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि(वक्री)	मध्यम राहु(वक्री)	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	मास
मार्च	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	अं. क.	अं. क.	
31	11 16 8 29	11 19 0 36	5 28 9 3	10 23 34 7	2 17 20 28	9 29 48 13	6 28 36 7	6 5 29 40	6 4 19 22	+4 02	+6 26	31
1अप्रै.	11 17 7 45	0 2 54 5	5 27 48 15	10 25 6 20	2 17 25 6	10 0 50 28	6 28 33 23	6 5 26 29	6 4 18 57	4 26	10 30	अप्रै.
2	11 18 6 59	0 16 26 21	5 27 27 2	10 26 40 1	2 17 29 55	10 1 53 2	6 28 30 33	6 5 23 19	6 4 19 22	4 49	13 55	2
3	11 19 6 11	0 29 36 18	5 27 5 27	10 28 15 8	2 17 34 55	10 2 55 50	6 28 27 39	6 5 20 8	6 4 20 23	5 12	16 30	3
4	11 20 5 20	1 12 24 44	5 26 43 31	10 29 51 43	2 17 40 3	10 3 58 54	6 28 24 39	6 5 16 57	6 4 21 40	5 35	18 11	4
5	11 21 4 28	1 24 54 1	5 26 21 19	11 1 29 45	2 17 45 21	10 5 2 13	6 28 21 36	6 5 13 46	6 4 22 53	5 58	18 55	5
6	11 22 3 33	2 7 7 33	5 25 58 52	11 3 9 15	2 17 50 50	10 6 5 47	6 28 18 28	6 5 10 36	6 4 23 46	6 20	18 44	6
7	11 23 2 36	2 19 9 32	5 25 36 13	11 4 50 13	2 17 56 28	10 7 9 35	6 28 15 16	6 5 7 25	6 4 24 10	6 43	17 43	7
8	11 24 1 36	3 1 4 30	5 25 13 24	11 6 32 38	2 18 2 15	10 8 13 37	6 28 12 0	6 5 4 14	6 4 24 4	7 5	15 55	8
9	11 25 0 35	3 12 57 11	5 24 50 28	11 8 16 31	2 18 8 12	10 9 17 52	6 28 8 39	6 5 1 3	6 4 23 31	7 28	13 28	9
10	11 25 59 31	3 24 52 2	5 24 27 28	11 10 1 53	2 18 14 18	10 10 22 20	6 28 5 15	6 4 57 53	6 4 22 39	7 50	10 27	10
11	11 26 58 24	4 6 53 13	5 24 4 26	11 11 48 45	2 18 20 33	10 11 27 1	6 28 1 46	6 4 54 42	6 4 21 39	8 12	6 58	11
12	11 27 57 16	4 19 4 16	5 23 41 25	11 13 37 7	2 18 26. 57	10 12 31 54	6 27 58 14	6 4 51 31	6 4 20 42	8 34	+3 10	12
13	11 28 56 5	5 1 28 2	5 23 18 27	11 15 26 59	2 18 33 30	10 13 36 58	6 27 54 37	6 4 48 20	6 4 19 56	8 56	-0 51	13
14	11 29 54 53	5 14 6 27	5 22 55 36	11 17 18 23	2 18 40 11	10 14 42 15	6 27 50 58	6 4 45 10	6 4 19 27	9 18	-4 55	14
15	0 0 53 38	5 27 0 42	5 22 32 53	11 19 11 18	2 18 47 1	10 15 47 42	6 27 47 14	6 4 41 59	6 4 19 15	9 40	-8 50	15
16	0 1 52 21	6 10 10 38	5 22 10 22	11 21 5 46	2 18 54 0	10 16 53 21	6 27 43 28	6 4 38 48	6 4 19 17	10 1	-12 15	16
17	0 2 51 2	6 23 35 46	5 21 48 3	11 23 1 44	2 19 1 6	10 17 59 10	6 27 39 37	6 4 35 37	6 4 19 25	10 22	-15 25	17
18	0 3 49 42	7 7 14 33	5 21 26 2	11 24 59 13	2 19 8 21	10 19 5 10	6 27 35 43	6 4 32 27	6 4 19 33	10 43	-17 36	18
19	0 4 48 19	7 21 5 4	5 21 4 20	11 26 58 12	2 19 15 45	10 20 11 20	6 27 31 47	6 4 29 16	6 4 19 36	11 4	-18 47	19
20	0 5 46 55	8 5 5 2	5 20 42 58	11 28 58 37	2 19 23 17	10 21 17 40	6 27 27 48	6 4 26 5	6 4 19 30	11 25	-18 49	20
21	0 6 45 30	8 19 12 4	5 20 21 59	0 1 0 28	2 19 30 57	10 22 24 10	6 27 23 46	6 4 22 54	6 4 19 20	11 45	-17 42	21
22	0 7 44 2	9 3 23 40	5 20 1 26	0 3 3 39	2 19 38 44	10 23 30 49	6 27 19 41	6 4 19 44	6 4 19 10	12 6	-15 29	22
23	0 8 42 33	9 17 37 29	5 19 41 20	0 5 8 6	2 19 46 39	10 24 37 36	6 27 15 33	6 4 16 33	6 4 19 8	12 26	-12 20	23
24	0 9 41 3	10 1 50 57	5 19 21 44	0 7 13 43	2 19 54 42	10 25 44 32	6 27 11 23	6 4 13 22	6 4 19 18	12 46	-8 28	24
25	0 10 39 31	10 16 1 31	5 19 2 40	0 9 20 23	2 20 2 53	10 26 51 37	6 27 7 11	6 4 10 11	6 4 19 42	13 5	-4 8	25
26	0 11 37 57	11 0 6 26	5 18 44 10	0 11 27 56	2 20 11 11	10 27 58 49	6 27 2 56	6 4 7 0	6 4 20 17	13 25	+0 25	26
27	0 12 36 22	11 14 2 54	5 18 26 15	0 13 36 11	2 20 19 36	10 29 6 10	6 26 58 40	6 4 3 49	6 4 20 51	13 44	4 54	27
28	0 13 34 45	11 27 48 10	5 18 8 57	0 15 44 56	2 20 28 9	11 0 13 38	6 26 54 21	6 4 0 39	6 4 21 13	14 3	9 4	28
29	0 14 33 6	0 11 19 48	5 17 52 18	0 17 53 57	2 20 36 49	11 1 21 13	6 26 50 1	6 3 57 28	6 4 21 12	14 22	12 42	29
30	0 15 31 26	0 24 35 55	5 17 36 20	0 20 2 59	2 20 45 37	11 2 28 54	6 26 45 39	6 3 54 17	6 4 20 39	14 41	15 37	30
1मई	0 16 29 43	1 7 35 26	5 17 21 4	0 22 11 45	2 20 54 31	11 3 36 43	6 26 41 15	6 3 51 6	6 4 19 31	14 59	17 39	मई
2	0 17 27 59	1 20 18 17	5 17 6 31	0 24 19 58	2 21 3 32	11 4 44 38	6 26 36 51	6 3 47 56	6 4 17 53	15 17	18 45	2
3	0 18 26 13	2 2 45 25	5 16 52 42	0 26 27 20	2 21 12 40	11 5 52 .39	6 26 32 25	6 3 44 45	6 4 15 56	15 35	18 55	3

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे (4 मई से 9 जून 2014 ई. तक)

1 मई, 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/33''   1 जून 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/38''

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल(वक्री)				बुध				गुरु				शुक्र				शनि(वक्री)				मध्यम राहु(वक्री)				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रांति		चंद्र क्रांति		मई
मई	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	
4	0	19	24	25	2	14	58	53	5	16	39	37	0	28	33	31	2	21	21	54	11	7	0	46	6	26	27	56	6	3	41	34	6	4	13	56	15	53	18	10	4
5	0	20	22	35	2	27	1	36	5	16	27	19	1	0	38	16	2	21	31	15	11	8	8	59	6	26	23	28	6	3	38	23	6	4	12	10	16	10	16	38	5
6	0	21	20	43	3	8	57	19	5	16	15	47	1	2	41	17	2	21	40	43	11	9	17	18	6	26	19	0	6	3	35	13	6	4	10	56	16	27	14	23	6
7	0	22	18	49	3	20	50	16	5	16	5	3	1	4	42	16	2	21	50	17	11	10	25	43	6	26	14	30	6	3	32	3	6	4	10	23	16	44	11	33	7
8	0	23	16	53	4	2	45	3	5	15	55	6	1	6	41	00	2	21	59	57	11	11	34	13	6	26	10	0	6	3	28	52	6	4	10	36	17	0	8	14	8
9	0	24	14	56	4	14	46	23	5	15	45	56	1	8	37	15	2	22	9	43	11	12	42	49	6	26	5	30	6	3	25	41	6	4	11	30	17	17	4	33	9
10	0	25	12	56	4	26	58	51	5	15	37	35	1	10	30	46	2	22	19	35	11	13	51	30	6	26	0	59	6	3	22	30	6	4	12	52	17	33	0	38	10
11	0	26	10	54	5	9	26	29	5	15	30	2	1	12	21	28	2	22	29	32	11	15	0	16	6	25	56	28	6	3	19	20	6	4	14	21	17	48	-3	25	11
12	0	27	8	51	5	22	12	37	5	15	23	18	1	14	9	8	2	22	39	36	11	16	9	7	6	25	51	57	6	3	16	9	6	4	15	32	18	3	-7	24	12
13	0	28	6	46	6	5	19	26	5	15	17	22	1	15	53	40	2	22	49	45	11	17	18	3	6	25	47	27	6	3	12	58	6	4	16	0	18	19	-11	10	13
14	0	29	4	39	6	18	47	36	5	15	12	12	1	17	34	56	2	22	59	59	11	18	27	4	6	25	42	56	6	3	9	47	6	4	15	24	18	33	-14	26	14
15	1	0	2	31	7	2	36	5	5	15	7	51	1	19	12	53	2	23	10	20	11	19	36	10	6	25	38	26	6	3	6	37	6	4	13	36	18	48	-16	59	15
16	1	1	0	21	7	16	42	5	5	15	4	18	1	20	47	24	2	23	20	45	11	20	45	22	6	25	33	57	6	3	3	26	6	4	10	41	19	2	-18	33	16
17	1	1	58	11	8	1	1	4	5	15	1	33	1	22	18	28	2	23	31	16	11	21	54	38	6	25	29	29	6	3	0	15	6	4	6	59	19	16	-18	59	17
18	1	2	55	58	8	15	27	48	5	14	59	34	1	23	45	59	2	23	41	53	11	23	3	58	6	25	25	1	6	2	57	4	6	4	3	1	19	29	-18	10	18
19	1	3	53	45	8	29	56	29	5	14	58	21	1	25	9	56	2	23	52	33	11	24	13	22	6	25	20	35	6	2	53	54	6	3	59	25	19	42	-16	11	19
20	1	4	51	30	9	14	22	0	5	14	57	56	1	26	30	14	2	24	3	21	11	25	22	52	6	25	16	09	6	2	50	53	6	3	56	43	19	55	-13	12	20
21	1	5	49	15	9	28	40	14	5	14	58	16	1	27	46	51	2	24	14	12	11	26	32	26	6	25	11	44	6	2	47	32	6	3	55	16	20	7	-9	28	21
22	1	6	46	58	10	12	48	22	5	14	59	21	1	28	59	43	2	24	25	8	11	27	42	4	6	25	7	21	6	2	44	21	6	3	55	9	20	19	-5	13	22
23	1	7	44	40	10	26	44	53	5	15	1	13	2	0	8	48	2	24	36	9	11	28	51	46	6	25	3	0	6	2	41	11	6	3	56	5	20	31	-0	45	23
24	1	8	42	22	11	10	29	6	5	15	3	48	2	1	14	3	2	24	47	15	0	0	1	33	6	24	58	40	6	2	38	0	6	3	57	31	20	43	+3	43	24
25	1	9	40	2	11	24	0	59	5	15	7	8	2	2	15	23	2	24	58	25	0	1	11	23	6	24	54	22	6	2	34	49	6	3	58	43	20	54	7	55	25
26	1	10	37	41	0	7	20	36	5	15	11	12	2	3	12	45	2	25	9	40	0	2	21	17	6	24	50	6	6	2	31	38	6	3	58	58	21	4	11	40	26
27	1	11	35	19	0	20	28	2	5	15	15	58	2	4	6	5	2	25	20	58	0	3	31	14	6	24	45	51	6	2	28	28	6	3	57	42	21	15	14	47	27
28	1	12	32	56	1	3	23	14	5	15	21	30	2	4	55	16	2	25	32	22	0	4	41	15	6	24	41	39	6	2	25	17	6	3	54	35	21	25	17	06	28
29	1	13	30	32	1	16	6	13	5	15	27	43	2	5	40	18	2	25	43	50	0	5	51	19	6	24	37	30	6	2	22	6	6	3	49	38	21	34	18	32	29
30	1	14	28	7	1	28	37	4	5	15	34	37	2	6	21	3	2	25	55	22	0	7	1	27	6	24	33	23	6	2	18	55	6	3	43	12	21	43	19	01	30
31	1	15	25	41	2	10	56	20	5	15	42	13	2	6	57	28	2	26	6	58	0	8	11	37	6	24	29	19	6	2	15	45	6	3	35	50	21	52	18	36	31
जून	1	16	23	13	2	23	5	7	5	15	50	28	2	7	29	28	2	26	18	38	0	9	21	50	6	24	25	16	6	2	12	34	6	3	28	16	22	1	17	19	जून
2	1	17	20	45	3	5	5	15	5	15	59	25	2	7	56	59	2	26	30	22	0	10	32	7	6	24	21	17	6	2	9	23	6	3	21	16	22	9	15	18	2
3	1	18	18	15	3	16	59	26	5	16	9	0	2	8	19	58	2	26	42	10	0	11	42	27	6	24	17	21	6	2	6	12	6	3	15	28	22	16	12	39	3
4	1	19	15	43	3	28	51	4	5	16	19	14	2	8	38	24	2	26	54	1	0	12	52	49	6	24	13	29	6	2	3	2	6	3	11	18	22	24	9	29	4
5	1	20	13	11	4	10	44	19	5	16	30	5	2	8	52	10	2	27	5	56	0	14	3	16	6	24	9	39	6	1	59	51	6	3	08	58	22	31	5	57	5
6	1	21	10	37	4	22	43	49	5	16	41	34	2	9	1	20	2	27	17	55	0	15	13	45	6	24	5	52	6	1	56	40	6	3	8	18	22	37	+2	08	6
7	1	22	8	3	5	4	54	29	5	16	53	39	2	9	5	52	2	27	29	57	0	16	24	16	6	24	2	9	6	1	53	29	6	3	8	51	22	43	-1	50	7
8	1	23	5	27	5	17	21	18	5	17	6	20	2	9	5	51	2	27	42	2	0	17	34	51	6	23	58	30	6	1	50	18	6	3	9	55	22	49	-5	48	8
9	1	24	2	50	6	0	8	47	5	17	19	35	2	9	1	21	2	27	54	11	0	18	45	28	6	23	54	54	6	1	47	7	6	3	10	39	22	54	-9	38	9

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे *(10 जून से 15 जुलाई 2014 ई. तक)* 1 जुलाई 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/42″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
10	1 25 0 11	6 13 20 28	5 17 33 24	2 8 52 30	2 28 6 22	0 19 56 7	6 23 51 21	6 1 43 57	6 3 10 11	22 59	-13 07	10
11	1 25 57 32	6 26 58 23	5 17 47 48	2 8 39 29	2 28 18 37	0 21 6 49	6 23 47 52	6 1 40 46	6 3 7 54	23 4	-16 01	11
12	1 26 54 52	7 11 2 23	5 18 2 44	2 8 22 32	2 28 30 55	0 22 17 35	6 23 44 28	6 1 37 35	6 3 3 29	23 8	-18 03	12
13	1 27 52 11	7 25 28 54	5 18 18 12	2 8 1 54	2 28 43 16	0 23 28 24	6 23 41 8	6 1 34 24	6 2 57 3	23 11	-18 59	13
14	1 28 49 30	8 10 12 47	5 18 34 11	2 7 37 55	2 28 55 38	0 24 39 14	6 23 37 50	6 1 31 14	6 2 49 12	23 15	-18 40	14
15	1 29 46 48	8 25 5 58	5 18 50 41	2 7 10 59	2 29 8 5	0 25 50 9	6 23 34 38	6 1 28 3	6 2 40 48	23 18	-17 05	15
16	2 0 44 5	9 9 59 40	5 19 7 42	2 6 41 31	2 29 20 34	0 27 1 6	6 23 31 30	6 1 24 52	6 2 32 56	23 20	-14 20	16
17	2 1 41 22	9 24 45 35	5 19 25 12	2 6 10 00	2 29 33 6	0 28 12 6	6 23 28 26	6 1 21 41	6 2 26 32	23 22	-10 42	17
18	2 2 38 39	10 9 17 30	5 19 43 12	2 5 37 00	2 29 45 41	0 29 23 9	6 23 25 27	6 1 18 30	6 2 22 12	23 24	-6 29	18
19	2 3 35 55	10 23 30 55	5 20 1 39	2 5 3 2	2 29 58 18	1 0 34 16	6 23 22 32	6 1 15 20	6 2 20 3	23 25	-1 58	19
20	2 4 33 11	11 7 24 48	5 20 20 35	2 4 28 40	3 0 10 56	1 1 45 22	6 23 19 40	6 1 12 9	6 2 19 41	23 26	+2 33	20
21	2 5 30 27	11 20 59 23	5 20 39 58	2 3 54 34	3 0 23 38	1 2 56 33	6 23 16 55	6 1 8 58	6 2 20 15	23 26	6 51	21
22	2 6 27 43	0 4 16 16	5 20 59 50	2 3 21 12	3 0 36 23	1 4 7 47	6 23 14 14	6 1 5 47	6 2 20 38	23 26	10 43	22
23	2 7 24 58	0 17 17 38	5 21 20 8	2 2 49 15	3 0 49 9	1 5 19 4	6 23 11 37	6 1 2 37	6 2 19 44	23 26	13 59	23
24	2 8 22 14	1 0 5 32	5 21 40 53	2 2 19 13	3 1 1 58	1 6 30 23	6 23 9 7	6 0 59 26	6 2 16 38	23 25	16 31	24
25	2 9 19 29	1 12 41 46	5 22 2 3	2 1 51 35	3 1 14 49	1 7 41 45	6 23 6 41	6 0 56 15	6 2 10 51	23 23	18 12	25
26	2 10 16 44	1 25 8 10	5 22 23 39	2 1 26 52	3 1 27 42	1 8 53 9	6 23 4 19	6 0 53 4	6 2 2 21	23 22	18 59	26
27	2 11 13 59	2 7 25 21	5 22 45 39	2 1 5 27	3 1 40 37	1 10 4 35	6 23 2 2	6 0 49 53	6 1 51 35	23 20	18 51	27
28	2 12 11 13	2 19 34 20	5 23 8 5	2 0 47 44	3 1 53 33	1 11 16 4	6 22 59 51	6 0 46 43	6 1 39 22	23 17	17 51	28
29	2 13 8 28	3 1 36 4	5 23 30 54	2 0 34 4	3 2 6 32	1 12 27 36	6 22 57 45	6 0 43 32	6 1 26 43	23 14	16 04	29
30	2 14 5 42	3 13 31 50	5 23 54 7	2 0 24 41	3 2 19 33	1 13 39 9	6 22 55 45	6 0 40 21	6 1 14 43	23 11	13 37	30
जुला.	2 15 2 55	3 25 23 31	5 24 17 42	2 0 19 53	3 2 32 35	1 14 50 45	6 22 53 49	6 0 37 10	6 1 4 17	23 7	10 38	जुला.
2	2 16 0 9	4 7 13 37	5 24 41 40	2 0 19 41	3 2 45 37	1 16 2 23	6 22 51 58	6 0 33 59	6 0 56 9	23 03	7 13	2
3	2 16 57 22	4 19 5 29	5 25 6 1	2 0 24 22	3 2 58 42	1 17 14 3	6 22 50 14	6 0 30 48	6 0 50 36	22 59	+3 31	3
4	2 17 54 35	5 1 3 11	5 25 30 44	2 0 33 58	3 3 11 48	1 18 25 46	6 22 48 35	6 0 27 37	6 0 47 31	22 54	-0 22	4
5	2 18 51 47	5 13 11 25	5 25 55 48	2 0 48 33	3 3 24 56	1 19 37 31	6 22 47 1	6 0 24 26	6 0 46 23	22 48	-4 17	5
6	2 19 48 59	5 25 35 13	5 26 21 13	2 1 8 8	3 3 38 5	1 20 49 18	6 22 45 33	6 0 21 15	6 0 46 17	22 43	-8 06	6
7	2 20 46 11	6 8 19 41	5 26 46 58	2 1 32 46	3 3 51 15	1 22 1 7	6 22 44 11	6 0 18 5	6 0 46 8	22 37	-11 40	7
8	2 21 43 23	6 21 29 19	5 27 13 4	2 2 2 26	3 4 4 26	1 23 12 59	6 22 42 54	6 0 14 54	6 0 44 50	22 30	-14 47	8
9	2 22 40 34	7 5 7 25	5 27 39 29	2 2 37 6	3 4 17 39	1 24 24 53	6 22 41 43	6 0 11 43	6 0 41 30	22 23	-17 11	9
10	2 23 37 46	7 19 15 1	5 28 6 13	2 3 16 42	3 4 30 51	1 25 36 49	6 22 40 36	6 0 8 32	6 0 35 41	22 16	-18 39	10
11	2 24 34 57	8 3 50 8	5 28 33 16	2 4 1 17	3 4 44 5	1 26 48 48	6 22 39 37	6 0 5 21	6 0 27 27	22 8	-18 56	11
12	2 25 32 9	8 18 47 18	5 29 0 37	2 4 50 44	3 4 57 20	1 28 0 49	6 22 38 43	6 0 2 10	6 0 17 27	22 0	-17 56	12
13	2 26 29 20	9 3 57 51	5 29 28 16	2 5 45 0	3 5 10 36	1 29 12 53	6 22 37 54	5 29 58 59	6 0 6 43	21 52	-15 39	13
14	2 27 26 32	9 19 11 8	5 29 56 13	2 6 44 1	3 5 23 52	2 0 24 58	6 22 37 11	5 29 55 48	5 29 56 29	21 43	-12 18	14
15	2 28 23 45	10 4 16 26	6 0 24 27	2 7 47 48	3 5 37 9	2 1 37 7	6 22 36 34	5 29 52 38	5 29 47 54	21 34	-8 10	15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे

(16 जुला. से 20 अग. 2014 ई. तक) 1 अग. 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/47''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जुला	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	जुला
16	2 29 20 58	10 19 4 53	6 0 52 58	2 8 56 13	3 5 50 27	2 2 49 19	6 22 36 3	5 29 49 27	5 29 41 42	21 24	-3 36	16
17	3 0 18 11	11 3 30 35	6 1 21 47	2 10 9 12	3 6 3 45	2 4 1 32	6 22 35 37	5 29 46 16	5 29 38 6	21 14	+1 04	17
18	3 1 15 25	11 17 30 58	6 1 50 52	2 11 26 41	3 6 17 4	2 5 13 49	6 22 35 17	5 29 43 5	5 29 36 40	21 4	5 33	18
19	3 2 12 40	0 1 6 20	6 2 20 13	2 12 48 35	3 6 30 24	2 6 26 8	6 22 35 3	5 29 39 55	5 29 36 30	20 54	9 37	19
20	3 3 9 56	0 14 18 49	6 2 49 51	2 14 14 49	3 6 43 44	2 7 38 30	6 22 34 55	5 29 36 44	5 29 36 23	20 43	13 05	20
21	3 4 7 12	0 27 11 34	6 3 19 45	2 15 45 15	3 6 57 4	2 8 50 54	6 22 34 53	5 29 33 33	5 29 35 6	20 31	15 49	21
22	3 5 4 29	1 9 48 10	6 3 49 56	2 17 19 45	3 7 10 24	2 10 3 21	6 22 34 57	5 29 30 22	5 29 31 37	20 20	17 43	22
23	3 6 1 47	1 22 11 54	6 4 20 20	2 18 58 9	3 7 23 44	2 11 15 50	6 22 35 6	5 29 27 12	5 29 25 22	20 8	18 45	23
24	3 6 59 5	2 4 25 37	6 4 51 1	2 20 40 19	3 7 37 5	2 12 28 22	6 22 35 21	5 29 24 1	5 29 16 17	19 55	18 53	24
25	3 7 56 25	2 16 31 33	6 5 22 57	2 22 26 1	3 7 50 25	2 13 40 56	6 22 35 43	5 29 20 50	5 29 4 47	19 43	18 09	25
26	3 8 53 45	2 28 31 29	6 5 53 8	2 24 15 2	3 8 3 45	2 14 53 33	6 22 36 10	5 29 17 39	5 28 51 41	19 30	16 37	26
27	3 9 51 5	3 10 26 51	6 6 24 33	2 26 7 7	3 8 17 6	2 16 6 12	6 22 36 43	5 29 14 29	5 28 38 3	19 16	14 22	27
28	3 10 48 27	3 22 18 59	6 6 56 12	2 28 1 56	3 8 30 25	2 17 18 52	6 22 37 21	5 29 11 18	5 28 25 2	19 3	11 33	28
29	3 11 45 49	4 4 9 25	6 7 28 7	2 29 59 15	3 8 43 45	2 18 31 36	6 22 38 6	5 29 8 7	5 28 13 38	18 49	8 16	29
30	3 12 43 12	4 16 0 1	6 8 0 15	3 1 58 41	3 8 57 5	2 19 44 22	6 22 38 57	5 29 4 56	5 28 4 37	18 34	4 40	30
31	3 13 40 35	4 27 53 16	6 8 32 37	3 3 59 55	3 9 10 24	2 20 57 10	6 22 39 54	5 29 1 46	5 27 58 21	18 20	+0 52	31
अग.	3 14 38 0	5 9 52 20	6 9 5 13	3 6 2 36	3 9 23 43	2 22 10 0	6 22 40 56	5 28 58 35	5 27 54 48	18 5	-3 00	अग.
2	3 15 35 24	5 22 1 5	6 9 38 2	3 8 6 24	3 9 37 1	2 23 22 52	6 22 42 4	5 28 55 24	5 27 53 28	17 50	-6 48	2
3	3 16 32 49	6 4 23 56	6 10 11 4	3 10 10 58	3 9 50 18	2 24 35 47	6 22 43 18	5 28 52 14	5 27 53 28	17 34	-10 23	3
4	3 17 30 15	6 17 5 38	6 10 44 19	3 12 15 59	3 10 3 35	2 25 48 44	6 22 44 38	5 28 49 3	5 27 53 46	17 19	-13 35	4
5	3 18 27 41	7 0 10 47	6 11 17 46	3 14 21 11	3 10 16 50	2 27 1 44	6 22 46 4	5 28 45 52	5 27 53 13	17 3	-16 12	5
6	3 19 25 8	7 13 43 10	6 11 51 26	3 16 26 15	3 10 30 5	2 28 14 45	6 22 47 35	5 28 42 41	5 27 50 56	16 46	-18 00	6
7	3 20 22 36	7 27 44 53	6 12 25 18	3 18 30 57	3 10 43 19	2 29 27 48	6 22 49 12	5 28 39 31	5 27 46 25	16 30	-18 48	7
8	3 21 20 5	8 12 15 20	6 12 59 22	3 20 35 5	3 10 56 32	3 0 40 54	6 22 50 54	5 28 36 20	5 27 39 40	16 13	-18 25	8
9	3 22 17 34	8 27 10 35	6 13 33 37	3 22 38 29	3 11 9 44	3 1 54 2	6 22 52 43	5 28 33 9	5 27 31 13	15 56	-16 46	9
10	3 23 15 5	9 12 23 4	6 14 8 5	3 24 40 57	3 11 22 55	3 3 7 13	6 22 54 37	5 28 29 59	5 27 22 0	15 39	-13 56	10
11	3 24 12 36	9 27 42 29	6 14 42 43	3 26 42 23	3 11 36 4	3 4 20 26	6 22 56 37	5 28 26 48	5 27 13 7	15 21	-10 07	11
12	3 25 10 9	10 12 57 29	6 15 17 33	3 28 42 40	3 11 49 13	3 5 33 41	6 22 58 42	5 28 23 38	5 27 5 38	15 3	-5 39	12
13	3 26 7 42	10 27 57 40	6 15 52 33	4 0 41 43	3 12 2 20	3 6 46 59	6 23 0 52	5 28 20 27	5 27 0 17	14 45	-0 54	13
14	3 27 5 17	11 12 35 17	6 16 27 45	4 2 39 27	3 12 15 26	3 8 0 19	6 23 3 8	5 28 17 16	5 26 57 16	14 27	+3 48	14
15	3 28 2 54	11 26 46 1	6 17 3 6	4 4 35 52	3 12 28 29	3 9 13 41	6 23 5 29	5 28 14 5	5 26 56 19	14 8	8 08	15
16	3 29 0 32	0 10 28 49	6 17 38 40	4 6 30 55	3 12 41 32	3 10 27 6	6 23 7 56	5 28 10 55	5 26 56 42	13 49	11 54	16
17	3 29 58 12	0 23 45 9	6 18 14 23	4 8 24 33	3 12 54 33	3 11 40 34	6 23 10 28	5 28 7 44	5 26 57 24	13 31	14 55	17
18	4 0 55 53	1 6 38 10	6 18 50 18	4 10 16 47	3 13 7 33	3 12 54 4	6 23 13 6	5 28 4 33	5 26 57 24	13 11	17 05	18
19	4 1 53 36	1 19 11 48	6 19 26 33	4 12 7 35	3 13 20 31	3 14 7 37	6 23 15 49	5 28 1 22	5 26 55 48	12 52	18 22	19
20	4 2 51 20	2 1 30 13	6 20 2 39	4 13 56 59	3 13 33 27	3 15 21 12	6 23 18 38	5 27 58 12	5 26 52 6	12 32	18 45	20

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे *(21 अग. से 25 सितं. 2014 ई. तक)* 1 सितंबर, 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/50″

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	अग.
अग.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	अं. क.	अं. क.	
21	4 3 49 6	2 13 37 17	6 20 39 5	4 15 44 58	3 13 46 22	3 16 34 49	6 23 21 32	5 27 55 1	5 26 46 11	12 12	+18 15	21
22	4 4 46 53	2 25 36 31	6 21 15 40	4 17 31 32	3 13 59 13	3 17 48 28	6 23 24 30	5 27 51 50	5 26 38 20	11 52	16 57	22
23	4 5 44 43	3 7 30 45	6 21 52 26	4 19 16 43	3 14 12 4	3 19 2 10	6 23 27 36	5 27 48 39	5 26 29 11	11 32	14 55	23
24	4 6 42 33	3 19 22 24	6 22 29 22	4 21 0 31	3 14 24 52	3 20 15 54	6 23 30 45	5 27 45 28	5 26 19 33	11 12	12 17	24
25	4 7 40 25	4 1 13 23	6 23 6 28	4 22 42 58	3 14 37 38	3 21 29 40	6 23 34 0	5 27 42 18	5 26 10 19	10 51	9 09	25
26	4 8 38 19	4 13 5 24	6 23 43 44	4 24 24 4	3 14 50 22	3 22 43 29	6 23 37 20	5 27 39 7	5 26 2 17	10 31	5 38	26
27	4 9 36 14	4 25 0 7	6 24 21 9	4 26 3 49	3 15 3 3	3 23 57 19	6 23 40 45	5 27 35 56	5 25 56 4	10 10	+1 54	27
28	4 10 34 11	5 6 59 24	6 24 58 44	4 27 42 15	3 15 15 42	3 25 11 12	6 23 44 15	5 27 32 45	5 25 52 0	9 49	-1 57	28
29	4 11 32 9	5 19 5 30	6 25 36 28	4 29 19 22	3 15 28 18	3 26 25 6	6 23 47 50	5 27 29 35	5 25 50 5	9 27	-5 45	29
30	4 12 30 8	6 1 21 3	6 26 14 21	5 0 55 10	3 15 40 52	3 27 39 3	6 23 51 29	5 27 26 24	5 25 49 58	9 6	-9 22	30
31	4 13 28 9	6 13 49 19	6 26 52 24	5 2 29 41	3 15 53 23	3 28 53 2	6 23 55 14	5 27 23 13	5 25 51 3	8 45	-12 37	31
सितं.	4 14 26 11	6 26 33 48	6 27 30 35	5 4 2 54	3 16 5 51	4 0 7 2	6 23 59 4	5 27 20 2	5 25 52 30	8 23	-15 21	सितं.
2	4 15 24 15	7 9 38 6	6 28 8 56	5 5 34 50	3 16 18 17	4 1 21 2	6 24 2 58	5 27 16 51	5 25 53 32	8 1	-17 21	2
3	4 16 22 20	7 23 5 28	6 28 47 25	5 7 5 29	3 16 30 39	4 2 35 8	6 24 6 57	5 27 13 40	5 25 53 26	7 39	-18 28	3
4	4 17 20 26	8 6 57 58	6 29 26 1	5 8 34 48	3 16 42 58	4 3 49 13	6 24 11 0	5 27 10 29	5 25 51 50	7 17	-18 31	4
5	4 18 18 34	8 21 15 55	7 0 4 47	5 10 2 50	3 16 55 14	4 5 3 21	6 24 15 9	5 27 7 19	5 25 48 40	6 55	-17 25	5
6	4 19 16 43	9 5 56 59	7 0 43 41	5 11 29 34	3 17 7 27	4 6 17 30	6 24 19 22	5 27 4 8	5 25 44 17	6 33	-15 09	6
7	4 20 14 53	9 20 55 53	7 1 22 43	5 12 54 59	3 17 19 37	4 7 31 41	6 24 23 39	5 27 0 57	5 25 39 17	6 10	-11 51	7
8	4 21 13 6	10 6 4 40	7 2 1 53	5 14 19 2	3 17 31 44	4 8 45 54	6 24 28 01	5 26 57 46	5 25 34 25	5 48	-7 43	8
9	4 22 11 19	10 21 13 36	7 2 41 11	5 15 41 43	3 17 43 47	4 10 0 9	6 24 32 27	5 26 54 36	5 25 30 23	5 25	-3 06	9
10	4 23 9 35	11 6 12 51	7 3 20 37	5 17 3 0	3 17 55 46	4 11 14 25	6 24 36 58	5 26 51 25	5 25 27 39	5 3	+1 41	10
11	4 24 7 52	11 20 54 2	7 4 0 10	5 18 22 50	3 18 7 43	4 12 28 44	6 24 41 33	5 26 48 14	5 25 26 26	4 40	6 16	11
12	4 25 6 12	0 5 11 19	7 4 39 51	5 19 41 11	3 18 19 35	4 13 43 4	6 24 46 12	5 26 45 3	5 25 26 34	4 17	10 22	12
13	4 26 4 33	0 19 1 47	7 5 19 40	5 20 58 1	3 18 31 24	4 14 57 26	6 24 50 55	5 26 41 53	5 25 27 40	3 54	13 46	13
14	4 27 2 58	1 2 25 15	7 5 59 36	5 22 13 15	3 18 43 9	4 16 11 50	6 24 55 43	5 26 38 42	5 25 29 8	3 31	16 18	14
15	4 28 1 23	1 15 23 38	7 6 39 40	5 23 26 50	3 18 54 51	4 17 26 17	6 25 0 34	5 26 35 31	5 25 30 22	3 8	17 54	15
16	4 28 59 51	1 28 0 16	7 7 19 51	5 24 38 40	3 19 6 27	4 18 40 43	6 25 5 29	5 26 32 20	5 25 30 53	2 45	18 33	16
17	4 29 58 21	2 10 19 20	7 8 0 10	5 25 48 42	3 19 18 0	4 19 55 13	6 25 10 29	5 26 29 10	5 25 30 22	2 22	18 19	17
18	5 0 56 53	2 22 25 11	7 8 40 37	5 26 56 48	3 19 29 30	4 21 9 44	6 25 15 33	5 26 25 59	5 25 28 43	1 59	17 14	18
19	5 1 55 27	3 4 22 9	7 9 21 11	5 28 2 51	3 19 40 54	4 22 24 18	6 25 20 40	5 26 22 48	5 25 26 5	1 36	15 24	19
20	5 2 54 4	3 16 14 12	7 10 1 52	5 29 6 45	3 19 52 15	4 23 38 52	6 25 25 52	5 26 19 37	5 25 22 45	1 12	12 56	20
21	5 3 52 42	3 28 4 50	7 10 42 40	6 0 8 20	3 20 3 31	4 24 53 29	6 25 31 7	5 26 16 27	5 25 19 8	0 49	9 57	21
22	5 4 51 23	4 9 56 59	7 11 23 36	6 1 7 26	3 20 14 43	4 26 8 6	6 25 36 26	5 26 13 16	5 25 15 40	0 26	6 33	22
23	5 5 50 5	4 21 53 13	7 12 4 39	6 2 3 52	3 20 25 49	4 27 22 46	6 25 41 49	5 26 10 5	5 25 12 43	0 2	2 53	23
24	5 6 48 50	5 3 55 30	7 12 45 49	6 2 57 27	3 20 36 51	4 28 37 26	6 25 47 15	5 26 6 54	5 25 10 35	-0 21	-0 57	24
25	5 7 47 37	5 16 5 32	7 13 27 6	6 3 47 57	3 20 47 49	4 29 52 8	6 25 52 45	5 26 3 44	5 25 9 25	-0 44	-4 47	25

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे (26 सितं. से 31 अक्तू. 2014 ई. तक) 1 अक्तू. 2014 ई. को अयनांश 24°/03'/53"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	तारी.
सितं	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
26	5 8 46 25	5 28 24 53	7 14 8 29	6 4 35 6	3 20 58 41	5 1 6 52	6 25 58 18	5 26 0 33	5 25 9 10	-1 8	-8 28	26
27	5 9 45 16	6 10 55 3	7 14 50 0	6 5 18 39	3 21 9 28	5 2 21 36	6 26 3 55	5 25 57 22	5 25 09 42	-1 31	-11 49	27
28	5 10 44 8	6 23 37 36	7 15 31 37	6 5 58 17	3 21 20 10	5 3 36 22	6 26 9 35	5 25 54 11	5 25 10 43	-1 54	-14 41	28
29	5 11 43 2	7 6 34 14	7 16 13 21	6 6 33 40	3 21 30 47	5 4 51 9	6 26 15 19	5 25 51 1	5 25 11 53	-2 18	-16 51	29
30	5 12 41 58	7 19 46 36	7 16 55 11	6 7 4 24	3 21 41 18	5 6 5 58	6 26 21 6	5 25 47 50	5 25 12 52	-2 41	-18 11	30
अक्तू.	5 13 40 56	8 3 16 14	7 17 37 8	6 7 30 9	3 21 51 43	5 7 20 46	6 26 26 55	5 25 44 39	5 25 13 28	-3 4	-18 30	अक्तू.
2	5 14 39 55	8 17 4 8	7 18 19 11	6 7 50 28	3 22 2 4	5 8 35 36	6 26 32 49	5 25 41 28	5 25 13 33	-3 28	-17 45	2
3	5 15 38 56	9 1 10 18	7 19 1 20	6 8 4 57	3 22 12 19	5 9 50 28	6 26 38 45	5 25 38 18	5 25 13 10	-3 51	-15 55	3
4	5 16 37 59	9 15 33 19	7 19 43 35	6 8 13 9	3 22 22 28	5 11 5 20	6 26 44 44	5 25 35 7	5 25 12 26	-4 14	-13 04	4
5	5 17 37 4	10 0 10 2	7 20 25 56	6 8 14 34	3 22 32 31	5 12 20 13	6 26 50 46	5 25 31 56	5 25 11 35	-4 37	-9 21	5
6	5 18 36 10	10 14 55 29	7 21 8 23	6 8 8 51	3 22 42 28	5 13 35 7	6 26 56 51	5 25 28 45	5 25 10 49	-5 0	-5 02	6
7	5 19 35 18	10 29 43 10	7 21 50 55	6 7 55 37	3 22 52 18	5 14 50 2	6 27 2 59	5 25 25 35	5 25 10 16	-5 23	-0 23	7
8	5 20 34 28	11 14 25 57	7 22 33 33	6 7 34 30	3 23 2 3	5 16 4 58	6 27 9 9	5 25 22 24	5 25 10 0	-5 46	+4 16	8
9	5 21 33 40	11 28 56 43	7 23 16 17	6 7 5 23	3 23 11 42	5 17 19 54	6 27 15 23	5 25 19 13	5 25 9 59	-6 9	8 37	9
10	5 22 32 54	0 13 9 38	7 23 59 6	6 6 28 10	3 23 21 15	5 18 34 52	6 27 21 38	5 25 16 2	5 25 10 8	-6 32	12 22	10
11	5 23 32 11	0 27 0 34	7 24 42 1	6 5 43 0	3 23 30 41	5 19 49 51	6 27 27 57	5 25 12 52	5 25 10 19	-6 54	15 19	11
12	5 24 31 29	1 10 27 33	7 25 25 0	6 4 50 19	3 23 40 0	5 21 4 50	6 27 34 17	5 25 9 41	5 25 10 26	-7 17	17 20	12
13	5 25 30 50	1 23 30 42	7 26 8 6	6 3 50 49	3 23 49 13	5 22 19 51	6 27 40 41	5 25 6 30	5 25 10 27	-7 40	18 22	13
14	5 26 30 13	2 6 11 50	7 26 51 17	6 2 45 33	3 23 58 20	5 23 34 53	6 27 47 6	5 25 3 19	5 25 10 22	-8 2	18 26	14
15	5 27 29 39	2 18 34 13	7 27 34 34	6 1 35 50	3 24 7 20	5 24 49 56	6 27 53 35	5 25 0 9	5 25 10 16	-8 24	17 36	15
16	5 28 29 6	3 0 41 51	7 28 17 56	6 0 23 23	3 24 16 13	5 26 5 0	6 28 0 5	5 24 56 58	5 25 10 15	-8 46	15 59	16
17	5 29 28 36	3 12 39 17	7 29 1 24	5 29 10 5	3 24 24 58	5 27 20 4	6 28 6 38	5 24 53 47	5 25 10 24	-9 8	13 42	17
18	6 0 28 8	3 24 31 10	7 29 44 56	5 27 58 2	3 24 33 37	5 28 35 10	6 28 13 13	5 24 50 36	5 25 10 47	-9 30	10 52	18
19	6 1 27 43	4 6 22 0	8 0 28 34	5 26 49 22	3 24 42 8	5 29 50 16	6 28 19 50	5 24 47 26	5 25 11 24	-9 52	7 35	19
20	6 2 27 20	4 18 16 0	8 1 12 18	5 25 46 8	3 24 50 32	6 1 5 23	6 28 26 29	5 24 44 15	5 25 12 12	-10 14	3 59	20
21	6 3 26 59	5 0 16 49	8 1 56 6	5 24 50 14	3 24 58 48	6 2 20 31	6 28 33 10	5 24 41 4	5 25 13 2	-10 35	+0 12	21
22	6 4 26 40	5 12 27 26	8 2 40 0	5 24 3 10	3 25 6 57	6 3 35 40	6 28 39 53	5 24 37 53	5 25 13 44	-10 57	-3 40	22
23	6 5 26 23	5 24 50 9	8 3 23 58	5 23 26 12	3 25 14 57	6 4 50 49	6 28 46 38	5 24 34 43	5 25 14 4	-11 18	-7 26	23
24	6 6 26 8	6 7 26 26	8 4 8 2	5 23 0 6	3 25 22 50	6 6 5 59	6 28 53 24	5 24 31 32	5 25 13 52	-11 39	-10 57	24
25	6 7 25 55	6 20 17 2	8 4 52 9	5 22 45 18	3 25 31 34	6 7 21 8	6 29 0 12	5 24 28 21	5 25 13 3	-12 0	-14 00	25
26	6 8 25 44	7 3 21 59	8 5 36 22	5 22 41 53	3 25 38 11	6 8 36 19	6 29 7 2	5 24 25 10	5 25 11 36	-12 20	-16 24	26
27	6 9 25 35	7 16 40 46	8 6 20 40	5 22 49 37	3 25 45 40	6 9 51 31	6 29 13 53	5 24 21 59	5 25 9 41	-12 41	-17 58	27
28	6 10 25 28	8 0 12 29	8 7 5 3	5 23 7 59	3 25 53 0	6 11 6 43	6 29 20 46	5 24 18 49	5 25 7 35	-13 1	-18 32	28
29	6 11 25 22	8 13 56 00	8 7 49 30	5 23 36 21	3 26 0 12	6 12 21 55	6 29 27 41	5 24 15 38	5 25 5 40	-13 21	-18 02	29
30	6 12 25 18	8 27 50 3	8 8 34 1	5 24 13 55	3 26 7 15	6 13 37 8	6 29 34 37	5 24 12 27	5 25 4 17	-13 41	-16 28	30
31	6 13 25 16	9 11 53 15	8 9 18 36	5 24 59 53	3 26 14 9	6 14 52 20	6 29 41 33	5 24 9 16	5 25 3 42	-14 0	-13 54	31

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (1 नवं. 7 दिसं. 2014 ई. तक)   1 नवं. 2014 ई. को अयनांश 24°/03′/56″   1 दिसंबर 2014 ई. को अयनांश 24°/04′/00″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
नवं.	6 14 25 15	9 26 3 58	8 10 3 16	5 25 53 20	3 26 20 55	6 16 7 33	6 29 48 31	5 24 6 6	5 25 4 0	-14 20	-10 29	नवं.
2	6 15 25 16	10 10 20 17	8 10 48 0	5 26 53 27	3 26 27 32	6 17 22 46	6 29 55 31	5 24 2 55	5 25 5 2	-14 39	-6 26	2
3	6 16 25 18	10 24 39 41	8 11 32 48	5 27 59 25	3 26 34 0	6 18 37 59	7 0 2 31	5 23 59 44	5 25 6 26	-14 58	-2 00	3
4	6 17 25 22	11 8 59 2	8 12 17 39	5 29 10 26	3 26 40 19	6 19 53 13	7 0 9 33	5 23 56 33	5 25 7 44	-15 17	+2 33	4
5	6 18 25 28	11 23 14 36	8 13 2 35	6 0 25 48	3 26 46 28	6 21 8 27	7 0 16 35	5 23 53 23	5 25 8 22	-15 35	6 57	5
6	6 19 25 35	0 7 22 11	8 13 47 34	6 1 44 55	3 26 52 29	6 22 23 41	7 0 23 39	5 23 50 12	5 25 7 55	-15 53	10 55	6
7	6 20 25 44	0 21 17 39	8 14 32 38	6 3 7 12	3 26 58 20	6 23 38 56	7 0 30 43	5 23 47 1	5 25 6 8	-16 11	14 13	7
8	6 21 25 55	1 4 57 18	8 15 17 44	6 4 32 7	3 27 4 2	6 24 54 10	7 0 37 48	5 23 43 50	5 25 3 1	-16 29	16 39	8
9	6 22 26 8	1 18 18 31	8 16 2 55	6 5 59 15	3 27 9 35	6 26 9 26	7 0 44 54	5 23 40 40	5 24 58 52	-16 46	18 07	9
10	6 23 26 22	2 1 19 57	8 16 48 8	6 7 28 11	3 27 14 57	6 27 24 40	7 0 51 59	5 23 37 29	5 24 54 10	-17 3	18 34	10
11	6 24 26 39	2 14 1 50	8 17 33 26	6 8 58 39	3 27 20 10	6 28 39 56	7 0 59 6	5 23 34 18	5 24 49 30	-17 20	18 05	11
12	6 25 26 57	2 26 25 53	8 18 18 47	6 10 30 20	3 27 25 13	6 29 55 12	7 1 6 14	5 23 31 7	5 24 45 27	-17 36	16 43	12
13	6 26 27 17	3 8 35 0	8 19 4 12	6 12 2 59	3 27 30 6	7 1 10 29	7 1 13 22	5 23 27 57	5 24 42 29	-17 53	14 38	13
14	6 27 27 40	3 20 33 10	8 19 49 40	6 13 36 25	3 27 34 49	7 2 25 45	7 1 20 30	5 23 24 46	5 24 40 53	-18 8	11 57	14
15	6 28 28 4	4 2 24 59	8 20 35 12	6 15 10 27	3 27 39 22	7 3 41 3	7 1 27 39	5 23 21 35	5 24 40 41	-18 24	8 48	15
16	6 29 28 30	4 14 15 32	8 21 20 46	6 16 44 55	3 27 43 43	7 4 56 19	7 1 34 47	5 23 18 24	5 24 41 37	-18 39	5 18	16
17	7 0 28 58	4 26 9 47	8 22 6 25	6 18 19 45	3 27 47 55	7 6 11 37	7 1 41 56	5 23 15 14	5 24 43 16	-18 54	+1 35	17
18	7 1 29 27	5 8 12 38	8 22 52 6	6 19 54 48	3 27 51 57	7 7 26 55	7 1 49 5	5 23 12 3	5 24 44 58	-19 9	-2 16	18
19	7 2 29 59	5 20 28 27	8 23 37 51	6 21 30 1	3 27 55 48	7 8 42 13	7 1 56 14	5 23 8 52	5 24 46 3	-19 23	-6 05	19
20	7 3 30 32	6 3 0 43	8 24 23 40	6 23 5 19	3 27 59 28	7 9 57 32	7 2 3 23	5 23 5 41	5 24 45 49	-19 37	-9 44	20
21	7 4 31 8	6 15 51 49	8 25 9 31	6 24 40 40	3 28 02 57	7 11 12 51	7 2 10 32	5 23 2 30	5 24 43 50	-19 50	-13 01	21
22	7 5 31 45	6 29 2 39	8 25 55 26	6 26 15 59	3 28 6 16	7 12 28 10	7 2 17 41	5 22 59 19	5 24 39 51	-20 4	-15 43	22
23	7 6 32 22	7 12 32 31	8 26 41 23	6 27 51 17	3 28 9 23	7 13 43 29	7 2 24 50	5 22 56 8	5 24 34 3	-20 16	-17 38	23
24	7 7 33 1	7 26 19 7	8 27 27 24	6 29 26 31	3 28 12 20	7 14 58 48	7 2 31 59	5 22 52 58	5 24 26 59	-20 29	-18 34	24
25	7 8 33 43	8 10 18 52	8 28 13 26	7 1 1 38	3 28 15 4	7 16 14 7	7 2 39 6	5 22 49 47	5 24 19 27	-20 41	-18 23	25
26	7 9 34 25	8 24 27 26	8 28 59 32	7 2 36 41	3 28 17 39	7 17 29 26	7 2 46 14	5 22 46 36	5 24 12 23	-20 53	-17 04	26
27	7 10 35 7	9 8 40 26	8 29 45 41	7 4 11 38	3 28 20 0	7 18 44 45	7 2 53 21	5 22 43 25	5 24 6 41	-21 4	-14 42	27
28	7 11 35 52	9 22 53 58	9 0 31 52	7 5 46 28	3 28 22 12	7 20 0 5	7 3 0 27	5 22 40 15	5 24 2 56	-21 15	-11 27	28
29	7 12 36 37	10. 7 5 5	9 1 18 4	7 7 21 11	3 28 24 11	7 21 15 23	7 3 7 32	5 22 37 4	5 24 1 17	-21 25	-7 33	29
30	7 13 37 23	10 21 11 52	9 2 4 20	7 8 55 49	3 28 26 0	7 22 30 41	7 3 14 37	5 22 33 53	5 24 1 24	-21 35	-3 14	30
दिसं.	7 14 38 10	11 5 13 8	9 2 50 38	7 10 30 21	3 28 27 37	7 23 46 0	7 3 21 41	5 22 30 42	5 24 2 27	-21 45	+1 14	दिसं.
2	7 15 38 58	11 19 8 8	9 3 36 58	7 12 4 48	3 28 29 2	7 25 1 18	7 3 28 45	5 22 27 32	5 24 3 25	-21 54	5 37	2
3	7 16 39 46	0 2 56 5	9 4 23 20	7 13 39 10	3 28 30 16	7 26 16 37	7 3 35 47	5 22 24 21	5 24 3 10	-22 3	9 40	3
4	7 17 40 36	0 16 35 56	9 5 9 44	7 15 13 29	3 28 31 19	7 27 31 55	7 3 42 48	5 22 21 10	5 24 0 48	-22 11	13 09	4
5	7 18 41 27	1 0 6 8	9 5 56 10	7 16 47 45	3 28 32 10	7 28 47 13	7 3 49 49	5 22 17 59	5 23 55 49	-22 19	15 53	5
6	7 19 42 18	1 13 24 52	9 6 42 37	7 18 21 59	3 28 32 49	8 0 2 31	7 3 56 48	5 22 14 49	5 23 48 13	-22 27	17 44	6
7	7 20 43 11	1 26 30 20	9 7 29 6	7 19 56 11	3 28 33 16	8 1 17 48	7 4 3 45	5 22 11 38	5 23 38 28	-22 34	18 35	7

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे (8 दिसं. 2014 से 12 जन. 2015 ई. तक) 1 जनवरी 2015 ई. को अयनांश 24°/04'/05"

दिसं	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	दिसं
दिसं	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा.अं.क. वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क. वि.	रा. अं.क.वि.	अं.क.	अं.क.	
8	7 21 44 5	2 9 21 7	9 8 15 38	7 21 30 24	3 28 33 32	8 2 33 5	7 4 10 41	5 22 8 27	5 23 27 26	-22 41	+8 28	8
9	7 22 44 59	2 21 56 38	9 9 2 11	7 23 4 37	3 28 33 36	8 3 48 23	7 4 17 37	5 22 5 16	5 23 16 12	-22 47	17 27	9
10	7 23 45 55	3 4 17 20	9 9 48 46	7 24 38 52	3 28 33 29	8 5 3 40	7 4 24 31	5 22 2 6	5 23 5 48	-22 53	15 37	10
11	7 24 46 52	3 16 24 55	9 10 35 22	7 26 13 10	3 28 33 10	8 6 18 58	7 4 31 23	5 21 58 55	5 22 57 10	-22 58	13 07	11
12	7 25 47 50	3 28 22 10	9 11 21 59	7 27 47 30	3 28 32 37	8 7 34 14	7 4 38 13	5 21 55 44	5 22 50 51	-23 3	10 07	12
13	7 26 48 50	4 10 12 58	9 12 8 39	7 29 21 56	3 28 31 54	8 8 49 31	7 4 45 3	5 21 52 33	5 22 47 0	-23 7	6 44	13
14	7 27 49 50	4 22 1 57	9 12 55 20	8 0 56 27	3 28 30 59	8 10 4 49	7 4 51 50	5 21 49 23	5 22 45 21	-23 11	+3 05	14
15	7 28 50 51	5 3 54 21	9 13 42 3	8 2 31 4	3 28 29 53	8 11 20 6	7 4 58 36	5 21 46 12	5 22 45 15	-23 15	-0 42	15
16	7 29 51 53	5 15 55 39	9 14 28 47	8 4 5 48	3 28 28 34	8 12 35 23	7 5 5 20	5 21 43 1	5 22 45 44	-23 18	-4 31	16
17	8 0 52 56	5 28 11 15	9 15 15 33	8 5 40 39	3 28 27 4	8 13 50 40	7 5 12 2	5 21 39 50	5 22 45 43	-23 20	-8 13	17
18	8 1 54 1	6 10 46 1	9 16 2 20	8 7 15 38	3 28 25 21	8 15 5 57	7 5 18 42	5 21 36 40	5 22 44 8	-23 22	-11 39	18
19	8 2 55 6	6 23 43 46	9 16 49 9	8 8 50 46	3 28 23 28	8 16 21 14	7 5 25 20	5 21 33 29	5 22 40 12	-23 24	-14 37	19
20	8 3 56 11	7 7 6 44	9 17 35 58	8 10 26 1	3 28 21 21	8 17 36 30	7 5 31 56	5 21 30 18	5 22 33 32	-23 25	-16 55	20
21	8 4 57 18	7 20 54 45	9 18 22 49	8 12 1 25	3 28 19 4	8 18 51 46	7 5 38 30	5 21 27 7	5 22 24 17	-23 26	-18 19	21
22	8 5 58 25	8 5 5 12	9 19 9 41	8 13 36 58	3 28 16 35	8 20 7 3	7 5 45 1	5 21 23 57	5 22 13 8	-23 26	-18 38	22
23	8 6 59 33	8 19 32 54	9 19 56 34	8 15 12 39	3 28 13 55	8 21 22 19	7 5 51 31	5 21 20 46	5 22 1 11	-23 26	-17 45	23
24	8 8 0 41	9 4 10 48	9 20 43 27	8 16 48 26	3 28 11 1	8 22 37 34	7 5 57 57	5 21 17 35	5 21 49 45	-23 25	-15 42	24
25	8 9 1 49	9 18 51 9	9 21 30 22	8 18 24 20	3 28 7 58	8 23 52 49	7 6 4 21	5 21 14 24	5 21 40 3	-23 24	-12 38	25
26	8 10 2 58	10 3 26 50	9 22 17 18	8 20 0 19	3 28 4 43	8 25 8 5	7 6 10 43	5 21 11 13	5 21 32 58	-23 22	-8 49	26
27	8 11 4 6	10 17 52 27	9 23 4 14	8 21 36 20	3 28 1 18	8 26 23 18	7 6 17 2	5 21 8 2	5 21 28 46	-23 20	-4 30	27
28	8 12 5 15	11 2 4 42	9 23 51 11	8 23 12 22	3 27 57 41	8 27 38 32	7 6 23 18	5 21 4 51	5 21 27 4	-23 18	+0 00	28
29	8 13 6 23	11 16 2 21	9 24 38 8	8 24 48 21	3 27 53 53	8 28 53 45	7 6 29 32	5 21 1 41	5 21 26 54	-23 14	+4 26	29
30	8 14 7 32	11 29 45 32	9 25 25 6	8 26 24 14	3 27 49 55	9 0 8 57	7 6 35 43	5 20 58 30	5 21 26 56	-23 11	8 34	30
31	8 15 8 40	0 13 15 22	9 26 12 3	8 27 59 55	3 27 45 45	9 1 24 8	7 6 41 50	5 20 55 19	5 21 25 46	-23 7	12 11	31
2015 जन.	8 16 9 48	0 26 33 4	9 26 59 2	8 29 35 20	3 27 41 26	9 2 39 19	7 6 47 55	5 20 52 8	5 21 22 12	-23 2	15 06	2015 जन.
2	8 17 10 56	1 9 39 32	9 27 46 0	9 1 10 21	3 27 36 57	9 3 54 29	7 6 53 57	5 20 48 57	5 21 15 33	-22 58	17 12	2
3	8 18 12 4	1 22 35 19	9 28 32 58	9 2 44 51	3 27 32 17	9 5 9 39	7 6 59 56	5 20 45 47	5 21 5 43	-22 52	18 23	3
4	8 19 13 12	2 5 20 25	9 29 19 57	9 4 18 41	3 27 27 28	9 6 24 47	7 7 5 51	5 20 42 36	5 20 53 11	-22 46	18 37	4
5	8 20 14 20	2 17 54 37	10 0 6 55	9 5 51 36	3 27 22 27	9 7 39 55	7 7 11 43	5 20 39 25	5 20 38 55	-22 40	17 56	5
6	8 21 15 28	3 0 17 45	10 0 53 53	9 7 23 26	3 27 17 18	9 8 55 2	7 7 17 32	5 20 36 14	5 20 24 12	-22 33	16 24	6
7	8 22 16 35	3 12 30 3	10 1 40 52	9 8 53 54	3 27 12 0	9 10 10 8	7 7 23 18	5 20 33 4	5 20 10 17	-22 26	14 09	7
8	8 23 17 43	3 24 32 28	10 2 27 51	9 10 22 42	3 27 6 32	9 11 25 14	7 7 29 1	5 20 29 53	5 19 58 19	-22 18	11 19	8
9	8 24 18 51	4 6 26 48	10 3 14 49	9 11 49 27	3 27 0 55	9 12 40 19	7 7 34 40	5 20 26 42	5 19 49 2	-22 10	8 04	9
10	8 25 19 58	4 18 15 49	10 4 1 47	9 13 13 46	3 26 55 10	9 13 55 24	7 7 40 15	5 20 23 31	5 19 42 45	-22 2	4 30	10
11	8 26 21 6	5 0 3 15	10 4 48 44	9 14 35 9	3 26 49 14	9 15 10 26	7 7 45 46	5 20 20 21	5 19 39 18	-21 53	+0 47	11
12	8 27 22 14	5 11 53 38	10 5 35 42	9 15 53 4	3 26 43 11	9 16 25 29	7 7 51 14	5 20 17 10	5 19 38 1	-21 44	-2 59	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे *(13 जन. से 17 फर. 2015 ई. तक)* 1 फरवरी 2015 ई. को अयनांश 24°/04′/10″

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जन.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	रा. अं.क.वि.	अं.क.	अं.क.	
13	8 28 23 21	5 23 52 7	10 6 22 40	9 17 6 55	3 26 37 0	9 17 40 31	7 7 56 39	5 20 13 59	5 19 37 56	-21 34	-6 41	13
14	8 29 24 29	6 6 4 17	10 7 9 37	9 18 16 1	3 26 30 41	9 18 55 32	7 8 1 59	5 20 10 48	5 19 37 51	-21 24	-10 10	14
15	9 0 25 36	6 18 35 36	10 7 56 35	9 19 19 38	3 26 24 14	9 20 10 32	7 8 7 16	5 20 7 38	5 19 36 36	-21 13	-13 18	15
16	9 1 26 44	7 1 31 00	10 8 43 32	9 20 16 55	3 26 17 39	9 21 25 32	7 8 12 29	5 20 4 27	5 19 33 15	-21 2	-15 52	16
17	9 2 27 51	7 14 54 9	10 9 30 28	9 21 7 2	3 26 10 58	9 22 40 31	7 8 17 38	5 20 1 16	5 19 27 15	-20 51	-17 41	17
18	9 3 28 58	7 28 46 36	10 10 17 23	9 21 49 8	3 26 4 8	9 23 55 28	7 8 22 42	5 19 58 5	5 19 18 41	-20 39	-18 32	18
19	9 4 30 4	8 13 6 59	10 11 4 19	9 22 22 19	3 25 57 13	9 25 10 25	7 8 27 43	5 19 54 55	5 19 8 6	-20 27	-18 15	19
20	9 5 31 10	8 27 50 36	10 11 51 14	9 22 45 46	3 25 50 12	9 26 25 20	7 8 32 40	5 19 51 44	5 18 56 34	-20 14	-16 45	20
21	9 6 32 16	9 12 49 42	10 12 38 9	9 22 58 41	3 25 43 4	9 27 40 15	7 8 37 32	5 19 48 33	5 18 45 22	-20 1	-14 06	21
22	9 7 33 21	9 27 54 35	10 13 25 3	9 23 0 30	3 25 35 51	9 28 55 9	7 8 42 20	5 19 45 22	5 18 35 44	-19 48	-10 29	22
23	9 8 34 25	10 12 55 20	10 14 11 54	9 22 50 48	3 25 28 31	10 0 10 0	7 8 47 2	5 19 42 12	5 18 28 36	-19 34	-6 13	23
24	9 9 35 28	10 27 43 28	10 14 58 46	9 22 29 33	3 25 21 8	10 1 24 51	7 8 51 41	5 19 39 1	5 18 24 17	-19 20	-1 37	24
25	9 10 36 30	11 12 13 5	10 15 45 38	9 21 56 55	3 25 13 39	10 2 39 40	7 8 56 15	5 19 35 50	5 18 22 32	-19 5	+3 00	25
26	9 11 37 31	11 26 21 22	10 16 32 28	9 21 13 33	3 25 6 6	10 3 54 28	7 9 0 45	5 19 32 39	5 18 22 31	-18 51	7 19	26
27	9 12 38 31	0 10 7 48	10 17 19 16	9 20 20 27	3 24 58 30	10 5 9 14	7 9 5 10	5 19 29 29	5 18 23 1	-18 36	11 08	27
28	9 13 39 30	0 23 33 44	10 18 6 4	9 19 19 5	3 24 50 49	10 6 23 58	7 9 9 30	5 19 26 18	5 18 22 46	-18 20	14 16	28
29	9 14 40 27	1 6 41 27	10 18 52 51	9 18 11 13	3 24 43 5	10 7 38 41	7 9 13 46	5 19 23 7	5 18 20 39	-18 4	16 35	29
30	9 15 41 24	1 19 33 32	10 19 39 36	9 16 58 51	3 24 35 19	10 8 53 22	7 9 17 57	5 19 19 56	5 18 15 58	-17 48	18 01	30
31	9 16 42 19	2 2 12 21	10 20 26 19	9 15 44 13	3 24 27 28	10 10 8 0	7 9 22 2	5 19 16 46	5 18 8 32	-17 32	18 31	31
फर.	9 17 43 13	2 14 39 57	10 21 13 1	9 14 29 32	3 24 19 37	10 11 22 38	7 9 26 3	5 19 13 35	5 17 58 45	-17 15	18 06	फर.
2	9 18 44 5	2 26 57 52	10 21 59 42	9 13 16 50	3 24 11 43	10 12 37 13	7 9 30 0	5 19 10 24	5 17 47 24	-16 58	16 51	2
3	9 19 44 57	3 9 7 17	10 22 46 22	9 12 8 1	3 24 3 48	10 13 51 47	7 9 33 51	5 19 7 13	5 17 35 30	-16 41	14 51	3
4	9 20 45 48	3 21 9 14	10 23 33 0	9 11 4 37	3 23 55 51	10 15 6 19	7 9 37 37	5 19 4 2	5 17 24 11	-16 23	12 14	4
5	9 21 46 37	4 3 4 54	10 24 19 37	9 10 7 53	3 23 47 53	10 16 20 48	7 9 41 18	5 19 0 52	5 17 14 24	-16 5	9 07	5
6	9 22 47 26	4 14 55 42	10 25 6 12	9 9 18 39	3 23 39 55	10 17 35 16	7 9 44 54	5 18 57 41	5 17 6 52	-15 47	5 40	6
7	9 23 48 13	4 26 43 44	10 25 52 45	9 8 37 27	3 23 31 57	10 18 49 41	7 9 48 25	5 18 54 30	5 17 1 55	-15 28	+2 01	7
8	9 24 48 59	5 8 31 40	10 26 39 17	9 8 4 35	3 23 23 58	10 20 4 5	7 9 51 50	5 18 51 19	5 16 59 29	-15 10	-1 43	8
9	9 25 49 44	5 20 22 55	10 27 25 47	9 7 40 31	3 23 16 0	10 21 18 27	7 9 55 11	5 18 48 9	5 16 59 7	-14 51	-5 25	9
10	9 26 50 29	6 2 21 37	10 28 12 15	9 7 23 41	3 23 8 2	10 22 32 45	7 9 58 24	5 18 44 58	5 17 0 5	-14 31	-8 55	10
11	9 27 51 12	6 14 32 27	10 28 58 42	9 7 15 15	3 23 0 5	10 23 47 3	7 10 1 34	5 18 41 47	5 17 1 26	-14 12	-12 06	11
12	9 28 51 54	6 27 0 23	10 29 45 8	9 7 14 20	3 22 52 11	10 25 1 18	7 10 4 38	5 18 38 36	5 17 2 14	-13 52	-14 49	12
13	9 29 52 35	7 9 50 19	11 0 31 31	9 7 20 32	3 22 44 18	10 26 15 31	7 10 7 37	5 18 35 26	5 17 1 41	-13 32	-16 53	13
14	10 0 53 15	7 23 6 31	11 1 17 54	9 7 33 23	3 22 36 27	10 27 29 43	7 10 10 30	5 18 32 15	5 16 59 17	-13 12	-18 07	14
15	10 1 53 53	8 6 51 41	11 2 4 14	9 7 52 25	3 22 28 39	10 28 43 52	7 10 13 16	5 18 29 4	5 16 54 59	-12 52	-18 21	15
16	10 2 54 31	8 21 6 19	11 2 50 33	9 8 17 10	3 22 20 54	10 29 57 59	7 10 15 58	5 18 25 53	5 16 49 8	-12 31	-17 28	16
17	10 3 55 7	9 5 47 44	11 3 36 49	9 8 47 11	3 22 13 11	11 1 12 2	7 10 18 34	5 18 22 43	5 16 42 26	-12 10	-15 25	17

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट, प्रातः 5/30 बजे

(18 फर. से 25 मार्च 2015 ई. तक) 1 मार्च, 2015 ई. को अयनांश 24° /04′/13″

ता. फर.	सूर्य रा. अं.क.वि.	चन्द्र रा. अं.क.वि.	मंगल रा. अं.क.वि.	बुध रा. अं.क.वि.	गुरु रा. अं.क.वि.	शुक्र रा. अं.क.वि.	शनि रा. अं.क.वि.	मध्यम राहु रा. अं.क.वि.	स्पष्ट राहु रा. अं.क.वि.	सूर्य क्रांति अं.क.	चंद्र क्रांति अं.क.	फर.
18	10 4 55 42	9 20 49 53	11 4 23 5	9 9 22 7	3 22 5 32	11 2 26 4	7 10 21 4	5 18 19 32	5 16 35 48	-11 49	-12 17	18
19	10 5 56 16	10 6 3 50	11 5 9 18	9 10 1 31	3 21 57 58	11 3 40 4	7 10 23 29	5 18 16 21	5 16 30 7	-11 28	-8 17	19
20	10 6 56 48	10 21 19 4	11 5 55 29	9 10 45 4	3 21 50 27	11 4 54 0	7 10 25 48	5 18 13 10	5 16 26 4	-11 7	-3 44	20
21	10 7 57 19	11 6 25 12	11 6 41 38	9 11 32 26	3 21 43 1	11 6 7 55	7 10 28 1	5 18 9 59	5 16 23 56	-10 45	+1 01	21
22	10 8 57 47	11 21 13 48	11 7 27 46	9 12 23 18	3 21 35 40	11 7 21 46	7 10 30 8	5 18 6 48	5 16 23 36	-10 23	5 37	22
23	10 9 58 14	0 5 39 14	11 8 13 51	9 13 17 24	3 21 28 25	11 8 35 35	7 10 32 9	5 18 3 37	5 16 24 35	-10 2	9 46	23
24	10 10 58 39	0 19 38 54	11 8 59 54	9 14 14 31	3 21 21 15	11 9 49 20	7 10 34 4	5 18 0 27	5 16 26 7	-9 40	13 13	24
25	10 11 59 2	1 3 12 52	11 9 45 54	9 15 14 25	3 21 14 10	11 11 3 3	7 10 35 54	5 17 57 16	5 16 27 23	-9 17	15 51	25
26	10 12 59 23	1 16 22 58	11 10 31 53	9 16 16 54	3 21 7 12	11 12 16 42	7 10 37 38	5 17 53 5	5 16 27 41	-8 55	17 32	26
27	10 13 59 42	1 29 12 12	11 11 17 49	9 17 21 48	3 21 0 21	11 13 30 19	7 10 39 15	5 17 50 54	5 16 26 33	-8 33	18 17	27
28	10 14 59 59	2 11 43 59	11 12 3 41	9 18 28 57	3 20 53 35	11 14 43 51	7 10 40 46	5 17 47 44	5 16 23 53	-8 10	18 07	28
मार्च	10 16 0 14	2 24 1 50	11 12 49 32	9 19 38 13	3 20 46 57	11 15 57 20	7 10 42 12	5 17 44 33	5 16 19 50	-7 47	17 06	मार्च
2	10 17 0 27	3 6 8 54	11 13 35 21	9 20 49 30	3 20 40 27	11 17 10 46	7 10 43 31	5 17 41 22	5 16 14 51	-7 25	15 18	2
3	10 18 0 38	3 18 8 4	11 14 21 7	9 22 2 39	3 20 34 3	11 18 24 9	7 10 44 45	5 17 38 11	5 16 9 30	-7 2	12 53	3
4	10 19 0 48	4 0 1 42	11 15 6 51	9 23 17 36	3 20 27 48	11 19 37 28	7 10 45 52	5 17 35 0	5 16 4 24	-6 39	9 56	4
5	10 20 0 55	4 11 51 59	11 15 52 32	9 24 34 15	3 20 21 40	11 20 50 43	7 10 46 54	5 17 31 50	5 16 0 5	-6 16	6 36	5
6	10 21 1 0	4 23 40 51	11 16 38 11	9 25 52 32	3 20 15 41	11 22 3 55	7 10 47 49	5 17 28 39	5 15 56 55	-5 53	+3 01	6
7	10 22 1 4	5 5 30 16	11 17 23 47	9 27 12 22	3 20 9 49	11 23 17 3	7 10 48 39	5 17 25 28	5 15 55 7	-5 29	-0 42	7
8	10 23 1 6	5 17 22 19	11 18 9 21	9 28 33 43	3 20 4 6	11 24 30 7	7 10 49 22	5 17 22 17	5 15 54 38	-5 6	-4 24	8
9	10 24 1 6	5 29 19 27	11 18 54 52	9 29 56 32	3 19 58 32	11 25 43 8	7 10 49 59	5 17 19 6	5 15 55 17	-4 43	-7 57	9
10	10 25 1 4	6 11 24 29	11 19 40 21	10 1 20 43	3 19 53 7	11 26 56 5	7 10 50 30	5 17 15 55	5 15 56 41	-4 19	-11 12	10
11	10 26 1 1	6 23 40 39	11 20 25 47	10 2 46 19	3 19 47 51	11 28 8 58	7 10 50 55	5 17 12 44	5 15 58 22	-3 56	-14 01	11
12	10 27 0 56	7 6 11 31	11 21 11 11	10 4 13 14	3 19 42 45	11 29 21 47	7 10 51 14	5 17 9 34	5 15 59 54	-3 32	-16 14	12
13	10 28 0 49	7 19 0 48	11 21 56 32	10 5 41 29	3 19 37 48	0 0 34 33	7 10 51 27	5 17 6 23	5 16 00 52	-3 8	-17 42	13
14	10 29 0 41	8 2 11 58	11 22 41 50	10 7 11 1	3 19 32 59	0 1 47 14	7 10 51 33	5 17 3 12	5 16 1 5	-2 45	-18 15	14
15	11 0 0 31	8 15 47 44	11 23 27 6	10 8 41 51	3 19 28 22	0 2 59 51	7 10 51 34	5 17 0 1	5 16 0 29	-2 21	-17 48	15
16	11 1 0 19	8 29 49 22	11 24 12 20	10 10 13 57	3 19 23 54	0 4 12 25	7 10 51 29	5 16 56 51	5 15 59 13	-1 57	-16 16	16
17	11 2 0 6	9 14 16 5	11 24 57 31	10 11 47 19	3 19 19 37	0 5 24 55	7 10 51 17	5 16 53 40	5 15 57 35	-1 34	-13 41	17
18	11 2 59 51	9 29 4 26	11 25 42 40	10 13 21 55	3 19 15 29	0 6 37 21	7 10 51 0	5 16 50 29	5 15 55 55	-1 10	-10 09	18
19	11 3 59 34	10 14 8 11	11 26 27 46	10 14 57 47	3 19 11 32	0 7 49 43	7 10 50 36	5 16 47 18	5 15 54 34	-0 46	-5 54	19
20	11 4 59 15	10 29 18 55	11 27 12 49	10 16 34 54	3 19 7 46	0 9 2 0	7 10 50 6	5 16 44 8	5 15 53 44	-0 22	-1 14	20
21	11 5 58 54	11 14 27 2	11 27 57 50	10 18 13 16	3 19 4 10	0 10 14 13	7 10 49 30	5 16 40 57	5 15 53 30	+1 12	+3 30	21
22	11 6 58 31	11 29 23 19	11 28 42 48	10 19 52 53	3 19 0 45	0 11 26 21	7 10 48 48	5 16 37 46	5 15 53 47	0 25	7 57	22
23	11 7 58 6	0 14 0 10	11 29 27 43	10 21 33 47	3 18 57 31	0 12 38 25	7 10 48 0	5 16 34 35	5 15 54 24	0 49	11 50	23
24	11 8 57 39	0 28 12 30	0 0 12 35	10 23 15 57	3 18 54 28	0 13 50 24	7 10 47 7	5 16 31 25	5 15 55 7	1 12	14 53	24
25	11 9 57 10	1 11 58 1	0 0 57 25	10 24 59 24	3 18 51 38	0 15 2 18	7 10 46 7	5 16 28 14	5 15 55 46	1 36	16 59	25

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०७१ (2014–15 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
25	11 17 56 09	10 12 04	8 19 25
28	11 18 06 21	10 12 10	8 19 27
31	11 18 16 39	10 12 16	8 19 28
अप्रै.	11 18 20 03	10 12 24	8 19 29
4	11 18 30 21	10 12 24	8 19 30
7	11 18 40 33	10 12 30	8 19 31
10	11 18 50 51	10 12 35	8 19 31
13	11 19 01 03	10 12 40	8 19 31
16	11 19 11 09	10 12 45	8 19 31
19	11 19 21 09	10 12 50	8 19 31
22	11 19 31 09	10 12 54	8 19 30
25	11 19 40 57	10 12 59	8 19 29
28	11 19 50 39	10 13 03	8 19 28
मई	11 20 00 09	10 13 07	8 19 27
4	11 20 09 33	10 13 10	8 19 25
7	11 20 18 45	10 13 14	8 19 23
10	11 20 27 39	10 13 17	8 19 21
13	11 20 36 27	10 13 20	8 19 19
16	11 20 44 57	10 13 22	8 19 16
19	11 20 53 09	10 13 24	8 19 14
22	11 21 01 09	10 13 26	8 19 11
25	11 21 08 57	10 13 28	8 19 07
28	11 21 16 21	10 13 29	8 19 04
31	11 21 23 27	10 13 31	8 19 00
जून	11 21 25 45	10 13 31	8 18 59
4	11 21 32 27	10 13 32	8 18 56
7	11 21 38 45	10 13 32	8 18 52
10	11 21 44 45	10 13 32	8 18 48
13	11 21 50 21	10 13 32	8 18 44
16	11 21 55 39	10 13 32	8 18 39
19	11 22 00 01	10 13 31	8 18 35
22	11 22 04 57	10 13 30	8 18 31
25	11 22 09 03	10 13 28	8 18 26

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
28	11 22 12 45	10 13 27	8 18 22
जुला.	11 22 15 57	10 13 25	8 18 17
4	11 22 18 51	10 13 23	8 18 13
7	11 22 21 15	10 13 21	8 18 08
10	11 22 23 09	10 13 18	8 18 04
13	11 22 24 45	10 13 15	8 17 59
16	11 22 25 51	10 13 12	8 17 55
19	11 22 26 27	10 13 09	8 17 51
22	11 22 26 45	10 13 05	8 17 46
25	11 22 26 33	10 13 01	8 17 42
28	11 22 25 51	10 12 58	8 17 38
31	11 22 24 45	10 12 53	8 17 34
अग.	11 22 24 21	10 12 52	8 17 33
4	11 22 22 39	10 12 48	8 17 29
7	11 22 20 33	10 12 43	8 17 25
10	11 22 18 03	10 12 39	8 17 22
13	11 22 15 15	10 12 34	8 17 19
16	11 22 11 57	10 12 30	8 17 15
19	11 22 08 15	10 12 25	8 17 13
22	11 22 04 15	10 12 20	8 17 10
25	11 21 59 51	10 12 15	8 17 07
28	11 21 55 03	10 12 10	8 17 05
31	11 21 50 03	10 12 05	8 17 03
सितं.	11 21 48 15	10 12 03	8 17 02
4	11 21 42 45	10 11 58	8 17 01
7	11 21 37 03	10 11 54	8 17 00
10	11 21 31 03	10 11 49	8 16 58
13	11 21 24 45	10 11 44	8 16 57
16	11 21 18 15	10 11 39	8 16 56
19	11 21 11 39	10 11 35	8 16 56
22	11 21 04 45	10 11 30	8 16 56
25	11 20 57 51	10 11 26	8 16 56
28	11 20 50 45	10 11 21	8 16 56

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
अक्तू.	11 20 43 33	10 11 17	8 16 57
4	11 20 36 15	10 11 14	8 16 58
7	11 20 28 57	10 11 10	8 16 59
10	11 20 21 39	10 11 06	8 17 01
13	11 20 14 27	10 11 03	8 17 03
16	11 20 07 09	10 11 00	8 17 05
19	11 20 00 03	10 10 57	8 17 07
22	11 19 52 57	10 10 55	8 17 10
25	11 19 46 03	10 10 52	8 17 12
28	11 19 43 15	10 10 50	8 17 16
31	11 19 32 45	10 10 48	8 17 19
नवं.	11 19 30 33	10 10 48	8 17 20
4	11 19 24 15	10 10 47	8 17 24
7	11 19 18 15	10 10 45	8 17 28
10	11 19 12 27	10 10 45	8 17 32
13	11 19 06 57	10 10 44	8 17 36
16	11 19 01 45	10 10 44	8 17 41
19	11 18 56 57	10 10 44	8 17 45
22	11 18 52 27	10 10 45	8 17 50
25	11 18 48 21	10 10 45	8 17 55
28	11 18 44 33	10 10 46	8 18 01
दिसं.	11 18 41 15	10 10 48	8 18 06
4	11 18 38 21	10 10 49	8 18 12
7	11 18 35 51	10 10 51	8 18 17
10	11 18 33 45	10 10 54	8 18 23
13	11 18 32 09	10 10 56	8 18 29
16	11 18 31 03	10 10 59	8 18 35
19	11 18 30 21	10 11 02	8 18 41
22	11 18 30 03	10 11 06	8 18 47
25	11 18 30 21	10 11 09	8 18 53
28	11 18 31 03	10 11 13	8 19 00

2014-15	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
31	11 18 32 09	10 11 18	8 19 06
जन.15	11 18 32 39	10 11 19	8 19 08
4	11 18 34 37	10 11 24	8 19 14
7	11 18 36 45	10 11 28	8 19 20
10	11 18 39 27	10 11 33	8 19 27
13	11 18 42 33	10 11 39	8 19 33
16	11 18 46 09	10 11 44	8 19 39
19	11 18 50 15	10 11 50	8 19 45
22	11 18 54 45	10 11 55	8 19 51
25	11 18 59 39	10 12 01	8 19 57
28	11 19 04 57	10 12 07	8 20 03
31	11 19 10 39	10 12 14	8 20 09
फर.	11 19 12 33	10 12 16	8 20 11
4	11 19 18 45	10 12 22	8 20 16
7	11 19 25 21	10 12 29	8 20 22
10	11 19 32 15	10 12 35	8 20 27
13	11 19 39 33	10 12 42	8 20 32
16	11 19 47 09	10 12 49	8 20 37
19	11 19 54 57	10 12 55	8 20 42
22	11 20 03 09	10 13 02	8 20 47
25	11 20 11 33	10 13 09	8 20 51
28	11 20 20 15	10 13 16	8 20 55
मार्च	11 20 23 15	10 13 18	8 20 57
4	11 20 32 15	10 13 25	8 21 00
7	11 20 41 27	10 13 32	8 21 04
10	11 20 50 51	10 13 38	8 21 08
13	11 21 00 21	10 13 45	8 21 11
16	11 21 10 09	10 13 52	8 21 14
19	11 21 19 57	10 13 58	8 21 16
22	11 21 29 57	10 14 05	8 21 19
25	11 21 40 03	10 14 11	8 21 21
28	11 21 20 09	10 14 17	8 21 23
31	11 22 00 27	10 14 24	8 21 24

दैनिक चन्द्रोदय—चन्द्रास्त—जालन्धर (भा. स्टैं. टा.), (सन् 2014–15 ई.)

तारीख	जनवरी 2014		फरवरी 2014		मार्च 2014		अप्रैल 2014		मई 2014		जून 2014		जुलाई 2014		अगस्त 2014		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	6 57	17 44	8 04	19 54	6 36	18 37	7 12	20 3.1	7 16	21 12	8 28	22 14	8 58	22 04	10 23	22 17	1
2	7 .54	18 53	8 46	21 00	7 18	19 42	7 55	21 32	8 03	22 04	9 20	22 53	9 51	22 36	11 17	22 52	2
3	8 46	20 02	9 27	22 03	7 59	20 46	8 38	22 28	8 54	22 52	10 13	23 29	10 43	23 10	12 12	23 30	3
4	9 31	21 10	10 07	23 05	8 39	21 49	9 25	23 22	9 45	23 37	11 05	— —	11 36	23 41	13 10	— —	4
5	10 13	22 15	10 46	— —	9 20	22 49	10 14	— —	10 37	— —	11 58	0 04	12 29	— —	14 09	0 13	5
6	10 53	23 17	11 25	0 04	10 02	23 46	11 04	0 12	11 29	0 17	12 51	0 36	13 25	0 15	15 08	1 00	6
7	11 32	— —	12 08	1 02	10 47	— —	11 55	0 58	12 22	0 54	13 45	1 09	14 23	0 53	16 08	1 55	7
8	12 09	0 19	12 52	1 57	11 33	0 41	12 46	1 40	13 14	1 30	14 41	1 44	15 23	1 34	17 05	2 54	8
9	12 47	1 17	13 38	2 49	12 22	1 32	13 39	2 19	14 09	2 04	15 39	2 20	16 24	2 20	17 59	3 59	9
10	13 27	2 14	14 27	3 38	13 12	2 19	14 31	2 55	15 02	2 37	16 39	3 00	17 26	3 12	18 49	5 07	10
11	14 09	3 09	15 17	4 24	14 02	3 03	15 25	3 30	15 58	3 12	17 41	3 45	18 26	4 11	19 36	6 17	11
12	14 54	4 03	16 08	5 06	14 54	3 44	16 19	4 04	16 55	3 48	18 43	4 35	19 22	5 15	20 19	7 26	12
13	15 41	4 53	17 00	5 46	15 47	4 21	17 14	4 38	17 55	4 26	19 45	5 31	20 14	6 22	21 01	8 33	13
14	16 30	5 41	17 54	6 22	16 40	4 57	18 11	5 14	18 57	5 08	20 42	6 33	21 01	7 31	21 42	9 39	14
15	17 21	6 26	18 47	6 58	17 35	5 31	19 10	5 50	19 59	5 56	21 35	7 38	21 44	8 39	22 24	10 42	15
16	18 13	7 08	19 41	7 31	18 29	6 05	20 10	6 31	20 59	6 48	22 23	8 44	22 26	9 47	23 06	11 44	16
17	19 06	7 46	20 35	8 05	19 24	6 40	21 11	7 14	21 58	7 47	23 07	9 52	23 06	10 50	23 40	12 43	17
18	19 59	8 22	21 30	8 39	20 21	7 16	22 11	8 03	22 52	8 48	23 49	10 57	23 46	11 54	— —	13 39	18
19	20 52	8 56	22 27	9 14	21 19	7 53	23 09	8 56	23 41	9 52	— —	12 01	— —	12 54	0 36	14 32	19
20	21 45	9 29	23 24	9 52	22 19	8 33	— —	9 54	— —	10 56	0 27	13 01	0 26	13 53	1 25	15 21	20
21	22 39	10 02	— —	10 32	23 18	9 17	0 04	10 55	0 25	12 01	1 05	14 03	1 07	14 50	2 13	16 09	21
22	23 35	10 37	0 24	11 18	— —	10 06	0 55	11 57	1 07	13 05	1 45	15 01	1 52	15 44	3 05	16 51	22
23	— —	11 12	1 24	12 09	0 16	11 00	1 42	13 02	1 47	14 07	2 25	16 00	2 38	16 35	3 57	17 30	23
24	0 32	11 50	2 23	13 06	1 13	11 59	2 26	14 05	2 26	15 08	3 07	16 56	3 27	17 24	4 48	18 07	24
25	1 18	12 34	3 20	14 08	2 07	13 01	3 06	15 11	3 03	16 08	3 53	17 50	4 18	18 09	5 42	18 41	25
26	2 33	13 23	4 15	15 13	2 58	14 05	3 46	16 14	3 44	17 08	4 39	18 41	5 09	18 50	6 33	19 14	26
27	3 35	14 19	5 06	16 20	3 44	15 11	4 26	17 16	4 25	18 07	5 30	19 28	6 01	19 27	7 26	19 48	27
28	4 36	15 20	5 52	17 29	4 28	16 17	5 05	18 18	5 09	19 02	6 22	20 12	6 54	20 03	8 19	20 22	28
29	5 35	16 26	— —	— —	5 09	17 22	5 47	19 19	5 57	19 56	7 13	20 52	7 46	20 37	9 12	20 55	29
30	6 29	17 35	— —	— —	5 50	18 26	6 30	20 17	6 45	20 45	8 06	21 29	8 38	21 10	10 07	21 33	30
31	7 18	18 45	— —	— —	6 31	19 30	— —	— —	7 36	21 32	— —	— —	9 30	21 43	11 03	22 13	31

दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त–जालन्धर (भा. स्टैं. टा.), (सन् 2014–15 ई.)

तारीख	सितम्बर 2014		अक्तूबर 2014		नवम्बर 2014		दिसम्बर 2014		जनवरी 2015		फरवरी 2015		मार्च 2015		अप्रैल 2015		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	12 00	22 57	12 44	23 34	13 56	0 33	13 58	1 37	14 45	3 36	16 01	5 06	14 50	3 50	16 15	4 24	1
2	12 57	23 48	13 37	— —	14 37	1 37	14 37	2 39	15 32	4 34	16 53	5 52	15 42	4 33	17 06	4 57	2
3	13 55	— —	14 28	0 34	15 18	2 42	15 19	3 42	16 22	5 29	17 46	6 33	16 35	5 11	17 58	5 30	3
4	14 51	0 42	15 14	1 38	16 00	3 46	16 02	4 43	17 13	6 21	18 40	7 11	17 27	5 48	18 50	6 04	4
5	15 45	1 43	15 59	2 44	16 41	4 49	16 49	5 44	18 07	7 09	19 32	7 48	18 20	6 22	19 44	6 38	5
6	16 36	2 47	16 41	3 51	17 25	5 54	17 38	6 42	18 59	7 54	20 24	8 21	19 11	6 56	20 38	7 14	6
7	17 23	3 55	17 24	4 57	18 10	6 57	18 29	7 37	19 54	8 35	21 15	8 54	20 03	7 29	21 33	7 53	7
8	18 08	5 03	18 06	6 03	18 58	7 58	19 22	8 28	20 46	9 12	22 07	9 27	20 55	8 03	22 28	8 34	8
9	18 51	6 12	18 50	7 09	19 49	8 55	20 16	9 15	21 39	9 47	23 00	10 01	21 49	8 36	23 23	9 21	9
10	19 35	7 19	19 34	8 13	20 41	9 48	21 09	9 58	22 30	10 20	23 54	10 36	22 43	9 13	— —	10 11	10
11	20 17	8 25	20 22	9 15	21 34	10 37	22 03	10 36	23 22	10 53	— —	11 13	23 38	9 52	0 16	11 06	11
12	20 59	9 29	21 10	10 14	22 27	11 22	22 53	11 13	— —	11 26	0 49	11 54	— —	10 35	1 07	12 05	12
13	21 45	10 32	22 01	11 08	23 20	12 03	23 47	11 47	0 15	12 00	1 45	12 40	0 33	11 23	1 57	13 06	13
14	22 31	11 31	22 52	11 59	— —	12 39	— —	12 20	1 08	12 36	2 42	13 31	1 27	12 16	2 43	14 11	14
15	23 20	12 26	23 45	12 44	0 12	13 14	0 39	12 53	2 04	13 15	3 39	14 28	2 22	13 14	3 28	15 17	15
16	— —	13 18	— —	13 27	1 04	13 47	1 31	13 27	3 01	14 01	4 34	15 30	3 14	14 16	4 11	16 23	16
17	0 10	14 06	0 36	14 05	1 57	14 21	2 26	14 02	4 00	14 51	5 27	16 36	4 04	15 21	4 53	17 30	17
18	1 00	14 47	1 29	14 41	2 49	14 55	3 21	14 41	4 58	15 47	6 17	17 45	4 51	16 29	5 37	18 37	18
19	1 52	15 30	2 21	15 15	3 43	15 29	4 20	15 24	5 56	16 48	7 04	18 55	5 37	17 38	6 22	19 43	19
20	2 44	16 07	3 13	15 49	4 39	16 08	5 18	16 13	6 51	17 54	7 49	20 03	6 21	18 45	7 07	20 48	20
21	3 36	16 42	4 07	16 23	5 37	16 48	6 18	17 07	7 44	19 02	8 32	21 10	7 04	19 53	7 57	21 50	21
22	4 28	17 15	4 59	16 57	6 35	17 34	7 17	18 07	8 31	20 10	9 15	22 16	7 48	21 00	8 48	22 46	22
23	5 21	17 49	5 55	17 33	7 35	18 25	8 13	19 09	9 16	21 18	9 59	23 20	8 34	22 05	9 42	23 39	23
24	6 14	18 23	6 50	18 12	8 33	19 21	9 05	20 15	9 58	22 23	10 42	— —	9 20	23 07	10 35	— —	24
25	7 07	18 57	7 49	18 55	9 29	20 21	9 53	21 21	10 40	23 27	11 29	0 21	10 10	— —	11 29	0 26	25
26	8 03	19 34	8 46	19 42	10 23	21 23	10 38	22 27	11 20	— —	12 17	1 19	11 00	0 05	12 23	1 09	26
27	8 58	20 13	9 44	20 33	11 11	22 27	11 19	23 31	12 03	0 30	13 07	2 13	11 52	0 57	13 16	1 47	27
28	9 55	20 56	10 40	21 29	11 56	23 31	12 00	— —	12 45	1 31	13 58	3 03	12 44	1 47	14 08	2 24	28
29	10 52	21 44	11 34	22 28	12 38	— —	12 40	0 33	13 31	2 29	— —	— —	13 37	2 31	15 00	2 57	29
30	11 49	22 36	12 25	23 30	13 18	0 34	13 20	1 35	14 19	3 24	— —	— —	14 30	3 11	15 52	3 31	30
31	— —	— —	13 11	— —	— —	— —	14 02	2 36	15 09	4 17	— —	— —	15 22	3 49	— —	— —	31

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त—सं. २०७१ वि. (सन् 2014–15 ई.)

समय शुद्धि विचार••••••

✡ **गुर्वस्त**–11 जुला. से 4 अगस्त तक गुरु पश्चिम में अस्त रहेंगे, तथा 5 अग. को पूर्व में उदित।

✡ **गुरु वार्धक्य**–8 जुला. से 10 जुला. तक गुरू का वार्धक्य तथा 6 अग. से 8 अग. के मध्य गुरू बाल्यावस्था में रहेंगे।

✡ **श्राद्ध पक्ष**–8 सितं. से 23 सितंबर के मध्य श्राद्ध रहेंगे।

✡ **ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण**–8 अक्तू., बुधवार, 2014 ई. को रेवती नक्षत्र कालीन भारत में ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण घटित होगा।

✡ **शुक्रास्तोदय**–2 अक्तू. से 26 नवम्बर की मध्यावधि में शुक्रास्त रहेगा। (27) नवं. को पश्चिम में उदित होगा।

✡ **वार्धक्य व बालत्व**–29 सितं. से 1 अक्तू. के मध्य शुक्र का वार्धक्य तथा 28 नवं. से 30 नवं. तक शुक्र बाल्यत्व स्थिति में होगा।

✡ **भीष्म पंचक**–2 नवं. से 6 नवम्बर तक भीष्म पंचक रहेंगे।

✡ **पौष मास**–16 दिसं. से 13 जन. 2015 ई. की अवधि में पौष मास (धनुस्थ सूर्य) रहेगा।

✡ **होलाष्टक**–26 फर. से 5 मार्च (2015 ई.) की मध्यावधि में होलाष्टक रहेंगे।

✡ **चैत्र मास**–14 मार्च, 2015 ई. से चैत्र मास प्रारम्भ होगा।

नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)–इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक है जबकि आड़ी रेखा (ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।

विवाह मुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण—विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष, २ को वृष, ३ को मिथुन, ४ को कर्क, ५ को सिंह, ६ को कन्या, ७ को तुला, ८ को वृश्चिक, ९ को धनु, १० को मकर, ११ को कुम्भ तथा १२ की संख्या को मीन लग्न जानें॥

दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न—

आवश्यक—जिस मुहूर्त में गुरु की केन्द्र-त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरु की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है।

✲ वैशाख मास (अप्रैल–मई) ✲ सन् 2014 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
चैत्र पूर्णिमा, मंग.	15 अप्रै.	२ वैशा.	स्वाती	मेष	तुला	ऽमं.। । ऽशु.ऽसू. के.ऽअ.ऽऽ । ।	रा. ल. ९ (गु. रा. दा.), १० (चं. रा. दान), ११ (मं. दा. भौमाष्टम परि., दानं व) पादेन शुक्र वेधाभाव
वैशा. कृष्ण १, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वाती	मेष	तुला	ऽमं.। ।ऽशु.ऽसू. के.ऽ अ.ऽऽ। ।	दि. ल. ३ (चं. रा. दा.), गोधूली, पादेन शुक्र वेधाभाव
वैशा. कृष्ण ३, शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	मेष	वृश्चिक	। ऽ । । । ऽनृ.ऽ । । ।	दि. ल. ५ (शुक्र 7वें पूज्य दान व) सिंह ल. 14/36 बाद, गोधूली च,
वैशा. कृष्ण ५, शनि	19 अप्रै.	६ वैशा.	मूल	मेष	धनु	। ऽ परि । । । । ऽ । । ।	रा. ल. ९ (चं. दा., लग्नोपरि चन्द्रे गुरू दृष्टि शुभा), १० (चं. दा.), ११ (मं. दा., अष्टम मंगल का परिहार)
वैशा. कृ. ५/६, रवि	20 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	मेष	धनु	। । । । । ऽ चौ.ऽ । । ऽ	दि. ल. ३ (चं. दा.), **गोधूलि च**, दग्धा तिथि का परिहार
वैशा. कृष्ण ७, चंद्र	21 अप्रै.	८ वैशा.	उ.षा.	मेष	मकर	ऽ शु. । । । । । ऽ । । ।	रा. ल. ९ (धनु. ल. 23/46 बाद, गु. दा.), ११ (चं.मं. दान) कुम्भ लग्ने भौमाष्टम परिहार)
वैशा. कृष्ण ८, मंग.	22 अप्रै.	९ वैशा.	उ.षा.	मेष	मकर	ऽ शु. । । । । ऽ रो. । । । ।	दि. ल. २ (सू. केतु का दान), ३ (चं. दा.), अष्टम चंद्र परिहारः)
वैशा. कृ. ८/९, मंग.	22 अप्रै.	९ वैशा.	श्रवण	मेष	मकर	ऽबु. रा.ऽसा.। । । ऽ चौ. ऽ । । ।	गोधूली, रा. ल. ९ (गु. दा.), ११ (**चं. मं. का दान**, भौमाष्टम परि., **क्रांतिसाम्य** दोष रात्रि 25/33 से प्रा.)
वैशा. कृष्ण ९, बुध	23 अप्रै.	१० वैशा.	श्रवण	मेष	मकर	ऽ बु. रा.ऽ । । । । ऽ । । ।	दि. ल. २ (बुध-केतु का दान), ३ (चं. दा., मिथुने चंद्र अष्टम परिहार)
वै. कृ. ९/१०, बुधे	23 अप्रै.	१० वैशा.	धनि.	मेष	म./कुंभ	ऽ श. । । । । । । । । ।	गोधू., रा. ल. ९ (गु. दा.), १० (ल. 26/23 बाद), ११ (चं. दा. लग्नोपरि गुरू दृष्टि प्रशस्तः)
वैशा. कृष्ण १०, गुरू	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	मेष	कुम्भ	ऽ श. । । । । । । । । ।	दि. ल. २ (सू. बु. केतु दान), वृष ल. प्रातः 8/50 तक, भद्रा पूर्वे)
वैशा.शुक्ल २/३, गुरु	1 मई	१८ वैशा.	रोहिणी	मेष	वृष	। । । । । ऽ रो. । । । ।	दि. ल. ३ (बु. केतु दान), लग्न प्रातः 10/01 बाद), ४ (गु. श. दान), गोधूली च. रा. ल. १० (गु. शु. का दान), ११ (मं.-शु. दान, भौमाष्टम परिहार, कुम्भ ल. रात 3/03 तक)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—वैशाख मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
वैशा. शुक्ल ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोहिणी	मेष	वृष	। ऽ । । । ऽ रोऽअति । । ।	दि. ल. २ (चं. दा.), ३ (चं. दा.), ४ (श. रा. दान)-अक्षय तृतीया
वैशा. शु. ३/४, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	मृग.	मेष	वृष/मि.	। ऽ । । । । ऽ अति । । ।	दि. ल. ४ (श. रा. दा.), **गोधूलि, रा. ल. ९** (चं., गु. दा., धनु ल. रात 12/09 बाद) रा. ल. १० (गु. चं. दान, चन्द्रछटे परिहार), ११ (भौमाष्टम परि. दानं च.)
वैशा. शुक्ल ४, शनि	3 मई	२० वैशा.	मृग.	मेष	मिथुन	। । । । । । । । । ।	दि.ल. २ (बु.के.दा.), ३ (चं.बु.दा.), ४ (चं.दा.), कर्क ल. दुपै. 13/08 तक, भद्रा परिहार मृत्युबाण रात 19/23 *
वैशा. शु. ८/९, बुध	7 मई	२४ वैशा.	मघा	मेष	सिंह	। । । । । । ऽ । ऽ ।	रा. ल. ११ (चं. मं. का दान), भौमाष्टम परिहार *से प्रारम्भ,
वैशा. शुक्ल ९, गुरु	8 मई	२५ वैशा.	मघा	मेष	सिंह	। । । । । ऽ चौ. ऽ । ऽ ।	दि. ल. २ (सू. केतु का दान), ३ (बु. दा.), ४ (रा. दा.), **गोधूलि च.** रा. ल. ९ (गु. दा.), ११ (चं. मं. का दान, कुम्भ ल. रात 2/39 तक ग्राह्य)
वैशा. शुक्ल ११, शनि	10 मई	२७ वैशा.	उ.फा.	मेष	सिं./कं.	ऽ गु. ऽ हर्ष । । । ऽ रो ऽ । । ।	दि. ल. २, ३ (बु. दा.), ४ (चं. रा. दा.), रा. ल. ९ (गु. दा.), १० (शु. दा.), ११ (कुम्भ लग्ने चं. मं. अष्टम परिहार दान व) पाताले भद्रा दोष परिहार
वैशा. शुक्ल १२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	उ.फा.	मेष	कन्या	ऽ गु. ऽ हर्ष । । । ऽ रो. ऽ । । ।	दि. ल. २ (चं. मं. दा., वृष लग्न प्रातः 6/34 तक)
वैशा. शुक्ल १२, रवि	11 मई	२८ वैशा	हस्त	मेष	कन्या	ऽ सू.ऽऽ मं. । ऽ शु. । ऽ व. । । ।	दि. ल. २ (6/34 बाद, चं. मं. दा.), ३ (बु. दा.), ४ (रा. दा.), **गोधूली च** रा. ल. ९ (गु. दा.), १० (शु. गु. दा.), ११ (चं. मं. दान च.), भौम युति परिहार, **आवश्यके**
वैशा. शुक्ल १३, चन्द्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	मेष	कन्या	। । ऽ मं. । ऽ शु. । ऽ व । । ।	दि. ल. २ (सूर्य का दान)
वैशा. शु. १३, चन्द्र	12 मई	२९ वैशा.	चित्रा	मेष	कं./तु.	ऽ सू. । ऽ रा. । ऽ शु. । । । । ।	दि. ल. ३ (बु. दा.), ४ (राहु दान), **गोधूलि, रा. ल. ९** (गु. दा.), १० (शु. दा.), रा. ल. ११ (चं. मं. दा., भौमाष्टम परिहार, कुम्भ ल. रात्रि 26/40 तक फिर मृ.बा.), राहु-युति परिहार

ज्येष्ठ मास (मई–जून) सन् 2014 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
ज्येष्ठ कृष्ण १, गुरु	15 मई	२ ज्येष्ठ	अनु.	वृष	वृश्चि.	। । । । ऽ सू. । ऽ परि. ऽ । ।	दि. ल. ३ (बु. दा.), ४ (चं. दा.), गोधू., रा. ल. ९ (चं. गु. दा.), १० (शु. दा.) ११ (कुम्भ लग्ने भौमाष्टम परिहार एवं दान) क्षयभे-आवश्यके
ज्येष्ठ कृष्ण ३, शनि	17 मई	४ ज्ये.	मूल	वृष	धनु	। ऽ सा. । ऽ गु. ऽ बु. ऽ अ. ऽ । । ।	दि. ल. ३ (चं. बु. दा.), रात्रि ल. ९ (चंद्र लग्नोपरि गुरू दृष्टि शुभप्रदा, गु. दा.), १० (चं.,गु.दा.) ११ (मं. दा. भौम अष्टम परिहार, कुम्भ ल. रात्रि 25/58 तक)
ज्ये. कृष्ण ४, रवि	18 मई	५ ज्ये.	उ.षा.	वृष	धनु	। । । । ऽ गु. । ऽ ऽ । ऽ	रा. ल. १० (चं. शु. दान, मकर ल. रात 24/04 बाद), ११ (मं. दा. भौमाष्टम परिहार)
ज्ये. कृष्ण ५, चन्द्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	वृष	मकर	। । । । ऽ गु. ऽ रा. ऽ ऽ । ऽ	दि. ल. ४ (चं. गु. श. दा.), गोधूलि, रा. ल. ९ (गु. दा.)
ज्ये. कृ. ५/६, चन्द्र	19 मई	६ ज्ये.	श्रवण	वृष	मकर	ऽ रा. । । । । । ऽ । ऽ ।	रा. ल. ९ (गु. दा.), ११ (कुम्भे भौमाष्टं परिहार चं. मं. दानं व)
ज्ये. कृष्ण ६, मंग.	20 मई	७ ज्ये.	श्रवण	वृष	मकर	ऽ रा. । । । । । ऽ । ऽ ।	दि. ल. ४ (चं. श. रा. दान), **गोधू.**, भद्रा पाताल में होने से परिहार
ज्ये. कृ. ६/७, मंग.	20 मई	७ ज्ये.	धनि.	वृष	मकर	ऽ शु.श. । । । । । । ऽ ऽ ।	रा. ल. ९ (गु. दा.), ११ (चं. मं. दा., भौमाष्टं परिहार)
ज्ये. कृ. ७/८, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि	वृष	कुम्भ	ऽ शु. श. । । । । ऽ चौ. । ऽ । ।	दि. ल. ३ (बु. दा., ल. प्रातः 7/45 बाद), ४ (चं. रा. दा., चंद्राष्टम परि.-**आवश्यके**), **गोधू.**
ज्ये. कृष्ण ११, शनि	24 मई	११ ज्ये.	रेवती	वृष	मीन	। । । । ऽ मं. । । ऽ । ।	रा. ल. ९ (गु. बु. दा.), १० (शु. के. दा.), ११ (मं. दा. भौमाष्टम परिहार)
ज्ये. कृष्ण १२, रवि	25 मई	१२ ज्ये.	रेवती	वृष	मीन	। । । । ऽ मं. ऽ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ३ (सू. दा.), ४ (रा. दा.), ५ (मं. दा., सिंह ल. 13/40 तक, तदुपरान्त **मृत्युबाण दोष**

शुभ विवाह मुहूर्त–ज्येष्ठ मास (मई-जून)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
ज्ये. शुक्ल १, गुरु	29 मई	१६ ज्ये.	रोह.	वृष	वृष	।।ऽसू. ।।।ऽ।।।	दि. ल. ३ (सू. चं. दा.), ४ (चं. रा. दा.), ५ (मं. दा.), गोधूलि, उच्च व मित्रक्षेत्री सूर्ययुति परिहार
ज्ये. शु. १/२, गुरु	29 मई	१६ ज्ये.	मृग.	वृष	वृष	।।ऽबु. ।।।।।।।	गोधूली ल., रा. ल. १० (सू. चं. दान), ११ (मं. शु. दान, शत्रुक्षेत्रे भौमाष्टमे परिहार)
ज्ये. शुक्ल २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग	वृष	मिथुन	।।ऽबु.।।ऽचौ. ।।।।	दि. ल. ३ (चं. दा., ल. प्रात: 8/11 तक), ४ (चं. रा. दा.), गोधू., रा. ल. ९ (चं. गु. दान, रात 21/09 तक) सिंह लग्न में शूल दोष चिन्तनीय।
ज्ये. शुक्ल ६, बुध	4 जून	२२ ज्ये.	मघा	वृष	सिंह	।ऽ।।।ऽऽव्या. ऽ।।	गोधू., रा. ल. ९ (बु. गु. पू. दान व.), ११ (चं., मं., शु. दान, शत्रुक्षेत्रे भौमाष्टम परिहार), दुपै. 11/30 तक मृत्युबाण दोष
ज्ये. शुक्ल ७, गुरु	5 जून	२३ ज्ये.	मघा	वृष	सिंह	।ऽहर्ष।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि. ल. ३ (सू. दा.), ४ (श. रा. दान)
ज्ये. शुक्ल ८, शुक्र	6 जून	२४ ज्ये.	उ.फा.	वृष	सिं./कं.	ऽगु. ।।।।।ऽ।।।	गोधूलि ल., रा. ल. ९ (बु. गु. दा.), ल. ११ (चंद्र, मंग. अष्टम परिहार पूज्य दान व)
ज्ये. शुक्ल ९, शनि	7 जून	२५ ज्ये.	उ.फा.	वृष	कन्या	ऽगु. ।।।।ऽरा. ऽ।।।	दि. ल. ३ (सू. दा.), ४ (रा. श. दान), ५ (चं. मं. दान), रात्रि लग्ने व्यतिपात दोष
ज्ये. शुक्ल १०, रवि	8 जून	२६ ज्ये.	चित्रा	वृष	कं./तुले	।।ऽरा. ।।ऽचौ.।ऽ।।	गोधूलि, ल. रा. ल. ९ (बु. गु. दा.), १० (गु. दा.), ११ (चं. मं. दा., भौमाष्टम परिहार) राहु-युति परिहार, (आवश्यके), सायं 16/27 तक व्यतिपात दोष
ज्ये. शुक्ल ११, चन्द्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	वृष	तुला	।।ऽरा. ।।ऽचौ.।ऽ।।	दि. ल. ३, ४ (श. रा. दा.), ५ (सू. दा.), राहु युति परिहार, भद्रा पाताले शुभप्रदा
ज्ये. शु.११/१२, सोम	9 जून	२७ ज्ये.	स्वाती	वृष	तुला	ऽमं. ऽ।।ऽके.।ऽ।।।	गोधूलि, रा. ल. ९ (बु. गु. दा.), १० (गु. दा.), ११ (चं. मं. दा. भौमाष्टम परिहार)
ज्ये. शुक्ल १२, मंग.	10 जून	२८ ज्ये.	स्वाती	वृष	तुला	ऽमं.ऽ।।ऽके. ।ऽ।।।	दि. ल. ३, ४ (श. रा. दान), ५ (सू. दा.)
ज्ये. शुक्ल १३, बुध	11 जून	२९ ज्ये.	अनु	वृष	वृश्चिक	।।।ऽशु. ।ऽरो. ऽ।।।	गोधू., रा. ल. ९ (बु. गु. चं. दान), १० (बु. गु. दा.), ११ (चं. मं. दा., भौम ८वें परि.)S Sपादेन शुक्र वेधाभाव
ज्ये. शुक्ल १४, गुरु	12 जून	३० ज्ये.	अनु	वृष	वृश्चिक	।।।ऽशु. ।।ऽ।।।	दि. ल. ३ (चं. दा. चन्द्र छटे परि.), ४ (श. रा. दा.), ५ (चं. दा. सिंह ल. 12/28 तक, R R(भद्रा पूर्वे), पादेन शुक्र वेधाभाव:
ज्ये. शुक्ल १५, शुक्र	13 जून	३१ ज्ये.	मूल	वृष	धनु	।।।ऽगु. ऽसू.।ऽऽ।।	गोधूलि. ल., रात्रि ल. ९ (चं., बु., गु. दान), १० (चं., गु. दा.), ११ (मं. दा. भौमाष्टम परि.), पादेन गुरु वेधाभाव, प्रात: 8/15 से दुपै. 13/42 तक मृत्युबाण दोष

✲ आषाढ़ मास (जून–जुलाई) ✲ सन् 2014 ई.

आषा. कृष्ण ४, चन्द्र	16 जून	२ आषा	श्रवण	मिथुन	मकर	ऽरा. ।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ४ (चं. रा. दान), ५ (चं. गु. दा.-व शत्रु क्षेत्रे छटे चंद्र का परिहार), (R) (R) दुपै. 12/35 उप. मृत्युबाण एवं वैधृति दोष
आषा. कृष्ण ५, मंग.	17 जून	३ आषा	धनि.	मिथुन	मक/कुंभ	ऽश.ऽ ।।।ऽअ ऽऽ।।	दि. ल. ५ (चं. गु. दा., सिंह ल. 10/58 बाद), गोधू., रा. ल. १० (बु. गु. दा.), (S) (S) २ (वृष लग्ने सू.दा.) प्रात: 10/58 तक वैधृति दोष
आषा. कृष्ण ९, शुक्र	20 जून	६ आषा	रेव.	मिथुन	मीन	।।।।ऽमं. ।।ऽ।।	रा. ल. १० (गु. दा., मकर ल. 21/48 बाद), ११ (मं. गु. दा. भौमाष्टम परि.), २ (वृष)
आषा. कृष्ण ९, शनि	21 जून	७ आषा	रेव.	मिथुन	मीन	।।।।ऽमं.ऽचौ. ।ऽ।।	दि. ल. ४ (राहु दा.), ५ (चं. दा. अष्टम चंद्रोपरि गुरु दृष्टि शुभ प्रदायका), (A) (A) रात्रि ल. १० (गुरू दान, मकर लग्न रात 21/44 तक)
आषा.कृष्ण १०, शनि	21 जून	७ आषा	अश्वि.	मिथुन	मेष	।ऽऽके.।ऽरा.ऽचौ.ऽतिऽ ।।	रा. ल. १० (गु. दा.), ११ (मं. गु. दा.) गुरू दृष्टि शुभफली, २ (चं.के.दा.) केतु युति परिहार

शुभ विवाह मुहूर्त्त—आषाढ़ मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
आषा.कृष्ण १०, रवि	22 जून	८ आषा	अश्वि.	मिथुन	मेष	।ऽऽके ।ऽरा.।ऽति ऽ।।	दि. ल. ४ (राहु दान), ५ (चं. के. दान), गोधू., रा. ल. १० (चं. दा., मकर लग्न + + रात 22/10 तक)–केतु युति का परिहार
आषा. शु. ४/५, मंग.	1 जुला	१७ आषा	मघा	मिथुन	सिंह	।।।।।ऽचौ. ऽव.ऽ।।	ल. गोधू., रा. ल. ११ (चं. मं. दान, भौम ८वें परिहार), २ (वृष)
आषा. शुक्ल ५, बुध	2 जुला	१८ आषा	मघा	मिथुन	सिंह	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ४ (शनि–राहु का दान)
आषा. शुक्ल ६, गुरु	3 जुला	१९ आषा	उ.फा.	मिथुन	सिं./कं.	ऽगु. ऽ।।।ऽरो.ऽऽ।।	रा. ल. २ (वृषे चं., मं. का दान) रात्रि 25/16 तक मेष लग्न में **व्यतिपात दोष**
आषा. शुक्ल ७, शुक्र	4 जुला	२० आषा	उ.फा.	मिथुन	कन्या	ऽगु. ऽ।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ४ (श. रा. दा.), ५ (चं. मं. दा.), गोधूलि च. रा. ल. १० (चं. गु. दा.), ११ (चं. मं. दान, चन्द्र–भौम 8वें परिहार, कुम्भ लग्ने)
आषा. शुक्ल ७, शुक्र	4 जुला	२० आषा	हस्त	मिथुन	कन्या	ऽगु. ।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ११ (चं. मं. दान, पूज्य व 8वें चंद्र-मंगल परिहार), २ (वृष) लग्नश्च.
आषा. शुक्ल ८, शनि	5 जुला	२१ आषा	हस्त	मिथुन	कन्या	ऽगु. ।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ४ (शनि, राहु दान), प्रातः 8/55 से रात 21/35 तक **मृत्युबाण दोषः** रा.ल.११ (चं.मं.दा.पूज्य व 8वें चं.मं.परि.) कर्क एवं कुम्भ लग्ने **मृत्युबाण अभाव–आवश्यके**
आषा. शुक्ल ८, शनि	5 जुला	२१ आषा	चित्रा	मिथुन	कन्या	।।ऽमं. रा. ।।।ऽपरि.।।।	रा. ल. २ (चं. रा. मं. दा.), मंगल, राहु युति परिहार–**आवश्यके**
आषा. शुक्ल ९, रवि	6 जुला	२२ आषा	चित्रा	मिथुन	कं./तु.	।।ऽमं. रा. ।।ऽअ. ऽऽ।।	दि. ल. ४ (रा. श. दा.), ५ (चं. मं. दा.), गोधूलि च, रात्रि लग्न ल. १० (गु. रा. दा.), ११ (चं. मं. दा. भौमाष्टमं परि.) भौम राहु युति परिहार–**आवश्यके**)
आषा. शुक्ल ९ रवि	6 जुला	२२ आषा	स्वा.	मिथुन	तुला	।।।।ऽके.ऽअ.ऽ।।।	रा. ल. २ (चंद्र, राहु व शनि दान–चन्द्र षष्ठे शत्रु क्षेत्रे–परिहारः)–**आवश्यके**
आषा. शु.९/१०, सोम	7 जुला	२३ आषा	स्वा.	मिथुन	तुला	।।।।ऽके.ऽअ. ऽ।।।	दि. ल. ४ (श. चं. रा. दान), ५ (चं. मं. दा.), गोधूली, रा. ल. १० (गु. दा.), ल. ११ (चं.मं.दा.)

✲ श्रावण मास (अगस्त) ✲ सन् 2014 ई.

श्राव. शुक्ल १३, शनि	9 अग.	२५ श्राव.	उ.षा.	मिथुन	धनु/मक	।।।।ऽशु.ऽ नृप ऽ।।।	दि. ल. ५ (सू. बु. दा), ८ (मं. श. दा.), गोधू., रा. ल. २ (बु. शु. दा.)–वृष ल. रात 1/46 तक
श्राव. शुक्ल १४, शनि	9 अग.	२५ श्राव.	श्रव.	मिथुन	मकर	ऽरा.।।।ऽगु. ।ऽऽ।।	रा. ल. ३ (चंद्र पूज्य दान व अष्टम चंद्र परि.), रात्रि 27/36 बाद, भद्रा का परिहार–**आवश्यके**
श्राव. शुक्ल १५, रवि	10 अग.	२६ श्राव.	श्रव.	मिथुन	मकर	ऽरा. ।।।ऽगु.।ऽऽ।।	दि. ल. ५ (सू., चं., बु. दान) सिंह लग्ने चन्द्र छटे शत्रुक्षेत्रे परिहार, ८ (वृश्चिके मं. श. दान), गोधूली च., भद्रा परिहार, **रात्रौ लग्नऽभाव**
भाद्र. कृ. ३/४, बुध	13 अग.	२९ श्राव.	उ.भा.	मिथुन	मीन	।।।।।।ऽऽ।।	दि. ल. ८ (मं. श. दा., वृश्चिक ल. दुपै. 14/14 बजे के बाद), गोधूली च रात्रि लग्न २ (शु. दा.), ३ (बु. शु. रा. दान)
भाद्र.कृष्ण ४/५, गुरु	14 अग.	३० श्राव.	रेव.	मिथुन	मीन	।ऽऽके. ।।।ऽऽ।।	दि. ल. ८ (मं. शनि का दान), **गोधू.**, रात्रि ल. २ (शु. दा.) ३ (राहु का दान) सायं 18/30 तक, शूल दोष विशेषतः चिन्तनीय–**आवश्यके**
भाद्र कृष्ण ५/६, शुक्र	15 अग.	३१ श्राव.	अश्वि.	मिथुन	मेष	।ऽ।।ऽके. ।ऽ।।ऽ	गोधू., रा. ल. २ (चं. शु. दान), ३ (चं. राहु का दान)

✲ भाद्रपद मास (अगस्त–सितम्बर) ✲ सन् 2014 ई.

भाद्र. कृ. ८/९, चन्द्र	18 अग.	२ भाद्र.	रोहिणी	सिंह	वृष	ऽबु. शु. ।।।।ऽऽऽ।।	रा. ल. २ (चं. शु. दान, लग्नस्थ चन्द्र परिहार), ३ (चं. रा. दा.), ४ (श. मं. दान) **मृत्युबाण दोष प्रातः से सायं 19/45 तक**

शुभ विवाह मुहूर्त—भाद्रपद मास

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
भाद्र. कृ. ९/१०, मंग.	19 अग.	३ भाद्र.	रोहणी	सिंह	वृष	ऽ बु. शु.ऽ हर्ष । । । ऽअ.ऽऽ।ऽ	दि. ल. ८ (चं., मं. श. दान, वृश्चिक लग्न 13/32 तक), दग्धा तिथि परिहार
भाद्र कृष्ण १०, मंग.	19 अग.	३ भाद्र.	मृग	सिंह	वृ./मिथु	ऽबु.ऽहर्ष । । । ऽ अ. ऽऽ। ऽ	दि. ल. ८ (चं. मं. श. दा), गोधू., रात्रि लग्न २ (चं. शु. दान), ३ (चं., रा. का दान, मिथुन+ +लग्न 26/32 तक), ४ (चं. शु. श. दा.), भद्रा एवं दग्धा ति. परिहार
भाद्र. कृष्ण ११, बुध	20 अग.	४ भाद्र.	मृग	सिंह	मिथुन	ऽ बु. ऽ ह. । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८ (चं. मं. श. के दान व पूजा, अष्टम चन्द्र का परिहार) (आवश्यके)
भाद्र. शुक्ल ३, गुरु	28 अग.	१२ भाद्र.	हस्त	सिंह	कन्या	ऽ गु. ऽ सा. । । । ऽ अ. । । । ।	दि. ल. ८ (मं. शनि दान), गोधूलि च., रा. ल. २ (शु. रा. चं. दा.), ३ (चं. रा. दा.), ४ (चं. श. दा.)
भाद्र. शुक्ल ४, शुक्र	29 अग.	१३ भाद्र.	हस्त	सिंह	कन्या	ऽ गु. । । । । । । । । ।	दि. ल. ८ (मं. श. का दान, वृश्चिक लग्न 13/51 तक)
भाद्र. शुक्ल ४, शुक्र	29 अग.	१३ भाद्र.	चित्रा	सिंह	कं./तुला	। । ऽ रा. । ऽ के. । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८ (मं. रा. श. दान), **गोधूलि च.**, रात्रि ल. २ (शुक्र, राहु दान), राहु-युति परिहार मिथुन लग्ने, रात्रि **24/41** से क्रान्तिसाम्य दोष प्रा.,
भाद्र. शुक्ल ५, शनि	30 अग.	१४ भाद्र.	चित्रा	सिंह	तुला	। । ऽ रा. । ऽ के. । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८ (चं. मं. श. की पूजा व दानपूर्वक), राहु-युति परिहार
भाद्र. शुक्ल ५, शनि	30 अग.	१४ भाद्र.	स्वा.	सिंह	तुला	। । । । । ऽ रा. ऽ ऽ । ।	ल. गोधूली, रा. ल. ३ (चं. रा. दा.), ४ (चं. श. रा. दान)
भाद्र. शुक्ल ६, रवि	31 अग.	१५ भाद्र.	स्वा.	सिंह	तुला	। । । । । ऽ रा. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८ (बृश्चिके चं. मं. श. के दान)
भाद्र. शुक्ल ८, मंग.	2 सितं.	१७ भाद्र.	अनु.	सिंह	वृश्चिक	। ऽ । । । । ऽ ऽ । ।	दि. ल. ८ (लग्न दुपै. 13/50 बाद, चं., मं. श. दान, वृश्चिकस्थ चन्द्रोपरि गुरू दृष्टिः शुभा, **K** **K गोधू.**, दुपै. 13/50 तक वैधृति दोष
भाद्र शुक्ल ९, बुध	3 सितं.	१८ भाद्र.	मूल	सिंह	धनु	। । । । । ऽ रो. ऽ । । ।	गोधू. ल., रा. ल. ३ (चं. शु. राहु दान),
भाद्र शुक्ल १०, गुरू	4 सितं.	१९ भाद्र.	मूल	सिंह	धनु	। । । । । ऽ रो. ऽ । । ऽ	दि. ल. ८ (बृश्चिक लग्ने मं., श. व गु. के दान), दग्धा तिथि दोष परिहार
भा. शुक्ल ११, शुक्र	5 सितं.	२० भाद्र.	उ.षा.	सिंह	धनु/मक	। । । । । । ऽ । । ।	**गोधूली**, रात 22/35 उपरान्त मृत्युबाण दोष-**आवश्यके**
भा. शुक्ल १२, शनि	6 सितं.	२१ भाद्र.	श्रवण	सिंह	मकर	ऽसू.रा. । । ऽ शु.ऽगु.ऽअ.ऽ। । ।	**गोधूली**, रा. ल. ४ (चं. श. दान), पादेन शुक्र वेधाभाव, प्रातः 11/00 बजे तक मृत्युबाण दोष
भाद्र शुक्ल १३, रवि	7 सितं.	२२ भाद्र.	धनि	सिंह	कुम्भ	ऽश.ऽ।ऽ गु.ऽ गु.ऽ अ.ऽ । । ।	**गोधूलि**, रा. ल. ३ (शु. रा. दान), ४ (चं. श. दा., **कर्क लग्ने** अष्टम शत्रु क्षेत्रे चन्द्र परिहार) पादेन गुरू वेधाभाव

✲ आश्विन मास (सितं.—अक्तू.) ✲ सन् 2014 ई.

आश्वि. शुक्ल १, गुरु	25 सितं.	१० आश्वि	हस्त	कन्या	कन्या	। । । । । ऽ रो. । । । ।	दि. ल. १० (चं. गु. दान), गोधूलि लग्न, क्षीण चन्द्र-**आवश्यके**
आश्वि शु. १/२, गुरु	25 सितं.	१० आश्वि	चित्रा	कन्या	कन्या	ऽगु.ऽऽ बु.रा.।ऽके.ऽरो ऽ। । ।	रा. ल. ३ (चं. शु. रा. दान), ४ (चं. श. दा.), ५ (शु. रा. दा.), राहु-बुध युति परिहार
आश्वि शुक्ल २, शुक्र	26 सितं.	११ आश्वि	चित्रा	कन्या	तुला	ऽगु.ऽऽबु.रा.।ऽके.ऽरो.ऽ। । ।	दि. ल. १० (चं. गु. दान), **गोधूलि च, राहु युति का परिहार**
आ. शु. ४/५, रवि	28 सितं.	१३ आश्वि	अनु.	कन्या	बृश्चिक	। । ऽ मं. । । ऽ अ ऽ ऽ । ।	रा. ल. ३ (चं. रा. दा., छटे नीचराशि चन्द्र परिहार, मिथुन ल. रात 23/33 बाद), ४ (चं. मं. श. के दान), ५ (चं. रा. मं. दान)-भौम युति परिहार

✲ मार्गशीर्ष मास (दिसम्बर) ✲ सन् 2014 ई.

मार्ग शु.११/१२, मंग.	2 दिसं.	१७ मार्ग.	अश्वि.	वृश्चिक	मेष	ऽ सू. । । । । । । । । ।	रा. ल. ५ (श. रा. दा., ल. 24/23 बाद), ७ (तुला लग्न में चं. शु. दान)
मार्ग शुक्ल १२, बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग.	अश्वि.	वृश्चिक	मेष	। । । । । ऽ रो. । । । ।	दि. ल. ११ (गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ५ (श. रा. दा., सिंह ल. 23/39 तक)

विवाह मुहूर्त—मार्गशीर्ष मास (दिसम्बर सन् 2014 ई.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
मार्ग शुक्ल १५, शुक्र	5 दिसं.	२० मार्ग.	रोह.	वृश्चिक	वृष	। । । । ऽ श. ऽअ. ऽ ऽ । ।	रा. ल. ५ (श. रा. दा., ल. रात 24/41 बाद) दुपै. 12/48 से रात 24/40 तक मृत्युबाण दोष
मार्ग.पूर्णिमा, शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग.	रोह.	वृश्चिक	वृष	। । । । ऽ श. ऽ अ. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ११ (गु. दा.), १ (सू., बु. दा.), गोधूलि च., रा. ल. ५ (श. रा. दा.,, सिंह ल. रात 23/39 तक)
✲ माघ मास (जनवरी–फरवरी) ✲ सन् 2015 ई.							
माघ शुक्ल १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	मकर	मकर	। । ऽ बु. । । । ऽ । । ।	दि. ल. १ (चं. श. दान), गोधूलि च., निर्बल चन्द्रः पूज्य दान व। पादेन बुध युति अभाव, परिहारः।।
माघ शु. १/२, बुध	21 जन.	८ माघ	धनि.	मकर	मकर	। ऽऽ शु. ऽगु. ऽगु. ऽरो. । । । ।	रा. ल. ७ (चं. श. दानं, तुला ल. 26/20 तक) रात 26/20 के बाद व्यतिपात दोष, शुक्र युति व गुरू वेध–पादेनऽभावः परिहारश्च।
माघ शुक्ल ६, रवि	25 जन.	१२ माघ	रेवती	मकर	मीन	। । ऽ के. । ऽके. ऽ अ. । । । ।	ल. गोधूली, रा. ल. ७ (चंद्र दान पूज्य व, छटे चन्द्रे गुरु दृष्ट्या परि.), केतु युति परिहार–आवश्यके
माघ शुक्ल ७, चन्द्र	26 जन.	१३ माघ	रेवती	मकर	मीन	। । ऽ के. । ऽ के. । । । । ।	दि. ल. १ (चं. के दान पूज्य व), छटे चन्द्रोपरि. गुरू दृष्टि शुभा) केतु युति परिहार: मेष लग्न प्रात: 11/48 तक–(आवश्यके)
माघ शुक्ल ७, चन्द्र	26 जन.	१३ माघ	अश्वि	मकर	मेष	। ऽ सा. । । । । ऽ ऽ । ।	ल. गोधू., रा. ल. ७ (चं. 7वें पूज्य दान व)
माघ शुक्ल १०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोहिणी	मकर	वृष	। । । । ऽ श. ऽ चौ. । ऽ ऽ ।	दि. ल. १ (चं. श. दा.), मेष लग्न प्रात: 11/38 के बाद, रात्रौ क्रान्तिसाम्य दोष:
माघ शुक्ल ११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोहिणी	मकर	वृष	। । । । ऽ श. । । ऽ ऽ ।	दि. ल. १ (चं. श. दा.–मेष लग्ने भद्रा स्वर्गे–शुभ फलम्)
माघ शुक्ल ११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	मृग	मकर	मिथुन	। ऽ । । । ऽ चौ. ऽ ऐं । । ।	ल. गोधूलि, रात्रि ल. ७ (शु. रा. दान, ल. 25/17 से 25/32 तक ग्राह्य) रात्रि 25/32 बाद वैधृति दोष
फा. कृ. ४/५ रवि	8 फर.	२६ माघ	हस्त	मकर	कन्या	। । ऽ रा. । । । । ऽ । ।	दि. ल. १ (चं. दा. पूज्य वा, शत्रुक्षेत्रे छटे चन्द्र परिहार), गोधूलि, (A) (A) रा. ल. ७ (चं. श. दान)–राहु युति परिहार
फागु. कृष्ण ६, मंग.	10 फर.	२८ माघ	स्वा.	मकर	तुला	ऽ बु. ऽ । । । । ऽगं. । । ।	गोधूलि ल., रा. ल. ७ (चंद्र पूज्य दान व, चन्द्र लग्नात् केन्द्रगते गुरु शुभप्रद:) रात्रौ भद्रा परिहार(आवश्यके)
✲ फाल्गुन मास (फरवरी–मार्च) ✲ सन् 2015 ई.							
फागु. कृष्ण१०, शनि	14 फर.	२ फागु	मूल	कुम्भ	धनु	। ऽ हर्ष । । । । ऽ । । ।	गोधूलि ल., रा. ल. ७ (श. रा. दा.), १० (चं. गु. दान), रात्रि लग्ने भद्राऽभाव:
फागु. कृष्ण११, रवि	15 फर.	३ फागु	मूल	कुम्भ	धनु	। ऽ । । । ऽ अ. ऽ व. । । ।	दि. ल. १ (मं. शु. दान),
फागु. कृष्ण १२, चन्द्र	16 फर.	४ फागु	उ.षा.	कुम्भ	धनु	ऽ शु. रा. । ऽ बु. । । । । । ।	दि. ल. ३ (चं.–बु. दा., लग्न दुपै. 14/40 बाद, बुधोपरि गुरू–दृष्टि, रात्रि 19/49 के बाद व्यतिपात दोष
फागु. शु. ३/४, शनि	21 फर.	९ फागु	रेव.	कुम्भ	मीन	। । ऽ के. । ऽ रा. ऽ रो. । । । ऽ	रा. ल. १० (चं. गु. के. शु. दान मकर लग्न 22 ता. की प्रात: 5/05 तक) केतु युति परिहार:
फागु. शुक्ल ४, रवि	22 फर.	१० फागु.	रेव.	कुम्भ	मीन	। । ऽ के. । ऽ रा. । । । । ऽ	सायं ल. ४ (बु. 7वें पू. दा. व कर्क ल. 15/40 के बाद, भद्रोतरे, केतु युति परिहार–आवश्यके
फागु. शु. ४/५, रवि	22 फर.	१० फागु	अश्वि	कुम्भ	मेष	ऽ मं. । । । । । ऽ ऽ । ।	रात्रि ल. ७ (चं. शु. दा. तुला लग्ने मं.–शु. ऊपरि गुरू दृष्टि शुभफला), १० (गु. शु. दान)
चैत्र कृष्ण २, शनि	7 मार्च	२३ फागु	हस्त	कुम्भ	कन्या	। ऽ गं. ऽ रा. । । ऽ रा. । । । ।	दि. ल. ४ (सू. बु. पूज्य दानं, कर्क ल. दुपै. 14/37 बाद), गोधू., रा. ल. ७ (चं. मं. शु. पूज्य दान व, लग्ने मं. शुक्रोपरि गुरू की शुभ दृष्टि), १० (गु. शु. दा.) युति परिहार
चैत्र कृष्ण ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु	हस्त	कुम्भ	कन्या	। ऽ गं. ऽ रा. । । । । । । ।	क्रान्तिसाम्य दोष. दुपैहर 12/45 तक, तत्पश्चात् ल. ४ (चं., बु. पूज्य, दान व), राहु–युति परिहार
चैत्र कृष्ण ४, सोम	9 मार्च	२५ फागु	स्वा.	कुम्भ	तुला	। । । । । । । ऽ ऽ ऽ	रात्रि ल. १० (मं. शु. दान) दग्धा तिथि का परिहार
चै. कृष्ण ४/५, मंग.	10 मार्च	२६ फागु	स्वा.	कुम्भ	तुला	। । । । । । । ऽ । ऽ	दि. ल. १ (चं. मं. दान), ३ (चं. शु. दान) दग्धा ति. विचार प्रात: 8/58 तक

✱ आगामी वर्ष में समय शुद्धि (सम्भावित)–सन् 2015 ई. में 6 अग. से 19 अग. तक शुक्रास्त तथा गुरू 12 अग. से 5 सितं. तक पश्चिम में अस्त रहेगा।

वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त, संवत् २०७१ वि. (सन् 2014-15 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**—अग. 2014 ई. में मेष राशि का लड़का और मिथुन राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अगस्त** (भाद्रपद) में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 18, 19, 20 अगस्त की तारीखों एवं मुहूर्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। **वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।**

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि—**अप्रै. की** १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २४-२५ (चं. दा.), २९, ३०, **जून की** ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १३, १६, १७, २०-२१-२२ (चं. दा.), **जुला. की** १, २, ३, ४, ५, ६, ७, **अग. की** १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, **सितं. की** ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५-२६ (चं. दा.), २९, ३०, **फर. की** ८, १०, १४, १५, १६, २१-२२ (चं. दा.), **मार्च की** ७, ८, ९, १० तारीखें शुभ रहेंगी।	मेष राशि के वर को आषा., आश्विन, माघ, फागु.-शुभ, वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण-मार्गशीर्ष मास त्याज्य माने गए हैं। इस राशि की कन्या को 18 जून तक गुरु साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त विशेष रूपेण पूज्य रहेगा।	**मेष राशि**—**अप्रै. की** १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २४-२५ (चं. दा.), २९, ३०, **जून की** ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १३, १६, १७, २०-२१-२२ (चं. दा.), **जुला. की** १, २, ३, ४, ५, ६, ७, **अग. की** ९, १०, १३-१४-१५ (चं. दा.), १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, **सितं. की** ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५-२६, २९, ३०, **फर. की** ८, १०, १४, १५, १६, २१-२२, **मार्च की** ७, ८, ९, १० तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि—**मई की** १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०, **जून की** ६ (19/53 बाद), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१-२२ (चं. दा.), **जुला. की** ३ (27/24 बाद) ४, ५, ६,.७, **अग. की** ९ (9/59 बाद), १०, १३, १४, १५ (चं. दा.), **सितं. की** २५, २६, २८, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६ (चं. दा.), २९, ३०, **फर. की** ८, १०, २१, २२ (चं. दा.), **मार्च की** ७, ८, ९, १० तारीखें शुभ रहेंगी।	वृष के लड़के को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्ग., माघ मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशाख, भाद्र. मास अशुभ एवं त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या के लिए गुरु 18 जून तक शुभ, तदुपरान्त 19 जून से संवतान्त तक साधारण रूपेण पूज्य रहेगा।	**वृष राशि**—**अप्रै. की** १५, १६, १८, २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २, ३, १० (11/22 बाद), ११, १२, १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०, **जून की** ६ (19/53 बाद), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१, २२, **जुला. की** ३ (27/24 बाद), ४, ५, ६, ७, **अग. की** ९ (9/59 बाद), १०, १३, १४, १५, १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, **सितं. की** २, ५ (19/51 बाद), ६, ७, २५, २६, २८, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६, २९, ३०, **फर. की** ८, १०, २१, २२, **मार्च की** ७, ८, ९, १० तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि—**अप्रै. की** १५, १६, १८, १९, २०, २३ (26/23 बाद), २४, **मई की** १-२ (चं. दा.), ३, ७, ८, १० (11/22 तक), १२ (19/50 बाद), **जून की** १७ (14/06 बाद), २०, २१-२२, **जुला. की** १, २, ३ (27/24 तक), ६ (13/54 बाद), ७, **अग. की** ९ (9/59 तक), १३, १४, १५, १८-१९ (चं. दा.), २०, २९ (26/53 बाद), ३०, ३१, **सितं. की** २, ३, ४, ५ (19/51 तक), ७, **दिसं. की** २, ३, ५-६ (चं. दा.), **सन् 2015 ई. में फर. की** १४, १५, १६, २१, २२, **मार्च की** ९, १० तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन के वर को वैशाख, भाद्रपद, मार्गशीर्ष मास विवाह के लिए शुभ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में सूर्य पूज्य तथा ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को 18 जून तक गुरु साधारण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**मिथुन राशि**—**अप्रै. की** १५, १६, १८, १९, २०, २३ (26/23 बाद), २४, **मई की** १, २, ३, ७, ८, १० (11/22 तक), १२ (19/50 बाद), १५, १७, १८, २१, २४, २५, २९, ३०, **जून की** ४, ५, ६ (19/53 तक), ८ (29/14 बाद), ९, १०, ११, १२, १३, १७ (14/06 बाद) २०, २१, २२, **जुला. की** १, २, ३ (27/24 तक), ६ (13/54 बाद), ७, **अग. की** ९ (9/59 तक), १३, १४, १५, १८, १९, २०, २९ (26/53 बाद), ३०, ३१, **सितं. की** २, ३, ४, ५ (19/51 तक), ७, २६, २८, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २५, २६, २९, ३०, **फर. की** १०, १४, १५, १६, २१, २२, **मार्च की** ९, १० शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि–अप्रै. की १८, १९, २०, २१, २२, २३ (26/23 तक), मई की १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२ (19/50 तक), १५, १७, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३० (चं. दा.), जून की ४, ५, ६, ७, ८ (29/14 तक), ११, १२, १३, अग. की ९, १०, १३, १४, १५, १८, १९-२० (चं. दा.), २८, २९ (26/53 तक), सितं. की २, ३, ४, ५, ६, २५, २८, दिसं. की २, ३, ५, ६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २५, २६, २९, ३० (चं. दा.), फर. की ८ तारीखें शुभ रहेंगी।	कर्क के लड़के को विवाहादि के लिए वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास शुभ, श्रावण, भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य की पूजा-दान तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य होंगे। कर्क राशि की कन्या को 18 जून तक गुरु विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त् तक साधारण पूज्य रहेगा।	**कर्क राशि**–अपै. की १८, १९, २०, २१, २२, २३ (26/23 तक), मई की १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२ (19/50 तक), १५, १७, १८, १९, २०, २४, २५, २९, ३०, जून की ४, ५, ६, ७, ८ (29/14 तक), ११, १२, १३, १६, १७ (14/06 तक), २०, २१, २२, जुला की १, २, ३, ४, ५, ६ (13/54 तक), अग. की ९, १०, १३, १४, १५, १८, १९, २०, २८, २९ (26/53 तक), सितं. की २, ३, ४, ५, ६, २५, २८, दिसं. की २, ३, ५, ६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २५, २६, २९, ३०, फर. की ८, १४, १५, १६, २१, २२, मार्च की ७, ८ शुभ होंगी।
सिंह राशि–अप्रै. की १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, मई की १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०, जून की ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १३, १६, १७, २१ (21/44 बाद), २२, जुला. की १, २, ३, ४, ५, ६, ७, अग. की १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २६ (11/48 बाद), २९, ३०, फर. की ८, १०, १४, १५, १६, २२ (20/01 बाद), मार्च की ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।	सिंह राशि के लड़के को आश्विन, फाल्गुन मासों में सूर्य की पूजा/दानादि रहेगा। ज्ये., आषा., कार्तिक एवं माघ मास शुभ तथा चैत्र, श्रावण और मार्ग. मास त्याज्य होंगे। सिंह राशि की कन्या को 18 जून तक गुरु शुभ, तदुपरान्त विशेष रूपेण पूज्य होगा।	**सिंह राशि**–अप्रै. की १५, १६, १९, २०, २१, २२, २३, २४, मई की १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०, जून की ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, १३, १६, १७, २१ (21/44 बाद), २२, जुला. की १, २, ३, ४, ५, ६, ७, अग. की ९, १०, १५, १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, सितं. की ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, दिसं. की २, ३, ५, ६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २६ (11/48 बाद) २९, ३०, फर. की ८, १०, १४, १५, १६, २२ (20/01 बाद), मार्च की ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।
कन्या राशि–मई की १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०, जून की ४-५-६ (चं. दा.), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१ (21/44 तक), जुला. की १-२ (चं. दा.), ३, ४, ५, ६, ७, अग. की ९ (9/59 बाद), १०, १३, १४, सितं. की २५, २६, २८, दिसं. की ५, ६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २५, २६ (11/48 तक), २९, ३०, फर. की ८, १०, २१, २२, मार्च की ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फागुन मास शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि होगा। वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 18 जून तक साधारण रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**कन्या राशि**–अप्रै. की १५, १६, १८, २१, २२, २३, २४, मई की १, २, ३, ७-८-१० (चं. दा.), ११, १२, मई की १५, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०, जून की ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १६, १७, २०, २१ (21/44 तक), जुला. की १, २, ३, ४, ५, ६, ७, अग. की ९ (9/59 बाद), १०, १३, १४, १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, सितं. की २, ५ (19/51 बाद), ६, ७, २५, २६, २८, दिसं. की ५, ६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २५, २६ (11/48 तक), २९, ३०, फर. की ८, १०, २१, २२, मार्च की ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।
तुला राशि–अप्रै. की १५, १६, १८, १९, २०, २३ (26/23 बाद), मई की २ (24/09 बाद), ३, ७, ८, १०-११-१२ (चं. दा.), जून की १७ (14/06 बाद), २०, २१, २२, जुला. की १, २, ३-४-५ (चं. दा.), ६, ७, अग. की ९ (9/59 तक), १३, १४, १५, १९ (26/33 बाद), २०, २८, २९, ३०, ३१, सितं. की २, ३, ४, ५ (19/51 तक), ७, दिसं. की २, ३, सन् 2015 ई. में फर. की १४, १५, १६, २१, २२, मार्च की ७-८ (चं. दा.), ९, १० शुभ होंगी।	तुला के वर को श्रावण, भाद्रपद शुभ, वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. व फागुन मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को 18 जून तक गुरु शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण पूज्य रहेगा।	**तुला राशि**–अप्रै. की १५, १६, १८, १९, २०, २३ (26/23 बाद), मई की २, (24/09 बाद), ३, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, २१, २४, २५, ३०, जून की ४, ५, ६-७-८ (चं. दा.), ९, १०, ११, १२, १३, १७ (14/06 बाद), २०, २१, २२, जुला. की १, २, ३, ४, ५, ६, ७, अग. की ९ (9/59 तक), १३, १४, १५, १९ (26/33 बाद), २०, २८, २९, ३०, ३१, सितं. की २, ३, ४, ५ (19/51 तक), ७, २५, २६, २८, दिसं. की २, ३, सन् 2015 ई. में जन. की २५, २६, ३० (25/17 बाद), फर. की ८, १०, १४, १५, १६, २१, २२, मार्च की ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।
वृश्चिक राशि–अप्रै. की १५-१६ (चं. दा.), १८, १९, २०, २१, २२, २३ (26/23 तक), मई की १, २ (24/09 तक), ७, ८, १०, ११, १२ (चं. दा.), १५, १७, १८, १९, २०, २४, २५, २९, जून की ४, ५, ६, ७, ८-९-१० (चं. दा.), ११, १२, १३, अग. की ९, १०, १३, १४, १५, १८, १९ (26/33 तक), २८, २९-३०-३१ (चं. दा.), सितं. की २, ३, ४, ५, ६, २५, २६, २८, दिसं. की २, ३, ५, ६ सन् 2015 ई. में जन. की २१, २५, २६, २९, ३० (25/17 तक), फर. की ८, १० शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के वर को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा/दानादि तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 18 जून तक विशेष रूपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**वृश्चिक राशि**–अप्रै. की १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३ (26/23 तक), मई की १, २ (24/09 तक), ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २४, २५, २९, जून की ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १७ (14/06 तक), २०, २१, २२, जुला. की १, २, ३, ४, ५, ६-७ (चं. दा.), अग. की ९, १०, १३, १४, १५, १८, १९ (26/33 तक), २८, २९, ३०, ३१, सितं. की २, ३, ४, ५, ६, २५, २६, २८, दिसं. की २, ३, ५, ६, सन् 2015 ई. में जन. की २१, २५, २६, २९, ३० (25/17 तक), फर. की ८, १०, १४, १५, १६, २१, २२, मार्च की ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
धनु राशि–अप्रै. की १५, १६, १८ (चं. दा.), १९, २०, २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२, १५ (चं. दा.), १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०, **जून की** ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११–१२ (चं. दा.), १३, १६, १७, २१ (21/44 बाद), २२, **जुला. की** १, २, ३, ४, ५, ६, ७, **अग. की** १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, **सितं. की** २ (चं. दा.), ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, २८, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २६ (11/48 बाद), २९, ३०, **फर. की** ८, १०, १४, १५, १६, २२ (20/01 बाद), **मार्च की** ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक एवं फागुन मास शुभ, वैशाख, आषा., भाद्रपद मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण, मार्गशीर्ष और चैत्र मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 18 जून तक शुभ, तदुपरन्त संवतान्त तक विशेष रुपेण पूज्य रहेगा।	**धनु राशि–अप्रै. की** १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २, ३, ७, ८, १०, ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २९, ३०, **जून की** ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १७, २१ (21/44 बाद), २२, **जुला. की** १, २, ३, ४, ५, ६, ७, **अग. की** ९, १०, १५, १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, **सितं. की** २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, २८, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २६ (11/48 बाद), २९, ३०, **फर. की** ८, १०, १४, १५, १६, २२ (20/01 बाद), **मार्च की** ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।
मकर राशि–मई की १५, १७–१८ (चं. दा.), १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०, **जून की** ६ (19/53 बाद), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३ (चं. दा.), १६, १७, २०, २१ (21/44 तक), **जुला. की** ३ (27/24 बाद), ४, ५, ६, ७, **अग. की** ९, १०, १३, १४, **सितं. की** २५, २६, २८, **दिसं. की** ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६ (11/48 तक), २९, ३०, **फर. की** ८, १०, १४–१५–१६ (चं. दा.), २१, २२ (20/01 तक), **मार्च की** ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग., चैत्र मास शुभ, ज्ये., श्रावण व आश्विन मासों में सूर्य की पूजा तथा वैशाख, भाद्रपद और पौष मास त्याज्य/अशुभ होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 18 जून तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मकर राशि–अप्रै. की** १५, १६, १८, १९–२० (चं. दा.), २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २, ३, १० (11/22 बाद), ११, १२, १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, ३०, **जून की** ६ (19/53 बाद), ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, १७, २०, २१ (21/44 तक), **जुला. की** ३ (27/24 बाद), ४, ५, ६, ७, **अग. की** ९, १०, १३, १४, १८, १९, २०, २८, २९, ३०, ३१, **सितं. की** २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २६, २८, **दिसं. की** ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६ (11/48 तक), २९, ३०, **फर. की** ८, १०, १४, १५, १६, २१, २२ (20/01 तक), **मार्च की** ७, ८, ९, १० शुभ होंगी।
कुम्भ राशि–अप्रै. की १५, १६, १८, १९, २०, २१–२२–२३ (चं. दा.), २४, **मई की** २ (24/09 बाद), ३, ७, ८, १० (11/22 तक), १२ (19/50 बाद), **जून की** १६–१७ (चं. दा.), २०, २१, २२, **जुला. की** १, २, ३ (27/24 तक), ६ (13/54 बाद), ७, **अग. की** ९–१० (चं. दा.), १३, १४, १५, १९ (26/33 बाद), २०, २९ (26/53 बाद), ३०, ३१, **सितं. की** २, ३, ४, ५–६ (चं. दा.), ७, **दिसं. की** २, ३, **सन् 2015 ई. में फर. की** १४, १५, १६, २१, २२, **मार्च की** ९, १० शुभ होंगी।	कुम्भ के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास शुभ, आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। कुम्भ राशि की कन्या को 18 जून तक गुरु शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि–अप्रै. की** १५, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, **मई की** २ (24/09 बाद), ३, ७, ८, १० (11/22 तक), १२ (19/50 बाद), १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, ३०, **जून की** ४, ५, ६ (19/53 तक), ८ (29/14 बाद), ९, १०, ११, १२, १३, १६, १७, २०, २१, २२, **जुला. की** १, २, ३ (27/24 तक), ६ (13/54 बाद), ७, **अग. की** ९, १०, १३, १४, १५, १९ (26/33 बाद), २०, २९ (26/53 बाद), ३०, ३१, **सितं. की** २, ३, ४, ५, ६, ७, २६, २८, **दिसं. की** २, ३, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६, ३० (25/17 बाद), **फर. की** १०, १४, १५, १६, २१, २२, **मार्च की** ९, १० शुभ होंगी।
मीन राशि–अप्रै. की १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४ (चं. दा.), **मई की** १, २ (24/09 तक), ७, ८, १०, ११, १२ (19/50 तक), १५, १७, १८, १९, २०, २१ (चं. दा.), २४, २५, २९, **जून की** ४, ५, ६, ७, ८ (29/14 तक), ११, १२, १३, **अग. की** ९, १०, १३, १४, १५, १८, १९ (26/33 तक), २८, २९ (26/53 तक), **सितं. की** २, ३, ४, ५, ६, ७ (चं. दा.), २५, २८, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६, २९, ३० (25/17 तक), **फर. की** ८ शुभ होंगी।	मीन के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. मास पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की कन्या को गुरु 18 जून तक विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ होगा।	**मीन राशि–अप्रै. की** १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, **मई की** १, २ (24/09 तक), ७, ८, १०, ११, १२ (19/50 तक), १५, १७, १८, १९, २०, २१, २४, २५, २९, **जून की** ४, ५, ६, ७, ८ (29/14 तक), ११, १२, १३, १६, १७, २०, २१, २२ **जुला. की** १, २, ३, ४, ५, ६ (13/54 तक), **अग. की** ९, १०, १३, १४, १५, १८, १९ (26/33 तक), २८, २९, **सितं. की** २, ३, ४, ५, ६, ७, २५, २८, **दिसं. की** २, ३, ५, ६, **सन् 2015 ई. में जन. की** २१, २५, २६, २९, ३० (25/17 तक), **फर. की** ८, १४, १५, १६, २१, २२, **मार्च की** ७, ८ शुभ होंगी।

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त–संवत् २०७१

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है–**विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥** ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त भी ग्राह्य नहीं होता।

'पंचांग दिवाकर' में लगाए जाने वाले सभी मुहूर्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथा सम्भव पालन किया जाता है। निवेदक पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, जालन्धर।

मुण्डन मुहूर्त–२०७१ वि.

✡ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से १, ३, ५ इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरूद्ध चन्द्र (४,८,१२)वें चूड़ाकरण करने का निषेध मानते हैं–(चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में करने का निषेध माना गया है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्ति पीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं। निः–पं. पन्ना लाल ज्यो.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र पूर्णि, मंग.	15 अप्रै.	२ वैशा.	चित्रा	ल. ३, क्षत्रियों को शुभ
वै.कृ. १/२, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३
वै. कृ. ५, शनि	19 अप्रै.	६ वैशा.	ज्ये.	मु. 8/41 बाद, वैश्यों को शुभ
वै. कृ. ९, बुध	23 अप्रै.	१० वैशा.	श्रव.	ल. २, ३ (चं. पू. दान व)
वै. कृ. १०, गुरु	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	ल. २ (प्रात: 8/50 तक) भद्रा पूर्वे
वै. कृ. ११,शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	मृग.	11/18 बाद, ल. ४ (रा. दा.)
वै. शु. ६, सोम	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न.	ल. २ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. १२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	हस्त	ल. २ (चं. दा.), विप्रों को शुभ
वै. शु. १३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	ह/चि	ल. २, अभिजित्
ज्ये. कृ.२, शुक्र	16 मई	३ ज्ये.	ज्ये.	ल. ३, ४ (चं. दा.), अभि.
ज्ये. कृ. ६, मंग.	20 मई	७ ज्ये.	श्रव.	ल. ४ (चं. दा.), अभि. (क्षत्रियों के लिए)
ज्ये.कृ.७/८, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि.	ल. ३ (प्रात: 7/45 बाद)
ज्ये. कृ.१२, रवि	25 मई	१२ ज्ये.	रेव.	ल. ३, अभि., विप्रों को शुभ
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग.	ल. ३, ४ (चं. दा.), अभि.
ज्ये.शु.४/५, सोम	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु.११, सोम	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. पूर्णि., शुक्र	13 जून	३१ ज्ये.	ज्ये.	ल. ३, ४ (चं. दा.), अभि.
आ.कृ.४/५, चंद्र	16 जून	२ आषा	श्रव.	ल. ४, ५ (चं. दा.)
आषा. कृ.५, मंग	17 जून	३ आषा	धनि.	ल.५ (10/58 बाद), क्षत्रियाणां
आषा. कृ.६, बुध	18 जून	४ आषा	शत.	ल. ५ (चं. दा.)
आ.कृ.९/१०, श	21 जून	७ आषा	रेव.	ल. ४, ५, वैश्यों को शुभ
आषा.शु.२, रवि	29 जून	१५ आषा	पुन/पुष्य	ल. ४, अभि., विप्रों को शुभ
आषा.शु.३, सोम	30 जून	१६ आषा	पुष्य	ल. ४, ५, अभिजित
आ.शु. १०, सोम	7 जुला	२३ आषा	स्वा.	४ (6/23 बाद), ५, अभिजित
आ. शु.१३, गुरु	10 जुला	२६ आषा	ज्ये.	ल. ४ (गुरु वार्धक्य) आवश्यके
—सन् 2015 ई. में—				
माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १ (चं. दा.)
माघ शु. ३, शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	ल. १, अभिजित
माघ शु. ७, सोम	26 जन.	१३ माघ	रेव.	ल. १, अभिजित
माघ शु. ८, मंग	27 जन.	१४ माघ	अश्वि	अभिजित (क्षत्रियों के लिए)
माघ शु.११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	मृग.	12/38 बाद, अभिजित
माघ शु.१४, चंद्र	2 फर.	२० माघ	पुन	ल. १, अभिजित
फागु. कृ.४, चंद्र	9 फर.	२७ माघ	हस्त	ल. १, अभि. (चन्द्र छटे पूजा/ दान वा परिहार च.)
फागु. कृ.७, बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. दा.)
फागु. कृ.१०, श	14 फर.	२ फागु.	ज्ये.	ल. १ (चं. पूजा), वैश्यों को शुभ
फागु. शु.१, गुरु	19 फर.	७ फागु.	शत.	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
फागु. शु.५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	ल. प्रात: 10/10 बाद, अभि.
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु.	हस्त	ल. १, अभि. (विप्राणां)
चै.कृ.४/५, मंग.	10 मार्च	२६ फागु.	स्वा.	ल. १, ३, अभिजित (क्षत्रियों के लिए)

नींव एवं गृहारम्भ मुहूर्त–२०७१

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। **गृहारम्भ में ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में भूमि–शयन** (सुप्त भूमि) का भी विचार किया जाता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ.१, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (चं. रा. दा.)
वैशा.कृ.१०, गुरु	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	ल. २ (ल. 8/50 तक, भद्रापूर्वे)
वै. कृ.११, शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै.शु.२/३, गुरु	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३, ल. प्रात: 10/1 बाद
वैशा.शु. ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. शु.६, चंद्र	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न.	ल. २, ३ (चं. दा.), अभि. (शूल दोष परिहार)
वै. शु.११, शनि	10 मई	२७ वैशा.	उ.फा.	ल. २ (सू. दा.), ३ बु. दा., अभि.
वै. शु. १३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २ (सू. दा.),
वै. शु. १३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	चित्रा	ल. ३ (बु. दा.) अभि.
ज्ये. कृ. १, गुरू	15 मई	२ ज्ये.	अनु.	ल. ३ (बु. दा.), अभि.
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ४, अभिजित
ज्ये. कृ.७, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि	ल. ३ (ल. 7/45 बाद)
ज्ये. कृ.१३, चंद्र	26 मई	१३ ज्ये.	अश्वि	ल. ३ (सू. चं. दान– चंद्र पूज्य च) आवश्यके
ज्ये. शु. १, गुरू	29 मई	१६ ज्ये.	रोह.	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग	ल. ३ (8/11 तक), अभि.
ज्ये.शु.४/५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, अभिजित

—नींव-गृहारम्भ मुहूर्त्त—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये. शु.११, चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, अभिजित
ज्ये. शु. ६, बुध	18 जून	४ आषा	शत.	ल. ५
आ.शु. १३,शनि	9 अग.	२५ श्राव.	उ.षा.	मुहूर्त्त प्रातः 7/24 तक
भा. कृ. ५, गुरु	14 अग.	३० श्राव.	रेव.	मु. 9/59 बाद, ल. ८, अभि.
भा.कृ.५/६,शुक्र	15 अग.	३१ श्राव.	अश्वि	मु. 13/54 बाद
भा.कृ.१०/११, बुध	20 अग.	४ भाद्र.	मृग.	ल. ८ (चं. दा.),
भा. कृ.१२,शुक्र	22 अग.	६ भाद्र.	पुन.	ल. ८ (चं. दा.), अभि.
भा. शु. ५, शनि	30 अग.	१४ भाद्र.	चित्रा	ल. ८ (चं. दा.), अभि.
मार्ग. शु.१२,बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग	अश्वि	ल. ११ (गु. दा.)

—सन् 2015 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १ (श. चं. दा.)
माघ शु. ३,शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	ल. १ (श. चं. दा.), अभि.
माघ शु. ५,शनि	24 जन.	११ माघ	उ.भा.	मु. 14/44 से 15/05 तक राहु वेध व दान, आवश्यके
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	अश्वि	ल. १, अभिजित (चन्द्र केतु दान व पूजा)
माघ शु.१०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
माघ शु.११,शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
फागु. कृ.५, चंद्र	9 फर.	२७ माघ	हस्त	ल. १ (चं. रा. दान), मेष ल. 11/27 तक, अभि.
फागु. कृ.७,बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. के. दा.),
फागु. शु.१, गुरु	19 फर.	७ फागु.	शत.	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
फागु. शु.५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि.	अभिजित

26 फरवरी से 5 मार्च तक होलाष्टक

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र कृ.२, शनि	7 मार्च	२३ फागु.	हस्त	ल. १ (चं. मं. दान) राहु युति परिहार, अभिजित

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त—संवत् २०७१

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर **नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति**, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. शु.१, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (चं. रा. दा.)
वैशा. कृ.३,शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल.५ (शु. दा. ल. 14/36 बाद)
वै. कृ. १०,गुरू	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	ल. २ (प्रातः 8/50 तक)
वै. कृ.११, शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै.शु.२/३, गुरू	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३ (बु. दा.) ल. प्रातः 10/1 बाद
वै. शु. ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. ६, चंद्र	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न.	ल. २, ३ (चं. दा.), अभि. (शूलदोष परिहार)
वै. शु.११, शनि	10 मई	२७ वैशा.	उ.फा.	ल. २ (सू. दा.), अभिजित
वै. शु. १३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २ (सू. दा.), अभि.
ज्ये. कृ. १, गुरू	15 मई	२ ज्ये.	अनु.	ल. ३ (बु. दा.), अभि.
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३ (चं. बु. दा.) अभि.
ज्ये. कृ.७, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि.	ल. ३ (7/45 बाद)
ज्ये. शु. १, गुरू	29 मई	१६ ज्ये.	रोह.	ल. ५, अभिजित
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग.	ल. ३ (8/11 तक), ५, अभि.
ज्ये.शु.४/५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५ अभिजित
ज्ये. शु. ८, शुक्र	6 जून	२४ ज्ये.	उ.फा.	दुपै. 13/19 से 15/05 तक
ज्ये. शु.११, चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, अभि., श. दा.
ज्ये. शु. ६, बुध	18 जून	४ आषा.	शत.	ल. ५ (सू. पूज्य दान व)
आ.कृ. १०,शनि	21 जून	७ आषा.	रेव.	ल. ५ (चं. दा.), अभि. (सिंह ल. प्रातः 10/22 बाद)
मार्ग.शु.१२,बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग	अश्वि	ल. ११ (शु. मं. दा.)
मार्ग पूर्णि, शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग.	रोह.	ल. ११ (गु. दा.), अभि.

—सन् 2015 ई. में—

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १ (चं. श. दा.)
माघ शु. ३,शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
माघ शु.७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	अश्वि	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
माघ शु.१०,गुरू	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १ (चं. श. दा., अभि.)
माघ शु.११,शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
फागु. कृ.५, चंद्र	9 फर.	२७ माघ	हस्त	ल. १ (चं. रा. दान, मु. 8/22 के बाद) ल. 11/27 तक
फागु.कृ. ७,बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. के दान)
फागु. शु. १,गुरु	19 फर.	७ फागु.	शत.	ल. १ (चं. मं. दान), अभि.
फागु. शु. ५,चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	अभिजित्
चैत्र कृ. २, शनि	7 मार्च	२३ फागु.	हस्त	ल. १ (चं. मं. दा.) युति परि.

पुराने घर में प्रवेश मुहूर्त्त २०७१ विक्रमी

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मूहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए नवीन गृह प्रवेश **मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।** ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति दान, दक्षिण सहित ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, चंद्र	31 मार्च	१८ चैत्र	रेव.	ल. २ (चं. दा.)
वैशा. कृ. १,बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
वैशा.कृ. ३,शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल. ५ (मुहू. 14/36 बाद)
वैशा.कृ.११,शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै.शु.२/३, गुरू	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३ (मु. प्रातः 10/1 बाद)
वैशा. शु.३,शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभि.
वैशा. शु. ६,चंद्र	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न	ल. २, ३, अभिजित
वैशा.शु.११,शनि	10 मई	२७ वैशा.	उ.फा.	ल. २ (सू. दा.), अभि.
वैशा.शु.१३,चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २ (सू. दा.), अभि.
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३, ४ (चं. बु. दा.) अभि.
ज्ये. कृ. ७, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि.	ल. ३ (मु. 7/45 बाद)
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये.शु.४/५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. ८, शुक्र	6 जून	२४ ज्ये.	उ.फा.	दुपै. 13/19 से 15/05 तक
ज्ये. शु. ११,चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, अभिजित
ज्ये. शु. १२,बुध	18 जून	४ आषा.	शत.	ल. ५ (सू. पूज्यदान)
ज्ये. शु.१०,शनि	21 जून	७ आषा.	रेव.	ल. ४, ५, ल. 10/23 बाद, सिंह, अभिजित
आषा.शु.७,शुक्र	4 जुला	२० आषा.	उ.फा.	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा.शु.८,शनि	5 जुला	२१ आषा.	हस्त	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा.शु.१०, चंद्र	7 जुला	२३ आषा	स्वा.	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा.शु.१२,बुध	9 जुला	२५ आषा	अनु.	ल. ४, ५
श्रा.शु. १३,शनि	9 अग.	२५ श्राव.	उ.पा.	ल. ५, ८, अभिजित्
भा. कृ. ३, बुध	13 अग.	२९ श्राव.	उ.भा.	मु. दुपै. 14/14 बाद

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
भा. कृ. ५, गुरू	14 अग.	३० श्राव.	रेव.	अभिजित, ल. ८
भा. कृ. ६, शुक्र	15 अग.	३१ श्राव.	अश्वि	ल. ८, अभि. चं. दा. व पू.
भा.कृ.१०/११, बुध	20 अग.	४ भाद्र.	मृग.	ल. ८ (चं. मं. दा.)
भा. शु. ३, गुरु	28 अग.	१२ भाद्र.	हस्त	ल. ८ (शं. मं. दान)
भा. शु. ५, शनि	30 अग.	१४ भाद्र.	चित्रा	ल. ८ (चं. श. मं. दा.)
भा. शु.१२, शनि	6 सितं.	२१ भाद्र.	श्रव.	ल. ८ (मं. श. दा.), अभि.
मार्ग. शु. ७, शुक्र	28 नवं.	१३ मार्ग.	धनि.	ल. ११ (चं. दा.), अभि.
मार्ग. शु. ८, शनि	29 नवं.	१४ मार्ग.	शत.	ल. ११ (चं. मं. दा.), अभि.
मा. शु. १२, बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग.	अश्वि	ल. ११
मार्ग. पूर्णि. शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग.	रोह.	ल. ११ (मं. दा.), अभि.
—सन् 2015 ई. में—				
माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १ (चं. श. दा.)
माघ शु. ३, शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	अश्वि	ल. १ (चं. के दान), अभि.
माघ शु. १०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
माघ शु.११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १ (चं. श. दा.), अभि.
फा. कृ. ५, चंद्र	9 फर.	२७ माघ	हस्त	ल. १ (चं. रा. दा.), अभि.
फा. कृ. ७, बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. के. दा.)
फा. शु. १, गुरू	19 फर.	७ फागु.	शत.	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
फागु. शु. ५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	ल. १, प्रातः 10/10 बाद, अभि.
फा. शु. ८, गुरू	26 फर.	१४ फागु.	रोह.	मु. 10/45 तक

दुकान या व्यवसाय आदि शुरू करने के मुहूर्त्त २०७१ (2014-15 ई.)

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय आदि शुरु करने के मुहुर्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव पूजा, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश स्थापन एवं कन्या पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगी जनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए।

वैशा. कृ. १, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वाती	ल. ३ (चं. रा. दा.), अभि.
वैशा.कृ. ३, शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल.५ (शु. दा.), मु. 14/36 बाद
वैशा.कृ.१०, गुरु	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	ल. २, प्रातः 8/50 तक
वैशा. कृ.११, शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत/पू	ल. २, ३, अभिजित
वैशा.शु.२/३, गुरु	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३ (प्रातः 10/01 बाद)
वैशा. शु. ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा.शु.११, शनि	10 मई	२७ वैशा.	उ.फा.	ल. २, ३ (सू. दा.), अभि.
वैशा.शु.१२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	उ/ह.	ल. २, ३ अभि. (चं. मं. दा.)
वै. शु. १३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २, ३, अभि., बु. दा.
ज्ये. कृ. १, गुरु	15 मई	२ ज्ये.	अनु.	ल. ३, ४, अभि., चं.बु.दान

—दुकान, व्यवसायादि मुहूर्त्त सं. २०७१

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३, ४, अभि. चं. बु. दा.
ज्ये. कृ. ७, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि.	ल. ३ (प्रातः 7/45 बाद), ४
ज्ये. कृ.१२, रवि	25 मई	१२ ज्ये.	रेव.	ल. ३-४ (सू.रा.दा.), अभि.
ज्ये. शु. १, गुरू	29 मई	१६ ज्ये.	रो/मृ	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. ५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. ८, शुक्र	6 जून	२४ ज्ये.	उ.फा.	मु. दुपै. 13/19 से 15/5 तक
ज्ये. शु. ११, चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४ (श. दा.), अभि.
आषा.कृ. १०, शनि	21 जून	७ आषा	रेव	ल. ५ (चं. दा.), अभि. (सिंह ल. प्रा. 10/22 बाद)
आ.कृ.१०/११, रवि	22 जून	८ आषा.	अश्वि	ल. ४, ५, अभिजित
आषा. शु.२, रवि	29 जून	१५ आषा.	पुर्न	ल. ४, ५, अभि. (चं. दा.)
आषा. शु.३, चंद्र	30 जून	१६ आषा.	पुष्य	ल. ४, ५, अभि. (चं. दा.)
आषा. शु.७, शुक्र	4 जुला	२० आषा.	उ.षा.	ल. ४, ५, अभिजित
आषा.शु.८, शनि	5 जुला	२१ आषा.	हस्त	ल. ४, ५, अभिजित
आषा.शु.१०, चंद्र	7 जुला	२३ आषा.	स्वा.	ल. ४, ५, अभिजित
आषा.शु.१२, बुध	9 जुला	२५ आषा.	अनु.	ल. ४, ५
श्रा. शु.१३, शनि	9 अग.	२५ श्राव.	उ.षा.	ल. ५, ८, अभिजित
श्रा. शु.१५, रवि	10 अग.	२६ श्राव.	श्रव.	ल. ५, ८, अभिजित
भा. कृ. ५, गुरू	14 अग.	३० श्राव.	रेव.	ल. ८, अभिजित
भा. कृ. ६, शुक्र	15 अग.	३१ श्राव.	अश्वि	ल. ८ (13/54 बाद), अभि.
भा.कृ.१०/११, बुध	20 अग.	४ भाद्र.	मृग.	ल. ८ (चं. मं. दा.)
भा. कृ.१२, शुक्र	22 अग.	६ भाद्र.	पुर्न	अभिजित
भा. शु. ३, गुरु	28 अग.	१२ भाद्र.	हस्त	ल. ८ अभि. (मं. श. दा.)
भा. शु. ५, शनि	30 अग.	१४ भाद्र.	चित्रा	ल. ८ (चं. मं. दा.), अभि.
भा. शु. ६, रवि	31 अग.	१५ भाद्र.	स्वा.	ल. ८ (चं. मं. दा.), अभि.
भा.शु. ११, शुक्र	5 सितं.	२० भाद्र.	उ.षा.	मु. 14/24 उपरांत
भा.शु.१२, शनि	6 सितं.	२१ भाद्र.	श्रव.	ल. ८, अभि., शं. मं. दा.
भा.शु. १३, रवि	7 सितं.	२२ भाद्र.	श्र/ध	अभिजित
अश्वि शु.१, गुरू	25 सितं.	१० आश्वि	हस्त	अभि., ल. १० (चं. गु. दा.)
अश्वि शु.२, शुक्र	26 सितं.	११ आश्वि	चित्रा	अभि., ल. १० (चं. गु. दा.)
मार्ग.शु.१२, बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग.	आश्वि	ल. ११
मार्ग. पूर्णि. शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग.	रोह.	ल. ११ (मं. दा.), अभिजित
—सन् 2015 ई. में—				
माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १ (चं. श. दा.)
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	रे/अ	ल. १ (चं. श. दा.) अभि.
माघ शु.१०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १, अभि. (चं. श. दा.)
माघ शु.११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १, अभि. (चं. श. दा.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
फा. कृ. ५, रवि	8 फर.	२६ माघ	हस्त	मु. 15/01 के बाद
फा. कृ. ५, चंद्र	9 फर.	२७ माघ	हस्त	प्रातः 8/22 बाद, ल. १, अभि.
फा. कृ. ७, बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वाती	ल. १ (चं. के. दा.), अभि.
फा.कृ.१२, गुरू	16 फर.	४ फागु.	उ.षा.	मु. 14/40 बाद
फा.शु. ५, रवि	22 फर.	१० फागु	रेवती	दुपै. 15/40 बाद, भद्रोतरे
फागु.शु.५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	ल. १, प्रा. 10/10 बाद, अभि., चं. दा.
चैत्र कृ. २, शनि	7 मार्च	२३ फागु	हस्त	ल. ४
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु	हस्त	ल. १, अभि., चं. दा.
चै. कृ. ६, गुरु	12 मार्च	२८ फागु.	अनु.	अभि., ल. १, ३ (चं. दा.)

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७१

शास्त्रमत अनुसार ज्येष्ठ (बड़े) पुत्र का यज्ञोपवीत ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। पुनर्वसु नक्षत्र में ब्राह्मण का उपनयन न करें। बुध अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार को उपनयन न करें। मुहूर्त के दिन चन्द्रमा बालक की राशि से ४, ८ या बारहवें स्थान नहीं होना चाहिए। आगामी वर्ष के कुछ मुख्य उपनयन मुहूर्त्त दिए जाते हैं–

चैत्र शु. ५, शुक्र	4 अप्रै.	२२ चैत्र	रोहि.	ल. २, ३, अभिजित
चैत्र शु. ७, रवि	6 अप्रै.	२४ चैत्र	आर्द्रा	ल. २, ३, अभिजित
चैत्र शु.१०, बुध	9 अप्रै.	२७ चैत्र	पुष्य	ल. २, ३
वैशा. कृ. १, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३, अभिजित
वैशा. कृ. ५, रवि	20 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	ल. ३, अभि. (चं. दा.)
वै.शु.२/३, गुरू	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३ (बु. दा., ल. 10/01 बाद), अभिजित
वै. शु. ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोह.	ल. २, ३ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. ५, रवि	4 मई	२१ वैशा.	आर्द्रा	ल. २, ३ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. ६, चंद्र	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न.	ल. २, ३ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. १२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	उ/ह	ल. २, ३ (बु. दा.), अभि.
वै. शु.१३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २ (वृष)
ज्ये. कृ.५, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	अभि., ल. ४ (चं. दा.)
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग.	ल. ३, ४ (चं. दा.), अभि. (मिथुन ल. प्रातः 8/11 तक)
ज्ये. शु. ५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. ६, बुध	4 जून	२२ ज्ये.	अश्ले	ल. ३ (मु. 7/50 तक)
ज्ये. शु.११, चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४, अभि., भद्रा परि.
आ. शु. २, रवि	29 जून	१५ आषा.	पुष्य	ल. ४, ५, अभि., कर्क ल. 8/59 बाद
आ. शु. ३, चंद्र	30 जून	१६ आषा.	पुष्य	ल. ४, ५, अभिजित

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
आ. शु. ७, शुक्र	4 जुला	२० आषा.	उ.फा.	ल. ४, ५, अभिजित
आ.शु. १०, चंद्र	7 जुला	२३ आषा.	स्वा.	ल. ४, ५, अभि., चं. दा.

—सन् 2015 ई. में—

माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १, चं. दा. आवश्यके
माघ शु. ३, शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	मु. प्रात: 8/21 तक-आवश्यके
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	अश्वि	ल. १ (चं. दान पूज्य व), अभि.
				ल. मेष 11/48 उपरान्त
माघ शु.१०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १ (चं. दा.), अभि.
				(ल. 11/38 बाद)
माघ शु.११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १, अभिजित
माघ शु.१३, रवि	1 फर.	१९ माघ	आर्द्रा	ल. १, अभिजित
फा.कृ.२/३, शुक्र	6 फर.	२४ माघ	पू.फा.	ल. १, अभिजित
फागु.शु.२, शुक्र	20 फर.	८ फागु.	पू.भा.	ल. १, अभिजित
फागु.शु.५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	अभिजित
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु.	हस्त	ल. १ (चं. दा. व पू.), अभि.

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-2014-15 ई.

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है-आजकल कुछ ज्योतिषी परिस्थितिवश एवं लोकाचार स्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं। द्विरागमन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त होता है।

नोट-शनि एवं रविवारों को आवश्यक परिस्थितिवश एवं उपयुक्त उपाय स्वरूप ही ग्रहण करें।

वैशा. कृ. १, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३
वैशा.कृ. ३, शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल. ५, (दुपै. 14/36 बाद)
वैशा. कृ.५, रवि	20 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	ल. ३, अभि. चं. दा., आव.
वै. कृ. ७, चंद्रे	21 अप्रै.	८ वैशा.	उ.षा.	अभिजित
वैशा. कृ.९, बुध	23 अप्रै.	१० वैशा.	श्रव.	ल. २, अभिजित
वै. कृ.१०, गुरु	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	प्रात: 8/50 तक, भद्रा पूर्व
वैशा.कृ.११, शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. शु. २, गुरु	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. प्रात: 10/01 बाद, ४, अभि.
वैशा.शु.३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रो/मृ	ल. २, ३, ४, अभिजित
वैशा.शु. ६, चंद्र	5 मई	२२ वैशा.	पुन.	ल. २, अभिजित

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु.१३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	ह/चि	ल. २, ३, ४, अभि.
मार्ग. शु.१२, बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग.	अश्वि	ल. ११
मार्ग. पूर्णि. शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग.	रोह.	ल. ११, १, अभिजित

—सन् 2015 ई. में—

फा.कृ. ११, रवि	15 फर.	३ फागु.	मूल	ल. १ (मं. श. दा.), अभि.
फा. कृ.१२, चंद्र	16 फर.	४ फागु.	उ.षा.	मु. 14/40 उपरांत
फागु.शु. १, गुरु	19 फर.	७ फागु.	शत.	ल. १ (मं. दा.), अभि.
फा. शु. ५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	ल. प्रात: 10/10 बाद, अभि.
चैत्र कृ. २, शनि	7 मार्च	२३ फागु.	हस्त	मु. 14/37 पश्चात्
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु.	हस्त	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७१

आगे लिखे मुहूर्त्त प्राय: सभी देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, जलाशय, तालाब, बावड़ी, कूआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे। सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा देवी/देव का जयंती दिन विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण भासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, एवं शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

चैत्र शु. ९, मंग	8 अप्रै.	२६ चैत्र	पुर्न	मुहूर्त्त प्रात: 10/4 तक, श्रीराम
चैत्र पूर्णि., मंग	15 अप्रै.	२ वैशा.	चित्रा	ल. २, ३, अभि. श्रीहनुमान
वैशा. कृ.१, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. ३ (चं. दा.)
वैशा.कृ.३, शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल. ५, लग्न 14/36 बाद
वै.कृ.५/६, रवि	20 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	ल. ३, अभि., श्री दुर्गा
वैशा. कृ.९, बुध	23 अप्रै.	१० वैशा.	श्रव.	ल. २, ३
वैशा.कृ.१०, गुरु	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि.	ल. २, प्रात: 8/50 तक भद्रापूर्वे
वैशा.कृ.११, शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै.शु.२/३, शुक्र	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३ (10/01 बाद), अभि.
वैशा.शु.३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा.	रोह.	ल. २, ३, अभि. भ. विष्णु
वैशा.शु.६, चन्द्र	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा.शु.१२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	हस्त	ल. २, ३, अभिजित

पक्ष तिथि वार	ता.अंग्रे.	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.शु.१३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २, अभिजित
ज्ये. कृ. १, गुरु	15 मई	२ ज्ये.	अनु.	ल. ३, ४, अभि., चं. दा.
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ४, अभि., चं. दा.
ज्ये.कृ.७/८, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि.	ल. ३, ४ (चं. दा.)
ज्ये.कृ.१२, रवि	25 मई	१२ ज्ये.	रेव	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. १, गुरु	29 मई	१६ ज्ये.	रोह.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये.शु.४/५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्ये	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये.शु. ११, चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४, अभिजित
आषा.कृ.६, बुध	18 जून	४ आषा	शत	ल. ४, ५ (चं. दा.)
आ.कृ.१०, शनि	21 जून	७ आषा	रेव.	५ (प्रात: 10/22 बाद), अभि.
आ.कृ. १०, रवि	22 जून	८ आषा	अश्वि	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा.शु.२, रवि	29 जून	१५ आषा	पुर्न/पु	ल. ४, ५, अभिजित्
आषा.शु.३, चंद्र	30 जून	१६ आषा	पुष्य	ल. ४, ५, मु. 11/50 तक
आ. शु.७, शुक्र	4 जुला	२० आषा	उ.फा.	ल. ४, ५, अभि.
आ. शु. ८, शनि	5 जुला	२१ आषा	हस्त	ल. ४, ५, अभि., भद्रा परि.
आ.शु.८/९, रवि	6 जुला	२२ आषा	चित्रा	ल. ४, ५, अभि., युति परि.
आ. शु.१०, चंद्र	7 जुला	२३ आषा	स्वा.	ल. ४, ५, अभिजित

[देवशयनम् एवं चातुर्मास्यादि नियम प्रारम्भ]

—सन् 2015 ई. में—

माघ शु. १ बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १ (श. दा.)
माघ शु. ३, शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	ल. १, अभिजित
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	रेव.	ल. १ (चं. दा.) मेष ल. 11/48 तक
माघ शु.१०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १, अभिजित
माघ शु.११, शुक्र	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १ (श. दा.), अभि. भद्रा परि.
फा.कृ.४/५, रवि	8 फर.	२६ माघ	हस्त	ल. १ (चं. दा.), अभि.
फागु. कृ.७, बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. मं. दा.)
फा.कृ. ११, रवि	15 फर.	३ फागु	मूल	ल. १ (मं. चं. दा.), अभि.
फा. कृ.१२, चंद्र	16 फर.	४ फागु	उ.षा.	मु. 14/40 से 15/46 तक
फा. शु. १, गुरु	19 फर.	७ फागु	शत	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
फा. शु. ५, चंद्र	23 फर.	११ फागु	अश्वि	ल. १ प्रात: 10/10 बाद, अभि.
चैत्र कृ. २, शनि	7 मार्च	२३ फागु	हस्त	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु	हस्त	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.

श्री दुर्गा देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७१

(आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां श्रीगौरी की प्रतिष्ठा में विशेष रूप से प्रशस्त होंगी।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ.१, बुध	16 अप्रै.	३ वैशा.	स्वा.	ल. २, ३ (चं. दान)
वै. कृ. ३, शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल. ५ (शु. दा.), अभि., गौरी प्र.
वै. कृ. ५, रवि	20 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
वै. कृ. ९, बुध	23 अप्रै.	१० वैशा.	श्रव.	ल. २, ३ (चं. पूज्य दान)
वै.शु.२/३, शुक्र	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	10/01 बाद, ल. ३, ४, अभि.
वै. शु. ३, शुक्र	2 मई	१९ वैशा	रो/मृ.	ल. २, ३, ४, अभि. गौरी प्र.
वै. शु. ६, चंद्र	5 मई	२२ वैशा	पुर्न	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. १२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	उ/ह	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु.१३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा	हस्त	ल. २, ३, (चं. बु. दा.) अभि.
ज्ये. कृ.१, गुरु	15 मई	२ ज्ये.	अनु.	ल. ३, ४, चं. बु. दा., अभि.
ज्ये. कृ.२, शुक्र	16 मई	३ ज्ये.	ज्ये.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३, ४, (चं. बु. दान), अभि.
ज्ये. कृ.७, बुध	21 मई	८ ज्ये.	धनि	ल. ३ (7/45 बाद), ४
ज्ये. कृ.१२, रवि	25 मई	१२ ज्ये.	रेव.	ल. ३-४, अभि.
ज्ये. शु.२, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. ५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. ९, शनि	7 जून	२५ ज्ये.	उ.फा.	ल. ३, ४ (रा. दा.), अभि.
ज्ये.शु. ११, चंद्र	9 जून	२७ ज्ये.	चित्रा	ल. ३, ४ (श. दा.), अभि.
आ. कृ. ९, शनि	21 जून	७ आषा	रेव	ल. ५, अभिजित
आ. शु. २, रवि	29 जून	१५ आषा	पुर्न	ल. ४, ५, अभिजित
आ. शु. ३, चंद्र	30 जून	१६ आषा	पुष्य	ल. ४, ५, अभि., गौरी प्र.
आ.शु.९/१०, चं	7 जुला	२३ आषा	स्वा.	ल. ४, ५, अभि. (चं. दा.)
(8 जुलाई से चातुर्मास्य व्रतादि नियम प्रारम्भ)				
आश्वि.शु.१, गुरु	25 सितं.	१० आश्वि	हस्त	ल. १०, अभि. प्र. नवरात्र
मार्ग शु.१२, बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग	अश्वि	ल. ११ (गु दा.), अभि.
—सन् 2015 ई. में—				
माघ शु.१, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १, (चं. दा.),
माघ शु. ३, शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत	ल. १ (शं. दा.), अभि. श्री गौरी
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	रेव	ल. १, अभि. (चं. श. दान)
माघ शु.१०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	कृ/रो	ल. १, अभि. (श. दान)
माघ शु.११, शु.	30 जन.	१७ माघ	रोह.	ल. १, अभि. (श. दा.)
फा. कृ. ५, रवि	8 फर.	२६ माघ	हस्त	ल. १, (चं. दा.), अभि.
फा. कृ. ७, बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. दा.)
फा. कृ.११, रवि	15 फर.	३ फागु	मूल	ल. १ (मं. शु. दा.), अभि.
फागु. शु. १, गुरु	19 फर.	७ फागु	शत	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
फागु. शु. ५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	ल. प्रात: 10/10 बाद, अभि.
फा. शु. ७, बुध	25 फर.	१३ फागु.	कृति.	मु. 7/55 तक
चैत्र कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु	हस्त	ल. १ (चं. पू. दान व.), अभि.

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७१

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिंङ्ग स्थापन हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषत: शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्त्तों में **'शिववास चक्र'** का भी प्रयोग करें तो विशेष शुभ होगा। **शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास विशेष प्रशस्त होते हैं।**

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा.कृ.३, शुक्र	18 अप्रै.	५ वैशा.	अनु.	ल. ५ (शुक्र पू. दान, ल. 14/36 बाद)
वै. कृ. ५, रवि	20 अप्रै.	७ वैशा.	मूल	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
वै. कृ.१०, गुरु	24 अप्रै.	११ वैशा.	धनि	वृष लग्न 8/50 तक भद्रा पूर्व
वै. कृ.११, शुक्र	25 अप्रै.	१२ वैशा.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै.शु.२/३, गुरु	1 मई	१८ वैशा.	रोह.	ल. ३, प्रात: 10/01 के बाद, अभि.
वै. शु. ५, रवि	4 मई	२१ वैशा.	आर्द्रा	ल. २, ३ (चं. दा.), अभि.
वै. शु. ६, चंद्र	5 मई	२२ वैशा.	पुर्न	ल. २, ३, अभि. (चं. दा)
वै. शु. ९, गुरु	8 मई	२५ वैशा.	मघा	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. १२, रवि	11 मई	२८ वैशा.	उ/ह	ल. २, अभि. (चं. मं. रा.)
वै. शु.१३, चंद्र	12 मई	२९ वैशा.	हस्त	ल. २, ३, अभिजित
ज्ये. कृ. २, शुक्र	16 मई	३ ज्ये.	ज्ये.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	६ ज्ये.	उ.षा.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. कृ.१२, रवि	25 मई	१२ ज्ये.	रेव.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	१७ ज्ये.	मृग	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. ५, चंद्र	2 जून	२० ज्ये.	पुष्य	ल. ३, ५, अभिजित
ज्ये. शु. ७, गुरु	5 जून	२३ ज्ये.	मघा	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये.शु. १४, गुरु	12 जून	३० ज्ये.	मूल	ल. ३ (चं. दा.), अभि.
आ. कृ. ६, बुध	18 जून	४ आषा	शत.	ल. ४, ५ (चं. दा.)
आ.कृ. १०, रवि	22 जून	८ आषा	अश्वि	ल. ४, ५, अभिजित
आ. शु. २, रवि	29 जून	१५ आषा	पुन	ल. ४, ५, अभिजित
आ. शु. ३, चंद्र	30 जून	१६ आषा	पुष्य	ल. ४, ५ (मु. 11/50 तक)
आ. शु. ८, शनि	5 जुला	२१ आषा	हस्त	ल. ४, ५, अभि. भद्रा परिहार
आ. शु. ९, चंद्र	7 जुला	२३ आषा	स्वा.	ल. ४, ५, अभिजित
श्रा. पूर्णि., रवि	10 अग.	२६ श्राव	श्रव.	ल. ५, ८, अभिजित
भा. कृ. ५, गुरु	14 अग.	३० श्राव	रेव	ल. ८, अभिजित
भा. कृ. ६, शुक्र	15 अग.	३१ श्राव.	अश्वि	ल. ८ (चं. दा.), अभि.
मार्ग शु. १२, बुध	3 दिसं.	१८ मार्ग	अश्वि	ल. ११, अभिजित
मार्ग शु. १५, शनि	6 दिसं.	२१ मार्ग	रोह.	ल. ११, १, अभिजित
—सन् 2015 ई. में—				
माघ शु. १, बुध	21 जन.	८ माघ	श्रव.	ल. १
माघ शु. ३, शुक्र	23 जन.	१० माघ	शत.	ल. १, अभिजित
माघ शु. ७, चंद्र	26 जन.	१३ माघ	रेव	ल. १, अभिजित
माघ शु.१०, गुरु	29 जन.	१६ माघ	रोह.	ल. १, अभि. (श. दा.)
माघ शु.१३, रवि	1 फर.	१९ माघ	आर्द्रा	ल. १, अभिजित
माघ शु.१४, चंद्र	2 फर.	२० माघ	पुर्न	ल. १, अभिजित
फा.कृ.४/५, रवि	8 फर.	२६ माघ	हस्त	ल. १, अभि. (चं. दा.)
फा. कृ.७, बुध	11 फर.	२९ माघ	स्वा.	ल. १ (चं. मं. दा.)
फा. कृ.११, रवि	15 फर.	३ फागु.	मूल	ल. १, अभि. (चं. मं. दा.)
फा. शु. १, गुरू	19 फर.	७ फागु.	शत	ल. १ (चं. मं. दा.), अभि.
फा. शु. ५, चंद्र	23 फर.	११ फागु.	अश्वि	ल. प्रात: 10/10 बाद, अभि., चं.पू. दान
चै. कृ. २, शनि	7 मार्च	२३ फागु.	उ.फा.	ल. १, अभि. चं. मं. दान
चै. कृ. ३, रवि	8 मार्च	२४ फागु.	हस्त	ल. १, अभि. चं. मं. दान

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त—२०७१

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वै. कृ. ४, शनि	19 अप्रै.	६ वैशा	ज्ये.	प्रात: 8/41 तक
ज्ये. कृ. ४, रवि	18 मई	५ ज्ये.	पूषा	ल. ३, अभिजित
आ. कृ. ४, चंद्र	16 जून	२ आषा	श्रव.	ल. ४, अभिजित
भाद्र.कृ. ४, गुरू	14 अग.	३० श्राव.	उ.भा.	मु. प्रात: 9/59 तक
भा. शु. ४, शुक्र	29 अग.	१३ भाद्र.	हस्त	ल. ८ (वृश्चिक), अभि. (सिद्धि विनायक ४)
पौष कृ ४, बुध	10 दिसं.	२५ मार्ग.	पुष्य	ल. ११
—सन् 2015 ई. में—				
माघ कृ. ४, शुक्र	9 जन.	२५ पौष	मघा	ल. १, अभिजित
फागु.कृ. ४, रवि	8 फर.	२६ माघ	उ.फा.	ल. १, अभिजित
चैत्र कृ. ४, मंग	10 मार्च	२६ फागु.	स्वा.	ल. १, ३, अभिजित

स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, **दीपावली—तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं।** आवश्यक परिस्थितिवश गृहारम्भादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।।

वाहन आदि क्रय मुहूर्त-सन् 2014 ई.

आगे लिखे मुहूर्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्पयूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, ज़मीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की खरीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्री गणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच व स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए।

—निवेदक पं. पन्ना लाल ज्यो.

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, चंद्र	31 मार्च	रेव	ल. २, ४, अभि., स्वयं सिद्ध
वैशा. कृ. १,बुध	16 अप्रै.	स्वा.	ल. ३ (चं. दा.)
वै. कृ. ३, शुक्र	18 अप्रै.	अनु.	मु. 14/36 के बाद, स.सि.यो.
वैशा.कृ. ७, चंद्र	21 अप्रै.	पू.षा.	ल. ३ (चं. दा.), अभिजित
वै. कृ.१०, गुरु	24 अप्रै.	धनि.	ल. २ (प्रात: 8/50 तक)
वै. कृ. ११,शुक्र	25 अप्रै.	शत/पू.	ल. २, ३, अभिजित
वै. कृ. १२,शनि	26 अप्रै.	पू.भा.	ल.२,३ (बु.दा.), अभि.त्रिपुष्कर
वैशा.शु. २, बुध	1 मई	रोह.	ल. ३ (ल. 10/01 बाद), (बुध दान)
वैशा. शु. ३,गुरु	2 मई	रो./मृ.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. ८, बुध	7 मई	अश्ले.	ल. २, ३
वै. शु. १२, रवि	11 मई	उफा/ह.	ल. २, ३, अभि., स.सि.यो.
वै. शु. १३, चंद्र	12 मई	ह./चित्रा	ल. २, ३, अभिजित
ज्ये. कृ. १, गुरु	15 मई	अनु.	ल. ३, ४, अभि., सि. यो.
ज्ये.कृ.५/६, चंद्र	19 मई	उ.षा.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. कृ. ७, बुध	21 मई	धनि.	ल. ३, ४
ज्ये. कृ. १२,रवि	25 मई	रेव.	ल. ३, ४, अभि., सि. यो.
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	मृग.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. ५, चंद्र	2 जून	पुष्य	ल. ३, अभि., सि. यो.
ज्ये. शु. ८, शुक्र	6 जून	उ.फा.	मु. दुपै. 13/19 उपरांत
ज्ये. शु. ११,चंद्र	9 जून	चित्रा	ल. ३, ४, अभिजित
आ. कृ. ६, बुध	18 जून	शत.	ल. ५ (चं. दा.)
आ.कृ.१०/११,र.	22 जून	अश्वि	ल. ४, ५, अभि., स. सि. यो.
आ. शु. ३, चन्द्र	30 जून	पुष्य	ल. ४, ५, अभिजित
आ. शु. ७, शुक्र	4 जुला	उ.षा.	ल. ४, ५, अभिजित
आ. शु. १२,बुध	9 जुला	अनु.	ल. ४, ५, अभि. सि. यो.
श्रा. शु. १३,शनि	9 अग.	उ.षा.	ल. ५, ८, अभिजित
भा. कृ. ५, शुक्र	14 अग.	रेव.	ल. ८, अभिजित
भा.कृ.१०/११,बु	20 अग.	मृग.	ल. ८, अभि. सि. यो.
भा. कृ. १२,शुक्र	22 अग.	पुर्न	ल. ८, अभिजित
भा. शु. ११,शुक्र	5 सितं.	उ.षा.	दुपै. 14/24 बाद
आश्वि.शु.२,शुक्र	26 सितं.	चित्रा	ल. १०, ल. अभिजित
मा. शु. १२,बुध	3 दिसं.	अश्वि	ल. ११, अभिजित
मा. पूर्णि., शनि	6 दिसं.	रोह.	ल. ११, अभि., स. सि. यो.

श्री मद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि प्रारम्भ मुहूर्त्त-सन् 2014 ईसवी

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्री मद्भागवत्, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष **श्रेष्ठतर** माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	प्रविष्टे	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. १,बुध	16 अप्रै.	स्वाती	ल. ३ (चं. दा.)
वैशा. कृ. ३,शुक्र	18 अप्रै.	अनु.	मु. 14/36 बाद, स. सि. यो.
वै. कृ. ७, चन्द्र	21 अप्रै.	पू.षा.	ल. ३, अभि. चं. दा.
वैशा. कृ. ९,बुध	23 अप्रै.	श्रव.	ल. २, ३
वै. कृ. १०,गुरू	24 अप्रै.	धनि.	ल. २ (प्रात: 8/50 तक)
वै. कृ. ११,शुक्र	25 अप्रै.	शत.	ल. २, ३, अभिजित
वै. शु. २/३,गुरू	1 मई	रोह.	ल. ३, ल. प्रात: 10/1 के बाद,४
वैशा.शु. ३,शुक्र	2 मई	रोह/मृ.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा.शु. १२,रवि	11 मई	उफा/ह.	ल. २, ३, अभिजित, स.सि.यो.
वैशा.शु. १३,चंद्र	12 मई	ह/चित्रा	ल. २, ३, अभिजित
ज्ये. कृ. १, गुरु	15 मई	अनु.	ल. ३, ४, अभि., स. सि.
ज्ये. कृ. ५,चन्द्र	19 मई	उ.षा.	ल. ४, अभिजित
ज्ये. कृ. १२,रवि	25 मई	रेव.	ल. ३, ४, अभि., सि. यो.
ज्ये. शु. २, शुक्र	30 मई	मृग.	ल. ३, ४, अभिजित
ज्ये. शु. ५, चन्द्र	2 जून	पुष्य	ल. ३, अभि., सि. यो.
ज्ये. शु. ११,चंद्र	9 जून	चित्रा	ल. ३, ४, अभि. (श. दा.)
आषा.कृ. ६,बुध	18 जून	शत.	ल. ५ (चं. दा.)
आ.कृ.१०/११,रवि	22 जून	अश्वि	ल. ४, ५, अभि. सि. यो.
आ. शु. २, रवि	29 जून	पुर्न	ल. ४, ५, अभि. (चं. दा.)
आ. शु. ३, चंद्र	30 जून	पुष्य	ल. ४, ५, (चं. दा.), अभिजित
आ. शु. ७, शुक्र	4 जुला	उ.षा.	ल. ४, ५, अभिजित
आषा. शु.१३,बुध	9 जुला	अनु.	ल. ४, ५
श्राव. पूर्णि.,रवि	10 अग.	श्रव.	ल. ५, ८, अभिजित
भा. कृ. ५, गुरु	14 अग.	रेव.	ल. ८
भा.कृ.५/६,शुक्र	15 अग.	अश्वि	अभि., ल. ८ (13/54 बाद)
भा.कृ.१०/११,बु	20 अग.	मृग.	ल. ८
भा. कृ. १२,शुक्र	22 अग.	पुर्न.	ल. ८, अभि. (चं. दा.)
भा. शु. ३, गुरु	28 अग.	हस्त	ल. ८, अभिजित
भा. शु. ६, रवि	31 अग.	स्वा.	ल. ८, अभि. चं. दा.
भा. शु. १३,रवि	7 सितं.	श्रव/ध.	अभिजित
आश्वि शु. १,गुरु	25 सितं.	हस्त	अभि., ल. १०
आश्वि शु. २,शुक्र	26 सितं.	चित्रा	अभिजित, ल. १० (चं. दा.)
मार्ग.शु. १२,बुध	3 दिसं.	अश्वि.	ल. ११

चुनाव में खड़े होने का मुहूर्त्त

शुभ तिथियाँ—(१ कृ.), २, ३, ५, ९, १०, १२ एवं १५ शुक्ल।

शुभ वार—सोम, बुध, गुरु एवं शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, पुर्न, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा, रेवती।

शुभ लग्न—(इ) १, ४, ७, १०।

विशेष—केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, ३, ६, ११वें पाप ग्रह हो। लग्न एवं लग्नेश पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो। बुध, शुक्र, गुरु उदित हों। चन्द्र बली हो तथा प्रत्याशी की राशि मुहूर्त्त वाले दिन-छटे, आठवें एवं १२वें न हो।

संसद् में शपथ ग्रह के समय **स्थिर लग्न** प्रशस्त होता है।

श्रावण मास में

शिवभक्ति का प्रतीक काँवड़ी जलाभिषेक मुहूर्त्त–2014 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्री गंगाजल के कलश भरकर भगवान श्री शिव की प्रसन्नता हेतु **आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान श्री शिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, विग्रहों, स्वरूपों एवं ज्योतिर्लिङ्गों तथा क्षेत्रीय मन्दिरों** में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रूद्राभिषेक करें। **कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रूद्राभिषेकं कुर्वीत मासमात्रं दिने दिने।।**

कुछ लोगों का भ्रम है कि **श्रावण–भादों मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सूती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती–ये सभी नंदसंज्ञा वाली नदियाँ–ये रजोदोष से युक्त नहीं होती हैं।–ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।**

श्री गंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें–

पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें	पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें
आषा. पूर्णिमा	शनि	पू.षा.	12 जुलाई	श्रावण शु. १/२	सोम	अश्लेषा	28 जुलाई
श्रावण कृ. १	रवि	उ.षा.	13 जुलाई	श्रावण शु. ५	शुक्र	हस्त	1 अग.
श्रावण कृ. २	सोम	श्रवण	14 जुलाई	श्रावण शु. ६	शनि	हस्त/चित्रा	2 अग.
श्रावण कृ. ७	शुक्र	रेवती	18 जुलाई	श्रावण शु. ८	सोम	स्वा.	4 अग.
श्रावण कृ. ८	शनि	अश्विनी	19 जुलाई	श्रावण शु. १३	शुक्र	पू.षा.	8 अग.
श्रावण कृ. १३	गुरू	मृग.	24 जुलाई	श्रा. शु. १३/१४	शनि	उषा	9 अग.
श्रावण कृ. १४	शुक्र	आर्द्रा	25 जुलाई	श्रावण पूर्णिमा	रवि	श्रवण	10 अग.

अभिषेक हेतु जलामृत लिवाने की यात्रा में शुभ दिन विचार

काँवडियां शुभयात्रा हेतु जाने से पूर्व चन्द्रमा का सम्मुख व दाएँ आदि दिशा वास जानकर शुभ यात्रा आरम्भ करें तो कल्याणकारी होगा। **उदाहरणार्थ**–जिस दिशा की ओर जाना हो उस राशि से सम्बन्धित दिशा सम्मुख अर्थात् कल्याणकारी कहलाएगी। उससे दाहिनी ओर की दिशा में पड़ने वाली चन्द्र राशि एवं उसकी दिशा भी शुभ एवं लाभकारी होगी। जबकि बाईं ओर पड़ने वाली एवं दिशा कष्टकारी एवं अशुभ होगी।

चन्द्रराशि अनुसार यात्रा में दिशा की शुभाशुभ विचार

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
द्वादश राशियां	मेष, सिंह, धनु	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर।

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना में उपयोगी

–शिववास चक्र–

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्रविहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है–उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण–मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

शिववास चक्र

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ–लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(शून्य)	श्मशान	नेष्ट फल

गृहारम्भ के मुहूर्त्त शोधन में

–वृष वास्तु–चक्र विचार–

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्रय	सदा पीड़ा व कष्ट

गत पृष्ठों में दिए गए गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह–बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण–जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि–कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः–गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त—संवत् २०७१ वि. (2014-15 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७१ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्त्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्त्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षत: कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्त्तों में किसी क्रूर ग्रह की युति का परिहार मिल गया है, उन मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है।

निवेदक—पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
15 अप्रै.	मंग.	चित्रा	मृत्युबाण दोष
17 अप्रै.	गुरु	अनु	व्यतिपात दोष
26 अप्रै.	शनि	उ.भा.	मंगल का वेध
27 अप्रै.	रवि	उ.भा.	कृष्ण त्र्यो., वैधृति
3 मई	शनि	मृग	मृत्युबाण 19/23 से प्रा.
9 मई	शुक्र	उ.फा.	लग्नाभाव
13 मई	मंग.	चित्रा	मासान्त, व्यतिपात
14 मई	बुध	स्वा.	ज्येष्ठ संक्रांति
16 मई	शुक्र	मूल	लग्नऽभाव
23 मई	शुक्र	उ.भा.	भद्रा दोष, भौम वेध
24 मई	शनि	उ.भा.	भौम का वेध
25 मई	रवि	अश्वि	मृत्युबाण दोष
4 जून	बुध	मघा	मृत्युबाण 11/30 तक
7 जून	शनि	हस्त	भौमयुति, व्यतिपात
8 जून	रवि	हस्त	भौमयुति, व्यतिपात
13 जून	शुक्र	मूल	मृत्युबाण दोष (8/45 से 15/40 तक)
14 जून	शनि	मूल	मासान्त दोष
15 जून	रवि	उ.षा.	आषाढ़ संक्रान्ति
16 जून	सोम	श्रवण	12/35 बाद मृत्युबाण दोष
16 जून	सोम	धनि.	वैधृति दोष
19 जून	गुरू	उ.भा.	मंगल का वेध
20 जून	शुक्र	उ.भा.	मंगल का वेध
24 जून	मंग.	रोह.	भुजंगपात, कृ. १३
25 जून	बुध	रोह	भुजंगपात, कृ. १३
5 जुला.	शनि	चित्रा	मंगल-राहु युति
6 जुला	रवि	चित्रा	मंगल-राहु युति

11 जुला. से 4 अग. तक गुर्वस्त

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
10 अग.	रवि	धनि	सूर्य का वेध
11 अग.	सोम	धनि	सूर्य का वेध
14 अग.	गुरु	उ.भा.	लग्नाभाव
15 अग.	शुक्र	रेव.	मृत्युबाण 16/48 तक, शूल योग
16 अग.	शनि	अश्वि	मासान्त
27 अग.	बुध	उ.फा.	केतु का वेध
28 अग.	गुरु	उ.फा.	केतु का वेध
1 सितं.	सोम	अनु.	वैधृति दोष
6 सितं.	शनि	उ.षा.	लग्नाभाव
7 सितं.	रवि	श्रव.	लग्नाभाव
8 सितं.	सोम	धनि.	लग्नाभाव
श्राद्धकाल-9 सितं. से 24 सितं. तक श्राद्ध होंगे।			
26 सितं.	शुक्र	स्वा	वैधृति दोष
27 सितं.	शनि	स्वा.	वैधृति, मृत्युबाण
शुक्रास्त–2 अक्तू. से 26 नवं. तक			
1 दिसं.	सोम	उ.भा.	राहु का वेध
1 दिसं.	सोम	रेव	केतु युति, व्यतीपात ग्रहणशूल
2 दिसं.	मंग.	रेव.	केतु युति, व्यतीपात
6 दिसं.	शनि	मृग.	मंगल का वेध
7 दिसं.	रवि	मृग.	मंगल का वेध
12 दिसं.	शुक्र	मघा	मंगल का वेध
13 दिसं.	शनि	मघा	मंगल का वेध
14 दिसं.	रवि	उ.फा.	केतु का वेध
15 दिसं.	सोम	उ.फा.	केतु वेध, मासान्त

16 दिसं. से 13 जन. (15)-पौष मास (सन् 2015 ई०)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
14 जन.	बुध	स्वा.	संक्रान्ति
15 जन.	वीर	स्वा.	मंगल का वेध
16 जन.	शुक्र	अनु	अपरिहार्य शनि युति
17 जन.	शनि	अनु	शनि युति, ल.ऽभाव
18 जन	रवि	मूल	कृष्ण त्र्योदशी
22 जन.	गुरु	धनि.	व्यतीपात दोष
24 जन.	शनि	उ.भा.	राहु वेध, मृत्युबाण
25 जन.	रवि	उ.भा.	राहु का वेध
27 जन.	मंग.	अश्वि	लग्नऽभाव
31 जन.	शनि	मृग	वैधृति दोष
4 फर.	बुध	मघा	सूर्य का वेध
5 फर.	गुरु	मघा	सूर्य का वेध
6 फर.	शुक्र	उ.फा.	केतु का वेध
7 फर.	शनि	उ.फा.	केतु का वेध
8 फर.	रवि	उ.फा.	केतु का वेध
9 फर.	सोम	हस्त	शूल योगे, भुजंगपात
9 फर.	सोम	चित्रा	मंगल का वेध
10 फर.	मंग.	चित्रा	मंगल का वेध
11 फर.	बुध	स्वा.	मृत्युबाण दोष प्रात: 8/50 से
12 फर.	गुरु	अनु.	मासान्त दोष
13 फर.	शुक्र	अनु.	फागुन संक्रान्ति
17 फर.	मंग.	उषा	कृष्ण त्र्योदशी
20 फर.	शुक्र	उभा	राहु का वेध
21 फर.	शनि	उभा	राहु का वेध
23 फर.	सोम	अश्वि	मृत्युबाण दोष
(मृत्युबाण प्रात: 5-50 से 18-08 तक)			
25 फर.	बुध	रोह.	वैधृति दोष
26 फर.	बुध	रोह.	वैधृति दोष

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
26 फर. से 5 मार्च तक-होलाष्टक			
6 मार्च	शुक्र	उ.फा.	शुक्र-केतु का वेध
7 मार्च	शनि	उ.फा.	शुक्र केतु का वेध
8 मार्च	रवि	चित्रा	सूर्य का वेध
9 मार्च	सोम	चित्रा	सूर्य का वेध
11 मार्च	बुध	अनु	शनि युति अपरिहार्य
12 मार्च	गुरू	अनु.	शनि-युति अपरिहार्य
13 मार्च	शुक्र	मूल	मासान्त
14 मार्च	शनि	मूल	चैत्र मासारम्भ

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्राय: सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है–**दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभु:। चक्रमादाय गोविन्द: सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार अभिजित् के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को अभिजित् काल कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर अभिजित का समाप्ति काल (घंटा मिंट) होगा।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यों में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। तिथि को शरीर, चन्द्रमा को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा लग्न को आत्मा माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः —ज्योर्तिनिबंध

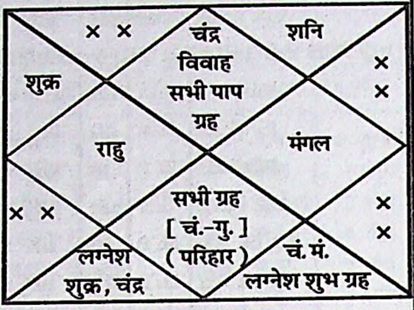
लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ —ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह



"त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥"

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न—मुहूर्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं— **लग्ने वर्गोत्तमे वेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।**
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न—वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्—

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्।जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का **स्वामी, केन्द्र** स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष—लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार—कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार—मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार—नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे—वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है—

"अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥" (पियूषधारा)

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार—"कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ"

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तंड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद—नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे—

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त्त चिं. पीयूषधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु—सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **"चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।"**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार—पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण हीं अशुभ माना है। —ज्योर्तिनिबन्ध

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। यथा—

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—**मु० गणपति**

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

कश्यपर्वि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरु र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्त्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तियेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥

(iii) "दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्या निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है। जब भद्रा भू–लोक में (सम्मुख)** रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से,** दिन की **भद्रा सर्पिणी,** रात्रि की भद्रा **वृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। **ज्योतिनिर्बन्धानुसार–**

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपस्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम्॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं। (मुहूर्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन–हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम्॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व–दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण–पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, वायव्य (उत्तर–पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व–उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि–वार–नक्षत्र, दिशा–शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा **"एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।**
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम्॥।"–(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, वाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अतः उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	बृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना–बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **"आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि।
उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः
जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये।
जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवे, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्धमनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गंधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णय सिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकूलेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्ति विधाय गां दत्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

वालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है–

अब्देषु युग्मेषु च कन्याकानां स्वजन्म वर्षात् शुभदो विवाहः।
अयुग्म वर्षेषु शुभो नराणां विपर्यये दुःखगद प्रदःस्यात्॥ (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

कन्या वरण मुहूर्त्त–

उपरोक्त शुभ मासों, तिथियों में तथा कृतिका, तीनों पूर्वा, उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा अनुराधादि विवाहोक्त नक्षत्रों में सुपारी, नारियल, मौसमी फल, सुगन्धित द्रव्य, वस्त्र, आभूषण मिष्टान्न, फल, फूलों आदि के साथ वर परिवार के किसी श्रेष्ठ अग्रज अथवा वृद्धजन के कर कमलों के द्वारा कन्या का विधिवत् वरण करें।

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नोट–सभी मुहूर्त्तों में अधिक मास, पितृ पक्ष, रिक्ता तिथि (४, ९, १४), वैधृति आदि दुष्ट योगों एवं गुरु/शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥ व पूर्णिमा	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में तथा चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत और रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. आषाढ़ तक) ५वें या ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा–तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल, १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (मास तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल),१५ तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा–३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी आरम्भ करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२,।१५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव–रेव।
स्कूटर, कारादि गाड़ी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में। तथा द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में।	अश्वि, उत्तरा–३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा–३, पूर्वा–३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु. धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.)ष १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भाद्र., मार्ग., माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा (३), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (५,७,९,१५,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्टे।
नए घर में प्रवेश करना	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, कार्ति., मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, वार– चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आषाढ़, श्रावण, भाद्र. आश्वि, मार्ग, माघ और फागु.।	अश्वि, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मूल, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रवण, धनि., रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूल, धनि., रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु, शनि	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूल, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा–३, ज्ये., मूल, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, वायव्य (उ. पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त

मास–वैशाख, श्रावण, अश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार–सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र–अशिव. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे।

लग्न–शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें प्रहाभाव।

विशेष–आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यतः निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भर्ता कन्या विनाशकः।

—मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद-(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है-

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहार स्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा-

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता-

शनि भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥—फलित संग्रह अन्येऽपि-

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च सदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशो चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्-

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ —मुहूर्त्त पारिजात

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता। **"द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते"** —मुहूर्त्त चिंतामणि

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता-

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।
न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ —मुहूर्त्त दीपक

(५) बलान्वित गुरु वा शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता-

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।
वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुज दोषः॥ —मुहूर्त्त दीपक

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता-

"केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥" —मुहूर्त्त चिंतामणि

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता-

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ —मु. चिंतामणि

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। 'मुहूर्त्त दीपक' नामक ग्रन्थानुसार-

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक ("लग्ने व्यये पाताले-") के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे-विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिः निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा-

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।
सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ —मु. संग्रह दर्पण

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जैसे-चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव-ऋषि एवं पितरादि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त होता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वस्थ (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के अन्य पृष्ठों में दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा (८) नाड़ी -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग** ३६ होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार–४, ८, १२ राशियों का **ब्राह्मण**, १, ५, ९ का **क्षत्रिय**, २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार–यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार–सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। **समान वश्य होने पर २ गुण**, एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार–कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार–अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे-गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[नोट–योनि व महावैर योनि की तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण–वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री–ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार–वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा–

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद–वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा–

राशिनाथे विरूद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार–अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूला, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन–वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्या	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गुण दोष परिहार–

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग–मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। –पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। –मुहूर्त्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार–इसे राशिकूट भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार–(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य**, अथवा राशि स्वामी ग्रह समान होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा–

न वर्गवर्णौ न गणो: न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ –बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार–

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है–

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

–बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर–ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ –शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार–

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या द्वि-द्वादश ग्राह्य है।** –मुहूर्त्तमार्त्तण्ड

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे-वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु अपवाद रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया– **मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ –ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार–अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है–आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूषा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.षा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की आदि (**प्रथम**) नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य नाड़ी** हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य नाड़ी** हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। –बृहज्योतिषसार

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पाद्जान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नितान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्यओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ –मुहूर्त संग्रह दर्पण

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशचोरपि सौमनस्यम्॥

*नोट–ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा दूसरे एवं तीसरे पाद में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है।

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद-इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णमम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ –ज्यो० चिन्तामणि

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिण आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतर्पणं च॥

अर्थात् दुष्ट षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), नवपंचम में चांदी-कांसे का बर्तन, नाड़ी दोष में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-देष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा–

हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1,2,3	२२ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३ ॥ 3,8	३१ ॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३ ॥ 14567
	भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४ ॥ 1238	१८ 1358	२६ ॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१ ॥ 3	२३ ॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८ ॥ 8,9व	२६ 9,व	२१ ॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
	कृति 1 चरण	२७ ॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६ ॥ 1236	२० 1356	२० ॥ 1356	२१ 1356	२५ ॥ 3,6	२६ ॥ 3,6	२३ ॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५ ॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष	कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६ ॥ 3,6	१७ ॥ 2,3,6	१७ ॥ 2,3,6	१८ ॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३ ॥ 3,9
	रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३ ॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२ ॥ 3468	१० ॥ 3568	२४ ॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
	मृग 1-2	२३ ॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९ ॥ 1,2,8	२४ ॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९ ॥ 456व	१५ 3458	२४ ॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन	मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७ ॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१ ॥ 3,4	१९ ॥ 2,4,5	१२ 2358	१४ ॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८ ॥ 3,व	३१ ॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
	आर्द्रा 1 से 4	१९ ॥ 3,5,8	२७ ॥ 3,5	२१ ॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२० ॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९ ॥ 3,4व	२१ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७ ॥ 4,6
	पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३ ॥ 3,5,6	२० ॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१ ॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७ ॥ 3,6
कर्क	पुन. 4	२३ 1,3,8	२९ ॥ 1,3	२५ ॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९ ॥ 3,6	१६ ॥ 1246	२० ॥ 1234	१५ ॥ 1238	१८ 1358	१९ ॥ 1358	२१ 1356
	पुष्य 1 से 4	३० ॥ 1,3	२१ ॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११ ॥ 12358	१८ ॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५ ॥ 1238	२३ ॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२ ॥ 14568
	श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११ ॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५ ॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५ ॥ 1246	१८ ॥ 1236	२१ ॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह	मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६ ॥ 8,9,व	१७ ॥ 158व	९ ॥ 1568व	१७ ॥ 156व	२१ ॥ 146व	२२ ॥ 136व	२१ 1346व	१६ ॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६ ॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६ ॥ 1236	२१ ॥ 123व
	पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८ ॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३ ॥ 145व	१५ ॥ 1458	२० 148व	२८ ॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२ ॥ 2,3,4	१७ ॥ 2,3,8	१६ ॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७ ॥ 1268
	उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८ ॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१ ॥ 1,3,8	१७ ॥ 2,3,8	२५ ॥ 2,3	२० 2,3,6	२७ ॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६ ॥ 128व	१३ ॥ 1236
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२ ॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४ ॥ 3,9	३१ ॥ 1,3	२३ ॥ 1,3,8	२४ ॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२ ॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७ ॥ 8	२५ 3,4,6
	हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७ ॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२ ॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८ ॥ 236व	२२ ॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
	चित्रा 1,2	१३ 3567	४ ॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२ ॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५ ॥ 1,3,6	२१ ॥ 356व	१२ ॥ 3568व	२७ 35,व	२२ ॥ 2,3,व	८ ॥ 2368व	१४ ॥ 2346व	२४ ॥ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष अश्वि 1 से 4	मेष भर. 1 से 4	मेष कृति 1	वृष कृति 2,3,4	वृष रोह 1 से 4	वृष मृग 1,2	मिथुन मृग 3,4	मिथुन आर्द्रा 1 से 4	मिथुन पुर्न 1,2,3	कर्क पुर्न 4	कर्क पुष्य 1 से 4	कर्क श्ले 1 से 4	सिंह मघा 1 से 4	सिंह पू.फा. 1 से 4	सिंह उ.फा. 1	कन्या उ.फा. 2,3,4	कन्या हस्त 1 से 4	कन्या चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२॥ 3,4,6	१४ 3468	२८॥ 3,4	२४ 3,7	२०॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९॥ 3,6,9	२०॥ 3,5,6	११ 3568	२६॥ 3,5,व	२५॥ 3,5,व	११॥ 3568	१७॥ 456व	१७॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,8
	स्वा. 1 से 4	२७॥ 3,4	२९॥ 3	१७॥ 3,6,8	१३ 3678	१५॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५॥ 3,5व	२५॥ 3,5व	२६ 2,3	२७॥ 2,3	२१ 2,4,6
	विशा 1,2,3	२२॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२०॥ 3,4,8	१५॥ 3478	१०॥ 3678	१८॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१॥ 4,5,6	१८॥ 3,5,8	१७॥ 358,व	१९॥ 356व	१७॥ 2346	१७॥ 2346	१९ 2346	२७॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४॥ 1478	१९॥ 1,4,8	१४॥ 1368	२२॥ 1,3,6	१२॥ 1567	१३ 1567	१३॥ 1567	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	१५॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३॥ 136व	२१॥ 146व	१७॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५॥ 1378	२० 1367	२४॥ 1,3,6	२७॥ 1,3,4	२०॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२०॥ 1,5,7	२६॥ 9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११॥ 1358
	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८॥ 1367	२५ 1,3,7	२९॥ 1,3	२२॥ 1,3,6	२२॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५॥ 135678	१०॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९॥ 1,5,7	१३ 1567	१३॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७॥ 4678	१७॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८॥ 8,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 14567	१८॥ 1457	११ 14578	१८॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३॥ 37,व	१३ 3478	१७॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७॥ 8,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३॥ 13568
	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७॥ 1,3,5	२३॥ 37,व	२३॥ 3,7,व	८॥ 678व	८॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२८॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,4,5	२८॥ 4,5	१४॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७॥ 4,6,9
	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६॥ 5678	१८॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४॥ 4,9व	१९॥ 4,6,9
	धनि 1,2	२० 3456	११॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२०॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९॥ 4,5,7	५॥ 5678	१२॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१०॥ 4568	२६ 3,4,5	३०॥ 3,4	२७ 4,6	१९॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८॥ 3469	१३ 4567	४॥ 45678	१९॥ 357व	२५॥ 3,5,व	११ 568व	१८॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२॥ 3	२५॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६॥ 3,5,व	२०॥ 356व	१२॥ 568व	११॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१॥ 3,4	३१॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७॥ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	१३॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	१९॥ 5,6,व	२५॥ 4,5व	१६॥ 458व	१५॥ 4,7,8	१५॥ 3478	१७॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४॥ 1248	२२ 1234	१६॥ 1246	१९ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८॥ 1458	१९ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	१९ 4,6,9	१८ 1467	२३॥ 1347	१४॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८॥ 1456
	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७॥ 9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	१९॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

कन्या	वर/नक्षत्र → नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
मेष	अश्वि 1 से 4	२२॥ 1346	२६॥ 1,3,4	२२॥ 1346	१८॥ 3467	२५॥ 3,7	१४॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२०॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
मेष	भर 1 से 4	१३॥ 1368	२९ 1,3	२१॥ 1,3,6	१७॥ 3467	१७॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८॥ 8,9	२६ 4,9	२७॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	२७ 2,3
मेष	कृति 1 चरण	२७॥ 1,3,4	१५ 1368	१९॥ 1348	१५॥ 3478	१९॥ 3,6,7	२५॥ 3,7	२५ 3,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 6,8,9	१३॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९॥ 1356	१७॥ 2346	१९॥ 2,3,6	१२ 2368
वृष	कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४॥ 1378	२०॥ 3,4,8	२४॥ 3,6	३०॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१०॥ 4689	२४ 3,4,9	२९॥ 1,3,4	३१॥ 1,3	२३॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
वृष	रोह 1 से 4	१९॥ 1,6,7	१५॥ 1378	९॥ 1678	१५ 1368	२९॥ 3,4	२४ 3,6	१४॥ 3567	१९॥ 3,5,7	११॥ 4578	१६ 4,8,9	१७॥ 4,8,9	२०॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
वृष	मृग 1-2	१२ 1678	२५॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१॥ 3,5,8	२४॥ 3,6	१५ 3567	१०॥ 3578	१७॥ 3457	२२ 3,4,9	२५॥ 4,9	१३ 4689	१९॥ 1468	२७ 1,4,6	२९॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मिथुन	मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८॥ 3458	२५ 3,4,5	२०॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१॥ 6,9	२४ 3,9	२५॥ 3,5,व	१७॥ 3,5,8	२६॥ 3,5,व
मिथुन	आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२०॥ 4,6,9	१३ 4567	१७॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१८ 467व	१९॥ 4,6,7	१२॥ 689	१७॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६॥ 3,5व	२७ 3,5,व
मिथुन	पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१७॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७॥ 3,5,व
कर्क	पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८॥ 14678	२१ 147व	२१॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८॥ 1567	१०॥ 14578	१६॥ 4,8,9	२६॥ 9	२६ 3,9
कर्क	पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६॥ 1,3,5	२१॥ 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	१७॥ 1367	११॥ 1478	२१॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४॥ 145678	१४ 13567	१८॥ 1457	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७ 9
कर्क	श्ले. 1 से 4	२५॥ 1,3,5	१२ 1568	१७॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२०॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
सिंह	मघा 1 से 4	२४॥ 1,3,5	११॥ 13568	१६॥ 1358व	२२॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९॥ 6,9व	८॥ 689व	३॥ 15678	४॥ 15678	१८॥ 1,5,7	२४॥ 1,5,व	२५॥ 1,5,व	१८॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३॥ 6,7,8
सिंह	पू.फा. 1 से 4	१०॥ 1568	२५॥ 135व	१८॥ 156व	२४ 3,6व	२३॥ 3,8व	२५॥ 3,6व	२० 6,9व	१७॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८॥ 1,5,7	४॥ 15678	११ 1568	१९॥ 156व	२४॥ 135व	२५ 3,7	१७॥ 3,7,8	२६ 3,7
सिंह	उ.फा. 1	१७ 13456	२५॥ 1,3,5	१६॥ 13456	२२॥ 3,4,6	३१॥ 3,व	१७॥ 3,6,8	९॥ 3689	२५ 9,व	२५॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११॥ 1567	१७॥ 1356	११ 3568	१५॥ 358व	१६ 3478	२६॥ 3,7	२६ 3,7
कन्या	उ.फा. 2,3,4	१६॥ 1246	२५॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७॥ 3,5व	१३॥ 568व	१४ 3568	२९॥ 5	२९॥ 5	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६॥ 1367	१०॥ 3678	१४॥ 1378	१७॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७॥ 3,5,व
कन्या	हस्त 1 से 4	२० 1246	२६॥ 1,2,3	१८॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८॥ 34678	१३॥ 1378	१६॥ 3458	२६॥ 3,5व	२७॥ 3,5,व
कन्या	चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६॥ 1,2,3	२८॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६॥ 1467	१९॥ 3456	१० 34568	१९॥ 3456

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1 ,2 ,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

वर/नक्षत्र →		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
कन्या	नक्षत्र ↓	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३ ॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७ ॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३ ॥ 4,8,व	१८ ॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१ ॥ 2,3व	१६ ॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९ ॥ 3,7,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४ ॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७ ॥ 2,8व	१६ 246व	२१ ॥ 234व	२७ ॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७ ॥ 368व	३० ॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३ ॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६ ॥ 128व	२८ 8	२७ ॥ 4,6	३१ ॥ 3,4	२२ 1234	१७ ॥ 1362व	९ 12368	१२ ॥ 13568	१२ ॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९ ॥ 4,6,9	१८ ॥ 4,6,9	९ ॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६ ॥ 12568	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३ ॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४ ॥ 145व	२४ 4,9	१८ ॥ 8,9	२७ ॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९ ॥ 1234	१५ 126व	१९ ॥ 1234	३१ ॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४ ॥ 1248	१७ ॥ 1236	१७ ॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९ ॥ 3689	२१ ॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५ ॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६ ॥ 3,6	१५ ॥ 1236	१५ ॥ 1236	२० ॥ 1234	२८ ॥ 1,3,4	२१ ॥ 1,3,8	१४ ॥ 1468	१६ ॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५ ॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३ ॥ 1,2,व	५ ॥ 1268	१४ ॥ 1468	२३ ॥ 1,4,6	२८ ॥ 1,4	३० ॥ 4,व	२३ ॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९ ॥ 268व	२४ 2,3व	१८ ॥ 2,3,6	२६ ॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६ ॥ 128व	१५ 1248व	१५ ॥ 1236व	२३ ॥ 1,3,6	२३ ॥ 1,3,6	२९ ॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२ ॥ 1,3,8	१५ ॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७ ॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६ ॥ 4,6	१७ ॥ 126व	१७ ॥ 126व	२३ ॥ 1234	३० ॥ 3,4	३१ 3,4	२२ ॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२ ॥ 148व	१७ ॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७ ॥ 246व	२३ ॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१ ॥ 124व	२८ ॥ 3,4	२९ ॥ 3,4	२२ ॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४ ॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७ ॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७ ॥ 4,6	२८ 8	१८ ॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६ ॥ 3,6	१५ ॥ 4,6,8	२२ ॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८ ॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९ ॥ 3,4	१५ ॥ 3468	२४ ॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८ ॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४ ॥ 246व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९ ॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६ ॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२ ॥ 3,4,8	२४ ॥ 3,4,6	२४ ॥ 3,4,6	१८ ॥ 236व	१८ ॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९ ॥ 4,6,8	८ ॥ 2468व	१७ ॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२० ॥ 456व	२६ ॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९ ॥ 3,4	३० ॥ 3,4	२४ ॥ 234व	२३ ॥ 234व	२० ॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७ ॥ 2,8,व	२२ ॥ 2,4,व	२० ॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९ ॥ 1457	१३ ॥ 14567	१९ ॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५ ॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९ ॥ 1,3,4	२८ ॥ 1,3,4	२५ ॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३० ॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९ ॥ 1357	१२ ॥ 14567	१८ ॥ 4,6,9	१९ ॥ 8,9	२१ ॥ 6,9	२४ ॥ 136व	२२ ॥ 1,8व	३० 134व	२९ ॥ 1,3,4	२९ ॥ 1,3,4	१४ ॥ 1468	५ ॥ 12468	१६ ॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४ ॥ 145678	१० ॥ 4689	२७ ॥ 9	२२ ॥ 6,9	२७ 146व	२९ ॥ 1,3व	२१ ॥ 138व	२१ 1348	२१ ॥ 1348	२३ 1346	१४ ॥ 1246व	१६ ॥ 1236व	१८ ॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र—मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र—कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है—

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यांतंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र—सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र—मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽवग्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ-कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल—नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र—केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है—
भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८ ।४५ है। ४ ।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८ ।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८ ।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र—बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

अरिष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवारों के व्रत की विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में कोई अशुभ ग्रह अनिष्टकारक हो अथवा किसी विशेष कार्य सिद्धि में कोई अनिष्ट ग्रह बाधा एवं पीड़ा पहुंचा रहा हो, तो उससे सम्बन्धित वार में विधि अनुसार व्रत, पाठ-पूजा एवं ग्रह मंत्र के जप हवन दानादि करने से अरिष्ट ग्रह की शान्ति होने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से **''व्रत और त्यौहार''** एवं **सप्तवार कथा** मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मूल्य ३० रुपए। व्रत, जप, हवनादि अनुष्ठान करने से मानसिक व कायिक पापों का प्रायश्चित हो जाता है।

रविवार के व्रत की विधि—सर्व मनोकामना की पूर्ति विशेषकर शत्रु विजय, पुत्र प्राप्ति, नेत्र रोग, कुष्ठ (कोढ़) आदि चर्म रोगों के निवारण हेतु तथा आयु एवं सौभाग्य वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। इस व्रत को सूर्यषष्ठी (विशेषकर रविवासरी), रथ सप्तमी अथवा शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके प्रत्येक रविवार कम से कम बारह (१२) अथवा एक वर्ष पर्यन्त व्रत रखें। व्रत के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य के बीज मंत्र **''ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः''** मंत्र का कम से कम तीन माला करके सूर्य भगवान् का ध्यान करें। **आदित्याय विद्महे भास्कराय धीमहि तन्नो भानुः प्रचोदयात्॥** अथवा गायत्री मंत्र की दो माला जाप करें। तदनन्तर ताम्र बर्तन में शुद्ध जल (गंगा जल सहित), गंगाक्षत, लाल पुष्प या लाल चन्दन एवं कुशा डालकर सूर्य देव को इस मंत्र द्वारा अर्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें—**''एहि सूर्य सहस्त्रांशों तेजो राशे जगतपते। अनुकम्पय मां गृहाण अर्घ्य दिवाकर''** स्वयं भी लाल चन्दन या केशरादि से तिलक लगाए। उस दिन नमक-तेलादि तामसिक भोजन से परहेज रखें। उद्यापन-कालीन अंतिम रविवार को सूर्य के बीज मंत्र तथा सूर्य गायत्री मंत्र द्वारा हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को मिष्ठान सहित भोजन करवा कर यथाशक्ति गेहूं, गुड़, ताम्र बर्तन, नारियल, लाल वस्त्र, मिष्ठानादि का दक्षिणा सहित दान करें। **सूर्य शान्ति** हेतु मानक (माणिक्य) रत्न सुवर्ण की अंगूठी में धारण करना तथा लाल वस्त्र दान करना शुभ रहता है।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर **''ॐ नमः शिवाय''** आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, चावल, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगा, जल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान-दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमक रहित होना चाहिए। व्रत का उद्यापन भी उपर्युक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद वस्तुओं जैसे—चावल, श्वेत वस्त्र, बरफी, दूध-दही, क्षीर, चांदी, सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति होकर मनोरथ सिद्धि होती है। उद्यापन के दिन ब्राह्मणों तथा बच्चों को खीर, पूड़ी, मिष्ठान भोजन करवा कर यथाशक्ति दान करें।

चन्द्रमा की शान्ति हेतु चांदी की अंगूठी में चन्द्रकान्तमणि एवं मोती धारण करना, श्वेत वस्त्र दान करना, दूध, दही, बरफी, चावलों, बतासे आदि का दान करना कल्याणकारी होता है। व्रत के दिन इसके बीज मंत्र **''ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः''** की कम से कम तीन माला का जाप करना चाहिए।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्व प्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रु दमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ, ह्रदयमोचनादि के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथाशक्ति जीवन-पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शांत हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फूलों, ताम्र बर्तन तथा नारियल द्वारा पूजा एवं दान करना चाहिए साथ ही श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **''ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः''** बीज मंत्र की कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। मंगल की शुभता के लिए ताम्बे की अंगूठी में मूंगा धारण करना शुभ होता है। **मंगल देवता** का ध्यान निम्नलिखित मंत्र द्वारा करना चाहिए—

रक्त माल्य अम्बरधरः शक्ति शूल गदाधारः। चतुर्भुजः रक्तोमा वरदः स्याद धरासुतः॥

इसके अतिरिक्त श्री हनुमान चालीसा तथा श्री हनुमान उपासना करना भी कल्याणप्रद रहता है।

बुधवार के व्रत की विधि—इस व्रत का प्रारम्भ शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से करें। २१ व्रत रखें। बुधवार के व्रत से बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्रकालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार तक करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रणाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारण करके, बीजमंत्र **''ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः''** का पाठ कम से कम तीन माला जाप करनी चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित जैसे—मूंगी से बना हुआ हलवा, मीठी पंजीरी व मूंग के लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी सेवन करें। व्रत के अन्तिम बुधवार को मधुसर्पी, दधि तथा घृत के साथ बीज मंत्र का हवन करें। तदुपरांत सुपात्रव्यक्ति को मूंगी सहित भोजन, हरे फल, हरा-पीला वस्त्र दान करें। गौओं को हरा चारा भी डाल देवें।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए हरा वस्त्र धारणा करना, छोटी इलाइची, तुलसी तथा कांसे के बर्तन में भोजन करना तथा पन्ना रत्न धारण करना शुभ एवं कल्याणकारी रहता है।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा विद्या-बुद्धि, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र विवाह आदि सुखों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (ज्येष्ठ) वीरवार से प्रारम्भ करके तीन वर्ष अथवा १६ वीरवार तक करना चाहिए। व्रत प्रारम्भ के दिन प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करके पीले पुष्पों, चने की दाल, पीला यज्ञोपवीत, पीला चन्दन, बेसन की बरफी, हल्दी व पीले चावलों एवं केला आदि पीले फलों सहित भगवान् विष्णु तथा बृहस्पति (गुरू) की पूजा करनी चाहिए तथा गुरू के बीज मन्त्र की कम से कम तीन या पांच अथवा १६ माला करनी चाहिए। व्रती को बृहस्पति वार को शिर नहीं धोना चाहिए तथा एक समय ही नमक रहित भोजन करना चाहिए। व्रती को उस दिन भोग लगा कर किसी ब्राह्मण व बालक को चने की दाल, बेसन की बर्फी, बेसन का हलुवा, घी, लड्डु, पीले चावल, केलों आदि पीतल का बर्तन तथा पीले वस्त्र का दान दक्षिण सहित करके स्वयं भी ऐसा ही भोजन करना चाहिए। इस दिन केले के वृक्ष की पूजा का भी विधान लिखा है। मन-वचन और कर्म द्वारा शुद्ध चित्त होकर गुरु गायत्री मंत्र अथवा गुरु के बीज मंत्र **''ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः''** का यथाशक्ति पाठ करे। उद्यापन में पाठ के दशमांश भाग का समधि,

मधु-सर्पी, घृत, दधि व हरिद्रा सहित सामग्री द्वारा हवन करना कल्याणकारी रहता है। बृहस्पति की शुभता के लिए सोने की अंगूठी में पुखराज पहिनना भी शुभ रहता है।

शुक्रवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों में वृद्धिकारक होता है। यह व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से शुरु किया जाता है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत, चंदन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बाँट दें। ग्रह शान्ति के लिए

''ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'' की ३ माला या दस माला का जाप करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक का प्रयोग न करें। यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दे। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो या उद्यापन उपरान्त हवनादि के पश्चात्, ब्राह्मणों एवं बालकों (बटुकों) को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी फलादि सफेद पदार्थों का दान करें। यह व्रत शुक्र शान्ति का सरल उपचार है। यह व्रत २१ या ३१ अथवा यथाशक्ति मात्रा में करें—मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी, ऐसा शिवपुराण में लिखा है।

शनिवार व्रत कथा की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन-धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास शनिवार के दिन लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करा कर धूप-गंध, नीले पुष्प (विशेषकर काला गुलाब) फल, तिल, लौंग, सरसों का तेल, चावल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। १९ शनिवार करने के उपरान्त उद्यापन के समय पिप्लेश्वर महादेव का पूजन करें। पीपल के वृक्ष के चारों ओर कच्चे सूत को लपेट कर धूप दीप नैवेद्य से शनिदेव की पूजा करे। ७ बार धागे को लपेटने के साथ ही साथ शनिदेव की जय बोलते रहे और गाधि, कौशिक, पिप्लाद तीनों महामुनियों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। इस दिन शनि स्तोत्र का पाठ, जूते, जुराब नीले रंग का वस्त्र काला छाता, काले माश, काले चने, चाकू, नारियल और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को देवें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें और एक समय नमक रहित भोजन करना चाहिए। घोड़े की नाल (लोहे का) छल्ला पहनना चाहिए। हनुमान जी को भी तेल चढ़ाना चाहिए और संकटमोचन का पाठ करना चाहिए। शनिदेव की शान्ति के लिए महामृत्युञ्जय का जाप भी कल्याणकारी रहेगा।

राहु की शान्ति के लिए भी शनि का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करे और दान में नारियल, भूरा काबल, जौं आदि दे और पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। सतनाजा दान करना चाहिए। राहु के बीजमंत्र **''ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥''** का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु-केतु के बीज मंत्र **''ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः''** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहुर्त्त पर आरंभ न करे। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुभ	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंगल राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे.२०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ. छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी..मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥ज२	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. ञ.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नव पंचम—कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष—लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें गत पृष्ठ।

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व

(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है-

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं-

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞ **(१) गर्भाधान संस्कार**-यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां-१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार-सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र-रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न-लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल-रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ **(२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त**-यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार-रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल व बुध वारों** में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां-१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र-रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ **(३) सीमन्त संस्कार**-यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**-रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां-२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र-मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूला, श्रवण:

लग्न-१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त-यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां-२, ७, १२

शुभ वार-चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र-रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ **(४) जातकर्म संस्कार**-कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार ११वें अथवा १२वें दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां-१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.) शुभ वार = चं., बु,, गु., शु.

नक्षत्र-अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ **मेघा-जनन संस्कार**-जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः **"ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।"** तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ **स्तनपान का मुहूर्त्त**-जन्मान्तर ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि-१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र-रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार-चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न-२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ **षष्ठी पूजन**-जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,**

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ प्रसूता स्नान मुहूर्त्त–सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार–रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र–आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ नामकरण संस्कार–यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥"

गृहारम्भ–प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ नामकरण–सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ–१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्विन, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न–१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞ झूला आरोहन मुहूर्त्त–बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्विन, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ निष्क्रमण मुहूर्त्त–जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्विन, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न–२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुनः गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞ भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त–जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां–१ (कृ) 2,3,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न–२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ जीविका परीक्षा–'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त–जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र–अश्विन, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तशलाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष–अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

☞ **कर्ण वेध का मुहूर्त्त**—बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास—चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां—४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार—चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव, विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न—२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष—बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

☞ **कन्या की नासिका छेदन**—हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं—२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यतः लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्तः एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रातः उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाज़ादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

☞ मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में –वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ बर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

☞ **क्षौर (हज़ामत) कर्म मुहूर्त्त**—मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हज़ामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुनः ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष—यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

—वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार—

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रातःकाल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**—चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला—सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अतः इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है–(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने से माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार–अपरान्ह ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार–दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार–प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार–प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार–सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

नींव खोदने के लिए विशेष ज्ञातव्य

(i) सूर्य वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में करें।

(ii) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या तुला) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) से करें।

(iii) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) से करें।

(iv) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गु. या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) से करें।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वीं को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंट
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- (विशेष) –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पांव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ प्रसूति लगनादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

वसिष्ठ जी के अनुसार—

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मक्षाँशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है—अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

—त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति—

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'**पंचांगदिवाकर**' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 11 अप्रै., 2014 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/04 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/09) से 5 मिनट पूर्व (पहले) है। अतः घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 5 मिनट के घटी पल 13 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2014 ई. को जालन्धर का पंचांग—11 अप्रैल, 2014 ई. को दिल्ली का पंचांग

	घटी पल		घटी पल
तिथि	– ९/४० (समाप्ति काल)	**तिथि**	– ९/५३ (समाप्ति काल)
नक्षत्र	– ३०/१५	**नक्षत्र**	– ३०/२८
योग	– ४१/४०	**योग**	– ४१/५३

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई। **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७१ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2014 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ५० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/२०'/१७" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २७° अंश के नीचे कोष्ठक में हमें २/२१ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/५० में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/११ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुनः लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/१२ सिंह (४) राशि के सामने और २ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/११ से केवल १ पल अधिक है। अब अनुपातिक विधि द्वारा १ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो १ पल के पीछे ५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/५० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, १ अंश, ५५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०१°/५५'/००")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक '**ज्योतिष तत्त्व**' का अध्ययन करें।

उत्तर पलभा १५ ।० ।।५० **लग्न सारणी लंदन (अक्षांश ५१ ।३०)** **चरखण्ड १५१ ।१२० ।५१**

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९° **पलभा ४ ।७ ।५५**

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२१	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५ ।५ ।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७°

पलभा ६ ।६ ।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४	५५
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८	५०
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६	२८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९° उत्तर पलभा (६।३९।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३००) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२१	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°) पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

लग्न सारिणी (अक्षांश–२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनू, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	१९	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी (अक्षांश–३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी) लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
मेष	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
१	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
वृष	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
२	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
मिथुन	४५	५५	०६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४३	५७	८
३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९
कर्क	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
४	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३
सिंह	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	५५
५	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
कन्या	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	१०	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३
६	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३
तुला	३३	४२	५२	१	१०	१९	२९	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
७	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
वृश्चिक	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३४	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५
८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४
धनु	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८
९	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९
मकर	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२
१०	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
कुम्भ	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५
११	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८
मीन	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**–जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**–बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**–रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालवली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**–शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**–मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**–शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।–लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४। १०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव** में **षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ** प्राप्त हो जाती हैं।

–पं० पन्ना लाल ज्यो.

षट्वर्ग सारणी चक्रम्

	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	रा. षट्	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	नं	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
कं.	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

		०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६		७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
		७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.		७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७		८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
		२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.		८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८		९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
		९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
		१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.		९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
		४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
		१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.		१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०		११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
		११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं.		११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
११		६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.		१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टैं. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आंधाप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरूणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंध्रा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kurnool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा(आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति(आंध्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 12	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अफज़लगढ़	29 23	78 41	–15 16
अल्लापुर	27 52	79 19	–12 44
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
ईसानगर	27 54	81 14	–05 04
उझानी	28 00	79 02	–13 52
उतरौला	27 19	82 25	–00 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कटारनियां घाट	28 22	81 10	–05 20
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कमसिन	25 32	80 56	–06 16
करहल	27 02	78 58	–14 08
कर्वी	25 12	80 54	–06 24
कसिया	26 44	83 56	+05 44
कानपुर	26 28	80 22	–08 32
कांठ	29 01	78 38	–15 28
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काम्पिल	27 36	79 16	–12 56
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कुञ्छा	28 06	84 21	+07 24
कुण्डा	25 43	81 30	–04 00
कुराओं	25 00	82 05	–01 40
कुरौली	27 25	79 00	–14 00
कुलपहाड़	25 20	79 40	–11 20
कूँच	26 00	79 08	–13 28

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैप्टनगंज	26 56	83 43	+04 52
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
कौपागंज	26 00	83 34	+04 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20
गुरसराए	25 38	79 12	–13 12
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गुलावठी	28 37	77 48	–18 48
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चकला	25 02	83 12	+ 02 48
चकिया	26 26	85 02	+10 08
चन्दौसी	28 28	78 48	−14 48
चरखाड़ी	25 25	79 46	−10 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	−06 32
चिरगांव	25 36	78 50	−14 40
चुनार	25 10	82 56	+01 44
चोपां	24 30	83 00	+02 00
छतरपुर	24 56	79 38	−11 28
छपरा	24 39	76 48	−22 48
छाटा	27 45	77 30	−20 00
छितौनी	27 10	83 58	+05 52
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44
जपिया	24 34	84 00	+06 00
जलालाबाद	27 44	79 40	−11 20
जलेसर	27 29	78 20	−16 36
जसरा	25 17	81 48	−02 48
जसराना	27 15	78 42	−15 12
जसवन्तनगर	26 52	78 56	−14 16
जहांगीराबाद	28 26	78 06	−17 36
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52
जाईस	26 16	81 30	−04 00
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	−18 32
जालौन	26 10	79 20	−12 40
जिगनी	25 46	79 26	−12 16
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40
झाँसी	25 27	78 37	−15 32
टप्पल	28 04	77 36	−19 36
टाण्डा	28 56	78 59	−14 04
टूण्डला	27 10	78 15	−17 00
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	−14 40
डिबाई	28 12	78 16	−16 56

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डेरापुर	26 28	79 48	−10 48
ताजपुर	29 08	78 30	−16 00
दानापुर	25 40	85 02	+10 08
दालमऊ	26 02	81 02	−05 52
दूधी	24 13	83 15	+03 00
देवगांव	25 24	83 01	+02 04
देवबन्द	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	26 32	83 45	+05 00
देहरी	24 52	84 11	+06 44
धामपुर	29 19	78 31	−15 56
नगीना	29 27	78 27	−16 12
नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40
नरैनी	25 11	80 29	−08 04
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00
निहतौर	29 20	78 23	−16 28
नोएडा	28 35	77 20	−20 40
पट्टी	25 55	82 12	−01 12
पदरौना	26 55	83 59	+05 56
पयागपुर	27 25	81 48	02 48
पवायां	28 04	80 06	−09 36
पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24
पिहानी	27 38	80 12	−09 12
पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48
पुखरायां	26 14	79 51	−10 36
पुरवा	26 28	80 50	−06 40
पूरनपुर	28 31	80 09	−09 24
प्रतापगढ़	25 50	81 59	− 2 04
फतेहपुर	25 56	80 48	−06 48
फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32
फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48
फर्रूखाबाद	27 24	79 34	−11 44
फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	−16 20
फैज़ाबाद	26 47	82 08	−01 28
बक्सर	25 35	83 59	+05 56
बगहा	27 06	84 05	+06 20
बदायूँ	28 02	79 07	−13 32
बनारस(वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00
बबीना	25 15	78 28	−16 08
बहराइच	27 35	81 36	−03 36
बहेड़ी	28 47	79 30	−12 00
बरवासागर	25 23	78 44	−15 04
बलिया	25 45	84 10	+06 40
बरेली	28 21	79 25	−12 20
बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16
बस्ती	26 48	82 43	+00 52
बागपत	28 57	77 13	−21 08
बाड़ी	26 39	77 36	−19 36
बान्दा	25 29	80 20	−08 40
बाराबंकी	26 55	81 12	−05 12
बांसी	27 11	82 56	+01 44
बाह	26 53	78 36	−15 36
बिजनौर	29 22	78 08	−17 28
बिलग्राम	27 11	80 02	−09 52
बिलसी	28 08	78 55	−14 20
बिलारी	28 38	78 48	−14 48
बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56
बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48
बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36
बुढ़ाना	29 17	77 28	−20 08
भदोही	25 25	82 34	+00 16

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
भरथाना	26 45	79 14	−13 04
भाण्डेर	25 44	78 45	−15 00
भोनगांव	27 15	79 11	−13 16
भोवाली	29 23	79 31	−11 56
मन्दावर	29 30	78 08	−17 28
मऊ	25 17	81 23	−04 28
मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	−02 20
मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28
मखदूमनगर	26 28	82 46	+01 04
मछलीशहर	25 41	82 25	−00 20
मथुरा	27 30	77 41	−19 16
मवाना	29 06	77 55	−18 20
मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08
महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32
महरौली	24 35	78 43	−15 08
महाराजगंज	26 07	84 29	+07 56
महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16
महोवा	25 17	79 52	−10 32
मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	+00 20
मिसरिख	27 27	80 31	−07 56
मुंगराबादशाहपुर	25 40	82 11	−00 16
मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16
मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
मुरादाबाद	28 51	78 49	−14 44
मुरादनगर(गा.)	28 47	77 30	−20 00
मुस्किरा	25 40	79 48	−10 48
मुहम्मदी	27 57	80 13	−09 08
मेरठ	28 59	77 42	−19 12
मेहनगर	25 53	83 07	+02 28
मेहन्दाबाल	26 59	83 07	+02 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
मैलानी	28 17	80 21	−08 36
रसरा	25 51	83 51	+05 24
राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	−05 04
रूदौली	26 45	81 45	−03 00
लखनऊ	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56
ललितपुर	24 41	78 25	−16 20
शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20
शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36
सम्भल	28 35	78 33	−15 48
सरधना	29 09	77 37	−19 32
सहसवां	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	−19 48
सहानीकलां	28 41	77 25	−20 20
सहानीखुर्द	28 42	77 25	−20 20
सिंगरामऊ	25 57	82 23	−00 28
सिधौली	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12
सीतापुर	27 34	80 41	−07 16
सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44
सेमरिया	24 16	79 54	−10 24
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
सोनवां	27 40	81 45	−03 00
हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24
हरदोई	27 25	80 07	−09 32
हरैया	26 47	82 36	+00 24
हलिया	24 48	82 20	−00 40
हसनपुर	28 43	78 17	−16 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52
हाथरस	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	28 43	77 47	−18 52
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
उत्तराखण्ड			
अल्मोड़ा	29 37	79 40	−11 20
आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
आदिब्रदी	30 10	79 12	−13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
उखीमठ	30 31	79 07	−13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
कपकोट	29 58	79 54	−10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
काण्डी	29 56	78 25	−16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
केनूर	30 03	79 01	−13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
खानपुर	29 36	78 07	−17 32
खाती	30 08	79 54	−10 54
गरजिया	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
गिरगांव	30 02	80 07	−09 32
घरमघर	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	−18 36
चम्बा	30 18	78 25	−16 20

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमौली	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
चुरानी	29 47	78 55	−14 20
जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डांगचौरा	30 17	78 19	−15 32
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
डोईवाला	30 12	78 06	−17 36
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
धनोल्टी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिन्सवार	30 38	78 42	−15 12
पिथौरगढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मंगलौर	29 48	77 52	−18 32
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
मोलनेऊँ	30 22	78 36	−15 36
रालम	30 16	80 12	−09 12

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लालढाग	29 50	78 19	−16 44
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56
कर्नाटक			
बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्ग	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04
केरला			
कोचीन	09 58	76 14	−25 04
त्रिवन्तपुरम्	12 40	76 55	−22 20
त्रिवेन्द्रम	08 29	76 57	−22 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गुजरात			
अंकलेश्वर	21 36	73 00	—38 00
अंजार	23 08	70 01	—49 56
अमरापुर	21 45	70 02	—49 52
अमरेली	21 37	71 14	—45 04
अमोद	21 59	72 54	—38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	—39 20
आनन्द	22 34	72 56	—38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	—45 28
ईदर	23 50	73 00	—38 00
उपलेटा	21 44	70 17	—48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	—38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	—48 20
कटाना	22 18	72 49	—38 44
कलोल (महेसाणा)	23 15	72 29	—40 04
कांडला	23 03	70 11	—49 16
कुटियाना	21 39	71 04	—45 44
कोरल	21 53	73 10	—37 20
खम्भात	22 20	72 38	—39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	—51 24
खावड़ा	23 51	69 43	—51 08
गोधरा	22 45	73 38	—35 28
जखाऊ	23 13	68 43	—55 08
जसदान	22 02	71 12	—45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	—44 32
जामनगर	22 28	70 04	—49 44
जारोद	22 26	73 20	—36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	—48 08
जेतपुर	21 44	70 37	—47 32
जोड़िया	22 42	70 18	—48 48

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
झिंझूवाड़ा	23 30	71 38	—43 28
डीसा	24 15	72 10	—41 20
ढोला	20 51	71 48	—42 48
तनखला	21 57	72 50	—38 40
तालाला (जूना.)	21 02	70 32	—47 48
तालाजा	21 21	72 03	—41 48
थराड़	24 24	71 38	—43 28
दभोई	22 11	73 26	—36 16
दासदा	23 19	71 50	—42 40
देहज	21 42	72 35	—39 40
देवदार	24 07	71 50	—42 40
दोहाद	22 47	74 18	—32 48
द्वारिका	22 14	68 58	—54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	—37 16
धारी	21 20	71 01	—45 56
धुले	20 54	74 47	—30 52
धोराजी	21 44	70 27	—48 12
नडियाद	22 41	72 55	—38 20
नवसारी	20 51	72 55	—38 20
नारा	23 39	69 10	—53 20
नालिया	23 18	68 50	—54 40
पड़ाना	22 21	69 52	—50 16
पाटन	23 50	72 07	—41 16
पाटरी	23 08	71 10	—45 20
पालनपुर	24 10	72 26	—40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	—51 36
बगासरा	20 58	70 56	—46 16
बचाऊ	23 20	70 18	—48 48
बजाना	23 04	71 45	—43 00

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बड़ोदा	22 18	73 12	—37 12
बरूच	21 38	72 56	—38 16
बुलसार	20 38	72 56	—38 16
बोताड़	22 10	71 40	—43 20
भंगोर	22 02	69 55	—50 20
भरूच	21 40	72 58	—38 08
भावनगर	21 46	72 09	—41 24
भुज	23 16	69 40	—51 20
महेसाणा	23 37	72 28	—40 08
महुआ	21 05	71 48	—42 48
माधवपुर	21 18	70 01	—49 56
मालसार	22 00	73 22	—36 32
रतनपुर	21 44	73 16	—36 56
राजकोट	22 18	70 47	—46 52
रापार	23 34	70 38	—47 28
लखपत	23 49	68 47	—54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	—35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	—37 12
वलसाड़	20 40	72 55	—38 20
वादनगर	23 47	72 38	—39 28
वीजापुर	23 34	72 45	—39 00
सन्तालपुर	23 45	71 10	—45 20
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	—43 16
सूरत	21 10	72 50	—38 40
सिहोर	21 42	71 58	—42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	—48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	—48 00
हडोल	23 55	73 13	—37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	—38 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गोवा			
पंजिम	15 29	73 50	—34 40
मडगांव	15 18	73 57	—34 12
जम्मू-कश्मीर			
अनन्तनाग	33 43	75 12	—29 12
अखनूर	32 54	74 45	—31 00
अवन्तीपूरा	33 56	75 03	—29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	—27 48
उड़ी	34 04	74 02	—33 52
ऊधमपुर	32 56	75 08	—29 28
कठुआ	32 22	75 31	—27 56
कटरा	33 01	74 58	—30 08
कारगिल	34 30	76 13	—25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	—26 48
कुलगाम	33 42	75 02	—29 52
केरन	34 40	73 59	—34 04
कोटली	33 30	73 53	—34 12
खयालू	35 10	76 20	—24 40
गिलगित	35 55	74 22	—32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	—32 20
गुरयास	34 38	74 56	—30 16
चिनेनी	33 01	75 20	—28 40
चिलास	35 27	74 06	—33 36
चुशूल	33 35	78 39	—15 24
छम्ब	32 51	74 23	—32 28
जम्मू	32 43	74 54	—30 24
जंगला	33 40	77 00	—22 00
जास्कार	33 20	77 00	—22 00
द्रास	34 22	75 50	—26 40

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नवांशहर	32 30	74 46	−30 56
नागिर	36 17	74 45	−31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	−32 52
पहलगांव	34 01	75 24	−28 24
परिपंजाल	33 36	74 22	−22 32
पुंछ	33 51	74 08	−33 28
बनिहाल	33 32	75 19	−28 44
बटोटी	33 06	75 19	−28 44
बटोत	33 06	75 19	−28 44
बड़गाम	34 00	74 44	−31 04
बसौली	32 30	75 49	−26 24
बारामूला	34 10	74 20	−32 40
मनावर	32 50	74 25	−32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	−28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	−35 56
रामनगर	32 50	75 22	−28 32
राजौरी	33 23	74 18	−32 48
रामवन	33 14	75 15	−29 00
रियासी	33 04	74 53	−30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	−30 16
शेरकिला	36 05	74 04	−33 44
श्रीनगर	34 06	74 51	−30 36
सोपूर	34 19	74 30	−32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	−28 40
सोन्दर	33 29	75 57	−26 12
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
झारखण्ड			
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
[illegible]	23 23	85 23	+11 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
तामिलनाडू			
चेन्नई	13 05	80 17	−08 52
रामेश्वरम्	09 17	79 22	−12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	−17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	−16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर-नगर-हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	−38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	−38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	−46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
शाहदरा	28 40	77 19	−20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	−21 08
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 23	+23 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	−30 20
अजनाला	31 51	74 48	−30 48
अटारी	31 37	74 36	−31 36
अमलोह	30 37	76 15	−25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	−26 36
अबोहर	30 08	74 12	−33 12
अकालगढ़	29 50	75 54	−26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	−25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	−27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	−23 52
आदमपुर	31 25	75 43	−27 08
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	−27 16
कपूरथला	31 23	75 25	−28 20
करतारपुर	31 27	75 30	−28 00
कादियां	31 49	75 23	−28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	−23 44
कुराली	30 50	76 35	−23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	−30 32
खन्ना	30 42	76 13	−25 08
खरड़	30 45	76 39	−23 24
खेमकरण	31 08	74 35	−31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	−27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	−25 28
गुरदासपुर	32 03	75 27	−28 12
गुरुहरसहाय	30 40	74 32	−31 42
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	−29 28
गोराया	31 06	75 47	−26 52
गोविन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	−24 28
घनौर	30 21	76 37	−23 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमकौर साहि.	30 55	76 24	−24 24
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद)	30 37	74 15	−33 00
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	32 05	75 38	−27 38
तलवंडी साबो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 30	−28 00
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पटियाला	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 57	−30 12
फगवाड़ा	31 13	75 47	−26 52
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 59	−26 04
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली)	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 43	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 34	−23 44
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 57	75 37	−27 32
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिचेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
महे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 13	+10 52
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अंजद	22 02	75 03	−29 48
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह(म. प्र.)	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
इन्द्रगढ़	25 56	78 35	−15 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56
उमरी	26 33	79 00	−14 00
उमरिया	23 32	80 50	−06 40

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया (बा.गढ़)	23 48	80 56	−06 16
ओरछा	25 21	78 39	−15 24
औबेदुल्लागंज	22 59	77 36	−19 36
कटंगी	21 44	79 48	−10 48
कटनी	23 51	80 24	−08 24
कुकशी	22 12	74 45	−31 00
कोठी	24 45	80 45	−07 00
कोरवई	24 08	78 03	−17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	−26 00
खजुराहो	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा	21 50	76 20	−24 40
खरगोन	21 49	75 36	−27 36
खेतिया	21 40	74 35	−31 40
खुरई	24 03	78 19	−16 44
गादरवाड़ा	22 55	78 47	−14 52
गुना	24 39	77 19	−20 44
गोहद	26 26	78 27	−16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	−17 20
चन्दला	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी	24 43	78 08	−17 28
चाचोरा	24 10	76 59	−22 04
चापरा	22 44	76 20	−24 40
छतरपुर	24 55	79 36	−11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	−14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	−12 04
जबलपुर	23 10	79 57	−10 12
जऔरा	28 38	75 08	−29 28
जावद	24 38	74 52	−30 32
झाबुआ	22 46	74 36	−31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	−14 28
तिरोदी	21 41	79 42	−11 12
दतिया	25 40	78 28	−16 08
दमोह	23 50	79 27	−12 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
दिन्दोरी	22 57	81 05	–05 40
धार	22 36	75 18	–28 48
नयागाँव	25 54	77 10	–21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	–13 12
नीमच	24 28	74 52	–30 32
नैनपुर	22 26	80 07	–09 32
पंचमढ़ी	22 30	78 26	–16 16
पठारिया	23 54	79 12	–13 12
पन्ना	24 43	80 12	–09 12
पाटन	23 18	79 42	–11 12
पांधुरना	21 36	78 31	–15 56
पिचोर	25 11	78 11	–17 16
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	–16 24
पिपारिया	22 45	78 21	–16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	–30 52
बन्दा	24 03	78 57	–14 12
बरनगर	23 03	75 22	–28 32
बरवाह	22 16	76 03	–25 48
बालाघाट	21 48	80 11	–09 16
बासोदा	23 51	77 56	–18 16
बान्धवगढ़	23 53	79 05	–13 40
बिच्छिया	22 27	80 42	–07 12
बिजावर	24 38	79 30	–12 00
बीना (इटावा)	24 11	78 11	–17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	–25 04
बैतूल	21 55	77 54	–18 24
भिण्ड	26 34	78 48	–14 48
भोपाल	23 16	77 24	–20 24
मऊगंज	24 41	81 53	–02 28
मकराई	22 04	77 06	–21 36
मण्डला	22 36	80 23	–08 28
मनावर	22 14	75 05	–29 40

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
मन्दसौर	24 04	75 04	–29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	–11 04
महेश्वर	22 11	75 35	–27 40
मानपुर	23 46	81 08	–05 28
मुरैना	26 30	78 09	–17 24
मुलताई	21 46	78 15	–17 00
मैहर	24 16	80 45	–07 00
रतलाम	23 19	75 04	–29 44
राजगढ़	23 56	76 58	–22 08
राजपुर	25 23	81 09	–05 24
रामनगर	22 13	80 47	–06 52
रामपुरा	24 28	75 26	–28 16
रायसेन	23 20	77 48	–18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	–16 32
रीवा	24 32	81 18	–04 48
रेहली	23 38	79 05	–13 40
लखनादोन	22 36	79 36	–11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	–25 20
लामटा	22 08	80 07	–09 32
विदिशा	23 32	77 49	–18 44
वैधन	24 04	82 20	–00 40
शहडोल	23 20	81 21	–04 36
शाजापुर	23 26	76 16	–24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	–07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	–19 24
श्योपुर	25 40	76 42	–23 12
सतना	24 35	80 50	–06 40
सनावद	22 11	76 04	–25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	–20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	–30 04
सागर	23 50	78 43	–15 08
सांची	23 29	77 44	–19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	–24 08

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
सिरोंज	24 06	77 42	–19 12
सिहोरा	23 29	80 07	–09 32
सिहोर	23 12	77 05	–21 40
सीधी	24 25	81 53	–02 28
सेओनी	22 05	79 32	–11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	–20 08
सेंधवा	21 41	75 06	–29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	–17 12
हट्टा	24 07	79 36	–11 36
हरदा	22 20	77 06	–21 36
होशंगाबाद	22 45	77 43	–19 08
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	–02 08
कवर्धा	22 00	81 15	–05 00
कांकेर	20 17	81 29	–04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	–06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	–06 48
कोईसारी	23 57	81 45	–03 00
कोंगूर	19 53	81 27	–04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	–03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	–01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	–04 36
दुर्ग	21 11	81 17	–04 52
धमतरी	20 41	81 34	–03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	–06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	–02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	–04 20

३६गढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
परताबपुर	23 29	83 13	+02 52
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	–01 20
बस्तर	19 12	81 57	–02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	–01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	–03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	–02 16
भिलई	21 13	81 26	–04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	–01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	–05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	–03 28
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
महाराष्ट्र			
अकलकोट	17 32	76 13	–25 08
अकोला (मुम्ब.)	20 44	77 00	–22 00
अकोट	21 11	77 04	–21 44
अचलपुर	21 16	77 31	–19 56
अमरावती	20 56	77 45	–19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	–24 28
अरमोरी	20 28	79 59	–10 04
अरवी	20 59	78 14	–17 04
अलीपुर	20 34	78 41	–15 16
अलीबाग	18 39	72 54	–38 24
अहमदनगर	19 05	74 44	–31 04
इगतपुरी	19 42	73 33	–35 48
उमरेड़	20 51	79 20	–12 40
उल्हासनगर	19 13	73 07	–37 32
एलोरा	20 01	75 10	–29 20

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	−25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	−28 40
कतोल	21 16	78 35	−15 40
कराड़	17 17	74 12	−33 12
कल्याण	19 15	73 09	−37 24
कामथी	21 14	79 12	−13 12
किरकी	18 34	73 52	−34 32
कुरदुवाड़ी	18 05	75 26	−28 16
कोपारगांव	19 53	74 29	−32 04
कोल्हापुर	16 42	74 13	−33 08
खमगांव	20 41	76 34	−23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	−36 28
गंगापुर	19 41	75 01	−29 56
गोंडिया(मुम्बई)	21 27	80 12	−09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	−38 24
चन्द्रपुर	19 57	79 18	−12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	−29 56
चिखली	20 21	76 15	−25 00
चिपलून	17 32	73 31	−35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	−28 48
जलगांव	21 01	75 34	−27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	−23 52
जालना	19 50	75 53	−26 28
जुन्नार	19 12	73 53	−34 28
तालोडा	21 34	74 13	−33 08
तासगांव	17 02	74 36	−31 36
तुमसार	21 23	79 44	−11 04
थाने	19 12	72 58	−38 08
दरवाहा	20 19	77 46	−18 56
दिगरस	20 06	77 43	−19 08
दिगलूर	18 33	77 36	−19 36
देयूलगावराजा	20 01	76 02	−25 52
देवलाली	19 57	73 50	−34 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
धुलिया	20 54	74 47	−30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	−31 24
नागपुर	21 09	79 06	−13 36
नान्देड़	19 09	77 20	−20 40
नासिक	19 59	73 48	−34 48
पंढरपुर	17 40	75 20	−28 40
पनवेल	18 59	73 06	−37 36
पाचोरा	20 40	75 21	−28 36
पाटन(महेसाणा)	23 50	72 07	−41 32
पातुर	20 27	76 56	−22 16
पुणे	18 32	73 52	−34 44
पुसाद	19 54	77 35	−19 40
पुलगांव	20 44	78 20	−16 40
बडनेरा	20 52	77 44	−19 04
बारसी	18 14	75 42	−27 12
बारामती	18 09	74 35	−21 40
बालापुर	20 40	76 46	−22 56
बासमत	19 19	77 10	−21 20
बीड़	18 59	75 46	−26 56
भण्डारा	21 10	79 39	−11 24
भिवंडी	19 18	73 04	−37 44
भुसावल	21 03	75 46	−26 56
भोकरदान	20 16	75 46	−26 56
मंगलवेढ़ा	17 31	75 28	−28 08
मनमाड़	20 15	74 27	−32 12
मनवात	19 18	76 30	−24 00
मल्कापुर(बुल्डाना)	20 53	76 12	−25 12
महाद	18 05	73 25	−36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	−35 20
मालवान	16 04	73 28	−36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	−31 52
मिराज	16 50	74 38	−31 28
मुम्बई	18 58	72 50	−38 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	−37 48
मुरुद	18 19	72 58	−38 08
मुर्तजापुर	20 44	77 23	−20 28
मुल	20 04	79 40	−11 20
मेहेकर	20 09	76 34	−23 44
यवतमाल	20 24	78 08	−17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	−36 48
रहिमतपुर	17 36	74 12	−33 12
रामटेक	21 24	79 20	−12 40
रावेर	21 15	76 02	−25 52
वर्धा	20 45	78 37	−15 32
वसाई	19 21	72 48	−38 48
वाशिम	20 06	77 09	−21 24
वाशी	19 13	73 10	−37 20
वाई	17 56	73 54	−34 24
वैजापुर	19 55	74 44	−31 12
शहादा	21 28	74 18	−32 48
शिरपुर	21 21	74 53	−30 28
शेगांव	20 47	76 41	−23 16
शोलापुर	17 41	75 55	−26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	−37 56
सकोली	21 05	79 59	−10 04
संगोला	17 26	75 12	−29 12
सतना	20 35	74 12	−33 12
सतारा	17 41	73 59	−34 04
सांगली	16 52	74 34	−31 44
सावन्तवाड़ी	15 54	73 49	−34 44
सिन्नार	19 51	74 00	−34 00
हरनाई	17 48	73 06	−37 36
हिंगनघाट	20 34	78 52	−14 32
हिंगोली	19 43	77 09	−21 24
मिज़ोरम			
ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मेघालय			
शिलांग	25 34	91 56	+37 44
राजस्थान			
अजमेर	26 27	74 42	−31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	−37 36
अलवर	27 34	76 38	−23 28
असोप	26 48	73 44	−35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	−25 30
अमेट	25 20	73 59	−34 04
आबू	24 40	72 45	−39 00
आमेर	26 59	75 52	−26 32
उदयपुर	24 35	73 41	−35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	−34 56
करौली	26 30	77 01	−21 56
कांकरोली	25 02	73 54	−34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	−30 32
केकड़ी	25 55	75 10	−29 20
कोटा	25 10	75 52	−26 32
खण्डेला	27 37	75 32	−27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	−35 44
घोटारू	27 18	70 04	−49 44
चात्सू	26 36	75 59	−26 04
चितौड़गढ़	24 54	74 42	−31 12
चूरू	28 19	75 01	−29 56
चोमू	27 08	75 47	−26 52
चोटां	25 28	71 06	−45 36
छाबरा	24 40	76 54	−22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	−31 36
जयपुर	26 55	75 52	−26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	−40 00
जालौर	25 22	72 38	−39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	−46 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जोधपुर	26 18	73 04	−37 44
जोधासर	28 07	73 50	−34 40
झालावाड़	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	−28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	−28 04
टोंक	26 11	75 50	−26 40
डीडवाना	27 17	74 25	−32 20
डूँगरपुर	23 50	73 43	−35 08
तिजारा	27 55	76 50	−22 40
थानागाजी	27 25	76 19	−24 44
देओरा	26 30	70 42	−47 12
देचू	26 47	72 20	−40 40
देओरा	26 30	70 42	−47 12
दौसा	26 51	76 21	−24 36
धौलपुर	26 42	77 53	−18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	−30 56
नागौर	27 11	73 40	−35 20
नाचना	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	−34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	−26 48
नोखा	27 35	73 29	−36 04
नौहर	29 11	74 46	−30 56
पचपदरा	25 55	72 21	−40 36
परबतसर	26 53	74 47	−30 52
पल्लू	28 56	74 13	−33 08
पाली	25 46	73 25	−36 20
पिलानी	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर	26 30	74 34	−31 44
पोखरन	26 56	71 55	−42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	−30 00
फलौदी	27 09	72 22	−40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	−28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	−32 08
बयाना	26 55	77 17	−20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	−23 44
बाप	27 24	72 22	−40 32
बाराँ	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा	25 50	72 14	−41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	−35 12
बीकानेर	28 01	73 22	−36 32
बून्दी	25 27	75 40	−27 20
भरतपुर	27 05	77 30	−20 00
भादरा	29 15	75 20	−28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल	25 01	72 19	−40 44
मकराना	27 04	74 43	−31 08
महाजन	28 49	73 56	−34 16
मांगरोल	25 21	76 30	−24 00
मावली	24 48	73 58	−34 08
मुकन्दबाड़ा	24 49	76 01	−25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	−49 00
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	−34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	−44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	−31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	−41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	−36 12
रीगस	27 21	75 34	−27 44
रूपनगर	26 47	74 54	−30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	−29 44
लाठी	27 03	71 30	−44 00

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
शाहगढ़	27 08	69 58	−50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	−27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	−45 12
समदड़ी	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	−24 00
सांगानेर	26 49	75 52	−26 32
सांचोर	24 41	71 50	−42 40
साम्भर	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	−28 24
सिरोही	24 54	72 55	−38 20
सिवाना	25 37	72 27	−40 12
सिरोही	24 53	72 54	−38 24
सीकर	27 36	75 09	−29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	−32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	−34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	−48 00
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालावाड़)	24 41	76 32	−23 52
सिक्किम			
गंगटोक	27 22	88 36	+24 24
हरियाणा			
अम्बाला	30 21	76 52	−22 32
अलीपुर	29 10	75 52	−26 36
अगरोहा	29 20	75 38	−27 88

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
करनाल	29 42	77 02	−21 52
कलानौर	28 52	76 23	−24 28
कालका	30 49	76 57	−22 12
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	−22 48
केसरी	30 15	76 53	−26 28
कैथल	29 48	76 26	−24 16
खतौली	30 37	76 58	−22 08
गुड़गांव	28 29	77 04	−21 44
गोहाना	29 09	76 41	−23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	−22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	−24 56
जगाधरी	30 10	77 16	−20 56
जाखल	29 49	75 49	−26 44
जीन्द	29 19	76 21	−24 36
झज्जर	28 38	76 39	−23 24
टोहाना	29 43	75 53	−26 28
थानेसर	29 58	76 56	−22 16
दादरी	28 33	77 32	−19 52
नरवाणा	29 36	76 08	−25 28
नारनौल	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	−21 24
नाहर	28 23	76 23	−24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	−22 24
पंचकूला	30 45	76 53	−22 28
पटौदी	28 19	76 48	−22 48
पलवर	28 10	77 19	−20 44
पानीपत	29 23	77 01	−21 56
पिंजौर	30 49	76 55	−22 20
पिपली	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा	29 56	76 36	−23 36
फतेहाबाद	29 31	75 30	−28 00
फरीदाबाद	28 25	77 22	−20 32
बल्लभगढ़	28 21	77 19	−20 44

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बहादुरगढ़	28 42	76 55	−22 20
बरवाला	29 23	75 55	−26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	−28 04
भादसों	29 56	76 56	−22 16
भिवानी	28 47	76 08	−25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	−22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	−22 32
महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	−25 24
मोहाना	29 04	76 50	−22 40
यमुनानगर	30 08	77 16	−20 56
रादौर	30 02	77 06	−21 36
रिवाड़ी	28 12	76 40	−23 20
रैना	29 28	74 54	−30 24
रोडी	29 44	75 15	−29 00
रोहतक	28 54	76 38	−23 28
लाडवा	29 59	77 05	−21 40
शाहाबाद	30 10	76 55	−22 20
सिरसा	29 32	75 06	−29 56
सिवानी	28 55	75 37	−27 32
सोनीपत	28 59	77 01	−21 56
हसनपुर	27 59	77 29	−20 04
हांसी	29 06	76 00	−26 00
हिसार	29 10	75 46	−26 56
हिमाचल-प्रदेश			
अम्ब	31 43	76 06	−25 36
अर्की	31 09	76 59	−22 04
आनी	31 28	77 20	−20 40
आनी	31 28	77 20	−20 40
आलमपुर	31 54	76 30	−24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	−27 16
ऊना	31 32	76 18	−24 48
करसोग	31 23	77 14	−21 04

हिमाचल-प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कसौली	30 55	76 57	−22 12
कथला	31 59	76 47	−22 52
कल्पा	31 34	78 16	−16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	−21 28
काला अम्ब	30 29	77 13	−21 08
काँगड़ा	**32 05**	**76 18**	**−24 48**
किन्नौर	31 32	78 20	−16 40
कुफरी	31 07	77 12	−21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	−21 48
कुल्लू	31 58	77 10	−21 20
कुमारसेन	31 18	77 37	−19 32
कुनिहार	30 58	77 10	−21 20
केलांग	32 37	77 05	−21 40
कोटखाई	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	−20 04
कोटला	32 17	76 02	−25 52
खजियार	32 31	76 03	−25 40
गर्ली (परागपुर	31 48	76 18	−24 48
गगरेट	31 41	76 04	−25 44
गोहर	31 32	77 02	−21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	−23 12
चम्बा	**32 34**	**76 08**	**−25 28**
चच्योट	31 36	77 04	−21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	−24 32
चायल	31 03	77 14	−21 04
चिन्तपूरणी	31 47	76 04	−25 44
जस्सूर	32 17	75 55	−26 20
जतोग	31 06	77 07	−21 32
जोगिन्द्रनगर	31 58	76 45	−23 00
ज्वाली	32 06	76 01	−25 56
ज्वालामुखी	31 53	76 20	−24 40
ठयोग	31 08	77 33	−19 48
डमटाल	32 13	75 41	−27 16
डगशाई	30 53	77 06	−21 36

हिमाचल-प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डल्हौज़ी	32 31	76 00	−26 00
ढलियारा	31 52	76 11	−25 16
तारादेवी	31 04	77 10	−21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	−21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	−23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	−21 24
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	−25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	−26 08
धनेटा	31 38	76 29	−24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	−24 48
धर्मपुर	30 54	77 04	−21 44
धौलाकुआं	30 30	77 29	−20 04
नगर	32 07	77 10	−21 20
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	−24 32
नगरोटा	32 07	76 23	−24 28
नादौन	31 47	76 22	−24 32
नाहन	30 33	77 21	−20 36
नालागढ़	30 57	76 22	−24 32
नारकण्डा	31 15	77 28	−20 08
निरमण्ड	31 28	77 34	−19 44
नूरपुर	32 18	75 56	−26 16
नैनादेवी	31 19	76 31	−23 56
पच्छाद	31 47	77 08	−21 28
पण्डोह	31 41	77 07	−21 32
पपरोला	32 04	76 34	−23 44
परवाणू	30 52	77 05	−21 40
पाओंटा साहिब	30 28	77 38	−19 28
पालमपुर	32 06	76 33	−23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	−24 08
बसौली	31 34	76 23	−24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	−24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	−21 00
बंजार	31 40	77 20	−20 40
बनीखेत	32 32	75 58	−26 08
बकलोह	32 27	75 59	−26 04

हिमाचल-प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिलासपुर	31 19	76 45	−23 00
बैजनाथ	32 03	76 36	−23 36
भरवाईं	31 47	76 07	−25 36
भरमौर	32 27	76 32	−23 52
भाखड़ा	31 20	76 30	−24 00
भुन्तर	31 54	77 09	−21 24
मण्डी	31 43	76 58	−22 08
मनाली	32 17	77 10	−21 20
मनीकरण	32 01	77 20	−20 40
मशोबरा	31 07	77 14	−21 04
मंगवाल	32 03	76 05	−25 40
महासू	31 05	77 13	−21 08
राजगढ़	30 52	77 22	−20 32
रायसन	32 05	77 07	−21 32
रोहड़ू	31 12	77 44	−19 04
लाहौल स्पीति	31 28	77 39	−19 24
शाहपुर	32 14	76 12	−25 12
शिमला	**31 06**	**77 10**	**−21 20**
शेरपुर	32 34	75 59	−26 04
सपाटू	30 59	76 59	−22 04
सरकाघाट	31 43	76 22	−24 32
सन्धोल	31 59	76 45	−22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	−24 40
सिरमौर	30 45	77 30	−20 00
सुन्दरनगर	31 33	76 54	−22 24
सोलन	30 55	77 09	−21 24
हमीरपुर	31 42	76 30	−24 00
हड़सर	32 21	76 33	−23 48
हरिपुर	32 39	76 11	−25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	−20 08
हाटकोटी	31 09	77 44	−19 04
अन्य प्रदेश			
चण्डीगढ़	30 44	76 53	−22 28

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंगलैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंग्लैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। ज्ञातव्य रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। जैसे– **एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है। पं. विवेक शर्मा

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं.सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.	नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं.सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
ASBURY Park (N.J.)(E.T.)*	U.S.A.	40 13 उ.	74 01 प.	+3 56	75 00 प.	+10 30	कन्धार	Afghanistan	31 33 उ.	65 30 पू.	–08 00	67 30 पू.	+01 00
अर्थीस (Athens)*	Greece	37 54 उ.	23 52 पू.	–24 32	30 00 पू.	+03 30	कैण्डी (Kandy)	Sri Lanka	07 18 उ.	80 38 पू.	–07 28	82 30 पू.	+00 00
आकलैण्ड*	Newzealand	36 52 द.	174 42 पू.	–21 12	180 00 पू.	–06 30	कोलम्बो	Sri Lanka	06 56 उ.	79 51 पू.	–10 56	82 30 पू.	00 00
ओटावा (E.T.)*	Canada	45 26 उ.	75 42 प.	–02 48	75 00 प.	+10 30	कोपनहेगन*	Denmark	55 40 उ.	12 30 पू.	–10 00	15 00 पू.	+04 30
अबु-धाबी	U.A.E.	24 58 उ.	54 10 पू.	–22 20	60 00 पू.	+01 30	कैलीफोर्निया*	U.S.A.	35 58 उ.	118 40 पू.	+05 20	120 00 प.	+13 30
आस्टिन (Texa) (Austin)*	U.S.A.	30 16 उ.	97 45 प.	–31 00	90 00 प.	+11 30	कोलम्बस (E.T.)*	U.S.A.	32 28 उ.	84 59 प.	–39 56	75 00 प.	+10 30
ऐबीलेन (Abilen)*	U.S.A.	32 27 उ.	99 44 प.	–38 56	90 00 प.	+11 30	कोलम्बिया (C.T.)*	U.S.A.	38 57 उ.	92 20 प.	–09 20	90 00 प.	+11 30
ऐबटसफोर्ड (Abotsford)*	U.S.A.	49 10 उ.	122 30 प.	–10 00	120 00 प.	+13 30	कालगिरी (Calgary)*	Canada	51 03 उ.	114 03 प.	–36 12	105 00 प.	+12 30
ऐमस्टर्डम* (Netherland	U.S.A.	52 22 उ.	04 53 पू.	–40 28	15 00 पू.	+04 30	ग्रीनविच*	England	51 29 उ.	00 00	00 00	00 00	+05 30
ओक्सफोर्ड (C.T.)*	U.S.A.	34 22 उ.	89 32 प.	+01 52	90 00 प.	+11 30	जनेवा (Geneva)*	Switzerland	46 12 उ.	06 09 पू.	–35 24	15 00 पू.	+04 30
ऐडनबर्ग (Adenberg)	England	55 52 उ.	3 12 प.	–12 48	00 00	+05 30	जकार्ता	Indonesia	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	105 00 पू.	–01 30
एडमंटन (Edmonton)*	Canada	53 33 उ.	113 30 प.	–34 00	105 00 प.	+12 30	जाफना	Sri Lanka	09 40 उ.	80 00 पू.	–10 00	82 30 पू.	00 00
ओक्सफोर्ड (Oxford)*	England	51 46 उ.	1 15 प.	–5 00	00 00	+05 30	जेरूसलाम	Israel	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	30 00 पू.	+03 30
ईस्लामाबाद*	Pakistan	33 40 उ.	73 04 पू.	–07 44	75 00 पू.	+00 30	टोरंटो (Toronto)*	Canada	43 39 उ.	79 23 प.	–17 32	75 00 प.	+10 30
इस्तबूल (Istanbul)*	Turkey	41 00 उ.	29 00 पू.	–04 00	30 00 पू.	+03 30	टोक्यिो (Tokyo)	Japan	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	–03 30
काठमण्डू	Nepal	27 42 उ.	85 19 पू.	–03 44	86 15 पू.	–00 15	टैरेस (Terrace)*	Canada	54 17 उ.	128 57 प.	–35 48	120 00 प.	+13 30
कुआलालमपुर	Malaysia	03 02 उ.	101 40 पू.	–73 20	120 00 पू.	–02 30	डोनकास्टर (Doncaster)*	England	53 27 उ.	01 02 प.	–04 08	00 00	+05 30
कुवैत	Kuwait	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30	डेट्रोट (Detroit Michi)*	U.S.A.	42 20 उ.	83 03 प.	–32 12	75 00 प.	+10 30
कराची	Pakistan	24 52 उ.	67 03 पू.	–31 48	75 00 पू.	+00 30	डबलिन (Dublin)*	Ireland	53 21 उ.	06 15 प.	–25 00	00 00 प.	+05 30
काबुल	Afghanistan	34 32 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00							

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
डर्बी (Derby)*	England	52 58 उ.	01 25 प.	-05 40	00 00 प.	+05 30
दालेस (Dales Texas)*	U.S.A.	29 56 उ.	97 34 प.	-20 16	90 00 प.	+11 30
दारे-सलाम	Tanzania	06 50 द.	39 17 प.	-22 52	45 00 पू.	+02 30
दुबई (Dubai)	U.A.E.	25 19 उ.	55 18 पू.	-18 48	60 00 पू.	+01 30
न्यूयार्क (New York)*	U.S.A.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
नौटिंघम(Nottingham)*	England	52 51 उ.	01 18 प.	-05 12	00 10	+05 30
नैरोबी	Kenya	01 18 द.	36 52 पू.	-32 32	45 00 पू.	+02 30
न्यू कैसल (New Castle)*	England	52 27 उ.	09 04 प.	-36 16	00 00	+05 30
पैरिस (Paris)*	France	48 50 उ.	02 20 पू.	-50 40	15 00 पू.	+04 30
पर्थ* (Perth)	Australia	31 57 द.	115 52 पू.	-16 32	120 00 पू.	-02 30
पेशावर	Pakistan	34 01 उ.	71 33 पू.	-13 48	75 00 पू.	+00 30
प्लाईमाउथ(Plymouth)*	England	50 25 उ.	04 05 प.	-16 20	00 00	+05 30
प्रिंस जार्ज(Prince George)*	Canada	53 55 उ.	122 46 प.	-11 04	120 00 प.	+13 30
प्रिंस रूपर्ट(Prince Rupert)*	Canada	54 19 उ.	130 19 प.	-41 06	120 00 प.	+13 30
पोर्ट लुईस(Port Louis)*	Mauritius	20 10 द.	57 30 पू.	-10 00	60 00 पू.	+01 30
फ्लोरिडा (Florida City)	U.S.A.	25 27 उ.	80 29 प.	-21 56	75 00 प.	+10 30
बगदाद	Iraq	33 18 उ.	44 30 पू.	-2 00	45 00 पू.	+02 30
बहावलपुर	Pakistan	30 00 उ.	73 16 पू.	-06 56	75 00 पू.	+00 30
बैंकांक	Thailand	13 43 उ.	100 31 पु.	-17 56	105 00 पू.	-01 30
बीजिंग	China	39 55 उ.	116 25 पू.	-14 20	120 00 पू.	-02 30
बर्लिन*	Germany	52 32 उ.	13 25 पू.	-06 20	15 00 पू.	+04 30
बर्न*	Switzerland	46 55 उ.	07 30 पू.	-30 00	15 00 पू.	+04 30
बरमिंघम (Birmingham)*	England	52 30 उ.	01 50 प.	-07 20	00 00	+05 30
ब्रेडफोर्ड (Bradford)*	England	53 46 उ.	01 40 प.	-6 40	00 00	+05 30
ब्रैम्पटन (Brampton)*	Canada	43 41 उ.	79 48 प.	-19 12	75 00 प.	+10 30
बेकर्जफील्ड (Bakersfield)*	Cal. U.S.A.	35 23 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 पू.	+13 30
ब्रिसटल (Bristol)*	England	51 27 उ.	02 35 प.	-10 20	00 00	+05 30
बॉन (Bonn)*	Germany	50 44 उ.	07 04 पू.	-31 44	15 00 पू.	+04 30
बोस्टन (Boston)*	U.S.A.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Frederick (Delaware Maryland)*	U.S.A.	39 38 उ.	78 31 प.	-14 04	75 00 प.	+10 30
ब्रिसबेन*	Australia	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	-04 30
मस्कट	(Oman)	23 37 उ.	58 35 पू.	-5 40	60 00 पू.	+01 30
मानचैस्टर*	England	53 28 उ.	02 12 प.	-8 48	00 00	+05 30

नगर	देश	अक्षांश उ.=North द.=South अं.क.	रेखांश पू.=East प..=West अं.क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन अं.क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
मिलवाकी सिटी (Milwaukee)*	U.S.A.	42 53 उ.	88 03 प.	+07 58	90 00 प.	+11 30
मौंट्रियाल (Montreal)*	Canada(E.T.)	45 31 उ.	73 33 प.	+05 48	75 00 प.	+10 30
मिसीसागा(Mississauga)*	Canada(E.T.)	43 33 उ.	79 35 प.	-18 20	75 00 प.	+10 30
मैक्सिको सिटी*	Mexico	19 26 उ.	99 10 प.	-36 40	90 00 प.	+11 30
मैलबार्न*	Australia	37 50 उ.	144 59 पू.	-20 04	150 00 पू.	-04 30
मनीला (Manila)*	Philippines	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	-02 30
मुल्तान	Pakistan	30 11 उ.	71 29 पू.	-14 04	75 00 पू.	+00 30
रियाध	Soudi Arabia	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	45 00 पू.	+02 30
रावलपिंडी	Pakistan	33 36 उ.	73 04 पू.	-07 44	75 00 पू.	+00 30
*रोम (Rome)	Italy	41 55 उ.	12 27 पू.	-10 12	15 00 पू.	+04 30
लाहौर (Pakistan)	Pakistan	31 15 उ.	74 18 पू.	-2 48	75 00 पू.	+00 30
लीड्स (Leeds)*	England	53 50 उ.	01 35 प.	-06 20	00 00	+05 30
लिवरपूल (Liverpool)*	England	53 24 उ.	02 58 प.	-11 52	00 00	+05 30
लंदन*	England	51 32 उ.	00 05 प.	-00 20	00 00	+05 30
लिसबन (Lisbon)*	England	38 43 उ.	09 10 प.	-36 40	00 00	+05 30
लास एजलंस*	U.S.A.	34 03 उ.	118 17 प.	+06 52	120 00 प.	+13 30
वोल्वरहैम्पटन (Wolvehampton)*	England	52 36 उ.	02 05 प.	-08 20	00 00	+05 30
वैनकोवर*	Canada(P.T.)	49 17 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
विक्टोरिया*	Canada(P.T.)	48 25 उ.	123 21 प.	-13 24	120 00 प.	+13 30
वाशिंगटन*	U.S.A.	38 55 उ.	77 04 प.	-08 16	75 00 प.	+10 30
वैलिंगटन (Wellington)*	New Zealand	41 16 द.	174 47 पू.	-20 52	180 00 पू.	-06 30
शिकांगो (C.T.)*	U.S.A.	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30
सेन फ्रांसिसको(P.T.)*	U.S.A.(P.T.)	37 48 उ.	122 25 प.	-09 42	120 00 प.	+13 30
सान्ता रोसा(Santa Rosa)*	U.S.A.(P.T.)	38 30 उ.	123 05 प.	-12 20	120 00 प.	+13 30
साउथ-हैम्पटन*	England	50 54 उ.	01 24 प.	-05 36	00 00	+05 30
सिंगापुर	Singapore	01 17 उ.	103 54 पू.	-64 24	120 00 पू.	-02 30
सिडनी*	Australia	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	-04 30
हाउसटन (Texas)*	U.S.A.	29 45 उ.	95 22 प.	-21 28	90 00 प.	+11 30
हैम्लटन (Hamilton)*	Canada	43 15 उ.	79 50 प.	-19 20	75 00 प.	+10 30
Yuba City (California)*	U.S.A.	39 08 उ.	121 08 प.	-04 32	120 00 प.	+13 30
Winnipeg (Manitoba)*	Canada	49 54 उ.	97 08 प.	-28 32	90 00 प.	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer or Day Saving Time) प्रचलित है।

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (−) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (−) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (−) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको २ फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर −२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (−२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे-इंग्लैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, भारत के अधिकांश नगर के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं। —शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या − करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 „	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 „	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 „	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 „	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 „	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 „	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 „	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 „	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 „	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 „	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 „	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 „	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 „	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 „	6 23	18 05	6 37	17 49	6 ·45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 „	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18.10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख जुलाई	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.	सू. उ. घं. मिं.	सू. अ. घं. मिं.
19जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्तू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	17 23	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण–वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 2/3 मिनट घटाने तथा अस्त में 2/3 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय–सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार–1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्टू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	– ० ४०
भुन्तर	– ३ ०४
बैजनाथ	– ० ५२

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	+ ० ५६

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	– १ ०४
किन्नौर	– ५ २८

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	– १ २४
बंजार	– १ २८
अनी	– ० ५.
निरमण्ड	– २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	– १ ००
कुमारसेन	– १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटरवाई	– १ ३२
रोहड़ू	– २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ ३ ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेंत	+ ० ४८
डलहौज़ी	– ० ४०
लाहौल स्पीति	– ३ २४
त्रिलोकनाथ	–३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	– ० १२

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

अप्रैल	वैशाख तिथि	वैशाख (अप्रैल-मई)											
		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	२	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	३	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	४	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	५	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	६	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	७	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	८	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	९	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३१	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	१०	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	११	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१२	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१३	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१४	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१५	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१६	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१७	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१८	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	१९	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२०	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२१	६ १२	८ ०६	१० २१	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२२	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२३	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२४	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२५	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२६	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२७	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२८	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	२९	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३०	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	ज्ये	५ ३३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

मई	ज्येष्ठ तिथि	ज्येष्ठ (मई-जून)											
		वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ २४	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २७	१ ०८	२ ३३	३ ५६	५ २९
15	२	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	३	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	४	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	५	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	६	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	७	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	८	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	९	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	१०	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	११	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१६	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१७	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१८	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१९	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	२०	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२१	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२२	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२३	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२४	५ ५७	८ ११	१० ३५	१२ ५४	१५ ११	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२५	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२६	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२७	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२८	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२९	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	३०	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३१	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	३२	५ २५	७ ४०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ ०१	१९ २१	२१ २६	२३ ०७	० ३१	१ ५४	३ २७
15	आ.	५ २२	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

जून	आषाढ़	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
15	१	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	२	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	३	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	४	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	५	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	६	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	७	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	८	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	९	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	१०	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	११	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१२	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१३	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१४	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१५	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१६	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१७	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१८	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	१९	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२०	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२१	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२२	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२३	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२४	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२५	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२६	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२७	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२८	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	२९	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३०	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३१	५ ३८	८ ०१	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

जुलाई	श्रावण	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४१	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	३२	५ ५५	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९
17	भाद्र	५ ५१	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त	भाद्रपद	भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)											
		सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	२	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	३	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	४	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	५	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	६	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	७	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	८	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	९	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	१०	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २१	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	११	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१२	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१३	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१४	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१५	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१६	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१७	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१८	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	१९	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२०	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२१	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२२	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२३	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२४	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२५	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२६	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२७	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२८	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	२९	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३०	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	आ.	६ १२	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

सितंबर	आश्विन प्र.	आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर)											
		कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४८	६ ०९
17	२	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	३	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	४	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	५	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	६	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	७	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	८	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	९	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	१०	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	११	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	१२	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१३	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१४	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१५	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू	१६	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१७	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १५	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१८	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१९	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	२०	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२१	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२२	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२३	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२४	६ ५९	९ २२	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२५	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२६	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२७	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२८	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२९	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	३०	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३१	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर)

अक्टू.	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	३०	६ ५६	९ १६	११ २०	१३ ०१	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०
16	मा.	६ ५२	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर)

नवम्बर	मार्गशीर्ष	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	२	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	३	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	४	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	५	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	६	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	७	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	८	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	९	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	१०	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	११	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१२	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१३	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१४	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१५	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं	१६	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१७	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१८	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	१९	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२०	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२१	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२२	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२३	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२४	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२५	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२६	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२७	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२८	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	२९	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	३०	७ १८	९ २२	११ ०३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५५
16	पौ.	७ १४	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

पौष (दिसम्बर-जनवरी)

दिसंबर	पौष प्रवि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	२	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	३	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	४	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	५	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	६	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	७	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	८	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	९	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	१०	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	११	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१२	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१३	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१४	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१५	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१६	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१७	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१८	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	१९	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२०	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२१	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२२	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२३	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२४	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२५	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२६	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२७	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२८	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	२९	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

माघ (जनवरी-फरवरी)

जनवरी	माघ प्रवि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	३०	७ १०	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ३	२० २२	२२ ४०	१ १	३ २१	५ २५
13	फा.	७ ७	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फाल्गुन (फरवरी–मार्च)

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	२	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	३	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	४	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	५	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	६	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	७	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	८	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	९	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	१०	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	११	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१२	७ ४८	९ १०	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	० १४	२ ३४	४ ३८	६ १९
25	१३	७ ४४	९ ७	१० ४०	१२ ३४	१४ ४८	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	० १०	२ ३०	४ ३४	६ १५
26	१४	७ ४०	९ ३	१० ३६	१२ ३०	१४ ४४	१७ ७	१९ २६	२१ ४४	० ६	२ २६	४ ३०	६ ११
27	१५	७ ३६	८ ५९	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ३	१९ २२	२१ ४०	० २	२ २२	४ २६	६ ७
28	१६	७ ३२	८ ५५	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ४
मार्च	१७	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१८	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	१९	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२०	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२१	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२२	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२३	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२४	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२५	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२६	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२७	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२८	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ १२	१ ३१	३ ३५	५ १७
13	२९	६ ४१	८ ४	९ ३७	११ ३१	१३ ४५	१६ ९	१८ २८	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ३२	५ १३
14	चैत्र	६ ३७	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

चैत्र (मार्च–अप्रैल)

मार्च	चैत्र प्रति	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६ १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	६ ६	७ ३९	९ ३३	११ ४७	१४ १०	१६ २९	१८ ४७	२१ ९	२३ २९	१ ३४	३ १४	४ ३९
13	३१	६ २	७ ३५	९ २९	११ ४३	१४ ६	१६ २५	१८ ४३	२१ ५	२३ २५	१ ३०	३ ११	४ ३६
14	वै.	५ ५८	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	6 59	17 20	7 20	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 05	17 43	6 20	16 59	6 48	17 15	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	6 59	21	20	41	32	48	17	25	05	44	21	17 00	48	16	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	7 00	21	21	43	33	49	17	25	06	44	21	00	48	17	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	00	22	21	43	33	50	18	26	06	45	21	01	48	17	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	00	23	21	43	33	51	18	27	06	45	22	02	49	18	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	00	24	21	44	33	51	18	28	06	46	22	02	49	19	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	00	24	22	45	33	52	18	28	07	47	22	03	49	20	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	00	25	22	46	33	52	18	29	07	47	22	04	49	20	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	01	26	22	46	33	53	18	30	07	48	22	04	49	21	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	01	26	22	47	33	54	18	31	07	49	22	05	49	22	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	01	27	22	48	33	55	18	32	07	49	23	06	49	23	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	01	28	22	49	33	56	18	32	07	50	23	06	49	23	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	01	29	22	50	33	57	18	33	07	51	23	07	49	24	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	01	30	21	50	33	58	18	34	07	51	23	08	49	25	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	01	30	21	51	33	17 59	18	35	07	52	23	09	49	26	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	01	31	21	52	33	18 00	18	36	07	53	23	09	49	26	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	01	32	21	53	33	01	18	37	07	53	23	10	49	27	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	00	33	21	53	32	01	17	38	07	54	23	11	49	28	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	00	34	21	54	32	02	17	39	07	55	23	11	49	29	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	00	34	21	55	32	02	17	40	07	56	23	12	49	29	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	00	35	20	56	32	03	17	41	06	56	23	13	49	30	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	7 00	36	21	56	32	04	16	42	06	57	22	13	49	31	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	6 59	37	20	57	31	05	16	43	06	58	22	14	48	32	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	59	37	20	58	31	06	16	43	06	59	22	15	48	32	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	59	38	19	17 59	31	08	15	44	06	17 59	22	16	48	33	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	59	39	19	18 00	30	08	15	44	05	18 00	22	16	47	34	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	59	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	58	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	57	41	18	02	30	10	13	47	05	02	21	18	46	36	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	57	42	17	03	29	11	13	48	05	02	21	19	46	37	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	6 57	17 43	7 17	18 03	7 29	18 12	7 12	17 49	7 04	18 03	6 20	17 20	6 46	17 38	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	6 56	17 44	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 50	7 04	18 04	6 20	17 20	6 45	17 38	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	56	44	16	05	28	14	11	50	03	05	20	21	45	39	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	55	45	15	06	27	15	11	51	03	06	19	22	44	40	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	55	46	15	06	26	15	10	52	03	06	19	22	44	41	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	54	47	14	07	26	16	09	53	02	07	18	23	43	41	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	53	47	14	08	25	17	09	54	02	08	18	23	43	42	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	53	48	14	08	25	18	08	55	01	08	17	24	42	43	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	6 52	17 49	7 13	18 09	7 24	18 18	7 07	17 56	7 00	18 09	6 17	17 25	6 41	17 43	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	17 50	7 12	18 10	7 23	18 19	7 07	17 56	7 00	18 09	6 16	17 25	6 41	17 44	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	51	50	11	11	23	19	06	57	6 59	10	16	26	40	45	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	50	51	10	12	22	20	05	58	59	11	15	26	39	45	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	50	52	10	12	21	21	04	17 59	58	11	15	27	39	46	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	49	53	09	13	20	22	03	18 00	58	12	14	28	38	47	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	48	53	08	14	19	23	03	00	57	12	14	28	37	47	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	47	54	07	14	18	23	02	01	57	13	13	29	37	48	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	47	55	06	15	18	24	01	02	56	13	12	29	36	49	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	46	55	06	16	17	25	7 00	03	55	14	12	30	35	49	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	45	56	05	16	16	26	6 59	04	55	14	11	30	34	50	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	44	57	04	17	15	26	58	04	54	15	10	31	34	50	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	43	57	03	18	14	27	57	05	53	15	10	31	33	51	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	42	58	02	18	13	28	56	06	52	16	09	32	32	52	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	42	59	01	19	12	28	55	07	51	17	08	32	31	52	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	41	17 59	7 00	20	11	29	54	07	50	17	07	33	30	53	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	40	18 00	6 59	20	10	29	53	08	50	17	07	33	29	53	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	39	01	59	21	09	30	52	09	49	18	06	34	29	54	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	38	01	58	21	08	31	51	09	48	18	05	34	28	55	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	37	02	57	23	07	31	50	10	47	18	04	35	27	55	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 36	18 02	6 55	18 23	7 06	18 32	6 49	18 11	6 47	18 19	6 03	17 35	6 26	17 56	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 34	18 03	6 55	18 23	7 05	18 33	6 47	18 12	6 46	18 20	6 01	17 37	6 25	17 56	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	33	04	54	24	04	33	46	13	45	20	6 00	38	24	57	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	32	05	53	24	03	34	45	14	44	21	5 59	38	23	57	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	30	05	52	25	02	34	44	14	43	21	58	38	22	58	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	29	06	51	26	01	35	43	15	42	22	57	39	21	58	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	28	06	50	26	7 00	35	41	16	42	22	56	39	20	59	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	27	07	49	27	6 59	36	40	18	41	23	56	40	19	17 59	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	26	07	48	27	58	36	39	17	40	23	55	40	18	18 00	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	25	08	46	28	57	37	38	18	39	23	54	40	17	00	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	24	08	45	28	56	38	37	18	38	24	53	41	16	01	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	23	09	44	29	55	39	36	19	37	24	52	41	15	01	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	22	09	43	30	54	39	35	20	36	25	51	42	14	02	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	21	10	42	31	53	40	33	20	35	25	50	42	13	02	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	20	11	41	31	52	40	32	21	34	26	49	42	12	03	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	19	11	40	32	50	41	31	21	33	26	48	43	11	03	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	18	12	39	32	49	41	30	22	32	26	47	43	10	03	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	17	12	38	33	48	42	29	23	31	27	46	44	09	04	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	16	13	37	33	47	42	27	23	31	27	45	44	08	04	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	15	13	36	34	46	43	26	24	30	27	45	44	07	05	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	14	14	35	34	45	43	25	25	29	27	44	45	06	05	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	13	14	33	35	44	44	24	25	28	28	43	45	05	06	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	12	15	32	35	43	44	23	26	27	28	42	45	04	07	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	11	15	31	36	41	45	21	26	26	28	41	46	03	07	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	10	16	30	36	40	45	20	27	25	29	40	46	02	07	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	09	16	29	37	39	46	19	28	24	29	39	46	01	08	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	08	17	28	37	38	46	18	28	23	29	38	47	6 00	08	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 07	18 17	6 27	18 38	6 37	18 47	6 17	18 29	6 22	18 30	5 37	17 47	5 59	18 09	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 05	18 18	6 26	18 38	6 36	18 47	6 15	18 29	6 21	18 30	5 36	17 47	5 57	18 09	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	04	18	25	38	35	48	14	30	20	31	35	48	57	09	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	03	19	24	39	34	18 49	13	31	19	32	34	48	56	10	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 02	18 19	6 23	18 39	6 32	19 49	6 12	18 31	6 18	18 32	5 33	17 48	5 55	18 10	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 01	18 20	6 22	18 40	6 31	19 50	6 10	18 32	6 17	18 32	5 33	17 48	5 54	18 11	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 00	20	21	40	30	51	09	32	16	32	32	48	53	11	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	5 59	21	20	41	29	51	08	33	15	33	31	49	52	11	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	58	21	19	41	28	52	07	34	15	33	30	49	51	12	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	57	22	18	42	27	52	06	34	14	33	29	49	50	12	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	56	22	16	42	26	53	05	35	13	34	28	50	49	13	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	55	23	15	43	24	53	03	35	12	34	28	50	48	13	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	54	23	14	43	23	54	02	36	11	34	24	50	47	14	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	53	24	13	44	22	54	01	37	10	35	26	51	46	14	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	52	24	12	44	21	55	6 00	37	09	35	25	51	45	15	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	50	25	11	45	20	55	5 59	38	08	35	24	51	44	15	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	49	25	10	45	19	56	58	39	07	36	23	52	43	15	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	48	26	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	42	16	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	47	26	08	46	17	57	55	40	05	37	21	53	41	16	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	47	26	08	46	16	57	55	40	05	37	21	53	41	16	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	45	27	06	47	15	58	52	42	02	38	20	53	39	17	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	44	28	05	48	14	58	52	42	02	38	19	54	38	18	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	43	28	04	48	13	59	51	42	01	38	18	54	37	18	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	43	28	03	49	12	59	51	42	6 01	38	18	54	37	19	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	42	29	02	49	11	00	49	43	5 59	39	17	55	35	19	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	41	29	01	50	10	00	49	44	59	40	16	55	34	20	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	41	29	6 01	50	10	00	49	45	59	40	15	55	33	20	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	40	30	5 59	51	08	01	47	45	57	41	14	56	23	21	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	39	31	59	52	07	02	46	46	56	41	14	56	32	21	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	38	31	58	52	06	03	45	46	55	41	13	57	31	21	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	37	32	57	53	05	04	44	47	55	42	12	57	30	22	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	36	32	56	53	04	04	43	47	54	42	11	57	29	22	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	35	33	55	54	03	05	42	48	53	43	11	58	28	23	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	34	34	54	54	03	05	41	49	53	43	10	58	27	23	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 33	18 34	5 53	18 55	6 02	19 06	5 40	18 49	5 52	18 43	5 09	17 59	5 26	18 24	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 32	18 35	5 53	18 55	6 01	19 07	5 34	18 50	5 51	18 44	5 09	17 59	5 25	18 24	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	37	35	52	56	6 00	07	38	51	50	44	08	17 59	29	25	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	31	36	51	56	5 59	08	37	51	50	44	07	18 00	24	25	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	30	36	50	57	58	08	36	52	49	45	07	00	23	26	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	37	50	57	57	09	36	53	49	45	06	01	23	26	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	37	49	58	56	09	35	53	48	46	05	01	22	27	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	28	38	48	59	55	10	34	54	48	46	05	02	21	27	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	27	38	47	18 59	55	11	33	55	47	47	04	02	21	28	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	39	47	19 00	54	11	32	55	47	47	04	03	19	29	9
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	40	46	00	54	12	32	56	46	48	03	03	19	29	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	25	40	46	01	53	12	31	56	46	48	03	03	19	29	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 41	5 45	19 01	5 53	19 13	5 30	18 57	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 30	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 41	5 44	19 02	5 52	19 13	5 30	18 58	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 31	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	24	42	44	02	51	14	29	58	44	50	01	05	17	31	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	23	42	43	03	50	14	28	18 59	44	50	01	05	17	32	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	23	43	43	04	50	15	28	19 00	43	51	00	06	16	32	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	22	44	42	04	50	15	27	00	43	51	5 00	06	16	33	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	22	44	42	05	49	16	26	01	42	52	4 59	07	15	33	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	21	45	41	05	49	17	26	02	42	52	59	07	15	34	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	21	45	41	06	48	18	25	02	41	53	59	08	15	34	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	20	46	40	06	48	18	25	03	41	53	58	08	14	35	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	20	46	40	07	47	19	24	03	40	53	58	09	14	35	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	19	47	40	07	47	19	24	04	40	54	58	09	14	36	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	19	47	39	08	47	20	23	05	40	54	57	09	13	36	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	19	48	39	08	46	20	23	05	39	55	57	10	13	37	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	18	48	39	09	46	21	23	06	39	55	57	10	13	37	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	18	49	38	10	46	21	22	06	39	56	57	11	12	38	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	18	49	38	10	45	22	22	07	39	56	56	11	12	38	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	17	50	38	11	45	22	22	08	38	57	56	12	12	39	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	17	50	37	11	45	23	21	08	38	57	56	12	12	39	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 12	18 40	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 11	18 40	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	17	52	37	12	44	24	21	10	38	59	55	13	11	40	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	16	52	37	13	44	25	20	10	38	59	55	14	11	41	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	16	53	37	13	44	25	20	11	38	18 59	55	14	11	41	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	16	53	36	14	44	26	20	11	38	19 00	55	15	11	42	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	16	54	36	14	44	26	20	12	38	00	55	15	11	42	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	16	54	36	15	44	27	20	12	38	00	55	15	11	43	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	16	54	36	15	44	27	20	13	38	00	55	16	11	43	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	16	55	36	15	44	28	20	13	38	01	55	16	11	43	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	16	55	36	16	44	28	20	13	38	01	55	16	11	44	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	16	57	36	17	43	29	20	15	38	03	55	18	11	45	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	55	18	11	45	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	16	58	37	18	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	43	30	20	15	38	04	56	19	12	46	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	44	31	20	16	38	04	56	19	12	46	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	17	58	37	19	44	31	20	16	39	04	56	19	12	46	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	19	12	47	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	17	59	37	20	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	17	59	38	20	44	32	20	17	39	05	57	20	13	47	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	18	18 59	38	20	44	32	21	18	40	05	57	20	13	47	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	18	19 00	39	20	45	32	21	18	40	05	57	20	13	48	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	18	00	39	20	45	32	22	18	40	05	58	21	13	48	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	19	00	39	20	46	32	22	18	41	06	58	21	14	48	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 41	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	20	00	41	21	48	33	24	18	42	06	5 00	21	16	48	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	20	00	41	21	48	33	24	18	43	06	00	21	16	48	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	21	00	41	21	49	33	25	18	43	06	00	21	16	48	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	21	00	42	21	49	33	25	18	43	06	01	21	17	48	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	22	00	43	20	50	33	26	18	44	06	01	21	18	48	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	22	00	42	21	50	33	25	18	44	06	01	21	17	48	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	23	00	43	20	51	33	26	18	44	06	02	21	18	48	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	23	19 00	43	20	51	33	27	17	44	06	02	21	18	48	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	23	18 59	44	20	52	32	27	17	45	06	02	21	19	48	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	24	59	44	20	52	32	28	17	45	05	03	21	19	48	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	24	59	45	20	52	32	28	17	45	05	03	21	20	48	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	25	59	45	19	53	32	29	17	46	05	04	20	21	47	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	25	59	46	19	53	32	29	16	46	05	04	20	21	47	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	26	58	46	19	54	31	30	16	47	05	05	20	21	47	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	26	58	47	18	54	31	30	16	47	04	05	20	22	47	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	27	58	47	18	55	30	31	15	48	04	05	20	22	46	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	27	57	48	18	55	30	32	15	48	04	06	19	23	46	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	28	57	48	17	56	29	32	14	49	04	06	19	23	46	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	28	57	49	17	56	29	33	14	49	03	07	19	23	45	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	29	56	49	17	57	29	33	13	50	03	07	19	24	45	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	29	56	50	16	57	29	34	13	50	03	07	18	24	45	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	30	55	50	16	58	28	34	12	51	02	08	18	25	44	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	30	55	51	15	58	27	35	12	51	02	08	17	25	44	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	31	54	51	15	59	27	36	11	52	02	09	17	26	43	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	31	54	52	14	5 59	26	36	11	52	01	09	17	26	43	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	53	32	14	6 00	25	37	10	53	01	10	16	26	43	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	32	53	53	13	01	25	37	10	53	01	10	16	27	42	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	33	52	53	13	01	24	38	09	54	00	10	15	27	41	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	33	52	54	12	01	24	39	08	54	19 00	11	15	28	41	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	59	5 54	19 12	6 02	19 23	5 39	19 08	5 54	18 59	5 11	18 14	5 28	18 40	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 34	18 51	5 55	19 11	6 02	19 22	5 40	19 07	5 55	18 59	5 12	18 14	5 29	18 40	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	35	50	55	10	03	22	40	06	55	58	12	13	29	40	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	35	49	56	10	03	21	41	05	55	57	12	13	30	38	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	36	49	56	09	04	20	42	05	56	56	13	11	31	37	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	37	48	57	08	04	19	42	04	56	56	13	11	31	37	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	37	47	57	08	05	18	43	03	57	55	14	11	31	36	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	38	46	58	07	06	18	43	02	57	55	14	10	32	36	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	38	46	58	06	07	17	44	01	58	54	14	10	32	36	8
9	55	16	51	11	51	06	52	05	39	45	59	05	07	16	45	00	58	54	15	09	32	34	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	39	44	5 59	04	08	15	45	19 00	58	53	15	08	33	34	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	40	43	6 00	04	08	14	46	18 59	59	52	16	08	33	33	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	40	42	00	03	09	14	46	58	59	51	16	07	34	32	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	41	42	01	02	09	13	47	57	5 59	51	16	06	34	31	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 41	18 41	6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 56	6 00	18 59	5 17	18 05	5 35	18 30	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 52	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	5 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	42	39	02	59	11	10	49	54	01	48	18	04	36	29	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	43	38	03	58	11	9	49	53	01	47	18	03	36	28	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	43	37	04	58	12	8	50	52	02	46	18	02	36	27	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	43	36	04	57	12	7	50	51	02	45	19	02	36	27	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	44	35	05	56	13	06	51	50	03	45	19	02	36	26	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	44	34	05	55	13	5	52	49	03	44	19	18 00	37	24	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	45	33	05	54	14	4	52	48	03	43	20	17 59	38	24	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	45	32	06	53	14	3	53	47	04	42	20	58	38	23	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	56	31	07	52	15	02	53	46	04	41	20	57	39	22	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	46	30	07	51	15	1	54	54	04	40	21	51	39	22	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	47	29	07	50	16	00	54	43	05	39	21	56	39	21	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	47	28	08	49	16	59	55	42	05	38	21	55	40	20	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	48	27	08	47	17	57	56	40	06	38	22	55	40	18 19	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	48	26	08	47	17	57	56	40	06	37	22	53	41	18	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	49	25	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	41	17	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 49	18 24	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 49	18 23	6 10	18 44	6 19	18 58	5 55	18 36	6 06	18 34	5 22	17 51	5 42	18 14	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	50	22	10	42	19	53	58	35	07	33	22	50	42	13	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	50	21	11	41	20	52	59	34	07	32	22	49	43	12	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	51	20	11	40	20	50	5 59	33	07	31	23	48	43	11	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	51	19	11	39	21	49	6 00	32	07	30	23	47	44	10	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	52	18	12	38	21	48	00	30	08	29	23	46	44	09	5
7	13	43	09	40	07	35	08	34	52	17	12	37	22	46	01	29	08	28	24	45	44	07	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	52	15	13	36	23	45	02	28	08	27	24	44	45	06	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	53	15	13	35	23	44	02	27	07	26	24	43	45	05	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	53	13	14	34	23	43	03	26	09	25	25	42	46	04	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	54	12	14	33	23	42	03	24	09	24	25	41	46	03	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	54	11	14	31	23	41	04	23	10	23	25	40	46	02	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	55	10	15	30	24	40	04	22	10	22	25	39	47	01	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	55	09	15	29	24	38	05	21	10	21	26	38	47	18 00	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	55	08	16	28	25	37	05	19	10	20	26	38	47	17 59	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	56	06	16	27	25	36	06	18	10	19	26	37	48	58	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	56	05	17	26	26	35	06	17	11	18	26	36	48	57	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	57	04	17	25	26	34	07	16	11	17	27	35	49	56	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	57	03	17	23	27	32	07	14	11	16	27	33	49	55	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	58	02	18	22	27	31	08	13	11	15	27	32	49	53	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	58	01	18	21	28	30	09	12	12	14	27	31	50	52	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	58	18 00	19	20	28	29	09	11	12	13	28	30	50	51	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	59	17 58	19	19	29	28	10	09	13	12	28	29	50	50	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	5 59	57	20	18	29	27	10	08	13	11	28	28	51	49	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	6 00	56	20	17	30	26	11	07	14	10	29	28	51	48	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	00	55	20	15	30	24	11	06	14	09	29	27	52	47	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	01	54	21	14	31	23	12	04	14	08	29	26	52	46	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	01	53	21	13	31	22	12	03	14	07	29	25	53	45	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	02	52	22	12	32	21	13	02	15	06	30	24	53	43	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 02	17 51	6 22	18 11	6 32	18 20	6 13	18 01	6 15	18 05	5 30	17 23	5 53	17 43	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्टू	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	अक्टू
अक्टू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 02	17 49	6 23	18 10	6 33	18 19	6 14	17 59	6 15	18 04	5 32	17 21	5 54	17 42	अक्टू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	03	48	23	09	33	18	15	58	15	03	32	20	54	40	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	03	47	24	08	34	16	15	47	16	02	32	19	54	39	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	04	46	24	06	34	15	16	56	16	01	33	18	55	38	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	18 00	04	45	25	05	35	14	16	55	17	18 00	33	17	55	37	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	17 59	05	44	25	04	35	13	17	53	17	17 59	33	16	55	36	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	05	43	26	03	36	12	18	52	18	58	34	15	56	35	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	06	42	26	02	36	11	18	51	18	57	34	14	57	34	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	06	42	27	01	37	10	19	50	18	56	34	13	57	33	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	07	40	27	18 00	37	09	19	49	18	56	35	12	57	32	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	07	39	28	17 59	38	08	20	48	19	55	35	11	58	31	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	08	38	28	58	38	07	21	46	19	54	36	10	58	30	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	08	37	29	57	39	06	21	45	19	53	36	09	59	29	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	09	36	29	56	40	05	22	44	20	52	36	09	59	28	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	09	35	30	55	41	04	23	43	20	51	37	08	6 00	27	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	10	34	30	54	41	03	23	42	20	50	37	07	00	27	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	10	33	31	53	42	02	24	41	21	49	38	06	01	26	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	11	32	31	52	42	01	24	40	21	49	38	05	01	25	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	12	31	32	51	43	18 00	25	39	22	48	38	05	01	24	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	12	30	33	50	43	17 59	26	38	22	48	39	04	02	23	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	13	29	33	49	44	58	26	37	23	47	39	03	03	22	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	13	28	34	48	45	57	27	36	23	46	40	02	03	21	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	14	27	34	47	46	56	28	35	24	45	40	01	04	20	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	15	26	35	47	46	55	29	34	24	44	41	01	05	20	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	15	25	36	45	47	54	29	33	25	43	41	17 00	05	19	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	16	25	36	45	47	53	30	32	25	42	42	16 59	06	18	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	16	24	37	44	48	52	31	31	26	42	43	59	06	17	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	17	23	37	43	48	51	31	31	26	41	43	58	07	16	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	18	22	37	42	49	51	31	30	27	41	43	57	07	16	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	19	21	39	42	50	50	33	28	27	40	44	57	08	15	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 10	17 14	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 09	17 14	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	20	19	41	39	52	48	34	26	29	38	45	55	10	13	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	21	18	41	39	53	47	36	25	30	38	46	54	11	12	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	12	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	11	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	23	17	44	37	56	45	38	23	32	36	47	53	12	10	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	24	16	44	36	56	45	39	22	32	36	48	52	13	10	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	24	15	45	36	57	44	40	21	33	35	48	52	14	09	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	25	15	46	35	57	44	41	21	33	35	49	51	15	09	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	26	14	46	35	58	43	41	20	34	34	50	51	15	08	10
11	59	30	53	27	48	25	47	28	26	14	47	34	6 59	42	42	20	34	34	50	50	16	08	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	27	13	48	33	7 00	41	43	19	35	33	51	50	17	07	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	28	13	49	33	01	41	44	18	35	33	55	50	17	07	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	29	12	49	33	01	40	45	18	36	33	52	49	18	06	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	29	12	50	32	02	40	46	17	37	32	53	49	19	06	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 30	17 12	6 51	17 32	7 03	17 39	6 46	17 17	6 38	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 31	17 11	6 52	17 31	7 03	17 39	6 47	17 16	6 38	17 32	5 54	16 48	6 20	17 05	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	32	11	52	31	05	39	48	16	39	31	55	48	21	05	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	32	10	53	31	05	39	49	16	40	31	55	48	22	05	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	33	10	54	30	06	38	50	15	41	31	56	48	22	04	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	34	10	55	30	06	38	51	15	41	31	57	48	23	04	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	35	10	55	30	07	38	51	15	42	30	57	47	24	04	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	35	09	56	30	08	38	52	14	42	30	58	47	24	04	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	36	09	57	29	09	37	53	14	43	30	59	47	25	04	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	37	09	58	29	09	37	54	14	43	30	5 59	47	26	03	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	38	09	58	29	10	37	55	14	44	30	6 00	47	27	03	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	38	09	6 59	29	11	37	55	13	45	30	01	47	27	03	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	39	09	7 00	29	12	37	56	13	46	30	01	47	28	03	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	40	09	01	29	13	37	57	13	46	30	02	47	29	03	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 58	17 13	6 47	17 30	6 02	16 47	6 30	17 03	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 59	17 13	6 48	17 30	6 03	16 47	6 30	17 03	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	42	09	03	29	15	36	6 59	13	49	30	04	47	31	03	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	43	09	04	29	16	36	7 00	13	49	31	05	47	32	03	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	44	09	05	29	17	36	01	13	50	31	05	47	32	03	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	44	09	06	29	17	36	02	13	51	31	06	48	33	04	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	45	49	07	29	18	37	03	13	52	31	07	48	34	04	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	46	09	07	29	19	37	03	13	52	31	07	48	35	04	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	46	09	08	30	20	37	04	13	53	32	08	48	35	04	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	47	09	09	30	20	37	05	13	53	32	09	48	36	04	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	48	10	09	30	21	37	06	14	54	32	09	49	37	05	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	49	10	09	30	22	37	06	14	54	33	10	49	37	05	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	49	10	10	30	23	38	07	14	55	33	11	49	38	05	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	50	10	11	31	23	38	08	14	56	33	11	50	38	05	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	50	11	11	31	24	39	08	15	57	33	12	50	39	06	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	51	11	12	31	24	39	09	15	57	34	12	50	40	06	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	15	58	34	13	51	41	06	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	16	58	34	14	51	41	07	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	53	12	14	32	26	40	11	16	59	35	14	51	41	07	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	53	13	14	33	26	40	11	17	6 59	35	15	52	42	08	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	54	13	14	33	27	41	12	17	7 00	36	15	52	42	08	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	55	14	15	34	27	41	12	17	01	36	15	53	43	09	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	55	14	16	34	28	42	13	18	01	37	16	53	44	09	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	55	15	16	35	28	42	13	18	02	37	17	54	44	10	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	56	15	17	35	29	43	14	19	02	38	17	54	45	10	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	56	16	17	36	29	43	14	20	03	38	18	55	45	11	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	57	16	18	37	30	44	15	20	03	39	18	55	45	11	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	57	17	18	37	30	44	15	21	03	39	19	56	45	21	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	58	17	18	38	30	45	15	21	04	40	19	57	46	12	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	58	18	19	38	30	45	16	22	04	40	19	57	47	13	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	58	19	19	39	31	47	16	23	04	41	20	58	47	14	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	6 59	17 19	7 20	17 40	7 31	17 47	7 16	17 23	7 05	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

उदाहरण–यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अतः ५ **दिन घटा देने से हमें सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।**

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	९	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	कला
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
१	० ०३	० ०९	० ०३	० ०५	० ०३	० ०८	० ०७	० ०९	०. ०८	१
२	० ०६	० १८	० ०५	० ०९	० ०६	० १६	० १४	० १७	० १५	२
३	० ०९	० २७	० ०८	० १४	० ०९	० २४	० २२	० २६	० २३	३
४	० १३	१ ०६	० ११	० १८	० १३	१ ०२	० २९	१ ०४	१ ०१	४
५	० १६	१ १५	० १४	० २३	० १६	१ ११	१ ०६	१ १३	१ ०८	५
६	० १९	१ २४	० १६	० २७	० १९	१ १९	१ १३	१ २१	१ १६	६
७	० २२	२ ०३	० १९	१ ०२	० २२	१ २७	१ २०	२ ००	१ २४	७
८	० २५	२ १२	० २२	१ ०६	० २५	२ ०५	१ २८	२ ०८	२ ०१	८
९	० २८	२ २१	० २४	१ ११	० २८	२ १३	२ ०५	२ १७	२ ०९	९
१०	१ ०१	३ ००	० २७	१ १५	१ ०१	२ २१	२ १२	२ २६	२ १७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से '**ज्योतिष तत्त्व**' पुस्तक मंगवा कर पढ़ें।

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०
श्रवण,आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि		

भ्रद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पूफा मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा रोह			हस्त उषा मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त-भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., नेष्टदशा–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा और अष्टोतरी दशा**। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (18 वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	श.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	26	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छः मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रातःकाल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति
अन्धेरा देखना	दुःख मिले
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता
अर्थी देखना	रोग मुक्त
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग
आकाश देखना	तरक्की होना
आँवला खाना	स्वास्थ्य लाभ
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो
आत्महत्या करना	दीर्घायु
आलू देखना	मुसीबत आना
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह
अस्त्र-शस्त्र देखना	दुःखों से निपटारा हो
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की
ईंजन देखना	योजनाएं असफल
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति
ईमली का पेड़ देखना	स्वास्थ्य
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले
ऊँट देखना	अंग घात
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान
ऐनक देखना (काली)	निराशा
कमल देखना	धन प्राप्ति

स्वप्न	फल
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो
कबूतर देखना	शुभ समाचार
काला नाग	राज्य सम्मान
किला देखना	तरक्की पाना
कोढ़ी देखना	रोग सूचक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो
कोयल देखना	कोई शुभ समाचार
कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता
कबाब खाना	अपयश/विवाद
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि
खून करना	संकट आना
खिलौना देखना	सुख शान्ति
खरबूजा देखना	धन लाभ
खेत देखना	संकट पूर्ण
खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप
गुरु देखना	कार्य सफलता
गोबर देखना	पशु लाभ हो
गंगा देखना	शेष जीवन सुखी
ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण
गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो
गरीबी देखना	सुख समृद्धि

स्वप्न	फल
गर्भपात	गम्भीर रोग
घूंघट देखना	नया कारोबार
घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता
घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा
घायल देखना	संकट से मुक्त होना
घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो
घड़ी देखना	यात्रा का संकेत
घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक
चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ
चरखा देखना	आर्थिक लाभ
चावल खाना	शुभ समाचार
चोर देखना	धन प्राप्ति
चादर देखना	बदनामी हो
चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद
चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत
चीखें मारना	परेशानी व कष्ट
चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक
छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद
छिपकली देखना	अचानक धन लाभ
छींकना	कार्य बाधा
छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा
छपाई देखना	अपमानित होना
छंटनी देखना	पदोन्नति
जख्म देखना	परेशानियां
जादूगर देखना	अशुभ लक्षण
जहाज देखना	परेशानी दूर हो
जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति
जल देखना	मान सम्मान

स्वप्न	फल
ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक
जुआ खेलना	धन हानि
जेब काटना	धन हानि
जड़ें देखना	दीर्घायु
जड़ें काटना	संकट का सूचक
जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की
झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले
झाडू देखना	नुकसान हो
झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ
झांकी देखना	अशुभ
झोली देखना	विजय संकेत
झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक
झरना देखना	दुःख दूर हों
टिकट लेना	सम्बन्ध टूटना
टोकरी देखना	व्यापार में वृद्धि
टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति
टेलीफोन करना	शुभ समाचार
टापू देखना	संकट लक्षण
टोपी देखना	प्रगति हो
ठग मिलना	धन हानि
ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य
ठोकर लगते देखना	सफलता का सूचक
ठाकुर देखना	आध्यात्मिक प्रवृत्ति
डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति
डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना
डोली देखना	कोई परेशानी हो
डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो
डाकू देखना	धन हानि

स्वप्न	फल
ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
तम्बू देखना	नया काम शुरु करें
तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
तैरते देखना	आयु में वृद्धि
तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
तीर मारना	खुशी मिले
तूफान देखना	परेशानी बढ़े
तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
तितली देखना	प्रेम सम्बन्ध में सफलता
तोता देखना	धन लाभ
तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
तराजू देखना	व्यापार लाभ
ताली बजाना	खुशी मिले
ताश खेलना	व्यापार लाभ
ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
तरबूज देखना	परेशानी
तांगा देखना	झगड़ा हो
थूक देना	परेशानी बढ़े
थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
थप्पड़ खाना	शुभ
थन स्पर्श करना	धन प्राप्ति
दूध पीना	खुशी प्राप्ति
दरवाजा देखना	नए कार्य का आरम्भ
दरवाज़ा बन्द देखना	परेशानियां हों
दाँव लगाना	भारी हानि

स्वप्न	फल
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दुःख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दक्षिणा देना	मंगल कार्य सूचक
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
धोबी देखना	सफलता हो
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
धनुष खींचना	लाभप्रद यात्रा हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
पत्थर देखना	विपत्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पर्व देखना	शुभ हो
पशु देखना	व्यापार में लाभ

स्वप्न	फल
पहरेदार देखना	चोरी होना
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पतंग देखना	परेशानी बढ़े
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय प्रबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बालू देखना	धन लाभ हो
बादाम देखना	स्वास्थ्य लाभ
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े

स्वप्न	फल
भोजन पकाना	शुभ समाचार
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
मिर्च खाना	लड़ाई संकेत
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यन्त्र देखना	असफलता प्राप्ति
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रुद्राक्ष देखना	कल्याण का प्रतीक
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रस्सी देखना	यात्रा हो
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रथ देखना	यात्रा पड़े
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रीछ देखना	शुभ समाचार
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लाल फूल देखना	पुत्र सुख
लहंगा देखना	दाम्पत्य सुख प्राप्ति

स्वप्न	फल
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराव पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
साईकिल चलाना	कार्य सिद्धि
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
सेब देखना	दीर्घायु
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि
हिम गिरते देखना	धन प्राप्ति
त्रिशूल देखना	सफलता मिले

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावलीय ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवैद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कवोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्घखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ॥५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्वान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्वरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राड्वृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्धुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रेनमः ॥ ॐ विश्व कर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	२	३	४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्वान्न दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्य्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुंष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसत्रिपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्वत। ॐ निर्ऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु–वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य–सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्णगोदानब्राह्मणभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र–पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र घृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा–द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽत्राद्याय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीड़ा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१० हजार	ॐ पूषन् तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पूभा	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि–आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि–भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

॥ अथ बालकष्टावली पूतना विधान ॥

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्ब के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशोः स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था–जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था** जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र–त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना–गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो **शनि**, ७ से **बुध**, ८ से **केतु**, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि–**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल–सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल–सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७–इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः–स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९	५–९
गुप्त मित्र	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११	३–११
प्रत्यक्ष शत्रु	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७	१–७
गुप्त शत्रु	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०	४–१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि–इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि–यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि–इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि–इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुन: जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। ''सूर्य सिद्धान्तानुसार'' उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से **'वर्षफल चन्द्रिका'** लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भागयोन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (देखें हमारी पुस्तक **'वर्षफल चंद्रिका'**)

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल** है।

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 1	06	07
	5	11	37
अर्थात् (गुरुवार)	5 वार	11	37

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि-आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम **गताब्द** अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे**, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण-मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30)बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2014 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2014 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 40 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 40 के सामने हमें 1 वार, 06 घण्टे एवं 07 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 5 वार, 11 घण्टे, 37 मिनट प्राप्त हुए। हमें 5 वार अर्थात् गुरुवार की प्रातः (11) बजकर, 37 मिनट प्राप्त हुए।

जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू. की प्रातः 11 बजकर 37 मिनट पर हमें **वृश्चिक वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मिथुन में सं. २०७१ की पंचांग से 1 अक्तू. 2014 ई. प्रातः 11/37 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 80 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

जनवरी	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

फरवरी	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 20	7 48	9 12	10 48	12 43	14 57	17 18	19 36	21 51	24 10	2 29	4 33
25	6 16	7 44	9 08	10 44	12 39	14 53	17 14	19 32	21 47	24 06	2 25	4 29
26	6 12	7 40	9 04	10 40	12 35	14 49	17 10	19 28	21 43	24 02	2 21	4 25
27	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
28	6 05	7 32	8 57	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 01	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

मार्च	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अप्रैल	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8 18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी — मई — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी — जून — भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 i3	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	11 34	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	2458	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	2454	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	2450	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	2446	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	2442	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	2438	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	2435	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	2431	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	1612	18 16	19 59	21 27	22 50	2427	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

सितंबर ता.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्तू	5 15											

दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

अक्तूबर ता.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29											

नवंबर — दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3.00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

दिसंबर — दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——	——

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**–टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**–युद्ध, यात्रा, कर्ज़ देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकद्मा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। **जैसे**–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	३.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	४.३०

।चौघड़ियां मुहूर्त्त ।।

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	७.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	९.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	१.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	४.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त्त १½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते है। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**–सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)–जम्मू (Jammu) जनवरी-फरवरी (Jan.-Feb.)

जनवरी	धनु		मकर		कुम्भ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक	
ता.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1	8	28	10	08	11	30	12	51	14	22	16	15	18	30	20	53	23	15	1	37	4	00	6	21
2	8	24	10	04	11	26	12	47	14	18	16	11	18	27	20	49	23	13	1	34	3	56	6	17
3	8	20	10	00	11	22	12	43	14	14	16	07	18	23	20	45	23	09	1	30	3	52	6	13
4	8	16	9	56	11	18	12	39	14	10	16	03	18	19	20	41	23	05	1	26	3	48	6	09
5	8	12	9	52	11	14	12	35	14	06	15	59	18	15	20	37	23	01	1	22	3	44	6	05
6	8	08	9	48	11	10	12	31	14	02	15	55	18	11	20	34	22	57	1	18	3	40	6	01
7	8	04	9	44	11	06	12	27	13	58	15	51	18	07	20	30	22	53	1	14	3	36	5	57
8	8	00	9	40	11	02	12	23	13	54	15	47	18	03	20	26	22	49	1	10	3	32	5	53
9	7	56	9	36	10	58	12	19	13	50	15	43	17	59	20	22	22	45	1	06	3	28	5	49
10	7	52	9	32	10	54	12	15	13	46	15	39	17	55	20	18	22	41	1	02	3	24	5	45
11	7	48	9	28	10	50	12	11	13	42	15	35	17	51	20	14	22	37	0	58	3	20	5	41
12	7	44	9	24	10	46	12	07	13	38	15	31	17	47	20	10	22	33	0	54	3	16	5	37
13	7	40	9	20	10	42	12	03	13	34	15	27	17	43	20	06	22	29	0	50	3	12	5	33
14	7	36	9	16	10	38	11	59	13	30	15	23	17	39	20	02	22	25	0	46	3	08	5	29
15	7	32	9	12	10	34	11	55	13	26	15	19	17	35	19	58	22	21	0	42	3	04	5	25
16	7	28	9	09	10	30	11	52	13	23	15	16	17	32	19	54	22	18	0	39	3	00	5	21
17	7	24	9	05	10	26	11	48	13	19	15	12	17	28	19	50	22	14	0	35	2	56	5	17
18	7	20	9	01	10	23	11	44	13	15	15	08	17	24	19	46	22	10	0	31	2	52	5	13
19	7	16	8	57	10	19	11	40	13	11	15	04	17	20	19	42	22	06	0	27	2	48	5	10
20	7	12	8	53	10	15	11	36	13	07	15	00	17	16	19	38	22	02	0	23	2	44	5	06
21	7	08	8	49	10	11	11	32	13	03	14	56	17	12	19	34	21	58	0	19	2	40	5	02
22	7	05	8	45	10	07	11	28	12	59	14	52	17	08	19	30	21	54	0	15	2	36	4	58
23	7	01	8	41	10	03	11	24	12	55	14	48	17	04	19	26	21	50	0	11	2	32	4	54
24	6	57	8	37	9	59	11	20	12	51	14	44	17	00	19	22	21	46	0	07	2	29	4	50
25	6	53	8	33	9	55	11	16	12	47	14	40	16	56	19	18	21	42	0	03	2	25	4	46
26	6	49	8	30	9	51	11	13	12	44	14	37	16	53	19	14	21	39	23	59	2	21	4	42
27	6	45	8	26	9	47	11	09	12	40	14	33	16	49	19	11	21	35	23	55	2	17	4	38
28	6	41	8	22	9	43	11	05	12	36	14	29	16	45	19	07	21	31	23	51	2	13	4	34
29	6	37	8	18	9	40	11	01	12	32	14	25	16	41	19	03	21	27	23	47	2	09	4	30
30	6	33	8	14	9	36	10	57	12	28	14	21	16	37	18	59	21	23	23	43	2	05	4	27
31	6	30	8	10	9	32	10	53	12	24	14	17	16	33	18	55	21	19	23	39	2	01	4	23
फर.	6	26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

फर.	मकर		कुम्भ		मीन		मेष		वृष		मिथुन		कर्क		सिंह		कन्या		तुला		वृश्चिक		धनु	
1	8	06	9	28	10	49	12	20	14	13	16	28	18	51	21	13	23	35	1	57	4	19	6	22
2	8	02	9	24	10	45	12	16	14	09	16	24	18	47	21	09	23	31	1	53	4	15	6	18
3	7	58	9	20	10.	41	12	12	14	05	16	20	18	43	21	05	23	27	1	49	4	11	6	14
4	7	54	9	16	10	37	12	08	14	01	16	16	18	40	21	01	23	23	1	45	4	07	6	10
5	7	50	9	12	10	33	12	04	13	57	16	12	18	36	20	57	23	19	1	41	4	03	6	06
6	7	46	9	08	10	29	12	00	13	52	16	08	18	32	20	53	23	15	1	38	3	59	6	02
7	7	42	9	04	10	25	11	56	13	49	16	04	18	28	20	49	23	11	1	34	3	55	5	58
8	7	38	9	00	10	21	11	52	13	45	16	00	18	24	20	45	23	07	1	30	3	51	5	54
9	7	34	8	56	10	17	11	48	13	41	15	56	18	21	20	42	23	03	1	26	3	47	5	50
10	7	30	8	52	10	13	11	44	13	37	15	52	18	17	20	38	22	59	1	22	3	43	5	46
11	7	26	8	48	10	09	11	40	13	33	15	48	18	13	20	34	22	55	1	18	3	39	5	42
12	7	22	8	44	10	05	11	36	13	29	15	44	18	09	20	31	22	51	1	14	3	35	5	38
13	7	19	8	40	10	01	11	32	13	25	15	40	18	05	20	27	22	47	1	10	3	31	5	34
14	7	15	8	36	9	57	11	28	13	21	15	36	18	01	20	23	22	43	1	06	3	27	5	30
15	7	11	8	32	9	53	11	24	13	17	15	32	17	57	20	19	22	39	1	02	3	23	5	26
16	7	07	8	29	9	49	11	20	13	13	15	28	17	53	20	15	22	35	24	58	3	19	5	22
17	7	03	8	25	9	45	11	16	13	09	15	24	17	49	20	11	22	31	24	54	3	15	5	19
18	6	59	8	21	9	41	11	12	13	05	15	20	17	45	20	07	22	27	24	50	3	11	5	15
19	6	55	8	17	9	37	11	08	13	01	15	16	17	41	20	03	22	23	24	46	3	07	5	11
20	6	51	8	14	9	34	11	05	12	57	15	12	17	37	19	59	22	19	24	42	3	03	5	07
21	6	47	8	10	9	30	11	01	12	54	15	08	17	33	19	55	22	15	24	38	3	00	5	03
22	6	43	8	06	9	26	10	57	12	50	15	05	17	29	19	51	22	11	24	34	2	56	4	59
23	6	39	8	02	9	22	10	53	12	46	15	01	17	25	19	47	22	07	24	31	2	52	4	55
24	6	35	7	58	9	18	10	49	12	42	14	57	17	21	19	43	22	03	24	27	2	48	4	51
25	6	31	7	54	9	14	10	45	12	38	14	53	17	17	19	39	21	59	24	23	2	44	4	47
26	6	27	7	50	9	10	10	41	12	34	14	49	17	13	19	35	21	55	24	19	2	40	4	43
27	6	23	7	46	9	06	10	37	12	30	14	45	17	09	19	31	21	51	24	15	2	36	4	39
28	6	20	7	42	9	02	10	33	12	26	14	41	17	05	19	27	21	47	24	11	2	32	4	34

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)–जम्मू (Jammu) मार्च-अप्रैल (Mar.-Apr.)

मार्च

ता.	कुम्भ घं.	मिं.	मीन घं.	मिं.	मेष घं.	मिं.	वृष घं.	मिं.	मिथुन घं.	मिं.	कर्क घं.	मिं.	सिंह घं.	मिं.	कन्या घं.	मिं.	तुला घं.	मिं.	वृश्चिक घं.	मिं.	धनु घं.	मिं.	मकर घं.	मिं.
1	7	38	8	58	10	29	12	22	14	37	17	01	19	23	21	43	24	07	2	28	4	31	6	12
2	7	34	8	54	10	25	12	18	14	33	16	58	19	20	21	40	24	03	2	24	4	27	6	08
3	7	30	8	51	10	22	12	15	14	30	16	54	19	16	21	36	23	59	2	20	4	23	6	04
4	7	26	8	47	10	18	12	11	14	26	16	50	19	12	21	32	23	55	2	16	4	19	6	00
5	7	22	8	43	10	14	12	07	14	22	15	46	19	08	21	28	23	52	2	12	4	16	5	56
6	7	18	8	39	10	10	12	03	14	19	15	42	19	04	21	24	23	48	2	08	4	12	5	52
7	7	14	8	35	10	06	11	59	14	15	16	38	19	00	21	21	23	44	2	04	4	08	5	48
8	7	10	8	31	10	02	11	55	14	11	16	34	18	56	21	17	23	40	2	00	4	04	5	44
9	7	06	8	27	9	58	11	51	14	07	16	31	18	53	21	13	23	36	1	57	4	00	5	40
10	7	02	8	23	9	54	11	47	14	03	16	27	18	49	21	09	23	32	1	53	3	56	5	36
11	6	58	8	19	9	50	11	43	13	59	16	23	18	45	21	05	23	28	1	49	3	52	5	32
12	6	54	8	15	9	46	11	39	13	55	16	19	18	41	21	01	23	25	1	45	3	48	5	29
13	6	51	8	11	9	42	11	35	13	51	16	15	18	37	20	57	23	21	1	42	3	45	5	25
14	6	47	8	07	9	38	11	31	13	47	16	11	18	33	20	53	23	17	1	38	3	41	5	21
15	6	43	8	03	9	34	11	27	13	43	16	07	18	29	20	49	23	13	1	34	3	37	5	17
16	6	39	7	59	9	30	11	23	13	39	16	03	18	25	20	45	23	09	1	30	3	33	5	13
17	6	35	7	55	9	26	11	19	13	35	15	59	18	21	20	41	23	05	1	26	3	29	5	09
18	6	31	7	51	9	22	11	15	13	31	15	55	18	17	20	37	23	01	1	22	3	25	5	05
19	6	27	7	47	9	18	11	11	13	27	15	51	18	13	20	33	22	57	1	18	3	21	5	01
20	6	23	7	43	9	14	11	07	13	24	15	47	18	09	20	29	22	53	1	14	3	17	4	57
21	6	19	7	39	9	10	11	03	13	20	15	43	18	05	20	25	22	49	1	10	3	13	4	53
22	6	15	7	35	9	06	10	59	13	16	15	39	18	01	20	21	22	45	1	06	3	09	4	49
23	6	11	7	32	9	02	10	56	13	12	15	35	17	57	20	17	22	41	1	02	3	05	4	45
24	6	07	7	28	8	58	10	52	13	08	15	31	17	53	20	13	22	37	0	58	3	01	4	42
25	6	03	7	24	8	54	10	48	13	04	15	27	17	49	20	09	22	33	0	54	2	57	4	38
26	5	59	7	20	8	50	10	44	13	00	15	23	17	45	20	06	22	29	0	50	2	53	4	34
27	5	55	7	16	8	47	10	40	13	56	15	19	17	41	20	02	22	25	0	46	2	49	4	30
28	5	51	7	12	8	43	10	36	12	52	15	15	17	37	19	58	22	21	0	41	2	46	4	26
29	5	47	7	08	8	39	10	32	12	48	15	11	17	33	19	54	22	17	0	38	2	42	4	22
30	5	44	7	04	8	35	10	28	12	44	15	07	17	29	19	50	22	13	0	34	2	38	4	18
31	5	40	7	00	8	31	10	24	12	40	15	03	17	25	19	46	22	09	0	30	2	34	4	14
अप्रै.	5	36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अप्रै.	मीन घं.	मिं.	मेष घं.	मिं.	वृष घं.	मिं.	मिथुन घं.	मिं.	कर्क घं.	मिं.	सिंह घं.	मिं.	कन्या घं.	मिं.	तुला घं.	मिं.	वृश्चिक घं.	मिं.	धनु घं.	मिं.	मकर घं.	मिं.	कुम्भ घं.	मिं.
1	6	56	8	27	10	20	12	36	14	59	17	21	19	42	22	05	00	26	2	30	4	10	5	32
2	6	52	8	23	10	16	12	32	14	55	17	17	19	38	22	01	00	22	2	26	4	06	5	29
3	6	48	8	19	10	12	12	28	14	51	17	13	19	34	21	57	00	18	2	22	4	02	5	25
4	6	44	8	15	10	08	12	24	14	47	17	09	19	31	21	53	00	14	2	18	3	58	5	21
5	6	40	8	11	10	04	12	21	14	43	17	05	19	27	21	50	00	11	2	14	3	54	5	17
6	6	37	8	08	10	00	12	17	14	39	17	01	19	23	21	46	24	07	2	10	3	50	5	13
7	6	33	8	04	9	57	12	13	14	35	16	58	19	19	21	40	24	03	2	06	3	46	5	09
8	6	29	8	00	9	53	12	09	14	31	16	54	19	15	21	38	23	59	2	02	3	42	5	05
9	6	25	7	56	9	49	12	05	14	27	16	50	19	11	21	34	23	55	1	58	3	39	5	02
10	6	21	7	52	9	45	12	01	14	24	16	46	19	07	21	30	23	51	1	54	3	35	4	58
11	6	17	7	48	9	41	11	57	14	20	16	42	19	03	21	26	23	47	1	50	3	31	4	54
12	6	13	7	44	9	37	11	53	14	16	16	38	18	59	21	22	23	43	1	46	3	27	4	50
13	6	09	7	40	9	33	11	49	14	12	16	34	18	55	21	18	23	39	1	42	3	23	4	46
14	6	05	7	36	9	29	11	45	14	08	16	30	19	51	21	14	23	35	1	38	3	20	4	42
15	6	01	7	32	9	25	11	42	14	04	16	26	18	47	21	10	23	31	1	34	3	16	4	38
16	5	57	7	28	9	21	11	38	14	00	16	22	18	43	21	06	23	27	1	30	3	12	4	34
17	5	53	7	24	9	17	11	34	13	56	16	19	18	39	21	02	23	23	1	26	3	08	4	30
18	5	49	7	20	9	14	11	30	13	53	16	15	18	36	20	58	23	19	1	22	3	04	4	26
19	5	45	7	16	9	10	11	26	13	49	16	11	18	32	20	54	23	15	1	18	3	00	4	22
20	5	41	7	12	9	06	11	22	13	45	16	07	18	28	20	50	23	11	1	14	2	56	4	18
21	5	37	7	08	9	02	11	18	13	41	16	03	18	24	20	46	23	08	1	10	2	52	4	14
22	5	33	7	04	8	58	11	14	13	37	15	59	18	20	20	42	23	04	1	06	2	48	4	10
23	5	29	7	00	8	54	11	10	13	33	15	55	18	16	20	39	23	00	1	02	2	44	4	06
24	5	25	6	56	8	50	11	06	13	29	15	51	18	12	20	35	22	56	00	58	2	40	4	02
25	5	21	6	52	8	46	11	02	13	25	15	47	18	08	20	31	22	52	00	54	2	36	3	58
26	5	17	6	48	8	42	10	58	13	21	15	43	18	04	20	27	22	48	00	50	2	32	3	54
27	5	13	6	45	8	38	10	54	13	17	15	39	18	00	20	23	22	44	00	46	2	28	3	50
28	5	09	6	41	8	34	10	50	13	13	15	35	17	56	20	19	22	40	00	42	2	24	3	46
29	5	05	6	37	8	30	10	46	13	09	15	31	17	52	20	15	22	36	00	38	2	20	3	42
30	5	01	6	33	8	26	10	42	13	05	15	28	17	48	20	11	22	32	00	34	2	16	3	38
मई	4	57	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

मई

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) मई-जून (May-June)

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 29	8 22	10 38	13 01	15 24	17 44	20 07	22 28	00 31	2 12	3 34	4 54
2	6 25	8 18	10 34	12 58	15 21	17 40	20 03	22 24	00 27	2 08	3 30	4 50
3	6 21	8 14	10 30	12 54	15 17	17 37	19 59	22 20	00 24	2 04	3 27	4 46
4	6 17	8 10	10 26	12 50	15 13	17 33	19 55	22 16	00 20	2 00	3 23	4 42
5	6 13	8 06	10 22	12 46	15 09	17 29	19 51	22 12	00 16	1 56	3 19	4 38
6	6 09	8 02	10 18	12 42	15 05	17 25	19 47	22 08	00 12	1 52	3 15	4 34
7	6 05	7 58	10 14	12 38	15 01	17 21	19 43	22 04	24 08	1 48	3 11	4 30
8	6 01	7 54	10 10	12 34	14 57	17 17	19 39	22 00	24 04	1 44	3 07	4 26
9	5 57	7 50	10 06	12 30	14 53	17 13	19 35	21 56	24 00	1 40	3 03	4 22
10	5 53	7 46	10 02	12 26	14 49	17 09	19 31	21 52	23 56	1 36	2 59	4 18
11	5 49	7 43	9 58	12 22	14 45	17 05	19 27	21 48	23 52	1 32	2 55	4 14
12	5 45	7 39	9 54	12 19	14 41	17 01	19 23	21 44	23 48	1 28	2 51	4 10
13	5 41	7 35	9 50	12 15	14 37	16 57	19 19	21 40	23 44	1 24	2 47	4 06
14	5 37	7 30	9 46	12 09	14 32	16 53	19 15	21 36	23 40	1 20	2 43	4 02
15	5 33	7 26	9 42	12 05	14 28	16 49	19 11	21 32	23 36	1 16	2 39	3 58
16	5 29	7 22	9 38	12 01	14 24	16 45	19 07	21 28	23 32	1 12	2 35	3 54
17	5 25	7 18	9 34	11 57	14 20	16 41	19 03	21 24	23 28	1 08	2 31	3 50
18	5 21	7 14	9 30	11 53	14 16	16 37	18 59	21 20	23 24	1 04	2 27	3 46
19	5 17	7 10	9 26	11 49	14 12	16 33	18 55	21 16	23 20	1 00	2 23	3 42
20	5 13	7 06	9 22	11 45	14 08	16 29	18 51	21 12	23 16	24 56	2 20	3 38
21	5 09	7 02	9 18	11 41	14 04	16 25	18 47	21 08	23 12	24 52	2 16	3 34
22	5 05	6 59	9 14	11 37	14 00	16 21	18 43	21 04	23 08	24 48	2 12	3 30
23	5 01	6 55	9 10	11 33	13 56	16 17	18 39	21 00	23 04	24 44	2 08	3 26
24	4 57	6 51	9 06	11 30	13 52	16 14	18 36	20 57	23 00	24 41	2 04	3 22
25	4 53	6 47	9 02	11 26	13 48	16 10	18 32	20 53	22 57	24 37	2 00	3 18
26	4 49	6 44	8 59	11 22	13 44	16 06	18 28	20 49	22 53	24 33	1 56	3 14
27	4 45	6 40	8 55	11 18	13 40	16 02	18 24	20 45	22 49	24 29	1 52	3 10
28	4 41	6 36	8 51	11 14	13 36	15 58	18 20	20 41	22 45	24 26	1 48	3 07
29	4 37	6 32	8 48	11 10	13 32	15 54	18 16	20 37	22 41	24 22	1 44	3 03
30	4 34	6 28	8 44	11 06	13 28	15 50	18 12	20 33	22 38	24 18	1 40	2 59
31	4 30	6 24	8 40	11 02	13 24	15 46	18 08	20 29	22 34	24 14	1 36	2 55
जून	4 26	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

जून	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
1	6 21	8 36	10 59	13 21	15 42	18 05	20 26	22 30	24 10	1 32	2 52	4 23
2	6 17	8 32	10 55	13 16	15 38	18 01	20 22	22 26	24 06	1 28	2 48	4 19
3	6 13	8 28	10 51	13 12	15 34	17 57	20 18	22 22	24 02	1 24	2 44	4 15
4	6 09	8 24	10 47	13 08	15 30	17 53	20 14	22 18	23 58	1 20	2 40	4 11
5	6 05	8 20	10 43	13 04	15 26	17 49	20 10	22 14	23 54	1 16	2 36	4 07
6	6 01	8 16	10 39	13 00	15 22	17 45	20 06	22 10	23 50	1 12	2 32	4 03
7	5 57	8 12	10 35	12 56	15 18	17 41	20 02	22 06	23 46	1 08	2 28	3 59
8	5 54	8 08	10 31	12 52	15 14	17 37	19 58	22 03	23 42	1 04	2 24	3 55
9	5 50	8 04	10 27	12 48	15 11	17 33	19 54	21 59	23 38	1 00	2 20	3 51
10	5 46	8 00	10 23	12 45	15 07	17 29	19 50	21 55	23 34	0 57	2 16	3 47
11	5 42	7 56	10 19	12 41	15 03	17 25	19 46	21 51	23 30	0 53	2 12	3 43
12	5 38	7 52	10 15	12 37	14 59	17 21	19 42	21 47	23 26	0 49	2 08	3 39
13	5 34	7 48	10 11	12 33	14 55	17 17	19 38	21 43	23 22	0 45	2 04	3 35
14	5 30	7 44	10 07	12 29	14 51	17 13	19 34	21 39	23 18	0 41	2 00	3 31
15	5 26	7 40	10 03	12 25	14 47	17 09	19 30	21 35	23 14	0 37	1 56	3 27
16	5 22	7 36	9 59	12 21	14 43	17 05	19 26	21 31	23 10	0 33	1 52	3 23
17	5 18	7 32	9 55	12 17	14 39	17 01	19 22	21 27	23 06	0 29	1 48	3 19
18	5 14	7 29	9 51	12 13	14 35	16 57	19 18	21 23	23 03	0 25	1 44	3 15
19	5 10	7 25	9 47	12 10	14 31	16 53	19 14	21 19	22 59	0 21	1 40	3 11
20	5 06	7 21	9 43	12 06	14 27	16 49	19 10	21 15	22 55	0 17	1 36	3 07
21	5 02	7 17	9 40	12 02	14 23	16 45	19 06	21 11	22 51	0 13	1 32	3 03
22	4 58	7 14	9 36	11 58	14 19	16 41	19 02	21 07	22 47	0 09	1 28	2 59
23	4 54	7 10	9 32	11 54	14 15	16 37	18 58	21 03	22 43	0 05	1 24	2 55
24	4 50	7 06	9 28	11 50	14 11	16 33	18 54	20 59	22 39	0 02	1 21	2 51
25	4 47	7 02	9 24	11 46	14 07	16 30	18 51	20 55	22 35	23 58	1 17	2 47
26	4 43	6 58	9 20	11 42	14 03	16 26	18 47	20 51	22 31	23 54	1 12	2 44
27	4 39	6 54	9 16	11 38	13 59	16 22	18 43	20 47	22 27	23 50	1 09	2 40
28	4 35	6 50	9 13	11 34	13 56	16 18	18 39	20 43	22 23	23 46	1 05	2 36
29	4 31	6 46	9 09	11 31	13 52	16 14	18 35	20 40	22 19	23 42	1 01	2 32
30	4 27	6 42	9 05	11 27	13 48	16 11	18 32	20 36	22 16	23 38	24 58	2 29
जुला	4 23	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) जुलाई-अग. (July-Aug.)

	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	6 38	9 01	11 23	13 44	16 07	18 28	20 32	22 12	23 34	24 54	2 25	4 19
2	6 34	8 57	11 19	13 40	16 03	18 24	20 28	22 08	23 30	24 50	2 21	4 15
3	6 30	8 53	11 15	13 36	15 59	18 20	20 24	22 04	23 26	24 46	2 17	4 11
4	6 26	8 50	11 11	13 32	15 55	18 16	20 20	22 00	23 22	24 42	2 13	4 07
5	6 22	8 46	11 07	13 28	15 51	18 12	20 16	21 56	23 18	24 38	2 09	4 03
6	6 19	8 42	11 03	13 24	15 47	18 08	20 12	21 52	23 14	24 34	2 05	3 59
7	6 15	8 38	10 59	13 20	15 43	18 05	20 08	21 48	23 10	24 30	2 01	3 55
8	6 11	8 34	10 56	13 17	15 39	18 01	20 04	21 44	23 06	24 27	1 57	3 51
9	6 08	8 30	10 52	13 13	15 35	17 57	20 00	21 40	23 02	24 23	1 54	3 47
10	6 04	8 26	10 48	13 09	15 32	17 53	19 56	21 36	22 58	24 19	1 50	3 43
11	6 00	8 22	10 44	13 05	15 28	17 49	19 52	21 32	22 54	24 15	1 46	3 39
12	5 56	8 18	10 40	13 01	15 24	17 45	19 48	21 28	22 50	24 11	1 42	3 35
13	5 52	8 14	10 36	12 58	15 20	17 41	19 44	21 24	22 46	24 07	1 38	3 31
14	5 48	8 10	10 33	12 54	15 16	17 37	19 40	21 20	22 42	24 03	1 34	3 27
15	5 44	8 07	10 29	12 50	15 12	17 33	19 37	21 17	22 38	24 00	1 31	3 23
16	5 40	8 03	10 25	12 46	15 08	17 29	19 33	21 13	22 34	23 56	1 27	3 19
17	5 36	7 59	10 21	12 42	15 04	17 25	19 29	21 09	22 30	23 52	1 23	3 15
18	5 32	7 55	10 17	12 38	15 00	17 21	19 25	21 05	22 27	23 48	1 19	3 11
19	5 28	7 51	10 13	12 34	14 57	17 17	19 21	21 01	22 23	23 44	1 15	3 07
20	5 24	7 47	10 09	12 30	14 53	17 13	19 17	20 57	22 19	23 40	1 11	3 03
21	5 20	7 43	10 05	12 26	14 49	17 10	19 13	20 53	22 15	23 36	1 07	2 59
22	5 16	7 39	10 01	12 22	14 45	17 06	19 09	20 49	22 11	23 32	1 03	2 55
23	5 12	7 35	9 57	12 18	14 41	17 02	19 05	20 45	22 07	23 28	24 59	2 52
24	5 08	7 31	9 53	12 14	14 37	16 58	19 01	20 41	22 04	23 24	24 55	2 48
25	5 04	7 27	9 49	12 11	14 33	16 54	18 58	20 38	22 00	23 20	24 51	2 44
26	5 00	7 23	9 45	12 07	14 29	16 50	18 54	20 34	21 56	23 16	24 47	2 40
27	4 56	7 19	9 41	12 03	14 25	16 46	18 50	20 30	21 52	23 12	24 43	2 36
28	4 52	7 15	9 37	11 59	14 21	16 42	18 46	20 26	21 48	23 08	24 39	2 33
29	4 48	7 11	9 33	11 55	14 17	16 38	18 42	20 22	21 44	23 04	24 36	2 29
30	4 44	7 07	9 29	11 51	14 13	16 34	18 38	20 18	21 40	23 00	24 32	2 25
31	4 40	7 03	9 25	11 47	14 10	16 31	18 34	20 14	21 36	23 56	24 28	2 21
अग.	4 36	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

अग.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
1	6 59	9 21	11 43	14 06	16 27	18 30	20 10	21 32	22 53	24 24	2 17	4 32
2	6 55	9 17	11 39	14 02	16 24	18 27	20 06	21 28	22 49	24 20	2 13	4 28
3	6 51	9 13	11 35	13 59	16 20	18 23	20 02	21 24	22 45	24 16	2 09	4 24
4	6 47	9 09	11 31	13 55	16 16	18 19	19 59	21 20	22 41	24 12	2 05	4 20
5	6 43	9 06	11 27	13 51	16 12	18 15	19 55	21 16	22 37	24 09	2 01	4 16
6	6 39	9 02	11 23	13 47	16 08	18 11	19 51	21 12	22 34	24 05	1 57	4 12
7	6 35	8 58	11 19	13 43	16 04	18 07	19 47	21 09	22 30	24 01	1 53	4 09
8	6 32	8 54	11 15	13 39	16 00	18 03	19 43	21 05	22 26	23 57	1 49	4 05
9	6 28	8 51	11 11	13 35	15 56	18 00	19 39	21 01	22 22	23 53	1 45	4 01
10	6 24	8 48	11 07	13 31	15 52	17 56	19 36	20 57	22 18	23 49	1 42	3 57
11	6 20	8 44	11 03	13 27	15 48	17 52	19 32	20 53	22 14	23 45	1 38	3 54
12	6 16	8 40	10 59	13 23	15 44	17 48	19 28	20 49	22 10	23 41	1 34	3 50
13	6 12	8 36	10 56	13 19	15 40	17 44	19 24	20 45	22 06	23 37	1 31	3 46
14	6 08	8 32	10 52	13 16	15 36	17 40	19 20	20 42	22 02	23 33	1 27	3 42
15	6 04	8 28	10 48	13 12	15 33	17 36	19 16	20 38	21 59	23 30	1 23	3 38
16	6 00	8 24	10 44	13 08	15 29	17 32	19 12	20 34	21 55	23 26	1 19	3 35
17	5 56	8 20	10 40	13 04	15 25	17 28	19 08	20 30	21 51	23 22	1 15	3 31
18	5 52	8 16	10 36	13 00	15 21	17 24	19 04	20 26	21 47	23 18	1 11	3 27
19	5 48	8 12	10 32	12 56	15 17	17 20	19 00	20 22	21 43	23 14	1 07	3 23
20	5 44	8 08	10 28	12 52	15 13	17 16	18 56	20 18	21 39	23 10	1 03	3 19
21	5 40	8 04	10 24	12 48	15 09	17 12	18 52	20 14	21 35	23 06	0 59	3 15
22	5 36	8 00	10 20	12 44	15 05	17 08	18 48	20 10	21 31	23 02	0 55	3 11
23	5 33	7 56	10 16	12 40	14 01	17 04	18 44	20 06	21 27	22 58	0 51	3 07
24	5 29	7 52	10 13	12 36	14 57	17 00	18 40	20 02	21 23	22 54	0 47	3 03
25	5 25	7 48	10 09	12 32	14 53	16 56	18 36	19 58	21 19	22 50	0 43	2 59
26	5 21	7 44	10 05	12 28	14 49	16 52	18 32	19 54	21 15	22 46	0 40	2 55
27	5 17	7 40	10 01	12 25	14 46	16 49	18 29	19 51	21 12	22 42	0 36	2 51
28	5 13	7 36	9 57	12 21	14 42	16 45	18 25	19 47	21 08	22 38	0 32	2 47
29	5 09	7 32	9 53	12 17	14 38	16 41	18 21	19 43	21 04	22 34	0 28	2 43
30	5 05	7 28	9 49	12 13	14 34	16 37	18 17	19 39	21 00	22 30	0 24	2 39
31	5 01	7 24	9 45	12 09	14 30	16 33	18 13	19 35	20 56	22 26	0 20	2 35
सितं	4 57	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी–समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) सितं.-अक्तू. (Sept.-Oct.)

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 19	9 41	12 05	14 26	16 29	18 09	19 31	20 52	22 22	0 16	2 31	4 53
2	7 15	9 37	12 01	14 22	16 25	18 05	19 27	20 48	22 18	0 12	2 27	4 49
3	7 11	9 33	11 57	14 18	16 21	18 01	19 23	20 44	22 14	0 08	2 24	4 45
4	7 07	9 30	11 53	14 14	16 17	17 57	19 19	20 40	22 10	0 04	2 20	4 41
5	7 03	9 26	11 49	14 10	16 13	17 53	19 15	20 36	22 06	24 00	2 16	4 38
6	6 59	9 22	11 45	14 06	16 09	17 49	19 11	20 32	22 02	23 56	2 12	4 34
7	6 55	9 18	11 41	14 02	16 05	17 45	19 07	20 28	21 58	23 52	2 08	4 30
8	6 51	9 14	11 37	13 58	16 01	17 41	19 03	20 24	21 54	23 48	2 04	4 26
9	6 47	9 10	11 33	13 54	15 57	17 37	19 00	20 20	21 50	23 44	2 00	4 22
10	6 43	9 06	11 29	13 50	15 53	17 33	18 56	20 16	21 46	23 40	1 56	4 18
11	6 39	9 02	11 25	13 46	15 49	17 29	18 52	20 12	21 42	23 36	1 52	4 14
12	6 35	8 58	11 21	13 42	15 45	17 25	18 48	20 08	21 38	23 32	1 48	4 10
13	6 31	8 54	11 17	13 38	15 41	17 21	18 44	20 04	21 34	23 28	1 44	4 06
14	6 27	8 50	11 13	13 34	15 37	17 17	18 40	20 00	21 30	23 24	1 40	4 02
15	6 23	8 46	11 09	13 30	15 33	17 13	18 36	19 56	21 26	23 20	1 36	3 58
16	6 19	8 42	11 05	13 26	15 29	17 09	18 32	19 52	21 22	23 16	1 32	3 54
17	6 15	8 38	11 01	13 22	15 25	17 05	18 28	19 48	21 18	23 12	1 28	3 50
18	6 11	8 34	10 57	13 18	15 21	17 01	18 24	19 44	21 14	23 08	1 24	3 46
19	6 07	8 30	10 53	13 14	15 17	16 57	18 20	19 40	21 10	23 04	1 20	3 42
20	6 03	8 26	10 49	13 10	15 13	16 53	18 16	19 36	21 06	23 00	1 16	3 38
21	5 59	8 22	10 45	13 06	15 09	16 49	18 12	19 32	21 02	22 56	1 12	3 34
22	5 55	8 18	10 41	13 02	15 05	16 45	18 08	19 28	20 58	22 52	1 08	3 30
23	5 51	8 14	10 37	12 58	15 01	16 41	18 04	19 24	20 54	22 48	1 04	3 26
24	5 47	8 10	10 33	12 54	14 57	16 37	18 00	19 20	20 50	22 44	1 00	3 22
25	5 43	8 06	10 29	12 50	14 53	16 33	17 56	19 16	20 46	22 40	0 56	3 18
26	5 39	8 02	10 25	12 46	14 49	16 29	17 52	19 12	20 42	22 36	0 52	3 14
27	5 35	7 58	10 21	12 32	14 45	16 25	17 48	19 08	20 38	22 32	0 48	3 10
28	5 31	7 54	10 17	12 38	14 41	16 21	17 44	19 04	20 34	22 28	0 44	3 06
29	5 27	7 50	10 13	12 34	14 37	16 17	17 40	19 00	20 30	22 24	0 40	3 02
30	5 23	7 46	10 10	12 31	14 34	16 14	17 36	18 57	20 27	22 21	0 36	2 58
अक्तू	5 20	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

अक्तू	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
1	7 42	10 06	12 27	14 30	16 10	17 32	18 53	20 23	22 17	0 32	2 55	5 16
2	7 38	10 02	12 23	14 26	16 06	17 28	18 49	20 19	22 13	0 28	2 51	5 12
3	7 34	9 59	12 19	14 22	16 02	17 24	18 45	20 15	22 09	0 24	2 47	5 08
4	7 30	9 55	12 15	14 18	15 58	17 20	18 41	20 11	22 05	0 21	2 43	5 05
5	7 26	9 51	12 11	14 14	15 54	17 16	18 37	20 08	22 01	0 17	2 40	5 01
6	7 22	9 47	12 07	14 10	15 50	17 12	18 33	20 04	21 57	0 13	2 36	4 58
7	7 18	9 43	12 03	14 06	15 46	17 08	18 29	20 00	21 53	0 09	2 32	4 54
8	7 14	9 39	11 59	14 02	15 42	17 04	18 25	19 56	21 49	0 05	2 28	4 50
9	7 10	9 35	11 55	13 58	15 38	17 01	18 21	19 52	21 45	0 01	2 24	4 46
10	7 06	9 31	11 51	13 54	15 34	16 57	18 17	19 48	21 41	23 57	2 20	4 42
11	7 02	9 27	11 47	13 50	15 30	16 53	18 13	19 44	21 37	23 53	2 16	4 38
12	6 58	9 23	11 43	13 46	15 26	16 49	18 09	19 40	21 33	23 49	2 12	4 34
13	6 55	9 19	11 39	13 42	15 22	16 45	18 05	19 36	21 29	23 45	2 08	4 30
14	6 51	9 15	11 35	13 38	15 18	16 41	18 01	19 32	21 25	23 41	2 04	4 26
15	6 47	9 11	11 31	13 34	15 14	16 37	17 57	19 28	21 21	23 37	2 00	4 22
16	6 44	9 07	11 27	13 30	15 10	16 33	17 53	19 24	21 17	23 33	1 56	4 18
17	6 40	9 03	11 23	13 26	15 06	16 29	17 49	19 20	21 13	23 29	1 52	4 14
18	6 36	8 59	11 19	13 22	15 02	16 25	17 45	19 16	21 09	23 25	1 48	4 10
19	6 32	8 55	11 15	13 18	14 58	16 21	17 41	19 12	21 05	23 21	1 44	4 07
20	6 28	8 51	11 11	13 14	14 54	16 17	17 37	19 08	21 01	23 17	1 40	4 03
21	6 24	8 47	11 07	13 10	14 50	16 13	17 33	19 04	20 57	23 13	1 36	3 59
22	6 20	8 43	11 03	13 06	14 46	16 09	17 29	19 00	20 53	23 09	1 32	3 55
23	6 16	8 39	10 59	13 02	14 42	16 05	17 25	18 56	20 49	23 05	1 28	3 51
24	6 12	8 35	10 55	12 58	14 38	16 01	17 21	18 52	20 45	23 01	1 24	3 47
25	6 09	8 32	10 52	12 54	14 35	15 58	17 18	18 49	20 42	22 58	1 20	3 44
26	6 05	8 28	10 48	12 51	14 31	15 54	17 14	18 45	20 38	22 54	1 16	3 40
27	6 01	8 24	10 44	12 47	14 27	15 50	17 10	18 41	20 34	22 50	1 12	3 36
28	5 57	8 20	10 40	12 43	14 23	15 46	17 06	18 37	20 30	22 46	1 09	3 32
29	5 53	8 16	10 36	12 39	14 19	15 42	17 02	18 33	20 26	22 42	1 05	3 28
30	5 49	8 12	10 32	12 36	14 15	15 38	16 58	18 29	20 22	22 38	1 01	3 24
31	5 45	8 08	10 28	12 32	14 11	15 34	16 54	18 25	20 18	22 34	24 57	3 20
नवं.	5 41	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

नवम्बर

दैनिक लग्न सारणी—समाप्ति काल (भा. स्टैं. टा.)—जम्मू (Jammu) नवं.-दिसं. (Nov.-Dec.)

ता.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
1	8 04	10 25	12 28	14 08	15 30	16 51	18 21	20 15	22 30	24 53	3 16	5 37
2	8 00	10 21	12 24	14 04	15 26	16 47	18 17	20 11	22 26	24 49	3 12	5 34
3	7 56	10 17	12 20	14 00	15 22	16 43	18 14	20 07	22 23	24 46	3 08	5 30
4	7 52	10 13	12 16	13 56	15 18	16 39	18 10	20 03	22 19	24 42	3 04	5 26
5	7 48	10 09	12 12	13 52	15 14	16 35	18 06	19 59	22 15	24 38	3 00	5 22
6	7 44	10 05	12 08	13 48	15 10	16 31	18 02	19 55	22 11	24 35	2 56	5 18
7	7 41	10 01	12 04	13 44	15 06	16 27	17 58	19 51	22 07	24 31	2 53	5 14
8	7 37	9 57	12 00	13 40	15 02	16 23	17 54	19 47	22 03	24 27	2 49	5 10
9	7 33	9 53	11 56	13 36	14 58	16 19	17 50	19 43	21 59	24 23	2 45	5 06
10	7 29	9 49	11 52	13 32	14 54	16 15	17 46	19 39	21 55	24 19	2 41	5 02
11	7 25	9 45	11 48	13 28	14 50	16 11	17 42	19 35	21 51	24 15	2 37	4 58
12	7 21	9 41	11 44	13 24	14 46	16 07	17 38	19 31	21 47	24 11	2 33	4 54
13	7 17	9 37	11 40	13 20	14 42	16 03	17 34	19 27	21 43	24 07	2 29	4 50
14	7 13	9 33	11 36	13 16	14 38	15 59	17 30	19 23	21 39	24 03	2 25	4 46
15	7 09	9 29	11 32	13 12	14 34	15 55	17 26	19 19	21 35	23 59	2 21	4 42
16	7 05	9 25	11 28	13 08	14 30	15 51	17 22	19 15	21 31	23 55	2 17	4 38
17	7 00	9 21	11 24	13 04	14 26	15 47	17 18	19 11	21 27	23 51	2 13	4 34
18	6 56	9 17	11 20	13 00	14 22	15 43	17 14	19 07	21 23	23 47	2 09	4 30
19	6 52	9 13	11 16	12 56	14 18	15 39	17 10	19 03	21 19	23 43	2 05	4 26
20	6 48	9 09	11 12	12 52	14 14	15 35	17 06	18 59	21 15	23 39	2 01	4 22
21	6 44	9 05	11 08	12 48	14 10	15 31	17 02	18 55	21 11	23 35	1 57	4 18
22	6 40	9 02	11 05	12 45	14 07	15 28	16 59	18 52	21 08	23 32	1 54	4 15
23	6 37	8 58	11 01	12 41	14 03	15 24	16 55	18 48	21 04	23 28	1 50	4 11
24	6 33	8 54	10 57	12 37	13 59	15 20	16 51	18 44	21 00	23 24	1 46	4 07
25	6 29	8 50	10 53	12 33	13 55	15 16	16 47	18 40	20 56	23 20	1 42	4 03
26	6 25	8 46	10 49	12 29	13 51	15 12	16 43	18 36	20 52	23 16	1 38	3 59
27	6 21	8 42	10 45	12 25	13 47	15 08	16 39	18 32	20 48	23 12	1 34	3 55
28	6 17	8 38	10 41	12 21	13 44	15 04	16 35	18 28	20 44	23 08	1 30	3 51
29	6 13	8 35	10 38	12 18	13 40	15 01	16 32	18 25	20 40	23 04	1 26	3 47
30	6 10	8 31	10 34	12 14	13 36	14 57	16 28	18 21	20 36	23 00	1 22	3 43
दिसं	6 06	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दिसं	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
1	8 27	10 30	12 10	13 32	14 53	16 24	18 17	20 32	22 56	1 18	3 39	6 02
2	8 23	10 26	12 06	13 28	14 49	16 20	18 13	20 28	22 52	1 15	3 36	5 58
3	8 19	10 22	12 02	13 24	14 45	16 16	18 09	20 24	22 48	1 11	3 32	5 54
4	8 15	10 18	11 58	13 20	14 41	16 12	18 05	20 20	22 44	1 07	3 28	5 50
5	8 11	10 14	11 54	13 16	14 37	16 08	18 01	20 16	22 40	1 03	3 24	5 46
6	8 07	10 10	11 50	13 12	14 33	16 04	17 57	20 12	22 36	0 59	3 20	5 42
7	8 03	10 06	11 46	13 09	14 29	16 00	17 53	20 08	22 32	0 55	3 16	5 38
8	7 59	10 02	11 42	13 05	14 25	15 56	17 49	20 04	22 28	0 51	3 12	5 34
9	7 55	9 58	11 38	13 02	14 21	15 52	17 45	20 00	22 24	0 47	3 08	5 30
10	7 52	9 55	11 35	12 58	14 18	15 49	17 42	19 57	22 20	0 43	3 05	5 27
11	7 48	9 51	11 31	12 54	14 14	15 45	17 38	19 53	22 16	0 39	3 01	5 23
12	7 44	9 47	11 27	12 50	14 10	15 41	17 34	19 49	22 12	0 35	2 57	5 19
13	7 40	9 43	11 23	12 46	14 06	15 37	17 30	19 45	22 08	0 31	2 53	5 15
14	7 36	9 39	11 19	12 42	14 02	15 33	17 26	19 41	22 04	0 27	2 49	5 11
15	7 32	9 35	11 15	12 38	13 58	15 29	17 22	19 37	22 00	0 23	2 45	5 07
16	7 28	9 31	11 11	12 34	13 54	15 25	17 18	19 33	21 56	0 19	2 41	5 03
17	7 24	9 27	11 07	12 30	13 50	15 21	17 14	19 29	21 52	0 15	2 37	4 59
18	7 20	9 23	11 04	12 26	13 46	15 17	17 10	19 25	21 48	0 11	2 33	4 55
19	7 16	9 19	11 00	12 22	13 42	15 13	17 06	19 21	21 44	0 07	2 29	4 51
20	7 12	9 15	10 56	12 18	13 38	15 09	17 02	19 17	21 40	0 03	2 25	4 47
21	7 08	9 11	10 52	12 14	13 34	15 05	16 58	19 13	21 36	23 59	2 21	4 43
22	7 04	9 07	10 48	12 10	13 30	15 01	16 54	19 10	21 32	23 55	2 17	4 39
23	7 00	9 03	10 44	12 06	13 26	14 57	16 50	19 06	21 28	23 51	2 13	4 35
24	6 56	9 00	10 40	12 02	13 22	14 53	16 47	19 02	21 25	23 47	2 09	4 31
25	6 52	8 56	10 36	11 58	13 18	14 49	16 43	18 58	21 21	23 43	2 05	4 27
26	6 49	8 52	10 32	11 54	13 15	14 45	16 39	18 54	21 17	23 39	2 01	4 23
27	6 45	8 48	10 28	11 50	13 11	14 42	16 35	18 50	21 13	23 35	1 57	4 20
28	6 41	8 44	10 24	11 44	13 07	14 38	16 31	18 46	21 09	23 31	1 53	4 16
29	6 37	8 40	10 20	11 42	13 03	14 34	16 27	18 42	21 05	23 27	1 49	4 12
30	6 33	8 36	10 16	11 38	12 59	14 30	16 23	18 38	21 01	23 23	1 45	4 08
31	6 29	8 32	10 12	11 34	12 55	14 26	16 19	18 34	20 57	23 19	1 41	4 04
दिसं	6 25	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०′ (अंश कला) होगा (१३°-२०′) ÷ 4 = 3°—20′ शून्य से प्रारम्भ होकर प्रतयेक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०-००-००	अश्विनी (१) मेषे	४-००-००	मघा (१) सिंहे	८-००-००	मूल (१) धनु
०-०३-२०	,, (२) ,,	४-०३-२०	,, (२) ,,	८-०३-२०	,, (२) ,,
०-०६-४०	,, (३) ,,	४-०६-४०	,, (३) ,,	८-०६-४०	,, (३) ,,
०-१०-००	,, (४) ,,	४-१०-००	,, (४) ,,	८-१०-००	,, (४) ,,
०-१३-२०	भरणी (१) ,,	४-१३-२०	पू.फा. (१) ,,	८-१३-२०	पू.षा. (१) ,,
०-१६-४०	,, (२) ,,	४-१६-४०	,, (२) ,,	८-१६-४०	,, (२) ,,
०-२०-००	,, (३) ,,	४-२०-००	,, (३) ,,	८-२०-००	,, (३) ,,
०-२३-२०	,, (४) ,,	४-२३-२०	,, (४) ,,	८-२३-२०	,, (४) ,,
०-२६-४०	कृतिका (१) मेषे	४-२६-४०	उ.फा. (१) ,,	८-२६-४०	उ.षा. (१) ,,
१-००-००	,, (२) वृषे	५-००-००	,, (२) कन्या	९-००-००	उषा (२) मक
१-०३-२०	,, (३) ,,	५-०३-२०	,, (३) ,,	९-०३-२०	,, (३) ,,
१-०६-४०	,, (४) ,,	५-०६-४०	,, (४) ,,	९-०६-४०	,, (४) ,,
१-१०-००	रोहिणी (१) ,,	५-१०-००	हस्ते (१) ,,	९-१०-००	श्रव (१) ,,
१-१३-२०	,, (२) ,,	५-१३-२०	,, (२) ,,	९-१३-२०	,, (२) ,,
१-१६-४०	,, (३) ,,	५-१६-४०	,, (३) ,,	९-१६-४०	,, (३) ,,
१-२०-००	,, (४) ,,	५-२०-००	,, (४) ,,	९-२०-००	,, (४) ,,
१-२३-२०	मृगशिर (१) ,,	५-२३-२०	चित्रा (१) ,,	९-२३-२०	धनि (१) ,,
१-२६-४०	,, (२) ,,	५-२६-४०	,, (२) ,,	९-२६-४०	,, (२) ,,
२-००-००	,, (३) मिथुन	६-००-००	चित्रा (३) तुला	१०-००-००	,, (३) कुंभे
२-०३-२०	,, (४) ,,	६-०३-२०	,, (४) ,,	१०-०३-२०	,, (४) ,,
२-०६-४०	आर्द्रा (१) ,,	६-०६-४०	स्वाती (१) ,,	१०-०६-४०	शतभिषा (१) ,,
२-१०-००	,, (२) ,,	६-१०-००	,, (२) ,,	१०-१०-००	,, (२) ,,
२-१३-२०	,, (३) ,,	६-१३-२०	,, (३) ,,	१०-१३-२०	,, (३) ,,
२-१६-४०	,, (४) ,,	६-१६-४०	,, (४) ,,	१०-१६-४०	,, (४) ,,
२-२०-००	पुनर्वसु (१) ,,	६-२०-००	विशाखा (१) ,,	१०-२०-००	पूभा (१) ,,
२-२३-२०	,, (२) ,,	६-२३-२०	,, (२) ,,	१०-२३-२०	,, (२) ,,
२-२६-४०	,, (३) ,,	६-२६-४०	,, (३) ,,	१०-२६-४०	,, (३) ,,
३-००-००	पुनर्वसु (४) कर्के	७-००-००	,, (४) वृश्चिके	११-००-००	पूभा (४) मीने
३-०३-२०	पुष्ये (१) ,,	७-०३-२०	अनुराधा (१) ,,	११-०३-२०	उ.भा. (१) ,,
३-०६-४०	,, (२) ,,	७-०६-४०	,, (२) ,,	११-०६-४०	,, (२) ,,
३-१०-००	,, (३) ,,	७-१०-००	,, (३) ,,	११-१०-००	,, (३) ,,
३-१३-२०	,, (४) ,,	७-१३-२०	,, (४) ,,	११-१३-२०	उ.भा. (४) ,,
३-१६-४०	आश्ले (१) ,,	७-१६-४०	ज्ये. (१) ,,	११-१६-४०	रेवती (१) ,,
३-२०-००	,, (२) ,,	७-२०-००	,, (२) ,,	११-२०-००	,, (२) ,,
३-२३-२०	,, (३) ,,	७-२३-२०	,, (३) ,,	११-२३-२०	,, (३) ,,
३-२६-४०	,, (४) ,,	७-२६-४०	,, (४) ,,	११-२६-४०	रेवती (४) ,,
				००-००-००	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-00′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यतः अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 1999 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें +2 मिनट प्राप्त हुए। अतः सन् 1999 में **मेष** लग्न 7/31 पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१
१९९८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००९	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	+०	–१	–१
२०१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३१	६ ००
15	२	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	३	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	४	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	५	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	६	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	७	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	८	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	९	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	१०	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	११	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१२	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१३	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१४	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१५	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१६	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१७	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१८	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	१९	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२०	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२१	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२२	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२३	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२४	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२५	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२६	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२७	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२८	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	२९	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३०	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये.	५ ३९	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१६	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	३२	५ ३१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३
15	आ.	५ २८	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –	– –

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
15	१	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	२	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	३	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	०० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	४	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	५	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	६	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	७	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	८	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	९	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	१०	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	११	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१२	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१३	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१४	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१५	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१६	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१७	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१८	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	१९	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२०	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२१	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८ ०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२२	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२३	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२४	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२५	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२६	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२७	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२८	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	२९	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३०	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३१	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू.	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	३१	६ ३९	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७
17	का.	६ ३५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
17	१	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	२	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	३	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	४	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	५	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	६	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	७	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	८	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	९	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	१०	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	११	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१२	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१३	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१४	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१५	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१६	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१७	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१८	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	१९	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२०	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२१	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२२	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२३	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२४	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२५	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२६	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२७	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२८	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	२९	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	३०	७ ०३	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७
16	मा.	६ ५९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	२	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	३	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	४	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	५	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	६	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	७	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	८	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	९	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	१०	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	११	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१२	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१३	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१४	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१५	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१६	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१७	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१८	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	१९	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२०	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२१	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२२	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२३	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३ ७	५ २८
9	२४	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२५	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२६	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२७	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२८	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	२९	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	३०	७ २५	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१
16	पौ.	७ २१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी — दिसं.-जन. (पौष) — भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	२	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	०० १४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	३	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	४	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	५	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	६	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	७	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	८	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	९	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	१०	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	११	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१२	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१३	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१४	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ० ६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१५	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१६	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१७	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१८	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	१९	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२०	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२१	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२२	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२३	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२४	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२५	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२६	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२७	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२८	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	२९	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी — जन.-फर. (माघ) — भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	३०	७ १७	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२
13	फा.	७ १४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेज़ी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेज़ी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	२	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	३	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	४	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	५	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	६	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	७	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	८	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	९	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	१०	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	११	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१२	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१३	७ ५१	९ १३	१० ४६	१२ ४०	१४ ५४	१७ १७	१९ ३७	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
26	१४	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
27	१५	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
28	१६	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ ११
मार्च	१७	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१८	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	१९	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२०	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२१	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२२	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२३	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२४	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२५	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२६	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२७	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२८	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	२९	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	३१	६ ०८	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३
14	वै.	६ ०४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (−) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**—मान लो आपने 16 जुलाई, 2013 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें −८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**—नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	−५	−५	−५	−३	−३	−६	−५	−५	−४	−५	−५	−५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	−१	−३	−४	−१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	−१	−५	−४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	−१५	−१२	−१३	−१५	−२१	−२९	−३४	−३७	−३६	−३२	−२६	−२०
अलीगढ़	−४	−३	−३	−५	−७	−१३	−१६	−१७	−१७	−१३	−११	−७
अयोध्या	−१८	−१८	−१५	−१९	−२१	−२५	−२८	−३०	−२८	−२७	−२४	−१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	−४	−६	−७	−७	−४	+१	+४
आगरा	−४	−२	−३	−६	−७	−१२	−१५	−१६	−१६	−१३	−१०	−६
अगरतला	−५०	−४७	−४६	−५३	−६०	−६७	−७५	−७८	−७६	−७३	−६४	−५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	−८	−१४	−१९	−१७	−१०	−१	+७
ऊना (हि.प्र.)	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−२	−३
उधमपुर	−२	−२	−२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	−७	−१४	−१९	−१७	−१०	−२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	−४	−८	−६	−१	+६	+१३
करनाल	−५	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−४	−३
कालका	−५	−५	−५	−४	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−४	−३
कुरुक्षेत्र	−४	−३	−३	−४	−५	−६	−६	−७	−७	−५	−३	−३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	−१	−१	+१	−०	−०	−०	−०	−१
कोटखाई	−७	−७	−७	−७	−७	−८	−७	−७	−७	−६	−६	−७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	−१	−६	−११	−१४	−१३	−८	−२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	−०	−०	−१	+०	−०	−०	−०	−०	−१
काठमण्डू	−३२	−३१	−३१	−३०	−३३	−३८	−४०	−४२	−४२	−४०	−३६	−३३
कोलकत्ता	−३७	−३२	−३५	−४०	−४९	−५८	−६४	−६९	−६८	−६१	−५३	−४४
कानपुर	−११	−१०	−१०	−१३	−१८	−२२	−२५	−२७	−२६	−२१	−१७	−१३
कांगड़ा	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
कुल्लू	−७	−७	−७	−६	−६	−६	−५	−४	−४	−४	−५	−५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
कठुआ	−२	−२	−२	−१	−०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	−१	−१	−१	−०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	−२	−३	−३	−२	−२	−३	−३	−३	−३	−२	−२	−३
ग्वालियर	−२	+१	+०	−५	−९	−१२	−१६	−१८	−१७	−१३	−८	−५
गुरदासपुर	−१	−१	−१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	−२३	−२१	−२२	−२४	−२७	−३२	−३५	−३७	−३६	−३२	−२७	−२४
गुड़गांव	−१	−१	−१	−३	−३	−७	−१०	−११	−११	−९	−६	−४
गोहाटी	−५५	−४८	−५३	−५५	−६१	−६८	−७२	−७५	−७३	−६९	−६४	−६०
गाज़ियाबाद	−२	−१	−१	−२	−२	−७	−९	−११	−११	−९	−६	−३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	−२६	−१८	−२३	−२७	−३३	−४२	−४७	−५१	−४१	−४४	−३७	−३२
चण्डीगढ़	−५	−५	−५	−५	−६	−६	−६	−६	−६	−६	−६	−५
चिन्तपूर्णी	−२	−१	−२	−२	−३	−३	−३	−२	−२	−२	−२	−१
चम्बा	−६	−६	−६	−५	−४	−२	+१	+२	+१	+०	+३	−४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	−३	−७	−९	−९	−७	−२	+३
ज्वालामुखी	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४
जम्मू	−१	−२	−१	−१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	−२	−१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	−१	−३	−५	−६	−७	−७	−५	−४	−१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	−२	+१	+०	−६	−११	−१७	−२२	−२५	−२३	−१८	−१३	−७
जगन्नाथपुरी	−२२	−१६	−१३	−२६	−३७	−४९	−५९	−६४	−६३	−५५	−४४	−३२
दिल्ली	−२	−१	−१	−४	−४	−८	−११	−१२	−१२	−१०	−७	−५
दुर्ग (म. प्र.)	−६	−०	−२	−१०	−१९	−२७	−३७	−४२	−४२	−३१	−२१	−१४
देहरादून	−१०	−१०	−९	−१०	−९	−११	−१२	−१२	−१३	−११	−९	−९
धर्मशाला	−५	−५	−६	−५	−५	−५	−५	−५	−४	−४	−४	−४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन(हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन(हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-११	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ(उ.प्र.)	-६	-३	-४	-७	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के लिए उपयोगी रत्न (नग) एवं उपरत्न

लेखक–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी (M.A., LLB.)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव के निवारण हेतु उपयुक्त ग्रह रत्न (नग) धारण करना अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अपनी जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं अपनी राशि के अनुसार ही उपयुक्त रत्न (नग) का चयन करना चाहिए, **अन्यथा कई बार लाभ की अपेक्षा गलत नग धारण करने से हानि की सम्भावना हो जाती है।** उनका परिचय से पूर्व यदि सुयोग्य ज्योतिषी से परामर्श कर लिया जावे तो लाभप्रद होगा। धारण करने की विधि, उपयोगादि का संक्षिप्त विवरण लिख रहे हैं–

सूर्य रत्न माणक (RUBY)

संस्कृत में इसे माणिक्य, पद्मराग, हिन्दी में माणक, **मानिक**, अंग्रेज़ी में रूबी कहते हैं। सूर्य रत्न होने से इस ग्रह रत्न का अधिष्ठाता सूर्यदेव है।

पहचान विधि–(1) असली माणिक्य लाल सुर्ख वर्ण का पारदर्शी, स्निग्ध-कान्तियुक्त और कुछ भारीपन वज़न लिए होते हैं। अर्थात् हथेली में रखने से हल्की ऊष्णता एवं सामान्य से कुछ अधिक वज़न का अनुभव होता है। (2) **कांच के पात्र में** रखने से इसकी हल्की लाल किरणें चारों ओर से निकलती दिखाई देंगी। (3) **गाय के दूध में** असली माणिक्य रखा जाये तो दूध का रंग गुलाबी दिखलाई देगा।

धारण विधि–माणिक्य रत्न रविवार को सूर्य की होरा में, कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा **नक्षत्रों, रविपुष्य योग में सोने अथवा ताँबे की अंगूठी में जड़वा कर तथा सूर्य के बीजमन्त्रों द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ३, ५ ७ अथवा ९ रत्ति के क्रम से होना चाहिए।**

सूर्य बीज मन्त्र–ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रौं सः सूर्याय नमः

धारण करने के पश्चात् गायत्री मन्त्र की ३ माला का पाठ, हवन एवं **सूर्य भगवान को** विधिपूर्वक अर्घ्य प्रदान करना तथा ताम्र बर्तन, कनक, नारियल, मानक, गुड़, लाल वस्त्रादि सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना चाहिए।

विधिपूर्वक माणिक्य धारण करने से राजकीय क्षेत्रों में प्रतिष्ठा, भाग्योन्नति, पुत्र संतान लाभ, तेजबल में वृद्धिकारक तथा हृदय रोग, चक्षुरोग, रक्त विकार, शरीर दौर्बल्यादि में लाभकारी होता है।

मेष, कर्क, सिंह तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि अथवा इसी लग्न वालों को मानक धारण करना शुभ लाभप्रद रहता है अथवा जिनकी चन्द्र कुण्डली में सूर्य योगकारक होता हुआ भी प्रभावी न हो रहा हो, उन्हें भी माणिक्य धारण शुभ रहता है।

चन्द्र-रत्न मोती (PEARL)

चन्द्र-रत्न मोती को संस्कृत में मौक्तिक, चन्द्रमणि इत्यादि, हिन्दी-पंजाबी में मोती एवं **अंग्रेज़ी** में पर्ल **(Pearl) कहा जाता है। मोती या मुक्ता रत्न का स्वामी चन्द्रमा है।**

पहचान–शुद्ध एवं श्रेष्ठ मोती गोल, श्वेत, उज्ज्वल, चिकना,चन्द्रमा के समान कान्तियुक्त, निर्मल एवं हल्कापन लिए होता है।

परीक्षा–(1) गोमूत्र को किसी मिट्टी के बर्तन में डालकर उसमें मोती रात भर रखें, यदि वह अखण्डित रहे तो मोती को शुद्ध (सुच्चा) समझें। (2) पानी से भरे शीशे के गिलास में मोती डाल दें यदि पानी से किरणें सी निकलती दिखलाई पड़ें, तो मोती असली जानें। सुच्चा मोती के अभाव में **चन्द्रकान्त मणि** अथवा **सफेद पुखराज** धारण किया जा सकता है।

असली शुद्ध मोती धारण करने से **मानसिक शक्ति का विकास, शारीरिक सौन्दर्य की वृद्धि, स्त्री एवं धनादि सुखों की प्राप्ति होती है। इसका प्रयोग स्मरण शक्ति में भी वृद्धिकारक होता है।**

रोग शान्ति–चिकित्सा शास्त्र में भी मोती या मुक्ता भस्म का उपयोग मानसिक रोगों, मूर्छा-मिरगी, उन्माद, रक्तचाप, उदर-विकार, पत्थरी, दन्तरोगादि में।

धारण विधि–मोती चाँदी की अंगूठी में शुक्ल पक्ष के सोमवार को पूर्णिमा के दिन, चन्द्रमा की होरा में गंगा जल, कच्चा दूध व पाण्डुलादि में डूबोते हुए **'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'** के बीजमन्त्र का पाठ ११००० की संख्या में करने के पश्चात् धारण करना चाहिए। तदुपरान्त चावल, चीनी, क्षीर, श्वेत फल एवं वस्त्रादि का दान करना शुभ होगा।

मोती २, ४, ६ अथवा ११ रत्ति का कनिष्ठका अंगुली में **हस्त, रोहिणी अथवा श्रवण** नक्षत्र में सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा बताए गए मुहूर्त्त में धारण करना चाहिए। **मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन राशि/लग्न वालों को मोती शुभ रहता है।**

चन्द्रमा का उपरत्न–चन्द्रकान्त मणि (Moon Light Stone)–यह उपरत्न चाँदनी जैसे चमक लिए हुए चन्द्रमा का 'उपरत्न' (मोती का पूरक) माना जाता है। इसको हिलाने से, इस पर एक दुधिया जैसी प्रकाश रेखा चमकती है। यह रत्न भी मानसिक शान्ति, प्रेरणा, स्मरण शक्ति में वृद्धि तथा प्रेम में सफलता प्रदान करता है। लाभ की दृष्टि से चन्द्रकान्त मणि मलाई के रंग का (सफेद और पीले के बीच का) उत्तम माना जाता है। **इसे चाँदी में ही धारण करना चाहिए।**

मंगल-रत्न मूंगा (CORAL)

इसे **संस्कृत** में अंगारकमणि तथा **अंग्रेज़ी** में **कोरल** (Coral) कहते हैं।

गोल, चिकना, चमकदार एवं औसत से अधिक वज़नी, सिन्धूरी से मिलते-जुलते रंग का मूंगा श्रेष्ठ माना जाता है। इसका स्वामी ग्रह **मंगल** है।

परीक्षा–(१) **असली मूंगे को** खून में डाल दिया जाये तो उसके चारों ओर गाढ़ा रक्त जमा होने लगता है। (२) **असली मूंगा यदि** गौ के दूध में डाल दिया जाए तो उसमें लाल रंग की झाई सी दीखने लगती है।

श्रेष्ठ जाति का मूंगा धारण करने से **भूमि, पुत्र एवं भ्रातृ सुख, नीरोगता** आदि की प्राप्ति होती है। इसके **अतिरिक्त रक्त-विकार, भूत-प्रेत बाधा, दुर्बलता, मन्दाग्नि, हृदय-रोग, वायु-कफादि विकार, पेट विकारादि में मूंगे की भस्म अथवा मिट्टी** का प्रयोग किया जाता है। **मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि** एवं लग्न वालों को सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करना लाभप्रद होगा।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के मंगलवार को प्रातः मंगल की होरा में मृगशिर, चित्रा या धनिष्ठा

नक्षत्र में सोने या तांबे के अंगूठी में जड़वा कर, बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली में ६, ८, १० या १२ रत्ति के वज़न में धारण करना कल्याणकर होता है। धारणोपरान्त मंगल स्तोत्र एवं मंगल ग्रह का दान करना शुभ होता है।

भौम बीज मन्त्र–ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः

शारीरिक स्वास्थ्य एवं कुं. में मंगल नीच राशिस्थ हो तो सफेद मूँगा भी धारण किया जाता है।

बुध रत्न पन्ना (EMERALD)

''पन्ना'' बुध ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में मरकतमणि, फारसी में जमरूद व अंग्रेज़ी में इमराल्ड (Emerald) । पन्ना रत्न हरे रंग, स्वच्छ, पारदर्शी कोमल, चिकना व चमकदार होता है।

परीक्षा–(1) शीशे के गिलास में साफ पानी और पन्ना डाल दिया जाए तो हरी किरणें निकलती दिखाई देंगी। (2) शुद्ध पन्ने को हाथ में लेने पर वह हल्का, कोमल व आँखों को शीतलता प्रदान करता है।

गुण–'पन्ना' धारण करने से **बुद्धि तीव्र एवं स्मरण शक्ति बढ़ती है। विद्या, बुद्धि, धन एवं व्यापार में वृद्धि के लिए** लाभप्रद माना जाता है। पन्ना सुख एवं **आरोग्यकारक** भी है। **यह रत्न जादू-टोने, रक्त विकार, पथरी, बहुमूत्र, नेत्र रोग, दमा, गुर्दे के विकार, पाण्डु, मानसिक विकलतादि रोगों में लाभकारी माना जाता है।**

धारण विधि–यह नग शुक्ल पक्ष के बुधवार को अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, पू.फा. अथवा पुष्य नक्षत्रों में अथवा बुध की होरा में सोने की अंगूठी में दाएं हाथ की कनिष्ठिका (छोटी) अंगुली में बुधग्रह के बीजमन्त्र से अभिमंत्रित करते हुए धारण करना चाहिए। इसका वज़न ३, ६, ७ रत्ति होना चाहिए।

बुध बीज मन्त्र–ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को विशेष लाभप्रद रहता है।

गुरु-रत्न पुखराज (TOPAZ)

पुखराज गुरु (बृहस्पति) ग्रह का मुख्य रत्न है। **संस्कृत** में इसे पुष्प राजा, **हिन्दी में पुखराज,** व अंग्रेज़ी में टोपाज (Topaz) कहते हैं।

पहचान विधि–जो पुखराज स्पर्श में **चिकना, हाथ में लेने पर कुछ भारी लगे, पारदर्शी, प्राकृतिक चमक से युक्त** हो वह **उत्तम कोटि** का माना जाता है।

परीक्षा–(i) जहां किसी विषैले कीड़े ने काटा हो, वहां पर असली पुखराज घिस कर लगाने से विष उतर जाता है। (ii) चौबीस घण्टे कच्चे दूध में रखने के बाद यदि चमक में अन्तर न पड़े तो पुखराज असली होगा। इत्यादि।

गुण–पुखराज धारण करने से **बल, बुद्धि, स्वास्थ्य एवं आयु** की वृद्धि होती है। **वैवाहिक सुख, पुत्र सन्तान कारक एवं धर्म-कर्म** में प्रेरक होता है। प्रेत-बाधा का निवारण एवं स्त्री के **विवाहसुख की बाधा को दूर करने में** सहायक होता है।

औषधी प्रयोग–इसको वैद्य के परामर्शानुसार केवड़ा एवं शहदादि के साथ देने से **पीलिया, तिल्ली, पाण्डु रोग, खांसी, दन्त रोग, मुख की दुर्गन्ध, बवासीर, मन्दाग्नि, पित्त-ज्वरादि** में लाभदायक होता है।

धारण विधि–पुखराज रत्न ३, ५, ७, ९ या १२ रत्ति के वजन का सोने की अंगूठी में जड़वा कर तर्जनी अंगुली में धारण करें, सुवर्ण या ताम्र बर्तन में कच्चा दूध, गंगाजल, पीले पुष्पों से एवं **''ऊँ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः''** के बीज मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके धारण करना चाहिए। मन्त्र संख्या १९ हजार।

यह नग शुक्ल पक्ष के गुरुवार की होरा में, अथवा गुरुपुष्य योग में या पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में धारण करना चाहिए।

पुखराज धनु, मीन राशि के अतिरिक्त मेष, कर्क, वृश्चिक राशि वालों को लाभप्रद रहता है। धारण करने के पश्चात् गुरू से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना शुभ होता है।

गुरु का उपरत्न–सुनैला–इसे पुखराज का उपरत्न माना जाता है। पुखराज मूल्यवान होने के कारण सुनैला को उसके पूरक के रूप में धारण किया जा सकता है। श्रेष्ठ सुनैला हल्के पीले रंग (सरसों के जैसा पीलापन) का होता है। कई बार पुखराज से अधिक पीलापन लिए होता है तथा आंशिक मात्रा में पुखराज के समान ही उपयोगी होता है। धारण विधि पुखराज के समान ही होगी।

शुक्र-रत्न 'हीरा' (DIAMOND)

शुक्र ग्रह का मुख्य प्रतिनिधित्व 'हीरा' है।

संस्कृत में इसे वज्रमणि, **हिन्दी** में हीरा तथा अंग्रेज़ी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

हीरा अत्यन्त चमकदार प्रायः श्वेत वर्ण का होता है।

पहचान–अत्यन्त चमकदार, चिकना, कठोर, पारदर्शी एवं किरणों से युक्त हीरा असली होता है।

परीक्षा–(i) धूप में यदि हीरा रख दिया जाये तो उसमें से इन्द्रधनुष जैसी किरणें दिखाई देती हैं। (ii) तोतले बच्चे के मुंह में रखने से बच्चा ठीक से बोलने लगता है। (iii) अन्धेरे में जुगनू की भान्ति चमकता है।

गुण–हीरे में **वशीकरण करने की विशेष शक्ति होती है।** इसके पहनने से **वंश-वृद्धि, धन-लक्ष्मी व सम्पत्ति की वृद्धि, स्त्री एवं सन्तान सुख की प्राप्ति व स्वास्थ्य** में लाभ होता है। **वैवाहिक सुख** में भी वृद्धिकारक माना जाता है।

औषधीय गुण–हीरे की भस्म शहद-मलाई आदि के साथ ग्रहण करने से अनेक रोगों में लाभ होता है जैसे–दौर्बल्यता, नपुंसकता, वायु प्रकोप, मन्दाग्नि, वीर्य विकार, प्रमेह दोष, हृदय रोग, श्वेत प्रदर, विषैला व्रण, बच्चों में सूखा रोग, मानसिक कमज़ोरी इत्यादि।

धारण विधि–शुक्ल पक्ष के शुक्रवार वाले दिन, शुक्र की होरा में, **भरणी, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र**, एक रत्ति या इससे अधिक वज़न का हीरा सोने की अंगूठी में जड़वा कर शुक्र के बीज मन्त्र **(ॐ द्रां, द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः)** का 16 हज़ार की संख्या में जाप करके शुभ मुहुर्त्त में धारण करना चाहिए। हीरा मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने के दिन शुक्र ग्रह से सम्बन्धित वस्तुएं जैसे दूध, चाँदी, दही, मिश्री, चावल, श्वेत वस्त्र, चन्दनादि का दान यथाशक्ति करना चाहिए।

हीरा (धारण करने की तिथि से) सात वर्ष पर्यन्त प्रभावकारी बना रहता है। **हीरा वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ राशि वालों को लाभदायक रहता है।**

शुक्र के उपरत्न–(i) फिरोज़ा–नीले आकाशीय रंग जैसा यह नग शुक्र का उपरत्न माना गया है। यह रत्न भूत, प्रेत, दैवी आपदा तथा आने वाले कष्टों से धारक की रक्षा करता है। यदि इस रत्न को कोई भेंटस्वरूप प्राप्त करके पहनेगा तो अधिक प्रभावशाली रहेगा। हल्के-प्रखर चमकदार रंग वाला रत्न उत्तम होता है। कोई भी कष्ट या रोग आने से पहले यह रत्न अपना रंग बदल लेता है। नेत्र रोग, सौन्दर्य, सिर दर्द, विषादि रोगों में विशेष लाभकारी रहता है।

(ii) ओपल (Opel)–यह भी शुक्र का अन्य उपरत्न है, इसको धारण करने से सदाचार, सदचिन्तन तथा धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहती है। अधिक लोकप्रिय नहीं है। इसके अतिरिक्त शुक्र के अन्य भी बहुत से उपरत्न प्रचलित हैं।

शनि रत्न नीलम (SAPHIRE)

नीलम शनिग्रह का मुख्य रत्न है। हिन्दी में नीलम तथा अंग्रेज़ी में सैफायर (Saphire) कहते हैं।

पहचान–असली नीलम चमकीला, चिकना, मोरपंख के समान वर्ण जैसा, नीली किरणों से युक्त एवं पारदर्शी होगा।

परीक्षा–(i) असली नीलम को गाय के दूध में डाल दिया जाए तो दूध का रंग नीला लगता है। (ii) पानी से भरे कांच के गिलास में डाला जाए नीली किरणें दिखाई देंगी। (iii) सूर्य की धूप में रखने से नीले रंग की किरणें दिखाई देंगी।

गुण–नीलम धारण करने से धन-धान्य, यश-कीर्ति, बुद्धि चातुर्य, सर्विस एवं व्यवसाय तथा वंश में वृद्धि होती है। स्वास्थ्य सुख का लाभ होता है।

ध्यान रहे, बहुधा नीलम चौबीस घण्टे के भीतर ही प्रभाव करना शुरू कर देता है। यदि नीलम अनुकूलन न बैठे तो भारी नुक्सान की आशंका हो जाती है। अतएव परीक्षा के तौर पर कम से कम ३ दिन तक पास रखने पर यदि बुरे स्वप्न आएं, रोग-उत्पन्न हो या चेहरे की बनावट में अन्तर आ जाए तो नीलम मत पहनें।

रोग शान्ति–नीलम धारण करने या औषधि रूप में ग्रहण करने से दमा, क्षय, कुष्ट रोग, हृदय रोग, अजीर्ण, मूत्राशय सम्बन्धी रोगों में लाभकारी है।

धारण विधि–नीलम ५, ७, ९, १२ अथवा अधिक रत्ति के वजन का, पंचधातु, लोहे अथवा सोने की अंगूठी में शनिवार को शनि की होरा में एवं पुष्य, उ.भा., चित्रा, स्वा, थनि या शतभिषा नक्षत्रों में शनि के बीज मन्त्र ॐ प्रां. प्रीं. प्रौं. सः शनये नमः मन्त्र से २३००० की संख्या में अभिमन्त्रित करके मध्यमा अंगुली में धारण करें। तत्पश्चात् शनि की वस्तुओं का दान दक्षिणा सहित करना कल्याणकारी होगा।

राहु रत्न–गोमेद (ZIRCON)

राहु रत्न गोमेद को संस्कृत में गोमेदक, अंग्रेज़ी झिरकन (Zircon) कहते हैं। गोमेद का रंग गोमूत्र के समान हल्के पीले रंग का, कुछ लालिमा तथा श्यामवर्ण होता है। स्वच्छ, भारी, चिकना गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झांई भी दिखाई देती है।

पहचान विधि–सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आँख के समान होता है तथा गोमूत्र के समान, दल रहित अर्थात् जो परतदार न हों, ऐसे गोमेद उत्तम होंगे। (१) शुद्ध गोमेद को २४ घण्टे तक गोमूत्र में रखने से गोमूत्र का रंग बदल जाएगा।

धारण विधि–गोमेद रत्न शनिवार को शनि की होरा में, स्वाती, शतभिषा, आर्द्रा अथवा रविपुष्य योग में पंचधातु अथवा लोहे की अंगूठी में जड़वाकर तथा राहु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करके दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। इसका वजन ५, ७, ९ रत्ती का होना चाहिए।

राहु बीज मन्त्र–"ॐ भ्रां भ्रीं, भ्रौं सः राहवे नमः"

धारण करने के पश्चात् बीजमन्त्र का पाठ हवन एवं सूर्य भगवान को अर्घ्य प्रदान कर नीले रंग का वस्त्र, कम्बल, तिल, बाजरा आदि दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक गोमेद धारण करने से अनेक प्रकार की बीमारियां नष्ट होती हैं, धन-सम्पत्ति-सुख, सन्तान वृद्धि, वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए अत्यन्त लाभकारी है। शत्रु-नाश हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

जिनकी जन्म कुण्डली में राहु १, ४, ७, ९, १० वें भाव में हो, उन्हें गोमेद रत्न पहनना चाहिए। मकर लग्न वालों के लिए गोमेद शुभ होता है।

केतु रत्न लहसनिया (CAT'S EYE STONE)

केतु-रत्न लहसनिया को संस्कृत में वैदूर्य, हिन्दी में लहसनिया, अंग्रेज़ी में Cat's eye Stone कहते हैं। यह नग अन्धेरे में बिल्ली की आंखों के समान चमकता है। लहसनिया चार रंगों में पाया जाता है। काली तथा श्वेत आभा युक्त लहसनिया जिस पर यज्ञोपवीत के समान तीन धारियां खिंची हों, वह वैदूर्य ही उत्तम होता है।

पहचान–(१) असली लहसनिया को यदि हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो वह २४ घण्टे के भीतर हड्डी के आर-पार छेद कर देता है। (२) असली वैदूर्य में ढाई या तीन सफेद सूत्र होते हैं, जो बीच में इधर-उधर घूमते हिलते रहते हैं।

धारण विधि–लहसनिया रत्न बुधवार के दिन अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्रों में, रविपुष्य योग में पंचधातु की अंगूठी में कनिष्ठका अंगुली में धारण करें। धारण करने से पूर्व केतु के बीज मन्त्र द्वारा अंगूठी अभिमन्त्रित करें। ५ रत्ती से कम वज़न का नहीं होना चाहिए। प्रत्येक ३ वर्ष पश्चात् नई अंगूठी में लहसनिया जड़वाकर उसे अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए।

केतु बीज मन्त्र–"ॐ स्त्रां स्त्रीं, स्त्रौं, सः केतवे नमः"

रत्न धारण करने के पश्चात् बुधवार को ही किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को तिल, तेल, कम्बल, धूम्रवर्ण का वस्त्र, सप्तधान्य (अलग-अलग रूप में) यथाशक्ति दक्षिणा सहित दान करें।

विधिपूर्वक लहसनिया धारण करने से भूत प्रेतादि की बाधा नहीं रहती है। सन्तान सुख, धन की वृद्धि एवं शत्रु व रोग नाश में सहायता प्रदान करता है।

अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे यहाँ 'आपका भाग्यरत्न' पुस्तक 60 रु० भेजकर मंगवा सकते हैं। **बृहदरत्न शास्त्र, मूल्य 150 रुपये, जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर।**

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा है**। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, बृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का वाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना है**। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न—तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मज़बूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान्, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा (Diamond)** अथवा **श्वेत मोती शुभ नग है** जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा है।** शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न—धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज है।** अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न—मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध बात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम है।** भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न—लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम है। स्त्रियों के लिए, पुखराज नग शुभ होगा।**

मीन लग्न—मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान्, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण (भाषा–टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन–पठनार्थ घर में रखना अथवा दान–दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत 401/– रु.। आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। मध्यम रामायण का मूल्य 150 रु. (डाक व्यय अलग)

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र 400 रुपए, आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। **मध्यम सुखसागर–मूल्य 250 रु.।**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा–चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे–एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई–दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। मूल्य–30 रु.

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 65 रुपए। सजिल्द 75 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली माहात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। **मूल्य 160 रु.।**

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद–4 खण्डों में, यजुर्वेद–1 खण्ड, अर्थर्ववेद–2 खण्ड, समावेद–1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। **मूल्य सम्पूर्ण सैट–1200 रु.।**

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव–भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। **मूल्य केवल 400 रु.।** मनीआर्डर के साथ 50 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय 40 रु. पृथक।

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

श्रीमद्देवी भागवत पुराण	251/-
श्री विष्णु पुराण	250/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	200/-
योग वशिष्ठ (दो भाग)	500/-
व्यापार रत्न	350/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	500/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	550/-
व्रतराज	500/-
चाणक्य नीति	80/-
विदुर नीति	80/-
महामृत्युञ्जय साधना	80/-
श्री गरुण पुराण (प्रेतकल्प)	90/-
कर्मकाण्ड कुसुमाञ्जली	35/-
कर्मकाण्ड प्रदीपः	145/-
कर्मठगुरु	**90/-**
कवच संग्रह (भा.टी.)	100/-
भद्रबाहु संहिता (मंदा-तेजी पर)	250/-
लाल किताब (भावफल)	250/-
मंत्र महोदधि	500/-
षोडश संस्कार पद्धति	150/-
वास्तु शान्ति प्रयोग	25/-
मन्त्र सागर	100/-
बगुलामुखी महासाधना	150/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	75/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	80/-
मंत्र शक्ति	80/-
मनोकामना पूरक मंत्र	80/-
वृहद् कौवा तंत्र	60/-
सूर्यशक्ति से इलाज	25/-
तंत्र द्वारा यश धन प्राप्ति	60/-
आरती संग्रह ग्लेजचित्र	40/-
योग वसिष्ठ महारामायण	300/-
55 चालीसा संग्रह आरतियों सहित	50/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	90/-
विशाल हस्त सामुद्रिक	120/-
ऋणमोचन मंगलस्तोत्र	20/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	350/-
पं. देवीदयालु राशिफल	**40/-**
माघ महात्म्य	30/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**395/-**
कार्तिक महात्म्य	30/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	55/-
सन्तान गोपाल स्तोत्र	15/-
असली आल्हाखण्ड	**151/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**65/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**75/-**
सूर्य पुराण भाषा	100/-
हस्त रेखा विज्ञान	80/-
सूर्य उपासना	60/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	80/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	150/-
दुर्गार्चन रहस्यम्	150/-
श्री हरिवंश पुराण (मध्यम)	200/-
श्रीगणेश महापुराण	250/-
मनुस्मृति	200/-
देवी-देवता सिद्धि	60/-
कर्मकाण्ड प्रदीपः	**145/-**
भजन सरोवर	150/-
लाल किताब (हिन्दी)	**800/-**
शिव मंत्रावली	160/-

अपने आर्डर के साथ 50/– रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ पूरा लिखें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर
फोन––0181–2457959

ज्योतिष सम्बन्धी प्रामणिक पुस्तकें वी० पी० द्वारा मंगवाएँ

पं० देवी दयालु ज्यो० जालन्धर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

श्री अर्द्धशताब्दी पंचांग	800 रु.
श्रीदशवर्षीय पंचांग (1994-04 ई.)	220 रु.
दशवर्षीय पंचांग (2004-14 ई.)	400 रु.
मुफीद आलम जन्त्री (हिन्दी-उर्दू-पंजाबी)	65 रु.
वर्षफल चन्द्रिका	80 रु.
ज्योतिष तत्त्व (गणित खंड)	95 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-I)	275 रु.
ज्यो. तत्व (फलित खण्ड-II)	275 रु.
सुतभाव प्रकाश	135 रु.
शिव मन्त्रावली	160 रु.
अनिष्ट ग्रहों के चमत्कारी उपाय-टोटके	175 रु.
विवाह पद्धति	70 रु.
दुर्गा सप्तशती (हिन्दी-भाषा)	65 रु.
श्री दुर्गासप्तशती (भा.टी.)	75 रु.
गण्डमूल शान्ति प्रयोग	60 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शान्ति	20 रु.
नवग्रह पूजा विधान	30 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	30 रु.
श्री सूक्तम्-कनकधारा स्तोत्र भा.टी.	21 रु.
कार्तिक माहात्म्य	30 रु.
55 चालीसा आरती संग्रह	50 रु.
लघु पंचांग दिवाकर	28 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा-भा.टी.	25 रु.
षड्वर्गीय जन्मपत्रिका (28 पृ.)	12 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (16 पृ.)	10 रु.
जन्माङ्क पत्रिका (12 पृ.)	10 रु.
टेवा फार्म छपा/प्लेन	150 रु. सैंकड़ा
ज्यो० ज्ञान शास्त्र (गुरमुखी)	100 रु.
लाल किताब (गुरमुखी)	120 रु.
फलित ज्योतिष (गुरमुखी)	400 रु.
राशिफल सन् 2014 ई.	40 रु.

अन्य प्रकाशनों की ज्यो. सम्बन्धी प्रामाणिक पुस्तकें

कालसर्प योग-शोध संज्ञान	415 रु.
ग्रह और भावबल	60 रु.
ग्रहरोग निदान चिकित्सा	75 रु.
ग्रहलाघव-गणेश दैवज्ञ	275 रु.
चमत्कार चिन्तामणि	245 रु.
जातक निर्णय (2 भाग) (बी.वी. रमण आधारित)	290 रु.
जातक-पारिजात (2 भाग)	620 रु.
ज्योतिष और हम	65 रु.
ज्योतिष जगत्	50 रु.
ज्योतिष तत्त्व प्रकाश	245 रु.
ज्योतिष रत्नाकर	325 रु.
ज्योतिष रहस्य	195 रु.
ज्यो. शास्त्र में रोग विचार	185 रु.
ज्यो. शास्त्र में स्वर विज्ञान	95 रु.
जीवनफल दर्पण	75 रु.
जैमिनी ज्यो. का अध्ययन	55 रु.
षड्वर्ग फलम्	200 रु.
गणेश होरा शास्त्रम्	500 रु.
राशिफल विचार	160 रु.
परमायु दशा	150 रु.
ज्यो. और रोग (2 भाग)	300 रु.
तीन सौ महत्त्वपूर्ण योग	145 रु.
त्रिफला	125 रु.
दशाफल दर्पण	100 रु.
दशाफल विचार	75 रु.
पुत्रेष्टि अनुष्ठान	495 रु.
समृद्धि सूत्र (2 भाग)	925 रु.
प्रश्नचन्द्र प्रकाश	125 रु.
फलदीपिका	175 रु.
फलित ज्यो. में कालचक्र	85 रु.
बृहज्जातकम्	220 रु.
मंत्र पुष्पाजली	395 रु.
मेलापक मिमांसा	395 रु.
मंत्र संदर्शन	295 रु.
मुहूर्त्त-चिन्तामणि (पीयूषधारा)	265 रु.
मुहूर्त्त गणपति	295 रु.
मुहूर्त्त मार्तण्ड	195 रु.
मुहूर्त्त पारिजात	150 रु.
योग-शृंखला (2 खण्ड)	795 रु.
लग्नचन्द्रप्रकाश	245 रु.
लघुपराशरी सिद्धान्त	295 रु.
लघुपराशरी भाष्य	225 रु.
लघुपराशरी	80 रु.
वैवाहिक सुख	295 रु.
वैवाहिक विलम्ब के आयाम	345 रु.
शनि शमन (दो भाग)	600 रु.
शत्रु शमन	195 रु.
हस्तरेखा सामुद्रिक शास्त्र	125 रु.
हस्तरेखा विज्ञान	160 रु.
चन्द्रहस्त विज्ञान	395 रु.
सन्तानसुख-सर्वाङ्ग चिंतन	295 रु.
होरा-रत्नम्	790 रु.
नक्षत्र विचार	250 रु.
भृगु संहिता	300 रु.
मंगलीक योग भ्रान्ति निदान	135 रु.
कालसर्प योग कारण-निवारण	200 रु.
शनि-साढ़ेसति से छुटकारा	40 रु.
दशाफल दर्पण	300 रु.
ज्योतिष सर्वस्व	300 रु.
जातक सत्याचार्य	80 रु.
केवलज्ञान प्रश्न चूड़ामणि	100 रु.
भारतीय ज्यो. (नेमिचंद्र शा.)	350 रु.
काली किताब	450 रु.
काली किताब (मध्यम)	300 रु.
रावण संहिता (बड़ा)	2000 रु.
रावण संहिता (मध्यम)	600 रु.
लाल किताब (वृहद्)	2000 रु.
लाल किताब	800 रु.
लाल किताब-टोटके	120 रु.
लाल किताब कष्ट निवारण	150 रु.
लाल किताब-पं. किसनलाल	250 रु.
प्रश्न भास्कर	80 रु.
प्रश्न विद्या	60 रु.
प्रश्न दर्पण	120 रु.
प्रश्न रहस्य	120 रु.
सारावली	225 रु.
वृहद्पराशरहोराशास्त्र	250 रु.
सामुद्रिक शास्त्र (2 भाग)	600 रु.
विशोंतरी दशाफल निर्णय	150 रु.
उलझे प्रश्न सुलझे उत्तर	80 रु.
जातकालंकार (भा.टी.)	70 रु.
गोचर विचार	80 रु.
चुने हुए ज्योतिष योग	80 रु.
कर्ज से मुक्ति	120 रु.
पितृदोष कारण-निवारण	120 रु.
सुगम वैदिक ज्यो.	350 रु.
दशाफल विचार (वृहद्)	200 रु.
सन्तान सुख विचार	200 रु.
ज्यो. गणित व खगोल-शास्त्र	200 रु.
भावफल् विचार (2 भाग)	300 रु.
फलित ज्योतिष (केदार)	300 रु.
बुद्धि विद्या विचार	200 रु.
गृह क्लेश क्यों ?	120 रु.
महाशक्तिशाली टोने-टोटके	300 रु.
5001 प्रभावशाली टोने-टोटके	250 रु.
11000 गंडे तावीज टोटके	300 रु.
नक्श सूलेमानी	150 रु.
प्रश्न-मार्ग (दो. खण्ड)	300 रु.
आयुनिर्णय	200 रु.
प्रश्न फल निर्णय	100 रु.
सम्पूर्ण ज्यो. विज्ञान	200 रु.
फलित दर्पण	300 रु.
सुगम वैदिक ज्योतिष	350 रु.
शनि शांति सरल उपाय	450 रु.
मंगली दोष कारण-निवारण	120 रु.
उत्तर कालामृत	300 रु.
रत्न ज्योतिष	60 रु.
रत्न पहने भाग्य बदलें	80 रु.
रत्न प्रदीप	100 रु.
सम्पूर्ण रत्न विज्ञान	120 रु.
रत्न रुद्राक्ष और भाग्य	250 रु.
रत्न परिचय	60 रु.
रत्नों का रहस्यमय संसार	200 रु.
आपका भाग्यरत्न	60 रु.
अंक विद्या रहस्य	60 रु.
अंकों में छिपा भविष्य	60 रु.
अंकों का अद्भुत संसार	150 रु०
अंक ज्योतिष (कीरो)	60 रु.

वास्तुशास्त्र विज्ञान पर

सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र	150 रु.
वास्तुशास्त्रानुसार भवन निर्माण	150 रु.
बिना तोड़-फोड़ वास्तुशास्त्र	100 रु.
रेमिडियल वास्तुशास्त्र	150 रु.
व्यावहारिक वास्तुशास्त्र	100 रु.
वास्तुकला और भवन निर्माण	150 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य	400 रु.
वास्तुशास्त्र रहस्य (2 भाग)	450 रु.
फेंगशुई 151 स्वर्णिम सूत्र	100 रु.
इंटीरियर डिजाइनिंग वास्तुशास्त्र	200 रु.

ज्योतिष की दुर्लभ

"लाल किताब"

(उर्दू भाषा में फोटोस्टेट) असली अब उपलब्ध है। मूल्य 2000 रु. (डाक व्यय सहित)
हिन्दी रुपान्तरण 'अरुण संहिता' मूल्य 550 रु.

सभी प्रकार की पुस्तकें मंगवाने का पता :

100 रु. अग्रिम मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेजें।

जनरल बुक डिपो,
अड्डा होशियारपुर चौंक,
जालन्धर शहर (पंजाब)
फोन-0181-2457959

स्थापित सन् 1875 ई०

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

पंचाँग दिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 139 वाँ

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 551/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 1500/- रु. अथवा 21 पौंड होगी।

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री–आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1250/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 2100/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 2100/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

कम्प्यूटर (Computerized) शुद्ध / वैज्ञानिक जन्मपत्री–लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 551/- रु., वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्तलिखित उपायों सहित 901/- रु.

पत्र व्यवहार एवं मनीआर्डर / ड्राफ्ट भेजने के लिए पता–
पं. पन्ना लाल ज्योतिषी M.A. (संस्कृत-हिन्दी) (गणितकर्त्ता)
पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़)
चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008

वर्षफल–आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेज़ी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 551/-रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 751/-रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 751/-रु.। विस्तृत विज्ञापन **'व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी'** लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : फोन-0181-2457959
पं. विवेक शर्मा सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-8 (पं.)